

चारपांची आंसूमाता

लक्ष्मण पिंगलशी गढवी

M. A. LL. B. Advocate.





CHARANNI ASMITA [Historical approach to the study of Charan community, culture and dignity] by Laxman Pingalashi Gadhavi & Published by Shri Merubha Gadhavi Smruti Prakashan; 'Saraswati' 9, Patel colony; JAMNAGAR 361008, (India). Price : Rs. 90/-



प्रकाशक :

श्री मेरुभा गढवी स्मृति प्रकाशन,
'सरस्वती', ९, पटेल कोलोनी
जामनगर, ३६१००८, गुजरात, (भारत).



(C) SHRI MERUBHA GADHABI SMRUTI PRAKASHAN.



प्रथम आवृत्ति * October, 1983 * वि. सं. २०५९.
प्रत : १००० * मूल्य : ९०-०० (नेवु).



मुद्रक :

श्री जामनगर ज़िल्हा सहकारी प्रकाशन अने मुद्रणालय ली.,
जयश्री टोकीझ पासे, जामनगर, ३६१००१.

 : 74704



अर्पण

जे जातिये संस्कारप्रद साहित्यनुं सर्जन कर्युं,
मा भारतीनी भवयतानुं भावधी गौरव भयुं,
प चारणोनी अस्मितानो ग्रंथ सुखप्रद सर्वने,
खीकारजो माता-पिता अर्पण करूं छुं आपने.

पूज्य पिता श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद गढवी
अने
पूज्य वा श्री जीवावहेन पिंगलशीभाई गढवीने...

-लक्ष्मण गढवी.

लोक-संस्कृतिना ज्योतिर्धर, संतवाणीना
उदगाता एवा मेघकंठीला मर्यादाशील

श्री मेरुभा मेघाणंद गढवी

कविता जीवी गयेला चारणोनुं जे जीवन कंठ-काव्य अगर
तो कहेणीरुपे वहेतुं, ते काव्य-जीवननी सरितानां जळधोध रूपेण,
आ युगमां जवल्लेज सांपडे पबुं सूर्यना प्रखर पण पोषक तत्त्व-
समुं आपनुं प्रतापी व्यक्तित्व अम चारणोनुं स्वाभिमान बन्युं छे.
कविता आपने अंतरे ने कंठे बसीने भाव अने दर्दनी भेदकता
वडे पोताना प्राणने नवपल्लवित करी, अवनवा अथें, ममो अने
रहस्य प्रगटावी गद्य द्वारा पद्य रेलावे छे. प्रकृति पड़छंदा पाडे
एवा भव्य बुलंद अने वीणाङ्गंकृत नादना अद्वितीय कंठनो
आपनो महिमा छे. चारणी अने लोकसाहित्यना छंदा-ढाळो
आपना मेघगर्जन अच्छनि वडे सोलेय शणगारे साकार बने छे.
अन्याय, अनीति अने अर्धम सामे पडकारी ऊठता चारणकुलनी
पवी परंपराना आप वारसदार छो के जेना पुण्य प्रकोपना प्रचंड
घोडापुरो पण विवेकनी पाळो वच्चे ज वहेतां होय. सत्कार्यमां
मंगलतत्त्वो निःसत्त्व न बने पवी आपनी अरमानभरी जनसेवा
निजना बतनने अने बतनना प्रदेशने अनेकविध ईते उपकारक
बनी विकृतिओमांथी सुकृतिओ भणी बाली रहेल छे. हडधृत
हरिजनो माटे प सिवाय छत्रावामां सोळ सुंदर मकानोनी कोलोनी
क्यांथी वंधाय ! आप भंगीओने आवास वंधावी देवानुं पण
भूल्या नथी अने कन्या-केलवणीनी आपनी लागणीथी छत्रावाने
पादर आज कन्याशाळानुं सुंदर मकान शोभी रह्युं छे. पकधारा
४० वर्षनी आपनी समाजोपकारक पवी अनेकविध सेवाओ अम
चारणोनो प्रेरक अने मार्गदर्शक पवो समृद्ध वारसो बनेल छे.

लोक संस्कृतिना ज्योतिर्धर श्री मेरुभाभाई गढवी



: जन्म :
ता. ९-३-१९०६

: निवारणः
ता. १-४-१९७७

२०२२। २१६८८५

२१६८८५



पाठेय

अनादिकाल से ही चारण जाति का पक विशिष्ट पर्व महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस जाति के प्रतिभासम्पन्न सर्जकों द्वारा इतिहास, धर्मशास्त्र, पिंगलशास्त्र इत्यादि की सर्जना होती रही है। साहित्य की प्रत्येक शाखा-प्रशाखा के पल्लवन में इन सर्जकों की लेखनी कियाशील रही हैं। आश्चर्य तो यह है कि इन सर्जकों ने अप्रतिम पर्व अलभ्यतम् साहित्य-सर्जना करते हुए भी अपनी जाति के सम्बन्ध में मौन धारण कर लिया हैं। यह क्यों और कैसे हुआ? यह आज भी विचारणीय प्रश्न है। यह भी देखने को मिलता है कि इन सर्जकों ने दूसरी जातियों के इतिहास के संरक्षण पर्व संवर्धन में जितनी उत्कटता पर्वतल्लीनता रखी हैं उतनी अपनी जाति के नहीं। परिणाम स्वरूप कालान्तर में अनेकानेक भ्रान्त धारणाएँ उत्पन्न होती रही हैं। इन भ्रान्त धारणाओं के निर्मूलन पर्व उस जाति की वास्तविकता को प्रकाश में लाने पर्व उसकी अस्तित्व से पूरी जाति को परिवर्तित कराने हेतु ही इस ग्रन्थ का सर्जन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी बना है। संभव है इस अभाव की संपूर्ति में यह ग्रन्थ पक उपजिव्य ग्रन्थ बन सकेगा।

कुछ विद्वानों का साहित्य उपलब्ध है जिस ने इस जाति का यत्किंचित् साहित्य प्राप्त है। जैसे-महाकवि सूर्यमल्ल मिसण की

'गया' तथा 'वंशभास्कर', सर्वथ्री कविराजजी मुण्डिदानजी की 'चारण ख्याति', विकानेर कविराज श्री भभूतदानजी की 'चारण उत्पत्ति मार्त्तण्ड मीमांसा तथा श्री कृष्णसिंहजी सौदा की 'चारण कुल प्रकाश' आदि ऐसी रचनायें हैं जिनमें जाति सम्बन्धी कुछ जानकारी प्राप्त होती है। तत्पद्यात् श्री किशोरसिंह सौदा, श्री पिंगलशीर्माई पायक, श्री छबेरचंद मेघाणी इत्यादि विद्वानों ने शोधपरक पर्वं गवेषणात्मक लेख इत्यादि लिखकर इस जाति के साहित्य की श्रीवृद्धि की है। इन विद्वत् मनीषियों का प्रयास खूब महत्त्वपूर्ण पर्वं स्तुत्य है।

परन्तु सांप्रत परिस्थिति में ये प्रकाशित साहित्य या तो अनुपलब्ध है या पर्कार्गी हैं। इनमें से कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसमें इस जाति का सर्वाङ्गीण परिचय मिल सके। इतना ही नहीं बल्कि आधुनिक भाषा-साहित्य के विकास युग में यदि नवीन दृष्टि से इसका अवलोकन पर्वं परीक्षण किया जाय तो निश्चित ही एक आदर्श गोरवपूर्ण कुल की प्रतीति समाज को हो सकती है।

चारण जाति की संस्कृति, संस्कार पर्वं साहित्य जितना ही विशिष्ट है, उन्हें प्रकटित करना उतना ही गुरुतर कार्य है। फिर भी चार वर्षों के अविरत भगीरथ परिश्रम के पश्चात् मैं "चारणनी अस्मिता" ग्रन्थ आपके हाथों में सेंपते हुए, जिसमें चारण जाति का समग्र अनुशीलन करने का एक विनम्र प्रयास किया गया है, तोप का अनुभव कर रहा हूँ।

चारण जाति के अध्येताओं, उपासकों, संरक्षकों तथा इसके उत्कर्षकों इत्यादि के लिये यह एक ज्ञान विनिमय (Application of Knowledge) का स्रोत बन सकेगा-ऐसी मुझे अद्वा है।

कवि स्कीट की इन पंक्तियों को याद करने का लोभ-
संवरण में नहीं कर शकता-

“Labour with what Zeal we will some thing
still remains undone (Long fellow)”

अर्थात् चाहें जितनी भी उत्कृष्टता से कार्य किया जाय परन्तु
कुछ न कुछ बाकी रह ही जाता है। यह कार्य भी इसका
अपवाद रूप नहीं है। परिश्रम सदैव भविष्य के आलोकित
कर मार्ग प्रशस्त करता ही है।

मुझे पूरी अद्वा और अटूट विश्वास है कि यह ग्रन्थ शोध-
वेत्ताओं पर्व भावी अध्येताओं के लिए पक कड़ी रूप अवश्य
बन सकेगा।

इस ग्रन्थ के कुछ प्रकरण अपने आप में इतने व्यापक हैं
कि वे अलग-अलग पक-पक महाग्रन्थ बन सकते हैं। परन्तु
अति व्यापकता को ध्यान में रखते हुए उनका अर्थ-संकेत-
निर्देशन मात्र ही संभव हो सका है।

यह ग्रन्थ देवति श्री मेरुभाभाई गढ़वी के समृति ग्रन्थ के
रूप में प्रकट हो रहा है-इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानता
हूँ और आत्मगोरव का अनुभव करता हूँ।

प्राचीन साहित्य के समुदारक मुनि महाराज साहेबो, संतो,
महंतों तथा धार्मिक वाचायें इत्यादि ने इस ग्रन्थ के प्रणयन में
ममतापूर्ण योगदान ही नहीं, बल्कि इस की पूर्णता के लिए
आशीर्वचन भी दिया है। उन सभी मनिषियों के प्रति मैं
अन्तःकरण से आभार प्रस्तुत करता हूँ और सदैव अद्वानत हूँ।

इस ग्रन्थ में प्रस्तुत की गई साहित्यिक सामग्री के अनुरूप
चित्रों को तैयार करनेवाले श्री ईश्वरदानभाई गढ़वी तथा

श्री घन्द्रविजयसिंहजी राणाने इसे और भी हृदयग्राही बना दिया है। उनके प्रति औपचारिक आभार प्रदर्शित कर मैं उनके स्नेहसिक्त भावना की गरिमा को कम करना नहीं चाहता। उनके समक्ष मैं सदैव अद्वान्त हूँ।

ग्रन्थ के सुन्दर छपाई-कार्य के लिये मैं जामनगर जिल्ला सहकारी प्रकाशन अने मुद्रणालय के मैनेजर श्री शान्तभाई बाला तथा श्री शामजीभाई केशोर का हृदय से आभारी हूँ, जिन के आत्मीय सहयोग के अभाव में इस ग्रन्थ को इस रूप में प्रस्तुत करना कदापि संभव नहीं था।

इस ग्रन्थ के प्रणयन में मैंने जिन विद्वानों, लेखकों कवियों, लेखा पर्वों काव्यों, का तथा अन्य विद्वत् मनीषियों के मन्तव्यों का उपयोग किया है। उन सब के लिप मैं चिर क्रणि हूँ। उन सब के चरणों में मैं अपनी अद्वा के सुमन समर्पित करता हूँ।

अन्त में मैं उन सभी महानुभावों पर्व मित्रों का हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यत्किञ्चित् भी सहकार प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया है।

“सरस्वती”

१, पटेल कोलोनी

जामनगर, ३६१००८।

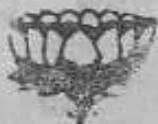
-लक्ष्मण गढवी।



चारणनी अस्मिता

विषयनिर्देश

| | | | |
|----|---|-----|-----|
| 1 | चारण शाढ़नी व्युत्पत्ति अने अर्थ ... | ... | १ |
| 2 | वैदिक पोराणिक अने अन्य शास्त्रोमां चारण ... | ... | २२ |
| 3 | चारणकुलनी उत्पत्ति ... | ... | ५५ |
| 4 | चारणनी शाखाओ ... | ... | ६२ |
| 5 | चारणकुलना पर्याय शब्दो ... | ... | ११६ |
| 6 | चारणनु निवासस्थान अने स्थलांतर ... | ... | १२८ |
| 7 | चारणनां बाराध्यदेव ... | ... | १५८ |
| 8 | महिमावंती मातृशक्ति ... | ... | १७४ |
| 9 | व्यवसाय ... | ... | १९६ |
| 10 | चारणनी वहुमुखी प्रतिमा ... | ... | २०४ |
| 11 | चारणी साहित्य ... | ... | २९६ |
| 12 | चारणी साहित्यनी शैक्षणिक संस्थाओ ... | ... | ३३६ |
| 13 | साहित्यकारोनी सिद्धदस्तता ... | ... | ३३९ |
| 14 | मातृशक्तिनु महिमागान ... | ... | ३९३ |
| 15 | चारणज्ञानिनो भावभाव ... | ... | ४०८ |
| 16 | दंतकथाओ ... | ... | ४३७ |
| 17 | चारणनी अमीरात ... | ... | ४४२ |
| 18 | काव्यधारा ... | ... | ४५१ |
| | चारणी साहित्य संमेलन-भावनगर ... | ... | १ |
| | चारणी साहित्य प्रेजेन्ट ... | ... | ७ |
| | दिवगंत श्री मेरुभाभाई गढवीजीने ध्रुदांजलि | | |



॥ उॅं श्री हरि: ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

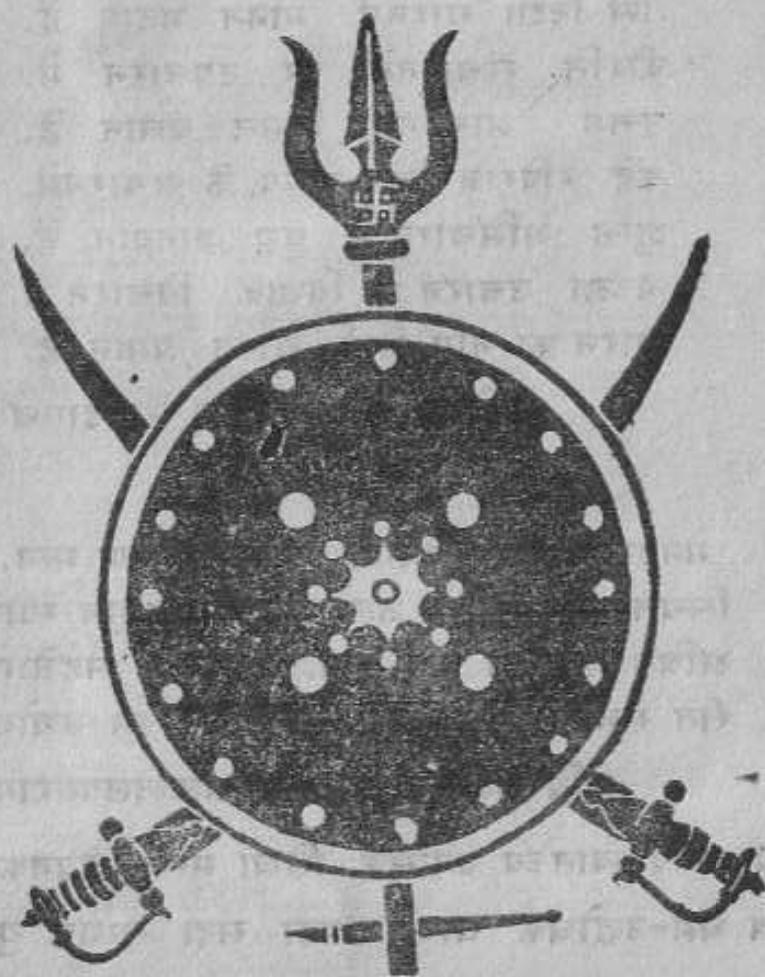


तूं अन्नपूर्णा ईश्वरी,
 भुवनेश्वरी भवतार,
 तूं कल्याणी कालिका,
 अखिल जकत आधार.

मात भुवनेश्वरी तूं मंगल कारणी,
 व्याधीओ बालनी सर्व विदारणी.
 हस्तमां कमलने मुगट शिर धारणी,
 तूं विना केण आ भव दधी तारणी.
 अस्मिता चारणनी कार्य छे आकरूं,
 प्हाड पर धूमबुं पंडय छे पांगरूं,
 नहीं पथ सूजने हंकार्य नावहुं,
 बाई भेरे रही ग्रही जे बावहुं.
 बाल निजनां गणी सांचव्या बारणे,
 हुलाव्या फूलाव्या हेतधी पारणे,
 शरण तारुं गह्युं प्रथमधी चारणे,
 कदी तरछोडती नहि विना कारणे.
 खामीओ अमारी कदि नव खोलती,
 मात थई छोरु सुं मुख नव भ्रोडती,
 मंभारी राखजे विरद नव छोडती,
 घा सुणी आवजे भ्रोडती भ्रोडती.

चारणी अस्तित्वा

*Historical approach to
the Study of Charan
Community, culture and
dignity*



चारण

(कवित)

पूर्वे अवतार विश्वु पृथुवाज महीपती,
धरा कामधेनुं हु से दुर्ग रम पायें हैं,
क्षत्रित्व उद्धारक प्रचार स्वर्ग देव ज्ञाति,
हिमालय स्थायी किये महाविद्या गाये हैं,
मनु बादि समृति से तामसा उत्तमागमो,
प्यासु वालमिक करी संघन में गाये हैं
पिता हे महेश शेष मातृक्ष चारण के,
पृथ्वीमें नरेन्द्र धर्म वेदधक पद लाये हैं.

—पूज्य श्री दिव्यानंद सरस्वती.

(२)

आदि जुग चारन में, पूज्य वर्ण चारनमें,
तेसे दिशा चारनमें, मानत महान हैं.
कीरति संचारनमें पर उपचारन में,
उत्तम आचरनमें विमल वस्त्रान हैं,
कहे रविराज श्रेष्ठ काव्य के प्रचारनमें,
शुचि अभिचारन में बुध ज्ञानवान हैं,
अच्छा उचारन में विधाके विचारन में
चारन का नाम सोई चारन प्रमान है.

—कविवर्य श्री रविराज सिंहदायच.

दोहा

मनहर महिभुज धारके, माली चारण मान,
सिंचत सदा सुबोध जल, गुल सुगंध गुन ग्यान
क्षत्रिय हित हो वही सदा, चारनके सहजोग,
रीत सनातन धर्म शुभ, उन्नति हित उद्योग.

—कवि सम्राट श्री न्हानालाल दलपतराम.

सत्य अभय स्वातंत्र्य उपासक, सिखा मरण-जीवनका मर्म,
क्षात्र धर्म-उद्धोधक चारण, रहा सदा साधक युगधर्म.



[1] चारण शब्दनी व्युत्पत्ति अने अर्थ

- १.१ चारण शब्दनी प्राचीनता
- १.२ जोडणीकोश शब्दकोश Dictionaryमां चारण
- १.३ व्युत्पत्ति विशे विद्वानोनां मंतव्यो
- १.४ मनुस्मृति, अमरकोशमां चारण
- १.५ आत्मोन्नतिनो पथप्रदर्शक
- १.६ विद्वानोनी दृष्टिप चारण

प्रत्येक शब्दनुं स्वतंत्र अस्तित्व अने तेनो इतिहास होय छे. शब्द हमेशां तेना वाच्यना स्वरूप तरफ संकेत करतो रहो छे. शब्दोनां अर्थनुं समय समय पर संकोचन-विस्तृतीकरण थतुं रह्युँ छे. तेथीज तो क्यारेक शब्द तेना मूल अर्थथी घणे वधे दूर जईने बेठो होय छे. तेम छतां आ परिवर्तनथी मूल अर्थनी विशेषता नष्ट थती नथी.

चारण अर्थनो बोधक शब्द पण चारणना स्वरूप पर घणोज प्रकाश पाथरे छे. विभिन्न रूपोने कारणे तेने रहस्यमय कोटिमां मूकवामां आव्यो छे; परंतु ज्ञा शब्देना विकासनी साथे मानव सभ्यताना विकासनुं अध्ययन करवामां आवे तो ख्याल आवे छे के चारण शब्द जेटलो रहस्यमयी छे, तेटलाज अंशमां संसारनी प्रत्येक चीज रहस्यमयी छे, एटलुं तो चोक्कस छे के आ भेद प्रभेद भावुकताथी अतिरज्जित थईने एटला वधा विकास पाम्या छे के शब्दनी व्युत्पत्तिना सहकार विना शब्दनुं स्वरूप समजबुं सरळ नथी.

ॐ श्री संपूर्ण सृष्टि ध्वनित थवी होई तो थई जाय;
सच्चिदानन्दथी ब्रह्मनुं स्वरूप प्रगटबुं होई तो प्रगटी जाय परंतु
कोई पण एक शब्दथी चारणना स्वरूपनी अभिव्यक्ति साधवी
शक्त्य नथी.

चारण शब्द नानकडो छे, परंतु तेनी सीमा विस्तृत छे.
चारण ए त्रण अक्षरनो फल शब्द नथी, चारण बोलतानी
साथे ज विश्वरूप खडुं थाय छे. चारण शब्दनो उच्चार थतानी
साथे ज मृत्यु नीचुं ज्ञाई जाय छे; सर्वभक्ती महाकाळ पण
चारणसृष्टिनो नाश करवा समर्थ नथी.

“कहां राम, कहां लखण, नाम रहियो रामायण,
कहां कृष्ण बलदेव प्रगट भागीत पारायण,

बालमीकि शुक व्यास कथा कविता न करंता,
कवन स्वरूप सेवता, ध्यान उण कवन धरंता,

जग अमर नाम चाहो जके, सूनहुं सजीवन अखाँ,
राजसी कहे जगराणरो, पूजो पांब कवेश्वरां”

चारणे विश्वमां विश्वबंधुत्वनुं, मानव सभ्यतानुं, अहिंसानुं,
आदर्शानुं, सत्यनुं, वीरतानुं सार्वभौमत्व साप्ताज्य स्थाप्युं छे.
चारणना समय स्वरूपनुं वर्णन करबुं अशक्त्य छे. चारणमांतो
अगाध शक्तिनो स्रोत वहे छे. चारण ए एक शब्दनो बनेलो
बृहद् ग्रंथ छे.

चारण शब्दनी परिभाषा तो अनेक छे, परंतु संपूर्ण परिभाषा
एक पण मळती नथी. विद्वानो ज्यां सुधी चारणने समझी शक्त्या
छे, त्यां सुधीनी परिभाषा व्यक्त करवानो प्रयत्न कयों छे.

चारण शब्दनुं संशोधन करवा आपणे वेदकालमां अर्थात्
सृष्टिनां आरंभकालमां दृष्टि दोडाववी पडे तेम छे.

११ 'चारण' शब्दनी प्राचीनता:-

भारतीय जनजीवननो अतीत साथे घनिष्ठ सबंध रहो छे. वर्तमानकालनी प्रचलित परंपरानुसूल वेदमां पडेलुं छे. आयावर्तनी वर्ण-व्यवस्था अने तेनां गुण-कर्मनो संकेत एन वेदमां स्पष्टपणे आपवामां आवेल छे.

'चारण' शब्दनो प्राचीन उल्लेख यजुर्वेदमां २६ मा अध्यायनी वीजी क्रचामां सांपडे छे

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानी जनेभ्यः ब्रह्म
राजन्याभ्यां शूद्राय वाचां च स्वाय चारणाय च ॥"

आ क्रचामां चार वर्णाथी अलग अने भिन्न उद्भवाळी एक दिशिए जाति तरीके 'चारण' जातिने ओलखावी छे. आ उपरांत वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भागवत, महाभारत, पद्मपुराण, शिवपुराण, मत्स्यपुराण, आदित्यपुराण, स्कंदपुराण, वामनपुराण, गणेशपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण, ब्रह्मपुराण, हर्षचरित्र, प्रवन्ध चिन्तामणी, पन्नावणाजीसूत्र, गर्गसंहिता, तेमज कवि कलागुरु कालिदासनां नाटकोमां 'चारण' नां उल्लेख जोवा मझे छे. आथी ए प्रमाणित थाय छे के 'चारण' ए कोई नवा शब्दनो प्रयोग नथी. परंतु वेद जेटलोज प्राचिन छे.

डॉ. टी. एन. दवे (लंडन युनिवर्सिटीना भूतपूर्व प्राच्याएक, डायरेक्टर, श्री द्वारकाधिश संस्कृत एकेडेमी द्वारका) 'चारण' शब्द विशे लखे छे के वेदमां 'चरण' शब्दनो प्रयोग छे, तेने तद्वित प्रत्यय लगाडवाथी 'चारण' शब्द थाय छे. वेदनां अंगोने चरण कहेवामां आवे छे 'चरणे भवाः चारणाः'।" यद्यले जे कोईक चरणना सभ्य होय ते 'चारण' कहेवाय.

‘चरण’ पट्टे वेदनी प्रत्येक शाखाने अमुक विशिष्ट रीते बोलनार, पढ़नार, याद राखनार, भणावनार, भणनार, पओने ‘चारण’ कहेवामां आवतां; एम मानवाने कारण मळे छे.

“पाणिनी” मुनिकृत सुत्रमां ‘चारण’ शब्दनो अर्थ वेदना भाग के वेदनां जुदां जुदां चरणोने भणनार, कविता करनार एम ऋषिमुनिओने माटे ‘चारण’ शब्दनो उपयोग करवामां आव्यो छे.

आ सिवाय बीजो अर्थ ‘चारण’ नो थाय छे ‘चारण’ पट्टे अभिनय करनार काव्यनी साथे भाव रजु करनार नटः (नेंधः— भारत वर्षमां ‘चारण’ जाति नामे विख्यात वनेली जाति ‘नट’ नो धंधो करती नथी तेमज तेओना पूर्वजोए पण आ व्यवसाय करता होवानो उल्लेख मळतो नथी ‘नट-चारणो’ अमरकोशमां वर्णवेला शैलूषो अथवा ‘नट-चारण’ होवानो घणो सांभव छे.)

‘चारण’ शब्दनो त्रीजो अर्थ अमुक ध्येयने नक्की करी; तेने वळगी रही पोतानुं जीवन गालनार पट्टे पोताना ध्येयनेज वळगी रही पोतानुं जीवन व्यतीत करनार आवा पोताना ध्येयने वळगी रही जीवन व्यतीत करनाराओना घणा दाखला ब्राह्मण अंथोमां मळी आवे छे.

उपरोक्त अर्थोमां बे मुद्दाओ रहेलां छे. एक पठन-पाठन करतुं अने कविता बनाववी तथा बीजुं वेद भणवा अने याद राखवां. उपरोक्त बन्ने मुद्दाओ ‘चारण’ शब्दना अर्थने पूर्णपणे लागु पडे छे. पट्टे वेद भणनार तथा याद राखनार अने पठन-पाठन करनार तथा कविता रचनारने ‘चारणो’ कहेवामां आवतां प सावित थाय छे.

उपरांत व्याकरणनी दण्डिए पाणिनीनां मंतव्य प्रमाणे जेम ‘ब्राह्मण’ शब्दनुं नारी जातिवाचक नाम ‘ब्राह्मणी’ थाय छे,

तेमज्ज 'चारण' शब्दनुं नारी जातिवाचक नाम 'चारणी' थाय छे. आ हकीकत साबित करे छे के ई. स. पूर्वे एटले पाणिनीना काळमां अने ते पहेलां चारणोनी हस्ती हती, कारण के चारणनुं नारी जातिवाचक नाम 'शुकल' नुं जेम 'शुकला' थाय छे तेम थतुं नथी. आ वस्तु पण चारण जातिनी पुरातनता अने उत्तमता सिद्ध करवामां सहायरुप छे.' (चारण संमेलन)

जैनधर्मना, विक्रम सवंतना प्रारंभमां भरतक्षेत्रमां थयेलां महासुनि ऋधिधारी श्री कुंदकुदाचार्यदेवना पृथ्वी परना अवतरण अंगेना चंदगिरि पर्वत परना शिलालेखमां 'चारण' शब्दनो उल्लेख जावा मझे छे.

वन्द्यो विभुभुवि न कैरहि कोण्डकुंदः
कुन्द प्रभाप्रणयिकीर्तिविभिषिताशः ।
यथारू चारण कराम्बुचश्चरीकथके
श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम् ॥

[अर्थात् कुंद पुष्पनी प्रभा धरनारी, जेमनी कीर्तिवडे दिशाओ विभुषित थई छे; जेथो चारणोना चारणऋधिधारी महासुनिओना सुंदर हस्तकमलोना भ्रमर हता. अने जे पवित्रात्मा ए भरतक्षेत्रमां श्रुतनी प्रतिष्ठा करी छे ते विभु कुंद कुंद आ पृथ्वी पर कोनाथी वंद्य नथी अर्थात् सर्वथी वंद्य छे.]

आधी स्पष्ट थाय छे के विक्रम सवंतना प्रारंभमां पण 'चारण' शब्द प्रचलित हतो

१.२ जोडणीकोश-शब्दकोश अने Dictionaryमां चारण:-

श्री श्वेतांवर-स्थानकवासी जैन कोनफरन्स तरफथी सरदार-मलभंडार द्वारा सचिव 'अर्धमागधी कोष'मां जैनशास्त्रो मुजव अर्थ आपदामां आव्या छे. ए शब्दकोषमां 'चारण' शब्दनो अर्थ आपदामां आवेल छे.

चारण पु. (चारण=चरणं गमन विद्यते येषाम्) एटले चारणलविधि-
वाळा साधु, ते वे प्रकारनां छे. जंधा चारण अने विद्या चारण.
अठम अठम तपथी उपजेल एहेला प्रकारनी लविधिवाळा साधु एकज
कृदके तेरसे रूचकवरद्वीपे पहोँची शके. वळता मेरुने शिखरे
वीसामो लई वीजे उत्पाते मूळ जगयाप पहोँचे. छटु छटुना
तपथी उपजेल वीजा प्रकारनी लविधिवाळा वे उत्पाते मेरूशिखरे
अने आठसे नन्दीश्वरद्वीपे पहोँचे अने वळतां एकज उत्पाते मूळ
जगयाप पहोँचे.

चारणगण : पु (चारण गण) ए नामनो महावीर स्वासीनो
एक गण.

गोंडल महाराजा भगवतसिंहजीप संपादित करेल
भगवद्गोमंडलमां पु. ३२७७ उपर 'चारण' शब्दनां अनेकविधि
अर्थी आपेला छे.

चारण १ पु अमुक उच्च ध्येयने अनुसरी उत्तम जीवन
आचारनार मुनि.

२ पु. ए नामनो एक देव. ते राहुना नीचला प्रदेशमां
रहेतो मनाय छे.

३ पु. (पिंगल) वावीश गुरु अने वीश लघु मळी वैतालीश
अक्षरनो एक प्रचुर्णगति मात्रामेल छंद.

४ पु. राजाने आश्रये रही तेना वखाण अने कीर्ति करीने
आजीविका करनार भाट, बंदीजन, देवीपुत्र.

५ पु खी : ए नामनी एक जाति, 'चू' धातु उपरथी
'चारण' शब्द थयेलो छे. 'चू' गतिवाचक छे, अने ते उपरथी
गति आपनार, कीर्ति फेलावनार एवो चारण शब्दनो अर्थ छे.
आ कोम पवित्र अने घणीज पुराणी लेखाय छे. पनु वर्णन
रामायण अने महाभारतमां छे. तेथो पोतानी उत्पत्ति वैतालिकोनी
जेम देवताथोथी थथानो दावो करे छे.

६ 'न': चारखुं ते.

७ 'न': लीलो चारो विः चलावनार, फेलावनार, प्रसरावनार

८ विः ढोर चारनार.

चारण काव्य १ नः वीररसनुं काव्य (ब्रिलड)

चारण विद्या १ न अथर्ववेदनी नव माहेनी पक शाखा.

२ खीः पक जातनी लघि पटले शक्ति.

चारणा : खीः दुगदिवी.

विश्ववंद्य महात्मा गांधीजीए प्रमाणीत करेल नवजीवन कायोलय अमदावाद द्वारा प्रसिद्ध थयेल 'सार्थ गृजराती जोडणी-केश'मां 'चारण' शब्दनें अर्थ आपवामां आव्यो छे.

चारण वि. ['चारखु' उपरथी] चारनार.

२ [सं.] राजानां शुण-कीर्तन अने व्यापार करवानो धंधो करनारी पक जातिनुं.

३ पु. प जातिनो माणस.

काशीं नागरीप्रचारणी सभा तरफथी वाचु श्री रामचंद्र वर्माना संपादकत्वमां बहार पडेला संक्षिप्त 'हिंदी-सागर' नामक शब्द-केशमां चारण शब्दनें अर्थ करतां लखे छे के :

चारण : संश्ला पु. (सं) १ वंशकी कीर्ति गानेवाला, भाट, वंदीजन।

२ राजपूतानेकी पक जाति.

३ भ्रमणकारी.

सुप्रसिद्ध बुकसेलर्सी पन्ड पब्लीशर्सी गोपाल नारायण पन्ड कुं. द्वारा वी. थेस. आप्टेना संपादकत्वमां १९१२ मां प्रसिद्ध थयेल The Practical Sanskrit English Dictionary मां 'चारण' शब्दनें अर्थ आपवामां आव्यो छे.

चारण : [चारथति कीर्ति चरू-णिच्छ ल्यु] १ Wanderer, a pilgrim

2 A Wandering actore or Singer, a dancer, mimic,
bard; Ms 12, 144.

3 A celestial singer, heavenly chorister;

4 A reader of scriptures.

The GEM Gujarati-Engiish Dictionary માં ‘ચારણ’
શબ્દનો અર્થ નીચે પ્રમાણે આપવામાં આવ્યો છે.

ચારણ n A Panegyrist; A bard.

ચારણી n Sieve; the dialect of ચારણ.

“સંસ્કૃત હિન્દી કોશ” સંપાદક વામન શિવરામ આપે
પૃ. ૩૭૮ માં જણાવે છે કે :

ચારણ : [ચર+ણિચ+લ્યુટ] ૧ ભ્રમણશીલ, તીર્થયાત્રી.

૨ ઘૂમને-ફિરનેવાળા નટ, યા ગવૈયા, નર્તક, ભાટ, મજુ ૧૨/૧૪

૩ સ્વર્ગીય ગવૈયા ગંધવે શ. ૨/૧૪.

૪ વેદ યા અન્ય ધાર્મિક કા પાઠ કરનેવાળા.

૫ મેદિયા.

Sanskrit Dictionary – G. V. Devasthali Zala
Vedanta Prizeman માં ‘ચારણ’ શબ્દનો અર્થ : ચારણ m 1
A bard, બન્દિન m 2 Heavenly Chorister. દેવ ગાયક. આ
પ્રમાણે આપવામાં આવ્યો છે.

ઉપરોક્ત પ્રમાણભૂત શબ્દકોશોમાં ‘ચારણ’ શબ્દના જુદાં જુદાં
અર્થ આપેલ છે. પરંતુ ચારણજાતિના અર્થ માટે વિદ્વાનોની
વ્યુત્પત્તિ-વિવેચનાને અભ્યાસ કરવો અનિવાર્ય છે.

૧.૩ વ્યુત્પત્તિ વિશે વિદ્વાનોનાં મંતવ્યો:-

સ્વ. ઠા. કિશોરસિંહજી સોદા : “ચારયન્તીતિ ચારણાः ।”
‘દેશનુ’ કે ‘નીતિનુ’ જે સંચાલન કરે તે ચારણ.

मेजर साहेब श्री रघुवीरसिंहजी : 'चारयन्तीति कीर्तिमिति चारणः । जे स्वयं धर्मना पथ पर आरुढ थईने अन्यने धर्मान्त्यानमां प्रेरित करे छे; ते चारण ।' (वीर सतसई)

श्री पिंगलशीभाई पायक : " 'चारण' शब्द संस्कृत भाषानो एक नारीजातिवाचक शब्द छे. संस्कृत भाषा ए सर्वे भाषाओनी माता छे. संस्कृत भाषानां बधा शब्दोनुं मूळ क्रियावाचक धातु-ओमां रहेलुं छे, अने ते मुजव 'चारण' शब्दनुं मूळ पण क्रियावाचक धातु 'चर्'मां रहेलुं छे. 'चर्' धातु गति बतावनार छे. तेनो अर्थ थाय छे - जबु', चालबु' वगेरे. 'चल' धातुना Causal प्रेरक " 'चार' उपरशी बन्यो छे. 'चारयन्ति कीर्तिम; विद्याम् ज्ञानम् वा इति चारणः ।'" चारण शब्दनो आ अर्थ शास्त्रोक्त पीठिकाने अनुरूप छे. शास्त्रोमां चारणोनां वर्णनो छे, ते परथी चारण एट्ले कीर्तिने प्रसरावनार, धर्म-नीतिनो प्रचार करनार, सत्यनुं आचरण करनार के देवी प्रवृत्ति करनार कोई देव अथवा महर्षि. चारण शब्दनो आ अर्थ सर्वत्र सुप्रसिद्ध छे."

कविराजा श्री मुरारिदानजी : "कहां है चितामणि केशकारने 'चारयति कीर्तिमिति चारणः । देवानां स्तुतिपाठके' कीर्तिको संचार करानेवाला अर्थात फेलानेवाला यह चारण शब्दका अक्षरार्थ है." (जसवंत जसोभुषण पृ. १६)

श्री पुष्कर चांद्रवाकर : " 'कीर्तिना संचार करनार ते चारण'"
कर्नल जोरावरसिंहजी : " चारणनो अर्थ दरेक स्थले फरीने राजपुतोने उपदेश आपवो एवो पण थाय छे."

श्री मेरुभा मेधाण्ड गढवी : " 'चारण' एट्ले निर्मलता-निलेपता, गुणग्राहिता अने पुरुषार्थनुं जीवंत स्वरूप."

श्री पुरेहित गोरीशंकर गोविंदजी : " 'चर्' धातुशी 'चारण' शब्द सिद्ध थाय छे. 'चर्' गतिवाचक छे. गति आपनार,

गतिमां भूकनार पटले धर्म कर्ममां प्रचुरि करनार, करावनार,
उत्साह अपावनार, कीर्ति फेलावनार इत्यादि 'चारण' शब्दनेा
अर्थ थाय छे.

'चा'= 'चाह' अने 'रण'=रण संग्राम अर्थात् 'रण संग्रामनी
चाहना' उत्पन्न करावनार चारणो

चारणो धनुर्वेद भणेला, अन्यने भणावनार, लडनार, सिधुडो
आदि वीर काव्यो गाई कायरोने पण समशेर पकडावीने
रणसंग्रामनी चाह उत्पन्न करावनार ते चारण.

चारणो जे समये जे रस जोईतो होय ते रसने प्रगट करी
गतिमां भूकनार वाणीना आचार्य हता. चारण वाचस्पतिथो
क्षत्रियोने दूर दानमां योजता हता. सिहोने स्वस्वरूपानुसंधान
करावता, प चारणो मंत्र दृष्टा हता, अने मंत्र सिद्धिने पामेला
हता, सूत्रोना भाष्यकार हता, वीररसना उद्गाता अने मुडदांओने
पण सिधुरागथी जगाडनार हता, प चारणो स्ववर्म अमृत पीनार
अने पानार, सुलेह संपनी पुष्टि करनार अने गरवीष्टनो गवे
उतारनार तेमज दुष्टोनुं दमन करनार हता; वाक्शूरा हता,
वाक दंड वडे वक्त पुरुषोना घमंड उतारनार हता, सृष्टिनुं
सौंदर्य तावश बतावनार हता; अने भूतकाळमां थई गयेल जति,
सति अने शूराओनी चरित्र गाथा वर्तमानमां तावश बताववा
समर्थ हता. जेना जशमां जरा पण ज्ञांखप आवी नथी.

जयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धाः कविश्वराः ।

नास्ति येषां यशः काये, जरा मरणजं भयं ॥

चारण तप, विद्या, वल, धैर्यनी मूर्तिथो हता. जेमां अनेक
सद्गुणोनो समुच्चय होई ते देवकुल चारण कहेवाय." (चारण
धर्म अने जागृति)

पंडीतवर श्री सुखलालजी : 'सर मोनियर विलियम्से चारण शब्दना जे अर्थो पोतानी 'ए संस्कृत-इंग्लीश डिक्सेरी'मां (पृ. ३०३) आप्या छे, ते शाख्य शुद्ध छे. (१) वैदिक पाठशालाभोमां जे वेद-शाखाओ भणावाती तेमांधी जे शाखानो जे अध्येता के जाणकार होय, ते ते शाखानो कहेवाय, जेमके काठक, कालापक इत्यादि शाखा पट्टले चरण; तेथी काठक ए चारण. (२) जेओ स्थानांतर करता रहे तेओ पण चारण. (३) दृत अने जासूसनु' काम करे ते चारण [नोंध : "दृत अने जासूस माटे चारण शब्द प्रयुक्त थयो होय तो ते गुणवाचक होई शके."]

"जासूसनु" काम करनार गमे ते वर्ण के व्यक्तिने प लागु करी शकाय परंतु प कोई जातिविशेषबोधक न बनी शके."— श्री पिंगलशीभाई पायक.] (४) जेओ पशुपालन ने पशु चराववानो धंयो करी आजीचिका करे ते पण चारण. आवा चारण शब्दना 'चर' 'चार' धातु उपरथी उपजावेलां अर्थो काल्पनिक नथी, पण ते वास्तविक छे. आ उपरांत जैन, प्राकृत-संस्कृत साहित्यमां पण एक चारण वर्गनो खास उल्लेख मळे छे, जे मोनियर विलियम्सना केयमां संगृहीत नथी. जैन ग्रंथोमां जणाव्या प्रमाणे वे प्रकारना चारण मुनिओ मनाय छे. 'विद्या चारण' अने 'जंघा चारण' आ वने प्रकारना चारणो विद्या अने तपशक्तिथी आकाशमार्गे दूर दूर जवानु' सामर्थ्य धरावता एवां वर्णन मळे छे. ते काठमां आवा आकाशमार्गे हजारो अने लाखो माईल उडी जनार हशे के नहिं, ते आपणे नथी जाणता, पण प जैन वर्णनमां एक एवुं सत्य छुपायेलु' लागे छे के जे वैदिक अने पौराणिक व्याख्या साथे तदन सुसंगत छे. ते सत्य एकले विद्या धारण करवी अने दूर दूरना स्थानांतरोमां विवरण करवु'. मोनियर विलियम्से आपेल अर्थोमां एक अर्थ आपणे एवो जोईप छीप के जे वेद विद्यानी शाखा साथे सबंध धरावे छे; अने वीजो अर्थ एवो पण जोईप छीप के जे स्थान-स्थानांतरना भ्रमण साथे सबंध धरावे छे.

ए विद्या सबंध अने स्थानांतरेना भ्रमणनेा सबंध, जैन कथाकारेण अने ग्रथकारेण पोतानी परंपरामां जूदी रीते सूचव्यो होय तो ना नहीं, गमे ते हो, पण बधु जातां अने विचारतां चारणवर्ग परत्वे विशेष ध्यान खोंचे एवी वे त्रण बावतो तो स्पष्ट तरीज आवे छे.

- (१) ए वर्गनेा कोई जातनी विद्या साथे परंपरागत सबंध रहेतो.
- (२) ए वर्ग मात्र विद्या अने गान-अभिनय आदि कलाने ज नहोतो पोषतो, पण ते पशुपालन अने संवर्धन जेवां थ्रम साध्य सादां गणातां कमेनि पण पोतानो धर्म लेखतो.
- (३) विद्या अने थ्रमना सहज मेलधी ए वर्गमां सत्यनिष्ठानो गुण पण विशेष प्रमाणमां खीलेलो देखाय छे. जे स्वावलंबन अने वाहुबलना विश्वास सिवाय खीली न शके.” (कागवाणी)

१.४ मनुस्मृति, अमरकोशमां चारणः-

मनुस्मृतिमां नवमां अध्यायनां दण्ड विधानना प्रकरणमां ‘चारण’ शब्दनो उल्लेख “नेष चारण दारेषु” अने अमरकोशमां “भती इत्यापि नटाः” तेमज भागवतपुराणना चोथा स्कंधमां पृथुचरित्रमां “अन्तर्वेदश्च भूतानां परश्यन् कर्माणि चारणैः।” आ शास्त्रोमां दर्शावेल चारण शब्दनो अर्थ सांप्रत समयनी चारणजाति साथे सबंध धरावतो नथी. आ अंगे चारणजातिना महाअभ्यासीओप सर्वसंमत निर्णय आयो छे.

आ अंगे श्री पिंगलशीभाई पायक लखे छे के “जे रीते ब्राह्मण शब्दना गुणवाचक तथा जातिवाचक पम वे अर्थ थाय छे. गुणवाचक तरीके ब्राह्मण पटले “ब्रह्म” जानाति इति ब्राह्मणः।” ब्रह्मने जाणे ते ब्राह्मण. आवी रीते ब्रह्मने जाणनार गमे ते

जातिनो होय तो पण ब्राह्मण थई शके. अने आ व्याख्या मुजब
ब्रह्मने जाणनार जाते ब्राह्मण न होवा छतां ब्राह्मण थया होय
तेवा अनेक दाखला हिंदुशास्त्रोंमां छे. ब्राह्मण शब्दनो वीजो अर्थ
जातिवाचक तरीके अटले के “ब्रह्मणः अपत्ये पुमान् ब्राह्मणः।”
ब्रह्मानो पुत्र ते ब्राह्मण. आ जातिवाचक शब्द गुणवाचकनी
साथे ऐक्यवालो नथी ज. जन्मथी अने जातिथी ब्राह्मणो ब्रह्मने
जाणता नथी होता.

आवीज रीते चारण शब्दना पण जातिवाचक अने गुणवाचक
अर्थो छे. गुणवाचकमांथी जे सारो अर्थ ब्रह्मण करवामां
आवे छे, ते हालनी चारणजाति, तेनी वर्तण्क, आचार,
शील, व्यवसाय बगेरेने तथा तेना पूर्वजोने इतिहासने दृष्टिमां
राखीने तथा शास्त्रोनां प्रमाणो साथे प सुसंगत होवाथी ज
ब्रह्मण करवामां आवे छे. ज्यारे गुणवाचकमांथी खराव अर्थ
चारणजातिने लागु पाडवामां नथी आवतो तेनु कारण पण
एज के हालनी चारणजातिना शील, संस्कार, तेना पूर्वजोना
इतिहास अने शास्त्रो तथा ग्रंथोनी साथे ते बंध बेसतो नथी.

ए ब्रणे ग्रंथोमां वपरायेल चारण शब्दने जातिवाचक मान-
वाथी जे कोई चारणजातिनु वर्णन करवामां आव्युं होय ते
चारणजाति हलका शीलबाली रखडती-फरती जाति होवी जोईप.
ऐक बाजु रामायण, श्रीमद्भागवत, अन्य पुराणो तथा शास्त्रो,
जैनधर्मना ग्रंथो, इतिहास ग्रंथो बगेरेमां पक पवी चारणजातिनु
वर्णन करवामां आव्युं छे के जे देव केटिमां उत्पन्न थयेली हती,
अने ते वेदशास्त्रोनो अभ्यास करती, विद्यानो प्रचार करती,
काव्य कविता करती, ऋषि-मुनिओनु जीवन गालती, देवताओनी
स्तुति करती, राजाओ-क्षत्रियोथी सन्मान पामती अद्भुत आत्म-
त्याग तथा सत्यनु दृष्टां पूरु पाडती अने पक निष्ठावाली,
एक वचनी, धर्मप्रिय, शान्तिप्रिय अने बहादूर हती. जेमांथी पूर्वे

दशांविल चारणजातिनी हालनी चारणजाति वंशज छे. आ बाबतमां कोई सहेजे पूछे के बे जुदा जुदा गुण आचरणवाली छतां एकज नामवाली जातिओ होय ए बराबर जणातुं नथी. उत्तरमां अमे जणावीशुं के जुदा जुदा गुण-आचरणवाली छतां एक ज नामवाली एक नहिं बे नहिं पण अनेक जातिओ छे. अने ते मुजब जुदा जुदा गुण-आचरणवाली छतां एक नामवाली बे चारणजातिओ होई शके. [नोंध : जो के रीते एकज चारणजाति शास्त्रो-इतिहासोए वर्णवेली हती अने छे. बीजी कोई हती पण नहिं अने छे पण नहिं.]

आ शास्त्रोना शब्दना अधेनि व्याकरणनो, शास्त्रोनो के भूतकाळनी अथवा वर्तमानकाळनी चारणजातिना आचरणनो देको मल्हतो नथी. पटले ते अग्राह्य छे.” (चारण)

राष्ट्रीय शायर श्री झबेरचंद्र मेधाणीजी आ विशे लखे छे के “चारणो पटले ‘कुशीलवा’ ‘भटकता नटो’ पवो अर्थ अमर-केशमां अपायो छे, तेनी सामे राजपूतानानौ आखो मध्ययुग चारणोना कीर्तिसागरनुं महागर्जन संभलावतो उमेा छे. चारण पटले गढवी, राजाओनी गढकिल्लानी चारीओनो प रखेवाल्ह हतो, अने दृष्टितो तो पम दाखबनारां पण मले छे के पर आंगणे रहेता राजपुत्रोना ब्रह्मचर्यनी चोकीदार पण चारण ज हतो, प युवानोना वज्रकछोटानी चारी चारण पासे रहे, चारण आवीने खाले त्यारेज परदेशवासी क्षत्रिय युवान हाजते जई शके.

चारण पटले राज्यो राज्यो वच्चेनो सांघिविग्राहक, प्राणने भोगे पण राजकोल अने राजरक्षानो हामी. कंपनी सरकारना प्रतिनिधि बोकरसाहेबे लखावेल हाथमुचरकामां पण राजाओनी सारी चाल चलगतना जमानारूप चारणनी कटारीनुं नित्र साख पूर्खुं हङ्कुये अंकित छे. पेतानी साख जूठी पडे तो चारण कटारी पेट नाखे-हाराकीरीनोज उच्च आदर्श !

चारण अने रजपूतानी ठकरात बच्चेनो सबंध मशहूर छे.
राजवल्लाना वसनार तरीके एनी रीत रखावट विशे देहा छे के:

गुंजब्रेरा, द्रव्य अंधला, झुँझण बेलायनंद;
राजदुवारे बेंडला, सो लक्षण कवियंद.

[अर्थात् : दूषी वातो परत्वे केम जागे बहेरा होय, जाणे कदी
सांभलयुंज न होय तेबी अदाथी पर रहस्य साचवनारा, द्रव्यना
ढगला पडव्या होय तेनी सामे अंध समा, राजमहेलोनी रमणीओ
परत्वे उत्तेजनाहीन, युद्धमां पुत्रवत् फरज बजावनार-पचां जेनां
लक्षणो होय ते कवि-चारण.]

शूरवीरनां विरद गानार, कायरोने रणशोर्यथी रोमांचित
करनार, तूटती टेकने टकावी जाणनार, चमरवंधी पापीने पण
मोढामोढ पापी कहेनार, शरणागतने संघरवामां राजरोपनी पण
खेवना न करनार अने गाय जेबो अमारि धर्म पाळनार छतां
जरुर पडे तो जुधे पण चडनार, स्वामीने खातर शब्दो धरीने
संग्राममां उतरनार वीर चारण करणीदाननुं दृष्टांत राजपूतानी
तवारीखमां घणुं उज्जवल छे.” [चारणो ने चारणी साहित्य]

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा. किशोरसिंहजी सौदाना जणाव्या
मुजब : “चारण शब्दकी दो प्रकार से निरूपि हो सकती है
(१) चारयन्तीति चारणः और (२) चरन्ति चारणः।

इनमें से प्रथमका अर्थ नेता, संचालक प्रचारक और दूसराका
भटकनेवाला (धुमकड) अर्थ हो सकता है। प्राचीन काल में
देश का नेतृत्व करने के लिये अथवा देशभक्ति को प्रेतसाहन
देने के लिये एक खास जाति ‘चारण’ नाम से प्रसिद्ध थी और
दूसरी चर्तमान काल की ‘नट’ ‘सासी’ ‘संपेरा’ आदि निकृष्ट
व्यवहार द्वारा पेट भरने वाली जाति भी चारण नाम से
संबोधित हो सकती है। बहुत से शब्द मिलते हैं जैसे गो-

शब्द का अर्थ भूमि और गाय तथा इन्द्रियाँ होता है। दूसरे प्रकार के भट्टकने वाले चारणों का उल्लेख मनुस्मृति के नवें अध्याय में 'नैष चारण दारेषु' और अमरकोशमें 'भर्ता इत्यापि नटाः' आदि शब्दों में किया गया है। चारण जाति में प्रयुक्त चारण शब्दका अर्थ नेता, संचालक व अगुआ से है।"

(अखिल भारतीय चारण सम्मेलन
चतुर्थ अधिवेशन - विवरण रिपोर्ट)

१.५ आत्मोन्नतिनो पथप्रदर्शक :-

'चारण' शब्द प 'चार' आनुमांथी वनेल नाम छे। 'चार' पटले गति करवी ते परथी 'चारण' पटले के गति करावनार अने तेनु कारक 'चारण'. चारण पटले विश्वनु कल्याण थाय अने बहुजनसमाज सन्मार्गो वले अने सर्वेन सुख अने शांति मले पवेस सरल अने सादेह ईलाज बतावनार पथप्रदर्शक, चारण पटले उन्नतिनो मार्ग मार्गदर्शक वननार, सन्मार्गनो सहप्रवासी वनी राह दींधनार कुशल मोमियो. आबु कार्य तेज तेज करावी शके जे पेते थे मार्गनो कुशल प्रवासी होय, थे पंथनो जाणकार होय उपरांत शुभदर्शनि शुभप्रेरक होय, क्यां जबु छे? क्ये रस्तेथी जबु सानुकुल छे? झडप केटली राखवी जोईथे? अनी सर्व खूबीओ अने वारीकाईओनो जे अनुभवी होय, तेज जीवनपंथमां आगल मोकली शके. चारणजातिनी संसारमां आ कार्य माटे ज उपयोगिता हती अने छे. समर्पण मासिकना अप्रिल १९७२ ना अंकमां शीख लेखक श्री नानकसिंह लखे छे के "गुरुनानकदेवे पेताना अनुयायीओने कहुँ के, आपणे धर्म पुस्तक लखबुँ छे तो अने माटे आपणे क्या मुहाओ लेवा जोईथे? अनी विचारणा करवाने अंते ४० टका चारण कवियो अने विद्वानोनी कृतियो ग्रंथ साहेबमां लेवानु नक्की थयुँ अने थेबी कृतियो लेवामां आवी।"

चारण प्रथम तो ये स्वयं आत्मशुद्धि करते अने पछी जनिराभिमान भावे बीजाओने मददरूप बनते। चारणकृष्णिओनुध्येय आत्मोन्नति परम विशुद्ध अद्वैतभावनु आचरण ने सर्व जीवमात्रनु जल्याणनु रहा छे। उच्च आदर्शेनि, परमोत्कृष्ट भावनाने जे पोताना जीवनमां उतारे अने बीजाओने पण ये परम ध्येय तरफ लई जवा माटे प्रगति करावे ते ज वास्तविक अर्थमां 'चारण' छे। आवा दृष्ट चारण महान साधना करी सिद्धि प्राप्त करता, भगवती मा शारदानी उग्र अतृट उपासना करी साहित्यनु सर्जन करता, आ साधनाओमांथी चारणनां हृदयमां उदारता, विशालता, सत्यता अने प्रेमनी गंगा-यमुनाओ वहेती। आ वहेती सरिताओमां गतिशील समाज प्रगति करते, आश्री परमतत्त्वनी गतिमां प्रगति करावे ते चारण।

१.६ विद्रानेनी द्रष्टिए चारण :-

"चारणो भले देव कोटीना हो के न हो, परंतु मनुष्य कोटीना तो छे ज। एक वेळा तेमनामां भारे शक्ति हती, प आजे पण अज्ञात कृपमांथी नीकलीने फरी प्रगटावी शके छे।"

- महात्मा गांधीजी।

"चारण जाति ज राजाओने सत्य हकीकत कही शके छे, तेथो वया करतां श्रेष्ठ छे।"

- सर प्रभाशंकर पट्टणी।

"चारण जातिकी महत्ता सत्यकथन, वीरत्व, नीलेभिता और ईन्द्रियनिग्रह पर ही प्रतिष्ठित है।"

"चारण जाति विद्या आदि सब वातो में हमेशां क्षत्रियोंकी अगुआ रही है, और इस जाति के सदुपदेश से क्षत्रियों का समय पर उपकार होता ही रहा है।"

- महाराजा बलभद्रसिंहजी

"चारण जाति हमेशां से क्षत्रिय जाति की पथ प्रदर्शक रही है"

- श्रीमान महाराजा रामसिंहजी सीतामऊ,

“यह चारणों के परम पराक्रम, सत्यता और बुद्धिमताका ही प्रताप था कि शत्रिय जाति शतांच्छियों तक राज्य कायमँ रख सकी”

— डा. सा. केशरीसिंहजी.

“चारणोंमां इश्वरदत काव्य शक्ति छे. ए वात निर्विवाद छे. ए शक्तिने केलववानी खास जरुर छे; परंतु अत्यारे तेने माटे पुरतां साधनो नथी माटे तेवां साधनो तैयार करवानी मुख्य जरुर छे. ए साधनो द्वारा चारण बालकोने हिंदुस्ताननी मुख्य भाषाओनुं ज्ञान आपतुं जोईथे.” —डा. टी. अन दवे.

“चारणो हमेशां सत्यवक्ता, नीति परायण, शूरवीर अने कर्तव्यनिष्ठ हता. तेमज साचा समाज सेवक हता. तेमना आलक्षण्योना अनेक दाखलाओ इतिहासमां मले छे. चारणो राजाप्रजानो, पिता-पुत्र तरीकेनो प्रेम जालबी राखवाना सबल साधनरूप हता. भूतकालमां राजाओने आकरा साचा शब्दो कहेवाने ज्यारे कोई वर्ग समर्थ न हतो त्यारे चारणोथे ते कार्य विना संकोचे अने नीडरपणे कर्यु छे, ते वात इतिहास लिद्ध छे”

सोरठीवीर छेलदांकरभाई दवे.

“चारण गमे तेवो होय तो पण अमारे पूज्य छे. चारण अमारी कीर्ति गाय तेथी श्रेष्ठ नथी पण अमारा उपर अंकुशरूप छे, तेथी अमे श्रेष्ठ गणीओ छीओ.”

—केण्ठन जोरावरसिंहजी पन्ना स्टेट.

तमारामां देवीओ प्रगट थई छे, तमारामां ईश्वरनां भक्तो अने मोटा कविओ उत्पन्न थया छे. तमारा अे भूतकालीन दिवसेनो उज्ज्वल वारसो साचवी राखजो.

मने आशा छे के तमारी ज्ञाति द्वारा थेक दिवस हिंदुस्ताननो उत्कर्ष थवानो छे.” —वेणीरामभाई भट्ट.

“चारणो भारतवर्षमां देवदरवार, राजदरवार अने लोक-दरवारमां सर्वेत्र सन्माननीय छे, अने सर्वेत्र तेमनां माहित्यनुं

जगत्सने भाजाथाय ते जोवानी मारी महेचला छे.”

-गोकुलदास द्वारकादास रायचुरा; तंत्री-शारदा

“गमे तेवी घेर निद्रामां समाज सूतो हशे पण मने खात्री
छे के अेक दिवस चारणो समाजने जगाडशे.”

-विदुषी बहेन श्री सर्वीतावहेन नानजीभाई महेता.

“चारणो आर्यवित्तनी संस्कृतिना रक्षको छे. आपणा आयोनां
केटलाक शास्त्रो नाश पाम्यां छे, केटलाकनुं तो आजे नाम निशान
पण मळतुं नथी, परंतु चारणोथे रचेलां काव्यो तो अेवां छे के
जेनो कदी नाश थतो नथी, अतो हमेशां जीवतां रहां छे.

चारणोथे मानव जातिना शक्तिनां माप काढ्यां छे. अने
तेने बताव्युं छे के तारामां आटली शक्ति छे; आ कार्य
तुं जरुर करी शक्तिश, अेवा अनेक दाखलाथो छे के ज्यारे
देशपालक कोई पण राजपूत सन्मार्ग भूले के पाते शुं करबुं
अेवा विचारना बमळमां दिग्मूढ बने त्यारे चारणोथे तेने
सन्मार्ग बतावी, तेनी शक्तिनुं भान करावी देशनी तथा राजानी
अम बन्नेनी सेवा अेकी साथे बजावी छे.

ज्यारे दरेकने माथे जवावदारी आवे छे त्यारे पोतानी
शक्ति विषे तेने शंका थाय छे. आवे बखते तेने तेनी शक्तिनुं
भान करावनार खात्री करी आपनार कोई भव्य व्यक्तिनी जरुर
पढे छे. भूतकालमां अेवी भव्य व्यक्तिओ चारणो हता, अने
हजु पण छे. अ सत्यवक्ता अने शामधर्मी चारणो साचा देशसेवक
तथा जनकल्याणनी पुरातन प्रतीमाओ ज कहेवाय अने अे
लक्षणोश्ची तेओ देव ज्ञाति गणाय छे.

विचारपूर्वक जोईप छीप तो स्पष्ट देखाय छे के
चारणो आथ्रित न हता, याचक न हता परंतु चारणो
देशद्रोहीओनां जडवां तोडनार गोळा हता, चारणो देशपालक
राजपूतोने तथा अङ्गान निद्रामां सूतेला समाजने प्रमादनी

निद्रामांथी जगाडनार भालानी अणीओ हता. चारणो वीर पुरुषोमी तलबारोनी तीक्ष्ण धारो हता. ए हता भारत रक्षक महात्मा चारणो. मने आप सौने जणावतां घणो हर्ष थाय छे के ए महात्मा वीर चारणानुं रक्त आज पण तमारी नसेामां वही रहुं छे.”

—देशनायक कृष्णकांत मालविया.

“चारण पटले मोटो प्रचारक ते राज दरबारमां होय के नेसदामां तेणे तो तेनी फरज बजाववी जोईप वातां कहीने, काव्यो अने गीतो संभळावीने, कायरने शूर बनाववा, हारेलाने हिम्मत आपवी, भूलेलांने मार्ग बताववो अने निराशने आशा आपवी पज तेनुं कर्तव्य, तेणे स्थान जोवानी जरूर नहि, तेणे विचार करवो नहि, स्पष्ट कहेवुं, सत्य कहेवुं, प्रिय कहेवुं अने नीतिनो वेध करवो.”

—इतिहासविद् श्री शंभुप्रसाद् देशाई.

“चारणो की जाति भूतकाल में शासक जाति को नेतिक बल की सहायता प्रदान करने का स्रोत बनी रही है यह सहायता किसी भी भौतिक सहायता से बहुत महत्वपूर्ण है। युद्ध के समय में एवं अन्य राष्ट्रीय आपत्ति के अवसरों पर चारण जाति के सभ्यों द्वारा परामर्श, पथप्रदर्शक, एवं प्रेतसाहन पाकर ही राजपूत अपने शीर्य एवं मान प्रतिष्ठा के परंपरागत पवित्र आदर्शों को निभा रखने में समर्थ हुए थे जिनके ऐतिहासिक संस्मरण उन्हें सारे संसार में विख्यात कर रहे हैं।”

—ठा. सा. चैनर्लिंहजी चाँपावत जोधपुर.

“चारण जाति राजपूतोंसे भी अधिक वीर थी यदि ऐसा न होता तो उनके वाक्यों से कायर राजपूतों में वीरता का संचार होना असंभव था.”

—महाराजा बलभद्रसिंहजी.

“चारणो पुराणा जमानामां ऋषिमुनिओानुं जीवन जीवतां तथा हिमालयादि पर्वतोमां रहेता. धर्मशास्त्रोमां तेमनी गणना “देवो” तरीके करवामां आवी छे. २४ अवतारोमांना पृथुराजा

वगेरे क्षत्रियोंथे तेमने मानपूर्वक निमंत्रीने पोताना विश्वनीय सलाहकार बनावी भारतवर्षमां वसाव्यानुं धर्मग्रंथोमां लखायेलुं छे.

चारणो धर्मनीति अने राज्यनीतिना जाणकार, सत्यना आग्रही, संयमने शीलने वरेला तथा काव्य-साहित्य-इतिहासना विद्वान हेवाधी राज्यव्यवस्थामां, राजा-प्रजा वच्चेना सनातन संवंधो दृढ करवानी मजबूत कडीरूपे तेमणे हजारो वर्षो सुधी काम कर्युं. धर्मस्वातंत्र्य अने प्रजारक्षण अर्थे वलिदान आपवानां अमृत अेमणे पोते पीधां अने क्षत्रियोंने पण पायां. अेमणे सत्याग्रहनी विशिष्ट परंपरा प्रस्थापित करी जे अमोघ शख्त आजे लाखो वर्षो बाद अेटम बोांचना जमानामां पण ऊँची किंमतनुं अंकायुं छे, अने अंकाय छे. आ शख्त वडे ज चारणो क्षत्रिय राजकर्ता-ओने साचा राहे चलावता अने तेथी ज पश्चिम भारतना सवे भूतपूर्वे राजारजवाडामां चारणोनुं स्थान मानभयुं घनिष्ठ, विश्वासभयुं, आमजन भाईओ जेबुं रहेतुं आवेलुं जेनी इतिहास साक्षी पूरे छे. आ माटे ज चारणो अंगे अेक प्राचीन देहा सुप्रसिद्ध छे के :

गुज वहेरा, द्रव्यांधला, झुँझण वेळ अनंद
काछदाढा, करबरसणा, सो चारण कवियंद.

—पिंगलशीभाई पायक (कच्छ दर्शन)

“चारण भारतीय संस्कृति के उद्योगक ही नहीं, उसके मूल तत्त्वोंके प्राणपण से रक्षक भी रहे हैं। शख्त और शाख दोनों पर उनका आसाधारण अधिकार रहा हैं।”

—डा. भगवतीप्रसादसिंह गोरखपुर युनिवर्सिटी, गोरखपुर.

“चारण जातिने अपने उन जीवन के बेहद प्रभावित किया है और राष्ट्रीय अस्मिता की बुलंदी बनाये रखने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।” —डा. गोवर्धन शर्मा-भूज.

[2] वैदिक, पौराणिक अने अन्य शास्त्रोमां चारण.

- २-१ वैदिक वाङ्मय
- २-२ पौराणिक लौकिक महाकाव्यमां चारण
- २-३ पुराणमां चारण
- २-४ संस्कृत साहित्य-सुवर्णयुगनां ग्रन्थोमां चारण
- २-५ जैन ग्रन्थोमां चारण
- २-६ स्वामीनारायण संप्रदायनां ग्रन्थोमां चारण
- २-७ प्रकीर्ण

२-१ वैदिक वाङ्मय:-

संस्कृत साहित्य मुख्य वे विभागमां विभक्त छे. वैदिक अने लौकिक. वैदिक साहित्यमां चार वेद उपरांत वेद विषयक समस्त वाङ्मय साहित्यनो समावेश थाय छे. लौकिक साहित्यनो उद्भव रामायण अने महाभारतना आदि महाकाव्यथी मानवामां आवे छे.

वेदना चार विभागो छे संहिता, व्राह्मण, आरण्यक अने उपनिषद. संहिता विभागमां स्तुतियोने मंत्रमां संग्रह करी, तेने चार खंडमां विभक्त करी छे. ऋक्, साम, यजु अने अथवै. आ पैकी यजुर्वेदमां 'चारण'नो उल्लेख करवामां आव्यो छे.

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः । ब्रह्मराजन्याभ्या ऽहं
शुद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय । प्रियो देवानां दक्षिणायै
दातुरिह भूयासमये मे कामः समृध्यतामुप मादेष नमतु ॥ २ ॥

मनुस्मृतिः

स्मृतिओ प्राचीन ऋषिओ तरफथी मलेलो ज्ञान वारसो छे.
आ ग्रन्थो धार्मिक अने लौकिक व्यवहारने लमता छे. ते ग्रन्थो
ऐकी मनुस्मृतिमां 'चारण' शब्दनो उल्लेख थयो छे.

चारेणात्साहयोगेन कियोऽव च कर्मणाम् ।

स्वशक्ति परशक्ति च नित्य विद्यान्महीपतिः ॥ अ. ९ ॥ २९८ ॥

२.२ पौराणिक लौकिक महाकाव्य :-

रामायण अने महाभारत लौकिक साहित्यनी आद रचनाओ
छे. आ रचनाओने फक्त काव्य न कहेता भारतीय संस्कृति,
समाज, धर्म, दर्शन, अर्थशास्त्र तथा विद्याशास्त्र आदि विद्या-
आनेसे सर्वाङ्गीण आधार ग्रन्थो छे. पौराणिक महाकाव्योमां आ
ग्रन्थोने स्थान आपवामां आव्यु छे. वाल्मीकि अने व्यासजीने
आपणा राष्ट्रीय आदशेने भावात्मक स्वर आपवावाळा महान
क्रान्तदृष्टा कवि मानवामां आव्या छे. रामायण अने महाभारत
जेवा पौराणिक महाकाव्यमां 'चारण'ना उल्लेख सर्वत्र जोवा मले छे.

वाल्मीकि रामायण :

ऋण्यश्च महात्मानः सिद्धविद्याधरोरागः ।

चारणाश्च सुतान्वीरान्सुजुर्वनचारिणः ॥ ९ ॥ सर्ग १७ बाल.

वहवो जनयामासुर्यप्रस्तत्रस्त्रहस्तशः ।

चारणाश्च सुतान्वीरान्सुजुर्वनचारिणः ॥ २३ ॥ सर्ग १७ बाल.

निहत्य दितिपुत्रांस्तु राज्यं प्राप्य पुरन्दरः ।

शशास सुदितो लोकान्सर्पिसद्वान्सचारणान् ॥४७॥ सर्ग १७ बाल.

पवसुकत्वा महातेजा गौतमो दुष्टचारिणीम् ।

इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारणसेविते ।

द्विमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेषे महातपाः ॥ ३३ ॥ सर्ग ४८ बाल.

अफलस्तु ततः शको देवनश्चिपुरोगमान् ।
 अव्रवीत्वस्तनयनः सिद्धगन्धर्वचारणन् ॥ १ ॥ सर्ग ८९ वाल
 तन्मां सुरवरा सर्वे सपिसंघाः सचारणाः ।
 सुरकार्यकरं यूयं सफलं कर्तुमहंथ ॥ ४ ॥ सर्ग ४९ वाल
 वशिष्ठस्याश्रमपदं नानापुष्पलताद्रुमम् ।
 नानामृगणाकीर्ण सिद्धचारणसेवितम् ॥ २३ ॥ सर्ग ५१ वाल
 देवैस्तदा समागम्य सर्विसहस्रै सचारणः ।
 याचितौ प्रथमं तत्र जगमुतुस्तौ सुरोत्तमौ ॥ १९ ॥ सर्ग ७१ वाल
 गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धचारणाकिनराः ।
 यक्षराक्षसनागश्च तददुष्टं महदस्युतम् ॥ १०॥ सर्ग ७६ वाल
 जित कामैश्च सिद्धेश्च चारणैश्चोपशोक्षितम् ।
 आजौ धैरवानसैर्मणैबलिखिल्यैर्मरीचिनै ॥ ११ ॥ सर्ग ३५ अर.
 वैद्याप्त्विमायां वभूव वरुणालयः ।
 अन्तरिक्षगता वाचः ससृजुश्चारणास्थलथा ॥ १० ॥ सर्ग ५४ अर.
 गिरिः पुष्पितको नाम सिद्धचारणसेवितः ॥ २८ ॥ सर्ग ४१ किञ्चि
 स तथा चिन्तयंस्तत्र देव्या धर्मपरिव्रहम् ।
 शुश्राव हनुमस्तत्र चारणानां महात्मनाम् ॥ २९ ॥ सर्ग ५१ सुन्द.
 इति शोकसमाविष्टश्चिन्तामहमुपागतः ।
 ततोऽहं वाचमश्रीणं चारणानां सुभाक्षराम् ॥ १६२ ॥ सर्ग ५८ सुन्द.
 क्रपयश्च महान्तेष्वि गन्धर्वाश्च यशास्विनः ।
 ननुनाम ततोऽगच्छारणाश्च दिशोगताः ॥ ४ ॥ सर्ग ११३ युद्ध.
 नित्यं यत्र स्थिताः सिद्धश्चारणाश्चमनस्विनः ।
 दशैव तुं सहख्याणि योजनानां तथैव च ॥ ५ ॥ सर्ग ८ उत्तर.
 वध्यमाने दशश्रीवै सिद्धचारणदेवताः ।
 साध्वीतिवादिनः पुण्यैः किरन्त्यज्जुनमूद्रैःनि ॥ सर्ग ३२ उत्तर.

अे वर्णननेत्र सारांशः

वालकांडः १ देवोथे जेवी रीते पोतानां अंशोधी वानरो

सृज्या तेम चारणोअे पण पोतानां अंशोधी वानरपुत्रो सृजवानुं वर्णन.

२ पोताना शत्रु दितिपुत्रोने हणीने इंद्रे क्रषिओ तथा चारणो साथे निष्कंटक रीते त्रणे लोकनुं पालन करवानुं वर्णन.

३ अहल्याने शाप आपीने गौतम मुनि सिद्ध तथा चारणोअे सेवेल हिमालय पर्वतना रमणीय शिखर पर जईने तपश्चर्या करवानुं वर्णन.

४ शाप पामेला इंद्रे अग्नि जेमां मुख्य छे अेवा सिद्ध तथा चारणो सहित देवोने (शाप संबंधी) कहेवानुं वर्णन.

५ इंद्रे क्रषिओ तथा चारणो सहित देवी ने विनंति करवानुं वर्णन.

६ वशिष्ठ क्रषिनो आश्रम सिद्ध, चारण, देव, दानव, गंधर्व अने किञ्चरोधी सेवाता होवानुं वर्णन.

७ शिवविष्णुयुद्धनी निवृत्ति अर्थे क्रषिओ तथा चारणो सहित देवोअे प्रार्थना करवानुं वर्णन.

८ परशुरामना तेजनुं आकर्षण थती वखते ब्रह्मादि देवो, क्रषिओ, गंधर्वां, सिद्धो वगोरे साथे चारणो पण अेकत्र थयानुं वर्णन.

किञ्चिकधाकांडः-पूर्वदिशाना समुद्रने पेले पार शोहनाद नामनी राता जळवाळी तथा उतावल्ली नदीनुं सेवन सिद्ध तथा चारणो करे छे. दक्षिण दिशामां लंकाधी पेले पार सिद्धोअे अने चारणोअे सेवेलो पुष्पितक नामनो बहुज सुंदर पर्वत छे. जे बहुज उच्चा छे जेने कृतघ्नी, कुर तथा नास्तिक जाई शकता नधी. तेमज महेन्द्र पर्वतना मनोरम्य स्थलोमां सिद्धो तथा चारणो, देवो, क्रषिओ वगोरे निरंतर विहार करे छे अने इंद्र पण त्यां पर्वणीने दिवसे आवे छे.

सुंदरकांड - (१) हनुमानने लंका बाल्या पछी सीताजी बली गया हशे तेवी शंका थई. ते वस्त्रे तेणे आकाशचारी चारणोनी परस्पर थती वातचीत सांभळी के 'लंका बली गई पण सीताजी बल्यां नथी अे महान आश्चर्य छे'

२ आकाशचारी चारणोनी उपरोक्त वात सांभळी हनुमानने हर्ष थयो अने पछी ते किञ्चिकधा जवा रवाना थया.

३ सीताशोधनुं वर्णन महेन्द्र पर्वत पर रोकायेल वानरो पासे करतां पोतानुं शंकानुं तथा आकाशचारी चारणोनी बाणीथी खातरी थवानुं हनुमानजी जणावे छे.

युध्यकांडः-१ रामचंद्रजीअे सेतु बांधी लंकाने किनारे उतरी पडाव नाख्यो त्यारे देवो, सिद्धो, चारणो तथा महर्षिओ त्यां आवे छे अने आशीर्वाद आपे छे.

२ रावणनुं मृत्यु थवाथी चारणगण सहित देवोना हर्षनेपा र न रह्यो हतो.

श्री महाभारत :

तत्रापि तपसि श्रेष्ठे वर्तमानः स वीर्यवान् ।

सिद्धचारणसंघाना बभूव प्रियदर्शनः ॥१॥ आदि. अध्या. १२०.

तं चारणसहख्याणां मुनीनामागम तदा ।

श्रुत्वा नागपुरे नृणां विस्मयः स्वमपधत ॥११॥ आदि. अध्या. १२६.

देत्याः सुवर्णाश्च महोरगाथ देवर्षयो गुह्यक चारणाश्च ।

विश्वावसुनरिदपवेतो च गन्धवेमुख्याः सहसाप्संशभिः ॥ ७ ॥

आदि. अध्या. १०७.

तव दिव्यं रथं यातमनुयान्ति वरार्थिनः ।

सिद्धचारणगन्धर्वा यक्षगुह्यकपञ्चगाः ॥ ४० ॥ वन. अध्या. ३.

नाना पुष्पफलोपतः नानापक्षिनिपेवितम् ।

नानामृगगणाकीर्ण सिद्धचारणसेवितम् ॥ ५६ ॥ वन. अध्या. ३८.

ददर्श स पुरी रमयां सिद्धचारणसेवितां ।
 सर्वतुंकुसमैः पुण्ये पादं पैरु पशोभिताम् ॥ १ ॥ वन. अध्या. ४३.
 महर्षीणां च संधेषु राजपिं प्रवेश्यु च ।
 सिद्धं चारणयक्षेषु महोरगगणेषु च ॥ २५ ॥ वन. अध्या. ४६.
 तत्र मास वसेद्वीरः सरस्वत्यां युधिष्ठिर ।
 पत्र ब्रह्मादयो देवा क्रपयः सिद्धचारणः ॥ ३ ॥ वन. अध्या. ४३
 नर्मदायां कुरुथ्रेषु सह सिद्धिपिंचारणोः ।
 स्नानुमायान्ति पुण्योधैः सदाचागिषुभारतः ॥ ४ ॥ वन. अध्या. ४४.
 तस्माद्यास्यसि कीन्तेय सिद्धचारणसेवितम् ।
 वहुपुण्यफलं रम्यमाथमं वृषपर्वणः ॥ ५ ॥ वन. अध्या. ४५.
 अभिष्टुतश्च विविधै देवराजपिंचारणोः ।
 आर्चितश्चोतमाद्येण दैवतैरभिनन्दितः ॥ ६ ॥ उद्योग. अध्या. १२३.
 तुष्टिः पुष्टिर्घृतिदीतिपश्चन्द्रादित्यविचर्धिनी ।
 भूतिभूतिमतां संख्ये वीक्षयसे सिद्धेचारणोः ॥ १२६ ॥ भीष्म. अ. २३
 तथा देवाः सगन्धवाः पितरश्चजनाधिप ।
 सिद्धचारणसंघाश्च समीयुस्तदिदक्षया ॥ ७ ॥ भीष्म. अ. ८३
 प्रकाशो च पुनस्तूर्णं वर्भवतुरन्भीरणे ।
 तत्र देवा सगन्धवाश्चारणश्चपिभिः सह ॥ ६३ ॥ भीष्म. अ. ५२
 इति स्म शरतल्पस्थं भरतानां महतमम् ।
 क्रपयस्त्वभ्यभापन्तसहिताः सिद्धचारणोः ॥ १८ ॥ भीष्म. अ. १२०
 सिद्धचारणसंघाश्च विद्याधरमहोरगाः ।
 गतपत्यागताक्षेपैश्चित्रेण्विद्यालिभिः ॥ ३४ ॥ द्रोण. अ. ९८
 देवाश्च युयुधानस्य गन्धर्वाश्च विशांपते ।
 सिद्धचारणसंघाश्च विदुद्रोणस्य कर्मतत् ॥ द्रोण. अ. ६८
 तद्युद्धमासीतुमुलं प्रक्षणीय विशांपते ।
 सिद्धचारणसंघानां विस्मयाभ्यतदर्शनम् ॥ १३ ॥ द्रोण. अ. १०७
 हप्त्वात्भीसेनस्य विक्रमंयुधिभारत ।

अभ्यनन्दस्त्वदीयाश्च संप्रहृष्टाश्चचारणः ॥ १४ ॥ द्रोण. अ. १३७
 सहखाक्षसमं चैव सिद्धचारणमानवाः ।
 भूरिश्चवसमालेक्य युद्धप्रायगतं हतम् ॥१५॥ द्रोण. अ. १४३
 सिद्धदेवर्पिंसंघाश्च चारणाश्वापि तुष्टुवुः ।
 देवन्दुन्दुभयो नेदु पुष्पवर्णाणि चापतन् ॥१६॥ कर्ण. अ. १६
 तुतुषुदेवताः सर्वे सिद्धाश्च सहचारणैः ।
 अपूजयन्महेष्वासा धार्तराष्ट्रानरोक्तमम् ॥३८॥ कर्ण. अ. ७८
 मनुयश्चारणः सिद्धा वैनतेया वयांसिच ।
 रत्नानि निधयः सर्वे वेदाश्वाख्यानं पंचमाः ॥४१॥ कर्ण. अ. ८७
 ततो दप्ट्रा महाराज राजमानौ महारथौ ।
 सिद्धचारणसंधाना विस्मयः समपधत ॥२८॥ कर्ण. अ. ८७
 नैतयोस्तु समः कश्चिदिवि वा मानुषेषु वा ।
 अनुगम्याख्ययो लोका सह देवार्पिचारणैः ॥८०॥ कर्ण. अ. ८७
 लाघवंचाख्यवीर्य च भुजयोश्चबलयुधि ।
 अध पश्यन्तु म पार्थोः सिद्धाश्चसहचारणैः ॥१७॥ शल्य अ. ७
 ऋषिन्धर्वरूपश्चसिध्धचारणरूपधृक् ।
 भस्मपांडुरगात्रश्च चन्द्रार्धकृतभुषणः ॥१९॥ आनु अ. १४
 धनर्दं समतिक्रम्य हिमवन्तं च पर्वतम् ।
 रुदस्यापतने दप्ट्रा सिद्धचारणसेवितम् ॥१६॥ आनु अ. १२
 बह्मन्दरुदमुनि चारणसंस्तुताय ।
 देवोक्तमाय विरजायं नमोऽच्युताप ॥६८॥ गजेन्द्रमोक्ष स्तुति
 प वर्णनेनो सारांशः :

- १ पांडु राजाना मृत्यु पछी पांडवो तथा कुंतीने हस्तीनापुर पहोंचाइवा माटे चारण मुनिओ आवेला.
- २ युधमां भीमसेननुं पराक्रम जोइने चारणो प्रसन्न थयेला.
- ३ तृष्णि पुष्टि आपनारी प्रकाशस्वरूपे धीरजयुक्त औश्वर्यवान देवीनुं सिद्धो अने चारणो पूजन अर्चन करे छे.

४ देवताओ, ब्राह्मणो, संतो, यक्षो, चारणो धर्मनु आचरण करनार छे.

५ चारणनु विचरणक्षेत्रोनु वर्णन.

२.३ पुराण :-

‘पुराण’ शब्दनो सौ प्रथम उल्लेख वैदिक साहित्यमां ऋग्वेदमां जावा मले छे. पुराण शब्दनो अर्थ प्राचीन अथवा पूर्वकालमां थयेनु अेको मानवामां आवे छे. वायुपुराणना मंतव्य प्रमाणे जे प्राचीनकालमां जीवित हतु तेने पुराण कहेवाय छे. पुराणमां पञ्चलक्षण हेवा अनिवार्य छे.

सर्गश्चप्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणि च ।

वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ विष्णुपुराण ३-६-२४.
अथोत् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर अने वंशानुचरित हेवाय तेने पुराण कहेवाय छे.

पुराण भारतीय संस्कृतिनी आधारशिला छे. तेमां भारतीय संस्कार, संस्कृति, साहित्य, इतिहास, भूगोल, रीतिनीति, राजनीति आदि अनेकविध विषयोनो मधुसंचय करवामां आव्यो छे.

प्राचीन कालधीज पुराणोनी संख्या १८ मानवामां आवे छे. ये अढार पुराणमां कुल चार लाख श्लोको आपवामां आव्यां छे. विष्णुपुराणमां पुराणोने जे क्रम आपवामां आव्यो छे, ते सर्वसम्मत मान्य थयो छे. जे क्रम आ प्रमाणे छे. (श्लोकनी संख्या पण साथे आपेल छे) ब्रह्म पुराण-१० हजार, पश्च पुराण ११ हजार, विष्णु पुराण-२३ हजार, वायुपुराण-२४ हजार, भागवत पुराण-१८ हजार, नारद पुराण-२५ हजार, मार्कण्डेय पुराण-९ हजार, अग्नि पुराण-१३ हजार ४ सौ, भविष्य पुराण-

१४ हजार ९ सौ, ब्रह्मवैवर्त-१८ हजार, लिंग पुराण-११ हजार,
स्कन्द पुराण ८१ हजार, वाराह पुराण-२४ हजार, वामन पुराण-
१० हजार, कूर्म पुराण-१७ हजार, मत्स्य पुराण-१४ हजार,
गरुड पुराण १९ हजार तथा ब्रह्माण्ड पुराण १२ हजार.

ब्रह्मपुराण :

गन्धवाण्परसः सर्वेनागा यक्षाः सराक्षसाः

औरिकाः खेचराश्चान्ये किञ्चरा देवचारणाः ॥६६॥

ब्रह्मपुराणना वर्णननेत्रा सारांश :

१ ब्रह्माचे हिमालयमां बसावेली नगरीमां गंधर्वो, अप्सरा,
नागलोको, यक्षा, किञ्चरो तथा देवचारणो रहेचा आव्याजुं
वर्णन छे.

२ हर्षित मनवाळा इंद्र वगोरे देवताओ तथा सिद्धो अने
देवचारणाचे भगवाननी स्तुति कर्यानुं वर्णन छे.

३ शंकरना लग्नमां गंधर्वो, अप्सराओ, नागो, यक्षा, राक्षसो,
खेचरो, किञ्चरो तथा देवचारण आव्याजुं वर्णन छे.

४ देवताओ, गंधर्वो, अप्सराओ, यक्षा, विद्याधरो, नागो,
मुनिथो, सिद्धो तथा चारणाथी बींटायेलां विष्णुनुं वर्णन छे.

पद्मपुराण :

चारणायततः प्रादातैलङ्घदेश मुक्तम् ।

पृथु प्रसादाध्यमात्मा हिंदेय देश मेवच ॥ ८८ ॥ अ. २८

यो वन्धस्त्वुषिसिद्धचारणगणोदैवैः सदा पुज्यते

यो विश्वस्य हि सृष्टि हेतुकरणे ब्रह्मादिकानां प्रभुः ।

यः संसारमहार्णवे निष्पतितिस्योध्यारको

वस्तसलस्तस्यैवापि नमः भ्यह सुचरणौ भक्तयावरौ साधकौ ॥

अ. २९

विष्णुपुराण :

गन्धर्वाप्सरसः सिध्धाः किनरोरग चारणाः ।
नान्तं गुणनायच्छन्ति तेना नम्तोय भव्यय ॥ अ. ५

वायु पुराण :

यक्षमन्धर्वसेव्याश्च सेविता सिध्धचारणैः ।
महावृक्षाः समुत्पन्नाश्चत्वारो दीपकेतवः ॥ अ. ३५/११
सा तथैव महागन्धा हरम्लाना सर्वकामिकी ।
इज्यते समहालगा विविधं सिध्धचारणैः ॥ अ. ३५/३९
मालयदामकलापीश्च विविधोर्गन्धशालिभिः ।
शाखालिम्बी शुश्रुमे सिध्धचारणसेवितम् ॥ अ. ३५/४३
विषुल चम्पकवनं सिध्धचारणसेवितम् ।
पुष्पलक्ष्म्यावृत भाति ज्वलन्तभिवनित्यदा ॥ अ. ३७/१९
तत्सिध्धं चारणं गणेरप्सरो भिश्च सेवितम् ।
रम्यं तत्किञ्चुकवनं जलाशय विभूषिताम् ॥ अ. ३८/३०
उपर्गीतपद्यरगण्डाङ्गा विस्तीर्णा स्थलपदानी ।
यक्षगन्धर्वचरिता सिध्धचारण सेविता ॥ अ. ३८/५४
तस्मिन्नायतने साक्षातनादिनिधने हरिः ।
पद्मपहारविष्णुरिज्यत सिध्धचारणैः ॥ अ. ३८/९८
त्ता स्थलामुपजीवन्ति किनरारगसाधवः ।
परुपकरसान्मत्ता मानाङ्गास्तत्र चारणाः ॥ अ. ३८/६५
तस्य मध्ये गिरिवरः सिध्धचारणसेविता ।
चन्द्रतुल्यप्रभै कान्तैश्चन्द्रकारैः सुलक्षणैः ॥ अ. ४१/५४
सूदर्शना नाम महाजम्बुवृक्षः सनातन ।
नित्यं पुष्पफलायेतः सिध्धचारणसेवित ॥ अ. ४६/२४
सौन्धवान्रन्धकराकान्ध्रमरामीरराहकान् ।
सुना मुखांश्चाधर्वमन्त्निसिध्धचारणसेवितान् ॥ अ. ४७/४६
अतेषु देवगन्धर्वाः सिध्धाश्च सह चारणैः ।

विहरन्ति रमन्ते च दश्यमानाश्च ते सहः ॥ अ. ४१/१५
 कोकिलारावमधुरे सिध्धचारणसेवित ।
 सौरभयीनिनादाढये मेघस्तनितनिस्वने ॥ अ. ५४/३४
 साध्या विद्याधरा नागाश्चारणाश्च तपोधनाः ।
 बालसिल्या महात्मानस्तपः सिध्धाश्च सुव्रताः ॥ अ. ५५/४१
 पुण्ये यद्विषु लेकिष्व मरकण्टकपर्वतः ।
 पर्वतप्रवरः पुण्य सिध्धचारणसेविते ॥ अ. ७७/४
 देवषिभवने शूडजो सिध्धचारणसेविते ।
 आरुह्य तं तु नियमतततो यान्तित्रिविष्टपम् ॥ अ. ७७/२२
 मादरस्य वने पुण्ये सिध्धचारणसेविते ।
 अन्तधार्णां न गच्छन्ति सक्तस्तस्मिन्महागिरो ॥ अ. ७७/३३
 सिद्धचारणसंकारण सिद्धचारणसेविते ।
 तत्र पुष्कारिणी रम्या सूषुम्नानामविश्रुता ॥ अ. ७७/११९
 पवमाण्यायितः सोमख्याल्लोकान्धारपिष्यति ।
 सिद्धचारणगन्धवैः स्तूयमानस्तु नित्यशः ॥ अ. ८१/२१
 यत्र सा गोमती पुण्या सिद्धचारणसेविता ॥ अ.
 तत्रेव हिमवत्पृष्ठे सिद्धचारणसेविते ।
 तत्रेव मम ते पुत्र भविष्यन्ति महोजसः ।

अे वर्णननो सारांशः

भारतवर्षमांना नदी समुद्रतट, गिरिकंदराओ, पर्वतोमां, वन
 अरण्यादि, तीर्थस्थानोमां सिद्धो, गन्धवै, यक्ष, किञ्चरो, नाग,
 अप्सरानी साथे चारणो आवेला तेबु वर्णन आपवामां आवेल छे.

देवर्षिभवनमां यक्ष, गन्धवै, किञ्चनर, नाग, अप्सरा, राश-
 सादि अलग सिद्धो साथे ज चारणोने गणावेल छे.

चारण धर्म संप्रदायमां शाकत-शैव जणाय छे.

पितृदेवो, सिद्धो, गन्धवै तथा चारणोथी शोभतो ते यज्ञ
 इंद्रसभा जेवो शोभावाळो थयो.

अलकापुरीमां अप्सराथो, यक्षा, गंधवीं तथा चारणी
साथे देवोथी पूजाता कुबेर रहे छे.

हे देवेश शिव ! आदित्यो, बसुथो, रुद्रो, मरुतो, अश्वनी-
कुमारो, साध्यदेवो, विद्याधरो, नागो, तपोधन, चारणो,
वालखीलयो तपसिद्धिवालो, सुवतवालो, मुनिथो अने बधा
आपनाथी उत्पन्न थया छे.

भागवत पुराण :

गन्धवीप्सरसो यक्षा रक्षाभूतगणोरगः ।

पशवः पितरः सिद्धा विद्याध्राश्चारणा द्रुमः ॥ २३ ॥

द्वितीय स्कंध अ. ६

गंधवीविद्याधरचारेणशा ये यक्षरक्षारगनागनाथाः ।

ये वा ऋषीणामूषभाः पितृणांदैत्येन्द्रसिद्धेश्वरदानवेदाः ॥ ४२ ॥

प्रजापतीन् मन्न देवानृषीन पितृणान् पृथक ॥

सिद्धचारणगन्धवीन् विद्याध्रारसुरगुह्यकान् ॥ ३८ ॥

द्वितीय स्कंध अ. १०

देवसर्गश्चाष्टविधो विवुधाः पितरोऽसुरः ।

गंधवीऽप्सरसः सिद्धो यक्षरक्षांसि चारणाः ॥ २७ ॥

तृतीय स्कंध अ. १०

धृवं नीवृतं प्रतिबुध्य वैशसादपेतमन्युं भगवान् धनेश्वरः ।

तत्रागतश्चारण यक्ष किञ्चरैः संस्तूयमानोऽभ्यवद्कृतांजलिम ॥ १ ॥

चतुर्थ स्कंध अ. १२

सिद्धचारणगंधवैमुनिभिश्चाप्सरोरगणः ।

स्तूपमानः समुद्रेण दक्षाहेण निकेतनः ॥ ३४ ॥

तृतीय स्कंध अ. ३३

देवर्षिपितृगंधवैसिद्धचारणपश्चगः ।

किञ्चराप्सरसो मत्येः खगा भुतान्यनेकशः ॥ ३५ ॥

चतुर्थ स्कंध अ. १०

सतत्र तत्र गगनतल उहुपतिरिव विमानाद्वलि भिरनुपथमर
परिबृंहमिष्टज्यमानः पथिपथि वरुपशः सिद्धगंधवेचाच्य
चारण मुनिगणे रूपभीयमानो गंधमादनद्रोणी मवभासयन्तु
पसरी ॥८॥ पञ्चम स्कंध अ. १.

ततोऽघस्तात्सिद्धचारण विद्याधरणां सदनानि तावन्मात्रपव
॥ ९ ॥ पञ्चम स्कंध अ. २४.

स्तूयमानोऽनुगायद्विः सिद्धगंधवेचारणेः ।

रूपं यन्महदाश्रयं विचक्ष्यागतसाध्वत ॥४०॥ छठस्कंध अ. ४
वृत्रस्य कमोतिमहाऽद्रुतं तत्सुराश्चारण सिध्यसंघाः ।

अपूजर्यस्तत्युरुहृतसंकटं निरीक्ष्य हाहेति विचुक्त्युश्चशंम
॥ ५ ॥ छठे स्कंध अ. १२

सिध्यचारणविद्याध्रानुषीन्पितृपतीन्मन्त्न ।

यक्षः रक्षः पिशाचेशान् प्रेतभूतपतीनथ ॥ ६ ॥ स्कंध ७ अ. ८
मानव प्रजानांपतयो गंधवैप्सरचारणाः ।

यक्षाः किषुरपास्तात वैतालाः सिध्य किन्तराः ॥ ७॥
स्कंध ७ अ. ८

चारणा अचुः ॥ हरे तवांध्रिपंकजं भवापवर्गमात्रिताः ।

यदेष साधुहच्छयस्त्वयाऽसुरः समापितः ॥८॥ स्कंध ७ अ. ८
सिध्यचारणगंधवेविद्याधरमहोरगे ।

किलरैरप्सरोभिश्च क्रीडद्विजुष्टकंदरैः ॥९॥ स्कंध ८ अ. १
नेदुर्दुभयो दिव्या गंधवें नदूनुर्दिग्युः ।

ऋषयश्चारणाः सिध्यास्तुऽद्वु पुरुषोत्तमम् ॥१०॥ स्कंध ८ अ. ४
चिलोकयन्ती निरवधमात्मनः पद धूवं चाच्यभिचारिसप्रणाम् ।

गंधवीयक्षासुरसिद्धचारणत्रैविष्टयेयादिषु नान्विन्दत ॥११॥
स्कंध ८ अ. ८

न वयं त्वाऽमर्देत्येः सिद्धगंधवेचारणे ।

नारपृष्टपूर्वं जनीमो लेकेशीशकुतो नृभिः ॥१२॥ स्कंध ८ अ. ९
सिध्य विद्याधरगणाः सकिं पुरुषकिन्नराः ।

चारणा यक्षरक्षांसि सुपर्णा भुजगोत्समा ॥१॥ स्कंध ८ अ. १८
 तदा सुरेन्द्र दिवि देवतागणा गंधर्वविद्याधरसिध्धचारणा ।
 तत्कर्मे लर्वेऽपि गृणन्त आज्ञव पसून वर्षेवृषु मुदाऽन्विता
 ॥ १९ ॥ स्कंध ८ अ. २०

जगुः किन्नरगंधर्वास्तुष्टुवुः सिद्ध चारणाः ।
 विद्याधयंश्च ननुतुरप्सरेभिः समं तदा ॥ ६ ॥

स्कंध १० अ. ३

सिध्धचारण गंधवैरग्नसरः किन्नरोरगोः ।
 उपाहृतोरुवलिभिः स्तूयमानेदमवीत् ॥२२॥ स्कंध १० अ. ४
 तं ननुमुद्यत्तमवेक्ष्य तदा तदीय गंधर्वासिध्धसुर चारणदेववधयः ॥
 त्या मुद्दृपगणवानक वाद्यगीतपुण्यो पहारनुतिश्चिः
 सहस्रापसेयु ॥२३॥ स्कंध १० अ. १६

देविदेवगणाः साध्याः सिध्धगंधर्व चारणाः ॥
 तुष्टुवु मुमुचुस्तुष्टाः पुण्यवर्णाणि पाथिव ॥२४॥

स्कंध १० अ. २५

तत्रागतास्तु वरुनारदादयो गंधर्वविद्याधर सिध्धचारणाः ।
 जगुयशो लोक मलापहं हरेः सुरागनाः संननुतुमुदाविन्ता:

स्कंध १० अ. २७

ब्रह्मादयः सुराधीशा मुनयः सिध्धचारणाः
 गन्धर्वाप्सरसो यक्षा विमानेद्रष्टुमागमन् । ७॥

स्कंध १० अ. ३०

मुनिभिः सिद्धगन्धवैविद्याधरमहोरगोः ।
 अप्सौभिः पितृगणेयक्षेः किन्नरचारणे ॥१४॥ स्कंध १० अ. ७८
 गन्धर्वाप्सरसोनागाः सिद्धचारण गुह्यकाः ।
 ब्रह्मपयः पितरश्चैव स विद्याधरकिन्नरा ॥५॥ स्कंध १० अ. ६
 पितरः सर्वेऽधर्वाविद्याधर महोरगाः ।
 चारणा यक्षरक्षांसि किन्नराप्सरसो त्रित्राः ॥६॥

થે વર્ણનનો સારાંશ :

સ્કંધ બીજો : (૧) ગંધવો, વિદ્યાધરો તથા ચારણોને વિરાટ પુરુષોના સ્વરોની સ્મરણશક્તિઓ તરીકે વર્ણવેલ છે. (૨) સર્વ દેવો, અસુરો, સિદ્ધો, મુનિઓ, ચારણો તેમ જ અન્ય જીવો, એ પુરુષરૂપ જ છે. (૩) વિરાટ પુરુષની વિભૂતિઓમાં ચારણોનું વર્ણન છે. (૪) પરમેશ્વરે બીજાં પ્રાણીઓ તેમ જ દેવો વગેરે સાથે ચારણોને સુજ્યાનું વર્ણન છે

તૃતીય સ્કંધ (૧) આठ પ્રકારના દેવ-સર્વનું વર્ણન :
 (૨) દેવો પિતૃઓ, (૩) અસુરો, (૪) ગંધવો-અસ્સરા, (૫) સિદ્ધ,
 ચારણ, વિદ્યાધર, (૬) યક્ષ, રાક્ષસો (૭) ભૂત, પ્રેત, વિશાચો,
 (૮) કિન્નરો વગેરે ..

ચતુર્થ સ્કંધ : (૧) ન્યાં આવેલા ચારણો, યક્ષા તથા
 કિન્નરોથી સ્તુતિ કરાયેલા કુબેરે ધ્રુવને કહું (૨) દેવિં પિતૃ.
 ગંધવે. સિદ્ધ, ચારણ પદ્નાગ વગેરેનો પૃયુરાજાથે સત્કાર કર્યાનું
 વર્ણન છે.

પંચમ સ્કંધ (૧) સિદ્ધ, ગંધવો, સાધ્ય, ચારણ, મુનિઓથી
 સ્તવાતા ભગવાન બ્રહ્મા ગંધમાદનના શિખર પર ઉત્તયા.
 (૨) સ્થાનવર્ણનમાં સ્ર્યથી નીચે દમ હજાર યોજન પર રાહ,
 ન્યાંથી તેટલેજ દૂર સિદ્ધ, ચારણ તથા વિદ્યાધરોનાં સ્થાન છે.
 તેથી નીચે તેટલેજ દૂર ભૂત-પ્રેત-વિશાચારિનાં સ્થાન છે. તેનાથી
 નીચે તેટલેજ દૂર પૃથ્વી છે.

ષષ્ઠ સ્કંધ : (૧) ભગવાને સ્થાપેલા ધર્મના સ્વરા સ્વરૂપને
 કૃપિથો, દેવો સિદ્ધો, ચારણો, મનુષ્યો, અસુરો કોઈ જાળતા
 નથી. (૨) નારદ, નંદ આદિ પાર્વદેવો, દેવતાઓ, સિદ્ધો, ગંધવો,
 તથા ચારણોથી સ્તવાતા થી વિણુ છે. (૩) રૂદ્રો, આદિન્દ્યો,
 વિશ્વદેવો, કલુંદો, આદિ દેવોથી બીજાયેલા, કિન્દ, ચારણ

गंधवे तथा ब्रह्मवादी मुनिओ, विद्याधरो वगोरे सेवाता इंद्रनुं वर्णन छे. (४) वृत्रासुरे मोगळनो प्रहार करवाथी इंद्रना हाथमांथी बज्र पडी जतां वृत्रासुरनुं अद्भुत कर्म जोईने देवताओ, असुरो, चारणो तथा सिद्धोना संघोप तेनी प्रशंसा करी अने इंद्रनुं संकट जोईने हाहाकार कयों. (५) महायोगीमुनिओ तथा सिद्ध चारणाथी वखणाता चित्रकेतु विद्याधरनी क्रिडानुं वर्णन छे. (६) सिद्धो, चारणाथी सेवायेला मुनिओनी सभामां पार्वतीने आलिंगीने बेठेला शिवनुं वर्णन छे.

सप्तम स्कंध : (१) महान दैत्य हिरण्यकश्यपुथे देवो, असुरो तथा मनुष्योना राजाओ, गंधवे, नागो, सिद्धो, चारणो, विद्याधरो, ऋषिओ, पितृओ, यक्षो, राक्षसो वगोरे सर्वने जीतीने लोकपालो नां स्थान हरी लीधां. (२) नरशार्दूल (नृसिंह भगवान) नी थोडे दूर जुदां जुदां उभेला ब्रह्मा, शंकर, ऋषिओ, सिद्धो, चारणो, विद्याधरो, नागो, गंधवे, वगोरे स्तुति करी. (३) चारणो बोल्या : हे हरे ! संसारने दूर करनार आपना चरणकमळनो अमे आश्रय करीये छीये कारण के आ असुर सत्यपुरुषोनां हृदयोमां भयजनक थई पडयो हतो तेथी तमे तेने मारी नाख्यो छे.'

अष्टम स्कंध : (१) सिध्ध, चारण, गंधवे, विद्याधरो, महाउरगो, किञ्चरो वगोरेथी सेवाता अनुपम त्रिकुट पर्वतनुं वर्णन छे. (२) गजेन्द्र मोक्ष प्रसंगे दुंदुभिओ वागवा लाग्यां. गंधवे चृत्य करवा लाग्या, चारण, ऋषिओ, तथा सिध्ध पुरुषोत्तमनी स्तुतिओ करवा लाग्या. (३) समुद्रमंथनमांथी उत्पन्न थयेली लक्ष्मी देवी, सिध्धो अने चारणो, गंधवे, यक्षो, असुरो, वगोरेमां पोतानुं स्थान शोधे छे. (४) वामनना जन्म प्रसंगना वर्णनमां सिध्धो, चारणो, विद्याधरो, गंधवे वगोरेने गान करता वर्णवेला छे. (५) बलिराजा वामन भगवानना पग धुअे छे ते प्रसंगे वर्णन छे के आकाशमां उभेला देवगणो, गंधवे विद्याधरो, सिद्धो अने

चारणोअे बलिराजाना ते कर्मनी तथा सरलतानी स्तुति करी
अने पुण्यनी वृष्टि करी.

दशम स्कंध : पूर्वार्ध : (१) श्री कृष्णजन्म प्रसंगे सिध्यो
अने चारणोअे स्तुति कर्यानु वर्णन हे. (२) कृष्णने बदले कंसे
जेने मारी नाखवा माटे पछाडयां ते देवी आकाशमां उडी गयां
ते प्रसंगे वर्णन हे के देवी पुष्कल बलिदान लई आवेला सिध्यो,
चारणो गंधवी, अप्सराओ वगेरेथी स्तवातां हतां. (३) श्री कृष्ण
गोवर्धन धारण कयों ते प्रसंगे आकाशमां देवगणो, साध्यो
सिध्यो, गंधवी, तथा चारणो भगवाननी स्तुति करता हता तथा
पुण्यवृष्टि करता हता. (४) इंद्रे तथा कामधेनुअे श्री कृष्णनो
गायोना इंद्र तरीके अभिषेक कयों ते प्रसंग : तुंबरु, नारद,
गंधवी, विद्याधरो, चारणो, सिध्यो हरिना यशोने गावा लाग्या.
(५) सिध्यो, चारणो, गंधवी तथा असुरोथी स्तुति करता
शेषनागनु वर्णन हे.

उत्तरार्ध : (६) वाणासुर तथा यादवोनु युध्य जोवाने देवो,
मुनियो, सिध्यो, चारणो, गंधवी, अप्सराओ तथा यक्षो विमानोमां
वेसीने आये हे. (७) युधिष्ठिरना राजसूय यज्ञमां आववा माटे
सिध्यो, देवो, विद्याधरो वगेरे साथे चारणोने पण आमंत्रण
अपायानु वर्णन हे. (८) दंतवक तथा विदूरथनो नाश कयों
पछी मुनियो, सिध्यो, गंधवी, चारणो वगेरे वडे जेमनो विजय
गवातो हतो ते श्री कृष्ण द्वारकामां आव्या.

येकादश स्कंध : (१) ऋषभदेवना मोक्षाभिलापी पुणो देवो,
सिध्यो, साध्यो, गंधवी, नारो, मनुष्योना लोकेमां तथा मुनियो
विद्याधरो तथा चारणो वगेरे भुवनेमां फरता होवानु वर्णन
हे (२) बधा देवो, इंद्र, ब्रह्मा वगेरे सिध्यो, विद्याधरो, चारणो,
ऋषियो, यक्षो वगेरे श्री कृष्णना स्वधाम पद्मारवा पहेलां

द्वारका तेमनुं दर्शन करवा गयानुं वर्णन छे (३) प्रलय पह्ची वेदवाणी नारायणे ब्रह्माने मनुने, सनुष भृगु आदि सात प्रजापतिने तथा तेमणे देवोने, दानवोने, सिध्धोने, विद्याधरोने, गंधवेने तथा चारणो इत्यादिने ऋहण करावयानुं वर्णन छे. (४) श्री कृष्णना स्वच्छाम पवारवा प्रसंगे देवताओ वगोरे साथे चारणो पण त्यां आवेला होवानुं वर्णन छे.

शिव पुराणनां वर्णननें सारांश :

(१) त्रिपुरासुरना वध प्रसंगे आकाशमां गति करनार सिद्धो तथा चारणोप फुलेनी वृष्टि करी. (२) बंदिना विवाहमां स्वयं ब्रह्मा अने चारणो सहित गंधवें पण त्यां आव्या.

स्कंद पुराण :

गान्धर्वस्त्वेषलोकडभी गंधवाश्च शुभताः ।

देवाना गायना ह्ये ते चारणः स्तुतिपाठकाः ॥ अ. ८२

जगुर्गंधर्व निकरान नुतुश्चासरोगणाः ।

चारणाश्च स्तुति चकुर्जह्यपुरुदेवता गणा ॥ अ. ९९

ए वर्णननें सारांश :

(१) शिवे ब्रह्मादि देवो, विद्याधरो, उरगो, सिद्धो, गंधवें तथा चारणोने बोलावीने विष्णुने अभिवेक कर्या. (२) केटलांक मंदिरो चारणो, सिद्धो, गंधवें, यशो तथा राक्षसो अप्तेन अने चारणोना समुदायेथी स्तुति धामता तथा विमानाथी वीटायेलां (महोदय) काढीमां पधार्या. (३) चारणो स्तुति करवा लाग्या, देवताओ हर्ष पाग्या, गंधवें गावा लाग्या, अप्तराओ नाचवा लागी. (४) देवाना स्तुतिपाठको ते चारणो अेवुं वर्णन छे. (५) गंधवेथी गवायेल अने चारणेथी स्तुति पामता शिवलिंगनुं वर्णन छे. (६) चारणलाग दन्तमय लिङ्कका पूजन तथा रहंस नामका जप करते हैं।

नरसिंह पुराण :

ब्रह्मादिदेवगन्धवेंमुनिभिः सिद्धचारणैः ।
योगिभिः सेवितं विष्णु सदा ध्यायन् विमुच्यते ॥ ३१ ॥ अ. ६

वामन पुराण :

(१) कुरुक्षेत्र वर्णनमां : ज्यां कुरुक्षेत्रमां ब्रह्मादि, देवो, ऋषिओ, सिद्धो, चारणो, गंधर्वो, अप्सराओ तथा यक्षो मोक्षनी ईच्छाथी भगवाननी सेवा करे छे.

मत्स्य पुराण :

स्तूयमानं समन्ताच्च सिद्धचारणकिन्नरैः ॥ ३५ ॥

इति चोचारयन्वाचश्चारण रण भूगता ॥

तत्र देवाः स गंधर्वो ऋषय सिद्धचारणा ।

आरध्यंनिः स गंधर्वो त्रिसध्य विमलेश्वरम् ॥

ए वर्णननो सारांश :

(१) योगनिद्रामां सुतेला विष्णु, सिद्धो, किन्नरो तथा मूर्तिमान वेदोधी स्तुति कराता जणाय छे. (२) त्रिपुरासुरने शिवे मार्यो त्यारे चारणो बोल्या हता. (३) देवो, दानवो, गंधर्वो, ऋषिओ, सिद्धो तथा चारणोनुं वर्णन छे. (४) तीर्थमां देवो, गंधर्वो, ऋषिओ तथा सिद्धो साथे चारणो त्रणे संध्यामां देवेशनी आराधना करे छे.

आदित्य पुराण :

(१) देवो तथा मुनिओ स्तुति करे छे. यक्षो, गंधर्वो नाचे छे, चारणो, सिद्धो, किन्नरो स्तुतिगान करे छे. (२) केाई मन्त्रंतर मां सिद्धो चारणोधी सेवातो शिनि नामनो इंद्र थशो. (३) छ मास अभ्यास करनारो सूक्ष्म ज्योतिपुरुष, देवो, सिद्धो, चारणो तथा उरगोने जुअे छे.

गणेश पुराण :

क्रमेण किञ्चरा यक्षासिद्धचारणगुहांकाः ।

पश्चवश्च तथा उरज्याग्रम्याश्चा सन्ननेकशः ॥ १०० ॥

(१) देवो, दानवो, गंधवीरी, देत्यो, यक्षो, सिध्यो, चारणो, गुहाको वरोरेनी उत्पत्तिनुं तथा तेमणे गणपतिभी स्तुति कर्यानुं वर्णन छे.

२.४ संस्कृत भाहित्यना सुवर्णयुगना ग्रन्थामां चारण :-

गुप्तयुगने संस्कृत साहित्यनो सुवर्णयुग गणवामां आवे छे. आ युगमां संस्कृत भाषानी उच्चति 'न भूतो न भविष्यति' ना रूपमां थई अने संस्कृत भाषामे राष्ट्रभाषा तरीकेनुं स्थान मेळब्युं हतु. कवि कालिदास आ समयनो अद्वितीय कवि हतो. तेनी 'शाकुन्तल' अने 'विक्रमोवशीयम' कृतिओमां चारणनो उल्लेख थयो छे.

अभ्याकान्ता बसतिरमुनाऽयाश्रमे सर्वभेदाये ।

रक्षायोगादयमपि तप प्रत्यहं संचिनोति ।

अस्यापि द्यां स्पृशति वशिनश्चारणद्वन्द्वगीतः ।

पुञ्यः शब्दो मुनिरिति मुहुः केवल राजपूर्वः ॥ १४॥ अंक. दि.

(अभिज्ञान शाकुन्तल)

केश :

केशमां जुदां जुदां संस्कृत ग्रन्थामां अपरिचित शब्दो अने अथोरी कविओना उपयोगने माछे आपवामां आव्यां छे. केशना ग्रन्थामां 'अमरकेश'नी प्रतिष्ठा छे. प ग्रन्थ आशरे ई. स. '१००मां रचया होवानी मान्यता छे. अमरकेशमां 'चारण'नो उल्लेख करवामां आव्यो छे. चारण शब्दना आ अर्थ विशेविदानो अेक मत नथी.

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कुशाश्विनः ।

भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु कुशीलवाः ॥ १००९ ॥

वाल्मीकि रामायणमां कुशीलवा शब्द कुश अने लव माटे प्रयोजवामां आत्रेल छे.

ते प्रीतमनसः सर्वे सुनयो धर्मवत्सलाः ।

प्रशंशासुः प्रशस्तव्यो गायमानो कुशीलवो ॥ १६ ॥ सर्ग ४

स्ववेद्यम् चानीय ततो भ्रातरो स कुशीलवो ।

पूजयामास पूजाहीं रामः शत्रुनिवर्हणः ॥ २९ ॥ सर्ग ४

आ वृत्तान्तश्री स्पष्ट थाय छे के “पढने और गाने में मधुर व्यक्त, चतुरथ्र और मिश्र संज्ञक वा द्रुत, मध्य और विलम्बित नामक तीन प्रकार के प्रमाणों से युक्त, पह्ज आदि स्वर की सात जातियों से रचित, वीणागुण और लय से सम्पन्न, शृङ्खार, हास्य, वीर, भयानक, और रौद्रादि रसों से युक्त इस काव्य का कुश और लव के द्वारा गान कराया, जो गानशास्त्र के तत्त्व के जाननेवाले, वीणा के बजाने और मन्द्र, मध्य और तार नामक स्थान में नियुण, शरीरयुक्त, मनुष्यस्पष्टधारी गन्धवों के सदृश स्थित, नाटकलक्षण के वेत्ता, मीठे स्वर से बोलनेवाले और जो राम के शरीर से विम्ब से उत्पन्न दूसरे प्रतिविम्ब के सदृश थे । सच्चरित्र, उपदेशानुकूल तत्त्व के जाननेवाले, सावधानचित्त, वडे वुधिमान् प्रारच्छशील और सब शुभ लक्षणों से युक्त उन दोनों राजकुमारों ने उत्तम धर्माख्यान रूप समस्त काव्य को कण्ठस्थ करके ऋषि व्राह्मणों और साधुओं के समाजमें गान किया ॥ [८-१३ वा. रा. स. ४०]

कुश अने लव थे वे नामो उपरथी कुशीलव थे संस्कृत शब्दने व्युत्पत्तिशास्त्र प्रमाणे समजावदामे माटे ज जोडी काढवामां आव्या छे थे हक्कीकतनु ‘संस्कृत साहित्यनो इतिहास’ मां प्रेा. थे. मेकडेनले प्रतिपादग कर्यु छे.

‘अमरकोश’ नी ई. स. १९०४ मां वस्वईथ्री प्रकाशित थयेली टीकामां पं. रविदत्त शास्त्री लखे छे के “शैलाली, शैलप, जयाजीव, कुशाश्व, भरत, नट ये छः नाम नट के हैं। चारण, कुशीलव ये दो नाम कन्थकों के हैं।

‘अमरकोश’ ना अर्थे प्रमाणे चारणो पण लव, कुश जेवा दैवी शक्तिशाळी स्तुतिपाठको हता.

हर्षचरित : ई. स. ना सातमा सैकाना प्रथमार्धमां महाराज हर्षवर्धन शासनकालमां थयेला महाकवि बाणभट्ट संस्कृत साहित्यना श्रेष्ठ कथाकार पवं गध के सार्वभौम सम्राट हता. तेमणे हर्षचरित ग्रन्थमां आठ उच्छ्वासोमां हर्षनां जीवननुं वर्णन कर्युं छे. ते ग्रन्थमां चारणनो उल्लेख जोवा मझे छे.

महोत्सवसमाज इति चारणे, वसुधारेति च विप्रैरगृह्यत ॥
सुभाषितहारावलि :

‘सुभाषितहारावलि’ नामक सुभाषित श्लोकाना संग्रहमां नवमी सदीमां थई गयेला मुरारि कवि रचित चारणोनो थेक श्लोक आपेलो छे. प्रचलित लोकभाषामां रचायेली चारणोनी कविताओ अधिक सुबोध अने हृदयगम्य होवाथी संस्कृत भाषाना ब्राह्मण कविओनो राजदरबारोमां ओछो आदर थवा लाग्यो. तेथी तेओ चारणोनी निंदा करवा छाग्या हता.

मुरारि कवि प्रसिद्ध ‘अनघराघव’ नाटकना कर्ता छे. एनुं उपनाम ‘वाल वाल्मीकि’ हतु.

चर्चाभिश्चारणानां क्षिति रमण !
परां प्राप्य संमोदलीलं ।
मा कीर्तेः सौविद्वानव
गणय कविप्रेतवाळी विलासान् ।

गीत ख्यातं न नामना किमपि
रघुपतेरघ यावत्प्रसादा-
द्वाखमीकेरेव धात्रीं धवलयति
यशोमुद्रया रामभद्र ॥

अर्थात् : हे महीपाल ! चारणोनी चर्चाओथी बणो आनंद मेलवीने (संस्कृत) कविओनो अनाद्र न करो. केमके तेओ ज कीर्तिरूपी नायिकाना रक्षक अने राजाओ साथे तेनो मेलाप करावनार छे. जुओ रामचंद्रनु थेक पण 'गीत' अथवा 'ख्यात' नथी. परंतु वाल्मीकिनी कृपाथी ज रामचंद्र पोताना यशनी छाप द्वारा पृथ्वीने अलंकृत करी रह्या छे. अर्थात् चारणोना (देश भाषानां) 'गीत' अने 'ख्यात' अस्थायी छे; अने संस्कृत भाषाना कविओनो संस्कृत-वाणीविलास अमर रहे छे.

२०१ जैन अन्थोमां चारण :

जैन कल्पसूत्र कहे छे "जंघा चारण एक दिवसमां आखा भूमंडलनी प्रदक्षिणा करी शके थेवी सिद्धिवाला छे. विद्या चारण अमोघ शक्ति धरावे छे. चारणो सत्यनी उपासना करवाधी परम सिद्धि पामी शक्या छे." जैन शास्त्रोमां चारणनो उल्लेख विशेष प्रमाण जोवा मझे छे.

पन्नावणाजीसूत्र :

अरिहंता चक्रवटी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्ञाहरा ।

[मनुष्य प्रकरण प्रथम पद]

चन्द्रगिरि पर्वतनो शिलालेख :

वन्दोविभुभुवि न कैर हि कोण्डकुंदः
कुंद प्रभाप्रणयिकीर्तिविभुषिताशः ।
यश्चारु चारण कराम्बुजश्चरीकश्चके
श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम ॥

अर्थात् कुन्द पुण्य की प्रभा धारण करनेवाली जिन की कीर्ति द्वारा दिशाओं विभूषित हुई है, जो चारणों के-चारण-ऋद्धिधारी महामुनियों के सुन्दर हस्तकमलों के भ्रमर थे और जिन पवित्रात्माने भरत क्षेत्र में शुतकी प्रतिष्ठाकी है। वे विभु कुन्द कुन्द इस पृथ्वी पर किससे बंध नहीं हैं?

अन्य शास्त्रोमां उल्लेख :

श्री नेमिनाथ तीर्थंकर पूर्व के नौथे भव में अपराजित नाम के राजा थे। अष्टाहिका के दिन वे मन्दिर में जिनेन्द्रपूजा कर शास्त्र-स्वाध्याय कर रहे थे। उस समय आकाशमें से दो चारण मुनिराज उतरे। राजाने उनका सन्मानादि कर धर्मेपदेश सुनकर कहा 'महाराज! मैंने आपको पढ़ा कही देखा हैं। वे तीनों पूर्व के दूसरे भव में उस बात का मुनिराजोने वर्णन किया और कहा 'हे राजन अब तुम्हारी एक महीने की आयु शेष हैं इसलिए शीघ्र हित करलो। राजाने संसारसे उदासीन हो प्रायोग्यगमन सन्यास धारण किया।

महावीर भगवान जीव पूर्व दसवे भवमें सिंह पर्याय में था। उस समय दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज आकाश से उतरकर, भाववाही धर्मेदेश देते हैं। और कहते हैं कि 'अरे सिंह! तू दसवे भव में तीर्थंकर होनेवाला हैं। सिंह को जाति स्मरण होता हैं। आंखों से अशुद्धारा बहती है और वह सम्यग्दर्शन पाकर निराहरात्रत अंगीकारकर वैमानिक देव होता हैं।

राम-लक्ष्मण सीतावनमां सुगुप्ति-गुप्ति नामना चारण मुनिओने आहारदान दे छे.

सिद्धार्थराजा अने त्रिशाला राणीने महेलमां एक देव श्री वर्धमानकुमारने रमाडे छे. ते बखते ते बाल तीर्थंकरने जोतांज संजय अने विजय नामना वे चारण मुनिओनी शंकानु-

समाधान थई जाय छे. तेथी तेओ कुमार सन्मति' एवुं नाम आपे छे.

मथुरा नगरीमां घरणेन्द्रे फेलावेलो मरकीनो भयंकर उपद्रव चारण ऋद्धिधारी सप्तर्षिनुं चातुर्मास निमित्ते आगमन थतांज शांत थई जाय छे. फल फूल खीली नीकले छे. वृक्षा अने वेलडीओ प्रफुल्लित थाय छे. नगरजनो आनंदित थई उत्सव उजवे छे. [आ सातेय मुनिवरो रसगा भाई छे. साथेज दीक्षित थयेलां अने श्रुत केवळी छे.

ऋषभदेव अने श्रेयासकुमारनो जीवो सातमा भवे मेग-भूमिमां पति-पत्निपले हता तेओ कल्पवृक्षानी शोभा निहाळतां वेठां हतां. त्यारे वे चारण मुनिओने आघतां देखी आश्चर्य पामे छे, अने तेमनां उपदेशाथी सम्यग्दर्शन पामे छे.

आ उपरांत प्रबन्धचिन्तामणी-मेरुतुंगाचार्यिका इवेताम्बर सम्प्रदाय के वर्णन में.

प्रबंधो : प्रबंधकोश, पुरातन प्रबंध, वस्तुपाल प्रबंध, सज्जनाकारितरैवतीर्थेद्वारा प्रबंध मंत्री यशोवीर प्रबंधमां चारण नो उल्लेख जोवा मझे छे.

पृथ्वीचांद चरित्र :

माणिकियसुंदरसूरिकृत 'पृथ्वीचन्दचरित्र' साडा पाचसो वर्ष पहेलां (वि. स. १४७८ मां) लखापली कृति छे. आपणे त्यां मध्यकालमां पण सरस गद्य लखातुं पनो आ येक उत्तम नमूनो छे. गुजराती साहित्यनी उत्तम प्रशिष्ट कृतिओमां आनु आगवुं स्थान छे. तेमां पण 'चारण'नो उल्लेख थयेल छे.

ते तलई भाग्ययोगि, दैव संयोगिई;
चारण श्रमण महात्मा एक तिहां आविऊ.

कलहणकुत राजतरंगिणी :

कृतापकित्रमकर्पुर परित्याग प्रतिशया ।

त च स्तुतिमिषा देवं जहसुः कवि चारणः ॥ तरंग ७/११२२

प्रसन्नराघवनाटक :

मज्जीरकः सपष्ठनिजयशः परिमल प्रभोदितचारणचञ्चयरीकवयकोल ॥

हलमुखरितदिकचक्रवालक्ष्मापालकुंतलालकारोमल्लिकापीडेा नाम ॥

[सीताजीतां स्वयंवरना वर्णनमां]

२.६ स्वामीनारायण संप्रदायना ग्रन्थोमां चारण :-

गान्धवर्द्धारणान्सद्वान् ॥ ३६ ॥ अ. ३८ प्र. १

“सांख्य निष्ठावालो जे भगवाननो भक्त ते तो मनुष्यनां
सुख तथा सिद्ध, चारण, विद्याधर, गंधर्व, देवताओं सर्वेना जे
सुख तेने समजी राखे.” (संवत १८७९ ना वचनामृतमां
श्रीमुखेश्वी संत हरिभक्तोनी सभा मध्ये.]

आ उपरांत वैराग्यमूर्ति सद्गुरु श्री निष्ठुक्लानंद स्वामीए
‘भक्त चितामणी’ ग्रन्थमां चारणनो उल्लेख करेल छे.

२.७ प्रकीर्ण :-

१ सामाजिक अने शैक्षणिक क्षेत्रे पछातवर्गो माटेना
कमिशननो अहेवाल गुजरात राज्य १९७६ पुस्तक-१. (पृ. ६७)

चारणो मूळ राजकविओनो खास करीने लेकगीतो
ललकारवानो अने लेककथाओ संभलाववानो वंशपरंपरागत
व्यवसाय करता हता. आ व्यवसायनी साथोसाथ तेओ केटलांक
ढोर पण राखता हता. केटलाक चारणोअे हबे खेती, खेत
मजुरी, गोण नोकरीओ वगोरे जेवा अन्य परचूरण व्यवसाय
अपनाव्यां छे.

४ चारणो काव्यो रचता हता परंतु ए चारणोद्धारा ज उपयोगमां लेवाती 'पिंगल' तरीके ओळखाती भाषामां रचाता. एमनामां अक्षरज्ञाननी टकावारी लगभग ५ थी २५ नी छे अने माध्यमिक शिक्षणनी टकावारी नीची पट्टले के लगभग पांचनी छे. पबुं कहेवाय छे के चारणो कुल प्रतिष्ठानै महत्त्व आपे छे अने आ बाबत पमांना केटलाकमां थता अदेखाईभर्या बर्तननी नोंधपात्र अभिव्यक्तिमां परिणमती जोवा मले छे.

५ जूनागढ जिल्डाना वरडा, गीर अने आलेच विस्तारमां वसता अनुसूचित आदिजाति तरीके गणवामां आवे छे. परंतु आ विस्तारमां रहेता न होय ए चारणोने ए रीते गणवामां आवता नथी.

६ चारणो सामाजिक रीते अने शैक्षणिक रीते पछात छे

२ भाषा विज्ञान कोश : डा. भोलानाथ तिवारी ज्ञान मंडल लिमिटेड बाराणसी, प्रथम संस्करण माघ संवत २०३० चारणी (Charani) पंचमहाल और थाना (वर्मई के चारणोमें प्रयुक्त भीली (दे) की एक बोली। ग्रियर्सन के भाषा सर्वेक्षण के अनुसार इसके बोलने वालोंकी संख्या १,२०० के लगभग थी।

३ Encyclopaedia of Religion and Ethics Edited by James Hastings. Volume II
First Impression – December 1909. Third April 1953.

"The Charans again, numbering at the same census 74,014 are practically all Hindus by religion, and are mostly confined to the presidency of Bombay and the province of Rajputana." (Census of 1901)

" 3 Enviolability of Bhats and Charans ! One peculiarity common to both Bhats and Charans is

their inviolability a belief based on the combination in them of the duty of herald with that of bard a principle as old as the days of Homer, when odysseus spares phemius, the bard (a'old'bs) (od. xxii 331). It is principally from West India that the stories come of what is called traga, that is to say, the custom of self wounding or suicide performed by members of this caste when exposed to attack while in charge of treasure or entrusted with other responsible duties. In almost every part of Kathiawar, at the entry of villages, are to be seen the palia or guardian stones, erected in honour of charan-men and women who killed themselves to prevent the capture of cattle, or to enforce their restoration by the predatory Kathi tribe. The names of the victims with the date and circumstances of their death, are recorded on the stones and a rude sculpture shows the method in which the sacrifice was performed, the man generally killing himself on horseback with sword or spear; the woman transfixing her throat with a dagger. In this part of the country the Charans have now some what fallen from their high estate on account of permitting widow remarriage and worshipping the local Mothers, Khodiyar 'the mischievous one' or Ashapura 'She that accomplishes desires.' (Page No. 553).

8 The Curse of Padmini; P. 149; By L. N. Birla,
published by : The Bharatiya Vidya Mandir, Bombay
1971.

"Mention of the Charans has been made both in the Ramayana and the Mahabharat.

They claim to be of divine origin. They were not only the ecologists or panegyrist of the Kings who were their patrons, they were also good poets and often went to the battlefield to encourage the warriors by their Dingal Songs which were recited by them in very forceful and effective manner. The Kings and princes held them in high esteem and regarded them as reliable and trustworthy. The Dingal literature of Rajasthan has been, in a large measure, their contribution. The Charans do not belong to any particular sect. They are the worshippers of Karni who happens to be their family deity."

‘भूदानमाळा (कागवाणी भाग ६ ठें)

“भारतवर्षमां वर्णव्यवस्था कायम स्थपाया पछी राजा पृथुना समयमां चारणो हिमालय तरफथी भारतमां उतरी आव्यानु जणाय छे. आम तो पुराणोमां वर्णनो मले छे, ते मुजब पृथ्वी परनां नीचेना स्थळोअे चारणो होवानो उल्लेख मले छे. नैमित्यारण्यमां, गोमती किनारे, हिमालय पर्वत, जंबूदीप, प्लश्च-दीप, कौचद्रीप, दुंदुभिस्वनदेश, शाकदीप, नर्सदा-समुद्र संगम पर विमलेश्वर वगोरे अनेक स्थळोअे ‘चारणो होवाना उल्लेख छे.’

“चारणोनी उपासना मातृप्रधान हती अने छे, परंतु चारण जातिमां वारसो प्रतिष्ठा तथा गोत्र वगोरे तो पितृप्रधानज हतां अने छे. वारसो दीकराने ज मलतो अने मले छे. संतानो पण पिताने नामे ज ओलखाता अने ओलखाय छे, चारणजातिनी जे पेटाशाखाथ्रो छे; तेमांथी घणीखरी पिताने नामे ज पडी छे. ए हकीकत छे, सत्य छे.”

“श्री मद् भागवतमां चारणोनी गणना अष्टविध देव सृष्टिमां अटले देव जातिमां करी छे, जे ब्रह्माजीना पुत्र कदयप

थी उत्पन थई छे आना ज अनुसंधानमां होय तेम गणेशपुराणमां पण चारणोनी उत्पत्ति कश्यप तथा तेमनां स्त्री अरिष्टार्थी थयानो उल्लेख मळे छे.”

“चारणो वीर-पूजक हता अने ज्यां ज्यां सत्य अने शुभ ज्ञातां, त्यां तेनी प्रशंसा करता क्षत्रियों के राजाओना आश्रये चारणो रहेता होवानो उल्लेख पुराणोमां मळता नथी एण अटलुं खरुं के तेबो देवो अने राजाओनी स्तुतियो करता होवाना अनेक उल्लेखो छे. खरी रीते तो चारण जातिनी अमुक व्यक्तित्वोप ज समये समये क्षत्रियोनो आश्रय स्वीकारेलो. तेनाथी एम न मनाय के बधा चारणो क्षत्रियोना आश्रित हता.”

“१ चारण शब्द ‘चर्’ धातुना (Causal) ब्रेक ‘चार्’ उपरथी बन्यो छे. पट्टले ‘चरति इति चरणः’ थाय अने ‘चारयति इति चारणः’ थाय स्थलांतर करनार चारण छे, चारण नथी. गान अभिनय उपरथी जीवनारने ‘चरण’ शब्द लागु पाडवो, प बराबर नथी. एम करबुं प अतिव्याप्ति थशे.”

“२ वली दुत अने जासुस माटे चारण शब्द प्रयुक्त थयो होय, तो ते गुणवाचक होई शके. गमे ते वर्ण के व्यक्तिने प लागु करी शकाय परंतु प कोई जाति विशेषवोधक न वनी शके.

३ शास्त्रोमां चारणोनां बर्णनो छे, ते परथी तेबो कीर्तिनो ‘ज्ञाननो’ विद्यानो प्रचार कर्त्तारा होवाथी ज ‘चारण’ अबुं नाम प जातिने मळ्युं लागे छे. चारयन्ति कीर्तिम्, विद्याम्, ज्ञानम् वा इति चारणाः। चारण शब्दनो आ अर्थ चारण जातिनी शास्त्रोक पीठिकाने अनुरूप छे. ज्यारे ढोर चारनारने चारण कहेबुं, ते बराबर नथी. (जो के ढोर चारबुं प हलकुं कार्य नथी अने चारणो पहेलांथी पशुओ पालता अने चारता आव्या छे) कारण के तो तो जे कोई ढोर चारे ते चारण कहेवाय.

पण तेम नथी 'चारण' शब्द प एक विशिष्ट जातिनो ज वाचक होवाथी चारण एटले ढोर चारनार एम कहेवुं युक्तिसंगत नथी."

"विद्या अने तपनी शक्तिथी आकाशमार्गे" दूर दूर जवानुं सामर्थ्य चारणोमां होवानां वर्णनो वाल्मीकीय रामायण वरोरे हिंदु धर्मना ग्रन्थोमां पण घणे स्थळे जोवा मले छे."

"चारणोनो वसवाट हिमालय पर्वतमां, जंबुद्वीपमां, कोंच-द्वीपमां, शाकद्वीपमां, दुंदुभिस्वनदेशमां तथा नर्मदा आदि नदीओना तट पर अने नेमिषारण्यमां होवानो धर्मशाखोमां उल्लेखो छे. उपरांत राजा पृथुवे चारणोने तैलंग देश आप्यानो पण उल्लेख छे परंतु मध्ययुग बादनो इतिहास जोतां चारणोनुं निवासस्थान सोरठ तथा कच्छ ज हतां. सोरठ चारणोनुं पियर गणाय छे. कच्छमांथी तथा सोरठमांथी केटलाक चारणो सिंधमां प्रवेश्या अने त्यांथी राजस्थानमां गयेला छे, प ऐतिहासिक सत्य छे. आई आवड सोरठमांथी सिंधमां गपला अने त्यां सूमराओनुं राज्य उत्थापवानुं तथा पंजाबमांनां समा राजपूतोने सिंधनुं राज्य अपाववानुं ऐतिहासिक कार्य पूर्ण कर्या बाद पोते जेसलमेर तरफ राजस्थानमां निवास करेलो. तेमनी पाछल हजारो चारणो राजस्थानमां गया. आवी रीते कच्छमांथी तथा सौराष्ट्रमांथी जे सिंधमां गया हता ते पाछलथी जाडेजाओ साथे कच्छमां आवी वस्या. अने राजस्थानमां गयेल, तेमांथी घणाखरा त्यां स्थिर थया, परंतु थोडाक सौराष्ट्र गुजरात कने कच्छमां पाढ्ठां आव्या एम हकीकत छे."†

६ शारदा : तंत्री श्री गोकुलदास रायचुरा.

"चारणो अे साराये देशनुं धन छे. अनेक राज संस्थाओनुं घडतर कार्य चारणोअे कर्युं छे अने क्षत्रियवटने साचववामां

† श्री पिंगलशीभाई पायक.

भारतना इतिहासमां जो कोईनो सुख्य हाथ होय तो एनुं मान पण चारणेने ज फाळे जाय छे विखासु अने अकवचनी चारणेना प्रसंगो काठियावाडमां आजेय ठेर ठेर जीवता छे. जुगदंबा समी देवीओ प्रगटाववासुं मान पण चारण जातने ज मले छे.” (फेब्रुआरी १९३६)

“चारणाप एवुं कोई कृत्य न करबुं जोईप के जेथी ऐतानी कीर्तिने झांखप लागे. आपणे आगळ वधीये तेम आपणी जघावदारी पण वधे छे. चारणनो दीकरो आपसमां ईश्या न करे, दारु, अफीणनां व्यस्तनेमां न सपडाय, विद्या भणे, कुकृत्योथी दुर रहे, धर्मनो, देशनो, जातिनो, रक्षक भक्त वने, सरस्वतीनो साचोपुत्र - साचो पुजारी वने.

चारण कीर्तिनुं ज स्वरुप छे, सेवानो भेसधारी छे, अत्यारे कीर्ति, लक्ष्मी अने सेवा आवीने दरवाजा खखडावी रहेल छे. ‘उघाड’ ‘उघाड’ पण चारण हजु वरोवर जागृत थयो जणातो नथी चारण हवे उंघनो-आळसनो त्याग करवो जोईप अने जगतना सेवायसमां फाळो आपवा आगेकदम थबुं जोईप अने समय पाकी गयो छे अत्यारे जेटलुं मोहुं थशे तेटलुं मोहुं जाणजो, आप आपनु जनसेवानुं कार्य तुरतज संभाली ल्यो. एम मारी चिनंति छे.

ठक्करवापाप मने एक वक्त कहेलुं के ‘जो तमे चारणो साथे दश वरस गामडाओमां रामायण महाभारतनी कथा चाराओ कहेता फरवा मांडो तो आखो देश जाणी उठे, नवीज चेतना स्फुरे’ मारी पण पज उमेद छे.”

७ एक दैवी स्तुतिमां ‘चारणनो’ उल्लेख.

अखिल भारतीय चारण सम्मेलनना द्वितीय अधिवेशनमां रिपोर्टमां एक दैवी स्तुति आपवामां आवी छे जे नोंघनीय छे.

या सर्वेषामुमणि शशिदग शर्म्म संघंदधाना ।
 यो भक्तेभ्यो हयमविरत् संनिदाना दर्दिना ॥
 सा देवो नोः सतत सुश्रुता चारणानां चिदाय ।
 जाते: स्पाति गुणसमुदयानामथो संविभर्तु ॥१॥

अथोत जे देवी सोनी मूर्धन्य, चन्द्र जेवी शीतल द्रष्टिवाली शान्तिप्रदा छे (अने) जे देवी भक्तोने सतत (सारी वस्तुओ) आपनारी छे ते देवी के जेने देवो नमस्कार करे छे ते चारणोना हित माटे, जातिना हित माटे ख्याति अने गुणसमुदाय अर्पण करे !

८ भारती :

“सौराष्ट्री संस्कृतिने जीवती राखवानुं मान चारणोने जाय छे. सत्यनिष्ठा, दानशीलता, शोर्य अने अध्यात्मने विरदाववानुं तथा तेने पोषवानुं महान कार्य चारण नर-नारीओए स्वेच्छापूर्वक अदा कयुं छे. खोडुं लागे त्यां हायकारो नाखवो अने योग्य लागे तेने खमकारो आपवानुं बलण चारण जातिना लोहीमां उतरी आव्युं छे. एना कंठमांथी खुशी अने खफाना भाव साव सहज रीते दूहा कवितमां उतरी लक्ष्यवेधी बनता होय छे. चारण जाणे समाजनी पाराशीशी छे क्यां खूबी छे, अने क्यां खामी तेनी पहेली खवर चारणने मुखे झिलाय; चारण न होत तो ओछामां ओछुं सौख्याष्ट्रने तो घणुं गुमाववानुं थात.”

-प्रा. नरोत्तम पलाण (अंक अकट्टूवर १९७७)



[3] चारणकुलनी उत्पत्ति

- ३.१ चारण अेक भिन्न उद्गमवाली विशिष्ट जाति
- ३.२ श्रीमद् भागवतमां मनुष्यधी भिन्न जाति
- ३.३ देवसृष्टिमां चारण
- ३.४ देवसृष्टिना जुदां जुदां सर्जको
- ३.५ ब्रह्माजीना पुत्र कद्यप अने तेनी पत्नी अरिष्ठानी
संतति चारण
- ३.६ उत्पत्ति विशे विद्वानोनां मंतव्यो

विश्वनां वाह्यमयमां हिंदु धर्मनां वेदने सौथी पौराणिक मानवामां आवे छे. लोक-मान्य तिलक अने मेक्समूलरना मत मुजब वेद उत्पन्न थयाने दश हजार वर्ष थयानुं मानवामां आवे छे. महर्षि दयानन्द सरस्वतीना मत प्रमाणे वेद सृष्टिनां आरंभ-कालमां सर्जन थयानुं मानवामां आवे छे, अर्थात् सृष्टि अने वेदने उत्पन्न थयाने १,१७,२९,४२,०४० वर्ष थया छे. अन्यकेटलाक विद्वानो वेदोत्पत्तिकालने पांचथी सात हजार वर्ष थयानुं स्विकारे छे. विद्वानो वेदोत्पत्तिकालना अनुमानोमां पक मत नथी.

सौथी प्रथम 'चारण'नो उल्लेख वेदमां जेवा मझे छे. आउपरथी अटलुं तो स्पष्ट थाय छे के 'चारण' शब्द अने तेनाथी वाच्य थतां अर्थवाली व्यक्ति वेद जेटलीज पौराणिक छे. आप्राचीनताने कारणे ज चारणकुलनी उत्पत्ति विशे कपेल कलिपत दंतकथाओ जनसमाजमां विशेष प्रचलित छे. तेम छतां केटलाक विद्वानोअे गणेशपुराणमां जणावेल चारणकुलनी उत्पत्तिने प्रमाणभूत मान्यता आपी छे.

पंडितवर श्री सुखलालजी कागवाणी भाग ६ नी प्रस्तावनामां चारणकुळनी उत्पत्ति अंगे लखे छे के : “चारण (गढवी), सूत (भाट), मागध (बंदी) आदि जेवा अनेक वर्णो, वर्गो अने जूथो छे, जेमना इतिहासने लगती अनेक विगतो मल्ही आवे छे. महाभारत अने रामायण जेवां महाकाव्यो, श्रीमद् भागवत, वायु अने पद्म आदि पुराणो, तेमज समृतिओ तथा इतर शास्त्रीय ग्रन्थोमांय अे वंशोने लगती छुटी-छवाई घणी विगतो मल्ही आवे छे. ते उपरांत अत्यारे पण ए जीवता वर्गोनी जीवनचयोमां अने अेमनां पोताना आगवा कही शकाय एवा साहित्यमां पण ए इतिहासनी सामग्री भरी पडी छे. आ सामग्री जेटली प्राचीन छे तेटली ज ते वैविध्यपूर्ण अने मनोरंजक पण छे. आवी विपुल सामग्रीनो संग्रह करी तेनुं बैतिहासिक दृष्टिप निरूपण करवानुं काम हुं जाणुं छुं त्यां सुधी प्रथम तो युरोपीयन विद्वानोथे ज व्यवस्थितरूपे शरू कर्यु. जर्मन भाषामां अने इतर युरोपीय भाषाओमां जे लखायुं छे तेनो उपयोग अेम. चिन्तरनित्यसे पोताना “ए हिस्टरी थेफ डिस्ट्रीरिकल” प्रथम भागमां कर्यो छे. (पृ. ३१५) प.ज रीते अफ. इ. पार्जिटरे पोतानां ‘एनशियन्ट इन्डियन हिस्ट्रीरिकल ट्रेडिशन’ नामना पुस्तकमां (पृ. १५) पण कर्यो छे.

आवा पाश्चात्य संसोधकोने पगले पगले चाली अतहैशीय केटलाक विद्वानोप अे विवे कर्ङ्गेक ने कर्ङ्गेक लख्युं छे. पण तेबो भारतवासी होई तेमनी अणी सामग्री उपलब्ध छे. छतां तेमनो प्रयत्न मोलीक नथी बन्यो, अने पाश्चात्य संशोधकोनुं अनुकरण कही शकाय तेबो ज रह्यो छे.

चारण, सूत, मागध आदि उपर निर्देशेल वर्णोनी उत्पत्ति अने तेमनां खास कर्तव्योने लगती अने सामाजिक दरजाने लगती अनेक वातो पुराण, समृति आदिमां छे.

आ देशमां चार वर्णों जाणीतां छे तेमनां अनुलोम अने प्रतिलोम लग्नथी उत्पन्न थयेल अनेक जातिओ पण छे जे मिश्रवर्ण कही शकाय. आवां मिश्रवर्णोनुं जे वर्णन समृति अने पुराण आदिमां छे, तेमां उच्च-नीचपणानी दृष्टि व्यापेली देखाय छे, पण मने अम जणाय छे के कोई पबो पण समय हृतो. यारे आवां मिश्रित लग्नोथी उत्पन्न थयेल संतति आगळ जतां जे रीते बगोवाई ते रीते पहेलां अवगणाती नहीं. जो पवी अवगणना थती होत तो ब्राह्मण पराशर अने मत्स्यगंधा सत्य-वर्तीना पुत्र कृष्णद्विषयननुं आटलुं वधुं गौरव अखंडपणे चालयुं आव्युं न होत; यथाति शत्रिय अने देवयानी ब्राह्मणी पनी संतति यदुः प यदुवंशमां उत्पन्न थयेल वासुदेव कृष्णनुं जे गौरव पहेलेथी चालयुं आवे छे, ते पण भाग्ये ज होत. अलवत पवा असाधारण गौरवनुं मान विद्या अने पुरुषार्थीने फाले ज छे, तेथी एम कही शकाय के जन्म करतां विद्या अने तेजस्विता आदि सद्गुणेऽनुं स्थान हमेशां उचुं अंकायुं छे.

हवे सूत, मागध, वंदी आदिनी उत्पत्तिना वर्णनो छे. तेमां ते ते वर्गने मिश्रवर्ण तरीके ज निर्देशेल छे. मात्र चारण वर्ग ज पबो छे के जेनुं कोई मिश्रवर्ण तरीके वर्णन नथी. तेथी एम लागे छे के चारण नामथी ख्यात जे वंश चालयो आवतो ते कोई अनुलोम के प्रतिलोम लग्नने परिणामे नीपजेलो नथी.”

३.१ चारण एक भिन्न उद्गमवाली विशिष्ट जाति :-

पंडितवर श्री सुखलालजीय चारणकुलनी उत्पत्ति अंगे जे विधानो कर्या छे ते शास्त्रोक्त पीठिकाने अनुरूप छे. आयीवर्तना समाजना मुख्य चारवर्णेथी भिन्न उद्गमवाली एक विशिष्ट जाति तरीके यजुर्वेदमां चारणजातिने ओलखावी छे.

“यथेमां वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्यः राजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥”

आज प्रमाणे आर्यवत्^{१०} साहित्यना वाहमय के आदि
महाकाव्योमां चारणजातिने मनुष्यथी भिन्न अने देवसृष्टिमां
चारणजातिने स्थान आपवामां आवेल छे.

३.२ श्रीमद् भागवतमां मनुष्यथी भिन्न जाति :-

श्रीमद् भागवतना द्वितीय स्कंधमां छट्ठा अध्यायना १२
अने १३ श्लोकमां ब्रह्माजी नारदजीने सृष्टिकम बतावे छे; तेमां
मनुष्यथी चारणने भिन्न बताववामां आव्यां छे.

अहं भवान् क्षवश्चैव त इमे मुनयोऽग्रजा : ।

सुरा सुरनरा नागाः खगा मृग सरीसृपाः ॥१२॥

गंधवेष्वसरसो यक्षा रक्षो भूतगणोरगाः ।

यशवः पितर सिद्धा विद्याध्राश्चारणाः द्रुमाः ॥१३॥

अर्थात्: हे नारद हुं तु शिव ते आ अग्रज मुनि, देवता,
असुर, मनुष्य, नाग, पक्षी, मृग, सरी, गंधव, अप्सरा, यक्ष,
राक्षस, भूतगण, उरग, पशु, पितर, विद्याधर, वृक्ष, चारण आ
सर्वे हरिथी सर्जन थयुं छे.

३.३ देवसृष्टिमां चारण :-

निरंजन निराकार परमेश्वरे सृष्टिनुं सर्जनकार्यं ब्रह्माजी
सोंन्युं हतुं. ब्रह्माजीथे चार प्रकारनी सृष्टिनी रचना करी तेमां
प्रथमवर्गमां देवता, बीजावर्गमां मनुष्य, त्रीजावर्गमां पशु-पक्षीओ,
चौथावर्गमां वनस्पति वगोरेनो समावेश कयों. 'चारणो' ने
देवताओना वर्गमां स्थान आपवामां आवेल छे. आ हकीकतनुं
समर्थन श्रीमद् भागवतमां तृतीय स्कंधमां इस अध्यायना सतावीस
अने अड्डावीसमां श्लोकोमां ऐत्रेय ऋषि विद्वर्जीने ब्रह्माद्वारा
निर्माण थयेल सृष्टिनी समज आये छे. तेमां देववर्गनी सृष्टि आठ
प्रकारनी छे, प आठ प्रकारमां एक प्रकार 'चारण'नो छे.

देवसर्ग श्राष्टविधो विवुधाः पितरेऽसुरा ।
 गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणाः ॥२७॥
 भूत प्रेत पिशाचाश्च विद्याध्राः किञ्चरादयः ।
 दशीते विदुराव्याताः सगांस्ते विश्वसृक्कृताः ॥२८॥

अथात् : देवसर्ग अथात् देवसृष्टि आठ प्रकारनी हे. विवुध, पितर, गंधर्व, अप्सरा, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, विद्याधर, चारण अने किञ्चर आदि दस सृष्टिओ प्रसिद्ध हे. आ सृष्टिनुं सर्जन विश्व सर्जके कयुं हे.

श्रीधर दीकाकारे अष्टविध सृष्टिनी समज नीचे प्रमाणे आणी हे.

(१) विवुध (२) पितर (३) गंधर्व, अप्सरा (आ बन्ने अेक सर्गमां) (४) असुर (५) यक्ष, राक्षस (बन्ने अेक सर्गमां) (६) भूत, प्रेत, पिशाच (आ त्रेय अेक सर्गमां) (७) सिद्ध, चारण, विद्याधर (आ त्रेय अेक सर्गमां) (८) किञ्चरादि.

ब्रह्माजीये जे जेनी साथे रचना करी हे. तेनो अेक सर्ग मानवामां आवे हे.

३.४ देवसृष्टिनां जुदां जुदां सर्जको :-

ब्रह्माजीप संपूर्ण सृष्टिनुं सर्जन कार्यं पूर्णं कर्या पछी देवसृष्टिना सर्गनुं सर्जन कार्यं जुदां जुदां देवेन सोंन्युं हतुं. श्रीमद् भागवतना द्वितीय स्कंधना दसमां अध्यायमां देवसृष्टिनां जुदां जुदां सर्जको थयानुं वर्णवयुं हे.

प्रजापतीन मनुन देवानृषीन् पितृगणान् पृथक् ।
 सिद्धचारणगन्धर्वान्, विद्याध्रसुर गुह्यकान् ॥३८॥

अथात् : भगवान मनु, देवता, ऋषि, पितर, सिद्ध, चारण, गंधर्व, विद्याधर, असुर गुह्यक आ वधानां जुदां जुदां सर्जको थया.

३.५ ब्रह्माजीना पुत्र कश्यप अने तेनी पत्नी अरिष्टानी संतानि चारण :

चारण अे कश्यपजीना संतान छे. गणेशपुराणमां चारणोनी उत्पत्ति कश्यप अने तेमनी पत्नी अरिष्टानी थवानो उल्लेख सळे छे.

कमणे किन्नरा यशासिद्धश्वारणा गुह्यका ।

पश्चवश्च तथा उरण्याव्रस्याश्चा सद्गनेकशः ॥ १०० ॥

(गणेशपुराण उपासना खंड)

महाकाव्यो अने पुराणोना प्रमाणोथी स्पष्ट थाय छे के चारणोनी उत्पत्ति सृष्टिना सर्जनकालधी चार वर्णोथी भिन्न उद्गमवाली, अष्टविघ देवसृष्टिमां थयेली छे. तेमज आ जातिना आदि पुरुष कश्यपजी दता.

३.६ उत्पत्ति विशे विद्वानो मंतव्यो :-

“अपिद्योऽमे तपश्चयां अने वैज्ञानिक प्रयोगोऽ द्वारा चारण जाति उत्पन्न करी छे. मेघाश्रमीओने क्यारेय काट न लासे, वाणी सिद्धि क्यारेय दिफल न जाय अने स्वरनी बुलंदता क्यारेय मंद न पडे थेकी आ तपस्यावी फलश्रुति छे.”

-विदुषि वहेन श्री सवितावहेन नानजीभाई महेता (पारबंदर)

“चारण ज्ञाति धणी जुनी अने पवित्र कोम छे. थेजुं वर्णन रामायण अने महाभारतमां छे. थेओ राजपूतोना कवि छे. पोतानी उत्पत्ति देवोथी छे. तेस तेओ सावित करी शके छे. राजपूतो अमने धणुं मान आपे छे, विश्वासपात्र माने छे.”

-केप्टन प. डी. बेनरपेन I. C. S.

(सन् १९०१ वस्ती गणतानी रीपोर्टमांथी)

“आ देशमां चारण ज्ञाति धणीज पुराणी अने पवित्र छे. क्षत्रिय राजाओ अन्य वर्णनी काव्य करतां चारणोना काव्यो पर विशेष प्रेम राखे छे. राठोडेना राज्यमां (राजस्थान) धणुं मान पासेली अे ज्ञाति छे.” -कल्लील टोड (राजस्थाननो इतिहास)

“इतिहासकारोना कहेवा मुजव चारणो सिथियन हो वा
नहि, आपणे तो तेना कुलने एक स्तुतिप्रशस्तिकार साहित्यसेवी
वर्गपरंपरा लेखे ज निहाळीये.” — एक विवेचक.

“अनी कुल परंपरानां मूळ पकडातां नथी. अनुमान तो
एक ज होई शके के प परंपरा कोई देवकुल नहि पण व्यवसायनी
अथवा तो कुल-संस्कारनी ज हतो : प व्यवसाय अने संस्कार
दानवीर, युद्धवीरना स्तुतिकार तरीकेनो, इतिहासकार तरीकेनो,
विद्याविलासी तरीकेनो. वंशादृष्टि प आजनो चारण आयोनी
माफक कई परदेशवासी कोमनो पुत्र हशे ते कहेवुं कठिन छे.
कारण के आपणा चारणने अनुसरती कवि संस्था युरोपादि
देशोमां पण मोजूद हती.

इतिहासमांथी एनी शोध न थाय त्यां सुधीने माटे आपणा
आजना उद्देश पूरती तो आपणे पने संस्कार-परंपरा ज गणीय
प ठीक छे. वंशादृष्टि चारण कोई एक निराळुं अने दिव्यांशी
एवुं वेदवाराथी सिलसिलावंय पेढी दर पेढी चाल्युं आवतुं
मानवकुल हो वा न हो, वाणीदृष्टिओ तो प अनोखी परंपरा
छे ज अनोखी तेम पुरातन.”

—श्री झवेरचंद मेघाणी (चारणो ने चारणी साहित्य)

“चारणो ऐलवंशना विस्तारना छे अने खूब जूनी प्रजा
छे, तेने ज कारणे पुराण साहित्यमां पमनो ठेर ठेर उल्लेख
थयेलो छे. चारणोनी उत्पत्ति विशे चमत्कारिक जे वातो छे ते
मूळ माथा विनानी तेम मानवीय रीते अश्रद्धेय छे. पटले प
भारतवर्षनी जूनी जाति छे, पटलाथी ज जिज्ञासुओये संतोष
मानवानो छे.” —म. मा. अध्या. श्री के. का शास्त्री विद्यावाचस्पति.

“ब्रह्मि चारण अने विप्र (ब्राह्मण) एक शाखाना जणाय छे.
“देवानाम् चारणां वर्णानाम् ब्राह्मणां” आ अंगे गुजरात
हाईकोर्टना भूतपूर्व न्यायाधीश श्री एस. डी. देशाई पहिन्दु लो
भाग १ लामां खुलासो कर्यो छे के “चारण अने ब्राह्मण क्रष्णकुलनी
बे शाखा छे, बने एक छे.” —केशरदान वारहटु.

[4] चारणनी शाखाओ

- ४.१ चारणना प्रादेशिक भेदो.
- ४.२ साडात्रण पहाडमां समस्त चारणजातिनो ममावेश.
- ४.३ शाखाओना नामनी उत्पत्ति.
- ४.४ चारणजातिनी मुख्य शाखाओ
- ४.५ सोलक्षाखीया चारण.

पुराणे अने महाकाव्योनी मान्यता मुजब चारणकुलने देवजाति मानवामां आवे छे. इतिहासमां सुप्रसिद्ध थयेल चारण वंश हिमालयनी कंदरा छोडी राजा पृथुना शासनकाल दरम्यान आर्यवर्तनो स्थायी निवासी बन्यो. तेलंगमांथी आर्यवर्त नी यात्रा करतो करतो सौराष्ट्रमां स्थायी थयो. श्रीमान् अगरचंद नाहटाजीनां संशोधन मुजब “चारण जातिका भी प्राचीन कालसे सौराष्ट्रमें निवास रहा हैं और आज भी वहां कई चारण कवि व विद्वान् राजमान्य एवं लेक प्रसिद्ध हैं।” जैनाचार्य मेरूतंगे सवंत १३६१मां रचेल ‘प्रबंध चितामणी’ नामना सुप्रसिद्ध ग्रंथमां चारणोने सौराष्ट्रना गणाव्या छे. सौराष्ट्रना इतिहासमां जणाव्या मुजब ई स. १३० पूर्वे सौराष्ट्रना क्षत्रप राजा नाहपाने नादीगेरा चारणोने भूमिदान आप्युं हतुं आ वधा प्रमाणोथी प्रतिपादित थाय छे के सौराष्ट्र ले चारणनु पियर हतुं.

ईसुनी आठमी सदीमां सिधमां अत्याचारी परधर्मी शासक हमीर सूमरना अत्याचारोप माझां मुकता सिधनी प्रजा आई

आवडने चारणे आवी. महामायाए भारतवर्षेना समस्त चारण-
कुलोने अेकत्रित करी हमीर सुमरानो सशस्त्र विरोध करी तेना
शासननो ध्वंस करी उमदा राजकुलने सिंधनुं राज्य समर्पित
करी आई आवडे पेतानुं निवासस्थान तेमडा पर्वत पर बनाव्युं.
तेथी केटलाक चारणे राजपूतानामां स्थायी थयां. केटलाक
सिंधमां रह्यां तें केटलाक कच्छ अने काठियावाडमां पाळा फर्या.

राजपूतानामां जे चारण स्थायी थयां तेओ उत्तर हिंदुस्तान
नी संस्कृति, संस्कारनां संसर्गमां आव्यां, परिणामे काळकमे
प्रादेशिक रीतरिवाज, भाषा, पहेरवेश स्वीकारी ओतप्रोत चन्या.

सिंधमां स्थायी थनार चारणकुलोये सिंधनां रीतरिवाज
रहेणीकहेणी स्वीकार्या, तेमज सिंध अे आर्यवर्तनो सरहदी प्रदेश
होवाथी आकमणकारोना धाढांओ सिंधनी सरहदे चडी आवतां
तेनो सशस्त्र मुकावलो चारणे अने रजपूतो करता. आ चारणेनुं
प्रधानकार्य लडाईनुं रह्युं होवाथी साहित्यनुं सर्जन-कार्य नहीवत
रह्युं. आ विशे अेक दूहो पण प्रसिद्ध छे.

धोके वेरी धरिसयुं, दिये तरारे तुंचेल.

गालीए छांदा गेल, सोंप्यां सोरठियें के.

आ चारणकुलो सिंधमांथी जाडेजाओ साथे कच्छ अने
सौराष्ट्रमां हालारमां आवी स्थायी थया. आ चारणकुलो आज
पर्यंत भाषा अने पहेरवेश जेमनो तेम जाळवी राख्यां छे.

कच्छमां जे चारणकुलो स्थायी हता ते तौकीना केटलाक
चारणे सौराष्ट्रमां आवी स्थायी थया. तेमणे प्राचीन रीतरिवाजो,
प्राचीन भाषा जाळवी राखी तेमज राजस्थान, माळवा, मेवाड,
कच्छमां व्यापारक्षेत्रमां सारी ग्रतिष्ठा मेलवी हती.

सौराष्ट्रमा जे चारणकुळो वतनी हता तेओथे सोरठी
रीतरिवाज, सोरठी भाषा, सोरठी लहेरी जीवनमां ओतघेत
बन्या हता. आ चारणकुळो खेती, मालधारी, गरासदार तेमज
साहित्योपासना विविध क्षेत्रमां ग्रस्त हता.

४.१ चारणना प्रादेशिक भेदो :-

ईसुना चैदमां सोकामां चारण थेक धारण हतां. परंतु
ईसुना पंद्रमां सोकानी आखरमां पुष्कर तीर्थमां चारण जातिना
महान हितचितक दुरसाजी आढाप अखिल भारतीय चारण
संमेलननु आयोजन कर्युँ, तेमां समस्त आर्यावर्त'ना चारणो
थेकत्रित थयां. जे प्रदेशमांथी चारणो आ संमेलनमां उपस्थित
थयां तेओमां वेशनो बलोट तथा वाणीना लहेकामां तरी आवती
प्रादेशिक भिन्नताने कारणे चारण संमेलनमां पोतानां प्रदेशनी
आगवी भात पाडी आथी तेओ जे प्रदेशना हता ते प्रदेशना
नामथी ओलखाया. काळकमे आ प्रादेशिक ओलखाण चारण
समाजमां रूढ थती गई. वस्तुतः तेओ थेकज चारणजातिना
संतानो हता. आ विशे दोहाओ पण आ हकीकतनुं समर्थन
करे छे.

साडा त्रण पहाडा तणा, चारण धारण थेक,

आई पम आखवीयुँ, बेघु जाणे विवेक.

क्या मास, क्या गुजरा; क्या परज तुवेल,

सवकी जननी एक है, क्युँ राखत भीन भेद.

काळकमे अझानी, असंस्कारी अने असामाजिक तत्त्वोथे
आ प्रादेशिकभेदोनुं विकृत स्वरूप आणी ज्ञातिनां सर्वांगी विक.-
समां वाधक बलो रूप बन्या. परिणामे 'चारणजाति' युगना
संदर्भमां विकास न करी शकी. थेटले के घर सुधी जे परिवर्तन

आवबुं जोईप ते न आव्युं परिणामे चारण युग साथे कदम
न मांडी शम्यो. कवितानो उपदेश चारणोना घर घर सुधी
पहोंचवां जोईतां हतां ते न पहोंचयां, मोटे भागे परोपदेशोज रहां।'

इसुना आठमा अथवा नवमा सैका सुधीमां मारु, सोरठिया,
काढेला, तुंबेल वगेरे भेदो न हता. आ भेदा क्यारे अने केवी
रीते शरु थया प एक विवादास्पद प्रश्न छे आ भेदो खरा नथी.
आ भेदो प्रदेशफेरनी, रहेठाणनी भिन्नताने कारणे ज थयां छे.
एकज शाखाना चारण मारु, सोरठिया, परजिया अने तुंबेलमां
मले छे. आथी पटलुंते चेकस थाय छे के प भेदो प्रदेश
अंगेना तथा तेना आनुषंगिक रीतरिवाज, पोशाक अने भाषा
भेद छे. प्रादेशिक भिन्नता सिवाय आ भेदोमां कोई विशिष्टता
नथी. सौराष्ट्रमां वीजी घर्णी जातीओ (आहीर, कणवी, कोळी,
सुतार, रवारी) मां सोरठिया प प्रदेशभेद छे. चारण जातिना
अभ्यासी - विद्रानोये एकमते प्रतिपादित कर्युं छे के चारण
जातिमां जे भेदो छे ते प्रादेशिक भिन्नताना भेदो छे अथी
विशेष कशुंज नथी.

मेजर साहेब श्री रघुवीरसिंहजी (वीरसतसई) आ भेदोनी
चर्चा करता जणावे छे के "यह चारण जाति चार प्रधान
भागोमें विभक्त हैं। मारु, काढेला, सोरठिया, तुंबेल ये नाम
इनके निवासस्थान जनपद-विशेषों के हैं। मध्यप्रान्त व मारुमें
रहनेसे मारु, कच्छ में रहनेसे काढेला, सौराष्ट्र से सोरठिया
और तुंबेल सम्भवतः दक्षिणापंथ के तैलंगवासी हैं।"

आ विषे कविराज बारहठ कृष्णसिंहजी 'चारणकुल प्रकाश'मां
लखे छे के : 'काडियावाड राज्य चारणो के हाथ से जाता रहा
तब चारणों के दो दल हो गये जिनमें एक दल के प्रजारूप
होकर वहीं पर रहे सो कच्छदेश के नाम से काढेला प्रसिद्ध

हुए और दूसरे दल मारवाड़ में चले आने के कारण महादेश के नाम से मारु चारण कहलाने लगे।'

कविराजा श्री मुरारिदानजीनी मान्यता गुजरात 'सुमेर से आकर हिमालय पहाड़ पर आयाद हुई। हिमालय पहाड़ से हिंदुस्थानकी जमीन पर तैलंग देशमें आई, वहां से फैलती फैलती मारवाड़ में रहने से मारवाड़ देश के पीछे हम 'मारु' चारण कहलाने लगे। अब मारवाड़ से फैले हुए मारु चारणों राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़ और मालवामें हैं।'

(चारण ख्याति)

राष्ट्रीय शायर श्री झवेरचांद मेघाणी अने सौराष्ट्रनी पछात कोसा भाग १ मां जणाव्या प्रमाणे 'चारणोनी अंदर मारु अथवा गृजरा, सोराठिया, परजिया, तुंबेल वगेरे जे भेदो छे, अे भेदो प्रदेशफेर, रहेठाण, आचार-विचारनी भिन्नताने लीधे थया छे. अकेज शाखाना चारणो मारु, सोराठिया, परजीया, तुंबेलमां पण छे।'

अखिल भारतीय चारण संमेलन प्रथम अधिवेशन वै. संवत् १९७८ सन् १९२१ ई. पुष्कर (राजस्थान) मां योजवामां आव्युं हतुं. ते संमेलनना सभापति श्री कविराजा साहेब दुर्गादानजी महियारिया (कोटा) अे तेमना भाषणमां आ अंगे चर्चा करतां जणाव्युं हतुं के :

'चारण जातिमें चार बडे बडे समुदाय हैं। मारु, काछेला, सोराठिया और तुंबेल। इनके नामोंकी तरफ जब दृष्टि करते हैं तो ज्ञात होता है कि यह सब नाम देश भेद के कारण पडे हुये हैं। वास्तव में जब किसी समय यह जाति जब हिमालय प्रदेश से भारतवर्ष में आई होगी केवल 'चारण' नाम से ही विख्यात रही होगी। परंतु कच्छ से काछेला, सौराष्ट्र से सोराठिया

और मारवाड़ में आने से मारु आदि बड़े बड़े भेद हो गये हैं मारु चारणोंकी कुल देवियां अधिकांश में वे हैं कि जिन्होंने काढ़ेलों में जन्म लिया है। इससे यह पता चलता है कि मारु चारणोंकी खांपे की कुल देवियां काढ़ेलियां हैं। वे सब कच्छ से आये हुए होने के कारण किसी समय काढ़ेले कहलाते थे, परंतु अधिक काल तक मारवाड़ में वसने से अब मारु बन गये हैं। सोदा, सीलगा, सुरतानीयां देथा, किनियां, केचर, बनमूर, आसिया आदि पचासों खांपे येसी हैं जो कच्छ से आई हुई हैं।

कहाँ तक कहा जाय स्वयम् मेरे पूर्वज भी उधर ही से आये हुए हैं। फिर भी ये भेद क्योंकर पड़ गये और क्यों कायम हैं; इस असलियत को जब टटोलते हैं तो ज्ञात होता है कि महानुभाव दुरसाजी के किये हुए चारण संमेलन के पीछे से जितनी कोमें कच्छ, गुजरात या काठियावाड़ की तरफ रही ये सब काढ़ेला नाम से कहलाने लगीं। और उस से पहिले जो मारवाड़ से चली आई वे सब मारु नाम से विख्यात हो गईं। इसी प्रकार उक्त संमेलन के पीछे इधर के जितने मारु चारण कार्यवश गुजरात काठियावाड़ की तरफ चल गये वे उधर रहने पर भी अब तक मारु ही कहलाते हैं। अब इनमें जो भेद भाव दिखाई दे रहा है वह केवल अज्ञान के कारण है।'

आ भेदोना भयंकर परिणाम विशे ठा. श्री केसरीसिंहजी सौदा लखे छे के 'यह जमाना न्यात जातका भेद बढ़ानेका नहीं है।' चारण जाति में सोरठिया, परजिया (काढ़ेला) मारु और तुवेल यें भेद भी रहते हुए वह हिंदु जातिका एक उपयोगी अंग नहीं बन सकती। इन भेदों के आधुनिक भयंकर रूपको देखते हुए तो चारण जातिका अस्तित्व रहना भी कठिन मालूम होता है।' (चारण अधिवेशन रिपोर्ट)

आ भेदोनां निवारण अथे सं. १९७८ पुस्करमां अखिल भारतीय चारण संमेलन प्रथम अधिवेशनमां पक प्रस्ताव सर्वे सम्मतिशी एसार करवामां आव्यो हतो. जे उल्लेखनीय छे. 'जबकी संसारकी सब उच्चतिशील जातियां संकुचित विचारोंकी जातिय उच्चतिमें घातक समझती हैं। चारण जाति अज्ञानवश अपनी सीमाको दिन प्रतिदिन संकुचित करती जा रही हैं। संमेलन जातिय अस्तित्व के लिये इस प्रवृति को हानिकर समझता है। इसलिये इस विषय पर पूर्ण विचार करने और समस्त चारण जाति के पारस्परिक जातिय व्यवहार के बाधक कारणोंका पता लगाकर उनके हेतु अेवं निवारण के उपायों सहित आगामी संमेलन में रिपोर्ट करने के लिये काठियावाड, गुजरात, मालवा और राजपूताना के निम्नलिखित सरदारोंकी एक कमीटी नियत करता है।'

[प्रस्ताव सं. ८ सर्वे सम्मति से स्वीकृत]

आजे एण केटलाक विकृतमानस धरावता ज्ञातिजनो आ प्रादेशिक भेदोने प्रतिष्ठानो प्रश्न बनावी; ज्ञातिनी एकतामां, चारण थेक धारणमां, ज्ञाति उत्कर्षमां बाधक बळ तरीके कार्य करी रह्यां छे. ए दयापात्र मानवीओने ईश्वर सद्बुद्धि आपे अेज अभ्यर्थना.

४.२ साडा त्रण पहाडामां समस्त चारणजातिनो समावेश :-

'चारणोमां पहाडा शा कारणधी पडथा ते एक संशोधननो विषय छे. मूळ तेओमां नर, चोराडो सबो अने अर्धा तु बेल एम साडा त्रण वर्ग गणाय छे. अंते तेमां समस्त चारण कोमनो समावेश थयेलो मानवामां आवे छे. आ वर्गने तेओ 'पहाडा' कहे छे. साडा त्रण वर्गोनी दंतकथा :

पृथ्वीलोकमां पार्वतीजीना कहेवाथी नरदेव बुंद नामनो चारण नवकुल नागनी दीकरी आवडीने वर्यो अने तेने चारणोमां

नर, चोराडो तथा सदो पम ब्रण वर्ग पाडया. आ वर्गोने ते 'पहाड़ा' कहे छे.

वली दंतकथामां पम कहेवाय छे के आ नरदेवने तथा आवडीने घरवासमां खटराग थतां अधों गभ लई तेने तुंबडामां नाज्जी तेने दीरीआमां केंकी दीधो पटले ते तुंबडामांथी जे चारण उत्पन्न थयो तेनुं बाम तुंबेल पडयु. तेनो अधों पहाडो गणवामां आव्यो आम साडा त्रण पहाडानी गणत्री करवामां आवेल छे.'

[सौराष्ट्रनी पछात कोमो भाग-१]

वीर काव्य ग्रंथमां जणाव्यां प्रमाणे 'चारणोंका आदि पुरुष 'जकत' बतलाया जाता है'। 'जकत' के वंशज आदि चारण कदलाते हैं। जकत के चार पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों के नाम कमशः नद्, नरह, चोरर और तुम्बेत तथा पुत्रीका नाम गोरी था। आ पुत्रोना उपरथी चारणोमां वर्गों पडया हेवानी एक मान्यता छे.

आ पहाडानी उत्पत्ति विशे अेक दोहो पण सुप्रसिद्ध छे :

इश्वरे नरो उपावियो, कृष्ण चोराडो कीध,
ब्रह्म चुवो निपावियो, शाखा तीनू सिद्ध.

एक उच्च कक्षाना संतनी मान्यता मुजब चारणोमां जे साडा त्रण पहाड़ा छे ते चारणोना महान आत्माओ परथी पाडवामां आव्यां छे. चारणोंने प्रणव अक्षरना, नाद ब्रह्मना उपासक अने उद्गाता हता. साडा त्रण पहाडाबे ३० नी साडा त्रण मात्रा छे. ओ-३-म अने अडधी मात्रा रेफनी गणवामां आवे छे. साडा त्रण अक्षरोना उद्गाताने कारणे तेना वंशज साडा त्रण पहाड़ा तरीके ओलखाया. आ हकीकतनुं समर्थन करतो एक दोहो श्री कलाभाई उदास पासेनी हस्तप्रतमांथी मली आव्यो छे :

ચારણ શિર જાદ ચઢે, અં શિર અરધંગ,
પડુદે પાર્વતી તણે, અથાહ રૂપ ઝો.

રાજસ્થાન, ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કચ્છના ચારણોની સ્થાયી
વસવાટમાં વસ્તી ગણત્રીનો અંદાજ કરતાં એક દ્વાકીકત નોંધનીય
છે તે સાડા ત્રણ વગોં લોકીની ત્રણ પહાડાના શાખાઓના ચારણો
સર્વેત્ર મલે છે પરંતુ અડધા પાડાના તુંબેલ ચારણો સૌરાષ્ટ્રમાં
જામનગર જિલ્લાના વારાડી પ્રદેશમાં અને કચ્છમાં જોવા મલે છે.
તુંબેલ પહાડાની ઉપશાખાઓની સંખ્યા, જનસંખ્યા એક પહાડા
કરતાં અડધી જોવા મલે છે. બાથી આ શાખાના ચારણોને
અડધા પહાડામાં સમાવેશ કર્યો હોવાની શક્યતા છે એક કિવદંતી
પ્રમાણે કચ્છના મહાકવિ માઘલ સાવાણી આયોજિત અખિલ
ભારતીય ચારણ મહાસંમેલનમાં તેમજ મહાકવિ દુરશાજી આઢા
આયોજિત પુષ્કર ક્ષેત્રમાં અખિલ ભારતીય ચારણ સંમેલનમાં
દરેક સુખ્ય શાખાઓના ચારણો ઉપસ્થિત રહ્યાં હતા પરંતુ તુંબેલ
શાખાના ચારણોનું પ્રધાનકાર્ય આક્રમણકારોથી દેશની રક્ષાનું
રહ્યું હોવાથી પ્રત્યેક કુદુંબો અથવા વિશેષ પ્રમાણના આ શાખાના
ચારણો સંમેલનમાં ઉપસ્થિત રહી શક્યા નહીં. આ સંમેલનોમાં
જ્ઞાતિવિપયક અનેકવિધ ચર્ચા વિચારણા થઈ હતી. એ સમયે
ચારણોની જનસંખ્યા પર આધારિત પહાડાથોની પુનઃર્ચના
કરવામાં આવી હશે તે મુજબ તુંબેલ શાખાઓના ચારણોની
સંખ્યા પ્રમાણ અડધા પહાડામાં સ્થાન આપ્યું હોવાની શક્યતા
છે. તેમ છતાં ચારણ જ્ઞાતિના મહા અભ્યાસી શ્રી પિંગલશીમાઈ
પાયકનું મંતવ્ય ઉલ્લેખનીય છે.

'ચારણ જાતિની સુખ્ય ૨૩ શાખોમાંથી પ્રથમ સાત શાખા-
માંથી સંખ્યા ૧ નરા તથા સંખ્યા ૨ અવસુરાનો એક પહાડો
અથવા વિમાગ, સંખ્યા ૩ ચેારાડો તથા સંખ્યા ૪ મારુનો
દીજો પહાડો, તથા સંખ્યા ૫ ચુંબો અને સંખ્યા ૬ બાદીનો
ત્રીજો પહાડો અને સંખ્યા ૭ તુંબેલનો અધેં પહાડો એમ કુલ

સાડા ત્રણ પહાડાની ઉ શાખો. આ સાડા ત્રણ પહાડાની હકી-
કત ઘણું સંશોધન માગે છે. વિભાગ માટે પહાડા શબ્દ શા
માટે યોજવામાં આવ્યો તે એક વિચારણીય પ્રશ્ન છે. સંભવ છે
કે પોતાના મૂલ નિવાસ હિમગિરિના જૂદાં જૂદાં પહાડોમાં રહેવાને
કારણે ઉક્ક વિભાગો માટે પહાડા શબ્દ પ્રચલિત થયો હોય.

પહેલાં ત્રણે પહાડામાં દરેકમાં બે બે શાખો છે. તેમાંની
પહેલી શાખા મુખ્ય ગણાય અને એને નામે એ પહાડો ઓન્નખાય. જ્યારે બીજી શાખા ભાણેજ કહેવાય છે; અને મુખ્ય શાખાવાળા-
ઓની સાથે એમને સંબંધ સગપણનો અંગીભૂત વ્યવહાર માનવામાં
આવે છે. એટલે કે નરાના પહાડામાં નરા મુખ્ય અને એમના
ભાણેજ અવસુરા જેમની સાથે એમને કન્યા લેવા દેવાનો સંબંધ.
બીજા પહાડામાં ચોરાડા મુખ્ય અને મારુ તેમના ભાણેજ અને
એમનો અરસપરસનો લેતીદેતીનો સંબંધ, અને ત્રીજા પહાડામાં
ચુંબાં મુખ્ય અને બાટી તેમના ભાણેજ, જેઓ અરસપરસમાં
વરે. જ્યારે ચોથા અડધા પહાડામાં તુંબેલ, એમનો કોઈ ભાણેજ
નહિ એમની લેતીદેતી સાધારણ રીતે ઉપરની ત્રણ મુખ્ય શાખોના
ભાણેજો અવસુરા, મારુ તથા બાટી સાથે થતી પરંતુ કાલ્કમે એ
સ્થિતિમાં ફેરફાર થઈને નરા, ચોરાડા તથા ચુંબાઓની સાથે
પણ તેમના લગ્ન થયાં છે; અને થાય છે. અદ્વી અએક વિચારધારા
છે જે અન્વયે એમ માનવામાં આવે છે કે જેમનાં કુલત્રષિ એ
છે તે શાખાઓ ભાઈ છે. જેમને નરા અને તુંબેલ એમનાં કુલત્રષિ
શંકર કહેવાય છે એટલે તેઓ ભાઈ હોવાનું કેટલાક માને છે.
પરંતુ એ માન્યતા બરોબર હોવાં વિષે શંકા છે, કારણ કે એકજ
નામના જૂદાં જૂદાં કુલત્રષિ હોઈ શકે. ઉપરાંત જુદી શાખાવાળા
એક જ ત્રણને પોતાના કુલત્રષિ તરીકે સ્વીકારે કે એકજ
દેવીને પોતાનાં કુલદેવી માને તેટલાં ઉપરથી જ તેમને ગોત્રભાઈ
ન કહી શકાય. આ બાબતમાં રાવલોના ચોપડાઓમાં ‘ચારણ

प्रथम बावडनां संतान' प मुजवनी जे दंतकथा लखवामां आवेली छे. तेने आधारभूत गणवामां आवे छे, पण चारणोनी उत्पत्ति अंगे रावलोना चोपडाओने केटलां प्रमाणभूत मानवा ते थेक विचारणीय प्रश्न छे अने घणुं संशोधन मागे छे. रावलोना चोपडाओ जबल्लेज चारसो वर्षथी जूनां होय छे. मावल सावाणीना पुत्रीओनां लग्न समयथी रावलो चारणोना आश्रित थयां त्यारवाद् एमणे चारणोना वहीवंचा तरीके, वयारथी चोपडा लखवा शरु कर्या ते चोकस जाणी शकायुं नथी. आवां संजागेमां रावलोना चोपडामा वर्णवेली चारणोत्पत्तिनी हकीकतने दंतकथाथी वधारे प्रमाणभूत गणवी के केम? प एक प्रश्न छे. जेवी रीते नरा तथा तुंबेलना एकज कुळक्रहपि छे तेवी ज रीते मारू अने भाँचाढीयाना एकज कुळक्रहपि छे. वाटी अने ठाकरियाना थेकज कुळक्रहपि छे. परंतु प वधानां गोत्र जुदां कहेवाय छे. अने अरसपरस लग्न थया होवानुं पण जाणवा मल्युं छे. प प्रश्न घणी छणावट मांगे छे." (चारण ओगष्ट १५-८)

४.३ शाखाओना नामनीं उत्पत्ति :-

चारणकुळनीं विविध शाखाओनी उत्पत्तिनो विषय विवादप्रस्त विषय रह्यो छे. परंतु एटलुं तो चोककस छे के "जे रीते सूत, मागघ-बंदी आदिनी उत्पत्तिना वर्णने छे तेमां ते ते वर्गने मिथ्रवर्ण तरीके ज निर्देशेल छे. मात्र चारण वर्ग ज एवो छे के जेनुं कोई मिथ्रवर्ण तरीके वर्णन नथी तेथी एम लागे छे के चारण नामथी ख्यात जे वंश चाल्यो आवतो ते कोई अनुलोम के प्रतिलोम लग्नने परिणामे नीपजेलो नथी."

- (पंडितवर सुखलालजी)

आ हकीकतनुं समर्थन करता श्रीमान महाराजा साहिब बलभद्रसिंहजी लखे छे के 'खुष्ट रचनासे आज तक अनेक

शास्त्र पुराण और लोककथामें अनेक दृष्टान्त मिलेंगे कि ब्रह्मणादिवर्णों की स्थियाँ से क्षत्रियों का अनुचित सम्बन्ध हो गया है और क्षत्रियों की स्थियों से ब्राह्मणादि का उसी प्रकार अनुचित व्यवहार मिलता है परन्तु मैं चैलेंज देकर (दावे से बलपूर्वक कह) सकता हूँ कि क्षत्रिय और चारण जाति में ऐसे निन्दनीय व्यवहारका एक भी दृष्टान्त नहीं है।”

कविवर्य बारहठ श्री कृष्णसिंहजीनी मान्यता मुजब चारणोनी शाखाओना नाम त्रण कारणोथी आपवामां आवेल छे. “प्रथम तो प्रसिद्ध पिता के नामसे शाखा प्रगट हुई हैं, दूसरे गांव के नामसे शाखाका नाम प्रसिद्ध हुआ हैं, और तीसरे कोई बड़ा कार्य करनेसे उस कार्य के अनुसार शाखाका नाम प्रसिद्ध हुआ हैं। इन्ही तीन कारणो से शाखाओंका भिन्नभिन्न होना पाया जाता हैं।

आ प्रकरणमां शाखाओनी शक्य होय ते प्राप्य माहिती पर आधारित तेमज क्षेत्रीय संशोधन द्वारा शाखा उपशाखाओनो परिचय आपवामां आवेल छे. संभव छे के आ गहन विषयमां भूलचूक रही जवा पामी होय तो प्रथमथी ज सौनी क्षमा याचना करुँ छुँ.

आ प्रकरणमां श्रीमान् पिंगलशीभाई पायके सवाईनगरवाला श्री जशाभाई दादाभाई द्वारा संपादीत करेली माहिती, कविवर्य श्री बारहठ कृष्णसिंहजीओ चारण कुलशुरुना पुस्तक तेमज अन्य विद्वानोनी पासेथी संपादीत करेली माहिती, राजकोट निवासी श्री बालुभाई रेवादानभाई लांगाप चारणोना ब्राह्मणो अने याचकोनी एकत्रीत करेली माहिती तेमज श्री कलाभाई उढासे तेमना पूर्वजोना हस्तप्रतोमांथी शाखाओना काव्यो, दुहाओ वगोरेनुँ अध्ययन करी सर्वग्राह्य सर्वमान्य माहिती आपवामां आवेल छे. आ प्रकरणमां उपरोक्त महातुभावोनी संशोधनतो

साथ सहकार लेवा वदल तेथोअशीओनो हृदयपूर्वक आभार मानु छु.

प्रथम मुख्य शाखाओनो परिचय आपवामां आवेल छे. ते पछी मुख्य शाखाओनुं विवरण तेनी पेटा शाखाओनी माहिती अने ते शाखाओना चारण क्या विस्तारमां वसवाट करी रहां छे तेमज ते शाखाना प्रसिद्ध महापुरुषनो पण उल्लेख करवामां आवेल छे. जे शाखाओनी माहिती प्राप्त थई नथी, पुष्ट प्रमाण मब्ब्यां नथी अथवा तो संतोषकारक माहिती मळी नथी ते शाखाओना फक्त नामनो ज उल्लेख करवामां आवेल छे. कुलऋषि, कुलदेवी, ब्राह्मणो, याचको, पेटाशाखाओनी संख्यानी माहिती कोष्टकमां आपेली हेवाथी तेनी पुनरावृति करवामां आवेल नथी. प्रथम साडात्रण पहाडानां चारणोनी शाखाओनो परिचय आपवामां आवेल छे. त्यारवाद सोळशाखीआ चारणोनो परिचय आपवामां आवेल छे.

४.४ चारणजातिनी मुख्य शाखाओः-

| मुख्यशाखा | कुलऋषि | कुलदेवी | ब्राह्मण | शाखाना मागणीयात (याचको) | उपशाखा नी संख्या |
|-----------|-----------|----------|----------|-------------------------------|------------------------|
| नरा | शंकर | रवेची | दादल | रामैया | ६१ ^१ |
| अवसुरा | धेनुबल | चामुंडा | मालण | माणकडो | |
| चेराडा | कृष्ण | वरेक्षणा | मढवी | उदीया | ५५ ^२ |
| मारू | परमोरु | आवड | सुमड | सोटाळो | ७३ ^२ |
| चुंवा | मार्कंडेय | रवेची | खेडीया | पुनीया | ६४ |
| बाटी | चूडसोम | चामुंडा | चाव | भुथरीया | ४४ ^३ |
| | | | वरणवो | माणकडो | २९ |
| | | | वरणागर | | |

पहाडा : १ नरो-चाण-अवसुरा, २ चेराडो-चाळ-मारू, ३ चुंवा-चाळ-बाटी

| मुख्यशाखा | कुलऋषि | कुलदेवी | ब्राह्मण | शाखाना मागणीयात (याचको) | उपशाखा नी संख्या |
|-----------|-----------|------------------------|----------|-------------------------------|------------------------|
| तुंबेल | शंकर | रवेची-चामुँडा मोमाई | मसुरीयो | भरडोसो | १३१ |
| वाचा | गुह-गोयल | महामाया रवेची | चाव | भुथरीयो | १६१ |
| मीसण | गीयणनाग | चामुँडा | गरीयो | मागणीयो | १२ |
| ठाकरिया | चूडसोम | आवड | चाव | लेलीया | २४ |
| जाखला | पिंगल | आवड | कवेसर | जेसधु | ३६ |
| गृढायच | उँकार | होल-पुरवज | त्रवाडी | चावडो | १४ |
| टापरीया | नेत्रभानु | रवेची | चाव | वजेमल | १३ |
| भांचलीया | परमोरु | चामुँडा भद्र-शक्ति | घांघीयो | सावडो | १२ |
| नैया | उद्धार | लालबाई | घांघीयो | मासैयो | १७ |
| घांघणीया | केटिनाग | रवराई चोराई | गरीयो | भुथरीयो | १७ |
| रोहडीया | भट्टाक | नागणेची नागेसरी | चावडो | दोदीयो | १३ |
| फूनडा | राष्ट्रवर | दुधड (दुग्धवती) | रावळ | हडीयाल | १३ |
| लीला | उँकार | पंचराई मोमाई | सुमड | मोतीसर | ०६ |
| आसणीया | उँकार | आवड | सूरु | मोतीयो | १७ |
| रतनु | पुष्कर | वत्सावती | गरीयो | मालचडीया | १० |
| केशरीया | मकवाहन | चामुँडा | सूरु | ० | १३ |
| मादा* | अलिंग | महामाया | मसुरीयो | भरडोसो | १२ |
| | भरद्वाज | मोमाई | | | |

पहाडा इ तुंबेल + अहींथी सोळ चाळ

* मादाना कुलऋषि अनंगऋषि पण होवानुं कहेवाय छे अलिंग, भरद्वाज अने अनंगऋषि बन्ने अेकज होय तेवी पण शक्यता छे.

A नरा:-

‘नरा नामना अथवा नर नामना पितानां वंशजो नरा कहेवाया होय पम लागे छे.’ (पिंगलशीभाई पायक)

नराना कुळदेवी रवेचीनुं भव्य मंदिर कच्छना रव गाममां आवेलुं छे. आईना वचन मुजब शियाळामां स्यां शियाळु पवन वातो नथी. दर वरसे रव गाममां मोटा मेळो भराय छे.

नरा चारण जातिना मोवडी, अग्रेसर हता. नरानी पेटा शाखाओ नीचे मुजब छे.

(१) इशार अथवा ईश्वरा के इसरपोत्रा. (२) ऊसडा : आ शाखा सौराष्ट्रमां पारेवाळा, राजकोट, मढाद, सुरेन्द्रनगर, गुजरातमां सवासला, पोपटपरामां रहे छे. (३) केहरा अथवा केरीआ के केरवा : आ शाखा गिरमां जामवाळा पासे मीतडी अने सोमानीसर नामना नेसोमां रहे छे. (४) कागडा : नरानी पेटा शाख बावडा अने अे बावडानी पेटा शाख कागडा होवानी मान्यता छे. सौराष्ट्रमां सोखडा अने रामपरडा गाममां आ शाखाना चारणो वसे छे. (५) कीडीया : नरानो ओक विभाग डाडावाळा छे तेमां कीडीयानो समावेश थाय छे. सौराष्ट्रमां तुरखा, पारेवाळा मोंयरा, जामनगर गामोमां छे.

(६) गृदा : गाढु : (७) गेला अथवा बेलडा : बावडानी पेटा शाख मानवामां आवे छे. (८) गोखरू : सौराष्ट्रमां ध्रांगध्रा, बावळी, राजकोट, चोटीली, अमरेली, गोठाणीया, पीपरखेड, कच्छमां खोडासर, गुजरातमां इंडवडी, सोलडी अने निमाडमां सेंधवामां आ शाखना चारण वसे छे. (९) गोयल : सौराष्ट्रमां मोरवी, समढीयाळा (गढवी), दामनगर अने राजस्थानमां सरवडीमां आ शाखाना भाईओ वसे छे. रावानी पांच शाखाओमां गोयेलनो समावेश थाय छे. रावा नामना पितानां पांच पुत्रो

તेमांथी (૧) ભારાના રાવા, (૨) રાજવેઠના રાજવેઠ, (૩) ભીમાના સ્વડા, (૪) ગોયલના ગોયેલ, (૫) ઉદાના જોગડા. એ પાંચ ખવાનાં ગણાય છે.

(૧૦) ગોહેલા :— બરાનીયા ગામમાં રહે છે. (૧૧) ગોરવીયાળા આ પેટા શાખા ઘણી પ્રાચીન છે. પ્રસિદ્ધ આઈ શેણવાઈઆઈ સૌરાષ્ટ્રમાં ઝેલાણ પાસે ગોરવીયાળા ગામમાં થઈ ગયા. જૂનાગઢ પાસેના મોણિયા ગામના આઈ નાગવાઈનું દ્વારા કુલ પણ ગોરવીયાળા હતું. સૌરાષ્ટ્રમાં ગોરવીયાળા, મોણિયા, દાવાણા, પીપરલા, સોખડા ગામોમાં આ શાખાના ભાઈઓ વસે છે. (૧૨) ઘુઘડઃ આ શાખાના ચારળો કચ્છમાં જરપરા, ભાડા, ભાડિયા ગામોમાં વસે છે. (૧૩) જગદ્ધઠઃ (૧૪) જગભલ (૧૫) જાજલીઅા : એક માન્યતા પ્રમાણે મૂલ સંસ્કૃત યાયાવરીય ઉપરથી અનુ શબ્દ નું રૂપાંતર થયુ છે. સુપ્રસિદ્ધ રાજકથિ રાજશેખર યાયાવરીય તરીકે પ્રાચીન ગ્રથોમાં જાણીતા છે. આ શાખા સૌરાષ્ટ્રમાં ગીર પ્રદેશમાં, રાજસ્થાનમાં શિરોદી તાત્રે માલ્વામાં હોવાની શક્યતા છે.

(૧૬) જામંગ : નરાઓની પેટા શાખાઓમાં થેક વિમાગ જાસીલને નામે ઓલ્ડખાયો તેમાં (૧) જેસલ (૨) જામંગ (૩) જાલ્ફકવા (૪) જાલ્ગ અને (૫) નાંદણ. આટલી શાખાઓનો સમાવેશ થાય છે. આ શાખાના ચારણ જાંબુડા, કીડી, સીતાપુર, તુરખા, સોખડા, ગુજરાતમાં વાવઢી, નિમાડ [મ. પ્ર.] માં શાબાશપુર, સેંધવા અને મહારાષ્ટ્રમાં પલાસનેરમાં વસે છે. (૧૭) જાલ્ગ : 'જાલ્ગ' નામના પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખાં પ્રસિદ્ધ થઈ. સૌરાષ્ટ્રમાં તુરખા, ભાવનગર, અમરેલી, કચ્છમાં ચકાર, ગુજરાતમાં કોયલી, માંઢવી, ભરુચ અને મધ્યપ્રદેશમાં આ શાખાના ચારણ વસે છે. (૧૮) જાલ્ફકવા : સૌરાષ્ટ્રમાં ભાડલા, કુવાડવા, મેંયરા,

જાંબુડા, રાજકોટ, પીંગલી, ખાટડી, વાંકાનેર, ગુજરાતમાં પંચમહાલ જિલ્લો, મધ્યપ્રદેશ જાંબલી નિમાડ, મહારાષ્ટ્રમાં મુંબઈમાં જાલફવા વસે છે. સૌરાષ્ટ્રનો એકલિયો વહારવટિયો પુનરવ આ શાખામાં થઈ ગયો. (૧૯) જલ્લપણા : સૌરાષ્ટ્રમાં જાંબુડામાં આ શાખા વસે છે. (૨૦) જેત્રહથા : આ શાખાના ભાઈઓ માલવામાં અને રાજસ્થાનમાં હાડોતી પ્રદેશમાં હોવાની માન્યતા છે. જેતા : (૨૧) જેસલ્લ : પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ. સૌરાષ્ટ્રમાં જાંબુડા, ખાટડી, ગુજરાતમાં ગવાસી, ભીમા વાવડી (પંચમહાલ), નિમાડમાં માડાખેડા, રાજસ્થાનમાં કોટા, કોટડા, બગસપુરમાં આ શાખાના ભાઈઓ વસે છે. (૨૨) જોગડા : જોગના નામના પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ. સૌરાષ્ટ્રમાં મોરવી, ખેંયરા, બગડમાં આ શાખા વસે છે. (૨૩) ઝીવા : સૌરાષ્ટ્રમાં મૂળી, ધ્રાંગધ્રા, દેગામ, ઝાંબડી, ભાણવડ, રાજકોટ, કચ્છમાં ચરખડા, ગુજરાતમાં અમદાવાદ, કાલરી, બનાસકાંઠા અને રાજસ્થાનમાં આ શાખાના ભાઈઓ વસે છે. કાલરીમાં મોડઝીવા નામના સુપ્રસિદ્ધ મહાપુરુષ થઈ ગયા

(૨૪) દધિવાડીયા : દધવાડા નામના ગામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ. ગુજરાતમાં ચોરાડમાં ચારણકા ગામમાં આ શાખાની વસ્તી હતી. રાજસ્થાનમાં મેવાડ, મારવાડ, વાસળી, કોડરી ઠિકાના આ શાખાના ચારણો વસે છે. ચારણ રત્ન મહામહેષ્યાધ્યાય દ્યામલદાનજી દધિવાડીયા આ શાખામાં સુપ્રસિદ્ધ કવિ થઈ ગયા. (૨૫) દેભલઃ ગુજરાતમાં મહેસાણા જિલ્લાના રાધનપુર પાસે દેભલની પીપળી નામના ગામમાં આ શાખા વસે છે. (૨૬) ધુહડઃ વદ્ધિયાર પ્રદેશમાં આ શાખા હેવાની શક્યતા છે. (૨૭) ધૂનાઃ સૌરાષ્ટ્રમાં જામનગર જિલ્લામાં આમરણ પાસે આવેલ હજામચોરા ગામમાં ધૂના શાખાના ચારણો વસ્તા હતા. (૨૮) નજભલઃ રાજસ્થાનમાં કોટા પાસે

आ शाखाना चारणो होयानी मान्यता छे. (२९) नडीयरा : आ शाखा अस्तित्वमां छे. क्या स्थले वसे छे तेनी माहिती प्राप्य नथी. (३०) नडीरः सौराष्ट्रमां व थली पासे नरेडी गाम उपरथी नडीर कहेखाया नरेडी गाम श्री नाथजीनी हवेलीने अर्पण करता गादाई गाम वसाव्यु. आजे पण गादाई गाममां वसे छे. (३१) नरदेवः (३२) नरा : नर नामना ऋषिना व शज नरा नामे प्रसिद्ध थया चारण ज्ञातिना प्रमुख तरीके नरा शाखाने मान्यता मळी छे अन्नपूर्णश्वरी आई वरवडी आ शाखामां थई गया. सौराष्ट्रमां पोरबंदर पासे खांभोदर, मोणिया, गीरमां, कच्छमां, रतडीया नाना भुजपुर, नानी उनडोठमां आ शाखा वसे छे.

नरा शाखामां पक कापडी साधु थई गयेल परंतु भाईओअे अने ज्ञातिजनोए तेनो भेख उतरावी तेने परणाव्यो. तेना व शजो अभाणी जुगाणी, राघवाणी, जगाणी, जामोतर, राणसीयाणी, भायाणी, पताणी, देवाणी, नामे ओलखाया आजे आ पेटा शाखाओ कच्छमां करोडियामोटा, नानी उनडोठ, कुकडसरमा वसे छे. (३३) नरेला सौराष्ट्रमां भावनगर, शिहोर, वरल, आंगलका, बालोट (जूनागढ) नटवरनगर, रोहीवाडा, लंगाळा, शेढावदर आ शाखा वसो छे. सौराष्ट्रना सुप्रसिद्ध कवि श्री पिंगलशीभाई पाताभाई नरेला (राजकवि भावनगर राज्य) आ शाखाना हता. (३४) नागैया : नरानो पक विभाग डाडावाळा तरीके ओलखाय छे. तेमां रावा, गोखरु, लेमा, नागैया शाखाओनो समावेश थाय छे. आ शाखा सौराष्ट्रमां राजकोट, आणंदपुर, भोजपुरा, तुरखा, बोटाद, मध्यप्रदेशमां (निमाड) लोडणदेव, शावासपुरा, सेंधवामां नागैया शाखाना चारणो वसे छे. (३५) नामाळग : (३६) नायक ; राजस्थानमां मेवाडना चितोडगढ पासे मंडला गाममां आ शाखाना भाईओ वसे छे.

(३७) नांदण : सौ.माँ बोराणा, मेरवी, कलागडवानेश,
थोराळी, खोळ, मध्यप्रदेश (निमाड) लोडणदेव, धंटी, नेस,
बरूखडी देवलीमां आ शाखा वसे छे. नांधण : कच्छमां थांचोटिया
सुरजकराडी, भुजपुरनानी, रागा, झरपरामां वसे छे. (३८) नांधृः
सौ.मां जामनगर जिल्लामां नांधूना पीपळीया गीरमां, लुणगरी,
कच्छमां धुणई, गुजरातमां खेडा जिल्लाना घोडासर पासे
वारसुवाडा, नरसंडा, चलाली, निकोल, पीपळीया, टेकरानुं
मुवाड, वरसोळामां आ शाखा वसे छे. (३९) पायक : आ शाखाना
पूर्वेजो मारवाडमां तळला गामेथी वागडमां रव गामे आवेला
त्यांथी लेद्राणी आव्यां. कच्छमां लेद्राणी, जनाण, भुज, रापर,
कल्याणपर, गांधीनगरमां आ शाखा वसे छे. आ शाखामां
शामदास पायक एक समर्थ पुरुष थया छे चारण ज्ञातिना
महाअभ्यासी अने ज्ञाति हित चितक थ्री पिंगलशीभाई परवतजीभाई
पायक आ शाखाना छे. (४०) पालीया : सौ.मां जांवुडा,
जामनगर, पारेवाळा, लालका, राजकोट, मध्यप्रदेश (निमाड)
सिलेटीया, घाटखेडी, गुजरातमां पंचमहाल जिल्लामां आ शाखा
वसे छे. महादानेश्वरी कमा पालीया अने श्री करसनभाई पालीया
आ शाखामां महापुरुष थई गया.

(४१) नेचडा : सौ.मां जांवुडा, जामनगर, गीरमां, गुजरातमां
बनासकांठा, वागोसण, कालरी, विदेशमां लंडन (यु. के.) आ
शाखा वसे छे. (४२) पोपरीवा :- (४३) पंचाळ अथवा पंमाळ :
(४४) पांडरशिंग : सौ.मां बोटाद पासे चारणकी, मूळीमां शाखा
वसे छे. (४५) वावडा : सौ.मां रंधेला पासे हडमतीया, पारेवाळा,
राजकोट पानेली, गोलाण, बढवाण, कच्छमां नानालायजा,
कोटाय, सूरजकराडी, वोवार, कपाया, समाधोया, बोराणामां
उत्तर गुजरातमां चाढकपर, सुदरी, वाधरवा, अमदावादमां आ
शाखा वसे छे. (४६) बुत्रडा : कच्छमां कोडाय गाममां वसे छे.

(४७) बारात्री : नेशाई अथवा अगरवच्छाओमां होवानी शक्यता छे. — (४८) बुधड़ : बेधड़ (४९) वेरा : (५०) वेश्वा : सौ.मां मूळी, हालारमां खाखरा, बोटाद पासे खसमां, गुजरातमां लुणवाडा, रामपुर धंधुका खरड, राजस्थानमां दयालपुर, जालोर, सरवडीमां आ शाखा वसे छे. श्री प्रभुदानजी मावाभाई आ शाखामां समर्थ कवि हता. जाणीताजिल्ला पुरवठा अधिकारी श्री पी. पी. गढवी आ शाखाना छे. (५१) भूहड़ : राजस्थानमां हाडेती प्रदेश, मध्यप्रदेशमां निमाड प्रदेशमां आ शाखा होवानी मान्यता छे. (५२) मेंसवडा : सौ.मां गीर प्रदेशमां आ शाखा वसे छे. (५३) मार्लीया; सौराष्ट्रमां वरडो, गीर आलेचना विस्तारमां आ शाखाना चारणो नेशमां रहे छे. (५४) मूळीया: सौराष्ट्रमां राजकोट, हेमाळ, जांबुडा, लुणागरी, गामोमां आ शाखा वसे छे. (५५) मोखरामः (५६) मोढा: (५७) मोहेरीया: (५८) मोंभळः सौराष्ट्रमां गीर प्रदेशमां आ शाखा वसे छे. (५९) रवाई : कच्छमां कराडीया मोटा, नानी उनडेठ, कुकडसरमां आ शाखा वसे छे. (६०) राजपाळः (६१) राजैया: सौराष्ट्रमां जांबुडा, समढियाळा (गढवी), चोटीली, सवाईनगर, कच्छमां भाडा, गुजरातमां वावडी (उ. गु.), मध्यप्रदेशमां निमाड घंटी, घाटाखेडीमां आ शाखा वसे छे.

(६२) रावा : सौराष्ट्रमां बोराणा, समढीयाळा, आंबरडी, पीपरडी, लींबडी, कच्छमां जैवाई, रव, गांधीधाम, लाकडीयामां आ शाखा वसे छे (६३) राजवेठः सौराष्ट्रमां मोरबी, गुजरातमां समलया पासे भीडेळामां आ शाखा वसे छे. (६४) लभदेया : लबदीया: राजस्थानमां अने माळचामां होवानी मान्यता छे. (६५) लुणलः लुचड़: सौराष्ट्रमां ध्रांगध्रा पासे वावळीमां आ शाखा वसे छे. (६६) लोमाः सौराष्ट्रमां पारेवाळा, भोजपरा, राजकोट, टोळनानेशमां आ शाखा वसे छे. (६७) लोयणः (६८) शींगडीया:

सौराष्ट्रमां गीर प्रदेशमां वसे छे. (६९) सूडा : गुजरातमां धोलका
पासे साकोदरा, पंचमहाल जिल्लामां, मध्यप्रदेश - माळवामां
होवानी शक्यता छे. (७०) सैयां : सौराष्ट्रमां गीर प्रदेशमां छे.
(७१) सोया : सोमां पारेवाळा, भोयरा, रतनपुर, तुखा,
मध्यप्रदेश माळवामां आ शाखा वसे छे. (७२) सोसर : (७३)
सूंधा : सौंढा : पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई
छे. मालानीमां आ शाखा वसे छे. (७४) होठा : (७५) हेठाळा :
राजस्थानमां चितोड़नी आसपास वसता होवानी शक्यता छे.

नरा शाखाना काव्यो :

- नरा -

आद नेचडा, नांधू, नजभल, मांगु, गोरबीथाळा, मेभल,
इशर, भूचड, धूहड, नां माळग, नायक, पायक पखियां पाळग,
जाळग, जगहठ जगभल, जीता, ईश्वर पेत्रा वरण वदीता,
झीवा, झींगडीया शे जाणु, पांडरशींगा, देभल प्रमाणु.
दधवाडिया, मोढेरा, धूना, पोपरीया वट पाढे जूना,
भल दातार मेसवडा भाखु, दान नरेला नरदेव दाखु,
पाट पियाळा जेसल प्राजा, ईणा पूरे रेशे आजा,
मंडल धणी जलपशा मोडा ते शु तवड करे सो खोडा.
लखिणा, लूंणल, लभदेया, जगअवतरीया सूरज जेहा,
नांदण, लेरा जे नेठाळा, भारथवाळा जे भूजाळा,
ज्ञागडा, कीडीया, राजा जाणु, बोक्षा मूळीया वळी वखाणु,
जाजलिया जामंग, वळी जाणु पंचाळा, पालीया, लेमो प्रमाणु.
जेत्रहथा, लेयण, जगज्ञाया सूंडा, वुधड, कागडा, सोयो,
राजपाळ, राजशी, राजौया, नडीर, उसडा, ने नागेया,
मेखराम, हठेळा, सुणीये, वेलडा, रजवेडा, मालीया, गणीये,
गोयल, गोखरु, गुढा, गणीये पोह वरवडीनां कुळ पुणीये.

- नरा शाख-११ -

नेवडा, बावडा, घेला, जोगडा, कागडा नांधू,
 लोमा, रावा, शींगडीया, राजसी वखाण,
 जळपशा, भेसवडा, राजौया, ने जेवहथा,
 विश्वभर तणा करो पतरा वखाण.
 मोहेरिया, राजपाल, सूधा, सोढा, नाम्मालग,
 हेठोला, गोहेला, गृदा, लीवा, जगदठ,
 बेआक्षा, कीडीया, गादू, बेघड, पालीया,
 वेरा, थियो मेवा दोय वेला करो सोखथह.
 मोभल, गोखरु, धूना, मोखराम, नांदण ने इशर,
 पायक ने इधवाडीया, उत्तड,
 जेसल, लोदण, केक जालग, नेक शमावंत
 तणा जश चबो नवेखंड.
 नायक, पांडरशींगा, नडीयरा, नरवेव,
 सूलीया, गोरवीयाला, पंचाल, जामंग.
 शाख वीश त्रीस मेक नरा मुखे गावा
 सदा न्यायरा वरीष ईश कृष्ण नार्सिंह.
 कर्ता : मेंद वरसडा (पुनाद).

B अवसूरा :

'अवसूरा नामना पिताना नाम उपरथी बन्यो के
 अविसूर पण होई शके. अबिसूरा अटले रक्षण करनार पहाड़े
 उपरना देवो.' —श्री पिंगलशीमाई पायक.

'यह सूल शाखा अवसूर नामक पिता के नाम से प्रसिद्ध
 हुई हैं।' कविवर्ण बारहठ कृष्णसिंहजी.

- (१) अवसूरा - सौ., गुजरात, कच्छमां आ शाखा वसे छे.
- (२) आपजड - (३) डासपाल - (४) आसिया - आसा नामना

પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ છે. ગુજરાતમાં સાવારકાંઠા જિલ્લો, બોરડી, રાજસ્થાનમાં મેવાડ, ખાણ, શિરોહી, મારવાડ, હૃદડ (જયપુરી), વસ્તી, બીજલીયાવાસ. બેવટા, ખાટાવાસમાં આ શાખા વસે છે. આ શાખામાં સ્વામી વ્રહ્ણાનંદજી અને મહામહોપાધ્યાય કવિવર્ય મુરારીદાનજી જેવા મહાન જ્યોતિર્ધર થયા છે. (૫) ઓગર-સગોઅર- (૬) ઓલવેગડા- રાજસ્થાનના મેવાડ પાસે વનલા નામના નેશમાં હોવાની શક્યતા છે. (૭) કવડિયા - ગુજરાતમાં પંચમહાલ જિલ્લામાં અને મધ્યપ્રદેશમાં નિમાડ પ્રદેશમાં આ શાખા વસે છે. (૮) કિનિયા-કનીરામ નામના પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખાનું નામ કિનીયા પડ્યું. સુપ્રસિદ્ધ અધિબ્દાત્રીદેવી કરણીજી મહારાજ આ શાખામાં અવતરેલાં, સૌરાષ્ટ્રમાં સુશ્રેષ્ટ ગામમાં, રાજસ્થાનમાં પૌપાવાસ, કુશાલપુરા. મપડાલ, કોટા, સુવાપ, જોધપુર, ન્યુ દિલ્હીમાં આ શાખા વસે છે. (૯) કુના- સૌરાષ્ટ્રમાં ભાડલા, ગુ.માં ધોળા પાસે સમઢીયાલ્લા, મધ્યપ્રદેશ નિમાડ સિલટીઆમાં વસે છે. (૧૦) કુવરીયા- (૧૧) કુંવાર- મધ્યપ્રદેશ નિમાડમાં હુંગરચીચલીમાં છે.

(૧૨) ખાત્રા-સૌ.માં તુરખા, ભાડલા, રાજકોટ, જાંબુડા, રૂપાવટીમાં વસે છે. (૧૩) ખડાયચા-ખાંડાલ્લા- (૧૪) ખૂખડ-ખેરા- (૧૫) ગઢવી- ખાત્રા, ગઢવી, નાગલાણી આ બ્રણેય ખાત્રા નામના પિતાનાં વંશમાં હોવાનું મનાય છે. એક કાલે ગઢવી અવસુરા પ્રાડાના મુખી તરીકે સ્થાપવામાં આવેલાં હતા અવસુરા શાખાના મુખ્ય નેતા તરીકે પમની પ્રતિષ્ઠા બહુમૂલ્ય હતી. સૌરાષ્ટ્રમાં ગઢડા સ્વામી પાસે આવેલા ગઢવીના સમઢીયાલ્લા, ગુજરાતમાં ચંદ્રાસર, ડેસલીધૂના, મધ્યપ્રદેશ નિમાડનાં સેધવામાં આ શાખા વસે છે. (૧૬) ગિયડ - ગેડ - સૌ.માં સાલોલી, માલપરા, સોડવદરી, કાલીલા, અમૂલીમાં આ શાખા વસે છે. (૧૭) ગેંદલા - ગોંદલા, (૧૮) ગોલ - સૌ.માં રતનપુર, ભાવનગર, શાપુર, સવાઈનગર,

ગુજરાતમાં પંચમહાલ જિલ્લાના પોપટપરામાં આ શાખા વસે છે.
(૧૯) જસગાર - સૌ.માં રાજપીપળા, રાજસ્થાનમાં હાડેતી કોટડા-
માં આ શાખા વસે છે. (૨૦) જલ્લિયા-જલિયા-જટિયા-ગુજરાતમાં
દહેજ ગામમાં વસે છે. (૨૧) દરંગા - સૌ.માં જુનાગઢ જિલ્લાના
ધરસન ગામમાં વસતા હતા. (૨૨) દેવકા-પિતાના નામ ઉપરથી
આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ છે. સૌ.માં ઘાટીલા, બેલા, ચારણકી,
જામનગર, ગુજરાતમાં ખેડા પાસે દેવકાના મુખાડા, ઝીંઝુખાડા,
છુંબાલ (વડોદરા), વફિયારમાં કુઅરમાં આ શાખા વસે છે.
(૨૩) દેવલ - દેવલ નામના ઋષિનાં સંતાન હોવાને કારણે આ
શાખા દેવલ નામથી પ્રસિદ્ધ થઈ. રાજસ્થાનમાં કુંપઢાસ, નાપા-
વાસ દધવાડિયા, ગઢસ્થિરિયા, વન્દ્રામાં આ શાખા વસે છે.
(૨૪) ધૂલા - (૨૫) નાગલાણી-સૌ.માં તુરખા, ભીમડાદ, ધ્રાંગધ્રા,
ધીપરડી, રૂપાદટી, ગઢવાળા, આંબરડી, કહુકા, ગુજરાતમાં
મોરાંવલીમાં આ શાખા વસે છે. (૨૬) નાગીયા- મધ્યપ્રદેશના
નિમાડ પ્રદેશના લોટણદેવ, શાબાસપુરા, સેધવામાં આ શાખા
વસે છે. (૨૭) પંગર - (૨૮) પસિયા - સૌ. માં વરવાળા પાસે
પાણવી, ગુજરાતમાં પોપટપરા, છોટા ઉદેપુર, ગોવિદીમાં આ
શાખા વસે છે (૨૯) પિંગુર - (૩૦) પાટોલા - પાટોલીયા -
રાજસ્થાનમાં કોટા પાસે મોરંદુ ગામમાં આ શાખા હોવાની
માન્યતા છે. (૩૧) પેથા- (૩૨) બલધા - કચ્છમાં બોવારમાં હતા.

(૩૩) ચુધરી - સૌ. માં ઓટીલી, ટાલ, નાલ, રાજકોટ,
ગીર, કાલીલા, કાલાસરી, ઉત્તર ગુજરાતમાં વાવડી, પોપટપરા,
મહારાષ્ટ્રમાં મુંબઈમાં આ શાખા વસે છે. (૩૪) ભુવા- સૌ. માં
ભાડલા, ઓખામંડલમાં દ્વારકા, બારંભડા, મીઠાપુર, ગિરમાં
જુનાગઢ, પોરબંદર, બોખીરા, મધ્યપ્રદેશ, નિમાડમાં લોટણદેમાં
આ શાખા વસે છે. (૩૫) મેજ - મોર - (૩૬) મહેરાણ - (૩૭)
માણુ - (૩૮) માલકા - સૌ. માં મોંયરા, બોરાણા, ગુજરાતમાં

पेपटपरामां आ शाखा वसे छे. (३९) मोखु- मोखा- मध्यप्रदेशना
निशाडमां लोडणदे, कादवीमां वसे छे (४०) मूलरव - गुजरातमां
पंचमहालना उपावडी, चमारडीमां वसे छे. (४१) मोखीया-
सौ. मां राजकोट, काळागडवा, गुजरातमां, मोरांबली, वावडीमां
आ शाखा वसे छे. (४२) मोहड-मोड-सौ. मां पीपळा, मोजीदड,
कच्छमां झरपरा, भुज, चकार, गुजरातमां राणेसर, अमदाबाद,
खेडामां अलिद्रा, रधमाणज, राजस्थानमां उमेदाबाद, सलवाडामां
आ शाखा वसे छे. (४३) रत्न-सौ. मां सढाद, पच्छेगाम,
कथारीया, बोराळामां वसे छे. (४४) लालस-लाला नामना
पिता उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई. कच्छमां रासपरवेकरा,
दरशडी गुजरातमां राधणपुर, चारणका, रासंगपुर, राजस्थानमां
नैरवा, चोचलवा, जुडिया दिल्हीकैन्ट तोलेशर, जोधपुरमां
पाकिस्तान करांचीमां आ शाखा वसे छे. राजस्थानना पद्मथी
सीतारामजी आ शाखाना छे.

(४५) लूणीया-सौ. मां तलाजा गासे भूंगर गाममां आ
शाखा वसे छे. (४६) वणसीया-सौ. मां वलभीपुर पासे सोणपुर
गामां वसे छे. (४७) वणसुर - वणवीर नामना पिताना नाम
उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई. गुजरातमां माणसा, धनोरु,
छत्राल, राजस्थानमां पारलु, नादियामां आ शाखा वसे छे.
(४८) साजका-सौ. मां राजकोट, उत्तर गुजरातमां वावडी
(पंचमहाल) आ शाखा वसे छे. (४९) सामोर-सौ. मां भावनगर,
पासे रुवा गासे, राजस्थानमां अने दिल्हीमां सारी संख्यामां
सामोर वसे छे. (५०) संभळा- (५१) सुमंग- (५२) सुगा- (५३)
सुरु- सुरा नामना पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध
थई. सौ. मां चारणीया, लीलाखा, समढीयाळा, जेतपुर, वडिया,
अमरनगर, राजकोट, हडाळा, बळौला, भमरीया, चिलडी वर-
वाळामां आ शाखा वसे छे. (५४) सांसी-सौ. मां सांसीनी पीपळी,

દસા (જં.), સીતાપર, નાલ્દ, માંડવધોર, ઉત્તર ગુજરાતમાં વાવડીમાં આ શાખા વસે છે. સૌરાષ્ટ્રના સુપ્રસિદ્ધ સંત આત્મારામ બાપુ આ શાખાના હતા (૫૫) હોના - સૌ માં બલભીષુર પાસે રતનપુર, તુરખા, મધ્યપ્રદેશ જિમાડમાં સીલણીયા, ઘાટાખેડીમાં હોના છે.

અવસૂરા શાખાનું ગીત :

: અવસૂરા શાખા ૪૧ :

સમોરસુ, વળસુર, બુધશી, ઝુઙ્ગાર, સાંસી,

માલકા, ચાંચડા, વંકા દેવકા સુમોડ,
પંગર, ગીયડ, મોજ, સગોઅર, દાસ પેથા,

ઠબે ગુણ શુણીયણાં ભણે ઠોઠે ઢોડ.
ખંડીશેચા, મહેરાણ, મૂલ્યરવ, ખાત્રા, ખેરા,

ગોડાડસુ, સંભળા, નેવળી ધૂલા પાટોલીયા ગોલ,
પેચીયા, નાગીયા, મોખું, દરંગા, લાલસ,

પિંગુ, વળદા, આસિયા ઘણા બોલેા, જશબોલ.
કનુઆ, દેવલ્લણ, હોના, જમીઆ, સો લાખાં

હોતાં અવસુરાં તર્ણી શાખ સવે એક તાલ,
દ્યારા સમુદ્ર મહા મુકિરા કરીપદાતા

ગરીવારો નાથ પ્રભુ વંદો શ્રી ગોપાલ.

C ચોરાડો :

પિતાના નામ ઉપરથી ચોરાડા શાખા પ્રસિદ્ધ રહી છે.
શ્રીમાન પિણલશીભાઈ પાયકના મંતવ્ય મુજવ ગુજરાતના મહેસાણા જિલ્લાની પથીમી સરહદનો વિભાગ આજે એ પણ ચોરાડ કહેવાય છે. એક બખત એ વિભાગ પર ચોરાડા ચારણોનું આચિપત્ય હતું આ એક ઐતિહાસિક હકીકત છે.

(१) आचल - (२) आलवा - आलुवा - कच्छमां मेटा
भरडियामां अलुवा छे. (३) आंवा-सौ. मां वांकानेर, जांबुडा,
कच्छनां चकार, अंजार, मुन्द्रा, गांधीधाम, आदीपुर, कंडला,
महाराष्ट्रमां सुंवईमां आ शाखा वसे छे. (४) कबल - सौ. मां
टंकारा, राजकोट, गुजरातमां मोरांबली, मध्यप्रदेश निमाडमां
लेडणदेवमां कबल वसे छे. (५) कविया-राजस्थानमां मोखमपुर,
वासनी, नेल्ल, विराई, साधुका, मेवाडमां कविया वसे छे.
‘सूरज प्रकाश’ ग्रंथना रचयिता कविवर्य करणीदानजी आ
शाखाना हता. (६) कापडी-राजस्थानमां मेवाडना मंडला गामे
कापडी रहे छे. (७) कास- (८) कांटा- सौ. मां ध्रांगध्रा, धांटीला,
वेरावळ, सातनेरडा, लियाद, कच्छमां अंजार, भचाऊ, भांगोडा.
उत्तर गुजरातमां राफु, गवासी मध्यप्रदेश निमाडमां भोरतामां
आ शाखा वसे छे. (९) कोलवा - कोलवा भगत आ शाखाना
मूळ पुरुष होवानी मान्यता छे. गुजरातना महेसाणा जिल्लामां
राधनपुर पासे पाळवी गाममां कोलु रहे छे. (१०) खडीया-
सौ. मां कवाडीया, सुरवदर, सुवागढ, पोरवंदर, भावनगर,
ध्रांगध्रा, कच्छमां धामाय, मिरजापर, कपुरीसी, गुजरातमां
बनासकांठाना काळोटी, सोईगाम, वरसडा, राजस्थानमां पकलगढ
मध्यप्रदेश मालवा, सीतामऊमां आ शाखा वसे छे.

(११) खेडा-खोड-कच्छमां खोड गाममां वसे छे. (१२) खैया -
मध्यप्रदेश निमाडना नेस गाममां खैया छे. (१३) खीमतेज-
(१४) गडदीया-सौराष्ट्रमां जांबुडा, कच्छमां बलाडिया, सोनलवामां
आ शाखा वसे छे. (१५) गियर - (१६) गांगल - (१७) गोरा-
सौ. मां भेंयरा, बावळी, रामपरडा, राजकोटमां आ शाखा वसे छे.
(१८) चेड - सौ. मां जमराळा, भावनगर, गुजरातमां बोरिया
गाममां चेड छे. (१९) चांखडा - सौ. मां लींबडी पासे रळोल,
गुजरातमां मोरांबलीमां चांखडा शाखा वसे छे.

(२०) चीवा-चवा-कच्छमां अंजार गाममां चवा शाखा वसे छे. (२१) चोराडा - सौ. मां गिर, राजपीपळा, टेलनोनेश, गुजरातमां अमदावाद, वेगनपुर, सरदारपुर, राजस्थानमां भामल गढवाडामां आ शाखा वसे छे. (२२) जागरा-जोगडा-सौराष्ट्रमां भोयरां गाममां वसे छे. (२३) जापा-(२४) जांसा-कच्छमां काठडामां होवानी शक्यता छे. (२५) जोगवीर - जुवीया - कच्छमां नाना लायजा पांचाडियामां जुवीया वसे छे. (२६) डोड - डोडीया - सौ. मां देगाममां डोडीया वसे छे. (२७) ताम - (२८) थहेड - (२९) देवत-देपावत-राजस्थानमां देशनोकमां देपावत शाखा वसे छे. (३१) देवसुर-सौ. मां धांगधा, कच्छमां खीरसरा, खोडासर, मंगवाडा, लाकडीया, गोपालपुरी, गांधीधाममां आ शाखा वसे छे. (३२) देवंगडा-सौ. मां धांगधा, कच्छमां खोड, अधोईमां आ शाखा वसे छे. (३३) देसीया-सौराष्ट्रमां केराळी, कुतासीमां देसीया वसे छे. (३४) धमळा - धामळा - (३५) धिगडमल - (३६) धोळी - (३७) ध्रोळिया - सौ. मां कळसला, प्राची, जांवुडा, झुंगर अने गिरना नेशोमां ध्रोळिया वसे छे. आ शाखामां मांडणभाई नामना कवि थई गया. (३८) नागु - (३९) नासिया -

(४०) पडथार-सौ. मां घढवाण, धांटीला, गुजरातमां सरदार-पुरामां आ शाखा वसे छे. सांखडो पडथार नामना सुप्रसिद्ध दानवीर राजवी आ शाखामां थई गया. (४१) पाया - (४२) फसिया-फासिया- (४३) भड- सौ. मां धांगधा, सोलडी, चुलीमां छे. (४४) भाकवीर - राजस्थानना मेवाडमां मंडला गाममां भाकवीर छे. (४५) भोजा-कच्छमां लायजा गाममां छे. (४६) भोजग-सौ. मां जांवुडा, भावनगर, वेरावल, कच्छमां लायजा भोटा, मंजल, मांडवी, नागकलपुर, गंगेळ, घ घेण, विजयासर, सुरजकराडी, झरपरा, सिधेडी, गढसीसामां भोजग शाखा वसे छे. (४७) मुंधा - (४८) मेमल - रूपावटीमां मेमल शाखा वसे छे.

(४१) मूळराज - (५०) मालकोश - (५१) माला-कच्छमां दयापुर,
करबाई, गढसीसा, गांधीधाम, आदीपुर, कंडलामां आ शाखा
वसे छे. (५२) महुवा - (५३) राणा-कच्छमां होवानी शक्यता छे.
(५४) राजीआ - सौ. मां समढीयाळा (रावा) अने महाराष्ट्रमां
मुंबईमां राजीआ छे, (५५) लोयल- (५६) लोलीया (५७) लेपु-
महाराष्ट्र मुंबईमां होवानी शक्यता छे. (५८) लभवा - (५९) लांबा-
सौ. मां जांबुडा भाडला, टंकारा, खेड, पारेवाळा, ध्रांगद्वा,
राजकोट, कच्छमां मांडवी, भुज, अंजार, गढसीसा, मंजल,
सणोनरा, कानपुर, दील्हीमां आ शाखा वसे छे. (६०) लुणा-
(६१) लुणभा - (६२) लुणग - सौ. मां ध्रांगद्वा, अने कच्छमां
लुणग शाखा वसे छे. (६३) वजसाल - (६४) वजीया - मालवा
खेडी पासे आलोरी गाममां आ शाखा वसे छे. (६५) वडगामा-
सौ मां कूकडा, राजकोट, वोरणा, चूली, कच्छमां गांधीधाम,
कंडला रामवाव, आदीपुर, गुजरातमां अमरावती मध्यप्रदेश
निमाडमां वरुखेडीमां आ शाखा वसे छे. (६६) वणभा - (६७)
वरणसी- राजस्थान मेवाडमां भीमोलमां आ शाखा वसे छे.
(६८) वाघला - (६९) वालिया - कच्छमां होवानी शक्यता छे.
(७०) वानरा-राजस्थान मेवाड भाणोल गाममां छे. (७१) वानरीया-
सौ. मां बाराडी, कच्छमां काठडा, रतडिया मोटा, पांचाटिया,
काठडा, वाडामां आ शाखा वसे छे. वानरियानी वे पेटा शाखा
(१) जादवाणी (२) राजीआणी कच्छमां भाडा, चांगडाईमां वसे छे.
(७२) वासिया-कच्छमां लायजा, धुणई, राजस्थान मेवाड मंडला,
महाराष्ट्रमां मुंबईमां आ शाखा वसे छे.

(७३) वीकल-सौ. मां राजकोट, कच्छमां चकार, भंगोळा,
मंजल, मांडवी, अधोई, त्रंबो, वेवार, मध्यप्रदेश अमरावतीमां
आ शाखा वसे छे. (७४) वीका - कच्छमां चकार, अंजार,
गांधीधाम, कंडलामां वीका शाखा वसे छे. (७५) वीरम-कच्छ

कपायामां वीरम वसे छे. (७६) वीशळ - (७७) सडा - राजस्थान
 उदयपुर पासे नामथणी, अरणियुं गामोमां वसे छे. (७८) सगपर -
 (७९) समा - कच्छमां रतडिया भोटा गाममां समा वसे छे.
 (८०) सरा - (८१) सींगहर - (८२) सादैया-सो. मां बांकानेर (ज.)
 खोड, गुजरातमां आबुरोड, कच्छमां भेटीरव, भचाऊ, गांधीधाम,
 कंडला, वेकरा, राजस्थानमां सिणधरी, मध्यप्रदेशमां सतनामां
 आ शाखा वसे छे. (८३) सोमातर-राजस्थानमां मेवाड-भीमालमां
 आ शाखा वसे छे. (८४) हादा- (८५) हुतल-मध्यप्रदेशमां इंदोर
 पासे जालीया अने जशनपरा गामोमां हुतल शाखा वसे छे.

चारोडा शाखानुं गीत-

चारोडा शाखा ३६

चारोडा अनुवा, मुंधा, आंवा, लांवा, चेड,
 चीवा, मालकेश, लोधु, हादा, खडीया, मेमल,
 महुवा, कविया, धमला, धींगडमल, तेजा,
 राणा, पडियार, गोरीया, हुतल.
 देवगडा, भोजा, गोरा, भोकवीर,
 गडीया, सगपर, रेराह, शरीर,
 कापडी, कवल, पाय लूणग, वणशी,
 कांटा, वीकल, छत्रीश शाख आखो जदुवीर

D मारू :

“यह मूल शाखा ‘मारू’ नामक पिताके नामसे प्रसिद्ध हैं,
 यों तो मारबाड से निकले कुप संपूर्ण चारणों को ‘मारू’ कहते
 हैं परंतु उसीके अंतर्गत यह शाखा पिताके नामसे मिन्न प्रगट
 हुई है।”

—कविवर्ण बारहठ कृष्णसिंहजी

“कुलऋषिना पाछलना बे अक्षरो ‘मारू’ परथी ‘मारु’ थयुं
 होय अथवा तो मारूत देव ऐटले पवनदेव परथी मारूत अने
 तेमांथी ‘मारु’ थयुं होय ए पण संभवित छे।”

—श्री पिंगलशीभाई पायक

(१) अणपडा- (२) आला-सौ. मां खोड, कच्छमां पांचोटीया
 गाममां आला शाखा वसे छे. (३) अभमाळ-उभमाळ- (४) उकन्न-
 उका-महाराष्ट्रना मुंबईमां उका छे. (५) उटा - (६) करना -
 मध्यप्रदेशना इंदोर पासे वर्तमामां करना होवानी शक्यता छे.
 (७) कलोलीया- (८) कायपल-गुजरातमां खेडा जिल्हाना घसो.
 संचाणा, अमदावादमां आ शाखा वसे छे. (९) कोचर-सौ. मां
 भावनगर, राजसीतापुर, चंद्रासरा, वडसमां, जेलाणा, राजस्थान
 मां अने दिल्हीमां आ शाखा वसे छे. एक मान्यता मुजव आ
 शाखा पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध थयेल छे. (१०) कोकरा-
 (११) कंगोया- (१२) खोडससी- (१३) गो- (१४) घरट- सौ. मां
 राजकोटमां होवानी शक्यता छे. (१५) गोलण- (१६) घूघरीया -
 सौ. मां आंवरडी, कालेला, मजादर, गिरमां आ शाखा वसे छे.
 (१७) घोघरा-गांगरा-गुजरबडीमां गांगरा रहे छे. (१८) चंदणभुवा
 (१९) चांचबडा- (२०) जाखमडा- (२१) दांती-सौ. मां राजकोट,
 दांतीना समर्दीयाळा, रायपुरा, सुकवडा, जेठीयावदर, जुनागढमां
 आ शाखा वसे छे

(२२) देथा-आ शाखा पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध थयेल
 छे. सुप्रसिद्ध योगमायाओ बृद्ध, बहलाळ, बहुचरा आ शाखामां
 अवतर्या हता. पाडवयशेन्द्र, चंद्रिकाना कर्ता कविचर्य महात्मा
 स्वरुपदासजी देथा शाखाना हता. सौ. लोंबडी, वस्तवडी, धांगधा
 अमरेली, कमालपुर, वालोवेड, भावनगर, कच्छमां धुणई,
 देशकपर, वावींगा, गुजरातमां अमदावाद, थरपाकरमां गढडा,
 राजस्थानमां वाडमेर, बारुदां, दृदवेरीमां आ शाखा वसे छे.
 (२३) पाला: पालावतः राजस्थानमां हणुतिया, :पालुः महाराष्ट्रमां
 मुंबईमां पालु शाखा वसे छे. (२४) बोहडीया: (२५) वाघरा:
 (२६) भजंगः (२७) मेरटीया: (२८) भडमालः भारमलः कच्छ
 भाडामा भारमल शाखा वसे छे. (२९) भाकुः कच्छमां झरपरा,

आदिपुर, भाडामां होवानी मान्यता छे. (३०) भालकः (३१) मारुः
मारुतः सौ. मां खोड, लांबा, केटडी, जांबुडा, कच्छमां लाकडीया,
गांधीधाम, कंडला, राजस्थानमां सीकर, मध्यप्रदेश निमाडमां
आलोरी, गरबाडामां मारु शाखा वसे छे. (३२) मोकळः (३३)
मेणमला : (३४) रांटा : सौ. मां गीर अने थोखामंडळमां आ
शाखा वसे छे. (३५) रसोया : (३६) लघु : (३७) लोयण : (३८)
वांधीया: सौ. मां सियानगर, कच्छमां, महाराष्ट्रमां सुंवईमां आ
शाखा वसे छे.

(३९) वीकसीया: (४०) वासींगः (४१) वडीयाळः (४२)
सीरायचः (४३) शीलगा: सीलग नामना पिताना नाम उपरथी
आ शाखा प्रसिद्ध थई, सांथळ, चारणीया, अमदावाद, सपावाडा
राजस्थानमां जोवन्दमां शीलगा शाखा वसे छे. (४४) सूधा:
(४५) सूमटीया: सौ. मां गीर प्रदेशमां होवानी शक्यता छे.
(४६) सतीया-सौ. मां मसूदडा, बालापर, गीर गढ़डामां आ शाखा
वसे छे. आ शाखामां गीर प्रदेशमां हमीर सतीया नामना
सुप्रसिद्ध दानेश्वरी थई गया. (४७) शोभता - (४८) सोदा -
सोदा- वारु देशाना वंशज सोदा बारहठ कहेवाया. सोराष्ट्रमां
मूळी, उत्तर गुजरातमां हारीज, जास्का, बणाद, वीरपुर, टोकरा,
राजस्थानमां कोटा, हंगरपुर, वीसबहाडामां आ शाखा वसे छे.
(४९) सुरताणीया-सुरा नामना पिताना नाम उपरथी आ शाखा
प्रसिद्ध थयेल छे. कच्छमां मोरझर, विंगडीया, अंजार, सुरज-
कराडी, उंडेर, लाकडीया, बाढ़लाई, राजस्थानमां मेडावामां
आ शाखा वसे छे. (५०) सोहरीया - (५१) सवई - (५२) सोई -
मारु शाखानुं गीत :

मारु शाखा ३४

चांचडीया जोबमडा, अणपडा, परायत,
घुघरीया, सुहरीया, बाघरा, घरेट,

रसोया, वांधीया, देथा, कांपोया, कापल,
 रांटा, भेरटीया, बेहडीया, करो भक्ति भेट.
 शीलगा, उकन्न, लघु, लेयण, गोलण,
 सोय, मोकल्ल, भोजगा, मारु, सोदा भडांगाल.
 शोभता, कोचर, पाला, सोमटीया, उंटा,
 सबे गुण गावो चोत्रीशप श्रीहरी गोपाळ.

E चुंवा :

चुंवाने चहुवा अथवा तो चवा तरीके पण ओळखाय छे.
 चुंवा नाम केवी रीते पडयु ते थेक संशोधननो विषय छे.
 चुंवाथो मेटे भागे गीर, बरडो, आलेच विभागमां विचरती
 जाति तरीके ओळखाय छे. चुंवा शाखानी एक जग्या जूनागढना
 भवनाथमां आवेली छे.

(१) अभय- (२) अरहु-सो. मां मजादर, काळेला, कच्छमां
 मसूदडा, भाद्रामां आ शाखा वसे छे. (३) आलगा - सौराष्ट्रमां
 पारेवाळा, जूनागढ, राजकोट, जामनगर, वेरावळ, कच्छमां भूज,
 सणोसरा, विजयासर, गढसीना, वीराणी, मजल, गांधीधाम,
 कंडला, गुजरातमां अमदावादमां आ शाखा वसे छे. (४) उमैया-
 (५) पपु- (६) कलंग- (७) काजा-सो मां गीर प्रदेशमां होवानी
 शक्यता छे. (८) कीकडा - (९) कुंवारीया - (१०) खूलडीया -
 (११) खूसटीया - (१२) गांगडीया - गांगिया - कच्छमां झरपटामां
 गांगिया शाखा वसे छे. (१३) गोड- गीडा - कमळापुरमां गीडा
 शाखा वसे छे. (१४) गोठ - (१५) घोडा - सौराष्ट्रमां गीरमां
 बरडामां अने जामनगर पासेना नेशोमां आ शाखा वसे छे.
 (१६) चाटका-सो मां कडळ, परडा, पोरवंदर, बळेच, गुजरातमां
 बाचला, हारीज, अमदावाद, हिमतनगरमां आ शाखा वसे छे.
 (१७) चुंवा - सो. मां गीर प्रदेशमां, बरडा, आलेच, हालारमां
 आ शाखा वसे छे (१८) छालडा - (१९) जाजु- (२०) झणीया -

(२१) झुला—उत्तर गुजरातमां कुवाव, लीलाभा, कुंवारज, रोद्यु, समी, सुरपरा, कच्छ, वागडमां कानमेरमां आ शाखा वसे छे. भक्त कवि श्री सांयाजी झुला अने रोद्युना कुंभे झुला आ शाखनां हता. (२२) त्रिवाईः : (२३) धाठीः : (२४) धानीयाः सौ. ना गीर प्रदेशमां होवानी शक्यता छे. (२५) धाया : (२६) नाया : (२७) वधीया : (२८) भायका : (२९) महातंगः : (३०) माणकवः माणेकः कच्छ भाडीयामां छे. (३१) मेमः मामः सौ. ना गीरप्रदेशमां होवानी शक्यता छे. (३२) मेळगः : (३३) भूजडा : सौ. मां चिन्नावड, मान्नावड, जामनगरमां आ शाखा वसे छे. (३४) राजवळा : सौ ना गीर प्रदेशमां छे. (३५) लांगडीया : सौ. मां मीती, आलापुर, राजकोट, गीर प्रदेशमां, गरथ—वरवाळामां, कच्छमां, कपुरासीमां आ शाखा छे. (३६) राजा : कच्छ झरपरामां छे. (३७) वरसडा : कच्छमां कोटडा, गुजरातमां अमदावाद, रामोदडी, भाद्रवा, वटामण, वरसडानुं मुवाह, पुनाद, नमीसरा, उखलेड, राजस्थानमां पाथासळी, भुवाणामां वरसडा वसे छे, (३८) वागीया : (३९) वीजवा (४०) वीरडा : राजस्थानमां शिरोही आस पास आ शाखा वसे छे

(४१) वीरवजौया : (४२) सपांकीः : (४३) सावा : सौ. मां राजकोट भगोळा, जांबुडा, वांकानेर, कच्छमां धालेटी, लाकडीया, चोवारी, छाडवाडा, गांधीघाम, रव, खोडासरमां आ शाखा वसे छे (४४) सुमंग — (४५) सवर — (४६) सताल — (४७) सोमाणीया — सौ. मां गीर प्रदेशमां, कच्छमां वेवार, वडाला, महाराष्ट्र सुवईमां आ शाखा वसे छे.

चुंवा शाखानुं गीत :

चुंवा शाखा ३१

काजा, चउआ, आलग, धाटी लांगडीआ,
कुंवारीया, भूजडा, छाडडा, माम, धनीया, मातंग,

अरह, सुमग, झुला, जणीया, वीँझवा,
 अेक सुपारखरे, गावो अेसौ हरि नरसिंह,
 वागीया, धाया, नाया, राजवला, वरसडा,
 गांगडीया, चाटका, राजा, खूसटीया, गोड, खूंलडीया,
 सोमाणीया, त्रवाई, गोढ, सांबा, पती शाख
 सबे एकत्रीस माखो सबे कृष्ण कुलामोड.

F बाटी :

आ शाखा पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध थई होवानी
 कविवर्य वारहठ कृष्णसिंहजीनी मान्यता छे. सौ.नु चांटवा गाम
 बाटी शाखाना चारणोण वसाव्यु हतु.

[१] आना-सौ. मां ध्रांगध्रामां आ शाखा वसे छे. [२]
 कालिया-सौ. मां ध्रांगध्रामां आ शाखा वसो छे. [३] खाखवा-
 खाखडा-कच्छ काठडामां छे. [४] गाडण - “गडा हुआ बचा
 शक्ति के वरदानसे जीवित होने के कारण ‘गाडण’ नाम प्रसिद्ध
 हुआ कहते हैं, परंतु कई लोगोंके मतसे ‘गाडण’ नामक ग्रामके
 नामसे गाडण कहलाना पाया जाता है।”

-कविवर्य वारहठ कृष्णसिंहजी.

राजस्थानमां राजास, फेफाणा, मण्डथ्या, मेवाड, जोधपुर,
 जयपुरमां आ शाखा {वसे छे. (५) जाजु-सौ. ना गीर प्रदेशमां
 बनाळाना नेसमां आ शाखा वसे छे. (६) डेर - (७) धर्मा -
 खजुरीयामां आ शाखा बसे छे. (८) नाद-पृथुराजा हिमालयमांथी
 चारण ऋषिओने पृथ्वी पर लाव्या तेमना नाम नाद अने बुद
 हता. नादना बंशज नाद कहेवाया. नादने अवाज परथी पशु
 प्राणी अने मानवीनी जाति पारखवानी अद्भुत शक्ति हती.
 बूंदने पशु प्राणी अने मानवीना लोही परथी तेना गुण, दोष ने
 जाति पारखवानी शक्ति हती. (दंतकथा)

(९) धानैया- (१०) धोमा- (११) पांचालिया-सौ. मां माणेक-
बाडा, माणावदर, पालीताणा, भंडारिया, गारियाधार, केशाद,
जामनगरमां आ शाखा वसे छे. (१२) पीठडीया-कच्छ चकारमां
आ शाखा वसे छे. (१३) बाटी-पिताना नाम उपरथी आ शाखा
प्रसिद्ध थई. सौ.मां मांडवली, हेमाळ, ध्रांगध्रा, मढाद, पालीताणा
वावरीयात, गारीयाधार, जामकल्याणपर, टंकारा, कच्छमां भुज,
चकार, अंजार, मंगवाणा, सांपरा, झरपरा, भचाऊ, गुजरातमां
अमदावाद, नगरासण, मोसम, ढेढाण ईराणा, कलोल, महाराष्ट्र
मां मुंवईमां आ शाखा वसे छे. (१४) बुधराम - (१५) बधा -
(१६) भेट- (१७) भासा- (१८) भासिया- (१९) भुंड-सौराष्ट्रमां
पालीताणा पासे पीथलपुरमां आ शाखा वसे छे. (२०) भेवलीया-
सौ.मां भेला भेलडी, बावरियात, जेतलसरमां आ शाखा वसे छे.
(२१) मेंदण - (२२) मेधा - (२३) रणा - सौ. मां भावनगर पासे
दाठामां छे (२४) रतडा- सौ. मां. राजकोट, कच्छमां मांडवी,
गांधीधाम, तेरा महाराष्ट्रमां मुंबई, पाकिस्तानमां करांचीमां आ
शाखा वसे छे. (२५) बेवडा, (२६) बोहडिया- (२७) रावडा-
(२८) सीरण- सौ. मां खाखी जालीया, गुजरातमां अमदावादमां
छे. (२९) सी- सौ. मां खाखी जालीया, गुजरातमां अमदावादमां
छे. (३०) सेलगडा-

बाटी शाखानुँ गीत :

: बाटी शाख १४ :

बेलडा, रतडा, बाटी, खाखवा, शिरन वळे,

भुंड, जानु पांचालीया बोहडीया भाट,

सेलगडा, गाडण ने मेंदळ सु पीठडीया,

चौद शाख गोलेकपतिना गुण गाओ घाटे घाट.

૬ તુંબેલ :

સાડા ત્રણ પહાડામાં અડધો પહાડો ગળાય છે, કારણ કે આ શાખાને કોઈ ચાલ અથવા ભાણેજ નથી. તુંબેલોનું જુથ હિમાલયમાંથી તૈલંગમાં, તૈલંગમાંથી પંજાબમાં ત્યાંથી આઈ હિંગલાજની સાથે સિધમાં ગયું. મિધમાંથી જાડેજાથો સાથે કચ્છમાં આવ્યાં. કચ્છમાંથી એક જુથ જામ રાવલની સાથે સૌરાષ્ટ્રના હાલાર પ્રદેશમાં આવ્યું. આજે એણ કચ્છ અને હાલારમાં તુંબેલ શાખાની મુખ્ય વસ્તી છે. તેથો બધા કચ્છી સિધી ભાષા બોલે છે. તૈલંગ ઉપરથી તુંબેલ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ હોવાની માન્યતા છે.

(૧) કાગ-સો. માં મજાદર, સાલોલી, સોડવદરી, ભાવનગરમાં આ શાખા વસે છે. ભક્ત કવિ શ્રી દુલાભાઈ કાગ આ શાખાના હતા.
 (૨) ગુંગડા - પિતાના નામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ. સો. માં જામનભર જિલ્લામાં બેહ. મોટા આસોટા, કુરંગા, મદી, ખોગાત, ભાટીયા, રાણ, ખજુરીયા, લલીયા, પરોઢિયા, ભીડાં, મવાણ, જામજોધપુર, બેરાજા, શેરઢી, ભાડથર, માડી, પોરવંદર, કંચ્છમાં, કરોડીયાનાના, સિધોડીમાં આ શાખા વસે છે. આ શાખાની પેટા શાખામાં કારાણી, કમાણી, કાનાણી, મેજરાણી, મુવા, રવાણી, બીસલપુરી, મંધરિયા, પુનાણી, રાયસીઆળી, માલમ, વિધાણી, ખેતસીઆણી, આ પેટા શાખા કચ્છમાં ભાડા પાંચોટીયા, ઝરપરા, સુરજકરાડીમાં વસે છે. મંધરિયા પેટા શાખાની પેટા-શાખાઓ (૧) દેવાણી (૨) લાખાણી (૩) ભારાણી (૪) મેઘાણી કચ્છમાં પાંચોટીયા, ભાડીયા, ઝરપરામાં વસે છે. (૫) ગંઢ-સો માં વિજલપર, ભાણવડ, કચ્છમાં હાલાપરમાં છે. (૬) ગુજરીયા: સો. હાલરમાં અને કચ્છમાં છે. (૭) ધાનડા: ગુજરાતમાં ઝોટાણા, તસીયા, સો. માં હાલાર અને કચ્છમાં આ શાખા વસે છે. (૮) ધાના: (૯) ધુંધુ: આ શાખા પિતાના નામ ઉપરથી પ્રસિદ્ધ થઈ. (૧૦) બઢડા: સો. માં ધ્રાંગબ્રા, હાલાર, ગીર અને કચ્છમાં

छे. (९) भागचूनः भाचकनः भागचंदः सौ. मां परेडिया,
पेरवंदर, कच्छमां कोडायमां आ शाखा वसे छे. आ शाखानी
पेटा शाखा बड़ल, बड़प, होवानुं मनाय छे. जे कच्छमां घणा
गामोमां छे. (१०) बुडायचः बुचडः कच्छमां सौ. मां हालारमां छे.
(११) भीडः सौ. मां हालार अने कच्छमां बाटा पांचोटीया
मां छे. (१२) मवरः मौअरः मोडः सौ. मां बलेज, उंटडा,
गोरसर, मढडा, कलोठी, कलजडी, कच्छमां मोटा भाडिया,
बोवार, सुरजकराडी, समावेशा, झरपरामां आ शाखा वसे छे.
पूज्य आई श्री सोनलमा आ शाखाना हता. (१३) मुतः सौ. मां
हालारना हरीयावड गाममां छे (१४) रागः कच्छमां भुजपर,
झरपरा, रागा, कंथकाट, सुरजकराडीमां आ शाखा वसे छे.
(१५) रुडायचः सौ. मां हालारना भारथर, भारावेराजा, भाणवड,
कच्छमां बोवार, चांदरडामां आ शाखा वसे छे. (१६) ब्रेमल-
विरमल- सौ. मां भाटीया, कच्छमां शीराशा, नवीनाड, तुणामां
आ शाखा वसो छे. (१७) बेरा- (१८) बणरा- (१९) सेडा-सौ. मां
सालोली, कच्छमां झरपरा, काठडा, हालापुर, भुज, दयापर,
अंजार नाना लायजा, रतडिया नाना महाराष्ट्रमां मुंबईमां आ
शाखा वसो छे. आ शाखानी पेटा शाखा जाम छे. (२०) सिधिया-
सौ. मां कुरंगा, मोटा आसोटा, कच्छमां लायजा मोटा, भाडा,
बीटा, सुरजकराडीमां आ शाखा वसो छे. आ शाखा संधड
गामना होवाथी संधडीया पण कहेवाय छे. आ शाखानी पेटा
पेटा शाखा विघाणी, वरीआ, धूप, सागर छे. जे कच्छमां मोटा
भाडीया, बड़ल, गांधीधाम, कंडलामां आ शाखा वसे छे.

तुबेल शाखानुं गीतः - तुबेल शाखा १ -

गृदायच, गृगडा, बढ़ीया, धीरण तुबेल,

गणे ग्रथ भाख माख तणे खखाणे गोपाळ,

दशे देशे सात द्विपे खाग ताग तणा,

दाखे वरसडो मेद आखे बणरा वखाण.

४०५ सोळ शाखीया चारणे:-

चारणकुळमां नरा, अवसुरा, चुंवा, वाटी, चोरडा, मारु अने तुंबेलनो समावेश साडा त्रण वर्गमां थाय छे. तेने मूळ शाखाओ तरीके स्थान मलेल छे. ए पछीनी वीजी सोळ शाखाओ चाळ अथवा तो भाणेज तरीके गणवामां आवे छे. आ सोळ शाखाओनो चारणेने सोळ शाखीया तरीके ओळखवामां आवे छे. कारण के तेओ साडात्रण पहाडाओनी मुख्य शाखाथोथी जूळा होवाथी तेमज अन्य सोळ शाखोमां तेमनो समावेश थतो होवाथी साळ शाखीआ एवुं नाम मल्युं होवानी शक्यता छे. काळकमे साडात्रण पहाडाना चारणे अने सोळ शाखीआ चारणे नजीक आव्या हशे. तेमज व्यवहारिक बंधनमां जोडायां हशे.

सोळ शाखाओ :

१ वाचा :

‘आ शाखानु’ नाम घणुं सूचक छे. भगवती शारदा वाणीनां देवी छे. देशी प्रयोगोमां एमनो वाचा तरीके उल्लेख करवामां आवे छे. एवुं एण मानवामां आवे छे के वाचाओनुं क्रषिकुळ वाणीना संयम सत्यनिष्ठा अने तपनिष्ठा माटे प्रसिद्ध हतुं. अने एमनी वाणीमां सिद्धि हती पटले एमने वाचासिद्ध कहेवामां आव ग जेनुं काळकमे अपभ्रंश थईने वाचा थई गयुं.”

-श्री पिंगलशीभाई पायक.

वाचाकुळमां जगदंबा आई राजबाई अवतर्या हता. चराडवामां (हळवद पासे) आईनुं मोडुं मंदिर छे.

(१) आढा: आडां नामना गाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई छे. आ शाखामां कविश्री दुरशाजी आढा जेवा महान ज्ञानि हितैषु जन्मयां छे, राजस्थानमां पेशवा, उंड, वीरायल, हाखर, मारवाड, पांचेटिया, मेवाडमां, बंगाळ कलकतामां आ शाखा

वसे छे. (२) गोगः गुगा: (३) थनीया: (४) भानः सौ.मां वेरावळ,
भाणवड, कुंरगा, खजुरीया, माधुपुर, जांबुडा, गुजरातमां
अमदावाद, कच्छमां मेटा लायजा, पांचोटीया, सुरजकराडी,
झरपरा, बीटा, सिंधेडी, भाचुडामां आ शाखा वसे छे. आ
शाखानी थेक पेटा शाखा बुधीया हेवानी मान्यता छे. बुधीया
कच्छ मेटा उनडेअठमां वसे छे. (५) महीया: मैया: मैहा नामना
पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई सौ. मां चमारडी
कच्छमां जामथडा, घरसामेडी, जाटावाळा, मेटा भाडियामां
राजस्थानमां महीयावास, महीयारी मारवाड, शिरोही, मोरवाडा
मां आ शाखा वसे छे. आई जीवावाई महीया शाखामां थई
गया (६) मोळसा- (७) लाला- (८) वडियाळ- (९) वमोळसी-
(१०) वाचा - सौ. मां गोलणशेरडी, कुरंगा, कच्छमां मांडवी,
मुन्द्रा, गुजरातमां वागड पळांसर, भीमासर, हिम्मतनगर,
चारणीया मुवाडा, चंदासर, वाचानुं मुवाहुमां आ शाखा वसे छे.
(११) वलीसांय - (१२) वेगडा - (१३) सनीया - (१४) सीहड -
(१५) सोनैया - (१६) सांदू - सांदू नामना पिताना नामथी आ
शाखा प्रसिद्ध थई छे. राजस्थानमां सर्वैत्र आ शाखा वसे छे.
आ शाखामां घणा क्रांतीकारी कविओ थया छे.

वाचा शाखानुं गीत :

- वाचा शाखा ११ -

सन्धीया, थन्धीया, मैया, लाल मूँगा, वाचा सांदू,
वळ साय वमोळशी आढा वडियाळ शाख ही अगियार.

2 मीसण :

‘चांडकोटि नामक कविने संस्कृत आदि छ भाषाओ का
मिथ्रित करके शाखार्थ जीता। इस कारण ‘मिथ्रण’ कहलाये।
जिसका अपभ्रंश ‘मीसण’ हुआ.’’ -कविवर्य वारहदृ कृष्णसिंहजी

(१) आधूलीया- (२) कानल-सौ. मां गीर प्रदेशमां भीयाणी नेशमां होवानी मान्यता छे. (३) कालिद- (४) कुंचाळा- सौ.मां आंगणका मीभीयाणा शेवाळीया, भावनगर, मेसणकार्मा आ शाखा वसे छे. (५) गेलवा-सौ. मां गीरना कीटानेस, कांटानेस, सासणमां, कच्छमां झैरपरा अंजार, रत्डिया मोटा, मोटा भाडिया बोचार, पांचोटिया, नाना लावजा, गुजरातमां पंचमहाल कानपुर, पाणेथा, वांद्रबेड, डाभामां आ शाखा वसे छे. गेलवानी एक येटा शाखा बाढा कच्छमां नवीनाड, खाखरमोटीमां छे. (६) डेमाल (७) तमर- (८) तेहरिया- (९) मीसण-सौ.मां मोरबी, ईश्वरीया, जामनगर, वांकानेर, मीढावेढा, राजसीतापुर, गुजरातमां सरी, निकेल, मोडेरा, ममाणा, अमदावाद, राजस्थान लृणावास, कुण्डली, चारणना तमडिया, मोलकीमां आ शाखा वसे छे. महात्मा हरदासजी मिसण, कवि श्री सृथीमहजी, आणंद-करमणंद, श्री खेतासिंहजी नारायणजी आ शाखामां थई गया.

(१०) मेसमा- (११) मेंग-सौ.मां भावनगरमां आ शाखा वसे छे. (१२) मोहेरिया- (१३) मोहणीया- (१४) राइंद- (१५) लांगा-सौ. मां राजकोट, रोणकी, सरधार, शीवा, ढांक, जामनगरमां आ शाखा वसे छे. (१६) लांगावद्रा - सौराष्ट्रमां देरडी (आई जानबाईनी), आंकडीया, जरखीया, जालिया, चिन्नावड, खीजडीया, आंगणका, वीरपुर, अमदावादमां आ शाखा वसे छे. आ शाखामां गायकवाड सरकारना हामी बीकाभाई रायदेभाई लांगावद्रा अने सांप्रतयुगमां गुजरातना सुप्रसिद्ध संत पू. नारायणनंद सरस्वती आ ज शाखाना छे.

मीसण शाखानुँ गीत :

- मीसण शाख ७ -

मीसण, कुंचाळा, लांगावद्रा, शेषमा, मेश,

गेलवा, तमर साते हरीगुण गाझो.

३ ઠાકરિયા :

ગામ-ગરાસના નાના ટાકેારને કારણે ઠાકરિયા કહેવાયા હોય તેમ જણાય છે.

(૧) આમોતીયા - આ શાખા પિતાના નામ ઉપરથી પ્રસિદ્ધ થઈ છે. સૌ. માં જાંબુડા, મોજપરા, કીડી, ગુજરાતમાં પંચમદ્દાલ જિલ્લો, મધ્યપ્રદેશ નિમાડમાં આ શાખા વસે છે. (૨) ખેતા-કચ્છમાં ભાડીયા ગામમાં છે. (૩) રોવા-સૌ. માં હાલાર પ્રદેશમાં અને કચ્છમાં આ શાખા વસે છે. (૪) ઘૂર-ગુજરાતમાં વદ્ધિયાર, સાતોદ, કાલોટીમાં છે. (૫) ગરા - (૬) ટાહા - (૭) ઠાકરિયા - સૌ. માં જાંબુડા, વડા, ભંડારકી, ગીર, કેશાવ, મીતાણા, ખીજડીયા, માલપરા મોટા, વાંસવા, આંબળીયાલા, કાલેલા, જામનગરમાં આ શાખા વસે છે. (૮) થરકાના - (૯) ફુનિયા - (૧૦) ફોલવા - (૧૧) વાલવા - (૧૨) વાડવા-ગુજરાતમાં પૈલારષુલ, પાળીઆળી, આસાલા, અમદાવાદમાં આ શાખા વસે છે. (૧૩) માંધલ-સૌ. માં વીરપુર, વસપડા, જામનગર, રાજકોટમાં આ શાખા વસે છે. (૧૪) રવિયા - સૌ. માં જાંબુડા, કચ્છમાં સુરજકરાડી, ઝરપરામાં આ શાખા વસે છે. (૧૫) રોહડા - (૧૬) વીજવલા - (૧૭) સપાત્ર - (૧૮) સાપખડા - (૧૯) સાઉ-સૌ. માં દાંતીના સમદીયાલા, ગીર, કરડાપાણનો નેશ, તુલસીદ્યામ, ગોધાવટા, બેલા, ગુજરાતમાં નાની બોઢ, કસવારામાં આ શાખા વસે છે. (૨૦) સુગંધ - (૨૧) છોયા - (૨૨) હૂના - (૨૩) હેના - મધ્યપ્રદેશ નિમાડમાં ઘાટાખેડીમાં આ શાખા વસે છે. (૨૪) કટારિયા -

ઠાકરિયા શાખાનું ગીત :

- ઠાકરિયા શાખ ૨૪ -

ટાહા, ખેતા, આમોતીયા, વીજવલા, કટારિયા,

સાપખલા ઠાકરિયા કોલવા સપાત્ર,

वैकुंठरो नाथ जदुनाथ लछीनाथ, वंदा
 छत्रीवंश अवतंश जादवांशे भात्र,
 रविया, रोहडा, गोधा, बालुवा, सुगंधगरा,
 होईआ, बाडवा, माऊ, थरकाना, हुन,
 मादले खेवीस शाख भाखो गुण माधवरा
 द्वारकानाथ गुण गाओ दनदन.

4 जाखला :

पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थयेल छे (१) खलेल-
 सौ. मां सरधार, राजकोट, मधरवाडा, केढमां आ शाखा वसे
 छे. आ शाखानुं नाम पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध थयेल छे.
 (२) जाखला-सौ. मां मांगरोळ, मेंदरडा, मोणिया, कच्छमां अंजार
 आदिपुरमां आ शाखा वसे छे. (३) शमाळ - (४) महिसुर -
 जाखला शाखानुं गीत :

- जाखला शाखा ३ -

अब्रे वली दुर्जी शाख वंदा मेसुरा जे वडा
 खलेल, अखे जाखला, जमाल.

5 गृढायच :

(१) गृढायच- सौ. मां जमरा, आसोंदर, टोळ, देगाम,
 जेतपुर, जूनागढ, मध्यप्रदेशमां निमाड, घाटाखेडीमां आ शाखा
 वसे छे. (२) उढास - उधास - सौ. मां चरखडी, ढांक, सांढा,
 पेरवंदर, राजकोट, बडीया. जेतपुर, कच्छमां भुज, मोरजर,
 मोदलिया, महाराष्ट्रमां मुंबई, नेपालमां खटमंडुमां आ शाखा
 वसे छे. (३) गांगडा- आ शाखा पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध
 थई छे. कच्छमां हमीरपर, गुजरातमां वामणवाडामां आ शाखा
 वसे छे. आ शाखानी पेटा शाखा कडवा छे. (४) मालेधा-
 (५) शिआळ - सौराष्ट्रमां होवानी शक्यता छे. बापल शिआळ

આ શાખાના પ્રસિદ્ધ પુરુષ હતા. (૬) સોમંગસી - (૭) ગૂડડા -
સૌરાષ્ટ્રના ગીર પ્રદેશમાં, મોરવીમાં આ શાખા વસે છે.

૬ ટાપરિયા :

કરણદેવ સોલંકીના સમકાળીન હરપાઠ મકવાળાની શક્તિ
રાણીએ ગોખે બેઠાં બેઠાં હાથ લંબાવી રાજમાર્ગ ઉપર ગાંડા
હાથીનો મોગ થઈ પડનાર જે ચાર બાલ્કોને બચાવી લીધેલા તે
પૈકીના અએક ચારણ બાલ્કને માથે શક્તિમાપ ટાપલી મારી તેના
વંશજ ટાપરીયા તરીકે ઓળખાયા. તેવી અએક લોક માન્યતા છે.

(૧) આતલ: કચ્છ ભાડિયામાં હોવાની શક્યતા છે. (૨) ચાડપ:
(૩) છાંછલા: (૪) જાખા: (૫) ટાપરિયા : સૌ. માં ચાડધરા,
જાલીયાલ્લા, ડેડાદરા, વઢવાળ, વાંકાનેર, આલવાળીનોનેશા,
સોકલી, વાવડી, પાલીતાળા, રાજકોટ, જામનગર, કચ્છમાં
વોવાર, ઝરપરા, ગુજરાતમાં અમદાવાદ, મોજવા, વાંસવા,
હેબેતપુરમાં આ શાખા વસે છે. (૬) નાગચડ: (૭) નેત્રમા:
કુલ્લકૃષિના નામ ઉપરથી આ શાખા પ્રસિદ્ધ થઈ છે. ગુજરાતમાં
ખરડ, ધંધુકા સિદ્ધસરમાં આ શાખા વસે છે. (૮) સુંજા -
(૯) રતુડા - (૧૦) રેઢ - સૌ. માં આમરણ, કચ્છમાં લાંખોદ,
સુરજકરાડી, માધાપરમાં આ શાખા વસે છે. (૧૧) શશિયાલ -
(૧૨) સૂડા - (૧૩) શેડા - કચ્છમાં કાઠરા, હાલાપુર, મહારાષ્ટ્રમાં
મુંવર્ઝીમાં છે.

ટાપરિયા શાખાનું ગીત :

- ટાપરિયા શાખા ૧૦ -

સુડા, રેઢ, છાંછલા ને સુંજા, જાખા, ચાટપહિ,
ટાપરીયા, નાગચડ, નેત્રમા, આતલ, શાખદેશો.

૭ ભાંચલીયા :

આ શાખા પિતાના નામ ઉપરથી પ્રસિદ્ધ થઈ છે. (૧) ઉંજલા
(ઉજજવલ) - રાજસ્થાન મારવાડમાં આવેલ ઉંજલા ગામ ઉપરથી

आ शाखा प्रसिद्ध थई छे. राजस्थानमां सर्वेत्र उजाबल शाखा वसे छे. (२) चडीया-सौराष्ट्रमां करमदीया, परेडिया, गुजरातमां दहेज, सरगवाळामां छे. (३) चांचडा - चांचडीया - सौराष्ट्रमां राजकोट, गीर प्रदेशमां छे. (४) चूडा - पिताना नाम उपरथी प्रसिद्ध थई छे. (५) डेडर - (६) बहुनामा - (७) भादल - भादा - राजस्थानमां कोचल्या, लसाडिया, कोटडी (मालवा) मां आ शाखा वसे छे. (८) भांचालिया-सौराष्ट्रमां पारेवाळा, खेंयरा, आंवरडी, राजकोट, जामनगर, धांगधा, गीर, कच्छमां खाखर मोठी, लाकडीया, रायथडी मध्यप्रदेश, निमाडमां शाबाशपुरा, सेंधवा, खुरमपुरा, सिनखेडी, पगवाळा, वघाडीमां आ शाखा वसे छे. (९) मजेडिया - (१०) माझा अथवा मींजा - (११) वाजती - वासगही-सौ, सणेसरामां छे. (१२) वालिया-कच्छमां आदीपुर, गांधीधाम, तेरा, बीटा, सिधेडी, कोठरामां आ शाखा वसे छे. आ शाखानी पेटा शाख (१) राणतीयाणी (२) जामोतर (३) सामराणी, (४) बीसाणी कच्छमां सिधेडी गामे आ शाखा वसे छे. (१३) वजीया-कच्छ काठडामां होवानी शक्यता छे. (१४) सांपल (१५) मसूरा - कच्छमां कोडाय, गांधीधाम, कंडला, सौराष्ट्रमां हालार परेडियामां आ शाखा वसे छे. (१६) सिहढायच-'नरसिंह' नामक भाचलिया को अधिक सिंह मारनेके कारण नाहटराव पडिहारने 'सिंहढाहक' की पदवी दी जब से उसके बंश सिंहढायच कहाये । -कविवर्ण वारहठ कुण्णसिंहजी, सौराष्ट्रमां मूळी, रुवा, सुमरी, थानगढ, कच्छमां जनाण, धोळावीरा, लाखियार बीरा, जडोदर, गुजरातमां देवरासण, बावरा, थराढ, अमदावाद, राजस्थानमां उजला, जयपुर, जोधपुर, जौहामां आ शाखा वसे छे.

भांचालिया शाखानुं गीत :

- भांचालिया शाखा -
सात शाख सिंहढायच, वासंग, हि
भाचला, चूडा भाखिये चडिया, भादल्ल.

८ नैया :

'नैया पटले नाव, बहाण प अन्वय संभव छे के नैयाओ
नावविद्यामां प्रविष्ट होय अथवा नावनी माफक बीजाओने
मददरूप थतां होय, अटले नैया नाम पडयुं होय.'

-श्री पिंगलशीभाई पायक.

(१) अनाणा - (२) कुंवारिया - गामना नाम उपरथी आ
शाखा प्रसिद्ध थई. (३) टालीया - (४) थांभा - (५) दांदी -
(६) दानडा- (७) नैया - सौ. मां लुणागरी, बळीयावळ, मेंयरा,
भावनगर, राजकोट, गुजरात पंचमहालमां, मध्यप्रदेश निमाडमां
राजस्थान सिणधरीमां आ शाखा वसे छे. आ शाखा पिताना
नाम उपरथी प्रसिद्ध थई छे. (८) बळदा-सौ. मां मालीया पासे
सोखडा, मोरवीमां आ शाखा वसे छे. (९) बालिया - राजस्थली,
भाणवड, आंबलीयारा, जामनगर, राजकोट, गुजरातमां अमदावाद,
चंगालमां कलकता, जरीया, आसोनसोलमां आ शाखा वसे छे.
चंगालमां बालिया 'दरवार' शाखाथी ओळखाय छे. (१०) मांकडका-
गुजरात पंचमहालमां ग्वासी गाममां छे. (११) मोभिया - (१२)
मालरव - मध्यप्रदेशमां निमाडमां बघाडी गाममां वसे छे. (१३)
लालिया - सौराष्ट्रमां मेंयरा, खाटडी, गुजरातमां पंचमहाल
मोरांवली, इंटवाली, राजस्थान, मारवाड, सिणधरीमां आ शाखा
वसे छे. (१४) बळे (बेलाभळ)- बाला-सौ मां सुखपर, तळाजामां
आ शाखा वसे छे. (१६) सीया-(१७) सीसटीया-

नैया शाखानुं गीत :

- नैया शाखा ५ -

वांधीया, बळदा, नैया, टालीया, कुंवारीया,
जगतपति तबुं रूप दिलमां जडाओ.

९ घांघणीया :

पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई छे.
 (१) अनेकवळ- (२) अमट- उमट- (३) गोगट- (४) घांघणीया-
 सौ. मां कणजडी, पीपळिया, छापरा, वडा, राजकोट, गिर,
 कच्छमां सोनलवा, उत्तर गुजरातमां डाभा, ब्राह्मणवाडा, नानावडा-
 मां आ शाखा वसे छे. आ शाखानी पेटा शाखा थीरिया, तुरिया,
 कच्छ घांघणमां छे. (५) चारणीया - (६) जेठी - (७) मधूडा -
 सौ. मां रामपरडा, आणंदपुर, भोजपरा, कुरंगा, गिर, कच्छमां
 भुज, नागबीरी, दयापर, लायजामोटा अंजार, कोडाय, माधापर,
 काठडा, गुजरातमां छोटा उदेपुर, महाराष्ट्रमां मुंबईमां छे. (८)
 मोटा- (९) माळवीया- मावलीया - सौराष्ट्र, हालार कुरंगामां
 आ शाखा वसे छे. (१०) मोहळा- (११) रवधरा- (१२) रवनाग-
 (१३) रवसी- सौराष्ट्र जामनगरमां आ शाखा वसे छे. (१४) रांदल
 (१५) बाधडा- (१६) सूमणा-

घांघणीया शाखानुँ गीत :

- घांघणीया शाख १२ -
 वाघडा, रवशी, माटा, उमटा, अनेकवळे,
 घांघणीया, चारणीया, सुमणा गोगट,
 आला, जटी, रवधरा, रांदल, अगियार पक
 माळवीया घणा जश वरवाणो अमाट.

१० रोहडीया :

(१) करडिया - चोराडमां चारणका गाममां एक घर हतुँ.
 (२) कलहठ-पिताना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई छे.
 गुजरातमां सांवरडा, माणका, मोटेडा, पेंडागडा, आणंद,
 पालनपुरमां आ शाखा वसे छे. राजस्थानमां आ शाखा होवानी
 शक्यता छे. (३) गूँगा-नाभना नाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध
 थई छे. राजस्थान पारलाऊ मारवाडमां आ शाखा वसे छे.

(४) धीरण- (५) धूना- (६) पात्रग्रहा-पात्रोड-गुजरातमां महेसाणा
जिल्हाना खड़या गाममां छे. (७) भाणु- भारू - कच्छमां झरपरा,
आदिपुरमां आ शाखा वसे छे. (८) मिक्स-मेगस नामना पिताना
नाम उपरथी आ शाखा वसी छे. (९) रोहडीया-सौराष्ट्र, कच्छ,
गुजरात, राजस्थानमां सर्वेत्र सारी संख्यामां छे. महात्मा
ईसरदासजी, महात्मा नरहरदासजी जेवा महापुरुषो आ शाखामां
जनम्या हता. (१०) वीठु - पिताना नाम उपरथी आ शाखा
प्रसिद्ध थई छे. सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, राजस्थान, यु. के. मां
आ शाखा वसे छे. (११) शामल-पिताना नाम उपरथी आ शाखा
प्रसिद्ध थई छे. सौराष्ट्र, कच्छ, गुजरात, राजस्थानमां आ
शाखा वसे छे. (१२) हाहणीया-कच्छ नीरोणा अने अमदावादमां
छे. (१३) कलोट-उत्तर गुजरातमां आ शाखा वसे छे.

रोहडीया शाखानुं गीत :

- रोहडीया शाखा १३ -

शामल, जादव सुवे पातंग मोकशं, वीठु,
करहीया, रोहडीया, गूँगा, कलहड,
सोगण, हांहन्न, भाटी, पात्रोडही, तेरे शाख,
माया रे पतिरा गुण वखाणो अमाट

11 फूनडा :-

(१) फूनडा : सौ. मां वाढकपरा, गुजरातमां कनीपुर,
बारमुवाडा, राफु, वराणा, चारणका, वागडमां खोडासर, मध्य-
प्रदेशमां नीमाडमां आ शाखा वसे छे. (२) वीजलः कच्छमां
सूदाणा, गांधीधाम, कंडलामां आ शाखा वसे छे.

12 लीला:

एक अनुश्रुति मुजब महावीर स्वामीने उपदेश आपनार
सात चारण ऋषिओ हता. आ सात ऋषिओमांना एकना
वंशमां लीला नामने चारण थयो. तेनाथी चालेलो लीला शाखाने
वंश. -प्रा नरोत्तमभाई पल्लाण

आइ सांई नेसडीना वंशमां लीला गढवी थया ते लीला
 गढवीना वंशजोनी अटक वाप नामे लीला थई. कविश्री
 मेकरणभाई गगुभाई लीलानुं आ अंगे मंतव्य उल्लेखनीय छे.
 आई सांई नेहडी निःसंतान हता. तेमना बहेन देवलबाईनो पुत्र
 नीला ने माताजीचे दक्षक तरीके लीधो. तेना वंशज नीला तरीके
 ओळखाया. काळकमे नीलामांथी लीला थयुं (१) लादीतः सौ. मां
 गोंडल पासे कंडोलीया गाममां आ शाखा वसे छे. (२) लीला:
 सौ. मां मंगेळा, सनाळी, छत्राचा, पोरबंदर, जामनगर, जूनागढ,
 जेतपुर, वांटवा, सेगरस, सामरडा. सांढा, कुरंगामां आ शाखा
 वसे छे. आ शाखानुं मूळ गाम मंगेळा त्यांथी (३) सनाळी
 (४) सांकलीजुनी (५) छांया (६) गरेज (७) छत्राचा (८) सेगरस
 (९) धरसन. आ शाखामां कविवर्य श्री काशीयाभाई लीला
 श्री मेह लीला, श्री आलाभाई, श्री गगुभाई, श्री पिंगळशीभाई
 मेघाणंद गढवी, अजोड वार्ताकार श्री मेघाणंद गढवी, श्री गगुभाई
 लीला, कवि श्री मेकरणभाई लीला, नाद ब्रह्मना उपासक
 श्री मेरुभाभाई गढवी, तेमज तबीबी क्षेत्रमां जाणीता सजोनबंधु
 डो. अन. पी. गढवी अने डो. के. पी. गढवी लीला शाखाना
 छे. (३) लीला कारीया - सौराष्ट्र हालारमां भाड गाममां छे.
 (४) भोळपासा - (५) कुनडा-

13 आसणिया :

(१) आसणिया - सौ.मां सांढा, पोरबंदर अने गिर प्रदेशमां
 आ शाखा वसे छे.

14 रत्नु :

रत्ना नामना पिताना नामधी आ शाखा प्रसिद्ध थई छे.
 (१) धुहड - आ शाखा पिताना नामे प्रसिद्ध थई छे. (२) रत्नु -
 सौ., गुजरात, कच्छ राजस्थान, महाराष्ट्रमां आ शाखा वसे
 छे. नागपुरमां आ शाखाना कुङ्बो 'मेता' शाखाधी अने

कच्छमां केटलाक कुद्रुं वो 'अयाची' तरीके ओळखाय छे. (३) चांदा-
 (४) भरमा- मेरुडा - (५) भोला - भला - कच्छ वेवारमां छे.
 (६) नाला - (७) चीवा-

15 केशरीया :

केसर नामना पिताना नाम उपरथी आ शा शाखा प्रसिद्ध
 थई छे. (१) आमट - (२) केशरीया - सौराष्ट्रमा जांबुडा,
 जामनगर, समढीयाळा, रतनपुर, गरणी, कच्छमां अंजार, नाना
 लायजा, काठडा, आदीपुर, गांधीधाम, गुजरातमां सोनलवा,
 आदरीआणा, सरठव, भडियाद, अमदावाद, महाराष्ट्र, मुंबईमां
 आ शाखा वसे छे. (३) चांचगडा - (४) जीवाधरा - (५) जोट-
 (६) बांदीया - (७) महेडु - मैडवा नामना गाम परथी मैडु तरीके
 प्रसिद्ध थया. सौ., कच्छ, गुजरात, राजस्थानमां आ शाखा वसे
 छे. आ शाखामां कविवर्य महेकरणजी जाडा चारण, कानदासजी,
 लांगीदासजी, वजमालजी अने श्री ठारणभाई आ शाखाना हता.
 (८) महियारिया - मिहारी गाम उपरथी आ शाखा प्रसिद्ध थई
 छे. राजस्थानमां उदयपुर, मिहारी, कोटडी, टीटेडा, कोटा,
 भुणपुरमा आ शाखा वसे छे. कविवर्य दुर्गादानजी अने कविवर्य
 नाथुसिंहजी आ शाखाना हता. (९) मोकला - (१०) मोखु -
 (११) रेणंग - (१२) साखरा - सौराष्ट्रमां जामजोधपुर, घांटीला,
 नाधेडी, कच्छमां झारपरा, काठरा, अंजार, नाना लायजामां आ
 शाखा वसे छे. (१३) सोहला-

केशरीया शाखानुँ गीत :

- केशरीया शाख १२ -

मैहु, मोयारीया, शाखरा, केशरीया, रेणंग,

मोखु जीवाधरा, बांदीया ने चांचगडा जोट,
 मोकल, सोहला, सबे वार शाख मेहुडांरी,

महा प्रभु ध्यान घरो करो मन मोट.

૧૬ માદા :

‘મૃતિકા પુતલે કો દેવીને સર્જીવિત કિયા ઇસ કારણ ‘માદા’ કહલાયે ક્યોંકી ડિગલ ભાષામે મિટિકો માદ કહતે હૈને।’

—કવિવર્ણ વારહદુ કૃષ્ણસિહજી.

- (૧) કારીયા: સૌ માં કુરંગા ભાણવડ પોરવંદર, કચ્છમાં કોડાય મોટા ભાડિયા, પાંચોડિયા, સુરજકરાડી, કાઠડા ભીસાદારામાં આ શાખા વસે છે, ફીલમ ઈન્ડસ્ટ્રીઝના દ્રિગર્દર્શક ચંદ વારોટ, અને પાદ્યબેગાયીકા થી કમલ બહેન વારોટ આ શાખાના છે.
- (૨) માદા: સૌ. માં રાજકોટ, જામનગર, ગિર, ગુજરાતમાં ચારણ ગામ નાણા, મધ્ય પ્રદેશ નિમાડમાં આ શાખા વસે છે.
- (૩) ઢીકરિયા: રાજસ્થાન ટેંકમાં આ શાખા વસે છે.
- (૪) ફનડા
- (૫) બીજડુ
- (૬) વાલા:

વિશેષ નોંધ : — (૧) ચારણોના ચાવ બ્રાહ્મણો ને પોરવંદર પાસે પાલીખડા ગામ ચારણોએ દાનમાં આપ્યું હતું. (૨) સંવત ૧૭૦૨ માં કચ્છના રાવથી ખે ગારજી બીજાપ સોરઠના ગઢવી ગોરાને બોલાવી ગામ લાંખોદ આપ્યું હતું. (૩) મારવાડમાં જાજોસણ નામના ગામમાં ધનરાજ લાલસે અન્યાયના પ્રતિકારણે આત્મવિલિદાન કરતાં એમના કુદું બીજનો જાજોસણ ગામનો ત્યાગ કરી કેટલાક થરપાકરમાં આવેલા બોરાણા ગામમાં અને કેટલાક કચ્છ વાગડમાં આવી વસ્યા.

ઉપરોક્ત પ્રમાણે શાખાઓ અને ઉપશાખાઓની માહિતી પ્રાપ્ત થઈ છે, શાખાનો વિષય એ એક મહાન સંશોધનનો વિષય છે. આથી સંશોધન કાર્ય સિવાય તે અંગે કગું કહેબું ઉચ્ચિત નથી ગીતોમાં તેમજ પેટા શાખાઓમાં ઘણી ધ્રતીઓ જણાય છે. એકજ પ્રકારના નામ ઘણી શાખાઓમાં જોવા મલે છે. આથી જે ભાઈઓ પાસે આ વિશે પ્રમાણભૂત વિશેષ માહિતી હોય તે મોકલાવશે તો દ્વિત્ય આવૃત્તિમાં તેનો સમાવેશ કરી સુધારેલી હકિકત પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવશે.

શાખાઓ વિશે વિદ્રાનોના મંત્ર્ય :

‘ચારણોના પ્રકાર અને શાખાઓનો વિષય ખૂબજ ઝીણવટ માગી લે છે અને સમાજશાખના વિદ્રાનોએ હાથ ધરવા જેવો છે.’

-શ્રી કે. કા. શાસ્ત્રી (ચારણી સાહિત્ય સંમેલન)

‘તુંબેલ શાખાના ચારણોમાં માનવ-વંશશાખના અભ્યાસીને માટે એક વિશિષ્ટ રસવાળું પ્રકરણ પડેલું છે.’

-શ્રી ઝાબેરચંદ મેઘાણી (પરકમ્મા)

‘ફ્હાડો પા. પાલ, વાડો, વાડ, ગવાડ, નેસ, ભુંગા, પોલ, ગલી, શેરી, ફળી, કોલોની, સ્ટ્રીટ વગેરે શબ્દો માનવ વસ્તીના વસવાટના મોદ્દાલા કે વિસ્તાર સુચક છે. આ શબ્દોમાં એ વિશિષ્ટતા છે. મર્યાદિત વસ્તીની સંખ્યાના વિસ્તારને વાડો કહેવાય છે (દા. ત. નાગરવાડો, વ્રાહ્મણવાડો) એ જ પ્રમાણે અનેકવિધ જાતિઓના વસવાટના વિસ્તારને વાડ કહેવાય છે. પરંતુ આ જાતિઓમાં મુખ્ય શક્તિશાલી જાતિ ઉપરથી તે વિસ્તાર કે પ્રદેશ તે જાતિની ‘વાડ’ અર્થાત હદ તરીકે ઓલ્ડખાય છે. (દા. ત. કાઠિયવાડ, ગોહીલવાડ) મોટા નગરોમાં જે વિસ્તારમાં જે જ્ઞાતિ વસ્તી હોય તે વિસ્તારને તે જ્ઞાતિનો ‘ફ્હાડો’ કહેવાય છે. (દા. ત. આજે એ ઉત્તર ગુજરાતના કેટલાક નગરોમાં દેશાઈ ફ્હાડો, ત્રિબેદી ફ્હાડો આવેલા છે.) ફ્હાડની પાસે રહેનારઓને પાડોશી કહેવાય છે. આથી પદ્ધલું તો પ્રતિપાદિત થાય છે કે ચારણોમાં જે સાડા ત્રણ ફ્હાડા શબ્દ પ્રયોજવામા આવ્યો છે તે તેમના વસવાટના વિસ્તારનો નિર્દેશ કરે છે. જે વિસ્તારની સમાજ વ્યવસ્થાની જવાબદારી જે ચારણને સૌંપવામાં આપી હશે તે વિસ્તાર તે ચારણની શાખા કે નામ ઉપરથી પ્રખ્યાત બન્યો હશે. વસવાટના સ્થળાંતરમાં એ પોતાની પ્રતિષ્ઠા જાન્દુંબધા માટે ‘ફ્હાડા’ના નામને વિશેષ મહત્વ આપતા હશે એ રીતે સમસ્ત ચારણ જાતિ સાડા ત્રણ ફ્હાડામાં વહેચાઈ ગઈ હશે.’

-પિંગલશી મેઘાણંદ ગઢવી

“चारण जातिनी शाखेा-पेटा शाखेानी आ माहिती पटला
माटे प्रसिद्ध करवामां आवे छे के सौने खबर पडे के पोताना
शाखभाईओ-गोत्रभाईओ कोण कोण छे अने आर्य परिपाटी
प्रमाणे पोताना गोत्रमां लग्न न थाय ते द्रष्टिप पोताना ज गोत्रमां
लग्न थवानी भूलथी सौ बचे. उपरांत केटलीक शाखेानी पेटा
शाखेा घणी वधी गई होवाथी दरेकने पोतानी सर्व पेटा
शाखेा सामान्य रीते याद पण न होय अटले सौने पेटा शाखेानी
जाणकारी मळी शके प पण जरुरनुं दृतुं.

विशेषमां आ पुस्तिकाना प्रकाशन द्वारा चारण जातिनी
२३ मूळ शाखेानी पेटा शाखेानी जाणकारी मेलवीने हवेथी
दरेक जण पोतानी पेटा शाखोने बदले पोतानी मूळ शाखने ज
पोतानी अटक तरीके लखे-लखावे-ओलखावे अने ते द्वारा
पेटाशाखाओना वधी गयेला मालखानी झंझटमांथी वचीने मूळ
२३ शाखानुं मालखवुं दढ बनावीने वधारे निकटता अनुभवे-
केलवे अ पण खास इच्छनीय छे.

अटले (१) नरा मूळ शाखेानी ४० जीवंत पेटा शाखावाला
पोतानी अटक फक्त नरा लखे - लखावे (२) अवसूरानी ३५
जीवंत पेटा शाखावाला पोतानी अटक अवसूरा (३) चोराडानी
३४ जीवंत पेटा शाखावाला पोतानी अटक चोराडा, (४) मारु-
ओनी १२ जीवंत पेटाशाखावाला पोतानी अटक मारु (५) चूचा-
ओनी १६ जीवंत पेटा शाखावाला पोतानी अटक चूचा (६)
वाटीओनी ११ जीवंत पेटा शाखावाला पोतानी अटक वाटी
(७) तुंबेलोनी पेटाशाखावाला पोतानी अटक तुंबेल (८) मीस-
णोनी पांच जीवंत पेटा शाखावाला पोतानी अटक मीसण
(९) घांघणियाओनी बे जीवंत पेटा शाखावाला पोताने घांघणिया
(१०) वाचाओनी पांच जीवंत शाखाओवाला पोताने वाचा (११)
ठाकरियाओनी सात जीवंत पेटा शाखावाला पोताने ठाकरिया

(१२) नैयाओनी नव जीवंत पेटा शाखावाला पोताने नैया (१३)
 भांचलियाओनी सात जीवंत पेटा शाखावाला पोताने भांचलिया
 (१४) रोहडियानी ८ जीवंत पेटा शाखावाला पोताने रोहडिया
 (१५) टापरिया-नेत्रमाओनी ३ जीवंत पेटा शाखावाला पोताने
 नेत्रमा (१६) शिआलनी ४ जीवंत पेटा शाखावाला पोताने
 शिआल (१७) जाखलाओनी बे जीवंत पेटा शाखावाला पोताने
 जाखला अथवा खलेल (१८) महेडुओनी ३ जीवंत पेटा शाखा
 वाला पोताने महेडु (१९) रतनुओनी बे पेटा शाखावाला पोताने
 रतनु (२०) फुनडाओनी बे जीवंत पेटा शाखावाला पोताने
 फुनडा (२१) लीलाओनी बे जीवंत पेटा शाखावाला पोताने लीला
 (२२) आसणीआओ पोताने आसणीआ (२३) मादा लखे-लखावे-
 ओलखावे थेम भारपूर्वक चिनंति छे. बालकोने निशालमां
 दाखल करती चखते पण दरेक जण पोतानी मूळ शाखने ज
 अटक तरीके लखावे अने तेम करीने जातिना मालखाने वधारे
 संगठित बजावे.

आम करवार्थी अनेक मूळ शाखानी पेटा शाखोवालाओमां
 यकतानो भाव केलवाशे. गोत्र भावना सजीव वनशे. निकटता
 अनुभवाशे.”

-पिंगल परवतजी पायक (नरा)

(चारण जातिनी शाखा-प्रशाखाआ)



(५२) अपि विद्या विद्यावाहनं तस्मै विद्यावाहनं (५३)

विद्यावाहनं विद्यावाहनं तस्मै विद्यावाहनं (५४)

विद्यावाहनं विद्यावाहनं तस्मै विद्यावाहनं (५५)

[५] चारणकुलना पर्याय शब्दो

५.१ गढवी.

५.२ दसोंदी.

५.३ वारहठ, प्रोलपात अने बारोटजी.

५.४ देवीपुत्र-शक्तिपुत्र-सरस्वतीपुत्र.

५.५ चारण जाति साथे साम्य धरावती युरोपनी जातिओ.

५.६ डिगळमां पर्याय.

चारणकुल पौराणिक, ऐतिहासिक अने सांस्कृतिक रीते मूल्यवान छे. भारतीय संस्कृतिनी परंपराने उजळी राखवा माटे मथता रहेला चारणकुलनो इतिहास घणो उजळो घणो भव्य छे. अथी ज तो चारणकुलना अनेक पर्यायवाची शब्दो लोकबोलीमां, भाषामां अने डिगळी साहित्यमां जोवा मळे छे. अे पर्यायवाची शब्दो चारणकुलनी प्राचीनता तेमज भव्यतानो परिचय आपी जाय छे.

५.१ गढवी :-

“(१) गुजरातना राजा सिद्धराज सोलंकीथे महादान्य नामना चारणने आनन्द (काठियावाड) राज्यनुं दान आण्युं हतु; तेने कारणे चारणोनुं नाम ‘गढपति’थी प्रसिद्ध थयुं जेनुं प्राकृत भाषामां ‘गढवी’ थयुं.

(२) गढपति : (राजा) अन्यच्च गाढं दढो प्रण वचन विचारादिव्यवहारे दढेत्यर्थः ॥ अर्थात् गाढ शब्द दढ अर्थमां छे. जेनो भावार्थ प्राण, वचन, विचारादि, व्यवहारमां जे दढ छे; तेवा. (३) चारणोना ग्रामोना नाम पण गढवाडा छे. जेनो पण

આજ અર્થ થાય છે કે અન્યની અપેક્ષાપ ચારણોનાં શાસણ અધિક દઢ છે અને તેને પૂજ્ય માનીને તે ગમોની કોઈ હાની કરતા નહીં.” -કવિવર્ય વારહઠ કૃષ્ણસિહજી (ચારણ કુલ પ્રકાશ) ‘ગઢવી પુ. ગઢનો રહેવાળ (૨) ચારણ’-સાર્થ ગુજરાતી જોડણીકોશ.”

“ગઢવી પ ચારણવર્ગનો એર્યાય જ છે. ચારણો એમના ચારણકમેર્થી પ્રસિદ્ધ થયા. ઉપરાંત સસ્થનિષ્ઠા અને વફાદારી જેવા વીર કર્મને લીધે કયારેક ગઢવી-પદ્થી એણ વ્યવાહારાય હોય એ લાગે છે. ગઢવી પ સંસ્કૃત ‘ગઢપતિ’ નું પ્રાકૃત રૂપ છે. જેમ રાજપતિનું રાજવી, પદ્પતિનું પાટવી અને રથપતિનું રથવી. તેઓ ગઢપતિ કેમ કહેવાયા? એ પ્રઝનનો ઉત્તર એમની વફાદારીમાંથી મળી રહે છે. ગામ-ગામડામાં નાની નાની ગઢીઓ બનાવતી; અને નગરોમાં જરી મોટા ગઢો. ગઢી અને ગઢ એ દુશ્મન સામે બચાવ કરવાનાં સ્થાન. જેમ ગામ કે નગરની રક્ષા માટે ગઢી કે ગઢ રચાતા, તેમ રાજા અને રાજકુદુંબની રક્ષા માટે એણ દરવારગઢ કે રાજગઢો રચાતા. જે આજે એણ જોવા મળે છે. દુશ્મન આવે ત્યારે કોઈએણ નાના-મોટા પ્રવેશદ્વારોથી પેસી ન જાય, એની ખાસ કાઢજી રાખવી પડતી, આવાં પ્રવેશદ્વારો ઉપર ચોકી પહેરો અને રક્ષણ કરવા સંપૂર્ણ વિશ્વાસપાત્ર હોય એવાજ માણસો રોકવામાં આવતાં. બીજા કોઈ દશો દે, એણ ચારણો કદી દશો નહીં દે અને જીવ જાય તોય સ્ત્રામીદ્રોહ નહીં કરે એવી બેમળે પ્રતિષ્ઠા મેલવી હતી. તેથી વિષમ પ્રસંગે ગ્રામપતિ કે નગરપતિ એમને ગઢી-ગઢ રક્ષાનું કામ સોંપતા. આવી વીર કર્મની જવાબદારીને લીધે ચારણો ગઢવી કહેવાયા હોય બેમ લાગે છે. આજેય કચ્છ, સૌરાષ્ટ્ર અને ગુજરાતમાં તથા બીજે સર્વેસ્થલે ચારણો ગઢવી તરીકે જાણીતા છે.

-પંડિતવર શ્રી સુખલાલજી. (કાગવાણી ભાગ ૬)

“गढ़वीर” अटले वीरतानो गढ प उपरथी गढवी शब्द
प्रचलित थयो.” -श्री मावदानजी रत्न (यदुवंश प्रकाश)

“भारतीय भव्य संस्कृतिनु चारण जातिप एक गढनी
जेम रक्षण कर्यु छे. तेथी चारणने गढवीर कहे छे ‘गढवीर’मांथी
‘गढवी’ थयु.” -श्री प्रतापभाई देवका (परमार्थ)

“उत्तराखण्डमां गढवाड जिल्लो छे, ते चारणोनु मूळ बतन
छे. तेनी यादी राखवा चारणो पोताने ‘गढवी’ लखे छे. जेम
उत्तरमांथी आवेलां ब्राह्मणो पोताने औदिच्य ओळखावे छे तेम”

-श्री पुरोहित गौरीशंकर गोदिंजी. (चारण धर्म अने जागृति)

“ज्यारे ज्यारे देशनी स्वतंत्रता, धार्मिकता अने क्षत्रियोनी
मान-मर्यादा उपर आक्रमण थयु छे. त्यारे त्यारे चारण
कविओये वीरतापूर्ण वाक्योथी क्षत्रियोंने प्रेतसाहन आपीने
फक्त युद्ध अने संघर्ष जोता न रह्यां, परंतु खुद पोते पण
समरांगणमां शत्रुओ सामे लडीने वीरगतिने प्राप करता, पटलुंज
बस नथी परंतु क्यारेक तो क्षत्रियोथी आगळ वधीने आक्रमण-
कारोने रणसंग्राममांथी भगाडीने रणचंडीने रक्तधारा, शंकरने
मुङ्डमाळा अने पितृओने रक्तपिंड चडाव्या छे.”

-डंगरसिंहजी भाटी (प्रताप चरित्र)

आवी अपूर्व वीरतानो कारणे चारणो गढवी कहेवाया होय
एम लागे छे.

चारण कीर्ति जाळवे, चारण पवित्र नाम;

शिर साटे गढ साचवे, गढवीनां प काम.

‘गढवी, m governor of fort : bard-पांडुरंग गणेश देशपांडे

(गुजराती-अंग्रेजी कोश)

‘गढ़वी पटले गढ़पतिनु’ अपभ्रंश पटले के गढ़ने साचवनार सेनापति.’ -पिंगलशीभाई पायक

५.२ दसोंदी :-

“जे साथे जीवे छे ते दसोंदी”. -श्रीपुष्कर चंद्रवाकर
“राजकविने तेमज रक्षण तथा बीजा उपयोगी कर्तव्यो बदल
राजभागमांथी जे चारणोने दसमो भाग अपाते तेने दसोंदी
कहेवामां आवता.” - (सौराष्ट्रनी पछात कोमो - भाग १)

“जेने राज्यनी सघली समृद्धिमांथी दशमो हिस्सा मलता होय
तेथो दसोंदी कहेवाता हता.” -विभाविलास

‘क्षत्रियोंना पाप पुण्यना दशमा भागना अधिकारी ते दसोंदी.’
-श्री कलाभाई उधास

पृथुराजा थया आगले पृथ्वीपर; चारणोने अधिक मान आण्यां,
अमरतां लेकथी कव्याने अवनपर, स्थिर करी दसोंदी स्थाप्यां

५.३ बारहठ प्रोलपात अने बारोटजी :-

बारहठ : एक देहो प्रसिद्ध छे के

‘शिवदीया हठ चार, विष्णु हठ तीन बताया,
शक्ति दीया हठ पांच यो बारहठ आया,

उपरोक्त बार प्रकारनी हठ जे चारणो पालता ते बारहठ
कहेवाया.” -श्री जवरदानजी बारहठ (संचाणा)

बारहठ पटले बार प्रकारला बतोने पालनार अने बारोट
शब्द तेनो अपभ्रंश छे.” -पिंगलशीभाई पायक

सोदा बारहठ : मेवाड़ना महाराणा हमीरने आई वरवडीप
चितोड़ पालु मेलववा माटे सहाय करी हती. आई वरवडीना
मोटा पुत्र बारुदेथाप आईनी आव्हाशी ५०० घोडा अने चारण
युद्धवीरो महाराणा हमीरने बादशाह अलाउदीन खीलजीना सुवा

मालदेव चौहाण सामे युद्ध करवा माटे आळ्यां हता. आ युद्धमां महाराणानो विजय थयो. आधी बारू देथाने सीसोदीयाओथे प्रेलपात दसोंदी स्थाप्या. अे समयथी बारूदेथाना वंशज सोदा बारहटु कहेवायानुं मानवामां आवे छे.

“महात्मा शुक्रात द्वारा प्रतिपादित राज शासन के पांच प्रकारों मे से चारणजाति कुलीन शासनकी पृष्ठपोषक थी। इसीलिये उसके सभ्योंका राज दरबारों में सम्मान होता था। देशभक्ति और कर्तव्योपदेश को लक्ष्य में रख कर मौलिक रूपसे पत्रों का संपादन भी चारण जातिने ग्रहण किया। इस जातिने राज-द्वारों की रक्षा का कठिन कार्य हाथ में लेकर प्रतोलिपात्र की (पोलपात) की पदवी ग्रहण की।”

-इतिहासवेत्ता डा. किशोरसिंहजी सोदा

“मारवाडमां बारहटु शब्द प्रचलित थतां तेनो अपभ्रंश कच्छ तथा हालारमां वारोटजी थयो。”

-राजकविश्री मावदानजीभाई रत्नु (यदुवंश प्रकाश)

५.४ देवीपुत्र - शक्तिपुत्र - सरस्वतीपुत्र :-

(१) “देवीपुत्र चारण अटले सरस्वतीपुत्र पण अनो अर्थे छे चारणोनां जे बीजा अनेक कमों वर्णवायेलां मझे छे. तेमां तेमनुं अेक मुख्य कर्म वाग्जीवपणुं अे पण छे. जे वाग्जीवी होय ते शारदा सरस्वतीनी उपासना करे; जे अनां वरदान सिवाय वाग्जीवन दीपी न उठे. जेना उपर शारदा के सरस्वतीनो वरदहस्त ते महान कवि, वक्ता, लेखक के कथाकार वाग्जीवी-वर्ग सरस्वतीदेवीनी उपासना करवामां मानतो. संभव छे आने लीचे पण चारणोने देवीपुत्र कहेवाता होय.

(२) चारण देवीपुत्र कहेवाय छे, ते मुख्यपणे तो पट्टला माटे के चारणवर्ग देवीनो उपासक छे. देवी प खीशकित छे.”

-पंडीतवर सुखलालजी (कागदाणी भाग ६)

“चारणो देवीपुत्र कहेवाय छे. महाशक्तिर सज्जेल आ अनंत सूष्टि बधीज देवीपुत्र कहेवाय. एक चारज शा माटे ? ऐनां कारणोमां एक कारण प छे के चारणकुलमां घणी योगमाया ओनां अवतार थयेल छे. छत्रीशवंश क्षत्रीयोनी कुलदेवीओ चारणपुत्रीओ ज छे. बीजा वणोमां पण आ देवीओ कुलदेवीओ तरीके पुजाय छे.”

-भक्तकवि श्री दुलाभाई काग (कागवाणी भाग ७)

“चारण अपनेको शक्तिपुत्र मानते हैं। फलतः मातृरूपा शक्तिकी आराधना उनकी काव्य-चेतना की भूल प्रेरणां पर्व उनकी जीवन साचनाका अभिन्न अंग होता सर्वथा स्वभाविक है। वस्तुतः यही उनके कृतित्वकी तेजस्विता पर्व व्यक्तित्व वर्चास्विता का रहस्य है। जिस जातिका मातृत्व ऐसा दिव्य और उदात्त होगा, उसकी वाणी और आचरण में यह प्रखरता और तेज भला क्यों न आएगा ? शक्ति के ओरस पुत्र होनेके साथ-साथ वे सरस्वती के भी वरद् पुत्र हैं। फलतः यह जाति सदा से ही शक्ति और शारदा के संयुक्त कृपा-प्रसाद से कृतार्थी रही है।”

-डा. शंभुसिंह मनोहर (चारण चरित्रापें और उनका अध्ययन)

“चारण जाति उपर परमात्माप वे मोटा उपकार करेल छे. अभण चारण पुरुषमां पण काँईक चमक नवीनता, नोक, टेकनी, रखावट अने संस्कारिता जणाय छे. अटले ते सरस्वतीनो पुत्र गणाय छे. अने जगदंबाप क्यांय अवतार लीधा होय ते ते चारण जातिमां. तमे जोगमायाना पुत्रो छो. आजे पण चारणोमां देवीओ छे के जेनां दर्शनथी माणस भाग्यशाळी, पुण्यशाळी बनी जाय छे.”

-श्री वेणीरामभाई भट्ट (भावनगर)

“चारणो आदीथी सरस्वतीनां उपासक हता. चारण देव कहेवाता. देव अटले जेनामां देवी संपतिना गुण होय ते दैव.

चारण सत्तवादी हतो. जेनुं अंतःकरण गुद्ध होय, सत्यनो
उपासक होय, ते ज खरो चारण छे, अे ज देव छे.”

-पूज्य आई श्री सोनलमा.

“चारण देवी - पुत्र छे; कारण के एनां विचारेमां
मानसिक रीते देवी शक्ति पडी होय छे, शान्तिक रीते एनां
सुखमां प शक्ति रहेली होय छे, अने कार्यना रूपे एनां हाथमां
प शक्ति होय छे. मनसा, वाचा, कर्मणा अम त्रण प्रकारे
शक्तिनुं रहेबुं अने तेनु वेगथी प्रवाहित थबुं प त्रिविध शक्ति
संगम अनुं नाम चारण, प चारणमां दिव्यता भरेली होय छे.

जगतनी सञ्चिदानन्दमयी पराशक्तिनो उपासक पट्टले शक्ति
पुत्र चारण.”

-पू. सुनि श्री हरिदानजी महाराज.

गामपति-गामेती-तालुकदार:-

“झालावाडना केटलाक गामधणी चारणो पोताने गामपति-
गामेती कहेवरावता अने ब्रिटीश हकुमतना जिल्हाओना गामेना
मालिक केटलाक चारणो पोताने तालुकदार-ईनामदार कहेवरावता.”

-पिंगलशीभाई पायक.

३५. चारणजाति साथे साम्य धरावती युरोपनी जातिओ -

BARDS - SCALDS

“युरोपनी बीजी चारण परंपरा स्काल्ड (SCALDS) ने
नामे इतिहास विख्याते छे. भाषाने फरसी सम घाटीली बनाव-
नारा शिल्पीओ अे पण टयुटेनिक पूर्वजोना गायको हता. पुरातन
बाडन BARDS ना प साचा वारसदारो हता. पूजनीय गणाता.
तेमनी वाणी प्रभुताने पण तेओ पेताना देवो जनक ‘ओडीन’
अथवा ‘बोडून’ना वारसारूप गणता. एमनी चातुरी पण दिव्य
सणाती तेमना देह पवित्र मनाता, तेमनी कृपा राजाओ याचता
अने तेमने पारितोषिको आपता.

शत्रुशिविरमां पण आ सुहोणी 'चारण' पुनित गणातो होई,
राजाओं पण चारणने वेशो त्यां प्रवेशता एवा आपणी तयारिखने
मळता किस्सा त्यां पण छे.”

-श्री झवेरचांद मेघाणी (चारणाने चारणी साहित्य)

५.६ डिंगलमां पर्यायो :-

डिंगली साहित्यमां 'चारण'ना अनेक पर्यायो नामोनो उल्लेख
जोवा मळे छे. 'चारण कुल प्रकाश' मां कविचर्या श्री चारहटु
कृष्णसिंहजीप ते पर्यायोना नाम साथे अर्थ पण आपेलां छे. जे
उल्लेखनीय छे.

“चारण जाति के जितने पर्याय नाम अद्यावधि हमको मिले
व नीचे लिखकर उनका धात्वर्थ और व्युत्पत्ति सहित भाषा में
अर्थ लिख दिया जाता है, कि जिनमें समझनेमें सर्वे साधारणको
सुभीता मिलेगा।

ये शब्द प्रथम संस्कृत में थे, परन्तु फिर प्राकृत में पढ़कर
देशभाषा में रूपान्तर हो गये हैं। जो उसी रूपान्तर के साथ
डिंगल भाषा के काव्यों में इस समय तक आते हैं, सो काव्योंसे
छांटकर सब लिख गये हैं; यदि दृष्टिदोष के कारण कोई शब्द
बाकी रह भी गया हो तो इसी क्रम से व्याकरण के मतानुसार
उसका भी अर्थ समझ लेवे।

प्रथम अपभ्रंश नाम, फिर ब्रैकेट में शुद्ध नाम उसके आगे
संस्कृत में व्युत्पत्ति और जिल्हे के आगे भाषा में अर्थ लिखा है।

१ ईहग (ईहग); ‘ईह वाङ्मळावयाम्’ ‘गमलु गतो’ इत्यनेन
इच्छयागच्छतीति ईहग, स्वेच्छाचरीत्यर्थः ॥ निरहकुशाः कवय
इति प्रसिद्धः ॥

भावार्थ : ईहधातु चेष्टा अर्थ में है 'ईहग' का अर्थ है
चेष्टा से अभिप्राय पर जानेवाले अर्थात् चेष्टा से अभिप्राय को
समझनेवाले विद्वान् ॥

२ कव, कवि, किवजण (कवि और कविजनः) काव्यस्य
कर्त्तरि, अतीतानाग त सर्वेषै, सूक्ष्मार्थविवेकिनि, मेघाविनि,
पंडितेत्यर्थः ॥ भाषार्थः कवि धातु काव्य बनाने में है, और भूत
भविष्यत् जाननेवाले का नाम कवि है, अथवा सूक्ष्म अर्थ के
जाननेवाले शुद्धिमान् पंडितको कवि कहते हैं ॥

३ गढवी (गढपतिः वा गाढवान्), गढपतिः (राजा) अन्यच्च
गाढ़ देहे । प्रणवचन विचारादिव्यवहारे देहेत्यर्थः ॥

भाषार्थः ('गढवी' पर्यायमां जगाव्या प्रभाणे ।

४ गुणियण गुणिजण, (गुणिजनः) गुणमस्यास्तीति गुणी,
गुणी चासोजनश्च गुणिजनः ॥

भाषार्थः गुणवान् (विद्वान्) मनुष्य को गुणीजन कहते हैं ।

५ चारण (चारणः) चारयति कीर्त्तिमिति चारणः ॥

भाषार्थः देवता और शत्रियों की कीर्ति फैलानेके कारण
चारण नाम है ।

६ ताकव (तर्कक) तर्ककारके, तर्क मीमांसादिशास्त्रकुशलेत्यर्थः ॥

भाषार्थः तर्क करने वाले और तर्क मीमांसा आदि
शास्त्रों में कुशल.

७ दृथी (द्रिथः, द्रिस्थः, वा द्रिकथी) 'थः रक्षणे' अथवा
'तिष्ठत्यस्मन्नितिस्थः' 'इत्युभयत्रशब्दार्थं चितामणिः । कथवा-
क्यप्रबंधे ॥

भाषार्थः प्राकृत में 'द्रि' का 'दुव' होता है जिसका अपभ्रंश
भाषा में 'दु' हुआ । जो 'दो'की गणना का वाचक है और 'थः'
का 'थी' हुआ जो रक्षा अर्थ में है ये दोनों मिलकर 'दृथी'
हुआ है जिसका अर्थ हैं, खाग (युद्ध) और त्याग (दान) इन
दोनों स्थानोंमें शत्रियों के यश और कीर्तिरूपी शरीरकी रक्षा
करनेवाले "दानाच्च प्रभवा कीर्तिः शोँडीरप्रभवो यशः" अर्थः दान

से उत्पन्न होवै उसका नाम कीर्ति और पराक्रम से उत्पन्न होवै उसको यश कहते हैं। दूसरा अर्थ 'स्थ' का थी हुआ है। इसका अर्थ है, स्वाग और त्याग दोनों समयमें स्थित रहनेवाले, अथवा 'द्विकथी' के ककार का लोप हो के 'दृथी' बना है क्योंकि प्राकृतः में ककारादि अक्षरोंका लोप हो जाता है, वाकी ऊपर लिखे शब्द के अनुसार 'दृथी' शब्द सिद्ध हुआ जिसका अर्थ है कि यश और अपयश दोनों प्रकारकी कथा करनेवाले अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंका यशपूर्वक और दुष्ट पुरुषोंका निदापूर्वक काव्य करनेवाले ॥

८ नीपण : (निपुणः); प्रवीणे, विज्ञे, क्रियासु दक्षत्यर्थः ॥

भाषार्थ : शिक्षा पाये हुए, ज्ञानवान्, कार्य करने से चतुर ॥

९ पात : (पात्रम्); दानपात्रे, विद्यातपोयुक्ते, पतनात् त्रायते यस्मात् तत्पात्रम् ॥

भाषार्थ : दानपात्र, विद्या और तप से युक्त, गिरने जे रक्षा करनेवाले अर्थात् क्षत्रियों के हीनदशा से बचानेवाले ॥

१० पोळपात (प्रतोलीपात्रः) प्रतोल्यां पात्रः प्रतोलीपात्रः ॥
गोपुरंहि प्रतोल्यां तु नगरद्वारयेरपि इति महीपः ॥

भाषार्थ : महीप के शेर में द्वार का नाम 'प्रतोली' लिखा है सो प्रतोली (पोळ) पर नेग लेने में पात्र ॥

११ बारठ- (द्वारहठ); छारे हठ करोतीत द्वारहठः ॥

भाषार्थ-द्वार पर हठ करके तोरण का हाथी आदि अपना नेग लेनेवाले ॥

१२ भाणव-(भाणवः), भणतीति भाणवः ॥

भाषार्थ-भण धातु शब्द करने में है सो उत्तम वक्ता (स्पीकर, लेकचररु) अर्थात् व्याख्यान देनेवाले का नाम है ।

१३ मार्गण - (मार्गणम्); अन्वेशणे, संबीक्षणे, याचके, कविकृतिपीयूपरहितान् लुप्तप्रायान् क्षत्रियकुलपूर्वजान् संबीक्षणकारकाः, अर्थात् इतिहासकर्तारः क्षत्रियगुणदोषवीक्षणकर्तारश्च ॥ भाषार्थ - हेरना, खोजाना, देखना, कवियों की कविता रूपी अमृत से रहित, अस्तको प्राप्त, ऐसे क्षत्रियों के पूर्वजों के इतिहास कर्ताः और क्षत्रियों के गुण दोषों को ढूँढनेवाले ॥

१४ रेणव-(रणवहः) 'रण शब्दे' 'वह प्राप्ते' इत्यनेन रण वहंति प्राप्नुवंति ते रणवहः ॥

भाषार्थ-'रण' धातु 'शब्द' अर्थ में है और 'वह' धातु 'प्राप्ति' अर्थ में है जिसका अर्थ है उत्तम वोलनेवाले अथवा रण (युद्ध) को प्राप्त करानेवाले अर्थात् कायरको बीर बनाकर लड़ानेवाले ॥

१५ वीदग-(विदग्धः); 'विदज्ञाने' चतुरे, दक्षे, पण्डितेत्यर्थः ॥

भाषार्थ-'विद' धातु 'ज्ञान' अर्थ में है और चतुर व पंडित का नाम विदग्ध है ॥

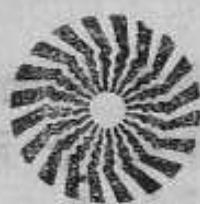
१६ हेतव (हितवहः); 'वह' प्राप्ते' 'हित' वहंति प्राप्नुवंति ते हितवहः ॥'

भाषार्थ-'वह' धातु प्राप्ति अर्थ में है जिसका अर्थ है हित को प्राप्त करानेवाले ॥' (चारणकुल प्रकाश)

चारणी साहित्यना ग्रंथोना महा अभ्यासी, ब्रजभाषा-पाठशालाना दीक्षित पंडित कवि, चारणी भाषाना प्रथम कक्षाना विद्वान्, पोरवंदर स्टेटना स्व. राजकवि श्री यशकरण अचलदानजी रत्नुप तेमना अप्रसिद्ध ग्रंथ अमरकोशमां चारणना पर्याय आप्यां छे ते उल्लेखनीय छे.

चारन नाम

पांथ पांथु रेणव पुलि, चारन सरस्वति पुत्र,
 विद्याधर कवि वचनसिद्ध पूजनीक सरवत्र.
 देव दशोदि काव्यकर देहमूर गढबीर,
 शक्ति उपासक बारहटु सत्त्वका रनधीर.
 श्वात्रधर्मरक्षक सदा निःडर निषुण हे नाम,
 देवीपुत्र भाणण कहत, वास हिमालय धाम.



[6] चारणनुं निवासस्थान अने स्थलांतर

- ६.१ पुराणो अने महाकाव्योमां निवासस्थाननो निर्देश
- ६.२ पृथ्वी पर चारणना विहारधामना शाखोक प्रमाण
- ६.३ स्वर्गनुं स्थान पृथ्वी उपर ???
- ६.४ स्वर्गलोक अने पृथ्वीलोक वच्चे सरल अवरज्जवर.
- ६.५ पृथ्वीपर चारणनो स्थायी वसवाट.
- ६.६ चारण देवचारणमांथी मानुषचारण वन्या.
- ६.७ चारणनी आर्यावर्तनी यात्रा.
- ६.८ सोरठ चारणरो पियर.
- ६.९ समस्त आर्यावर्तना लिघमां एकत्रित थतां चारणकुलो.
- ६.१० तुंबेल शाखाना अने मावल सावाणीना वंशज चारणोनुं कच्छमांथी सौराष्ट्रमां स्थलांतर.
- ६.११ वर्तमान समयमां चारणनो वसवाट.
- ६.१२ वस्ती नेंध.
- ६.१३ विद्वानोनां मंतव्यो.

देवसर्गमां गणना पामेली चारणजाति देवताओनी साथे सतत विचरण करती रहेती होवाथी तेओनुं विचरणक्षेत्र नरलोकथी किन्नरलोक अने स्वर्गलोकथी रावणपुरी सुधीनुं अमर्यादित क्षेत्र हतुं. तेमना मुख्य निवासस्थानो सुमेरु पवित, गंदमादन, हिमालयना रम्यगिरीशुंगो हता. पृथ्वीपर बद्रिकाश्रम, कुरुक्षेत्र पासे सरस्वती नदीना साञ्जिध्यमां, नर्मदाकिनारो, लंकामां जंबुद्वीप, नेमीपारण्यमां, गोमतीकिनारो, प्लक्षद्वीप, कौचद्वीप, डुंडुभिस्वनदेश, शाकद्वीप, नर्मदा समुद्रसंगम पर विमलेश्वर वगेरे स्थलो चारणना विहारधाम होवानो पुराणो अने महाकाव्योनो दावो छे.

६२ पुराणो अने महाकाव्योमां निवासस्थानतो निर्देशः-

“अलकापुरीमां अप्सरायो, गंधवीं तथा चारणोनी साथे
देवोथी पुजाता कुवेर रहे छे. (वायुपुराण)

ब्रह्माप हिमालयमां बलावेली नगरीमां गंधवीं, अप्सरा, नाग,
यक्षा, किञ्चरा तथा देव चारणो रहेवा आव्यानुं वर्णन छे.

(ब्रह्मपुराण)

अर्जुन इंद्रपुरीमां प्रवेश करे छे ते समये इंद्रपुरी सिद्ध,
चारणोथी सुशोभीत हती.

ददर्श स पुरी रम्या सिद्धचारणसेविता ।

सर्वेतुकुसुमैः पुरुषे पाय देहपशोभिताम् ॥१॥

(महाभारत घनपर्वा ४३ मो अध्याय)

गौतम ऋषि तेनी पत्नी अहल्याने आप आरीने आथमनो
त्याग करी हिमालयना सुंदर शिखर उपर ज्यां चारणो, सिद्धो
रहेता हता त्यां आरीने तप कर्युं, तेवो उध्लेख वालकांडना
४१ नां सर्गमां आपवामां आवेल छे.

थेवमुक्त्वा महातेजा गौतमो दुष्ट चारिणीम् ।

इममाश्रममुत्कृज्य सिद्ध चारणसेविते ॥३३॥

हिमवच्छिखरे रम्ये तपस्तेषे महातपाः (वालिमकी रामायण)

ज्यारे रावण वरदान पार्थीने चंद्रलोकमां विजय मेलववा
माटे चडाई करी हती ते समेते तेना मार्गमां चारणोनुं निवास-
स्थान आवे छे. तेनुं वर्णन उत्तरकांडना चोथा सर्गमां आपवामां
आवेल छे.

अथ गत्वा तृतीयं तुं वायोः पन्थानमुत्तमम् ॥१४॥

नित्य यत्र स्थिताः सिद्धशो चारणश्च मनस्विनः ।

दशैव तु सहस्रारिग्योजनानां तथैव च ॥१५॥

(वालिमकी रामायण)

अथात् वायुधी उत्तम त्रीजा मार्गमां विहान, सिद्ध, चारणो
सहैव निवास करे छे, ते मार्ग दश हजार योजनानो छे.”

६.२ पृथ्वी पर चारणना विहारधामना शास्त्रोक्त प्रमाण:-

“तीर्थमां देवो, गंधर्वो, ऋषिओ तथा सिद्धो साथे चारणो
संध्यामां देवेशनी आराधना करे छे. (मन्त्स्यपुराण)

केटलाक मंदिरो, चारण, सिद्धोर्थी पुंजला छे. (स्कंदपुराण)

तपलोक, ब्रह्मलोक, सर्व ब्रह्मांड तथा अनी अंदर रहेनार
दत्त्य, गंधर्व, चारण वगेरे जीवो ते विष्णुमां स्थित छे. (विष्णु पुराण)

नैमित्पारण्यमां सिद्ध अने चारणोर्थी सेवेली पूर्ण गोमती
नदी छे. (वायु पुराण)

वशिष्ठ ऋषिनो आश्रम सिद्ध, चारण, देव, दानव अने
किञ्चरोर्थी सेवाता होवानु वर्णन छे. (बालकांड वालिमकी रामायण)

पुर्व दिशाना समुद्रने पेलेपार शोहनाद नामनी राता
जलबाली तथा उतावली नदीनु सेवन सिद्धो तथा चारणो
करे छे. दक्षिण दिशामां लंकार्थी पेलेपार सिद्धो अने चारणोप
सेवेलो पुणितक नामनो वहुज सुन्दर पर्वत छे. जे वहुज उच्चो छे.
तेमज महेन्द्र पर्वतना मनोरम्य स्थलोमां सिद्धो तथा चारणो
देवो ऋषिथो निरंतर विहार करे छे. किञ्चिंधाकांड वालिमकी
रामायण)

हनुमानजीथे लंका बाल्या पछी सीताजी बल्दी गया हँडे
के केम ? तेवी शंका थई ते वखते तेमणे आकाशचारी चारणोर्नी
परस्पर थती वातचीत सांभली के लंका बल्दी गई परंतु सीताजी
बल्या नथी प महान आश्चर्य छे. (सुन्दरकांड - वालिमकी
रामायण)

वट्रिकाश्रम प चारणोनु निवासस्थान छे. त्यां अर्जुन रहे
छे एम इंद्र कहे छे. (महाभारत)

पांडु राजाना मृत्यु पढ़ी पांडवों तथा कुंतीने हस्तिनापुर पहोंचाडवा माटे चारण मुनिओं आवश्या हतां. (महाभारत)

सिद्ध, चारण, गंधर्व, विद्याधरो, महाउरगो वगोरेथी सेवाता अनुपम त्रिकुट पर्वतनु वर्णन छे. (अष्टम स्कंध श्रीमद् भागवत)

युधिष्ठिर राजसूय यज्ञमां आववा माटे सिद्धो, देवो, विद्याधरो वगोरे साथें चारणोने आमंत्रण अपायानु वर्णन छे.

(उत्तराधि श्रीमद् भागवत)

ऋषभदेवना मोक्षाभिलाशी पुत्रो देवो, सिद्धो साध्यो, नारो, मनुष्यलोकमां तथा मुनिओ विद्याधरो तथा चारणो भुवनमां फरता होवानु वर्णन छे. (श्रीमद् भागवत)

द्वारकामां श्रीकृष्णनी साथे चारणो गयानु वर्णन छे.

(एकादश स्कंध श्रीमद् भागवत)

आ उपरांत अन्य पौराणिक शास्त्रोमां चारणो गिरिओमां, रमणीय स्थलोमां, समुद्र किनारा पर, द्विपोर्मा, सरोवरना किनारा पर, नदीना तटमां विहरता होवानु वर्णन मले छे.

उपरोक्त प्रमाणोधी सिद्ध थाय छे के स्वर्गलोकमां सुमेरु पर्वत पर, ब्रह्माजीनी पुरीमां, सूर्योधी वीम हजार योजन नीचे चारणोनु निवासस्थान हतु. पृथ्वीलोकमां चारणो बद्रिकाश्रममां, लंकामां, हिमालयमां विहार करता हता. सरस्वती, गोमती, नर्मदा जेवी नदीओमां समुद्रसंगममा अने तीर्थोमां स्नान संध्या करवा आवतां हतां.

६.६ स्वर्गनु स्थान पृथ्वी उपर ???

पुराणोना प्रमाणोनुसार देवो, गंधवी, सिद्धो, चारणोनु निवासस्थान स्वर्ग हतु. परंतु स्वर्ग क्या स्थले आवेलु छे. ते पक संशोधननो विषय छे.

पोराणिक साहित्यना आधारे आधुनिक विद्वानो हिमालय पर्वत पासे मध्यम देश तिव्वतने स्वर्ग माने छे. आज हकीकतनुं समर्थन भारद्वाज क्रष्ण भृगुवृषभिने स्वर्ग क्यां छे? तेवो प्रद्वन पूछे छे त्यारे तेना उत्तरमां महाभारतना शांतिपर्वमां सेक्षयर्वनो १९२ मां अध्यायनो आठमो इलोक आपवामां आवेल छे.

उत्तरे हिमवत्पांचे पुण्ये सर्वगुणान्विते ।

पुण्यः क्षमश्च कामयश्च स परोलोक उच्यते ॥

अर्थात् उत्तर दिशामां हिमालयनी पवित्र सर्व गुणोवाली भूमिनी समीप अति पवित्र विघ्नो रहित जे सुंदरलोक छे; तेने ज परलोक कहे छे.

आ संसारनी प्रथम उत्पत्ति अने खगोलनी रचना तिव्वतमां थई छे. जेनुं प्रमाण उदयपुरना यंत्रालय द्वारा प्रसिद्ध थयेल 'शब्दार्थ' चितामणीकोष' ना तृतीय भागना पक श्लोकमां आपवामां आवेल छे.

अत्रैव हि स्थितो ब्रह्मा पाड नक्षत्रं समजंह ।

ततः पारञ्योतिपार व्येयं पुरी शक्रवूरीसमा ॥

अर्थात् प्राग्जयोतिष नामना नगरनी व्युत्पत्ति करता कहे छे के अर्हीं ब्रह्माजीष स्थित थईने प्रथम नक्षत्र बनाव्युं, आ कारणथी तेनुं नाम प्राग्जयोतिष थयुं छे जे इंद्रनी पुरी अमरावती समान छे.

प्राग्जयोतिषनगर तिव्वतनी समीप ज छे. सृष्टिनी प्रथम रचना तिव्वतमां ज थयानुं सर्वमान्य अनुमान छे. प उपरांत तिव्वतने त्रिविष्टप (स्वर्ग) पण कहेवामां आवे छे.

ज्योतिषनो सर्वमान्य ग्रंथ 'सिद्धांत शिरोमणी' ना गोलाध्यायमां भुवनकोशना बीजा श्लोकमां जणाव्या प्रमाणे स्वर्ग आज पृथ्वी पर होवानुं समर्थन आपे छे.

भूमे पिण्डे शशाङ्कराकविरकुजे ज्याकिनक्षत्रकक्षा ।

ब्रुतेवृता ब्रुतः सनसृदनिलसलिल व्येम तेजोमयोयम् ॥

नान्याधार स्वशत्कथैव वियति नियतं तिष्ठति हास्य पृष्टे ।

निष्टं विश्वं च शश्वत्यसदनुजमनुजादित्वं देत्यं समन्तात् ॥

आ प्रमाणोधी अटलुं तो सपषु थाय छे के सर्वे सुष्टिनी उत्पत्ति तिवतमां थई छे. तिव्यतथी हिमालयना उर्ध्वभागने उर्ध्वलोक अने नीचेना भागने सृत्युलोक कहे छे.

६.४ स्वर्गलोक अने पृथ्वीलोक वच्चे सरल अवरजवरः-

स्वर्गलोक अने पृथ्वीलोक वच्चे अवरजवरनो व्यवहार हुतो तेम महाकाव्यो ग्रतिपादित करे छे.

राजा पृथुना यज्ञमां देवताओ, गंधर्वी, सिद्धो, चारणो स्वर्गलोकथी पृथ्वीलोकमां आव्यां हतां (श्रीमद् भागवत)

गौतमऋषि पृथ्वीलोकमांथी स्वर्गलोकमां तपश्चर्या करवा माटे गया हता. (वालिमकी रामायण)

रावण चंद्रलोक पर विजय मेलववा माटे पृथ्वीलोकमांथी गया हता. (वालिमकी रामायण)

पांडु राजाना सृत्यु पछी पांडवोने हस्तिनापुर पहोंचाडवा माटे चारण ऋषिओ पृथ्वीपर आव्यां हतां. (महाभारत)

युधिष्ठिरनी आज्ञा लईने अर्जुन महादेव अने इंद्रने मळवा माटे पृथ्वीलोकमांथा इंद्रलोकमां गया हता. (महाभारत)

अष्टावक्र पृथ्वीलोकमांथी वदान्यने रुद्रस्थानमां जवानो मार्ग पूछे छे तेना उत्तरमां वेदान्य रुद्रस्थान जवानो मार्ग बतावे छे.

अर्जुन हस्तिनापुरथी अस्त्रविद्या शीखवा माटे स्वर्गलोकमां गया हतां.

श्रीकृष्ण द्वारिकामां निवास्थान करतां देवसृष्टि स्वर्गलोकमांशी
पृथ्वीलोक उपर श्री कृष्णनां दर्शन माटे आवी हती.

आ उल्लेखो उपरांत यथाति, मुचकंद, दशरथराजा,
युधिष्ठिर जेवा महापुरुषो मनुष्यदेहथी स्वर्गलोकमां गया हता,
अे ज रीते देवसृष्टीना लोको पण पृथ्वीलोकमां आवतां हतां,
आथी पटलु तो स्पष्ट थाय छे के चारणने आ बन्ने लोकमां आववा
जवा अंगे कोई संदेह होई शके नहीं. पृथ्वी पर चारणना
विहारधामना शास्त्रोक्त प्रमाण पण आ ज हकीकतने समर्थन
आपे छे.

६.५ पृथ्वी पर चारणनो स्थायी वसवाट :-

मनुराजानी दशमी पेढीण वेन नामना राजा थया. तेमने
पृथु नामनो पुत्र थयो. पृथु राज एक अवतारी पुरुष तरीके
प्रख्यात थया. पृथुराजा महापराकमी, दानेश्वरी अने
नवनिर्माणना सर्जक थया. तेमणे पृथ्वीलोकनी नवरचना करी.
घनुषना नेकथी अनेक नाना मोटां पर्वताने पृथ्वीनी समतळ
कर्या. आ अंगे पह्यपुराणमां एक इलोक आपवामां आवयो छे.

धनयोडग्रेणतान् शैलन नानारूपान गर्हस्तथा ।

उत्सारर्यस्ततः सर्वान् चकार सः ॥२५॥

पृथु राजाप ग्राम, नगर, शहेर, देश अने क्षेत्रनी मर्यादा
अर्थात् हद दिशाओ निचित करी.

ग्रामणां च पुराणां च पतनानां तथैव च ।

देशाना क्षेत्रपन्नानां मर्यादानैव दृश्यते ॥२६॥

पृथुराजाप वर्णव्यवस्था, आथमो सुव्यवस्थीत बनावी
तेमज समग्र सृष्टिनुं संचालनपद संभाव्युं.

वर्णनामाश्रमाणां यः स्थापक सर्वलोक धृक् ॥२७॥

सृष्टिने सुव्यवस्थित, सुघड अने सुदर वनावीने महाराजा पृथुप एक महायज्ञनुं आयोजन कर्युं. देवसृष्टि, मानवसृष्टि वगेरे यज्ञमां उपस्थित रही हती. यज्ञनी पुणीहुति अवसरे दरेक आमंत्रितवर्गनुं पृथुमहाराजाप वहुमान कर्युं.

महाराजा पृथुता महायज्ञ प्रसंगजुं समर्थत श्रीमद् भागवतना सांख्यशास्त्र चतुर्थ स्कंधना वीसमा अध्यायमां मले छे.

देवपिपितृग्रधर्वसिद्धचारणपन्नगः ।

किन्नराप्सरसो मत्येऽस्मि खगा भूतान्यनेकशः ॥३५॥

यज्ञश्वरधिया राहा वाग्विताजलि भक्षितः ।

सभाजिता ययुः सब्बे वैकुंठानुगतास्ततः ॥३६॥

हिमालयना रम्यगिरिश्च गोमां विहार करता चारण ऋषिओ के जे देवोना स्तुती पाठको हता, तेओ पण महाराजा पृथुना महायज्ञमां खास उपस्थित रहां हतां. पृथु महाराज दीर्घदृष्टा हता, सृष्टिना नवसर्जक हता, तेमज चारणनी अस्मिताथी सुपरिचित हता, पृथ्वीलोकने स्वर्गलोक वनाववाना कार्यमां चारणनुं पृथ्वीलोकमां स्थायी निवास्थान होतुं अनिवार्य हतु. ए शुभनिष्ठाथी महाराजा पृथुप उत्तमोत्तम देश तैलंग चारणने प्रदान कयो. तेनुं प्रमाण पह्लपुराणना द्वितीय भूमिखेडना अट्टावीसमा अध्यायमां आपवामां आवेल छे.

“चारणाय ततः प्रादौतैलङ्गा देशमुत्तमम् ॥८८॥

उपरोक्त प्रमाणथी प्रतिषादित थाय छे के महाराजा पृथुना साम्राज्यकाळमां स्वर्गनिवासी चारणकुले पृथ्वीलोकना दक्षिणापथनां तैलंग देशमां पोतानुं राज्य अने प्रभाव प्रस्थपित कर्या हतां, तेमज पृथ्वी पर स्थायी निवास्थान स्थाप्युं हतुं. आ प्रसंगनेा एक दोहो पण उपलब्ध छे.

चारण देव समाज, गढवाडो मेरु गिरन,

रीझे हरि पृथुराज, ले आयो भवलोक.

६६ चारण देव चारणमांथी मानुष चारण वन्या :-

श्री कविराजा मुरारिदानजी साहेब 'संक्षिप्त चारण ख्याति' मां आ विषे जगावे ले के "देवताओंके कवि, चारण, देवता देवलोक में सुमेरु पहाड़ पर आवाद थे. तब तो देव चारण कहेलाते थे. यथा हिमालयकी पुत्री पार्वतीका महादेवके साथ विवाह हुआ तब तैयारीके लिये ब्रह्माने हिमालय में नवीन नगर बसाया. उस नगरमें देवता बगोरा आये. उस बावत ब्रह्मपुराणके छत्तीसवें ३६ अध्यायमें छासद्वारा यह श्लोक हैं।

गन्धर्वाप्सरसः सर्वे नागा यक्षाः सराक्षसाः ।

औद्काः खेचराश्चान्ये किञ्चरा देव-चारणः ॥ ६६ ॥

अर्थात् उस नगरमें गंधर्व, अप्सराए, नाग, यक्ष, राक्षस, जलचर यानी जल में रहनेवाले, खेचर यानी आकाश में रहनेवाले, इनके सिवाय किञ्चर और देव-चारण आये ॥ देव-चारण में से कितनेक मोक्ष - साधन के लिये सुमेरु पहाड़से आकर हिमालय पहाड़ पर बसे यानी आवाद हुए । उनकी औलाद मर्त्यलोक के वासिद हो जाने से उनके देवतापन में इतनी कमी हुई कि वे देवकल्प कहलाने लगे । देवकल्प अर्थात् देवताओंसे कुछ न्युन । इष्टत असमात्पि अर्थात् किंचित् अपूर्णता अर्थ में कल्पप्रत्यय होता है, सो ही कहा है "सिद्धांत कोमुदी" व्याकरणके तद्वित प्रकरण में :-

"ईषदसमाप्तौ कल्पदेश्यदेशीयरः । ५ ॥ ३ ॥ ६७ ॥"

अर्थात् किंचित् असमाप्ति अर्थमें कल्पप्रत्यय और देशीयर प्रत्यय होते है जिसका प्रमाण महाभारत के आदि पर्व के पक्सो छाईसवें अध्याय में यह है । राजा पांडु हिमालय में चारणों के नजदीक तप करता था सो वही मर गया तब चारण उसकी रानी और राजकुमारों को हस्तिनापुर पहुँचाने की सलाह करने लगे तहाँ पांचवा श्लोक यह हैं ।

“ते परस्परमायन्त्रय देवकल्प महर्षयः ॥ ५ ॥”

अर्थात् उन देवकल्प महाक्षणि चारणों ने आपस मे सलाह की। देवकल्प अर्थात् देवता सदश। समान गुणवालों मे अधिक गुणवालेकी उपमा यानी मिसाल दूसरे के दीजाति हैं।

फिर हिमालय पहाड़ पर चारण मुनि तपस्या कर रहे थे। उन में से एक चारण तपस्या करना छाड़, हिमालयसे आकर अवतारी महाराजा पृथुका कवि हुआ उस चारणोंकी औलाद हम चारण हैं। वे मर्त्यलोक मे रहनेवाले राजा और राजपुत्र मनुष्य, उनके कवि होने से हमारा देवतापन बिलकुल मिटकर हम मानुष चारण यानी मनुष्य चारण कहलाने लगे। जिसका प्रमाण महाभारत में शांति पर्व के मोक्ष धर्म में दो सौ इकत्तरवें अध्याय में यह हैं

“देवता ब्राह्मणः सन्तो यक्षा मानुष चारणः ॥

धार्मिकान्पूजयन्तीह न धनाद्वाज्ञ कामिनः ॥ ५१ ॥

अर्थात् देवता, ब्राह्मण, सत्पुरुष, यक्ष और मानुष चारण ये धार्मिक पुरुषोंकी अर्थात् अपने धर्ममे चलनेवालोंकी पूजा अर्थात् सत्कार करते हैं। धनवानों का और कामी अर्थात् विषयासक पुरुषोंका यानी ऐस असरत करनेवाले इनशानों का सत्कार नहीं करते।

महाभारत होने के पीछे जैन मतने तरक्की पाई। जैनियों के धर्मकी किताबे मागधी भाषा में है, सो उन में भी जगह जगह मानुष चारणोंका वर्णन हिंदु धर्मकी किताबों के जैसा ही है। हिंदु चेतीस अवतार मानते हैं, जैसे जैनी चेतीस तीर्थंकर मानते हैं। तीर्थंकर का ही दूसरा नाम अरिहंत है, जैनियों के सब से पिछले तीर्थंकर महावीर स्वामी हुए हैं। जैनी ऐसा कहते हैं, कि जिस विक्रम महाराजा का संवत् हैं,

उस विक्रम के संवत् प्रारंभ से चारसौ सित्तेर ४७० वर्ष पहिले महावीर स्वामी हुये हैं। सो वर्तमान समय से महावीर स्वामी का समय चौबीस सौ इक्तीस २४३१ वर्ष पहिले था। महावीर स्वामी के बनाये हुये पन्नावणाजी सूत्र के प्रथम पदमें मनुष्याधिकार में यानी मनुष्योंके प्रकरण में लिखा है, कि मनुष्य दो प्रकारके है मलेच्छ यानी अपवित्र और आर्य यानी पवित्र। आर्य दो प्रकारके है ऋद्धि प्राप्त यानी तपस्या दोलत वगेरा से प्रतिष्ठा नहीं पाये हुए। प्रतिष्ठा यानी इज्जत। ऋद्धि प्राप्त छः ६ प्रकारके कहे हैं :

“ अरिहंता चक्रवटी बलदेवा वासुदेवा चारणा विजाहरा ॥”

अर्थात् अरिहंत यानी तीर्थकर १। चक्रवर्ती यानी सब दुनियाभरका पक राजा होये वह २। बलदेव यानी कृष्ण अवतार के बडे भाई बलदेव जैसे ३। वासुदेव यानी कृष्ण अवतार के जैसे ४। चारण ५। और विद्याधर यानी योग शास्त्रकी विद्या के जाननेवाले ६। यह मनुष्यों का अधिकार है इसलिये ये छहों मनुष्य जाति हैं। यहाँ तीर्थकर वगेरा परम पवित्रों और समर्थोंकी गिनती में मानुष चारणों को गिनाया है।

जैनधर्मके सूत्रग्रंथ बनाने से पहिले का कोई काव्य नहीं मिलता। पीछे बने हुए मिलते हैं उन काव्यों में भी वहुधा मानुष चारणों का वर्णन है।

६.७ चारणनी आर्यावर्तनी यात्रा :-

आर्यावित् अटले “आर्यावितः पुण्यभूमिर्मर्यविन्ध्याहिमागयोः॥” अमरकोशनी आ व्याख्या यथार्थ छे।

चारण जाति कालान्तरमां तैलंग देशमां सीमीत न रहेता साराय भारतवर्षमां पथराई गई हती। देशकालनी आवश्यकताथोने कारणे जनजीवनने उद्बुद्ध करवा तथा जनजागृतिश्री राष्ट्रोत्थानमां

योगदान आपबुं प चारणोनो पुनीत आदर्श हतो. जे समये युगधर्ममां के मानवधर्ममां कोईपण विद्व विरोध अथवा व्युति-क्रम उपस्थित थतां त्यां तेओ उत्साहथी सक्रिय विदलन संगठित करवा त्यां पहेंची जतां ते तेओनुं नैतिक कार्य हतुं.

चारणनी आर्यावर्तनी यात्रा अंगे श्री देवेन्द्र सत्यार्थी लखे छे के “इन चारणोका इतिहास में मूल स्तोत्र पता करना कठिन है। लगभग दसवीं सदी तक ये उत्तरी भारत में विखरे हुए थे। कनोज के आसपास इनकी सम्पत्तिशाल वस्तियां थी। इसके बाद दूर निकट के चारण सिंधु प्रदेश के चालझणा ग्राम में जा वसे। थोडे बर्षों बाद काठियावाड, कच्छ, राजपूताना चारणों के प्रधान केन्द्र बने गये।”

राष्ट्रीय शायर श्री झवेरचांद मेघाणीजी चारणनी आर्यावर्तनी यात्रा अंगे लखे छे के “हिमालयादि पर्वतो, वनो, समुद्रो अने नदी तीरो पर वसीने देवताओनी स्तुति गानार तेमज शास्त्रनां पठन-पाठन करनारा क्रषि मुनिओ लेखे पुराणयुगी चारणोनी परंपरा इतिहास युगमां चालु रहे छे। हिमालयमांथी लावीने चारणोने आर्यावर्तनिवासी वनावनारा पृथु राजानो पद्मपुराणमां उल्लेख छे ने पछी तेमनुं तैलंगमांथी मालवामां, कच्छमां, थरपारकरमां सौराष्ट्रमां सिंध, गुजरात अने राजपूतानामां गयानुं अनुमान छे। मालवा प राजकीय तेमज सांस्कृतिक दृष्टिओ भारतवर्षबुं मध्यविन्दु हतुं। अटले विद्याविलासी चारणोनुं तैलंगथी मालवा जबुं स्वाभाविक हतुं। पछी कच्छदेश तेमने परमारोओ वसवा आपेल।

आठमी सदी सारुं आर्यावर्त अेनुं बतन हतुं। छूटाछवाया पथराया हता। कनोज फरती मोटी जागीरो पण खाता।”

काश्मीरना राजा हर्षदेवनो दरबार शोभावता हता। राजा विक्रमादित्य पवारयी राजा भोज पवारना समयकाळना साहित्य

सर्जनमां चारणोनो उल्लेख हो. कालिदासना नाटकोमां प्रवंध साहित्यमां 'चारण'ने याद कर्यो हो.

श्री मेघाणीजी सौराष्ट्र-कच्छमांथी चारणजातिना स्थळांतर विशे लखे हो के "कच्छमांथी तेमज सौराष्ट्रमांथी धणी शाखाना चारणो ईसुना सातमा सैकाथी वारमा सौका सुधीमां रजपूताना तरफ अने केटलाक सिध तरफ गयानुं पण जणाय हो. सिधमां जनारनो धणो भाग तुंबेल शाखाना चारणोनो ज हतो. जोके तेमना सिवाय बीजी शाखा पण गयेली. तुंबेलोप त्यां जई सिधनी भाषा, रीतरिवाज तेमज रहेणी-करणी स्वीकार्या अने जाडेजाथो साथे सिधमांथी कच्छमां अने काठियावाडमां आव्यां तो पण ते रीतरिवाज वगेरेने छोडयां नहि.

रजपूतानामां जे चारणो गया तेओनी साथे उत्तर हिंदुस्तानमा जूना काळथी रही गयेलां चारणोनुं संस्कृति-मिलन थयुं. रीतरिवाज भाषा वगेरे वदलाई गयां अने तेओ मारवाड देशना नामधी मारु कहेवाया. ईसुना चौदमां सैकानी शस्त्रातथी रजपूतानाना प मारु चारणोमांथी कोई कोई काठियावाड, गुजरात, कच्छ, थरपारकरमां वसवा आववालाग्या. प आवनाराथोनी भाषा वदलाई परंतु तेमणे त्यांना रीतरिवाज न छोडया."

(चारण अने चारणी साहित्य)

चारणोनी आर्यावर्तनी यात्रा विशे मेजर श्री रघुवीरसिंहजी 'बीरसतसई' ग्रंथमां कवि-परिचयमां जणावे हो के "ईसाकी आठवीं शताब्दी से इसका शुखलावद्ध इतिहास मिलता है". सम्राट हर्ष के सुसंगठित शासन के अस्त-व्यस्त हो जाने पर वह साम्राज्य कई छोटी सलतनोमें बँट गया। भिन्न भिन्न रोपें के राजपुतों के उत्कर्ष का यह युग है। इन्ही राजपूतोंके राजनीतिक जीवनसे इस चारण जातिका जीवन भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इस आठवीं शताब्दी में यह जाति

कल्नोज से लेकर अरब समुद्र-तट तक वसी हुई थी। आठवीं शती में सिन्ध में चारण जातिकी साउधा शाखा में माशा के पुत्र मामड (ममट) के घर महाशक्ति आवड देवी का जन्म हुआ। इसी समय एक प्रसिद्ध निम्नलिखित घटना हुई जिसने विभिन्न भागोंमें विखरे हुए चारणों को एक स्थान पर संगठित रूप में सम्मिलित किया।”

६.८ सोराठ चारणरो पियर :-

“तैलंग देशनो वसवाट मूक्या पछी चारणोप सर्वप्रथम सौराष्ट्र देशने पोतानी निवासभूमि बनाव्यानो उल्लेख मले छे, अने तेथीज राजपूतानामां आजेय काठियावाडने “चारणरो पीहर” नामथी पूज्यभावे याद करवामां आवे छे. विक्रमनी आठमी सदीमां चारण जातिमां प्रधान आराध्य देवी आवड (उच्चड) नो जन्म थयो. ए देविप पोतानुं निवास्थान राजपूताना अने सिधनी सीमापर बनाव्युं हतुं, तेथी सौराष्ट्र तेमज तेनी आसपासना प्रदेशमां बीखरायेली चारण जातिए ए महाशक्तिना प्रभावर्थी प्रभावित बनी राजपूताना प्रदेशना पश्चिमी भागमां पोतानो वसवाट कर्या अने त्यांथी पछी आ जाति गुजरात, काठियावाड अने कच्छमां आवी.”

—श्री खेतसिंहजी नारायणजी मिसण.

“तैलंग देश छोडी तेझो सौराष्ट्रमां आवी वस्या आजे पण मारवाडना चारणो सौराष्ट्रने पोतानी मूळभूमि गणे छे अने सौराष्ट्र चारणोनुं पियर मनाय छे.”

—सौराष्ट्रनी पछात केमो भाग-१

श्रीमद्भागवतनां दसमा स्कंधना छह्हा अध्यायमां जणाव्या मुजव श्री कृष्णे शाल्व अने दन्तवक्ने मार्या पछी द्वारकामां निवासस्थान करे छे थे समये श्री कृष्ण पासे देवताओ, महादेवो,

अप्सरा, नाग, सिद्ध, चारण, ऋषि, पितर, विद्याधर, किन्नर
आव्यां हता। गन्धर्वाप्सरसो नागः सिद्ध चारण गुह्यकाः ।
ऋषयः पितरश्चैव सविद्याधर किन्नरा ॥ ३ ॥

श्री कृष्णना महाप्रस्थानना समये चारणो उपस्थित रह्यां
हता. तेनो पण उल्लेख श्रीमद् भागवतमां जोवा मले छे. आ
इलोको उपरथी अटलुं तो स्पष्ट थाय छे के श्री कृष्णना समय
दरम्यान चारणो सौराष्ट्र साथे जोडायेलां हता.

कविराजा वारहठ श्री कृष्णसिहजी 'चारणकुल प्रकाश' मां
जणावे छे के "पूर्वकाल में चारण सदेव स्वतंत्र और स्वेच्छाचारी
रहे थे परंतु गुजरात देश के स्वामी अनहिलयुर पाढून के राजा
सिद्धराज जयदेवसिह सोलंकीने महादान्य नामक चारणको
आनन्द (काठियावाड) देशका राज्य दान किया, तभी से चारणोंकी
स्थिति काठियावाड में हुई ।"

सौराष्ट्रमां उतरेला शकलोको क्षत्रप तरीके ओढ़खाया छे.
सौराष्ट्रनो पहेलो छत्रप राजा भूमक बन्यो. भूमकनो पुत्र नाहपान
थयो. नाहपाने ई. स. ११९ थी ई. स. १३० सुधी राज्य चलाव्युं.
नाहपान गुजरात सौराष्ट्र अने महाराष्ट्रनो महाराजा हतो तेण
महाक्षत्रप अने राजानां विरूद्धो धारण करेलां. नाशिक पासेना
पाहुलेना अने पुना पासेना जुन्नर अने कालीमांथी मळी आवेलां
शिलालेखोमां जणाव्युं छे के "तेनुं राज्य महाराष्ट्रथी माळवा
सुधी विस्तरेलुं हतुं. पीडीताकावाडा, गोवर्धन, सुवण्णमुख,
सोपारगा, रामतीर्थ अने नामगोला गामडामां सहस्रना मूलयनी
मिलकतो वत्रीस नाधीगेरा चारणो तथा परिषदोने आपी हती."

(सौराष्ट्रनो इतिहास - श. ह. देशाई)

आ प्रमाणथी अनुमान करी शकाय छे के नाहपान |राजाण|
चारणोने सौराष्ट्रना प्रदेशनो कोईक भाग भूमिदान तरीके
आप्यो होय अथवा प पण संभव छे के नाहपान राजाना जमाई
प्रिय उषवदाते चारणोने आमंत्रण आपी सौ. ना स्थायी निवासी
बनाव्यां होय. पटलु तो ऐतिहासिक सत्य छे के ईरानमांथी
आवेला क्षत्रप लोकेनी राजगादी सौ. मां हृती अने तेओ
ब्राह्मणो अने चारणोना प्रसंशक अने चाहको हता.

डो. उदयनारायण तिवारीना वीरकाव्य नामना ग्रंथमां
जणाव्या मुजब -

“कुलकुल मण्डन नामक ग्रन्थमें ब्रजलाल कविने चारणोंका
स्थान सोरठ या सौ. बतलाया है।

जोधपुरके कविराजा मुरारिदान अपनी पुस्तक में चारणोंकी
चर्चा करते हुये लिखते हैं “प्राचीन कालमें चारणजाति भारतवर्षके
प्रायः सभी प्रान्तों में निवास करती थी। मध्यकाल के कुछ
पहेलेसे अब तक वह अधिकतर राजपूताना, मालवा, गुजरात,
काठियावाड और कच्छ में निवास करती आ रही है।
चारणोका आदि पुरुष ‘जक्त’ बतलाया जाता है। ‘जक्त’
के बंशज आदि चारण कहेलाता हैं। जक्त के बार
पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रोंके नाम क्रमशः, नदृ, नरह, चोरर,
और तुम्बेत तथा पुत्री का नाम गोरी था। गोरी बाद में देवी
रूप में प्रख्यात हुई। गोरी और चोररने एक बार अपनी कलासे
गिरनार के राजाको प्रसन्न किया। ईसका परिणाम स्वरूप
राजाने चारणोंको समाज में उच्चस्थान प्रदान किया。” (वीरकाव्य)

सौ.नो इतिहासमां जणाव्या मुजब “सौ.ना जूना बतनीओमां
मुख्यत्वे सोमपुरा, कडोलीया, गिरनारा, गुगळी, राजगोर अने
अबोटी ब्राह्मणो, नागरो, जेठवा, वाला, गोहिलो (मांगरोलना)

अने चावडा राजपूतो, आहिर, सोरठीया रवारी, चारण, भरवाड, मेर, तळपदा तथा वलंकीया केळी, कणवी, परज्ञीया सोनी, लुतार, लुहार, वांशा, वाळंद, मुख्य गणाय।”

(सौ. नो इतिहास -श. ह. देशाई)

उपरोक्त प्रमाणोधी प्रतिपादित थाय छे के तेलंगमांधी चारणो क्रमे क्रमे सौ. मां स्थायी थया हता. सौ. मांधी तेओ कच्छ, सिंध, राजस्थान गयानी ऐतिहासिक घटनाने सत्य घटना तरीके श्री पिंगलशीभाई पायक पूरेपूरूं अनुमोदन आये छे. श्री झवेरचांद मेधाणी सौ. मां स्थायी थवानुं कारण आपतां लखे छे के “सोरठ तो अनेक परिभ्रमणशील कुलो, वंशो अने पशुपाल जातिओनी मिलनभोम कहेवाय” समस्त राजस्थान, सिंध, कच्छ, सौ. पर पथराई गयेली आ महानजातिनुं परिभ्रमण-पथनुं प्रथम विश्राम सौ. हतुं ते सर्वमान्य हकीकत छे.

६.९ समस्त आर्यावर्तना सिंधमां पक्षत्रित थता चारणकुलो:-

ईसुनी आठमी सदीमां शासक हमीर सुमरो विधर्मी बनी प्रजापर अत्याचार गुजारतो हतो. आ अन्यायी, अधर्मी शासक हमीर सुमरानो महाशक्ति महामाया आवडे तमाम आर्यावर्तना चारणकुलोने पक्षत्रित करी सशस्त्र विरोध करी नाश कयो. तेनुं राज्य पंजाबना उमदा राजकुल समा राजपूतोने प्रदान कयुं. आ विशे मेजर श्री रघुविरसिंहजी ‘बीरसतसई’मां कवि-परिचयमां जणावे छे के “समस्त चारण जाति अपनी आराध्य कुलदेवियोंके संकटापन्न देखकर भारत से सिमिटकर सोराष्ट्र सिंध में पक्षत्रित हो गई। सुमरोंका साप्राज्य नष्ट कर आवड देवी समणा के ध्रत्रिय शासकोको अपने साथ ले गई तथा सिंध का राज्य प्रदान किया। आवड देवीका तेमझा को स्थायी निवास बनाने पर राजपूताना चारणो का संचरण क्षेत्र कर गया।”

कच्छमांथी तेमज सौराष्ट्रमांथी घणी शाखाना चारणोप ईसुना सातमा सौकाथी वारमा सौका सुधीमां राजपूताना, सिंध तरफ स्थलांतर कयुँ. अज प्रमाणे ईसुना वारमा सैकाथी चौदमां सैकामां सिंध तरफथी तेमज राजपूताना तरफथी अगाड मगेलां चारणोमांथी कोई कोई शाखाओ पुनः वसवाट माटे काठियावाड, गुजरात, कच्छ थरपारकरमां आवदा लाग्या.

६.१० तुंबेल शाखाना अने मावल सावाणीना वंशज चारणोनुः कच्छमांथी सौराष्ट्रमां स्थलांतरः-

कच्छमांथी ईसुना सातमा सौकाथी वारमा सौका सुधीमां सौ.मां चारणोनी घणी शाखाओ आवी हती ते लैतोनी वे शाखाओ तुंबेल शाखा अने अगरबच्चा चारणोथे कच्छमांथी सौ. करेल स्थलांतरनां प्रमाणे प्राप्त थया छे, ते उल्लेखनीय छे.

ज्यारे सौ. नो समग्र प्रदेश मुस्लिम चुलतानोनां खालसा प्रदेश थई चूक्यो हतोः ज्यारे मंदिरो तूटतां जतां हतां अने ते ते स्थले मस्जीदो बनती जती हती. हिंदुत्व भयमां सूकायुं हतुं त्यारे कच्छमांथी वि. स. १९७१ (ई. स. १९१९) मां “जाम रावळ थोडा सेवको अने तुंबेल चारणोनुं सैन्य लई सौ. मां आव्यां.” आ हकीकतने सौ.ना इतिहासो पुरेपुरुं अनुमोदन आपे छे. तुंबेल चारणोनी अभूतपूर्व वीरता बदल जाम रावळे तेथोने गाम-गरासो आपी सौ.ना नवानगर विस्तारनां बतनी बनाव्या. आजे पण जामनगर जिल्हाना वाराडी प्रदेशमां तुंबेल शाखानां चारणोनी विशेष प्रमाणमां वस्ती छे.

कच्छमांथी मावल सावाणीना वंशजोथे सौराष्ट्रमा करेल स्थलांतर अंगे एक दंतकथा प्रसिद्ध छे. आ दंतकथा अंगे विद्रानो पण मौन छे. केटलाक चारणोना बारोटो पण आ हकीकतने समर्थन आपे छे. थेटले आ दंतकथा सत्यनी नजीक होवानी संभावना रहे छे.

लाखो फुलाणी सौ. अने कच्छना इतिहासनुं थेक अमर पात्र हे. कच्छना महान पराक्रमी राजाना दरबारमां मावळ सावाणी नामे महान कवि अने राजाना दसेंदी हता. मावळ सावाणीने लाखा कुलाणीथे चोवीस गामोनो गरास आप्यो हता. मावळ कविराजने वार पुढो हता तेमां सौथी मोटा पुत्रनुं नाम काळा गोहेड हतुं तेने कच्छना राजपरिवारना पक सभ्य साथे कोईक नानी वातमां मतमेद पडयो. आधी तेणे कच्छमांथी स्थळांतर करवानो निर्णय कये. काळा गोहेड साथे तेना काका मेंद, तेनो नानो भाई थानो, अने बीजा केटलाक चारणो हिजरत करी कच्छ छेडी चाली नीकळ्यां. जतां जतां मावळ सावाणीने कहेता गया के “आपने कच्छ तो अमारे अवरकच्छ” आ चारणो सौ. मां आव्यां. मावळना भाई मेंदे जूनागढ पासे हाल जे मेंदपुर हे त्यां जईने माल सहीत वस्यो तेना नाम उपरथी मेंदपुर वस्यु. काळा गोहेडनो नानो भाई थानो द्वारका पासे जईने वस्यो तेना वंशजो प्रदेशमां गुरगट, सोहीनेनेस, कुरंगा, मढी, गोजीनेनेस अने मोगात वगेरे गामोमां वस्या हे. तेमज बाकीना घरडाना हुंगरोमां नेस नाखी रह्यां अने केटलाक पोरवंदर राज्यना दंसोदी बन्या. आम कच्छ छेडी बीजो कच्छ वसाववा निकळ्यां होवाथी तेओ अवरकच्छा कहेवाया अने काळे करीने तेओ अगरवच्छा कहेवाया. पवुं मानवामां आवे हे. आ स्थळांतरनो समयकाळ ई. स. १०० - १८२ नो मानवामां आवे हे.

६.११ वर्तमान समयमां चारणनो वसवाट :-

प्राचीन, अवाचीन युगमां चारणो पोतानी आगवी शक्तिथी तेमज विशिष्ट कायेथी आजीविका माटे ज्यां ज्यां वसवाट करता त्यां राज्यो तरफथी गरासनी जमीन जागीर मेलवता अने मोगवता. आ प्रथा भारत स्वतंत्र थयुं त्यां सुधी चालु हती.

सांप्रत समयमां युगनुं परिवर्तन थयुं, चारणो व्यवसाय के नोकरी माटे शहेरो, नगरो, परप्रांतो अने परदेशोमां जईने वस्यां छे. गुजरात अने राजस्थानमां सौथी विशेष प्रमाणमां चारणोनी वस्ती छे. सांप्रत समयमां चारणोना वसाहत प्रदेशनी प्राप्य यादी नीचे मुजब छे.

गुजरात राज्य :-

गुजरात राज्यना अढार जिल्लामां चारणोनी वस्ती छे.

राजस्थान राज्य :-

जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, अजमेर, चुरु, फालना, बोडमेर, जैतारण, कीसनगढ, अलवर, सीकर झुंझुं, भदोरा, नागौर, टेंक, पाली, हुंगरपुर, जीवालवाडा, सीथल, फैकाना, सिरोही आवु, मथानिया, मारवाड, रुपावास, कोटा, पोपावास, साधुका, उजला, चिकानेर, चोरे शहेरो अने तेनी आजुबाजुना प्रदेशमां चारणोनी वस्ती छे.

मध्यप्रदेश:- मदसौर जिल्लामां चारणोना १९ गांव छे. डोगरगढ, सतना, वीरला-याम नागदा, जरार, अलवोरी-गरवाडा निमाड प्रदेश (उजैन पासे) लेटणदेव, शावाशपुर, सेंधवा, जाबली, गोठाणीया, सिलेटीया, घंटी.

हरियाणा राज्य:- महेन्द्रगढ जिल्हो.

महाराष्ट्र राज्य : मुंबई, डोम्बवली, नागपुर, पन्नाखेड.

उत्तरप्रदेश राज्य : जटिलयारी, कोटद्वार, मखनगढी, मे.चवा (आमेठी), मैगांरा.

पंजाब राज्य : मुक्सर, कोटकपरा, अमोर, फाफेनलका.

बेस्ट बंगाल राज्य : कलकत्ता, हुगली, आसनसोल, झरिया. न्यु दिल्ही, मद्रास.

परदेशोमां निवास करता चारणो:-

यु. के.-लंडन, लेस्टर, केन्या (ईस्ट आफ्रिका) :- गोरोवी, कीसुमु, न्येरी, मेरु, दारेस्लाम, आरब अमीरातः-अबु धाबी, पाकिस्तान-करांची, नेपाल खटमंडु, यु. अस. अ०:-न्यु जर्सी.

६.१२ वस्ती नोंधः-

(१) ई. स. सने १८८१ मां काठियावाडनी आखा प्रांतनी वस्ती २३४३८१९९ पटली जणाई, दर २ चोरसे ११३ माणसो हता, आखा प्रांतनी वस्तीमां चारणोनी संख्या १५३७० नी हती.

-फरीयुसन (काठियावाड)

(२) सने १९३१ नी वडोदरा राज्यनी न्यातवार वस्तीमां चारणोनी कुल संख्या २६१० हती तेमां कुल पुरुष १३२२ अने खी १२८८, वडोदरा राज्यना प्रांत प्रमाणे नीचे मुजवनी चारणोनी वस्ती हती.

| प्रांत | पुरुष | खी |
|----------------|-------|------|
| वडोदरा राज्य | १३२२ | १२८८ |
| वडोदर शहेर | ११ | ३ |
| अमरेली प्रांत | २४७ | २१८ |
| वडोदरा प्रांत | २४९ | २६९ |
| महेसाणा प्रांत | ४२० | ४३३ |
| नवसारी प्रांत | ६ | ६ |
| ओखामंडळ प्रांत | ३८९ | ३५९ |

-वडोदरा राज्य मित्र भाग १ ले. वकील जीभाई कानजीभाई

(३) ई. स. १९५१ अंदाजेली वस्तीना आंकडा मुजव सौ.मां चारण जातिनी कुल वस्ती २७०१६ नी हती (सौ.नी पछातकेमो)

(४) कच्छमां चारणोनी घर संख्या ३५२९ छे. चारणोनी जनसंख्या लगभग आशरे १७,७०० नी छे. (ई. स. १९८१ कच्छ चारण परिवार)

६८६ विद्वानोनां उल्लेखनीय मंतव्यो

चारण जाति जो 'चारण वर्ण' के नामसे भी प्रसिद्ध हैं उसकी अति प्राचीन अवस्था और महानता की अनेक गाथायें हिन्दुओंके सर्वमान्य और प्रधान आर्य ग्रन्थ श्रीमद् भागवत, रामायण और महाभारत एवं अनेक पुराणोंमें तथा जैन धर्मके अनेक प्रधान ग्रन्थोंमें आदर के साथ वर्णन की हुई उन गाथायेंसे पता लगता हैं कि इतिहास के आदि काल में चारण देव ऋषि उत्तरीय भारतके सर्वोच्च में निवास करते थे और तप ही उनका प्रधान कर्म था। यह भी उल्लेख है कि जब जब आर्य नरेश आर्यधर्म के विरुद्ध आचरण करने लगते, प्रजा पीड़न होने लगता राज शासनकी शिथिलता से अनायोक्ता उपद्रव बढ़कर अराजकता का उद्रेक होता, तब तब चारण ऋषि हिमालय से उत्तरकर आर्यवर्त में आते थे। उनके आगमनका संवाद सुन करही नरेश उनके स्वामत के लिये राज्य की सीमा तक पहुंचते और उनकी आज्ञा सुननेके लिये आतुर रहते थे। चारण ऋषि नरेशोंको सावधान करके राजधर्मकी शिक्षा देकर प्रजा में शांति और रक्षाकी स्थापना वापिस ही अपने आश्रमोंका लौट जाते।” - ठा. ईश्वरदानजी आसिया

“चारणोनुं आगमन क्यारे अने केवी रीते थयुं, तथा तेबोमां वर्गों शा कारणे पढ़या तेमो इतिहास भले न मळतो होय परन्तु तेमना भव्य जीवननो इतिहास कदी भुलाय तेम नथी।” (-सौराष्ट्री पञ्चात कोमो भाग १)

“किन्तु आजे ब्रह्मांडमां चरनारो ने मानवने चारनारो चारण पोतानुं उत्तरदायित्व विसरवा मांडयो छे।”

-विदुषी बहेन श्री सविताबहेन नानजीभाई महेता.

“चारण जाति आठ प्रकारकी देवसृष्टि में गिनी जाती थी। देव और आर्य जाति के निवासस्थान सुदूर उत्तर से राजा

पृथ्यु के यज्ञ में आने पर चारण जाति को तेलंग देश दान में दिया गया और तबसे चारण जाति आर्योवर्त में आई। उसके बाद रामायण और महाभारत से सिद्ध है कि उस समय से ये यायावर जाति के नाम से प्रसिद्ध थी।

कन्नोज के प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल का गुरु राजशेखर यायावर नाम से प्रसिद्ध था। फिर ९ वीं सदी में चारण जातिमें महाशक्ति आवड का जन्म हुआ तब से समस्त चारण जाति पश्चिमी राजपुताना मां बस गई।”

-प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा. किशोरसिंहजी सौदा.

“नृवंशशाखनी हृषिके तेमना स्थलांतर माटे कही शकाय के चारणकुळो मध्य अशियाना पर्वतमालनी पृष्ठभूमिमांथी स्थलांतर करी हिमालयनी पर्वतमालामां आवी वस्या, ने उत्तर-पथमांथी प्रयाण करी तेओ दक्षिणपथवासी बन्या, ने छेवटे त्यांथी प्रस्थान करी तेओ आजे मात्र राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र अने कच्छमां मले छे. गुजरातमां उत्तर गुजरात अने मध्य गुजरातमां छे।”

-पुष्कर चांद्रवाकर.

सौ. = सौराष्ट्र.



[7] चारणनां आराध्यदेव

- ७.१ सनातन मानवधर्मे.
- ७.२ शक्ति उपासना.
- ७.३ शक्ति उपासना शा माटे ???
- ७.४ सूर्योपासना.
- ७.५ शिवोपासना.
- ७.६ विष्णु उपासना.
- ७.७ पकेपासना.
- ७.८ स्वामीनारायण संप्रदाय.
- ७.९ जैन धर्म.
- ७.१० अन्य संप्रदायनां उपासक.
- ७.११ जनसेवा थेज प्रभुसेवा.
- ७.१२ पक सांय प्रार्थना.

प्राचीन काळमां पश्चीमाना उत्तर भागमां रहेता आयोनी वस्तीमां बघारो थतां तेमांथी केटलीक प्रजा सिंधु नदीने काठि आवीने रही अने त्यांथी खेती, बेपार, उद्योग, साहित्य, राज्य, कुटुंब, धर्म बगोरेनो उत्तरोत्तर विकास कयों. सिंधु नदी किनारे स्थायी थयेला आयोने बीजादेशवान्डा सिंधुने बदले 'हिंदु' कहेता. प हिंदुओ जे धर्म पालतां तेने हिंदु धर्म कहेवामां आव्यो.

धर्मानी व्याख्या अवर्णनीय छे. धर्म शब्द नानकडो छे, पण तेनी सीमा विस्तृत छे. धर्मना खरूपनुं वर्णन करवुं अशक्य छे. धर्मानी संपूर्ण परिभाषा आपवा माटे चिद्रानोने शब्दो ओछा पढयां छे. श्री महाभारतना कर्णपर्वमां धर्मानी व्याख्या आपवामां आवी छे.

“धारणाधर्म इत्यादु धर्मा धारयति प्रजाः ॥”

अर्थात् जे धारण करे अथवा आधार आपे अथवा जे वधानुं अधिग्रान होय तेने धर्म कडे छे.

७.१ सनातन मानव धर्मः—

“प्राचीन कालधी मानव समाजमां समज्जन आवी त्यारथी जीवनमां सत्य पामवानी रीत प ज सनातन मानव धर्म मनायेल छे. भारतना समजु समाजे कोईपण धर्म के कोईपण मनुष्यनी मान्यताने तिरस्कारेल नथी. सहिष्णुतापूर्वक अन्य प्रणालीने पण सन्मानेल छे. दरेक व्यक्ति माटे, दरेक समूह माटे ‘स्वधर्मेनिधनंश्रेय’ निज धर्म हितावह मानेल छे, माटेज भारतीय संस्कृति अमर छे. जन्मधी मृत्यु सुधी माणस रहीने जीववानी कलाने आपणा समाजे विरदावेल छे. बधामां सारुं जावुं, सङ्घिमां सृष्टानुं दर्शन करवुं, ईश्वरे निर्माण करेला मार्गे चालवुं प नीति धर्म हिन्दु तत्त्वज्ञानना मूळमां छे. आ कारणे ज जगतमां व्यास प्रभुनां प्रतीको रूपे अनेक देव-देवीओनी सूतिओ मंदिरो थया

हिन्दु कहेवाता लोको ते हरप्पन, द्राविड अने आयोनी मिथ्र प्रजा छे अनायेनि संस्कृत करी आर्य बनाव्या, प आर्य-धर्म सौनो सनातन मानवधर्म-बैदक धर्म हतो. आ धर्म अटले मानव जीवन जीववानी रीत. आज पर्यंत विश्वना दरेक समाजना ज्ञानी माणसो माटे आ धर्म रख्नो छे. मानवे माणसाईथी रही पूर्ण मानवता प्राप्त करी, परम आत्मपद पामवुं प सनातन धर्म छे.”

—श्री मणीभाई वोरा. (उर्मि नवरचना)

चारणप्रथमधी ज सनातन मानव धर्म जीवनमां अपनाव्यो हतो, विश्वकल्याणनी भावनाथी प्रेराईने चारणे प्रवासो खेडता. चारणकुलनो धर्म सर्वजनहितकारी हतो. तप, त्याग, व्रत, शील, भक्ति धर्मा जेवा तत्त्वो जीवनमां वणाएलां हतां. प तत्त्वो पमनां

जीवनमां मुख्य अंग बनी गपलां। तेनी वाणीमां संजीवनी तत्व हनु, सनातनता हती, ये जेने स्पर्श करती तेने अमरत्व आपती।

मेजर साहेब श्री रघुविरसिंहजी बीरसतसईमां चारणना धर्म विशे लखे छे के “प्राचीन काल से ही चारण जाति शक्तिकी उपासना करनेवाली रही है। महाभारतका पृणोक्तिखित श्लोक “तृष्णु पुष्टिष्ठृतदीर्घि चन्द्रादित्यविवर्धिनी भूतिभूर्तिमतां सख्ये वीक्ष्यसे सिद्ध चारणैः” स्पष्ट देवी की शक्ति का वर्णन करता है।

शाकत सम्प्रदाय का प्रधानतासे स्वीकार करते हुए ये संकीर्णता व विकृति की अतिसीमासे वचे रहे। धर्म के विषय में हृदय की उदारता व विशालता इनमें थी। जिस देश व जिस काल में जिस प्रकार के युग धर्म की प्रतिष्ठा व प्रचार था उसके अनुशीलन, संरक्षण व संवर्धन का इन्होंने प्रयत्न किया। “धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः” ही इनके जीवनका सिद्धान्त था। धर्म के संरक्षण में अपने प्राणोंका बलिदान कर देना इनका अभीष्ट था। विधर्मयि मलेच्छा ने जब जब हमारे वेद विहित वर्णश्रम धर्म पर आधात करनेका दुस्साहस किया तब तब इन्होंने अपनी खुली छाती से वे प्रहार झीले। इतिहास साक्षी हैं कि इन्होंने लोह-लेखनी से यवन हृदय पर भारतीय गौरव-गाथा को लिखा था। युग-क्रान्ति से नाना प्रकारके धर्म-सम्प्रदायों का मूलान्मूलन होता रहा। इनके जातीय जीवन पर शैष, शाकत, जैन, यायावर तथा वैष्णव धर्म के प्रभाव पड़ते रहे। किनने ही धर्मों के अभ्युत्थान का श्रेय इनको मिला है। शक्ति-सेवी होकर भी कौल मत के भैरवी चक्र व पंचमकार पूजा को इन्होंने स्वीकार न किया। चारणोंने नाथ मत को भी अपनाया। चारणों में नाथ मत के बारह योगी हुए जिन्हे कापालिक संज्ञा मिली। मेवाड़ के कुलदेव श्री पक्कालिंगनाथ द्वारीत नामक कापालिक के आराध्य थे।

महात्मा चर्णटनाथ, आनन्दनाथ, आदि नाथोंने शाकत मत की शाखा कावालिक सम्प्रदाय में दीक्षा ली हैं। ऐसा अनुमान होता हैं। जैन मत के दीक्षागुरु श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आचार्य बज्रसेनका उल्लेख उपर हो चूका हैं, वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षित कई चारण-सभ्योंका वर्णन 'भक्तमाल'में मिलता है। अतः मूलत शाकत धर्मका प्रवर्तन करनेवाली इस जातीने देश-काल के धर्मसे प्रभावित होते हुए भी अपनी मूल धार्मिक निष्ठा-शक्ति उपासना का क्रम न छोड़ा। इसी अटल धर्मनिष्ठा ने इस जातिको संजीवनी शक्ति दी हैं। यह जाति अब तक 'देवीपुत्र' के नामसे सम्बोधित होती हैं इस विशिष्ट शास्त्रीय धर्म के निर्वाह के साथ-साथ इन्होंने सामान्य मानवधर्म को भी प्रयोगात्मक रूपसे जीवन में प्रतिष्ठित किया। मानवीय से उन्हें निचित, पहुँचित तथा परिवर्धित करनेका श्रेय इस जाति को है। इनका जीवन नैतिकता का मूर्त रूप था, सदाचार के आदर्श की संस्थापना इनके जीवन की साधना थी, जिससे लोक मंगल विधान निर्विघ्न रूपमें सम्पादित होता रहता था।"

७-२ शक्ति उपासना :-

प्राचीन संस्कृतिओनो आपणे अभ्यास करीद्युं ते दुनिया-भरमां मनुष्यने द्विज बनावती के बीजधर्मनी दीक्षा आपती गृह प्रणालीओ जोवा मले छे, एमां सौर्यपंथ (सोलर कल्ट) अने चांद्रपंथ (ल्युनर कल्ट) एवा बे भाग पड़ी जाय छे, सौर्यपंथमां स्त्रीओने स्थान नथी पण चांद्रपंथमां स्त्रीओने प्रमुखस्थान छे। आ बन्ने पंथोनो ज्यां ज्यां संसर्ग थयो छे, त्यां त्यां एक नवीज धार्मिक मान्यता उभी थई छे। कालिडयामां चन्द्रनी देवी तरीके पूजा अस्तित्वमां हती। चांद्रपंथ स्त्री शक्तिनो पूजक छे। विश्वना विरचाकोप पुरुष शक्ति करतां स्त्री शक्तिने वधु महत्वनी मानी छे। खास करीने देवी भागवतना रचनार वेद व्यासथी

मांडीने श्री अर्द्धविद् घोष जेवा आर्द्धशकोऽ तो जगतनुं नियंत्रण करनार शक्तिनुं स्त्री स्वरूपे कल्पीने तेनुं जगदंवा तरीके कीर्तन करेलुं छे.

चारणे तो प्राचीनकाळधी ज सदा शक्ति ने ज उपासी छे. महाभारतना भीष्मपर्वे २६ मो अध्यायनो २६ मां इलोकमां श्री कृष्ण अर्जुनने कहे छे “हे अर्जुन ! जो तारे विजय मेलववो होय तो चारणो जेनी उपासना करे छे ते शक्तिनी उपासना कर.” वायु पुराणमां पण चारणोनी उपासना शाकत-शैव जणावी छे.

ईश्वरनी साफक अने एज रीते व्यापी रहेली महामाया शक्तिप एना विराट स्वरूपमांधी चारणनी उपासनामां सगुण स्वरूपे ज आराधना करी छे.

ज्योते प्रलंबा, जगदंवा, आद अंबा ईश्वरी,
वदन जलंबा चंद्रवंबा, खासतंबा, तुं खरी;
होते हथाकं वीरहाकं, बजे डाकं, बमणी,
जगमाय परचो। दीठ जाहेर, रास आवड रमणी,
मा, रास आवड रमणी.

अणवटु पायें घणण घूघर, नाक नथां नरमाळी,
सिंदुर तल्लक भाल सोहे, छीड माळा सांकली,
हेम काजल, कान हुलर, धूप अभर धमधमे;
रवराय मा ! तुं भेर राखे, साद आपे आ समे.

सगुण रंगनी पीछी हेठी मूँकी चारणोने मन समस्त सुष्ठि शक्तिमय भासे छे. निराकार विराट पायानी प्रकृति प्रतिमाने निहाले छे.

निशा शामली कामली ओढ काली.
नमो कालरात्री नमामी कराली.

तुं हीं तारले ज्योति शीणी झनुके,
 फरे आभका पंथ फेरा न चूके;
 अशाहे सुनीलं वर अंग ओढ़ी,
 तुं ही जाणीप पाळीआं सेज पोढ़ी:
 हिमते अनोधा हिमाला हलावे,
 लता पौनमां शीतलँ गीत गावे,
 घसंते तुं ही मात हेते हुलासी,
 लता झाडमां प्रलेफूले प्रकाशी:
 तुं ही बादलां प्छाड माथे पछाड़े,
 सरिता बनी धूधवे धोर त्राड़े;
 धके हालता लोढ लेता हिलोला.
 करंती जला बोल अंगे किलोला.

चारणोप काव्योपासनामां पण शक्तिनुं रम्य भीषण अने
 विक्रमशील ओजस-रूप उद्बोध्युं छे. आ शक्ति वर्णनोमां अंतमां
 ते चारण शीवशक्तिनुं ज दर्शन करतां होय छे.

शवरूप शक्तीय, सतीय, जतीय ताम धरतीय रूप तवां,
 तेऽय रीत शक्तीय, अककल गतिय, भीड कमीतीय टाळ भवां,
 कहे राम किरतीय आप उगतीय, शख सपन्तिय तेणे समे,
 बरदाढ़ीय बेचर बुढ़ीय बालीय रंगरढालीय रास रमे.

७.३ शक्ति उपासना शा माटे ???

पुरुष शक्ति ज्यारे पराजय पामे छे, पनां बळना दीवडा
 ज्यारे ओलवाई जाय छे. असुरो विजयघेला बनी त्रण लोकने
 त्राहि त्राहि पोकरावे छे, त्यारे स्त्री शक्ति, मातृशक्ति, पोताना
 महाबलथी धर्मनुं अने धरतीनुं रक्षण करे छे. असुरो, दैत्यो
 सामे लडवानुं कर्तव्य सामे आवी उभुं रहे छे. त्यारे शक्ति
 क्षणभरनी पण ढील कर्या सिवाय महादैत्यो सामे लडाईमां
 उतरे पनो नाश करी धर्मनी स्थापना करे छे.

बधां कामोमां देवोनी पूजा थाय छे पण ज्यारे भयंकर धींगाणां खेलवां होय त्यारे प्रथम शक्तिनी पूजा थाय छे. भगवान रामे श्रीलंका पर चडाई करती बखते योगमायाने आराधी छे. भगवान श्री कृष्णे तो अनेक युद्धो बखते मा नी पूजा करी छे. कोई शक्तिय पुत्र केसरियां करी ज्यारे स्वर्वर्म माटे शत्रुओ सामे जाय छे, त्यारे जय भवानी आराधे छे. आवी ज महान शक्ति योगमाया ते ज भजवा योग्य, ध्यान करवा योग्य अने चितन करवा योग्य छे.” -भक्तकवि श्री दुलाभाई काग.

महात्मा ईसरदानजीप पण शक्तिना सामर्थ्यने स्वीकारीने तेनो महिमा ‘हरिरस’मां गायो छे.

“अमर मेर आधार मेर, बसुधा आधारं;
घरा शेष आधार शेष कोरम साधारं,
कोरम जल आधार, नीर सु अनील आधारे;
अनिल शक्ति आधार, शक्ति करतार सधारे.”

सुषिमां शक्ति सवैपरी, सवैव्यापी, अद्भुत सामर्थ्य धरावती अभीष्ट फळदाता छे. खूद शंकराचार्य, ईसरा परमेश्वरा, वस्तुपाळ-तेजपाळ जेवा ईश्वरना गण जेवा महात्माओने पण शक्तिनी उपासना करवी पडी छे. चारणोअे पण प ज शक्तिना आराधनथी सांसारिक, आध्यात्मिक अनेक प्रकारना सुख भोगवीने छेवटे परम मंगल गतिने पाम्या छे. आजे पण चारणोनी मुख्य उपासना शक्तिमूलक रही छे. कविराजा श्री मुरारिदानजी साहेब “संक्षिप्त चारण ख्याति”मां चारणोनी शक्ति उपासनानी चर्चा करतां लखे छे के “हम हिंदु हैं।” किसी खास संप्रदाय में नहीं हैं। हम खास हिंदु देवता माताजी को पूजते हैं। उस माताको ही देवी कहते हैं। उस देवी को पूजने का सबब यह है कि हजारों वर्ष पहिले हमारे बडेरे चारण मुनि हिमालय पहाड़ पर तपस्या यानी परमेश्वरकी इचादत करते थे; जिसका प्रमाण

महाभारत के भीष्म पर्व में बाईसवें अध्याय में युद्ध के प्रारंभ में श्री कृष्ण की आङ्गा से विजय के लिये अर्जुनने देवी की स्तुति की है जिसमें यह इलोक हैं :

तृष्णिः पुण्टिधृतिर्नीप्तिश्चन्द्रादित्यविवद्धिनी ।

भूति भूति मता संख्ये वीक्ष्यसे सिद्ध चारणैः ॥१६॥

अर्थात् हे देवी तृ तुष्णि अर्थात् संतोष रूप, पुण्टि अर्थात् वृद्धि रूप धृति अर्थात् धीरज रूप, दीप्ति अर्थात् ज्योतिरूप, चंद्रमां और सूर्यको बढ़ानेवाली और विभूतिवालोंकी विभूतिरूप एसी सख्ये अर्थात् समाधि में सिद्ध और चारणोंसे देखी जाती हैं ॥ १६ ॥ यहां टीकाकार नीलकंठ ने संख्ये शब्दका योगार्थ यह किया है : “संख्ये, सम्यक् ख्यानं प्रकाशनं यत्र तस्मिन्नात्मानात्मविवेकरूपे समाधौ ॥” अर्थात् संख्ये अर्थात् भले प्रकार प्रकाशना जिसमें है उस आत्म अनात्म के विवेक रूप समाधि में ॥

उन हमारे बड़ेरे चारणोंकी परंपरा से यानी सिल सिले से हजारों बर्षों से आज तक तमाम चारण जाति माता को पूजती आई है, और चारण आपस में प्रणाम यानी सलाम करै, या दूसरी जातिवाले से सलाम करै तो “जैमाताजीकी” कह कर करते हैं ।

और हमारे बड़ेरे उन चारणोंके उद्धल में माताजी को पूजना शुरू करने का सबब यह था कि दुनिया को पैदा करनेवाला एक है, और वह निरंजन निराकार है, इसलिये कहे हिंदु उसको पिता मानते हैं, वे उसके नाम करतार, जगदीश्वर, परमेश्वर वर्गोंरा कहते हैं । पुत्र पर पितासे अधिक माताका प्रेम होता है और पितासे अधिक माता की परवरिश होती है । सो ही कहां है हिंदु धर्मकी किताबों में : “पितुः शतगुणं माता” अर्थात् माता पिता से सो दरजे ज्यादे है । इस सबब से हमारे

वडेरे चारणोने शुरुसे निरंजन निराकार परमेश्वरका माता रूप से करना शरू किया था ।”

७.४ सूर्योपासना :-

प्राचीनयुग, मध्ययुग अने अर्द्धचीनयुगमां सूर्य ने भारतनी प्रजाए देव तरीके पूज्या छे. सौराष्ट्र, गुजरातमां पक काले विशेष सूर्यपूजानो प्रभाव हत्ते.

सौराष्ट्रमां बाजे पण सूर्य मंदिरो घणां स्थळे विद्यमान छे. आ मंदिरो सूर्य उपासनानी गबाही पूरे छे.

श्री झवेरचांद मेघाणीजी चारणोनी सूर्य उपासना अंगे लखे छे के “चारणो वीजो उपास्य देवता सूर्य छे. प्रभातना पति पर चारण एक नारीनी जेम वारी जईने ओवारणां ले छे. ओवारणां लेवां प चारणोनी पोताना दाता प्रत्ये ने देव प्रत्ये लाडभरी सन्मान रीति छे.”

चारणो प्रभातना पेला प्होरे सूर्यवंदना करतां कहे छे के :

भलैं उगा भाण भाण तुंहारां भामणा;

मरण जीयण लग माण, राखो कश्यपराउत !

[हे भानु ! तमे भले उग्यां ! तमारा वारणां लउं लुं. हे कश्यपना पुत्र ! जीवनथी मृत्यु लगी मारां मान आवरु राखजो.]

सूर्य अने मन श्रेष्ठ देव छे. कारण के :

उगेवुं अचूक, उग्यानुं आळस नाहिं;

चळता न पडे चुंक, कमणे कश्यपराउत.

[तमारुं उगेवुं थे तो अचूक छे. उगवामां तमने आळस नथी. कदी पण ते क्रममां भूल पडती नथी.]

के देवल के डाकलां, के पूंजे पाखाण,

(पण) रात न भांगे राण, कमणे कश्यपराउत.

[कोई देवल पूजे, कोई डाकलां बगड़ीने बीजा
देवदेवीओने रीझवे, कोई पाषाणनी सूतिथो पूजे, पण तमाचा
बगर कोई देवथी रात थोड़ी भांगे छे ?]

चारण स्तुतिमां सूर्यने प्रार्थे छे शु ?

सामसामा भड आफळे, भांगे केतारा भ्रम्म,

तळ बेळा काश्यप तणां ! सूरज राखो शरम्म !

[सामसामा शूरवीरो लडी रहां होय, भल भला बीर
पुरुषोनी आबरु पण धूलमां मलती होय, तेवे युद्धने टाणे हे
सूरज ! हे काश्यपना (पुत्र) तमे अमारी ईज्जत राखजो मने
मरदनी रीते मरवानी सुवुद्धि देजो]

सूरज प्रत्यक्ष देव हैं, पूजे नर पाखाण,

इसर के उमया सूणा, पतां लोक अजाण.

[शंकर कहे छे के हे उमयाजी ! सांभळा, सूरज सरखा
प्रत्यक्ष देवने छोड़ीने पथ्थरने पूजनारां मनुष्यो तो अबान छे.]

पछी तो चारण सूर्यने निरंजन ज्योति स्वरूप परम तत्त्व
मानीने झळहळती ज्योति पाथरे छे.

“ प्रथी उजासं कोड पचाशं

आशावां पूरण मनआशं .

पूरण मन आशं, ज्योति प्रकाशं, चडण बहासं उजासं,
अद्यागर पासं, करण उजासं तडीअड वासं पड त्रासं;
गोरस रस त्रासं, दियण दासं, मखण छासं कण मेवा,
जे जे जगवंदन, काशपनंदन, दालद्रनकंदन रघ्य देवा । ”

[मननी आश पुरनारा, ज्योति प्रकाशनारा, उद्यगिरि पासे
उजास करनारा, अंधकारने हणनारा, सेवकना गोरस रस,
गाम गरास अने माखण-छाश देनारा, काश्यपना पुत्र रवि देवा !
जय हो तमारो !]

चारण कवि पृथ्वी पर सूर्य नुँ आगमन यतां पृथ्वी परना
परिवर्तननुँ वर्णन करता कहे छे के :

“गहके गोशाळा; छुटा गाळा पंखीआ माळा परहरिया,
देयल देवाळा, टळीआ ताळा, हुआ उजाळा तम हरिया;
वाया झलराळा, नाद बडाळा, साध सखाळा सध-सेवा,
जे जे जगवंदन, काश्यपनंदन, द्रालद्र-नकंदन रव्य देवा!”

[गोशाळाओ गहेकी रही छे, गायोना गाळा (बंधन) छूटयां
छे, पंखीओप माळा मूकया छे, देवलोनां ताळां उघडयां छे,
अंधकार हराया छे, झालरो वागे छे अने बुलंद नादवाळा
साधुओ सिद्धो सेवा करे छे.]

राजकवि श्री शंकरदानजीए सूर्यमाला स्तोत्रमां सूर्यवंदना
करता कहे छे के :

करन प्रभव वैभव प्रलय, अखिल हेतु अभिराम,
अज हरिहरके आतमा, नमो सूर्य सुखधाम.
जगतनयन जगदातमां जगतपति जगवंद,
नमो देव दुनिया विदित, आदित प्रभु अनिद्य.

सांप्रत समयना चारण कवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद
गढवी सूर्यवंदनामां सूर्यशक्तिनो महिमा वर्णवयो छे.

‘तमे रे सुरज ने असे कोडियुं,
कोडियामां केटली गुंजाश;
तमे रे उगीने अजवाळता,
पृथ्वी कोड पचाश.

चारणो प्राचीनकाळधी आज पर्यंत सूर्य उपासना करता
आव्यां छे. सूर्य वंदनानां अनेकविधि काव्यो चारणी साहित्यमां
उपलब्ध छे. तेनुं मुख्य कारण सूर्य प्रत्ये अनन्य भक्ति ज
मानवामां आवे छे.

७.१ शिवोपासना :-

भगवान शिवना अनेक रूप हे. अनन्त नाम हे. अने अनन्त चरित्र हे. भगवान शिवे समय समय पर अवतार धारण करीने शैवमतनी सर्वत्र स्थापना करी हे पुराणो, स्मृतिओ अने महाकव्योए शिवोपासनानेा महिमा गायेहे. हिंदु संस्कृति अगम निगम थी व्याप्त थयेली संस्कृति हे. भगवान शिव अने भगवान विष्णु अगम-निगमना आराध्य देवो हे. भारतमां ज्यां हिंदु जातिनो बसवाट हे, त्यां त्यां शिवपूजा अवश्य जोवा मले हे. चारणो आदि अनादि काळथी शिव उपासना करता आव्यां हे. वायु पुराण अने शिव पुराणमां चारणने शिवनी आराधना करता वर्णव्या हे.

कवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद गढबीण शिव स्तुतिमां चारणने सदाय शिव स्तुति करतां ओळखाव्यां हे. तेमज शिवने चारणना सर्वस्व तरीके स्वीकार्या हे.

“ नमो भगवान भवेश भुतेश, नमो अनिमेष अनाद अवेश,
नमो स्मशान निवासी सधीर, नमो धर गंग सदा हरपीर,
नमो दीन साधक मंत्र दिनेश, नमो महापाद् नपो महाकाय,
नमो महा हस्त, नमो महाकाय, नमो निरबल के बल महेश,
नमो हरदुख दयालु हमेश, गुण सिद्ध चारण ते नित गाय,
शिवाय शिवाय शिवाय शिवाय.
उमापति आप तणो इत्बार, करो कवि पिंगलने भवपार.
वियो कुण झाले अमाणिय वांय, शिवाय शिवाय शिवाय.”

भक्तकवि श्री हरदासजी मिसण भगवान शिवना अनन्य उपासक हता. पोतानुं महाकाव्य ‘भृंगी पुराण’ पहेलुं वहेलुं खुद भगवान शिवने संभळाववानी हठ लीधी हती. कहेवाय हे के भक्तनी भक्तिथी प्रसन्न थई भगवान शिव योगीरुपे अरण्यमां

मल्यां हता भक्तकविना स्वरेशी ॐ कहीनुं प महाकाव्य
सांभल्युं हतुं.

चारणोप शिवने परमेश्वर स्वरूपे ज आराध्या छे. तेनी एक
छंडमां प्रतीति थाय छे.

“भभके गणभूत भयंकर भूतल नाथ अघंखर ते नखते,
भल्के तल, बधाय भंखर, गाजत, जंगर, पाय गते,
डमरुय डडंकर, बाह जटंकर, शंकर ते कैलास सरे,
परमेश्वर मोद धरी, पशु पालण काम प्रजालण नाच करे,
जीये काम प्रजालण नाच करे.

चारण ज्ञातिना महात्माथो हरदम ॐ नमः शिवाय हर हर
महादेव हर नामना उच्चार हरता हरता परमकृपालु आशुतोष
भगवाननी उपासना द्वारा परमपदने पास्या छे.

७.६ विष्णु उपासना :-

प्राचीन समयथी भारत वर्षनी समस्त हिंदु प्रजा भगवान
विष्णुने माने छे, पूजे छे अने तेनुं आराधन किर्तन करे छे.
जेनां मूळ वेदकालमां छे. विष्णु पूजा आपणां देशनी सौथी बधु
व्यापक दृढ अने जीवित विधि छे. मतो अने संप्रदायो भिन्न
होवा छतां सृष्टिपालक तरीके विष्णु भगवानने सर्वमान्य स्वीकार
थयो छे. शेवा अने शाकतो पण हरि हरनी एकता विष्णुमां
निहाले छे. हिंदुस्तानमां उत्तरे बदरिनारायण, पुर्वमां जगन्नाथ,
दक्षिणे श्रीरंगम अने पश्चिमे द्वारकेश तेमज समग्र देश नाना
मोटां अनेक भागवतधर्मनां हरिमंदिरोथी व्याप्त छे. विष्णुपुजानी
आराधनामां चारणोने “विष्णुना स्तुति पाठके” तरीके पुराणोमां
ओळखाव्यां छे. विष्णुपुराणमां उल्लेख छे के :

“शांत आकारवालो, शेषनाग पर पोदेला, नाभिमांथी
कमळ उत्पन्न थयेलां देवोना स्वामी साराप जगतनां आधाररुप

आकाशनी माफक अलिप्त, मेघनी माफक इयाम वर्णवाला,
शुभ अंगोवाला, सर्वे संपतिना स्वामी, कमळ समान नेत्रोवाला
अने योगीओथी ध्यानद्वारा ज जाणी शकाय एवा संसारना
जन्म-मरणादि भयने टाळवावाला अने सर्वलेकोना एकमात्र
थ्री विष्णुनी आदीकालथी चारणो आराधना करता आव्यां छे.”

भगवान् विष्णुना परम भक्त चारणो ज्यारे विष्णुवंदना
करता होय छे त्यारे पना स्वरूपनी केवी कल्पना करे छे.
'शरीरे धर्या लाल पीतं सु वाघा, पचरंग टेढी धरी शीश पाघा;
वल्या ओड माथे खुला केश वांका, जोतां नारीउं वारणा लीध जाका;
कटांरा कडये भेट लीधी कर्शीने, सोले कलाथी तेज जबुं शशीने
भुजा चातुरं जोर आजानभारी. नमो शंख चक्रं गदा पद्मधारी;
तुं हि एक तुं, एक तुं हि, नहि दूसरो तुं हि साथ समोही;
तुं हीं अेक अनेक अद्वैत आपे, अखां बोम तुं पीड थापे उथापे
तवां चंद्रमां सूरमां तेज तारो. घरा उपरां मेघ तुं पक धारो;
रह्यो देवमां दैत्यमां तूं ज राजी, रह्यो जपमां तप्पमां तुं विराजी,
रह्यो जोगमां भोगमां, तुं ज राशी, रह्यो जीवमां शीवमां तूं प्रकाशी;
जुओ फुलमां बास छूटे फुवारां, रह्यो सर्वमां तूं ज सर्जनहारा,
जुवो बीज तुं जीव अनेक जाया. सर्वे कालना जीव तुं मां समाया.

ऋषिओ महामुनिओप दिव्य चक्षुथी जे वर्णन करेल छे,
तेनुं ज स्वरूप चारण कविने जीभे नीतर्णु छे.

कविराजा श्री कृष्णसिंहजी 'चारणकुल प्रकाश'मां चारणोनी
विष्णु उपासना विशे लखे छे के “आदि काल से चारणोंका
इष्ट विष्णुभगवानका हैं और सृष्टिसर्जन काल से विष्णुभगवान
की ही उपासना करते आये हैं। जिसके अनेक प्रमाण इसी
लेख में ऊपर आ चूके हैं और इनके वैष्णव होने के कई प्रमाण
अन्य ग्रंथो में भी मिलते हैं। उपासना तो बहुधा प्रमाणोंसे
विष्णुभगवानकी ही सिद्ध होती हैं।”

नाभा भक्तनी 'भक्तमाळ' मां पंद्र चारण भक्तोनी सूचि
आपवामां आवी छे.

: छुपय :

चौमुख चौरा चांड, जगत ईश्वर गुण जाणे,
करमानंद अरु अरु केल्ह, आलह अक्षर परमाने,
माध्यो मथुरा मध्ये साधु जीवानंद शिवा,
दूदा नारणदास नाम मांडण नत ग्रीवा,
चौराशी रुप चतुर बरनत वानी जुजवा,
चरण सरण चारण भगत हरि गायक एता हुवा.

[चारण भक्तोनी सूचि (१) चौमुलजी (२) चौडाजी (३)
(४) चांडजी (५) करमानंदजी (६) केलहजी (७) अलहजी (८) माध्याजी
(९) साधुजी (१०) जीवानंदजी (११) शिवाजी (१२) दूदाजी (१३)
नारणदासजी (१४) मांडणदासजी (१५) चौराशीजी (१६) जुजवा.]

राघवदासकृत 'भगतमाळ'मां चारण भक्तोनी सूचि नीचे
मुजब आपवामां आवी छे.

(१) क्रमानंद अरु (२) अलु (३) चोरा (४) चांड (५) ईश्वर
(६) केसो (७) डुदो (८) जीवण (९) नरो (१०) नराइन (११) माडण
(१२) केलह (१३) माध्यादास (१४) अचलदास चौमुख (१५)
अचलसी नाहरी (१६) मोहन.

७.७ पकोपासना :-

चारण जातिना महान आत्माओंवे निरंजन निराकार,
निर्विकार, निर्विकल्प, सच्चिदानंद स्वरूप परब्रह्मनी पण पको-
पासना करी छे.

ईसरा परमेश्वरा नामधी सुविख्यात थ्येलां महात्मा
ईसरदासजीवे 'हरिरस'मां परब्रह्मनी पकोपासन करी छे.

भ्रमाय विचारत रुद्र ब्रह्मम्, न पावत तेराय पार निगम्म,
 प्रमेशर ! तेराय पार पलोय, कुराण पुराण न जाणत केय.
 अधोक्षज ! अक्षर तू ज अवेव, दिनंकर चांद न जाणत देव,
 ब्रणे गुण तृ ज न जाणत तंत, अहीश शबद न जाणत अंत.
 अनंत पराक्रम तृंज अनंत, नहीं तुज आदि नहीं तुज अंत,
 नहीं तुव रूप नहीं तुव रेष, नहीं तुव वर्ष नहीं तुव वेष,
 नहीं तुज मात नहीं तुज बाप, आपेंज आपेंज उपचोय आप,
 मनेच्छाय बीज चलावण मूळ, ठवेचर अच्चर सूक्ष्म स्थूळ.

चारणोप हमेंशा प्रभु प्रार्थनामां विश्वनुं कल्याण ईच्छीयुं
 छे विश्वमां बनती अराजकता सामे ईश्वरने अंगुली निर्देश करी
 विश्वमां विश्वदंधुत्व, विश्वशांति अने सुराज्य स्थपाय ते माटे
 ईश्वरने अनुरोध कर्या छे.

छंद हरिगित

ओ ईश अंतरयामी अंतर स्थिर करो विकसित करो,
 निर्भय करो निर्मल करो उत्साही आनंदित करो,
 महाराज मंगलमय करो उज्जवल करो उदित करो,
 सुंदर करो संयुक्त वंधन मुक्त करि जाग्रित करो.

ईषां हरो अंतःकरण भरपूर निष्ठाधी भरो,
 विवेकमय वाणी करो ने हष्टि दृष्टानी करो,
 निस्वार्थी निचित करो परमारथी पूरन करो,
 संकल्प ने विकल्पनी घटमालनुं चूरन करो.

हे प्रकृत्तिना परम स्वामी छे अमारी प्रार्थना,
 पुष्प पणोधी विभुषित रे अमारी वसुंधरा,
 तारी कृपा वर्षा अहरनिशा अम परे वरस्या करो,
 सरिता सजळ धन धान्यधी भंडार धर धरमां भरो,

अम दुषित करिये नहीं कदापी विशुद्ध मंडल वायुने,
निर्दोष सौरभ नित ग्रहीने स्वस्थ करीप स्नायुने,
तारी कृपाना पात्र बनीअे अेज पिंगल आश छे,
तूं सांभले ज्यां जोड़ त्यां तूज वास छे विश्वास छे.

(श्री पिंगलशीमाई मेघाणंद गढवी)

चारणोनी पकोपासनामां परम कञ्चनी साधनानी उदात
भावनाना दर्शन थाय छे. परमतत्त्वनी समीप पहेंची गया होय,
परमतत्त्वनी साथे मैत्रीपूर्ण व्यवहार होय तेम जणाय छे.

चारणोनी उपरोक्त उपासनानुं अध्ययन करतां जणाय छे
के दरेक उपासनामां उडीने आंखे बळगे तेबुं एक सर्व सामान्य
तत्त्व दृष्टिगोचर थाय छे ते ए छे के दरेक उपासनाओमां मुख्य
नाम गौण बनी जाय छे. अने धीमे धीमे क्रमश प नाम परम
तत्त्वमां विलीन यई जाय छे अने दरेक उपासनाने अंते चारणोप
शुद्ध निरंजन निराकार परमेश्वरनुं स्वरूपनुं ज आराधन करेल
छे. चारणोनी उपासनाओमां आ विशिष्टता छे.

७.८ स्वामीनारायण संप्रदाय :-

रामानंद स्वामीथी चाल्या आयता 'उद्धव' संप्रदायनो
कायाकल्प करी श्री सहजानंद स्वामीअे 'स्वामीनारायण संप्रदाय'
प्रवर्ताव्यें. श्री सहजानंद स्वामीप पोताना जीवनकाल दरमियान
पांचसौ परमहंसो तथा पांच लाख कुदुम्बोने सत्संगी बनावी
समाजोदारनो अद्वितीय दाखलो बेसाडयो. एमनी आ धर्म-
क्रान्तिमां एमने सौथी विशेष सहायभूत एमनां अष्टकविथो हता.
आ अष्टकविथो नैकी ब्रह्मानंद, देवानंद अने पूर्णानंद चारण
कुलना हता. ब्रह्मानंद स्वामीनी सेवा स्वामीनारायण संप्रदायमां
बहुमूल्य छे. बडताल, जूनागढ अने मूलीना स्वामीनारायणना
मंदिरेनुं निर्माणकार्य तेओश्रीनी निश्रामां थयेल छे. ब्रह्मानंद

स्वामीप अढी हजार काव्यो, पदोना सर्जन द्वारा संप्रदायनो प्रचार अने प्रसार कर्यो छे. ब्रह्मानंद स्वामी काव्यगुरु तरीके स्थान पास्या हता, ब्रह्मानंद स्वामीप तेमनो आध्यात्मिक अने साहित्य वारसो चारणकुलना शिष्यो देवानंद स्वामी अने पूर्णानंद स्वामीने आप्यो हुतो.

श्री ब्रह्मानंदस्वामी, श्री देवानंदस्वामी श्री पूर्णानंदस्वामी, श्री राधामनोहरदास, श्री घनश्यामचरणदासजी, श्री रामकृष्णदासजी, देवलभगत, पार्षद्वर्ण कैसर भगत जेवी चारणकुलनी महाविभुतिप स्वामीनारायण संप्रदाय स्वीकार्यो होवाथी घण्ठां चारण कुटुंबोये स्वामीनारायण संप्रदाय स्वीकारीने प्रथम पंक्तिना अनुयायी बनी गया छे.

७.९. जैन धर्म :-

भारतवर्षमां जैन धर्म अस्तित्वमां आव्यो. जैनधर्मनो 'अहिंसा परमोधर्म'नो सिद्धांत चारणोने अत्यंत प्रिय लाग्यो. चारणो प्रथमथीज अहिंसाना उपासको हुता. थेथी केटलाय चारणो जैन धर्मनो अंगीकार करी प्रथम पंक्तिना अनुयायी बनी गया. ते विशे मेजर श्री रघुविरसिंहजी लखे छे के "अयोध्याके जनपद में प्रचलित जैन धर्म भी इस जाति के कुछ लोगोंने अपनाया। हमारे धर्मशास्त्र प्रथित यह जाति जैन ग्रंथो में भी गगनचारी तथा दिव्यरूपधारी गिनी गई हैं। प्रमाणिक इतिहासकी सामग्री से सम्पन्न ग्रन्थ 'प्रबन्ध चिन्तामणि' के रचयिता मेरुतुंगाचार्य ने लिखा है कि शुक्रावतार तीर्थ में इवेतांबर सम्प्रदाय में दीक्षित चारण कुलमें उत्पन्न आचार्य वज्रसेनने एक नामेय की स्थापना की। ईस घटना का काल विक्रम संवतका आरंभ हैं। इससे बात होता है कि विक्रम के आसपास इस जाति के कुछ लोगोंने अपने जनपदमें प्रथित जैन धर्म में दीक्षित होकर उसका

नेतृत्व भी किया। उस धर्म के एक सामान्य अनुयायी न रहकर आचार्यत्व पद पर प्रतिष्ठित हुए।” (वीरसतसई)

जैन शास्त्रोंमां चारण शब्दनो अर्थ “चारण गमनं विद्यते येषां ते चारणाः” थाय छे. जैन कल्पसूत्रमां जणाव्या प्रमाणे “जंघा चारण एक दिवसमां आखा भूमंडलनी प्रदक्षिणा फरी शके वेवी सिद्धिवाला छे. विद्या चारण अमोघ शक्ति धरादे छे सत्यनी उपासना करवाथी परम सिद्धि पामी शक्या छे.”

एक अनुश्रुति मुजब जैन धर्मनां छेलला तीर्थंकर महावीर स्वामीने उपदेश आपनारा सात चारण ऋषिओ हता महावीर स्वामीना पन्नवणाजी सूत्रमां चारणोंने तीर्थंकरनी कक्षामां स्थान आपेल छे.

राजकोट डाकेकार श्री महेरामणजी त्रीजाना समयमां रचयिल महान ग्रंथ 'प्रविण सागर' ना रचयिता सात कविओ वेकी एक जैन मुनि श्री जीवणविजयजी महाराज चारण ज्ञातिना हता. सांप्रत समयमां परम पूज्य मुनी श्री हरिदानजी महाराज चारण कुळनां छे. प्राचीन जैन साहित्य चारणोंना उल्लेखोाथी समर छे.

७.१० अन्य संप्रदायनां उपासको :-

* यायावर थाथ्रम धर्मना स्थापक :-

मेजर साहेब श्री रघुविरसिंहजीना जणाव्यां मुजब “महाभारत काल में इस जातिने यायावर नामक थाथ्रम धर्मकी स्थापना कर एक यायावरीय उपनिषद की रचना भी की। इस जाति के लोगों के गोत्र भी आर्य होने से इनका ऋषियों से सम्बन्ध सिद्ध होता है। आशिया, देवल, वार्हस्पत्य आदि गोत्र आर्य उद्गम की और संकेत करते हैं।... कुछ चारण अपने पूर्व-प्रतिष्ठित परम्परागत धर्मका निर्वाह करते रहे। कन्नोज के

ब्रतिहार शाशकों का राजकवि राजशेखर अपने गोत्र को
यायावरीय बताता है :-

* कौलधर्म :-

शाकत संप्रदायमां मुख्य ब्रण भेद छे, ऐथिल काश्मीर अने
महाराष्ट्र ए पैकी काश्मीरना कौल धर्मना संस्कार अभ्युत्थानमां
चारण जातिनो महान फाळो छे. काश्मीरी विद्वानोनी मान्यता
मुन्नव चारणोथे सौ प्रथम कौलधर्मनी दीक्षा पार्वती पासेथी
लीधी हती अने चारणों पासेथी काश्मीरना ब्राह्मणोप दीक्षा
अंगीकार करी कौल तरीके प्रख्यात थया. (कौल धर्मना ब्राह्मणो
तेना गुरु चारणोनी यादगीरी जालवी राखवा माटे तेमना नाम
पाढ़ल 'दान' लगाडे छे तेवी मान्यता छे.) कौल संप्रदायना
तन्त्र ग्रंथोमां चारण जातिना उल्लेखो होवानी शक्यता छे.
चारणोथे कौल धर्मनी दीक्षा लीधी हती ए सर्वमान्य हकीकत
छे. परंतु पटलुं तो चेक्कस छे के कौलधर्मना अनुयायी बन्यां
होवा छतां कौल धर्मना भेरवी चक तेमज पंचमकार पूजानो
चारणोथे अस्वीकार कर्या हतो. चारणोनी एक शाखा कोलु
तरीके विद्यमान छे. ते शाखाने प्राचीन कौल संप्रदाय साथे
संबंध हतो के केम ?? ते एक संशोधननो विषय छे.

* नाथ संप्रदाय :-

चारणोप नाथ संप्रदायनो पण स्वीकार कर्या हतो. नाथ
संप्रदायमां दीक्षित थयेलां बार योगीओने 'कापालिक' संहा
आपवामां आवी हती. महात्मा चपर्टनाथ, आलूनाथ वगेरे
नाथेंप पण कापालिक संप्रदायमां दीक्षा लीधी होवानी मान्यता
छे. मेवाडना कुलदेव श्री पक्किंगनाथ, हारीत नामना कापालिकना
आराध्यदेव हता.

* आर्यसमाज :-

कविराज श्री उमरदानजी लालस अने जामनगरना

श्री करशनभाई पालीया के जेओे जामनगर आर्य समाजना प्रमुख हता तेओप आर्य समाजना प्रचार अने प्रसारमां बहुमूल्य प्रदान आपेल छे. आ महानुभावोने कारणे चारण ज्ञातिना केटलाक कुटुंबो आर्य समाजना परिचयमां भावी आर्य समाजना प्रखर हिमायती बन्या छे.

* पीर पेगेम्बर :-

भीड पडे त्यारे चारणोप पीरनी पण उपासना करी छे. छत्रावाना कवि मेह लीलाप नथु पीरने प्रसन्न करी अश्वनुं दान मेलव्युं हतुं. थेज प्रमाणे जमराना जेठाभाई गृदायचे मामो प्रसन्न करी बलदनुं दान लीधुं हतुं. गायकवाड सरकारना कविराज श्री कहानदास महेझने अंग्रेजो प बेडीओ नाखी त्यारे तेमणे “दुल्ला महमद पीर दरयाई भीर कर बेडी भगो” नी आरजु करी अंग्रेजो जुथे तेम आपो आप बेडीओ तुटी हती. राजदे लांगावदराप कुराननी कलमो पढी भागरथीनी गंगा बहेती करी राजदेपीर तरीके स्थान मेलव्युं छे.

७.११ जनसेवा पज प्रभुसेवा :-

‘जन सेवा प ज प्रभु सेवा छे’ प मंत्रनो अंगीकार करी, ज्यां छूटे हाथे अभ्यागतोने, गरीबोने, अनाथोने, अननदानना सदावृतो आपतां, समाजनी अंधश्रद्धाओने, कुरुद्धिओने वहेमोने तिलांजली आपतां चारण खंसो आत्मरामबापु, संत भीम साहेब, केशव स्वामी, प्रेमदासजी गोदाहीया जेवा महान ज्योतिर्धरोने मन अननदान समो कोई चडीयातो धर्म नथी, भूख्यानी-गरीबोनी, अनाथोनी दुवा जेवी बीजी कोई दवा नथी. आ महान संतोप मानव धर्मने ज सर्व श्रेष्ठ धर्म मानी तेनी उपासना करी छे.

सांप्रत समयमां चारणोनी जुदी जुदी उपासना तो चालु ज छे. तेम छतां मुख्य उपासना तो शक्तिमूलक ज रही छे. आ

उपरांत केटलांक चारण युवानो आधुनिक आध्यात्मिक केन्द्रो
जेवां के रजनीश फाउन्डेशन, श्री हरे राम हरे क्रिष्ण मिशन,
श्री रामकृष्ण मिशन, श्री पांडुरंगशास्त्रीजी प्रेरीत 'खाध्याय',
श्री मुक्तानंद परमहंस आयोजीत ध्यानशिविर वर्गेरेमां जोडाईने
आध्यात्मिक क्षेत्रे उच्चाति करी रहां छे.

चारणनो धर्म अने तेनी उपासनानुं चितन करतां कच्छना
सुप्रसिद्ध संत मेकरण डाढानो दूहो चरितार्थ थतो होय पम
लागे छे.

सुं भायो तड हिकडो, पण तड लख्ख हजार;
जुकें जेआं लग्गोआ, से तरी थेअा पार,

अर्थात् में मान्युं हतुं के मानवीने आत्मकल्याण माटेनो
ओकज आरो (मार्ग) छे. पण पवुं नथी प माटे तो हजारो
रस्ता छे. अनुभवने अंते ओम लाग्युं के जेणे ज्यांथी पार करवानो
प्रयत्न कर्या छे. तेथो त्यांथी तरीने पार थया छे.

७-१२ पक सांय प्रार्थना :-

कच्छना कविश्री हमीरजीप ओक सांय प्रार्थनामां सर्वे देव
देवीओने घंटना करी छे. सर्वधर्मभावनानी प्रस्तुत प्रार्थनामां
प्रतीति थाय छे.

देवां दातारां झुझारा, चारां वेदां अवतारां दशा,

धरां हरां न्यारां रवि वारां चारे धाम;
सतियां जतियां सारां, सूरांपूरां रिषेशरां.

पीरां पेगम्बरां सिद्धा, साधका प्रणाम् !

नवां नाथां, नवे ग्रहां नवसो नवाणुं नदी,

नखब्रां नवेही लाखां भाखां नवे निद्र,
परवतां आठ कुळां, वसु आठ वदां पाव,
साठ आठ तीरथां समेतां आठ सिद्ध.

सात वारां सतावीसां नखत्रां सरगां सात,
 सप्ततां समुद्रा सात प्याळां तत्सार,
 पूराणां अढारां भारां अढारां वनस्पति,
 उच्चरां आदेश आदिनाथ ओमकार.
 परसं कलपतरु चांद्र सूर्य दीपाली न बहार
 पृथ्वी आकाश पाणी पावक पवन,
 केवलाशवासी ईश कुबेरन मंस्कारा न तीर
 ब्रह्मा गणेश शेष खण्ड विशन.
 अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अजंतिका
 पुरी द्वारामति सरस्वती गंगापार;
 गोदावरी जमी रेवा गोमती गया प्रयाग,
 कावेरी सरंजू मही बदरी केदार.
 सोमवली चित्तमिष्ठी रोहिणी सुभद्रा सोहा
 गायत्री सावित्री गीता अरुधती सीत;
 कामधेनु श्री आदिति राहल द्रोषिति कुंती; सां
 पासवती सती तारां लोचनां पवित.
 चेरासी चारणां देवी छपन कोटी चामुँडा;
 माता हिंगलाज आशापुरा महामाय;
 अविको कालिका नागलेची दुगरेची ओई, निमा ना न
 खाली न तारा न तारा खेची न्वाडकनेची नमो सुरांशायमो;
 वाल्मीकि शुक्रेव वशिष्ठात्री वेदव्यास, इन्द्र इन्द्र इन्द्र
 रामायण इन्द्र गौतम सनकादिक इन्द्र शर्लीमम्
 जमदग्नि धर्म शृशु मानधाना जुजेड़ेल, राम राम राम राम
 रणछोड राय रिजावित शज्जाराम.
 मच्छधर जालधर गोरख धूधलीमल,
 चक्रवर्ती अजेपाल गोग चहुआण.
 महीनाथ जशराज मोगणासु तृष्णमान, नारा निरानि नारा
 रामदे सोमदे पांवु रायमल राण, नार
 जंगमा स्थावरां गणां गंधवां किन्नरां झास्तां
 विघ्न बुराई वाय वारीजे वियाध;
 कमाईरी पूरा भरां अमरां हर्मीर कहे, निरुक्त इन्द्र
 अमां रिद्धि असिद्धि देजो घडांरे आराध

[8] महिमावंती मातृशक्ति

- ८१ शक्ति उपासनानां मूल.
- ८२ अवतारनी ईयता.
- ८३ शक्ति अवतरणमां क्षेत्रनी अनुकूलता.
- ८४ शक्तिना अवतार अने चारणजातिमां सहयोगिता.
- ८५ धर्मरक्षक चारण आईओ.
- ८६ चारणजातिनी महिमावंती मातृशक्ति.
- ८७ नवलाख लोचडीयाली.
- ८८ सांप्रतयुगना जगदंबा आई श्री सोनल मा.
- ८९ मुख्य योगमायाश्रोनी नामावली.
- ९० विद्वानोनां मंतव्यो.

कल्याण मासीकना हिन्दू संस्कृति अंकमां महाशक्तिनो परिचय आपतां जणावयुं छे के : “श्रुतियेंने शक्ति-शक्तिमान् स्वरूप अद्वयतत्त्वका प्रतिपादन किया हैं। वह एक तत्त्व परमपुरुष और परा शक्तिरूपसे द्विविध हैं। वे परमपुरुष जगतकी सृष्टि स्थिति संहारके लिये ब्रह्मा, विष्णु, महेशस्वरूप होते हैं उनकी शक्ति भी इन रूपोंके साथ सरखती, लक्ष्मी और पार्वती होती हैं। परमतत्त्व जैसे विष्णु, शिव, राम, कृष्णरूप में भिन्न होकर भी अभिन्न हैं, वैसे ही उन त्रिपुरसुन्दरी परा-शक्तिके रमा, दुर्गा, सीता, राधा रूप भी नित्य हैं। भिन्न होकर भी अभिन्न है वे।

महाशक्तिकी नैष्ठिक उपासना करनेवाले शाकत सम्प्रदायों-में भी भगवती के विविध रूप हैं। महालक्ष्मी, महासरखती,

महाकाली, गोरी, काली, तारा, चामुण्डा, कूमाण्डा, ललिता,
भैरवी, धूमावती, छिन्नमस्ता, दुर्गा, मातज्जी आदि रूपोंमें उनकी
उपासना भिन्न भिन्न विधियोंसे होती हैं। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी,
चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्फन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि,
महागोरी और सिद्धदात्री - इन नवदुर्गारूपोंमें उन्हीं आदि शक्तिकी
आराधना होती हैं। वही शाकम्भरी हैं, वही भ्रामरी हैं, वही
कुलकुण्डलिनी हैं और वही योगमाया हैं।”

दुर्गास्तसशतीमां स्त्रीशक्तिनां विविध रूपोमां वदना करवामां
आवी छे.

“नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौयै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्तरन्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुरवायै सततं नमः ॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः ।
नेत्रत्ये भूभृतां लक्ष्मयै शर्वाण्ये ते नमो नमः ॥
अति सौम्यातिरोद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

भारतीय समाजमां नारी पक विशिष्ट गौरवपूर्णी स्थानपरा
प्रतिष्ठित छे. श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन नारीतो महत्ता दर्शनवताम
लखे छे के “समाजनी स्थिरता, जीवननी पवित्रता अने मनुष्यनी
नीतिमत्तात्रो आधारस्थंश खी छे, माता छे खीए पारावार
संकटो। सहस्रे झङ्गमी छे, परमणे अनेक कष्टी अने यातनाओ बेठी
छे, संतुष्ट जगतजे शप्ता देनारी छे. संसारनी अग्नि जवाळाओने
परमणे रक्तना वारी छांटीने बुझावी छे। शील स्वधर्म अने पवित्रताम
खातर मृत्यु सामे आकरामां आकरा अनुष्टान मांडया छे. खीए
साहचण्टीनी मूर्ति छे। भारतमो नारीनु स्थान सर्वोच्च गणवामां
आव्युं छे. अ जगदंबा छे। भारतनी संस्कृतिनु महामुखु
आभुषण छे.”

चारण कवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणद गढवी ‘आराध’
काव्य संग्रहमां ‘नारीशक्ति’ मां खी शक्तिनो महिमा वर्णवता
कहे छे के :

॥ दोहा ॥
खी कन्या अगिनी ह प्रसु, देवी दयानी खाण;
नारी जग विध विध स्वखण, करत सदा कल्याण;
माता स्वरूप संतानकी, यत्नी स्वरूप पतिदेव,
भगिनी स्वरूप निज भ्रातकी, चाहत नारी सेव,
दाता भक्तन सूर संत, ग्यानी ध्यानी गुणवान,
नारी नर का जन्म दे, प्राया उज्ज्यवल पान,
नारी त नारायणी, संसारे सरजेलि,
नव पहुंचित नित रामवती, विश्ववागनी बेलि,
त रामायण भागवत, त संश्लांय पुराण,
त चंडी महाभारते, नारी दियण निर्वाण,
होत सदा नारायणी जा घर तव सन्मान,
ता घर नवनिदि रमे, कहत बेद पुरान.

तूं दुनियां सज्जन करे; तूं करे सर्व विनाश,
 तूं रूड़ी पलमां करे, नारी खेल खलास.
 लीधां ते कंई वृत कठिन, कीधां शील जतन्न.
 पीधां विष अमृत करी, दीधां अजब रतन्न.
 तूं नारी सुरतरू समी, ईच्छत फल देनार,
 तूं विण सूनो लागतो, विश्व तणो वहेबार.
 तूं हैंयानी हुंफशी, स्वर्ग बनत संसार,
 नारी तव निश्वासथी, निश्चय नरकागार.
 स्त्रीमूर्ति संतोषकी, मात दया धन मान,
 भगिनी क्षमाकी है भलि, सब जन कहत सयान.
 रोग में औषधि मित्र हैं, गृह में गृहनीमित्र,
 धर्म मित्र अंतमें, पथ में ज्ञान पवित्र.
 वनिता तूं विण विश्वनी, कदी न वृद्धि थाय,
 शक्ति सज्जनहारनी, अवश्य अटकी जाय.
 तूं महाकाळी जोगली, तूं देवी दरसाय,
 तूं माया माहेश्वरी, तूं खब रूप लखाय.
 धर्म सनातन स्थापवा, पंडित परिषद्मांय,
 तूं बेठी न्यायासने, नारी देवा न्याय.
 नारी तूं अबला नहीं, सबला साचो साच,
 को जन रहिया बेफिकर, पड़या मोहने पास.
 नारी ते निजनां तजी, कियां अचर बडभाग,
 छे नारी संसारमां, तारो अनहद त्याग.
 वनवासी तो विरद्धथी, रडवडता श्री राम,
 क्यां गई सीता कही कही पूछत ठामोठाम.
 तूं माधासंग मानुनी, रमती दिवस रात,
 तूं विण राधा-कृष्णनां, गीत कवि शुंगात.
 ते पापी पलटाविया, स्थाप्यां शासन स्थीर,
 नरपति तो चारणे नमे, नयणे भरभर नीर.

नारी शीतल छांयडी, नारी धरवती बाल,
 नारी विषनी बेलडी, नारी अमृत धार,
 भारतधर उधानका, नारी अनुपम फुल,
 त्याग भक्ति सौरभ ते, महेंकी रहा अमूल.
 तू व्यापी रहि विश्वमां, आद्य स्वरूपे थाई,
 जोया में जूगमां, बेहद परचा बाई.

नारीनी देवी शक्तिनी उपासना भारतवर्षनी हिंदु प्रजा
 आदि-अनादि काळथी करती आवी छे. शक्ति उपासनाना चार
 सिद्धपीठ सुविख्यात छे. पूर्वेमां कामाक्षा, उत्तरमां जवाळामुखी,
 पश्चिममां हिंगलाज अने दक्षिणमां मिनाक्षी. आ शक्तिरीठा
 देवीशक्तिनी महिमानी गवाही पुरे छे. शक्ति उपासनानी प्राचीनता
 विशे श्री नानुभाई दुधरेजियानुं मंतव्य उल्लेखनीय छे.

८१ शक्ति उपासनाना मूल :-

“शक्ति उपासनानी प्रथा घणी जूनी लागे छे. आणणां सौथी
 जूनां गणातां क्रगबेदमां देवीनो उल्लेख छे. बीजां ब्राह्मणग्रंथेमां
 पण देवीनी स्तुतिथो जोवा मले छे. मोह जो-डेरोना अवशेषो
 जे ४००० वर्ष पहेलाना होवानो पुरातत्वविदोना अभिप्राय छे. ते
 अवशेषेमां पण देवीनी विविध मूर्तिथो मळी आवी छे. अटले
 एमां कशीज शंका नथी के देवीनी उपासवानी प्रथा काळजूनी छे.

मनुष्य पोतानी आदि अवस्थामां ज्यारे मूलभूत व्रतिथोने
 वशवर्ती जीवन गालतो हशे, कोईक पर प्रेम करतो हशे तो
 कोईक तरफ पूज्यभाव राखतो हशे. लग्न प्रथा स्थिर थयाना
 पहेलाना अे काले बालक केवल पोतानी माताने ज ओळखतो
 हशे, पिता जेवी संज्ञानी तेने खबर नहि होय प माता पोते
 भूखी रहीने तेने खबडावती हशे, बहालथी उडेरी मोटां करती
 हशे, परिणामे तेना तरफ तेने पूज्यभावनी लागणीमांथी जगतना
 परमतत्त्वने पण ते माता स्वरूपे उपासतो थयो हशे.

शाश्वोमां पण
मातुरेवा भव, पितृदेवा भव, अतिशिरेवा भव ।
मातुमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषोवेदः ॥

मां माताने पिता करतां अग्रस्थान आयेल छे. धर्म नारी जातिमां रहे हे माटे ज खीने धर्मपत्नी कहेल छे, धर्मपति कहेवातो नथी.”

“चारणदेवी श्री करणीजी” ग्रंथनी प्रस्तावनामां ठा. श्री किशोरसिंहजी बाह्यस्पत्य शक्तिदर्शन करावता राखे हे के “सौरमंडलना जीवो पर परमेष्ठीमंडलनुं आधिपत्य होय हे. ते मंडल प वातनी देखरेख राखे हे के सौरमंडलनी पृथ्वीओमां प्राकृतिक नियमोनुं क्यांय उल्लंघन तें थई रह्युं नथीने ? जो अहिना नियमोमां कोई विपरीतता फेलाई जाय हे तें परमेष्ठी-मंडलना शासनकर्ताओने ते माटे विशेष चिता राखवी पडे हे. प्राकृतिक नियमोना सबंधमां के जेमनो भंग थवाथी परमेष्ठी मंडलना वातावरणमां क्षेभ उत्पन्न थाय हे, भगवाने ‘गीता’मां उल्लेख कर्यो हे अने तेनो सार बे शब्दोमां अटलो ज हे के ज्यारे धर्मनी ग्लानी अने अधर्मनुं उत्थान थाय हे त्यारे परमेष्ठीमंडलथी कोई विशेष जीवने पृथ्वी पर आवबुं पडे हे. धर्म अने अधर्मनी विवेचना श्री भगवाने प्र रीते करी हे के ज्यारे धार्मिक, राजनीतिक अने सामाजिक नियमोमां विपरीतता उत्पन्न थाय हे अने लोक समाज तमाम अर्थोनि विस्मरण जावा लागे हे, अने कर्तव्य-कर्मनुं विस्मरण थई जाय हे त्यारे पवी दशानु नाम अधर्म कहेवाय हे, जेमके :-

अधर्मं धर्मिति या मान्यते तमसावृता ।
सर्वथान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ (अ. १८ श्लोक ३२)

आ श्लोकमां वर्णित सिद्धांतानुसार ज्यारे संसारमां तामसिक बुद्धि फेलाई जाय हे. त्यारे मानव - समाज तमाम

वातोने उलटी रीते जोतो थई जाय छे अने सात्त्विक वृत्तिने
लोप थई जाय छे. ज्यारे घणां भागना मनुष्योथी पर्वी प्रवृत्ति
बनी जाय छे त्यारे धर्मनी स्थापना माटे अथवा कहा के
सात्त्विक वृत्तिने पुनर्जिवित करवा माटे परमेष्ठीमंडलयी कोई
देवी शक्तिने संसारमां जन्म लेवो पडे छे; पनेज अवतार कहे छे.

अहीं एक प्रश्न उभो थाय छे ते देवता कोण छे. के जेने
आ कार्य माटे पृथ्वी पर अवतार लेवो पडे हो पनो उत्तर
सूत्ररूपे तो उपर आपवामां बाब्यो छे. परंतु अहीं तेनी विशेष
व्याख्यानी जरूर छे. स्वयंभू मंडलमां जे चैतन्य अने जड
अधिच्छिन्न रूपे व्याप्त छे, तेमां चैतन्य प्रकाशात्मक अने जड
क्रियात्मक होय छे. प ध्यानमां राखबुं जोईएके चैतन्यमां कढी
क्रिया थती नथी, ते सदैव निष्क्रिय होय छे पज रीते जडमां
पण क्रिया होती नथी, परंतु ज्यारे चैतन्य जडने मले छे त्यारे
चैतन्यना योगथी जड सक्रिय बनी जाय छे. जेमके जीवात्मा
चैतन्य रूप छे अने शरीर जड छे, ज्यारे शरीर साथे सबंध
थाय छे त्यारे शरीर क्रिया करवा लागे छे अने जीवात्मा क्रियाथी
सदैव निलिप रहे छे. परंतु चैतन्य जीवात्मानो शरीर साथेनो
सबंध छूटी जाय छे त्यारे बने निष्क्रिय बनी जाय छे, अने
सूक्ष्म देह युक्त जीवात्मा उत्तम अथवा निकृष्ट लोकोमां पहोंची
संचित कर्मों भोगववानो अधिकारी रहे छे. आ बखते जे भोगोनो
उपयोग करवाने माटे तेनामां सक्रियता रहे छे ते पण सूक्ष्म
शरीरना योगने कारणे छे. अहीं ए पण ध्यानमां राखबुं जोईए
के चैतन्य पुराण पुरुष अथवा परब्रह्मनुं स्वरूप छे. जे प्रकाशमय
छे अने जड प्रकृतिनुं रूप छे अने चैतन्यना योगथी क्रियात्मक
छे. अे बनेना परस्पर योगथी परमेष्ठीमंडलमां ब्रह्मा, विष्णु, ईन्द्र,
अग्नि अने सोम पोताना पूर्णांश अथवा खँडाश द्वारा पृथ्वीने
जनसमाजनी विलुप थयेली सात्त्विक वृत्तिने जीवित करवा माटे

सदैव चितित रहे छे अने ज्यारे संसारमां दुष्ट लोको अधिक पेदा थईने गुंडागीरीनेज पोतानो धर्म मानी बेसे छे, समाजमां अशुंखलता उत्पन्न थई जाय छे, कर्तव्य-अकर्तव्यनुं ज्ञान मटी जाय छे, मनुष्यनुं मनुष्य प्रत्ये शुं कर्तव्य छे ? अेक वर्गनुं वीजा वर्ग प्रत्ये शुं कर्तव्य छे ? अथवा मनुष्यनुं पशु, पक्षी तेमज वनस्पतिओनी साथे शुं कर्तव्य छे ? तेने भूली जईने समष्टि अथेनि विपरीत समजवा लागे छे अने संसारने धारण करनारी शक्तिओमां जनतानी तामसिक बुद्धिने लीधे विपरीतता उत्पन्न थाय छे, गुंडागीरी अकर्तव्यने-कर्तव्यनो वाधो पहेरावी दे छे, त्यारे जनताने कर्तव्यनो बोध कराववा माटे विष्णु-शक्ति अथवा कोई अन्य दैवी शक्तिने संसारमां अवतरबुं पढे छे. गीतामां भगवाने धर्मनी ग्लानी अने अधर्मना अभ्युत्थाननो जे उल्लेख कर्या छे, तेनुं कोई पोराणिक अथवा सांप्रदायिक धर्म अथवा विधर्म साथे तात्पर्य नथी, किंतु कर्तव्यता अने अकर्तव्यता साथे तात्पर्य छे आज अवतारनुं रहस्य छे.

८.२ अवतारनी ईयता :-

ज्यारे दैवी शक्ति संसारमां अवतार ल्ये छे त्यारे तेनी सामे प प्रश्न उपस्थित थाय छे के अवतार पूर्णकलायुक्त थवानी जरूर छे के खंडकलायुक्त थवानी ? ते माटे ते सौधी पहेलां कोई देशने अने कार्यनी ईयताने लक्ष्य बनावे छे. जो तेने पोतानां कर्तव्यनुं परिणाम समस्त पृथ्वीमंडळ पर अथवा अधिकांश जनसमाज पर नांखवानुं होय छे तो ख्यं भगवान विष्णुने पोतानी पूर्णकलायुक्त पृथ्वी पर अवतरित थबुं पढे छे, परंतु ज्यारे ते थेबो निर्णय करे छे के कोई समाज विशेषनी सान्त्विक वृतिओ लुप्त थई ते अर्थ विपरीतताने लक्ष्य बनावी चूक्यो छे तो पने कर्मयोगनो बोध कराववा माटे कोई पण दैवी शक्तिने आंशिकरूपे आवबुं पढे छे. महाभारत काळमां भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि महापुरुषोनी बुद्धिमां पण धर्म-

अधर्मना निर्णयमां भ्रम उत्पन्न थई गयो हतो. भगवान् वेद-व्यास
घणीवार पमने उपदेश करता हता के :

बहवो यत्र नेतारो सर्वे पण्ठमानितः ।

सर्वे महत्वमिच्छन्ति तद्वन्दमवसीदत्ति ॥

छतां पण तेमनो आ उपदेश प नेताओना हृदयपर तपेला
लोढा पर पाणीना टीपांनी जेटलीज असर करी शक्षयो अने तेने
परिणामे ज्यारे जनतानी बृद्धि पर पण मोहनो पडदो पडी
गयो अने कर्तव्य-अकर्तव्य भूलाई गयु त्यारे स्वयं विष्णु शक्ति
के जे समस्त चराचरने धारण करनारी शक्ति छे, पूर्णकलारूपे
देवकीना गर्भमां पेदा थबुं पडयुं, परंतु बीजा अवतारोमां तेनी
आवश्यकता नहीं जणाचार्थी पज विष्णुशक्तिने खंडकलारूपे
अवतरबुं पडयुं. रावण राज्यमां केवल सदाचारमां ज विशृंखलता
आवी हती, तेथी वैष्णवी महाशक्तिने समाजने सदाचारनो बोध
करावदा माटे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामना रूपमां पंदर-
कलाथो रूपे कोशल्याना गर्भथी उत्पन्न थबुं पडयुं, अने ज्यारे
वैदिक हिंसाने हिंसा नहीं मानतां यज्ञादिना ओटामां पशुओनां
बलिदान अनर्गल थवा लाग्यां त्यारे दयाना प्रचार माटे महाराज
शुद्धोदनने घेर बुद्ध रूपे ईश्वरी विभूति प्रगट थई.

रावण राज्यमां देव-समाज अने पितृ-समाजनी साथे
मानव-समाजनी कर्तव्य बुद्धि विपरीत बनी चूकी हती, कंस-
राज्यमां, मनुष्य-समाज, मनुष्य समाज प्रत्येनुं पोतानुं कर्तव्य
मूली गयो हतो, अने बौद्धकालमां पशु-समाज प्रत्ये नर-समाजनुं
शुं कर्तव्य होई शक्ते तेनुं यथार्थ ज्ञान नष्ट थई गयुं हतुं तेथी
भगवाने राम, कृष्ण अने बौद्ध रूपमां प्रगट थबुं पडयुं. ज्यारे
सतीना प्रथाना ओटामां विधवाओ पर घेर अन्याय थवा लाग्यो,
एक एक वर्षना आयुवाळी बाल विधवाओ जीवतीज पतिनी

साथे बांधीने चितामां बाली मूकवामां आववा लागी त्यारे
बंगालमां राजा राममोहनराय खंडकला रूपे देवी विभूति तरीके
प्रगट थया. ज्यारे भारतवर्षमां पाषाणनी मूर्तिने ज स्वयं श्री
जगदीश्वर समजवामां आववा लागी अने तेनी सन्मुख नाचबुं-
गाबुं तथा पने भोजन करावबुं अने तेने सुवाडवा आदि मिथ्या
बुद्धिनो प्रचार जे रीते ढींगली माटे बालकनो भाव होय छे ते
रीते खरेस्वर वधी गयो त्यारे सात्त्विकी बुद्धिना वाषो पहेराव-
नारी आ तामसिक वृत्तिने भारतमांधी काढवा माटे देवी आत्माने
खंडकला रूपे स्वामी दयानंदना रूपमां अहीं आवबुं पडयुं.
बधुमां ज्यारे धनिक समाजे गरीबो पर अन्याय करवा मांडयो
त्यारे रशिया महाराज्यमां महात्मा लेनिनना स्वरूपमां देवी आत्मा
खंडाशमां अवतरित थयो, अने ज्यारे भारतमां तमोगुणनी
अधिकताने लीघे लोक-समाजमां अकर्मण्यता उत्पन्न थई त्यारे
कर्तव्यनो बोध कराववा माटे महात्मा गांधीजीना रूपमां कोई
देवी आत्मा प्रगट थयो.

तात्पर्य के सांसारिक नियमोमां ज्यारे ज्यारे त्रुटी उत्पन्न
थाय छे त्यारे त्यारे कर्तव्यनुं ज्ञान कराववा माटे देवी विभूतिओ
मृत्युलोकमां खंडांश अथवा पूर्णांशमां अवतरित थया करे छे.
ते माटे थेबुं कोई आवश्यक नथी के अे विभूतिओ पुरुष
योनिमां उत्पन्न थाय अथवा ल्ली योनिमां.

जे रीते भगवान पुरुष रूपमां धर्माधर्मनुं यथार्थ ज्ञान करा-
ववा माटे माताना गर्भधी उत्पन्न थाय छे थेज रीते थेमने
पण आवश्यकता जणातां ल्ली रूपमां पण उत्पन्न थबुं पढे छे.

८३ शक्ति अवतरणमां क्षेत्रनी अनुकूलता :-

प्राकृतिक नियम प छे के घणुं पाणी थोडा पाणीने पोतानी
तरफ खेंचे छे. जेमके समुद्र नदीओने, नदीओ नालांने, नाला

सरबाणीओने पोतानी तरफ आकर्षित करतां रहे छे. अंग्रेजी भाषामां आ प्रकारना आकर्षणे Cohesion (कोहेशन) कहे छे. प नियमानुसार जो भगवानने सान्त्विक अवतार धारण करवो पडे छे, तो तेओ सतोगुण विशिष्ट वर्णमां अने राजसिक अवतार धारण करवो पडे छे. तो रजोगुण विशिष्ट वर्णमां उत्पन्न थाय छे. अने ज्यारे अमने शक्तिरूपे अवतार लेवो आवश्यक जणाय छे तो तेओ शक्ति उपासकोमां ज अवतार लेवो उचित समजे छे. केमके त्यां Cohesion Power (कोहेशन पावर)नी आकर्षण शक्ति पोतानुं कार्य करी रही छे; तेथी इतिहास प वातनो साक्षी छे के महाशक्तिप वखतोवखत शुं ब्राह्मण, शुं क्षत्रिय अने शुं अन्यवर्ण, वधी जातिओना शक्तोमां अवतार धारण करेलां छे. केमके नात-जात केवळ मनुष्य समाजनुं, केवळ 'हिंदुं' जातिनुं एक पाखंड छे, ईश्वरीय नियम नथी, तेथी कोई पण जाति अथवा कुलमां कोई पण प्रकारना गुणोनी विशिष्टता जोईने अने अनुकूलता पामतां दैवीशक्ति प विशिष्टगुणयुक्त कुलोमां अवतरित थाय छे. आ नियमानुसार राजस्थानना प्रांतमां जीन माता राजपूत जातिनां चौहाणकुलमां उत्पन्न थई हती, अने तेनुं स्थान आजे पण राजस्थानमां प्रसिद्ध शाकत पीठेलैकी एक छे; जेसलमेर राज्यना राजकुलमां पण वे देवीओ अवतरित थई हती. जेमनां स्थानको जेसलमेरनगरथी पांच कोस छेटे, त्यांनी प्राचीन राजधानी लोढवामां आजे पण मोजूद छे अने राज्य तरफथी त्यां पूजानी व्यवस्था छे.

८४ शक्ति अवतार अने चारण जातिमां सहयोगिता :-

चारणजाति शक्ति-उपासकोमां एक मुख्य जाति छे. जोके शाकत संप्रदायमां जे उपासनाकम राखदामां आव्यो छे ते आ जातिमां प्रचलित नथी. जेमके भैरवीचक्रनुं पूजन अने पांच मकारनी उपासना चारण जाति करती नथी

तेम तेने मानती नथी; तेमज बंगाळीओ अने मैथिलेनी
जेम नवरात्रिमां माटीनी मूर्तिनु' पूजन करती नथी अने घटस्थापन
अथवा विल्व अभिर्मत्रण आदि क्रियामां विश्वास घरावती नथी
छतां पण आ जाति कट्टर शाकत छे; ते पटला सुधी के चारण
जातिनी व्यक्तिने बीजी जातिओ 'देवीपुत्र' नामधी संबोधन
करे छे. आ जातिमां उत्पन्न थती दीकरीओने नानपणथीज
माताओ तरफथी एवुं शिक्षण मळे छे के 'तु' साक्षात् देवी छे;'
भगवतीए पोताना अंशवडे तने उत्पन्न करी छे.' आदि आ रीते
निरंतर बोध थवाथी ते नानपणथीज पोताने "माताजीनी
सुआसणी" अर्थात् "देवीनी सहोदर बहेन" मानती थई जाय
छे, नानपणना आ संस्कार युवावस्थामां विकसित थाय छे.
त्यारे प्राकृतिक रूपे महाशक्ति साथे एनो प्रेम पण उत्कर्षता
पासे छे. आ कारणथी भगवती महाशक्ति अथवा जगर्दीश्वरने
खी रूपमां उत्पन्न थवा माटे चारण जाति अधिक अनुकूल
जणाई अने वखतो वखत आ जातिमां देवीओनां अवतार थतां
रह्यां."

[चारण देवी श्री करणीजी

प्रकाशक : राजकवि श्री शंकरदानजी देथा लीबडी]

मेजर श्री रघुविरसिंहजीना मत मुजब "दिव्य गुण व
सदाचार सम्पन्न चारण जाति ही महाशक्तियोंकी उर्वराभूमि
रही है।" आ हकीकतनुं समर्थन आपतो दुहो छे के :

सतीकुल सती निपजे, सतीकुल सती थाय,
छीप महेरामणमांय, हुंगर न थाय दादवा.

पूज्य आई श्री सोनलमाना आदेश प्रमाणे "जीवनमां
सच्चाई आवशे तो शक्ति आप मेले आवशे जो माना धावणमांथी
ज सच्चाईना संस्कार मलशे तो चारणो जरूर देव चारणो
बनशे अने पमने घरे माताजी अवतार लेशो."

८५ धर्मरक्षक चारण आईओ :-

“धर्म रक्षा काजे सौथी वधु झङ्गुम्यां छे चारण आईओ.
महान गणातां राज्यो सामे, बलवान गणातां राज्यो सामे, बलवान
गणातां जुथो सामे, समाजनी रुदीओ सामे अने अन्यायना
प्रत्येक प्रसंगे पण आ चारण्य संतोनो इतिहास घणो महान छे.
एमनी भक्ति सदाय अपार्थिव रहेती आवेली. एमांथी चमत्कारेनां
पडल दूर करीने कोईके चारण आईओनी आत्मसाधनानो महान
इतिहास आएवो बटे. छतां बे चार नामतो आपवां ज रह्यां.

आई नागबाई पमना चमत्कारेने कारणे नहिं, आत्मबलने
कारणे महान हुता. चारण ज्ञातिमां सौथी पहेलां बीजां लग्न
करीने पमणे समाजनी रूदिओ भेदी. रा' मांडलिक सामे पोतानुं
आत्मबल दाखबीने झूँझयां अने छेवट अकात्मकभावथी हरिजन
दंपतिने गाडे बेसीने हेमाळो गाळवा हाल्यां. पांडवो पछी आई
नागबाई सिवाय बीजो कोई दाखलो नथी.

भावनगर रस्ते आवेलां देरडी गामनां आई जानबाई पवांज
महान संत हुता. पमणे अढारेय आलमने थेक वारे याणी भरे
तो वाय वांधी आपवानुं कखुं. सोप स्तीकार कयों अने आई
जानबाईप वाव बंधावी.

गिरना सराकडिया नेझमां आई सोनवाई शाख प्रधाधी के
समाजे वांधेली सन्नारीनी व्याख्या पितृ मातृ अने पतिनी आक्षा
पालनमां पोतानुं इतिकर्तव्य के महत्ता न मानी परणीने चोरी-
मांथी उठीने अंतर आत्माना अवाज प्रमाणे प्रभुभक्तिमां अने
भूख्यां दुख्यांनी सेवामां जीवन गाल्युं अ सो वरस अंदरनी
चात छे.” [श्री जयमलभाई परमार]

“देहनी उष्मा दईने परपुरुषनो प्राण बचावी पछी कुशंका-
पात्र बनीने दोषित पतिने ज शाप देति साँई नेसडी. रा' मांडलिके

सतावी तेथी पोताना शापने पण साहित्यमां अंकित करी जनार आई नागवाई, जासे पीडेली कामवाई असपृश्यतानो निषेध करीने, पोतानी गाळेल वावमां विण आभडलेटे सवजेंने तेमज असपृश्योने जळ पीवा कही जनार देरडी गामनी जानवाई, सरधारना लंपट शेख पर ब्राटकेली अने अने मारीने मरेली वाघण जीवणांवाई वगोरेनी आख्यायीकाओमां दंतकथामिश्रित मध्ययुगनो रस्य तेमज भीषण, रोमांचक अने जुगुप्सक इतिहास छे. कासी राजा प्रत्ये पोताना स्तनो कापीने फेंकनारी, अरे तेथी पण वधु पाडाने हणी तेना रक्त पीनारी चारण्यो देवीपदे स्थपाई छे. 'रोड पीबुं' पने चारणो देवी-कार्य गणे छे. पांच तोलां पण काचुं लेही पीवानुं परिणाम मृत्यु होवानुं कहेनार विज्ञानने माटे आ ब्रांसडा भरी पाडानुं रुधिर गटगटावनार आवेशमत्त चारण्यो आधुनिक युगने छेक नजीकने आरेय हती, तेम जाणकारो कहे छे. आ अेक अणउकेली समस्या रही गई छे. आवु नारी तच्च जगतना इतिहासमां अन्य कोई वीरस्तुतिकार संस्था साथे जोडायेलुं जडतुं नथी."

-श्री श्वेतचांद मेघाणी.

८६ चारण जातिनी महिमावंती मातृशक्ति :-

चारण जातिनी मातृशक्तिनी प्रतापी अने जाजरमान छाप तो इतिहासमां अजोड गणाई छे. आत्मबलिदान आपवानी शक्ति अने तत्परतावाळी चारण जातिमां अवतरण करनार अनेक योगमायाओप आर्य संस्कृतिनी रक्षा करी छे. प. योगमायाओ संस्कार अने शवितस्रोत समी अने अमरवेली समान तप पुण्य सौरभ प्रसरावती प देवीओ आजे पण हिंदु जातिमां सर्वेव कुळदेवी तरीके पूजाय छे. आ योगमायाओनां जीवन अनेक गणां त्यागवीर मानवाना कारणें देखाय छे. जेने परचानी जराय परवा नहीं, स्थानो-नग्याओ, मठो-आश्रमो वांधवाना

जराय कोड नहीं, शक्तिने हाजरा हजूर करवानो अभरखो नहीं, संप्रदायो स्थापवा नहीं, आ वधी झँझटथी साव निराळुं जीवन प्राकृतिक सौंदर्यने खाले जीवतां छतां प योगमायाओए राज्यकर्ताओ अने राज्यव शोने अनतिनां पंथे जतां रोकेलां, बाहा आक्रमण वखते राज्यनी रक्षा करेली, देशहित खातर, धर्मनी खातर, अहिंसा माटे, पशु प्राणीओना रक्षण अर्थे, नेक, टेक, सत्य, प्रेम, सत्याग्रहने माटे आत्म बलिदानो आप्यां छे. आ योगमायाओअे आक्रमणकारोनी के राज्यशासकोनी अनीतिने अन्यायना जुलमने पडकारेला, अमनो सामनो करेलो. सतीओना शियलनी रक्षा करेली, स्वमान, स्वधर्म अने स्वमर्यादानी धजाने हमेशां फरकती राखी छे. आ जोगमायाओ निराधारना आधार बनी, अच्छपूर्णना आकरांबत पाल्यां, समाजमां अस्पृश्यतानुं निवारण कर्यु, जुनी रुढिओने तिलांजली आपी, तेमनुं जीवन, तप उपासना अने परोपकारथी सदाय भरपूर रहेतुं. एमनां जीवनमां गीतामां वण्यिलां स्थितप्रक्ष त्रिगुणातीत भक्त अने दैवी संपत्तिनां गुणो हता. आ दिव्य आत्माओ शुद्ध सात्त्विक जीवन जीवीने परोपकार करी आत्मसाधना करी सौने प मार्गे जवानी प्रेरणा आपी छे.

८.७ नवलाख लोबडीयाळी :-

“इस जाति में आविर्भूत शक्तियोंकी संख्या अन्त है, पर नौलाख लोबडियाळ एक सामान्य विशेषण गिना जाता है अर्थात् जन्मग्रहण करनेवाली नौलाख लोबडी पहनने वाली देवियाँ।”
—मेजर साहेब थ्री रघुविरसिंहजी.

“नव लाख लोबडियाळ पदनो व्यवहार करवामां आवे छे जेनुं तात्पर्य प छे के देवीनो आज सुधीमां साधारण अने असाधारण मली कुल नवलाख अवतार थई चूक्या छे. अे ज स्तुतिमां ‘चोरासी चारणी’ पदनो व्यवहार थाय छे, तेनाथी

जाणवा मले छे के चारण जातिमां महाशक्तिना चोराशी अवतार थई चूक्या छे. केटलीक व्यक्तिओनो पवो मत छे के चारण जातिमां लोबडी पहेरवानो रिवाज प्राचीनकाळमां हुतो. तेथी प जातिमां विशेष चमत्कारयुक्त नवलाख महिलाओ आज सुधीमां उत्पन्न थई छे. जेमां चोराशी बाल्डाओ असाधारण शक्ति-संपन्न होवाने लीधे महाशक्तिओ मनाई.” -ठा. किशोरसिंहजी बाह्यस्पत्य.

“अहियां नवनो आंक सूचक छे. नवनो आंक मूळ आंकमां छेल्लो छे अने तेथी पूर्ण मनाय छे. नवदुर्गा, नव नोरतांना उत्सव पाढ्य एण आध्यात्मिक रीते पूर्ण जीवननो आनंद अभिप्रेत छे. आ जीवन भयानक संघर्ष अने आसुरी-शक्तिना विनाश पछी ज ग्रास थाय छे, पटले एमां नव जन्मनो एण उत्सव छे. आ जन्म पछी कदी जीर्णता के मृत्युनो संभव नथी प रीते नवनो अंक सदा नित्य नव छे; नवने गमे तेटलां आंकथी गुणो एण पनो छेल्लो सरवाळो सदा नव आवशे. नव आ रीते गुणाकारमां निर्गुण रहे छे एमां विकार के विच्छेद थतो नथी आ अेनुं समत्व लक्षण छे. नवमां बीजा कोई आंक उमेरोतो उमेरेली रकमनो आंकने ते बतावी आपशे; आम एनो सरवाळो अेनी निर्लेपतानुं लक्षण छे. प्राचीन धर्मेना ज्योतीषी, पुरोहितेप, अंकगणित, भूमिति अने बीजगणितनो आध्यात्मिक रूपको तरीके नवना अंकनो पूरा उपयोग कर्यो छे; अने अेनुं रहस्य जाण्या वगर आ आंक ने अठे गठे आवेला के अर्थ विहीन मानी मांयलो मरम गुमावी वेसवानुं ज आपणे भागे आवे छे. आम नव अ महेश्वरनो अमरत्वनो आंकडो छे.” -श्री मकरन्द दवे.

आम नवनी व्याख्या घणाज विशाळ पट पर पथरायेली छे. आपणां शब्दकोशमां एण नवनां अर्थो उल्लेखनीय छे. नव=नहिं; नव=नवुं, नव=अनिश्चित संख्या. आ वधा ज अर्थो नवलाख लोबडीयाळी योगमायाओ साथे अभिप्रेत छे.

नवलाख अर्थात् नवां नवां लक्ष्य हांसल करती, नवां नवां स्थेय सिद्ध करती, लाखोमां न होय तेवी असाधारण मातृशक्तिनी आ उपमा छे. इतिहासमां अंकित थयेला प्रसंगोमां समाजना प्रत्येक अन्यायना प्रसंगे आ योगमायाओ आत्मबलिदान सुधी शुझीने पोताने लक्ष्यांके पहेंची छे. आ आत्मसाधनानो इतिहास महान छे. साचनी केडीअे जीव जीभान अने सुरताने पक करतां गोरखनाथे कहुं छे के “शब्द हमारा खरतर खांडा. रहणी हमारी साची” एवां शूरवीर चारण खी संतोनो प्रतीभावंत जाजल्यमान पावक गाथाओ इतिहासमां सुवर्णअक्षरे सुदीर्घ पट पर अंकित छे. आत्मसाधनाना मार्गनो अेक चारणकुळनो ज मारको होय तेम लागे छे. आ प्रतीभावंत जीवन फूलेभातीगळ अने भभक-भर्या छे. पक रोज माटे बलिदान अर्पित करती बाबीस बहेनो, अस्पृश्यता निवारणमां पहेल करती आई जानवाई, आई नागवाई अने आई कामवाई; कामी अधर्मी, अन्याचारी कुर मुस्लिम राज्य शासकेनो नाश करती आई आवड, आई जीवणी; परधर्मी आक्रमणकारनो सामनो करी प्राणन्योछावर करती आई लाखवाई, अहिंसानो नेजो फरकावती आई पुनसरी, आई बहुचराजी अने आई सोनवाई; सर्पदंशानु झेर चूसी नवजीवन अर्पती आई बाढ़लबा; आशरा धर्मनो पाठ भणावती आई चांपवाई; उमदा राजकुळोनु शासन स्थापित करती आई आवड, आई कामेही, आई करणीजी, आई खोडीयार, आई वरुवडी, आई जेतवाई अने आई कागवाई, पोतानां शरीरनी उष्मा वडे परपुरुषोने जीवतदान देती आई साँई नेहडी, उजळी; ब्रह्मचर्यनां आकरा पाठ पढावती आई शेणवाई; व्याजखाउ वेपारीने सबक शिखवती आई देवल, गोरक्षा करती आई देवल, विद्यादान, अन्नदान देती आई सोनल. आवां असंख्य महिमावंती मातृशक्तिनां संतो आभ खडेडे तेा टेको दिये अेवां अडाभीड छे. आ बीर संतोना जीवन मूळे धरतीनो पाताल्यरस पीधो हतो. तेथी तेमनां जीवनमां

आगावु तेज प्रगटेलुं छे. आशी आ आर्यमाताथोप समग्र मानव
महेरामणमां पोतानी आगवी भात पाडी छे. तेमज उमदा
संस्कारनी अमर सरवाणीप खानदानी खमीर अने अमीरातनो
इतिहास सज्यो छे.

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

८८ सांप्रतयुगना जगदंवा आई श्री सोनल मा:-

जीवनमंत्र प्रार्थना :

न त्वहम् कामेय राज्यम्,
न स्वर्गम् न अपुनर्भवम् ।
कामेय दुःखतपानाम्,
प्राणीनाम् आर्तिनानम् ॥



अर्थात् राज्य वैभवनी ईच्छा
नथी, स्वर्ग सुखनी चाहना नथी,
मोक्षनी पण कामना नथी, चाहना
फक्त पटलीज छे के दुःखथी
पीडातां प्राणीओनी पीडानो
नाश थाओ.

“आ प्रार्थना जेमनो जीवनमंत्र हतो, ए मंत्रने जेमणे
आचरणमां उतार्यो, ए प्रमाणे जे जीवन जीव्यां हतां.

चारण जातिमां जन्मेलां सौ आईओ महान हतां. अेमणे
सौंप महान कार्यो करेलां. पण आई सोनले तो चारणोने सुखी
करवाना कार्यने पोतानुं जीवन कार्य बनाव्युं अने ए माटे
पोते सदा प्रयत्नशील रह्यां. ए दृष्टिप एमनुं स्थान इतिहासमां
अजोड छे. उपरांत एमनी खास विशिष्टता ए छे के एमणे एकलां
चारणोने ज नहीं पण सर्वे जातिओने प्रेमधी आवरी लईने सौना
उपर अपार हेत-वात्सल्य वर्णव्यां, सौना भला माटे सदाय

मथतां रहां. थेमणे ज धृणवां-धफवां वंघ कराव्या. पमणे ज पशु बलिदाननां, मांस-मदिरा सेवननां, कन्या विक्रय अने वर-विक्रयनां जुगार अने व्यसनोनां पापेमां न फसावानी हाकल करी. परोपजीबीपणुं त्यागीने पुरुषार्थ आदरवानो महामंत्र आप्यो. चारणोने चेतनवंता बनाव्यां, पमनां सौना खोलीयामां नवा प्राण पूर्या. विद्यासंस्थाओ स्थापी, चारणी संस्कार साहित्य अने इतिहासना पुनरूद्धार माटे प्रबंध कर्यो. चारणत्वनी पुनः प्रतिष्ठानुं महाकार्य आरंभ्युं, दीनता अने दुर्वलता हटावीने तेने स्थाने त्याग अने वीरत्वनी अमर ज्योति प्रगटावी अने अन्नपूर्णानां अति आकरां व्रत जीवनभर पाल्यां, पेताने आंगणे लाखोने जमाडयां, रमाडयां, चारण आईओनुं उजलुं जीवन जीवी गयां. हजारे वर्षो जूना रूढ वाढाओमां पूरापलां चारणोने थेमणे पकतानो, संपनो आदेश आप्यो, रूढवाढाओ तोडाव्या. चारणे-तरो पर पण थेमनी कृपा भरपूर वरसती रही. थेकलां चारणोनां ज नहि, पण सौनां अ साचां अन्नपूर्णा मा बन्यां. सौना पर पमणे अपार वात्सल्य वरसाव्युं. आपणा इतिहासमां कौई काळे न जोवामां आवेलो पवो अमृतमयी अंबानो भाव राख्यो.

आजे थे दिव्यात्मा सदेहे आपणी वच्चे नशी त्यारे जाणे आपणुं सर्वेस्व जतुं रहुं होय पम भासे छे. परंतु आपणे ए महान शक्तिनां संतानो छीप. प नाताने याद राखीप. नवलाई-ओमां न झवीप, कर्तव्यने याद करीप एक वनीने रहीप ए दिव्यात्माप आपेल भव्य वारसाने पचाववा माटे कटिबद्ध थईप, थेमना संतानो तरीके फरजनो पूरो ख्याल करीप एमांज आपणुं मनुष्यत्व छे. एमांज आपणुं आपणापणुं छे.”

-पिलशीभाई पायक (चारण मार्च '७५.)

[पू. सोनलमानो जन्म : सं. १९८० पोष वर्दी अजवाली बीज ने मंगलवार. महाप्रयाण : ता. २७-११-७४ बुधवार]

८९. मुख्य योगमायाओनी नामावली :-

कवि श्री खोडाभाई चारणे 'योगमायाओने आवाहन' गीतमां चारणजातिनी मुख्य योगमायाओनी नामावली प्रस्तुत करी छे, ते उल्लेखनीय छे :

(गीत संपाखरू)

बाई ! आवीप संकटा पडये तारवा चारणा बेडा,
नामरा भामणां लीआं बधारणी नूर !
चारणी ! पथार्ये मैया ! सुधारणी कवेसरां,
हिंगलाज आद्य माता ! हाजरा हजूर - १
जाळधरी ! गातराड ! काळिका ! भवानी ! जपां,
रवेची ! अंविका ! देवी कथां जगराय;
बडावडी - आशापुरां ! हुंगरेची-थलावाळी !
माढराणी तूज नमां भुजाणी मोमाय - २
उदावाळी - राजबाई ! करणी-मेहारी ! आखां,
विजेसणी ! वादेश्वरी देवीयां बडाई !
पावावाळी - त्रिशूलाळी - मेळीयाळी ! भजांप्रेमे,
तोतला ! बेचरां ! होल ! कामळा नकाय - ३
चांड ! आवड ! गेल ! खोडीयार ! बूट साची,
वर्ण - उद्धारणी ! करे सेवगांरी वार,
न आवये सूर ना उगे, आवीप ते रहे नेम,
अमाणे भरोंसो देवी ! तमाणो आधार - ४
पडाई आकाश तणी मोगला ! छूट ते पटे,
मेलडी खूबडी देवी ! सिद्धवडी माय,
वरुडी चांखडा सधू ! चरुडी चडाय बेगे,
स्हेज मे पाणीयो कोड कापडी सकाय - ५
भलीआई - देवबाई ! सिद्धायच कुल भणां,
हरजोग जाई - माता नागबाई ! हेक,

भलां भली चाँपवाई ! आवीण जस्तर मेरे,
तार तार पार बेडो राख कव्यां टेक - ६

कंडबाल ! अंडबाल ! पीठड ! कांत्रोडी कथां,
सुंदरी ! भीचरी ! देवी - रखाई ! सधीर,
कवेसरां लाज राख अरदास 'खोडो' कहे,
भुजाळी ! अतरी आवो चारणांरी भीर - ७

८-१० विद्वानोनां मंतव्यो :-

"दुनियाभरना विचारकोप पुरुष शक्ति करतां स्त्री शक्तिने
वधु महत्त्वनी मानी छे. खास करीने देवी भागवतना रचनार,
वेदव्यासथी मांडीने अर्रावंद घोष जेवा आर्ष दर्शकोप तो जगत्नुं
नियंत्रण करनार शक्तिनुं स्त्री स्वरूप कल्पीने तेनुं जगदंबा तरीके
कीर्तन करेलुं छे." —श्री विरभद्रसिंहजी भावनगर महाराजा.

"शक्तिनो प्रवाह चारण कुळमां थयेलां आईओनां माता-
जीओना जीवनमाथी प्रगटतो. आई आवड, आई करणी, आई
खोडीयार वगेरे अनेक आईओ आजे पण रजपूतोनां छत्रीश
कुळनां अने बीजां अढार वर्णनां कुळदेवीओ तरीके पूजाय छे
तेनुं कारण के पमनां जीवन केवल चारण हितकारी नहि पण
सर्व हितकारी हतां. तप, त्याग, व्रत, शील, भक्ति; श्रमा पमनां
जीवनमां वणापलां हतां. पमनां जीवननां अंग बनी गणलां अने
ए शक्तिनो बीजो प्रवाह शारदाना उपासक चारणोमां वहेतो हतो.
जे यथार्थ कहेता अने समाजनी राजकर्ताओनी नीतिमत्ताना रक्षक
तरीके काम करता. वस्तु आवये कडबुं सत्य संभलावता अने
गुणवानने विरदावता. पण विना गुन करे गान 'काग' ताको
कहो 'पाप' एवां पापथी चारण अलग रहेता. नरहरदास,
ईसरदास वगेरे चारण कविओथे प्रभु गुणगानने पोतानो धर्म
मान्यो." —भक्तकवि श्री दुलाभाई काग.

“चारण जाति उपर परमात्माप बे मोटा उपकार करेल छे. अभण चारण पुरुषमां पण कईं क चमक, नवीनता, नोक, टेकनी रखावट अने संस्कारिता जणाय छे. पटले ते सरस्वतीनो पुत्र गणाय छे, अने जगदंबाप क्यांय अवतार लीधा होय तो ते चारण ज्ञातिमां, आजे पण चारणेमां देवीओ छे के जेनां दर्शनथी माणस भाग्यशाळी, पुण्यशाळी बनी जाय छे.”

-श्री वेणीरामभाई भट्ट

“तमे सरस्वतीना पूजारी छे, माताजीना पूजारी छे. आपणां आ सम्मेलनमां मुख्य वस्तु माता छे. जगतमां पूजनीय त्रण छे त्रणेय माता छे. सौथी प्रथम मा जन्मनां माता. मरतां प माता सौने सांभरे, वीजा माता जन्मभूमि छे. मेरुभाने इंद्र-भवन जेवो महेलोमां पण छत्रावा याद आवे छे. त्रीजा माता ज्ञाति माता छे. जे आपणने बळ संस्कार अने स्नेह आपे छे.”

-श्री गोकुलदास रायचुरा तंत्री शारदा.

“लोवडी” तो आजे पण काठियाडनी चारण्यो. भरवाडण्यो वगोरे गरम ओढणां ओढनार स्त्री समाजनो जाणीतो शब्द छे. व्युत्पत्तिने हिसाबे पण ‘लोमपटी’ एकदम सुझे तेवो मूळ संस्कृत शब्द छे.”

-श्री ज्ञवेरचंद्र मेघाणी.

“ॐ आनंदमयी चैतन्यमयी सत्यमयी परमे।

आपणे श्री माताजी तरीके जेनी उपासना करीप छीप ते समग्र जगत उपर शासन करती भगवाननी चित्तशक्ति छे.”

-श्री अरविंद.

१२१

સુર્યાં પ્રાણાં પણાં બે માત્રામાં રહેલ વિદ્યાં કાવ્યાં
સુર્યાં પ્રાણાં પણાં બે માત્રામાં મનુષ્યાં
સુર્યાં પ્રાણાં પણાં બે માત્રામાં બે માત્રામાં કાવ્યાં

[9] વ્યવસાય

વેદકાલે ચારણ શાસ્ત્રોનો રચયિતા હતો. પુરાણયુગમાં દેવી સ્તુતિકાર હતો, મધ્યયુગમાં પ્રવંધકાર હતો, અને રાજપૂત યુગમાં વીરરસનો વારિધિ, નિડર, સત્યવક્તા, કવિ અને યૌદ્ધો હતો. પ્રાણને મોગે નીતિ ધર્મનો રક્ષક હતો. રાજાઓના ગઢ કિલ્લાની ચાવીઓનો રહેવાલ હતો. પરાંગણે રહેતા રાજપુત્રોના બ્રહ્મચર્યનો ચોકીદાર હતો, બે રાજ્યોનો સંધિવિગ્રહક હતો, રાજદરવારમાં કવિ, સલાહકાર ધર્મપુરુષનું સ્થાન ચારણે શોભાવ્યું છે, તેમ વનવગડાનું માલધારી જીવન એણ સહજતાથી ચારણ જીવ્યો છે. એ ઉપરાંત ખેતી વ્યાપાર, પશુપાલન જેવા અનેક વ્યવસાયો ચારણોએ પ્રથમથી જ અપનાવ્યાં છે. સાંપ્રતયુગમાં દરેક જુદાં જુદાં વ્યવસાયમાં ચારણો વ્યસ્ત છે. ઘણાં ભાઈ-બહેનોપ ઉચ્ચ કેલવળી પ્રાપ્ત કર્યા એછી સરકારી ક્ષેત્રોમાં એક મહત્વના અંગ તરીકે સેવા બજાવી રહ્યાં છે. આજે એણ ચારણકુળ જનસમાજમાં સાહિત્યક્ષણે, સાંસ્કૃતિકક્ષણે તેમજ રાજકીયક્ષણે સર્વોચ્ચમ યોગદાન પ્રદાન કરી સારી પ્રતિષ્ઠા હાંસલ કરી છે.

વ્યવસાય અંગે વિદ્વાનોનાં મંત્રચ્ચો :-

“ચારણ જ્ઞાતિ સારાયે સૌરાષ્ટ્રમાં પ્રસરી ગઈ છે. આજના ચારણોને આશ્રય આપતાં રાજાઓ બકૃત્ય થયા ત્યારે તેમના સાહિત્યના સહારે જનતામાં તેમનું સ્થાન પ્રાપ્ત કરી લીધું, આજે એણ સૌરાષ્ટ્રમાં જ નહિ પરંતુ ગુજરાતનાં નગરો અને સુંવર્ષી, કલકતા, મદ્રાસ, દીલ્હી જેવા ભારતના શહેરોમાં આ કવિઓનાં દાયરા અનેરૂં આકર્ષણ જમાવે છે, અને તેના કંઠથી વહેતી કાવ્ય

सरितामां स्नान करवा अबाल बृद्ध श्रोताओं मंत्रमुग्ध बेसी रहे छे. रेडियो उपर आवतां आ कविथोना कार्यक्रमो सांभळवा जनतानो प्रत्येक वर्ग उत्सुक होय छे जुनागढमां भरायेली गुजराती साहित्य परीषदे पण चारणी साहित्य अने लोक-साहित्यने स्वीकृति आपी छे. अम छतां आखी चारण ज्ञाति आ पक व्यवसाय उपर निर्भर रही शके नाहि.

चारणो प्रथमथी ज जुदां जुदां व्यवसायमां ग्रस्त थथा छे. तेओ राज-दरबारमां महत्त्वनां स्थान पाझ्यां छे तेमज्ज वनवगडामां वसतां मालधारी तरीकेनुं जीवन पण जीव्यां छे. पशुपालन खेती व्यापार, राजसेवा आदि व्यवसायोमां तेओ पडेला छे, तेम समयनां वहन साथे तेओ लैकी घणां भाईओ बहेनोप केलवणी लई विश्वविद्यालयनी उपाधिथो पण प्राप्त करी आधुनिक समाजमां उच्चुं स्थान मेलव्युं छे.”

-श्री शंभुप्रसाद देशाई (महादान यशमाला)

“चारणोनां काम भणवु, भणाववु”, राज्य प्रजाना प्रतिनिधि तरीके आगेवानी करवी, राजा; राजा अने राजा प्रजा बच्चेना तक-रारो पताववी, धर्म वकील तरीके, वहादूर पुरुषोनां इतिहास लखवा, अन्येाक्रितधी उपदेश करवो, लोक मर्यादा, धर्म मर्यादानुं रक्षण करवुं, राजाना वकील के दूत तरीके पर राज्यमां काम प्रसंगे जबुं, न्याय आपवो, धर्ममंत्रीपणुं, कवि तरीकेनुं राजानुं आठमुं अंग, लोकप्रियता मेलबबी, धर्म अने ईश्वर भक्ति परायण थवुं, केलवणी आपवानो इत्यादि व्यवसाय हतो.

भारतमां राज्यशासन ज्यारे शक्तियोर्ना हाथमां हतुं अने शक्तियो उपर चारणनुं शासन हतुं त्यारे प चारणो देव तरीके, गुरु तरीके, विद्वान तरीके मान पानता प चारणोना विद्या, तपनो महिमा गणाय.”

-श्री पुरोहित गोरीशंकर गोविंदजी (चारण धर्म अने जागृति)

"लमभग चौदमी सदीना लेहियाल समयमां रजपृत राज्योनां
 वारंवार अनेक युद्धी लडवा पडता हता. तेओ वीरतापूर्वक
 युद्धोमां खणी पण जतां. आ रीते मरी अमर बनवामां पोतानुं
 गौरव मानता परन्तु अमनी वीरतानो इतिहास भूलावो न जोईप
 पक्की तेमनी झांखना रहेती, अटले पोतानुं नाम इतिहासमां
 कायम राखवानी तेमने तमच्चा रहेती. तेमना वंशजोने पोते
 करेलां वीर कृत्योनी सदा केईक झांखी करावता रहे तथा
 तेमनी वीरता अने पराक्रमेनो इतिहास बतावता रहे अे तेमनी
 अभिलाषा रहेती अने ते पूरी पाडवानी अपेक्षा तेओ कविओ
 पासे राखता. आधी तेमने तेओ राजदरबारमां सारुं स्थान
 आपता. तेओ चारणोना परिचयमां आव्या. तेमनी काव्य शक्तिशी
 मुग्ध बन्या. तेओने राजदरबारोमां आशरो आप्यो. चारणोथे
 पण पोतानी फरजो बजावी. तेमनां काव्यो अने दुहाओथी
 राजदरबारो ढोली उठता.

बीजी तरफ राजाओ अत्यार सुधी ब्राह्मणो पासेथी ब्रान
 मेळवता, पोताना बाळकोने केळवणी आपवा ब्राह्मण गुरुआ
 राखता परन्तु चौदमी सदीना लेहियाल काळमां अनेक युद्धो
 आवी पडता नानपणथीज बीजी युद्ध कळाओ शीखववी पडती
 तथा युद्धोना वातावरणमां बीजुं ज्ञान मेळववानो समय न मळतो
 आधी तेओप आ कार्य पण चारणने सोप्युं.

त्यार पछी तो युद्ध क्षेत्रोमां पण तेओ चारणोने हाजर
 राखता. तेओ पोताना वीररसभर्या काव्योथी सोन्यमां वीररस
 जगावता. ते द्वारा तेओ सोमां एक नवुं ज्ञाम निर्माण करतां.
 निर्माण्यने बळ आपता. तेओप वार्ता कहेवानी अद्भुत कळा
 हाथ करी हती. तेमांथी मानवीने ब्रेरणा मळती तथा बळ मळतुं.

युद्ध क्षेत्रमां चारणो आ रीते पोतानो अमूल्य फालो आपतां,
 परन्तु युद्धमां चारणो मराई जाय तो राजाओनी वीरतानी

गाथाओ के आलेखी राखे ? अने जो ते युद्धक्षेत्रमां हाजर न रहे तो सैन्यने वीरसना काव्योथी पानो के आवावे ? कदाच राजा वीरताथी मरे तो तेनुं दृश्य जोया बगर के आव्यां वर्णन करे वा उदेश्याथी चारणोने एक 'रेडकोस' जेवा स्वीकारवामां आव्यां. सौन्य लडतां पण चारणोने जान हानी करवामां न आवती. जो के संजागोवसान् चारणो पण केटलीकवार तलवारे लई युद्धमां उतरी जतां.

शांतिना समयमां दरेकने प्रिय एवां अनुरागनां प्रेरक काव्यो जाडतां के जे देशभरमां प्रिय बनतां अने युद्ध समये वीरसना काव्यो जाडता, तेमज दूहाओने काव्य उद्बोधन रूपे अगर वे व्यक्तिओना वारालाप रूपे रचता जो के तेमना मोटा भागना काव्यो दूहाओ रूपे ज रहेता.

चारणोना आ काव्यो मुख्यत्वे कंउस्थ दहता. जो तेमणे रचेलां सर्वे काव्योने लेखीत स्वरूपमां साचववामां आव्या होत तो राजपूत वीरोनो सळंग इतिहास मळी आवत.

चारणोना आवा कर्तव्यो बदल रजपूत राजाओ तेमने जीवाई माटे पोताना राज्योमांथी जागीरो अने गीरासे। भेट आपता. परंतु अनेक हुमला तथा युद्धोने कारणे राज्यो वारंदार बदलता रहेतां. तेथी तेमने मळेली जीवाई माटेना गामो पण राज्यनां नाश थतां ते पण खालसा करवानो भय रहेतो होवाथी तेओने आ जागीरो आजीवीका माटे कायमी आपवामां आवती अने ते कढी पण पाढी नहीं लेवामां आवे प शरत पण करी आपवामां आवती धळी आ रीते आपवामां आवती जागीरो खास करीने राज्यनी सरहद उपरना भागमां ज आपवामां आवती थेटले राज्य बदलाय त्यारे तेओनी जागीरो राज्यनां अंदर भागमां न रहेता पक तरफ अलग रहेती होवाथी रजपूत राज्यो एक वीजा उपर विजय मेलव्या पछी आ जागीरोने आंच करतां नहीं के

लूंटता नहीं, परिणामे आ जागीरो तटस्थ सीमा (Neutrality Zones) तरीके मनाती आने कारणे केटलीकवार पराजित राजाओं आ चारणोनो आशरो लेता अने त्यां संरक्षित थतां। केटलीकवार पेताना बाल बच्चां पण चारणोने भरोसे सोंपी युद्धनी तैयारीओमां जतां जो तेओ युद्धमां मरतां तो पण आ चारणो तेनां बाल-बच्चाओने उछेरता, तेमने युद्धनी तालीम आपता, तेओ मोटा थई बापना राज्यना हक माटे फरी युद्धे चढवाना पण दाखलाओ तेमना 'दोहाओ' मांधी मळे छे. एम कहेवाय छे के जोधपुर राज्य स्थापनार राव चुडाई ते कलाउ नामना चारणने त्यां उछ्यो हुतो.

चारणोमां बधा ज काई आ काव्यो रचवानो शुंघांधा करता नहोता. तेमानां घणा तो गोपालननुं अने पशुपालननुं काम करता, तेमनी गायो युद्धवीरोने शुद्ध धी पुरुं पाडती. तेमनी उछेरना अश्वो रणसंग्रामना काममां आवतां. आ रीते तेओनुं कार्य संग्रामने मद्दरुप थतुं."

-सौराष्ट्रनी पछात कोमो भाग-१.

"इस जातिने तत्कालीन व तदेशीय राजनीतिक सामाजिक व सांस्कृतिक जीवनमें अपार सहयोग दिया हैं। देशी राज्योमें रहकर क्षत्रिय शासकों के सन्धि-विव्रह में भाग लेना इनका प्रधान कार्य था। संकट की परिस्थिती में अपने कलम व करवाल से जन-जागृति कर वट संगठन स्थापित करना, तथा शान्तिके समय वाणिज्य-व्यवसाय करना इनके जीवन निवाह का साधन रहा। कई अपनी दिव्य शक्ति से काव्य-सृजन कर राजाओंसे पुष्कल पुरस्कार प्राप्त कर जागीदार बन गये। येक अेक लाख रूपये तक की जागीर इन्हें सम्मान रूपमें मिली। इसका ऐतिहासिक उल्लेख कई स्थानो पर मिलता है कि ये चारण लोग हाथी बोडे आदि पशुओंके क्रय-विक्रय करते थे।

जोधपुरके पाली गाँव में चारणोंका हाथी घोड़े का मन्दिर है जो पूर्वे मेर अश्वादि पशुओंके क्रय-विक्रय का केन्द्र था। यह जाति चूगी से मुक्तथी इस कारण इनका व्यवसाय भी बड़ा उच्चत्त था पर इस जाति का कार्य जनताका राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक नेतृत्व करना विधिमियो से लोहा लैने के लिए जनता में अश्रु और आत्म-विश्वास उत्पन्न करना, शत्रिय शासकों को कर्तव्य परायण बना उनका पथ प्रदर्शन करना, उनकी काव्यात्मक प्रशस्ति से क्रीति को धमर करना, युद्धोत्तर-काल में अनाथ, अशरण श्वात्रकुमार व राजकीय महिलाओं का अभिभावक संरक्षण देना ही था। इन्हीं दिव्य गुणोंके कारण उन्हें कई शत्रिय शासकोंने स्तिर्घ सम्मान में जागीरे समर्पित की। कई चारणोंने पोल-पात्र का कार्य भी किया। राजा अपने विश्वस्त व्यक्ति कों द्वार-रक्षक के पद पर नियुक्त करते थे। समस्त राजकुल के सम्मान मर्यादा व गौरव की रक्षा का भार इनके कन्धों पर रहता था। इस पोल-पात्र का दूसरा अपभ्रंश नाम बारहठ है। अधिकतर चारण अपनी काव्य प्रतिभा के कारण 'कविराजा' कहलाये।"

-श्री रघुवीरसिंहजी मेजर साहेब (वीरसतमई)

"चारणों सिधमांथी अनेक वाजु कच्छमां आव्यां, अने बीजी बाजु राजस्थानमां गया, जे जे पराकर्मी जातिथो शत्रिय तरीके राजस्थानमां ठेर ठेर थाणों अने सत्ता जमावती गई, तेमनी साथे कोई ने कोई चारण वर्ग के चारण कुटुंबो पहेलेथी ज रहेतां आव्यां छे, अने आजे पण राजस्थानमां प वर्ग मेाटा प्रमाणमां छे, अने मेाटे भागे पूर्वे परंपरा प्रमाणे आजीविका चलावे छे। कच्छमांथी अनेक चारण कुटुंबो सौराष्ट्रमां आव्यां अने उयां ज्यां शख्जीवी शत्रिय नामथी जाणीतो जातिए सत्ता जमावी त्यां त्यां ते चारण कुटुंबो ओछा वधता प्रमाणमां वसी गयां,

अत्यारे पण कच्छमां केटलांक गामोमां सुखी अने मातवर चारण कुटुंबे छे. सौराष्ट्रमां तो वधाय जिल्हा पवां छे के जे राज्याश्रित रह्यां छे; अने एमनुं मुख्य कर्म वाग्जीवन रह्युं छे. अनेक चारण कुटुंबे ते उपरांत खेती पण करे छे; अने गामडांओमां तथा नेसडाओमां पशुपालने पण हजी सुधी नभावता आवे छे. केटलाय चारणोने परापूर्वी जमीन के गामनी वशीस मळेली छे. सामान्य रीते केटलाक चारणो आश्रयदाता राजा, धन्त्रिय के जागीरदारना कवि तरीके पमनां चीर कर्मी गाई संभलावता अने मळतुं दान स्वीकारता.

परंतु चारणोमां पवा अनेक हता अने छे के जे सरस्वतीनी अने देवीनी कृपा उपर नमे, जाते-खेडे अने जातमहेनत करे, पण कोईनी पासे जाचवा न जाय. आवा लोको अयाची कहेवाय. पवा चारणोने जे जमीन के गामो पहेलां मळेलां ते कोई पराकर्मने कारणे अगर तो चारण-सुलभ कवित्वशक्तिने कारणे मळयां हशे. केमके ते कोईनी पासे याचना करवा तो जता नहीं. गमे ते हो पण आ वृतांत पटलुं सूचववा पूरतुं आण्युं छे के पराश्रित कोम तरीके जीववा करतां अयाची रहेबुं थेमां वधारे तेजस्विता अने पुरुषार्थी रहेल छे.”

-पंडितवर सुखलालजी (कागवाणी भाग ६)

“ज्यारे अमे मुश्केलीमां आवता त्यारे चारणो सहायता करता अने अन्दरे अन्दरनी तकरारोमां इन्साफ करवानुं न्यायधीशपणानुं कार्य पण चारणोने ज सोपातुं। चारणोनी वीके धन्त्रियों सीधा चालता, कारण चारण प सत्यवक्ता होत्राथी साचुंज कहेशे तेम डर रहेतो.”

-केप्टन जोरावरसिंहजी दिवान साहेब पन्ना स्टेट

“चारण जाति में प्रयुक्त चारण शब्दका अर्थ नेता संचालक व अगुवा से हैं।

महात्मा शुक्रात द्वारा प्रतिपादित राजशासनके पांच प्रकारोंमें से चारणजाति कुलीन शासन की पृष्ठपोषक थी। इसलिये उसके सभ्यों का राज दरबारों में सम्मान होता था। देशभक्ति और कर्तव्योपदेश को लक्ष्य में रखकर मौलिक रूप से पत्रों का संयादन भी चारण जातिने ग्रहण किया। इस जातिने राजद्वारों की रक्षा का कठिन कार्य हाथ में लेकर प्रतोलिपात्र की (पोलपात) की पदवी ग्रहण की। अपने उपदेशोंका असर चिरस्थाई बनाने के लिये उन्होंने कविता को अपनी अधिकार वाणी बनाया। चारण वीरोंने शासकों के साथ युद्धभूमि में प्राणार्पण किया। चारण देवियों के प्रताप द्वारा स्थापित राजपूत राज्यों और राज्यवंशों का शृंखलाबद्ध इतिहास चारणोंद्वारा ही बनाया गया।”

- डा. श्री किशोरसिंहजी सौदा.

“हुं चारणोने कोई बकीला (वेरीस्टरो) डेकटरो के कारीगरो बनाववा के बनेला जोवा नथी ईच्छतो। हुं तो चारणोने साचा चारणो (सरम्बती पुत्रो) बनेला जोवा ईच्छुं छुं”

- श्री झवेरचंद मेघाणी.

“रजवटरे चारण गुरु, चारण मरण सिखाय;
बलिहारी गुरु चारणः स्थिग तप सुरग मिलाय.
वे रणमें विरदावतां; वे झडता खग हुतं,
वे चारण किस दिस गया, किस दिस गा रजपूत.
हणवंत गिरनह तेकतो; जडी सजीवण लेणः
लछमन मुरछा खुलती, सुणतां चारण वेण.

- कवि श्री नाथूसिंहजी महियारिया (वीरसतसई)



[10] चारणनी बहुमुखी प्रतिभा

- १०.१ शामधर्मी, निःस्पृही चारण.
- १०.२ असिजीवी चारण.
- १०.३ दानेश्वरी चारण.
- १०.४ भविष्यवेत्ता चारण.
- १०.५ जामीन चारण.
- १०.६ धरणु-सत्याग्रही चारण.
- १०.७ 'रेड' पीती चारण आईओ.
- १०.८ मानवतावादी-विश्वकल्याणकारी चारण.
- १०.९ संतो-त्यागी-सन्यासी चारण.
- १०.१० साहित्यकार चारण.
- १०.११ आयाची चारण.
- १०.१२ स्वातंत्र्य संग्रामना सेनानी चारण.
- १०.१३ अश्वनां सोदागर चारण
- १०.१४ बहारवटिया चारण.
- १०.१५ वीररसना उद्गाता चारण.
- १०.१६ प्रश्नति सामे वाथ भीड़ता चारण.
- १०.१७ देहवीण वीरेना दान स्वीकारता चारण.
- १०.१८ उजळां मोतना मरजीवा चारण.
- १०.१९ पहाड़ामांय प्रसिद्ध चारण.
- १०.२० चारणनी मित्रता.
- १०.२१ चारणशातिनी कलाकारीगरी.

संस्कृतमां एक सुभाषित छे के “यत् मनसा मनुने तद् वाचा वदति, यद् वाचा वदति तत् कर्मणा करोति ॥” अर्थात् मनुष्य जेवो मनथी विचार करे छे, तेवो ज वाणीमां उच्चारे छे अने जेवो वाणीथी उच्चारे छे तेवो ज कर्ममां परिणमे छे.

चारणकुळनो अभ्यास करतां आ सुभाषित चरितार्थ थाय छे. चारणनी मनसा, वाचा अने कर्मणा शक्ति हरहंमेश परार्थ सद्कल्याण तरफनी ज रही छे.

चारणोथे स्वर्ग प्राप्ति के मोक्ष जेवी परोक्ष वस्तु सुख शांति माटे नहिं, परंतु जीवननी शुद्धि माटे सात्त्विकतानो स्वीकार करी हजारो वर्षधी भारतीय प्रजा जीवननी संस्कार भागीरथीनुं सिंचन करता रहीने नवयुगी समाज रचनाना निर्माणमां संस्कार द्वारणां बडे यशस्वी फालो आप्यो छे, अने पोतानां संस्कार वारसाने साचबता रहीने तेने समाज कल्याण अर्थे हमेशा बहेतो राख्यो छे. थेक वात निर्विवाद छे के समाज रचना गमे ते प्रकारनी रचाय तो पण देशनुं खमीर खानदानी अने संस्कृतिना रखेवालनी दरेक प्रजाने जरूरियातो उभी रहेवानी ज छे थे जरूरियातने लक्षमां लईने चारण युगना परिवर्तननी साथे साथे पोतानी प्रतिष्ठा हेम खेम जालवतो रह्यो छे.

चारण थेक कालमां मा सरखतीनी असीम कृपा द्वारा अनेक शास्त्रोनां सर्जन करी विद्यानो वारिधि कहेवायो, तेमणे अनेक प्रबंधोनी रचना करी छे, ऐतिहासिक वारोथो दुहाओ, छंदो अने काव्यो कंठस्थ राखी चारणोथे आपणा इतिहासनी सामग्रीने साचवी राखी छे, तेज रीते विविध विषयेनुं विविध प्रकारमां साहित्यनुं सर्जन करी देशनी अनुपम सेवा बजावी आगवुं ने अनोखुं स्थान मेलब्युं छे.

चारणज्ञातिमां अनेक योगमायाओप अवतार लई वार्य संस्कृतिनी रक्षा करी छे. आवा ओजसवंता दिव्य प्रभातथी चारणज्ञाति पूज्य गणाणी तेमज ज्यां ज्यां आ महादेवीओनो पवित्र प्रभाव जोवामां वाव्यां त्यां तमाम हिंदु प्रजाए पमनुं मान मरतबो जालवी पूजन-अर्चन कर्यां छे.

चारण पट्टले सत्यनो उपासक, व्यसननो विरोधी, दुराचार-
नो पुरे पुरो दुश्मन, वीरतानो पूजारी, तेमज संस्कृतिनो रखेवाल
रहो छे. युद्धना मोरचे परास्त थयेलां योद्धाने पोताना काव्य
वडे वीरताना पान करावी चिजयवंता वनाव्याना इतिहासमां
आपणने अनेक दाखलाओ मळी आवे छे, अनाचार आचरनार
चमरवंधीनी शेहमां दवाया सिवाय जीवन निर्वाहनी कंईपण
द्रकार राख्या सिवाय पवित्र जीवनना बले सत्य अने कडवा
वचनो कहेवामां पण पीछेहठ करी नथी, पट्टलुंज नहिं, अनीति
आचरनारनी सामे आकरी जेहाद उठावी अणनम योद्धानी माफक
छेवट सुधी जनुमी पोतानी जवावदारी अदा करी छे, पट्टले ज
चारणनी खोलाधरीने ईश्वरनो खोलो गणी भारतनी प्रजा आज
दिवस सुधी अनोधा मानपान जालवती आवी छे. चारणे सत्यनी
खातर के नेक-टेकनी खातर आत्मबलिदान आपवानी महान
शक्ति मेलबी न होत तो घमनी खोलाधरीनी कशी ज किंमत
न होत.

चारण संस्कृतिनो ज्योतिर्धर कहेवायो छे, कारण के ज्यारे
वनवासी अने ग्राम्य जनता शिश्रणनां क्षेत्रमां प्रवेशी न हत्ती त्यारे
चारण भाषा, साहित्य, व्याकरण, भूगोल, विज्ञान, इतिहास,
कृषि, वैदक वगेरे अनेकविधि विषयेनुं ते प्रजामां अभ्यास अने
संस्कारनुं सिंचन करतो रहेलो.

चारणाप संस्कृतिना उपासक प्रेरक अने प्रवर्तक तरीके विशिष्ट
कार्य कयुं होवाथी भारतनुं कविकुल तरीके अने सांस्कृतिक
ज्ञाति तरीके ओलखावा लागी. जे कुले भारतनी लोक संस्कृतिना
सर्जन, रक्षण अने विकास माटे आत्मविलोपन कयुं छे पने
एक केम के ज्ञातिनुं संकुचित जे स्वरूप आपणा समाजमां
अपायुं छे तेने काळनी विषमता के विचित्रता ज मानवी रही.
चारणज्ञातिनुं साचुं अवतार कृत्य तो समाजजीवन घडवानुं ते

ज्यां छे त्यांशी वधु ने वधु उंचे लई जवानुं ज रह्युं छे. आर्थी ज साक्षरत्वय् श्री मनुभाई पंचाळी लखे छे के “चारणो राजा अने प्रजा वच्चे कड़ी रुपे हता, राजानुं राज रहे, प्रजाना प्रश्नो पते ते तेमनो उदेश हतो, आजे थोडा माणसो राजा अने वधु माणसो सत्ता विहोणा छे, त्यारे आवी कड़ीनी खास जरूर छे.” डो. शंभुसिंह मनोहर सांप्रतयुगमां आ संस्कार धननी जरूरियात अंगे नेंधे छे के “आप दिन समाचारपत्रों में जब मैं हमारे अनेक युवां-युवतियों द्वारा आत्महत्या कर मरने के समाचार पढ़ता हूं तो मैं प्राय सोचा करता हूं कि इनके दूर्वल चरित्र और हीन संस्कारों का कारण कदाचित् यहीं है कि मैं यह दृष्टकंठ घोषणा करता हूं कि हमारे ये नवयुवक यदि बचपन में ही राजस्थान का यह वीरतापरक साहित्य पढ़ले तो वे चाहे और किसी तरह मरना भले ही पसन्द करले, आत्महत्या करके तो कभी नहीं मरेंगे।”

चारण अे शौर्यना उद्गाता हता, राष्ट्र अने नीतिनां संचालक हता प अंगे राष्ट्रीय शायर श्री झवेरचंद्र मेघाणीजी लखे छे के “पगले पगले बळीने इतिहासमां ठेर ठेर अबलोकन करतां आपणे पंद्रमां सैकामां पहेंचीप छीप, त्यारे तो चारण विषेनां उल्लेखानो पार नथी रहेतो. चारणोमां महामाया श्री करणीजीनोप जन्मकाल राजा हर्षवर्धन पछी भारतवर्षनी राजकारणी अकता अने अखंडितता तृटी पडी. सुस्लोमोनां आकमणो उपरा उपरी आव्यां. जाति संगठन विनष्ट बन्युं. ते वस्त चारण आजनी पनां नामनी यई रहेली व्युत्पत्ति (चारणन्ति इति चारणः) देशनुं के नीतिनुं जे संचालन करे ते चारण. स्व. श्री किशोरसिंहजी सौदानी प उक्तिने साची पाडतो, पडेला राजपूत कुलोने पड़कारतो, तेमनी गुम शक्तिओने पुनः संगठित करतो, मुख्यत्वे राजस्थानमां ज खडो थयो. पनी हाकलथी-पोकल

हाकलथी ज नहिं, पण एनी सहदुःखी वनवानी तेयारी वडे. राजपूत कुळो पुनः जाग्यां; नवेसर स्थपायां, जाति कुलाभिसानो प्रमत्त बन्यां, आक्रमणकार मुस्लिम कुळोनां सेवणां वधु सामग्री युक्त बळोनी सामे साधनहीन क्षत्रियने खडो राखनारी चेतना ते वखते चारणे वाणी रूपे पूरी पाडी. ए वाणीनो वाहक पोते पण जो नेक-टेकने ईमानवाळो न होत तो राजपूतो तेने भाग्येज पडव्यो आपत. एनामां देवत्वनुं आरोपण न थयुं होत तो पण पडेलो क्षत्रिय भाग्ये ज एनां नर्या प्रशस्ति-शब्दो पर वेठो थात. चारण पोतानी जीभना वृंगीया होल पीटीने बेगळो रहो होत तो कदाच क्षत्रियो मरवा-मारवानो तमच्चा प्यालो पीवा तत्पर न पण बनत पटले चारण कुळ अने चारणी कविता आठमी अने चौदमी सदी वच्चेना एनां सुवर्णकाळमां राजपूत कुळना क्यारामां ज रोपायेलुं, अने राजपूत रूधिरने नीरे ज सिन्चायेलुं रूखहुं हतुं. ए दूर ऊमेलो साहित्यकार नहोतो. राजपूत-जातिना परजातिओ साथेना भयानक संघर्षेमां चारण पण ओरायो हतो, जीवननी कठोर कारमी वास्तविकतानो सामनो करतो ए क्षत्रियो साथे खमो मिलावीने खडो हतो. कविता ए पनो व्यवहार के व्यवसाय नहिं पण पनो संस्कार हतो; स्वभाव हतो, कविता एना मस्तकमांथी नहि पण रक्तमांथी उछलती, बापना शोणितमांथी बेटानी नसेामां सिन्चाती, पेढीनी पेढी शोणितमां संचरती, अने एनी पुत्रीओ, वहुओ, जनेताओ राजपूतोने मन पूजनीया, जेगमाया, देवी-अवतार हती संस्कृत भाषानां प्रचंडवेगी युगोना आघात सामे, ब्राह्मणोनी परंपरा सामे, सवैनी सामे. चारण पोतानी डिगळी वाणी लईने टकी रहो तेचुं पक कारण एनुं चारित्र्य गौरव.

चारणे वाणीने साचवी छे. इतिहासने रक्षयो छे, उमिओना वहुविध प्रदेशोने लाड लडाव्यां छे, प्रकृतिने, प्रभुने, स्वर्घर्मने,

जाति उत्थानने अने जन्मभूमिने पोतानी अनोखी छटा बडे आराधेल छे. चारणमां शुं न हतुं? तेवा नकारात्मक बलणथी नहि पण पोताना परिमित संयोगो बच्चे पणे केटली विशिष्ट ने विलक्षण संस्कृति सेवा उठावी छे, तेवी हकारत्मक तुलाण तोळशुं तो प आपणने निराश नहि करे.

चारण जातिनो इतिहास अने चारण जातिप सज्जविल विपुल विद्या मात्र विपुलताने के मात्र पुरातनता ने हिसाबे आपणा नवविधानमां निरर्थक छे. मात्र ये ये ज गुणो पर कोई अमुख बनवानुं नथी ए बेथी विशेष-घणुं विशेष-संस्कारधन अने इतिहासधन पमां अणप्रीछयुं पडेल छे.”

(चारणो अने चारणी साहित्य)

१०.२ शामधर्मी, निःस्पृही चारण :-

चारण हमेशां राज्य मेलवी आपवामां मद्द करतां आव्यां छे, तेम मेलवी आप्यां पण छे. अम छतां पोते थे राज्यनां मालिक थवामां मानता नथी. चारण शामधर्मी जाति छे. समाजना प साचा प्रतिनिधि तरीके जीवी रहां छे. अन्य जातिवाला जे बलवान अने बहादुर थयां तेणे पोताना राज्यो स्थाप्यां छे. पण चारणोथे तेम कर्यानो क्यांय उल्लेख इतिहासमां मल्तो नथी. चारण हमेशां निःस्पृही, त्यागी, राजभक्त अने ईश्वर थ्रद्धालु हता. पोतानां परिश्रमबले राज्यो मेलव्यां छे, त्यां त्यां खानदान अने श्वाचत्वनी ओजस्विनावाला राजकुलोने राज्यकर्ता स्थापी आर्यविर्तनी महान सेवा बजावी छे. ए आवां उमदा कायेनो राजपूतानानो मध्ययुग चारणना कीर्तिसागरनुं महागर्जन संभलावतो उमें छे.

“भगवती आवडने परमार राजपूतोंके सुमगा शाखाका ध्वंस कर भाटी और जाडेजा राजपूतोंके बडे राज्य स्थापित

किये। इसी कारण यह उनकी ईश्वरदेवी गिनी जाति हैं। एक प्राचीन डिंगल दोहा प्रसिद्ध हैं

आवड तठी भाटियां, कामेही गोडांह ।

श्री वरवड सीसोदियां, करनी राठोडांह ॥

चारण जाति में उत्पन्न श्री आवड, कामेही, वरवड और करनी शक्तियोंने क्रमशः राजपूत जाति की भाटी, गोड, सीसोदिया और राठोर शाखाओं पर प्रसन्न होकर उनके बडे बडे राजयों की स्थापना की ।” - मेजर साहेब श्री रघुवीरसिंहजी (वीरसतसई) आज रीते चारण्य आईथोना आशीर्वादथी राजपुतोथे घणां राज्यो मेलब्यां छे अने टकाब्यां छे.

सौराष्ट्रना भावनगर राज्यना गोहिलकुलने आईश्री खोडीयार मानुं मोटुं शरणुं हतुं शिहोरनी गाढी आईश्री खोडीयार माने प्रतापे ज पाम्या हता तेवुं माननारा गोहिल राजाओ आ ज दिवस सुधी खोडीयारमाने पुजता आब्यां छे. जामनगर राज्यनां जाडेजाओ आई श्री आशापुरानी प्रेरणाथी ज जामनगर राज्यनी स्थापना करी हती. कच्छमां तमाचीजीने आशापुरामाप भुजनी गाढी पर बेसवानी आज्ञा करी हती. आई श्री वरुडीजीना पुत्र बारुजी सौदा आईश्रीना आदेशाथी पांचसो घेडां अने चारण वीर योद्धाओ लईने महाराणा हम्मीर साथे बादशाह अल्लाउदीन सामे लडीने चितोडनुं परगणुं पाढुं मेलब्युं हतुं.

सने १३८३ मां राठोड वीरमदेवजीनुं मृत्युं थतां तेना वंशजोंने नष्ट करवाना प्रयत्न थवा लाग्या त्यारे वीरमदेवजीनी राणी मांगलियाणी तेनां ज्येष्ठ पुत्र चुण्डाने लई कालाऊ गामना चारण आलहाने त्यां आशरो लीथो हतो. आलहा रोहडियाप बार वर्ष सुधी राजकुंवर अने राणीमाताने पोताने त्यां आशरो आपी, मंडोवरनी राजगाढी हस्तगत करी, चुण्डाने मंडोवरनी गाढीप बेसाडयो हतो

चूंडा नावै चीत, काचर कालाऊ तणां ।

भड थायो भै भीत, मंडेवररा मालिह्याँ ॥

उदयपुरना युवराज मानसिंहने माटे जाडा चारणे दिल्ही
जईने अकवरना बझीर खानखाना अदुल रहीम पासेथी जहासपुर
तुं खालसा परगणुं लखावी लावी मानसिंहने आप्युं हतुं.

बालु उडना आई जेतवाईनां आशीर्वादथी बालुवडनी गादी
वेराजीनां राजकुंवरने पाढी मळी हती. छत्रावा (घेड) ना आई
सुंदरवाईनी आशिपथी छत्रावा गामनुं तोरण बखरला गामना वैदे
खुंटीए बांध्युं हतुं. तेनां बंशाज आजे पण छत्रावा गाममां रहे छे.

जोधपुरना महारजा मानसिंहजीने संकट समयमां भेरुदलजी
चारणे पोतानी तमाम माल भिलकत आपी राजगादी मेलववामां
मदद करी हती.

सिंद्र कविको सिंधका सब राजदीना संपति ।
हे वंश उच्चड हाल पच्छम कच्छ धरणी के पति ॥

जेसलमेरना गादीवारस अखेराजने उज्ज्वां गामना सिंहायच्च
कान्हा कविराजे तेमना घरे आशरो आपी जेसलमेरनुं राज्य
मेलववामां मदद करी.

गुजरातना कविराज कहानदासजी महेझण अनेक आफतो
सहन करीने पण लुणवाडा राज्यने मदद करी आवाद राखेलुं.
अंग्रेज सल्तनतनो असह्य त्रास कविराजने सहन करवो पडेलो,
तेम छतां राज्यने वफादार रह्यां हतां.

कविराज हुंगरशी रत्नुप हरि नामनो किंमती अश्व मल्हार-
राव गायकवाडने आपी तेना बदलामां बेतालीश गामो मेलवी
प गामो किलोरीना कीकाजी सोलंकीने आप्यां हता.

मेवाडना महाराणा संग्रामसिंहजीप चारण कविराज हरिदासजी महियारियानी चिछता, पवित्रता, निःस्पृहता, सच्चाई अने परोपकारवृत्तिशी खुब प्रभावित थई पोतानुं मेवाडनुं समस्त राज कविराज हरिदासजीना चरणोमां समर्पित करी दीधुं. परंतु हरिदासजीप्रेमधी निःस्पृहभावधी ते परत कयुं हतुं.

‘शिरोहीना महाराजा अखेराजजीप कविराजने शिहोरनुं राज्य महेशदानन्दीने भेट आप्युं परंतु कविराजे अस्वीकार करी पाहुं आप्युं हतुं.’
—लखुभाई बेन, गढवी.

जामनगर राज्यना मुख्य वजीर मेरु खवास आमरणना संत भीम साहेबने (जे पूर्वाश्रममां चारण हता) एक हजार कोरी चरणे समर्पण करी. ए कोरीने हाथ पण अडाडीया सिवाय भीम साहेबे कह्युं के “आ कोरी तमारा हस्ते ज आ गरीबोने, हरिजनोने वहेंची आपो, हुं तो अपरिग्रहव्रती बन्यो हुं.”

सौराष्ट्रना भीमडाइना दरबारनुं विनवारस मृत्यु थतां तेनुं राज्य एक चारणे मेराम खाचर अने भटलीचाळा काठीओने अपाव्युं हतुं.

मारवाडना मोघडा गामना कविराज हरिदास अचलदास सिंहायचने टोडरमल राजाप पोतानुं उदैपुर परगणुं आप्युं परंतु कविराजे तेनो अस्वीकार करता कह्युं के “हुं शत्रियोनो वैभव वधारवामां मानुं हुं, छीनवी लेवामां नहीं.” छतां टोडरमले अति आग्रह कयों त्यारे कविराजे केटलाक गामो ब्राह्मणोने दानमां आपी टोडरमलनुं मान राख्युं. टोडरमले कविराजनी पालखी बे माईल सुधी उपाडी पोतानां राज्यमां कविराजनी पधरामणी करावी हती. टोडरमलना पूर्वज खेंगारे तो चारण कविराजना हाथनी कशाघात खाईने प्रसन्नता प्रकट करी हती. टोडरगलनी उदारता सज्जनताथी प्रभावित थईने कविराज हरिदासजीप कह्युं के :

देय उदैपुर ऊजळां, दुहुं दातार अवलु ।

इकतो राणो जगतसी, दूजो टोडरमलु ॥

जामनगर राजवी जाम विभाजीए दरबारमां ढांक गामना कविराज कलाभाई उद्धासने शराब पीवानो आग्रह कर्यो. पुष्टि मार्गी कविराजे तेनो अखीकार कर्यो. जामसाहेबने अपमान जेबुं लाग्युं पटले विशेष आग्रह करी प्रलेभन आप्युं. कविराजने प्यालीने हाथना स्पर्श करवा बदल अेक गाम आपवा लाग्या, त्यारे टेकीलो चारण कवि जाम विभाजीनी कचेरीने छेल्ला जुहार करी हाली निकल्यो. जींदगी पर्यंत ए कचेरीए न गया. ए कविराजने भगवान कल्याणराये सातोदडमां प्रसन्न थई हाथमां कडां आप्यां. कविराजे अे कडां प्रभुने चरणे पाळां धरी दीधां. शेष आयुष्य प्रभु भक्तिमां बीताव्युं हतुं.

लींबडी राज्यना राजकवि श्री जीवाभाई वीसाभाई शामल मस्तकविने लींबडी राज साथे मतभेद थनां केटलाक राजाओ पोताने त्यां आवी रहेवा निमंत्रण मोकलवा लाग्या. अे सौने मस्तकवि एकज जवाब आप्यो के लींबडीनां राज सिंहासन साथे मारां लग्न थई गयां छे अने पुनःलग्नमां हुं मानतो नथी.” ध्रांगध्रा राजसाहेब स्व. घनदयामसिंहजीनो विशेष आग्रह थतां दुहो लखी मोकल्यो के :

मही मथे घृत ना मिल्यो, छाश मथे का होय,
जैसी हो भवतव्यता, रह्यो मस्तकवि रोय.

कविराज लाखाजी रोहडिया अंतर्वेद (गंगा-यमुना बच्चेनो प्रदेश) मां रहेता हता ते समये जोधपुरना मोटा राजा उद्यासिहे चारणेना गाम गरास जस करवानुं अनीतिभयुं काम करेल. ए महाराजा ज्यारे मथुरामां लाखाजीने मल्लवा गपलां त्यारे लाखाजीए तेमने मुलाकात आया न हती.

“चारणोने चरणे सत्ता लक्ष्मी अने राज्य पण अर्पण थयेलां परंतु पनाथी निर्लेप रहेवानुं ज थेमणे पसंद करेलुं. चारणमां आ निष्काम कर्मयोग, आ निर्लेपभावना भारेभार भरेलां हतां पटले ज पूज्य गणवामां आवतो, अटले ज प सौनी पूजानुं पात्र बनेलो.” —श्री पृथ्वीसिंहजी जाहेजा (चारण)

१०.२ असिजीवी चारण :-

चारणोंथे भारतवर्षने वीरधर्मनुं दर्शन कराव्युं छे. अशोर्यना तेज किरणोना कथा प्रसंगो सो कोईने मुग्ध प्रशंसक बनावी दे छे.

काया जाजा सावदी, नाक म जजो नख्ख,

पाणी म जजो पावळुं, लाही वह्या जाय लख्ख.

‘चारण जानि केवल मसिजीवी हो असा नही. वह समय आने पर असिजीवी भी बनी हैं। यह कलम के साथ-साथ तलबारकी धनी भी थी। अपने राष्ट्र व स्वामीकी रक्षा-हित रण-प्रांगण में प्राणोकी होली खेलना भी इसने सीखा था। ‘वीर विनोद’, ‘चारण कल्पतरु’, ‘वंशभास्कर’, ‘चारण चमत्कार’ ‘राजपृतानाका इतिहास’, ‘यदुवंश प्रकाश’, इत्यादि ऐतिहासिक ग्रंथो के आधार पर निम्नलिखित कुछ साक्षीभृत दृष्टांत हैं। जिनसे इनकी राष्ट्र-सेवा तथा राजनीतिक में सहयोगका पूर्ण प्रमाण मिलता हैं।

सन् १३११ में दिल्ही के सुलतान गलाउदीन खिलजीने जालोग के राजा कानरदेव सेनांगा पर आक्रमण किया। कानरदेव के साथ उनके सेनापति चारण सहजपालजी गाडणने रणमें शौर्य प्रदर्शित कर स्वामी के साथ वीरगति प्राप्त की।

सन् १४४४ में रिडमलजीके चितौड़ में मारे जाने पर मण्डोर पर सीसोदियोंका अधिकार हो गया। राव जोधाजी मरुस्थल में

दिन बिता रहे थे। उनकी वहन रानी हंसबाईने चितौड़ से दूलाजी आशिया के हाथों अपने भतीजे को मण्डोर पर पुनः आक्रमण करनेका गुप्त संदेश मेजा। दुलाजीने निढ़र हो जोधाजीको मरुस्थल में ढूँढकर यह गुप्त संकेत दिया जब कि वे श्री करणीजीको आदेश माँग रहे थे।

सन् १८४४ में जोरशाह ने जाधपुर के महाराज मालदेव पर आक्रमण किया। चारण भनाजी रवेतावत अपने स्वामी के साथ शत्रु से वीरतापूर्वक युद्ध कर वीर-गति को प्राप्त हुए।

सन् १८५० में विश्व विख्यात हल्दीघाटीके युद्ध में अकबर की सेना के साथ महाराणा प्रताप की और से वीरवर रामाजी, सांदू, सोदा वारहठ केसाजी, जेसाजी लडे तथा अपने प्राणोंसे राजस्थान के यश को अमर किया।

सन् १८८३ में दतानी के मैदानमें बादशाह अकबर की सेना और सिरोही के राव सुरतान के बीच युद्ध हुआ। उसमें प्रसिद्ध दुशाजी आढा मुगल सेना के मुख्य सामन्त थे। वे वीरतापूर्वक लडते हुए युद्धमें आहत हुए। जडाजी महेड़ और ईशारजी वारहठ युद्धमें लडते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए। महाराज सिरोही की और से दूदाजी आशिया लडे उन्होंने अपनी धनुर्विद्या से शाही सेना को तितर-बितर कर दिया था।

सन् १८७३ में बादशाह अकबरने गुजरात पर आक्रमण किया। मुगल सेना में विख्यात वीर हापाजी चारण थे। जो बड़ी विरता से लडे। 'मरज-प्रकाश' के रचयिता कविया करणीदानजी, जाधपुर के महाराज के साथ दक्षिण भारत के विद्रोह को शान्त करने के लिए औरंगजेब के आदेश से गये, अभयसिंहजी वीरतापूर्वक लडे तथा विजय प्राप्त की।

महियारिया हरिदासजी, देवीदासजी, लक्ष्मीदासजी आदि ने अपने समकालीन राजाओंके साथ जिनका वर्णन आगे किया

जायेगा उनके शत्रुओं से लोहा लिया। नर्जी सौदा अपने सभी पुत्रों सहित औरंगजेब से लड़ते हुए वडी पोल (उदयपुर)में काम आये। इसका स्मारक अभी तक त्रिपालियाँ (राज्यद्वार) के सामने स्थापित हैं।

बादशाह औरंगजेब आमेर के विख्यात वीर मिरजा राजा जयसिंहजी के साथ विश्वासघात करना चाहता था, पर जगन्नाथ रत्न द्वारा रहस्याद्घाटन करने पर औरंगजेब को अपने पड़यन्त्र में निष्फल होना पड़ा।

महामाया बरवडीजीके पुत्र बारुजी सौदा महामाया के आदेशानुसार पांच सौ धोडे लेकर महाराणा हमीरके साथ बादशाह अलाउदीन से लड़े।

महाराजा भीमसिंहजी ने जाधपुर के महाराजा मार्त्सिंहजी को मारनेके उद्देश्य से जालेार के किल्ले में घेर लिया, जिस में उनके साथ सत्रह चारण भी घिरे रहे। उन्हेंने वीरता से युद्ध कर स्वामी की सुरक्षा की।” -मेजर साहेब थ्री रघुवीरसिंहजी

उदयपुरना राजकुमार जगसिंह शिकार करवा जंगलमां गया हता ते समये कोई दुश्मने तेनां भाईना खूननो बदला लेवा अचानक छापो मारी जगसिंहनी हत्या करवा खडगनो धा कर्यो तेवो ज दधवाहियाना चारण खेमराजे पोतानो धोडो उंचो करी खडमना धा थ्री जगतसिंहनु रक्षण करी, दुश्मनने ठार कर्यो।

राजकोटना महेरामणजी त्रीजा सांजनी मसालवेलानी कचेरी भरी भाईवंधो साथे बेटा छे. त्यां पठाण जमादार आवयां पटले “आवो जमादार” बेटलुं बोली ठाकोर आदर आये छे, त्यां तो पठाणे निदेष ने निःशख ठाकोर उपर तलवार खेंचीने धस्यो. ए ज घडीप ठाकोरना देह उपर झाटको पडत, एण ते पहेलां तो आडो एक हाथ देखाणो, एक कटार झवुकीने पठाणनी

ठातीमां पड़ीने जीव लईने बहार नीकली गई. ठाकोरने थे बचावनार हता कविराज जेसांजी लांगा. “गहवी तमे तो मारा प्राणदाता छो.” एम कहीने ठाकोरे ‘कटारीनु’ कीर्तन’ प नामनुं काव्य अज घडीप रचयुं.

वि. स. १६३९ मां जाम ससाजीप मुसफरने रक्षण आपता. सुबो मीरजा अझीझ कोका जामनगर राज्य उपर सैन्य लईने चडी आव्यो, त्यारे चारण परबतजी वरसडाप नवानगर राज्यना दरेक गाम जईने वीरतानापान करावीने युद्धनी यज्ञवेदी माटे नवयुवानोने भेगा करी नागडा वझीरनी आगेवानी हेठल भूचर मोरीना रणभेदानमां मातृभूमिनां रक्षण माटे लडवा माटे लाव्यां हता. ईसरदासजीना पुत्र गोपालदास बारहठे पांचसो त्वंबेल चारणोनी आगेवानी लई युद्धने प्रथम दिवसे परबतजी वरसडा सहित अपूर्व शोर्य बतावी वीरगति पास्या हता. चारण योद्धाओना असाधारण पराक्रम जाई कोका बोली उठयो हतो के जेमनी पासे आवां चारणो छे तेने आपणे केवी रीते जीती शकीशुं? धन्य चारणोने के जेमणे पोताना धणीनुं निमक उजाळी पृथ्वी पर पोतानुं नाम अमर कर्युं” आ युद्धमां कुंवर अजाजी वीरगति पामतां तेमनी पाघडी लई गोपाल बारहठ जामनगर जई राणीने सुपरत करी. राणी भूचर मोरीना रणसंग्राममां आवी सती थयां. गोपालजी बारहठ शत्रुओनो कचरघाणवाळी पोताना शरीर उपर बावन था झीलीने स्वर्गमां संचर्या. तेमनो पाठीओ आजे पण भूचरमोरीना रणभेदानमां उमो छे.

वि. स. १७३६ मां औरंगजेबे उद्यपुर उपर चडाई करी बादशाहना सैन्यना सेतापती ताजखा अने रुहिकखाप उद्यपुरना मंदिर तोडवा माटे गया त्यां ते चखते सौदा बारहठ नरुनी आगेवानी हेठल वीस चारण शूरवीरो बादशाहना सैन्य सामे लडीने वीरगति पास्या हता.

नळकांठाना वीरमगाम तालुकाना वासवा गामना चारण
हजोभा टापरियाप द्वारकानी यात्रा करी पाढा बळतां संघने
लूंटतो वचावीने पोते बलीदान आप्युं हतुं.

अहमदावादनो महमद बेगडो त्रीजी वस्त जुनागढ उपर
चडाई (सने १८६९ मां) करी. रामांडलिके वीरताथी तेनो
सामनो कयों, परंतु विजयनी कोई आशा न जणातां तेना पुत्रोने
अने राणीओने वाई नागवाईना पुत्र सोंहदरने सोंपी युद्धमां
केशरियां कर्या. सोंहदर राजपुत्रो, राणीओने लईने सोमनाथ तरफ
रवाना थयो. महमदशाहनो विजय थतां राजपुत्रोनी अने राणीओनी
शोधखोळ शरू थई. लकरे सोंहदरमो पीछा कयों. सोंहदरे
राजपुत्रो अने राणीओने सुरक्षित करी पडाणेनो सामनो कयों.
एकसो पचीस चारण आ युद्धमां लडीने वीरगति पाम्या. सोंहदर
अपूर्वताथी लड्यो. तेनुं शीर पडयुं ने घड लडयुं. मेंदरडाना
पावरमां सोंहदरना शीरनी अने मेसवाणना मार्गमां षनां घडनी
खांभी छे. रामांडलिकना वंशजाथे तेनां जीवतदातानां नाम
उपरथी सोंदरडा गाम वसाव्युं ते आजे पण आ वातनी साक्षी
पुरे छे.

रामांडलिकना सोरठी राणीओने घुमली पहोंचाडवानी
जवावदारी वजाभी उढासने सोंपाई हती. वजाभी उढास
चारणो योद्धाओथी सुरक्षीत राणीओने लई जता हतां.
महमदशाहनो विजय थता सैन्ये वजाभीनो पीछा कयों.
तणसवा गामे सैन्यनो अने वजाभीनो भेटो थयो, एटले वजाभी
उढासे राणीओने अन्य चारणो साथे वागळ रवाना करी, पोते
एकले हाथे आखा सैन्यने रोकी राखी वीरगति पाम्यां. आजे
पण वजाभी उढासनो पाळ्यो तणसवा गामे मोजूद छे. आ विशे
एक दोहो पण मळ्यो छे.

वजा उनाळा वजीया, भाराउत सूत भाण,
चड्या (दांक) देरंगा, उपरे, अणजाडा अहराण.

आंवरडी गामनां गामधणी चारण वीहळ रावो स्वमानी
शूरवीर अने टेकीलो चारण हतो. ईश्वर अने जोगमाया सिवाय
कोईने न नमवानी तेनी टेक हती. अहमदावादनो सुलतान तेने
नमावदा कोज लईने चडी आव्यो. विहळ रावो अने तेना
भाईबंधो के जेमणे साथे जीववा अने मरवाना कोल दीधा हता.
ए भाईबंधो सुलतान साथे वीरताथी लडी बेकज्ज मृत्युं कुंडा-
लामां सौ आवी वीरगती पास्यां. विहळ रावो सुलतानना
हाथीना दंतशूल उपर पग दईने सुलतानना शाहजादा मोहवत-
खानने मायी केटलाय योद्धानो खूडदेह बोलावी मृत्युं कुंडालामां
आवी प्राण छेडयो. वारमो भाईबंध तेजरव सोयो चारण
चहारगामथी गाममां धावतां आ समाचार सांभळतां ज अगियार
भाईबंधोनी सलगती चितामां ॐ नमः शिवायना जाप जपतो
बेसी गयो. आजे पण आ वीरेनी आंवरडीमां तेनी खांभीओ
साक्षी पूरे हो.

चौद सवंत पांसठ सरस, प्रसध वखाणे पात्र,
अणदन वीसाण अवतर्यो, चारण व्रज कुल सात.

निशाणी

वीहळ पृछे ब्राह्मणां सुण केसव कंधाला.
कण पगले खग पासीअं पशतक नैयाला ?
कुँडे मरण जे करे, गले हेमालां,
करवत भेरव करे शीखळ शखाला,
त्रिया त्रंवास आपतळ जे मरे हडाला,
ते वर दियां वीहळा खग थिये भवाला.

विहळ रावानो पुत्र वाशीआंग रावो पराकर्मी अने टेकीलो
चारण हतो. चोटीलाना दरवारनु माथुं वाढी जनार जूनागढ
नघावनां सैन्यना सरदारनुं जूनागढनी भरवजारमांथी माथुं
उतारी वाशीआंग रावाण चोटीलानी राणीने पगे धर्युं हतुं.

पोताना पूर्वजोने सृत्युमां होमनारा ओने वाशीयांगे भाले चंडावी
मोतना घाट बताव्यो हतो.

साणंद परगणाना राणेसर गामनी एक ब्राह्मण कन्याने
बोडी मोगल उपाडी जतो हतो त्यारे रळिया गढवी मूळीना
लखधीरसिंहजी साथे बोडी मोगल सामे लडी ब्राह्मण कन्याने
छोडवावी हती.

जामनगरना महाराजा रावळजामने अमदावादनी शाही
कचेरीमां निःशब्द अेक साथीदार साथे उपस्थित रहेवानो आदेश
थयो. जाम रावळे गारंभडी गामना चारण हरदास वाचा साथे
कचेरीमां उपस्थित थयां. कचेरीपथी पाढा वळतां जाम रावळे
हरदास वाचाने पूछयुँ “निःशब्द हतां ?” तेना जवाबमां हरदास
वाचाप खुल्ली कटार काढी बतावी. जाम रावळ मनोमन
चारणने बंदी रहां.

जामनगर राज्यनी स्थापनामां, रक्षणार्थी, विस्तार वधारवामां
तूंबेल शाखाना १२०० माथा काम आव्यां हतां. जाम रावळ
कच्छधी हालारमां आव्या त्यारे तेमनी साथे सोन्यमां मोटा
भागना चारण योद्धाओ हता.

वाराडीना गारंभडी गामना चारणाने जाम रणजीतसिंहजी
तरफथी गामना गरास उपर सलामीनी रकमो भरवानो हुकम
थयो. चारणोअे अे हुकमनो अनादर कये. पट्टले जाम
रणजीतसिंहजीअे चारणो सामि विश्वासघात करी बळेच-मकरा-
णीनी फोज मोकली. चारणोअे टांचा हथीयारेवडे फोजनो
वीरताथी सामनो कये. परंतु फोजना आधुनिक साधनो सामे
मोटा भागना चारणो वीरगति पास्यां.

गौयदजी साँदूप राव गांगार्जानी साथे युद्धमां लडीने
वीरगतिने प्राप्त करी हती.

'कच्छना झारापरनी लडाईमां लखाजीना सौन्यमां पूजो,
सूजो लखमण अने कल्याण नामना चारण शूरवीरोअे सिधना
गुलामशाहना लक्षकरने त्राहिमाम त्राहिमाम करी दीधुं हतुं.

'सं. १८६४ मां कच्छ रायधणपुरना शंकरदास धरमदास
नामना कविराज पट्टावाजीमां प्रवीण हता. तेओ राजपूत वीरोने
पट्टावाजीनी तालीम आपता.' (कच्छदर्शन)

मावळ सावाणीना पुत्र घुघरारो महान शूरवीर हतो.
कच्छ वागडमां आयरनी जान लुंटाराशी लुंटती वचावी पोताचुं
आत्म बलिदान आप्युं हतुं.

मारवाडनी लृणी नढीने कांठे जाजोसण नामना गाममां
सौराष्ट्रना चारण सोदागरोअे बाळदु वेसाडयुं हतुं. गामना
चारण आगेवान धनराज लाळसे चारणोने गाममां तेडी जई
उत्तम मिजवानी करी प दरम्यान गडानगरना वळीरो चेर
बनीने चारणोनो माल चोरी गया. गडानगरना रावजीने चार-
णोए खूब समजाव्यो पण मान्यो नाहिं आथी सत्यनिष्ठा खातर
अने स्वजातिने माटे धनराज लाळसे गळामां कटार पहेरी
आत्मबलिदान कर्युं. तेमना कुटुंबीजनोप कायमने माटे प
गामनो त्याग कयो.

गिरनी पहाडी बनराईमां खोखरा गामना दरवार मोनाजीप
एक कुंभारना छोकराने उझेगीने मोटो कयो. जुवान थतां गाममां
त्रास रूप थई पडयो. ते छोकरानुं नाम केशवो पाडेलुं. केशवो
गाममां जे कोई आंगतुक आवे तेने परेशान करे परंतु मोनजी
दरवार तेने कशुं कहे नाहिं. अेक दिवस बीजा आपा नामनो
मालधारी चारण गाममां आव्यो. दरवारे आदर सत्कार आप्यो.
चारणथी केशवानो गाम उपरनो त्रास जोवायो नाहिं. पोताना
दुधमलिया दिकरा पुनरवने केशवा सामे मळयुद्धमां उतारी
गामने केशवाना त्रासमांथी मुक्त कर्युं. -श्री बापलभाई गढवी.

चारणोनी धोरी नसमां शौर्य सतत वहेतुं रहेतुं आश्रीज
चारण थेटले दोढ शूरो. मार्या मर्यानी ज चात. राजा महाराजा
सामे पण पडकार केंके पवी अटकु कुळ. एनी बलिदाननी
परंपरानी धाक सर्वेत्र सुप्रसिद्ध छे. छंडेडवामां आवे तो आत्म-
बलिदान करे, गले तलवार नाखे, पेट कटारी नाखे अने तेलियो
डगले पहेरी अगनजवाला प्रगटावे, एनी आळ करवी थेटले
सर्पना दरमां हाथ नाखवा जेबु आबुं कारमुं शौर्य आठलुं
अने आबुं एकज कुळमां पकी साथे होय तेबुं जगतमां अन्य
कुळोमां गोत्युं जडतुं नधी.

माथा साटे मूळवी, जीवन जेनां जाय,

पृथ्वीमां पंकाय, मैंघांमूळा मानवी.

१०३ दानेश्वरी चारण :-

धनकुं उंडा नह धरे, रणमें खेले दाव,

भागी कोजां भेडवें ताकुं रंग चडाव.

मारवाडना मोघडा नामना गामना कविराज हरिदास
अचलदास सिद्धायचने मेघाडना महाराणा प्रथम जगत्सिंहे
लाखपसावधी सन्मान कर्युं त्यारे प.ज दग्वारमां कविराजे
लाखपसाव ब्राह्मण, भाट, राजकर्मचारीओने वहेंची आप्यां हतां
आज कविराजने टोडरमले उदयपुरनुं परगणुं चरणे धर्युं.
परंतु कविराजप राज्यनो अस्वीकार करी पाढुं आप्युं हतुं.
टोडरमलना अति आग्रहवश थई कविराजे केटलाक गाम पोताने
हस्ते ब्राह्मणाने दानमां आप्यां हतां. त्यारनो देहो छे :

दान पाय देनो बढये, का हरि कां हरनाथ

उन बढ लंबे पद किये, ईन बढ लंबे हाथ ।

(नोंध : आ दूहो हरदासजी मिसण माटे पण कहेवाय ले.)

कविवर दुरशाजी आढाप वारलाख रूपयाने खचे पेशुवामां
पश्चरवंधी पाळ अने घाटवाळुं सातेक माईलना घेरावाळुं

तळाव बंधावी आयु हतु. रायगढ तावे गाम भटवाडाना रहीश चारणोना वहीबंचा भाट्णे दुरशाजीप क्रोड पसावनु दान आपेलुं. दुरशाजीप पोतानी बृद्धावस्था दरमीयान पुष्कर तीर्थ-क्षेत्रमां चारण ज्ञातिनु प्रथम सम्मेलन बोलावीने ज्ञातिना उत्कर्ष माटे प्रयास कर्यो हतो. चारण सम्मेलनमां दुरशाजीप रुपिया छ लाखनो खर्च कर्यो हतो. आ उपरांत तेमनां जीवन पर्यंत मंदिरो, तळावो, बाव, कुवाओ बंधाव्या अने परोपकारना अनेक कार्यो करेलां.

भक्तकवि श्री सांयाजी झुलाप कुवाव गाममां गोपीनाथजीनु मंदिर, माढ मेडीवाळो कोठ, किलो तथा बाव बंधाव्या हता. जीवनना शेष वर्षों वजभूमिमां गाळवा जता रस्तामां नाथद्वारामां श्री नाथजीने दर्शने कवि दंपति गया त्यां श्रीनाथजी भगवानने चरणे तेर शेर सोनानो थाळ भेट धर्यो. जे दररोज श्रीनाथजीने धराय छे, त्यारे ब्रण वखत साद पडे छे के “छे कोई सांयावत झूलेला, हेय तो प्रसादी लेवा आवे” मृत्युना अंतम दिवसे भक्तकविथे मथुरामां अेक हजार गायोनु ब्रह्मणोने दान कर्यु हतु. हजारो ब्रह्मणो, ब्रह्मचारीओ अने गरीबोने जमाडी अने वधाने हाथ जोडी श्री कृष्णनंददेवनी जय बोलावी महाप्रयाण कर्यु हतु.

दुदेजी अमराजी आशिया उच्चकाटीना कवि हता, वीर हता अने तेवाज दानी हता. राव चंद्रसेने एक वखत तेमनां पर प्रसन्न थईने लाख पसाव कर्यो. दुदेजी कचेरीमांथी बहार नीकल्या, तेवाज तेमने मोतीसरे वीरदाव्या “चारणो की बडाई, कवि के हैंया की सूध पाई, लेवाकु लाख, देवां कु सवा लाख.” आ विरदावली सांभळी दुदेजीप लाख पसाव मलेल ते त्यांज मोतीसरने आपी दीधां अने सवा लाखमां वाकी रहेती रकम माटे पोताना कामदार पर कागळ लखी मोतीसरने पोताने गाम खनोडे

मोक्षल्या. उडजातिना राजपूत कामदारे मोतीसरने धाक धमकी आपी पैसा आप्या वगर पहेंच लखावी रवाना कर्या. मोतीसरे जोधपुर आवी दुदाजीने वात करी अेज वखते वाकी रहेती रकम लावी आपी मोतीसरने खुश कर्या अने खनोडानुं पाणी अगराज कयुं.

कच्छ अने महेसाणा जिह्वा वच्चेनो चोराड प्रदेशनो चारण राजवी सांखडा पड्यारे वार गामो दानमां आप्यां हता.

कच्छना महाकवि मावळ सावाणीप चारण ज्ञातिमां सो प्रथम समुह लग्ननुं आयोजन करी अखिल भारतीय चारण सम्मेलन वोलावी, चारण समाजने १० मास रोकी भव्य समुह लग्न अने सम्मेलन योजयुं हतुं. चारण ज्ञातिना वारोट, मोतीसर, मीर, रावळ वरोरेनुं मावळ सावाणीप बहुमूल्य सन्मान करी अढळक संपत्ति दानमां आपी हती.

लींबडी ठाकोर साहेब श्री दोलर्तासिंहजीप शुभ प्रसंगे मस्तकवि श्री जीवाभाई शामळने रूपेरी जरीआनी मुल्यवान साज सहित एक सरस घोडा आप्यो. कच्चेरीथी परवारी मस्तकवि घरे आवी रह्यां हता. तेमनी पाढळ खासदार घोडा देगी लावतो हतो. एमां रस्तामां मोतीसरजी धुनाभाई मली गया. धुनाभाई मस्तकविने विरदाव्या. विरदावळी पुरी थई अटले एक साधारण पुरस्कार आपता होय अटली सरळताथी मस्तकविप खासदारना हाथमांधी घोडानी लगाम लईने धुनाभाईने कह्युं के “ल्यो मोतीसरजी आ घोडा” धुनाभाई ताज्जृत थई जोई रह्यां. घोडा लई मोतीसरे कविनुं दान वधाव्युं.

जेतपुरना दरबार वालेरावाळानो मारुयो घोडा गायकवाड सरकारवती लांग साहेबे पांत्रीस हजारनो माझ्यो, तो पण दरबारे न आप्यो, लांग साहेबे अति आग्रह कर्यो पटले वालेरावाळाप मारुयो घोडा लांग साहेबनी सामे बेठेला पोताना

राजकवि खोडाभाई लीलाने भेट आण्यो. खोडाभाई लीला^४
घोडानी तारीफानुं गीत ललकायुं. गीत सांभळी पक आहिरे
८० भेंसो कविराजने अर्पण करी. खोडाभाई लीलाप अेज वखते
८० भेंसो अने घोडानो सुवर्णजडित सरसामान दरवारना नोकर
चाकरने वक्षीश आण्यो. लांग साहेब तो आ वधु जाई आफरीन
थई गया. युरोपनी धरती उपर पणे आबुं हळ्य क्यांथी जायुं
होय !

भुजना महाराव श्री देशळजी बीजाबे तेना विश्वासु
वाला खवास साथे भुजधी उगमणी बाजु आवेल काळपुर
गाममां काना चारणने घरे आवी वात करी के “राज्य सोंपवानो
मने हुक्म मळी गयो छे. परंतु राज्य परनी अमुक लेणी रकमो
न भराय त्यां सुधी कामदार अने पोलिटिकल पजन्ट राज्य
सोंपवामां विलंब करे छे; अने आडखीलीओ उभी करे छे, पटले
मोटी रकमनी जरूर पडी छे.” कानो चारण कहे “आमां शुं
मोटी वात छे आ माटे आपने अहीं आववानी जरूरीयात
नहोती, कोई साथे कहेण मोकलाव्युं होत तो पण मोकली
आपत” काना चारणे एक हजार कोरी रावने आपतां कळुं के
“आ वधुं आपनुं ज छे, हजु वधु जोईप तो जणावशो.” आ
रकम राव साहेबे कामदारने सोंपी ई. स. १८२४ ना जुलाई
मासनी ८ मी तारीखे राव श्री देशळने राजनी तमाम सता
सोंपी देवोनो निर्णय थयो. आ प्रसंगनी याद आपतो पक दोहो
प्रसिद्ध छे.

काने कोरी क्रोड, राने डीनी रोकडी,

जीण चारणरी जोड, हुवो न दुजो डेशमे.

रेशमीया गामनो शाह सोदागर कमा पालीया दानेश्वरीनी
अश्रीम पंक्तिमां स्थान धरावता हता. ज्यां मुकाम थता त्यां
खडिये सदाव्रत आपता. राजस्थानमां पाली गाममां अने सौराष्ट्रमां

बलोल गाममां शिवमंदिर बंधावी कमा पालीयाप समाजने चरणे अपेण कर्या हता. कच्छ राज्यमां दुष्काळ पडतां कच्छना राव भारमलजीने थेक हजार कोरीना गाडा भरी भूज पहोंचाई दुष्काळग्रस्त विस्तारमां राहत आपी हती.

मथुराना विश्रामघाट उपर लाखाजी रोहडीयांचे जगदंबा करणीजीतुं मंदिर बंधाव्युं हतुं ते आजे पण विद्यमान ले. अकवर वादशाहे अंतरबेद प्रदेशनी जागीर अने मथुरामां रहेवा निवासस्थान आपेल प समये लखाजीप पुष्कल द्रव्य ब्राह्मण, वारोट, गरीबोने दानमां आप्युं हतुं.

गिरना मालधारी चारण राणसीनी उदारता सुप्रसिद्ध हती. जूनागढ़ना नवाबने, नामधारी धार्मिक जग्याओंने साधु, संतो, महंतोंने सेंकड़ो डब्बा धीना आपी उदारतामां नाम काढ़यु हतुं. जूनागढ़ना नवाब एरी उदारताथी प्रसन्न थई हाथी उपर बेसाडी सन्मान करी तेना द्रवारमां स्थान आप्युं. आ सन्मानना समाचार गिरमां आईने मलता राणसीने कहेवडाब्युं के कंथडो कुंजर चड्यो, हेम कटारी हथ्थ,

માંગ્યા તો સર્કારની મલે, ભીખને માથે ભડુ.

आ दुहो राणसीने मळतां कचेरीनो त्याग करी गिरमां आवी
दातारी चालु राखी. -श्री हिंगोळ्डानभाई नरेला.

चारणकी गामना जलाभाई गढवी महादानेश्वरी गणाना।
तेना छारेझी कोई याचक निराश न जाते। ब्राह्मण, बारोट,
मोतीसर, मीर, साधु, संतोने अदृश्यक संपत्ति दानमां आपता।

टीले चारणकी तणे, जलिया जलभ्यो नो'त,

तो कर्मी केने केत, देह वज्रि तो दाढ़ाउत.

वामणद्वारना गढ़वी हरदास मुलियाप रघुनाथजीनुं मंदिर
चांकानेरमां बंधावी, तेनां बहेनना हस्ते हिंडेक्का उत्सव उजवी
मंदिर गामने भेट आप्युं हेतुं.

राजस्थानना विद्रान साहित्यकार बारहठ वालावखशजी महा दानेश्वरी हता. तेओथे काशी नागरी प्रचारणी सभाने रु. ७००० सात हजार आपीने “वालावख्श राजपूत-चारण पुस्तकमाळा” कायम करावी रु. १०,००० इस हजार बेंकमां जमा करावीने नेना द्याजमांधी चारण जातिना विद्यार्थीओने शिक्षण मळी शके तेवी व्यवस्था जोबनेरनी दयानंद वैदिक हाईस्कूलमां करावी, आ उपरांत तेमना गाम हण्टियाँमां शायी प्याऊ, प्राणीओ माटे वाव अवाडामां पाणीनी व्यवस्था कायमी थई शके ते माटे रु. एक हजार बेंकमां जमा करावया हता.

बडोदराना दिवान विठेवानी एक काले अत्यंत गरीब स्थिती हती. ए समये गरणी गामना वाला केशरियाप कोईपण जातनी ओळखाण वगर वेपारीनां कर्जमांधी मुक्क कर्या हता. विठेवा गायकवाडना दिवान थतां वाला केशरियाने गरणीगाम ‘यावश्च द्रदिवाकरो’ लखी आप्यु. ते गामनी जमावंधी कायमने माटे भाफ करी आपी. वाला केशरियानी काठियावाडनी जमावंधीमां जवान आखरी गणाशे तेवा आदेश आप्यो हते.

लापलिया गामनां खीमाणंद रेढ नामना चारणे एक ब्राह्मणनी वे कन्याओनुं कन्यादान आपवा माटे दुपिया वे हजारनी एक ज व्यक्ति पासेथी दान लेवानी टेक पुरी करी ब्राह्मणनी कन्याओने लशन धामध्रमधी करी आप्यां हता.

शूरवीर संत उदारके, डार गये यह तीन,

खाली न जाय खीमगा, दोखी मज्जन दीन.

जामनगरना राजवी जाम सताजीना समयमां जामनगरना चारण सेजा नांधूण दुष्काळना समयमां एक ब्राह्मणने कन्यादान माटे रु. ३०० चणसो कोरीनुं दान आप्यु हतुं. चारणनी आ उदारतानी जाम सताजीने जाण थता सेजा नांधू ने पीपळीया अने जळसका (गोवर्धनपर) एम वे गाम आप्यां हता.

पारबंदर पासेनां गरेज गामना चारण लाखणसी लीलाप
दुष्काळना समयमां अेक वर्ष सुधी तेमना वहीवंचाओने अन्नदान
आपी जीवतदान आप्युं हतुं. तेनो पक दुहो प्रसिद्ध छे.

बीशोतरो वल्लग्यो नहि, गयो सेमने धेर,
लीला लाखणसीअडा गह्यो नहीं गरेज.

मीती गामना साधारण स्थितिना चारण देवीदान लांगडीया
पासे तेना रावल्लदेवे घोडीनी मांगणी करी पट्टले देवीदाने
बहारगामथी उधराणीप आवेला कुतियाणाना मेमण अधरमान
शेठनी किंमती घोडी दानमां आपी रावल्लने नाम मंडाववा रवाना
कयों. अधरेमान शेठे घोडीनी बे गणी किंमत लखी रवाना थया.

कच्छना भुजपुरना गं. स्व. माताजी भाणवाईमा ए पोतानी
स्थावर जंगम मिलकत कच्छनी चारण बोर्डिंग मांडवीने अर्पण
करी विद्याश्रम मोदुं दान आप्युं हतुं. तेमना स्वर्गस्थ पतिदेवना
नाम उपरथी “श्री लक्ष्मण राग चारण बोर्डिंग” नामाभिधान
करवामां आवेल छे.

स्व. मस्तकविना धर्मपत्नी गं. स्व. भगवती श्री सुरजवाप
भागवत पारायण वेसाडी ज्ञाति समस्तने संमेलन रूपे पोताने
आंगणे निमंत्री हती. आवा भगवतवत्सल सुरजवाप अमदावादनी
चारण बोर्डिंग माटे '५० पचाश बीघा उच्चम प्रकारनी जमीन
अर्पण करी हती, ए समये बीजा अेक बहेन श्री अमरवाडे
एण पंदर बीघा जमीन बोर्डिंगने दानमां आपी हती.

श्री रामदानजी बारेंड राजस्थानके अच्छे सामाजिक
कार्यकर्ता हैं। किसनगढ़ बास में कन्या पाठशालाका निर्माण
करवाया हैं जिस हेतु अेक लाख रूपये की भूमि प्रदान की हैं।
किसनगढ़ बास (जिल्ला अलवर) में ही आर्य समाज भवन का
निर्माण करवाया हैं इस हेतु भी '५० हजार रूपये की भूमि

प्रदान की हैं तथा उस भवन में गरीब छात्रों की आवास व्यवस्था रहेगी। इसी प्रकार किशनगढ़ बास में ही एक मन्दिर शोध प्रतिष्ठान तथा याचनालय पुस्तकालय भी बनवा रहे हैं। इस हेतु भी एक लाख रुपये की भूमि प्रदान की है। करणी चारण छात्रावास जयपुर में भी अभी एक कमरा इन्होंने बनवाकर दिया है।”

-श्री भवरसिंह सामौर.

कच्छमां चारण कन्या छात्रालयना निर्माणमां श्री हरिराम-
भाई आलगा अने श्री कानजीभाई वीकाप उदार सहाय आपी
सांप्रतयुगमां दानेश्वरीओमां प्रथम कक्षामां स्थान मेलबेल छे।

सांढा गामना आसणीया शाखाना चारणे जीवन पर्यंत त्रण
विखत पोतानुं घर लुटावी आनंद मेलव्यो हतो।

कविराज श्री शंकरदानजी जेठीभाई देथाथे तेमना जीवन-
पर्यंत रुपीया एक लाख पचीस हजार गरीबो, याचको, साधु,
संतोने माटे अन्नदान, वस्त्रदान अने धातुदानमां वापर्या हता。
'कर्धीरा भगत' तरीके कविराज विख्यात हता।

राजकवि श्री पिंगलशीभाई नरेला, भक्तकवि थी दुलाभाई
काग, श्री मेरुभाभाई मेघाणंद गढवी, पूज्य आई श्री सोनलमाप
विद्यादान, वस्त्रदान, अन्नदान, भूमिदान, ब्राह्मणो, साधु, संतो,
बारोट, मोतीसरो, मीरो वगोरेने आपेली सखावतो उल्लेखनीय छे।

१०४ भविष्यवेत्ता चारण :-

आई नागवाईप्राणत्याग करवानो निर्णय क्यों। मोणीयाथी
हिमालय तरफ बेलमां बेसी रवाना थता हता त्यारे आईना एक
परम भक्ते आईने पूछ्युं के “जूनागढ़ उपर मुस्लिम राज्यनो
क्यारे अंत आवशे” प समये आईप कहाँ के :

संघत ओगणील सताणुधे, थर जूनो थापुं,
हुं नागाई हरजागनी, हिंदवाणे पाढो आपुं।

$1900+6+97=2003$ सालना बेसता वरसने दिवसे आरझी हकुमने जूनागढ़ उपर त्रिंगो झंडो फरकाव्यो ने मुस्लिम सत्ता सदाने माटे अस्त पामी.

भावनगरना किछाना पाथाना खातमुहर्त वखते चमारडीना जेताभाई आरणे भावनगरनी भविष्यवाणी गीतमां भाखी हती, तेबुं भावनगर आजे विद्यमान ढे.

प्रविणभागर ग्रंथना सहकर्ता जेसोजी लागांप राजकोट नेहनग्रनुं प वखते वर्णन कर्युं हतुं तेबुं आजे आपणे सो जोई शक्तीप लीप, ज्यारे कविराजे भविष्यवाणी भाखी हती त्यारे ते लघुग्राममां वर्णन करेली कोई हकीकत न हती परंतु जे नेहनग्र (राजकोट) नुं वर्णन ढे, ते प्रमाणे आजनुं राजकोट आपणे जोईप लीअे.

आमरणना चारण संत भीम साहेब पासे जामनगर राज्यना मुख्य वञ्ची० मेरु खवास दशने आव्यां, संत मेरु खवासने जोई बोली उठया “राज्य तरफधी आमरणनी चोबीसी मळशे, पड्घरीना पाद्रमां कच्छना फतेहमामद सामेना युद्धमां तु विजय मेळवीश.” संतनी भविष्यवाणी अक्षरशः साची पडी हती.

इडगना राव कल्याणमलनी सांजनी कचेरीमां संध्यानी आरती समये चारण कविराज सांयाजी झुला समाधिस्थ थई गया, वन्ने हाथधी कंडेक ठारता होय तेवी चेष्टाओ करवा लाग्या. थोडी धरण बाद तेमणे आंखो खोली त्यारे रावे अति आग्रह करी प चेष्टानो प्रत्युत्तर आपवा कहुं त्यारे सांयाजीप कहुं के द्वारकामां आरतीनी आलधी रणछोडरायजीनां वाघाने आंच लागोली ते ओलवतो हतो. आ हकीकतनी खात्री माटे पोताना खास विश्वासपात्र व्यक्तिने मोकली तपास करावतां सत्य हकीकत जणाई हती.

पोरबंदरना राणा सरतानजीना दरवारमां जमला गामना चारण जेठाभाई उढास तेजस्वी कविरत्न हता। एक दिवस कविराज कचेरीमां उभा थई झरुखा उपरथी नजर करी दूर दूर जावा लाग्या। सरतानजी कहे कविराज शुं जुथो छे? “कविराज कहे ‘जमला अने कासांबड वच्चे भोगसर पासे आई रवरायनुं मंदिर चणाय छे ते केटलुं चणायुं छे ते जातो हतो।’” राणा सरतानजीए कविराजनी बातने हसी काढी पट्टले कविराजे खाची कराववा माटे कह्युं के “आपणे ते स्थले आजे ज्यारे पहोंचयुं त्यारेमंदिरनुं चणतर काम १० मा स्तरे पहोंचयुं हशे।” कविराज अनेराणा सरतानजी पोरबंदरथी घोडेश्वार थई भोगसर गामे आवीने मंदिरना चणतर कामनुं निरीक्षण करता कविराजे जे प्रमाणे कह्युं हतुं ते प्रमाणे अक्षरक्षः साचुं पडयुं।

१०१ जामीन चारण :-

तन चोस्वां, मन उजळां। भीतर राखे भाव,
किनका चूरं न चितवे, ताकु रंग चडाव।

रासमालामां अंग्रेज गवरमेन्टे चारण ब्रातिनी करेली नेंध प्रशंसनीय छे। जिल्ला सबंधे १८६४ ना रिपोर्टमां यिल साहेब चारणना जामीनगता विशे लखे छे के “आ देशमां जो वाट के बृष्टिमां चारणने राखीए तो ज ते करार पार उतरी शके छे। वक्ती तेमनुं जामीनगतुं तो घणुंज वखाणवा लायक छे। ते जामीन होय ने जो आगलो राजा न पाले तो ते तेनां प्राण तुरत ज आयी दे छे। ने तमाम कुदुंबने सत्यता माटे ने पोतानां एक वचन माटे त्याग करी दे छे ने मरवा तैयार थाय छे। आवी विश्वास पात्र केम छे। अने बीजाओ पण बेमनां त्रागां करवाथी डरे छे। तेथी ते ब्राति वचनां होय तो सामो माणस शरतनो भंग करी शकतो नथी।”

संवत् १८३६ मां ब्रीटीश राज्यमां कानियावाड ने गुजरातना राज्यो साथेना पझीमेन्ट थ्यारे वहबाणना श्री पिंगलशीभाई रत्नुने साथे राख्यां हता. अने ते सवंधे तेमने सर्टीफिकेट आपवामां आवेल. ते तेमना वंशजो पासे मोजुद छे.

संवत् १८५९ मां जामनगर राज्यनां केटलाक मायानो जामनगर राज्य सामे वहारवटे चहयां हतां. प्रजा चासी गई. अंग्रेज सरकारे जामनगर राज्य पर दबाण करता. चारणाने घर्षीमां राखी राज्ये समाधान कर्यु हतु.

जालोरना राजा मानसिंहजीए शिरोहीना राव वैरीशालनो रुपिया एक लाखनो दंड कयो, परंतु वैरीशाल आटली मोटी रकम भरवाने अशक्तिमान हता. एटले मानसिंहजीए कारागृहमां पुर्या. अे समये शिरोही राज्यना दरेक चारण एकत्रीत थई, दंडनी रकम जेटलां जामीन पडी वैरीशालने छोडाव्या हता.

गढवी धनराज रावा (बोराणा) प कुंदलीना (जसदण) दरवार आला खाचरने अहमदावादनी वादशाही बंदीखानामांथी जामीन थड़े छोडाव्या हता.

बूडी जाती वावली, मघली कला सेत,
नर हो आडो नेत, धूनी धर रावा धनो.

संवत् १८५९ मां वलीमामद आरवने आंकडीया गामना वीकाभाई लांगावदराप लूटाराओथी वचावी जीवनदान आप्युं हतु. वर्षेना आ वातने व्हाणा वीती गया. जूवान वलीमामद बुढो बनी महाराजा गायकवाडनो अंगरक्षक बन्यो छे. गायकवाड सरकारनो पेशकदमी उघरायवानो मुकाम लौंबडीमां हतो. वीकाभाई गायकवाडने मळवा गया त्यां वलीमामद वारव वीकाभाईने दूरथी ओळखी गयो, सामे चाली ‘ओ मारा जीवनदाता’ पम कही पगमां पडयो. महाराजाने आश्य थयुं.

आरबे भूतकाळनां प्रसंगथी महाराजाने वाकेफ कर्या. महाराजाप त्यांज हुकम कर्या. “आ वीकाभाई चारण जे राजाना हामी थशे तेनी पेशकदमी अमे खमीशु” त्यारथी घणा नाना मोटां राजाओ वीकाभाईने हामी तरीके राखता. वीकाभाईनुं दरेक राज्यमां वहु उंचुं स्थान रहेतुं.

जूनागढना नवाब रसूलखानजीना शासनकाळ दरभ्यान महिया वहारवटे चडया हता. कनडा हुंगरे हथियार लई चडेला महियाओने हथियारे छोडी नवाब साथे वष्टी अने अभयवचन आपवा जूनागढ तरफथी दातराणाना गोरवियाळा चारण शामळाभाने मोकलवामां आव्यां. महियाओप चारणना वेण उपर हथियार छोडया. विश्वासघाती संधी अवा सलेमाने दगो करी महियाओना हीम ढाळी नाख्यां. शामळाभा चारण जीभ करडीने महियाओ साथे मृत्युने शरणे थया.

वि. सं. १६३० मां जामनगरना जाम सताजीप लग्न प्रसंगमां पोतानां सगा भाणेज पोरबंदरना राजकुंवर राणा रामदेवजीने तेडाव्या, परंतु जाम सताजीना राज्य विस्तार वधारवानो मोह पोरबंदर राजमाता जाणता हता. मामो भाणेजने मारी क्यारे पोरबंदरनुं राज्य लई ले ते निश्चित न हतुं. आवी मेली मुराद होवाथी राजकुंवरने मोकलयो नहि. जाम सताजीओ अति आग्रह कर्या त्यारे अेक शरते राणाने मोकलवा राजमाता तैयार थया. जामनगरनां दसोंदी चारण काविदास लांगा, पोतानी खोल्ठाधरी उपर पोरबंदरथी तेडी जाय तो मोकलीप काविदास लांगा पोतानी जामीनगता उपर तेडी लाव्यां. काविदास एक घडी पण राणाने रेढो मूक नहि. राजरमत रमीने राजमहेलमां जामसाहेबनी राणीओप राणाने मळवा बोलाव्यो, त्यां राणाने मारी नाख्यां. दरबारगढ वहार काविदास लांगा राणा राणा कहेता फरे छे त्यां दरबारगढमांथी एक पोटलानो धा थयो. पोटलुं खोलीने

काविदास जुबे तें राणाना देहना ढुकडां हता. काविदास लांगा
घरे जईने कुटुंबीजनोने लई आव्यां. दरवारगढ पासे एक दीकराए
कटार खाधी एना लोहीधी दरवारगढने छांटणा कर्या. मासुम
कुमला नाना बाल्कोने नालियेर बधारे तेम बधारी नाख्यां
चारण्योथे स्तनो कापी दरवारगढ उपर फेक्यां, बाकी जे
भ्यक्तिओ बची ते एक गाडामां कपासीया भरी उपर घी रेडी
तेलधी स्नान करी हाथमां माला लई गाडामां अग्नि प्रगटावी
अे बधा अग्निज्वालामां होमाई गया. ऐ दिवसे अकज कुटुंबना
अढार माणसोए जासीनगता माटे बलिदान आप्यां हता. आ
महान कुलनो एक बाल्क बची जतां तेमना वंशजोए चारसे
वर्षधी जामनगरनुं पाणी पीधुं नहि. दश वर्ष पहेलां नवानगर
राजमाता गुलाबकुंबरवा साहेबाप श्री मेरुभाभाई मेश्वाणंद
गढवी अने कवि श्री पिंगलशीभाई मेश्वाणंद गढवी ढारा
काविदास लांगाना वंशजोनो अवैयो छेडाव्यो हते. काविदास
लांगाना जामीनगता अंगे कवि श्री शंकरदानजी देथानुं कवित
सुप्रसिद्ध छे.

“चारण जमान भया, तब राना जामनग्र गया
दगा कर मार दिया क्षत्रीवट खेटा है ॥

वि. सं. १८६४ मां जूनागढ नवाब हामदखाने गायकवाड
ऐश्वा सरकारनी खंडणी देवानो स्वीकार करी खत करी आपुं
के ‘बीजा राजा सामे दुश्मनावट नहीं करूं, बहारवठियाने रक्षण
नहीं आपुं, कोईने उद्देशी उपद्रव नहीं करुं, चोरोने आश्रय
नहीं आपुं, जे कोई वेपारी के यात्री लंटाशे तेनी नुकशानी ते
तालुको भरपाई करशे, बीजा तालुकानां भायातो गाम वेंचवा
आपशे ते खबर आपीश, कंपनीनो के गायकवाड सरकारना
गुनेगरने रक्षण नहीं आपुं” नवाबे आ शरतना पालन माटे

चारणीआ गामना चारण मोक्षीमा सुरूने कायमी आड
जामीन तरीके कर्नल वेकर अने गायकवाड सरकारने आप्यां हता.

फ्रेन्च मुसाफर थेवले भारतवर्षनी प्रवासनेंधमां नेंधे छे के
'हिन्दना घणा भागोमां रक्षण वगर मुसाफरी थई शक्ती नथी.
साथे चारण अने चारण ऋषी वळावीआ तरीके होय तो धाड-
पाडओं के लुंटाराओ नाम पण लेता नथी. चारणना श्रापथी
अने प्रभावधी ते लोको डरे छे. वळी चारणो आत्मभोग आपतां
पण डरता नथी.'" (मुंबई समाचार)

चारणनी खोळाधरी विशे श्री जयमल्लभाई परमारनुं
मंतव्य उल्लेखनीय छे. "मोतधी डरनारां उंचा माथा राखीने
केम जीवी शके? ज्यां मोतनो डर ओछेहो होय त्यां अरमान
पण उंचा रहे. चारणनुं वचन अने चारणनी खोळाधरीपतेा
प्रभुनो खोळो मळ्यां बराबर कहेवाय. राज्य राज्यनां संबंधे,
राज्य राज्य वचनां समाधान. चारणनी खोळाधरीथी ज टकता
कारण के खोळाधरीनो भंग थतां चारणो आत्मबलिदान आपतां,
एकलो पोतेज नहि सपरिवार. पापमीरु राजकुलो चारणोनां पवां
आत्मबलिदानो अने निदेषिना रक्त छांटणाथी सदाय डरता.
जो चारणोमां आत्मबलिदाननी शक्ति न होत तो अेमनी
खोळाधरीमां पण कांई दैवत न होत, त्याग अने बलिदानो
उपर पवी उच्च प्रणालिकाओ पडती. चारण जेम राजपूतीनो
क्षात्रवटनो रखेवाल हतो तेम सदाचारनो पण रखेवाल हतो."

१०६ धरणुं-सत्याग्रही चारण :-

चारणने चकमक तणी, ओछी म गणे आग,
टाढी होय ताग (तोये), लागे लाखणशीअडा.

चरणुं अर्थात् सत्याग्रह, चारणो पर संकट के त्रास
आपवामां आवतो त्यारे धरणुं देता. अन्याय सामे, विश्वासघात

सामे, पोताना अधिकारी परना आकमण सामे, खुद पेते आचरेल दूषण सामेय पणे करेलां आत्मविलोपननी कमकमावनारा किस्सा मध्ययुगी इतिहासमां छलेछल छे.”

-श्री ब्रवेरचंद्र मेघाणी

धरणुमां सात दिवस सुधी पक मंडळ आत्मभेग आपवा पक्त्रीत थई अपवास करतुं. मुदत आप्या प्रमाणे समाधान न थाय तो, कोई पोताना गळे छरी कटार के तलवार नाखता. कोई तेलनो डगलो पहेरी सळगावी, जेणे नुकशान करेल होय तेनी सामे बळी मरे. खीओ पण शरीर कापी लेही छांटी आत्मविलोपन करती. धरणामां उतरनाराओने माटे जे कुंडाळुं कर्युं होय तेनी लीटी ओळंगी अंदर प्रवेश करे तेने धरणामां जोडावुं ज पडे. तेवें चुस्त सिरस्तो हतो.

धरणानी उवारीखमां ‘आउवानु’ धरणु’ राजस्थानना इतिहासमां सुविख्यात छे. संवत् १६४३ नी आ घटना छे. उद्यपुरना महाराजा उद्यासिंहजीना मा राजमाता यात्राबे नीकलयां हता. रस्तामां पक बळद मांदगीने कारणे वेसी गयो. आथी बाजुनां खेतरमांधी चारणनो बळद उठावी रथ रवाना कर्या. चारणने आ समाचार मळतां राजमाताना रथमांधी पोतानो बळद पाढो लावयो. आ बनावधी उद्यासिंहजी महाराजा चारणो. उपर नारोज थई समस्त चारणनां गाम गरास जप्त कर्या. आ कारणधी चारणो आउवामां धरणे बेठां. आउवामां जाजम बीछावी. तेमां चार जातनी ब्रेठकोनी व्यवस्था करवामां आवी. होलीये, गादलुं गोदडुं. चटाई. जे चारण ढोलीयें वेसे ते तेलना डगलो पेरे, गादले वेसनार छोगाळुं करे, गोदडे वेसे ते गळे छरी नाखे ने चटाई पर वेसे ते कांडा पर कटार फेरवे. सेंकडो चारणो अने चारण आईओ आउवामां पकडां थयां. दुरशाजी आढा अने अकबाजी जेवा समर्थ चारणो पण धरणामां सामेल थयां.

धरणानी तीथी आवी पहेंची. स्योदय थतांज आत्महत्यानी प्रकिया शरू थई. कोई चारण तेलमां झगेलेल डगला पहेरीने सळग्या (तेलीउ त्रागु), कोई स्वहस्ते पोतानुं शिर बघेरी ढेगालुं त्रागुं करवा मांडया, अने चारण आईओप चितारोहण. कर्णु. आ धरणामां वेसी कटार परोवनार महाकवि दुरशाजी आढा ठा. गोपालदास चपावतनी समयसरनी सारवारथी वची गया. दिल्हीना दरबारमां दुरशाजी उपस्थित थया त्यारे दरबारमां अवाज बदली जतां अकवरशाहे तपास करावी. सत्य हकीकतनी जाण थतां बादशाहे उद्यासिहना अत्याचार प्रत्ये खूब नाराज थया. आ नाराजगीनी जाण थतां उद्यासिहजीथे आत्मविलोपन कर्युं. मरतां मरतां उद्यासिहे चारणेना जप्त श्येला जमीन जागीर पाढी आपी पण ए भोगवनार कोई चारण त्यां रह्यो न हतो. आजे पण थे राजानुं नाम न लेतां सौ मोटा राजा तरीके ओळखावे छे. आ धरणामां १८०० नी आत्महत्या थई होवानुं कहेवाय छे. आउवाना धरणानी महान सामुहिक आत्महत्याकांड इतिहासमां उल्लेखनीय छे.

हल्लवदना ठाकेर मार्नसिंहजी झालाप देगामना चारण जशवंतसिंहजी महेझने लाख पसाव बक्षी आयाचीवृत धारण करावयुं. आ वातनी गेडी गामना राजवी मेकरण वाघेलाने जाण थई. तेमणे कविराजनी अयाचीवृतनो भंग कराववानी प्रतिज्ञा लीधी. कविराजनी टेकनो भंग करवा मेकरण वाघेला प्रयत्न करवा लाग्या. अेक दिवस मेकरण वाघेला देगाम आवी कविराजनी गायो हाकी गयो. परंतु कविराज पोतानी गायो याचवा पण न गया. बीजा लोकेण मेकरण वाघेलाने ब्रणो समजाव्यो परंतु ते मान्यो नहि. कविराज अन्यायने कारणे धरणे बेटां. गेडी गामना शीवमंदिरे पोताना शरीरना वीस नखो उनारी, कमळपुजा खाधी. बीजा चारणोप कटार तलवारथी

‘छेगाळुं त्रागुं कर्युं’. कोईके तेलीयुं त्रागुं कर्युं. आजुचाजुना प्रदेशमां व्रास व्यापी गयो. जसवंतसिंहजी महेडूना भाणेजे कविराजना धरणाना समाचार जाम रावळने आप्यां. जाम रावळे कविराजना आत्मविलोपनने कारणे गेडी गामनो नाश कर्या. जाम रावळने पटलेथी ज संतोष न थतां वंश वारसेमा माटे लखता गया के “मारा वंशनो जे होय अने ते गेडी गाम वसाव्यानुं सांभळे त्यारे तेणे तेज घडीप गेडीने उज्जड कर्या विनां रहेबुं नहि.” जाम रावळना मृत्यु पछी वे वस्त गेडी गाम वस्युं परंतु जाम रावळनां वंशजोप वन्ने वस्त उज्जड कर्युं. आज पण गेडी गामनो टींबो उज्जड स्थितिमां छे. प भूमिमां घास पण उगतुं नथी.

बोटाद पासे वरवाळा नामे चारणोनुं गाम हतुं. चारणे दुष्काळ वर्तवा माळवा गया हता. सारुं वर्ष थतां वरवाळे आव्यां ते काठीओप गाम पचावी पाडयुं हतुं. चारणाने गाममां प्रवेशवा जन दीधा. चारणोप काठीओने घणा समजाव्या परंतु काठीओ मान्या नहीं. पथी चारणाबे त्रागुं करी गामने झांपे लेही छांटी आत्मविलोपन कर्युं. त्यार पछी प गाम काठीओ मोगवी न शक्या आ चारणाना पालिया आजे पण वरवाळाना दरबारगढमां मोजुद छे.

तुलसीदयाम पासेना नेशमांथी चारणानी भेंसो आहीर चौरी जता हता. रस्तामा जेतपुर दरबारे भेंसो आहीर पासेती झुंटवी लीधी चारणे भेंसोनी तपास करता जेतपुर आव्यां. दरबार पासे भेंसोनी मागणी करी. दरबारे भेंसो आपी नहीं. अेथी चारणाबे त्रांगा करी आत्मवलिदान दीधां. अे पछी प दरबार जीवनपर्यंत धी दृध खाई न शक्ता. अने निवंश गया. आ प्रसंगनो अक दृहो प्रसिद्ध छे.

भेंसु भायाणा, काले कुटियुं सेंपजे,
मश बेठी माळा, आलणसी उतरे नहीं.

ईसरदासजीनां वंशज हापाना रूपाळा वारहडनी गुंदा
गामनी जमीन जागीर डेरीवडाळा गामनां राजपूतोथे पचावी
पाडी. रुपाळा वारहडु जाम रणमलने फरियाद करी पटले जाम
रणमले नफटाईथी जवाब आप्यो के “गुंदानुं तो अथाणुं थई
गयुं, बारहडु ! दिवाने भूलथी नजराणुं लई गुंदा डेरीवडाळाना
दरवारोने नामे करी दीधुं छे, हवे शुं थाय ?” रुपाळा वारहडु
हापा आवी पोताना कुदुंबने वात करी. कुदुंबना सभ्यो अने
आसपास विस्तारना चारणे डेरीवडाळा गामे पकडां थया.
सात दिवसनी लांघण करी. आठमे दिवसे सतधरमने खातर
चारणेप त्रागां कर्या. (देवहंस चारणबंधु)

सोरठना उना महालना राजवी विजल वांझा सामे ब्राह्मणे
उपवास उपर उतर्या हता. अे उपवासनी छावणी पासेथी एक
चारण दंपती पसार थतां ब्राह्मणोने उपवास विशे पूछपरछ करी.
ब्राह्मणोप तेमने थयेल अन्यायनी वात करी. चारण दंपती
उपवासनी छावणीमां लांघण करवा बेसी गया. आठमे दिवसे
बन्नेप लेही छांटी दरवारगढमां त्रागुं कर्युं. आ बनावधी विजल
वांझाने रक्तपीत थयो. विजल वांझाप आ रोगने कारणे
जळसमाधि लेवानो निश्चय कर्यो. जळसमाधि लेवा माटे गंगाजी
तरफ प्रयाण कर्युं. रस्तामां जूनागढ पासेथी पसार थतां
रामांडळिके पोतना माटे दररोज गंगाजीथी आवता पाणीथी
विजल वांझाने स्नान करावी रोग मुक्त कर्यो. विजल वांझाने
रोग मुक्त करवाने कारणे रामांडळिकनी बुद्धि भ्रष्ट थयेली
तेवी मान्यता छे.

[नोंध : केटलाक जाणकारो आ प्रसंग ब्राह्मणने बदले भाट
साथे विजल वांझाने झाडो थयानुं जणावे छे.]

भारत स्वातंत्र्य धर्युः सौराष्ट्र सरकार अस्तित्वमां आवी, हल्लवदमां बारखलीना प्रझने बारखलीदारो सत्याग्रहे बेठां. हल्लवदना बाजुना गाममांथी पक चारणआई हटाणे आवेलां छावणी पासेथी नीकल्तां बधाने लांघण करता जोई पेते उपवासी छावणीमां बेसी गया, घरे चारण नाना कुमला बाळ-कोनी साथे राह जेतो आखो दिवस बेठो रह्यो. बीजे दिवसे चारण नाना बाळकने लई हल्लवद आव्यो. आईथे नाना छोकरा सामे जोतां चारणने कहां के “आ बाळकने मारी सामेथी लई जाव नहितर माराठी काईक कहेवाई जशो.” चारण बाळकने लई चाली नीकल्यो. आ समये आईनुँ अलौकिक तेज पटलुँ प्रचंड हतुँ के तेमने समजाववा माटे सौ कोई असमर्थ हता. अर्थी सरकारने सन्वरे समाधान करवानी फरज पडी हती.

उपरोक्त प्रमाणे प्रत्येक अन्यायना प्रसंगोप धरणुँ-सत्याग्रह त्रागां कर्याना केटलाय बनावो इतिहासमां नेंधायेलां छे. छत्रावा गामनी चारण आईओनुँ त्रागुँ, चौटीला पासे, बढवाणमां, बहुभीपुरमां, कच्छ वागड, चिंत्रोडमां जेतपरीमां आई केसरबाई लाळसनुँ त्रागुँ धरणानी तवारिखमां उल्लेखनीय छे.

चारण भारतवर्षमां सत्याग्रहना जन्मदाताओ छे. चारणोना धरणानां प्रसंगोमां मृत्यु पण मरी गयुँ छे. प्रतिकार वगर स्वहस्ते आत्मविलोपन करवुँ प सहेली चात नथी. पर्थीय विशेष तो पोताना ज कुमला बाळकोना माथा राजगढोनी भीतोमां नालियेर बधारे तेम बधारी नाखनार चारण, के पोताना देहना कटका फंकती चारण आईओथे प्राण काढवामां कचकचाट अनुभव्यो नथी. आवुँ लेखांडी छातीनुँ कारमुँ कृत्य जगतनी अन्य कोई मानव जातिमां चारणकुळ सिवाय गोत्युँ जडतुँ नथी. आधी ज कहेवाय छे के चारणकुळनी संस्कृति आत्मविलिदान अने त्यागनी छे. चारणकुळे सर्वेस्वना समर्णणमां ज पोतानां जीवननी सार्थकता मानी छे.

प्रभु भजता जोवन गयुं, धन गयुं देता दान,
प्राण गयां पत राखतां, अे त्रण गयां न जान.

१०.७ 'रेड' पीती चारण आईओ :-

जे समाजे मीरांबाईने झेर आयुं, गांधीजीने गोलीअे दीधां
ने ईशुने शूलीअे चडाव्यां प समाजे देवी शक्तिनी प्रतीति माटे
चारण आईओने पशुनां रुधिर पीवानी फरज पाडी छे. प
आईओअे हस्तेमुखे पशुओनां काचा रुधिरना त्रांसडा ने त्रांसडा
भरी पी लईने देवी शक्तिनी खात्री करावी छे. पवी लोक मान्यता
छे. आ पक संशोधननो विषय छे. चमत्कारिक ओपथी आ
मान्यताओने अंधश्रद्धालुओप बहेलावी होय तेम पण जणाय छे.

छननीया काळ पहेलानी आ वात छे. आलमपर अने वळा
वच्चे कंथारिया नामना नेसनी आई सोरठीयाणी अने पूनमतीने
वळा दरबारे जीवाई वांधी आपी हती. पक वखत जीवाईनी
रकम लेवा जता ठाकोर मेघराजजीप आईओने पाडानुं रक
पीवानी फरज पाडी. आईप वाम दृईने दरबारनी सामे लेवडीथी
मोढुं ढाकी लेही पीवा मांडयुं. आईनुं प वखतनुं विकराळ
स्वरूप जोईने ठाकोर शाहीवरणा थई गया. आई बेटलुं ज
बोल्या : “हे भूंडा ! नो रही शक्योने ?” बन्ने आईओ घर तरफ
चाली नीकल्यां ते पछी फरी कोई वार जीवाई लेवा वळा गया
नहि. प बनाव पछी त्रीजे दिवसे ठाकोर गुजरी गया.

आलमपर गाममां उपरोक्त बनाव बन्या पछी त्रण वरसे
कोलेरा फाटी निकल्यो पटले गामना पटेल आई पुनमतीने तेडी
लाव्यां, गाम लोकोप गामनी सुखाकारी माटे आईने विनंती
करी अने गाममां कोलेरानी नावृदी अर्थे आई पुनमतीने बकरानां
रुधिर पीवानी फरज पाडी हती.

जूनागढ़ना नवाब रसूलखानजीने मोणियाना सेयद काजी गीरासदारोप फरीयाद करी के “हबे चारण आईओ रेड पीती नथी, हबे कोईनामां देवी शक्ति नथी; कलजुगमां देवीओ थवानी नथी माटे आ गगासो शा माटे आणे ढेा ?” नवाब रसूलखानजीने काजीनी वात साची लागी आ समाचार गिरमां आई हांसबाईने मल्यां पटले आईप नवाबने कहेवडाव्युं के “हुं मोणियामां आई नागबाईने थडे (पाडे) रेड पीवा आबुं आबुं छुं तमे न्यां हाजर रहेजेा.” आई मोणिया आव्या, चारणो आईओनी स्तुतिगान कर्युं. चारण आईओप चरजो गाई. पाडाने थडा उपर लाववामां आव्यो. नवाबना माणसोप एक आटके पाडानुं माथुं उडाडी दीधुं. आई हांसबाईप नवाबनी सामे त्रांसडा भरी रुधिर पीवा मांडया. नवाबने धुजारी उपडी गई. आईना पगमां पडी माफी मांगता कहुं के “मैया मने माफ करी दे आजथी कोई पण चारणनो अंत नहिं लउं, कोईनी कसेआटी पण नहिं करुं, तमाम चारणोना गाम गरास तेमने मुवारक” आई हांसबाईप तेमनुं रौद्र स्वरूप समावी नवाबने आशिर्वाद आप्यां. आ हांसबाईनो थेक देहो गिर प्रदेशमां घणो ज प्रसिद्ध छे.

मंडोरडे आवे मानता, दुखीया उभे देह,

बुढी वालावेश हुंकारा दिये हांसबाई.

आ वातने दोढ सो वर्ष थया छे. —राजवीरभाई रामभाई गढवी

१०८ मानवताचारी-विश्वकल्याणकारी चारण :-

आपे कामे शिहळा, परकाजे समरथ्य,

पने सांया राखजो, आडा देवे हथ्य.

“आपणी पांपणो जेम अझातपण ने अव्यक्तमावे आपणी आंखानुं अहनिश रक्षण कर्या करती होय छे, तेम पवां मानवीओ

द्वारा आपणां समाजना नेतिक स्वास्थ्यनी रक्षा अज्ञातपणे ने
अव्यक्तभावे थयाज करती होय छे. पांपणेनी जेम पमनो प
स्वभाव होय छे.” -श्री जगमलभाई परमार.

२७० वर्ष पहेलांजी वात ने ते पण अस्पृश्यता निवारणनी.
अस्पृश्यता निवारणने आपणे सांप्रतयुगनी सरजत गणीप छीप
पण पनु पगोरु शोधवां आपणे घणे बधे पाळां जवुं पडे तेम
छे. दरेडी गामना आई जानवाईप दुष्काळ वखतमां स्वहस्ते
एक वाव गाळी तेमांथी अस्पृश्यो अने सवर्णो एक ज वावमांथी
पाणी भरे प शरते ते वाव गामने अर्पण करी. ते दिवसधी आज
सुधी ते गाममां ते वावमांथी एकज आरेथी अस्पृश्यो, अने
सवर्णो. दरेक वर्गना लोको पाणी भरे छे.

भंगी कणवी ने खामणां, कोरी थोरी केक,
आरे सरखा एक, जो पाणी भरे जानवाई.

मोणिया आई नागवाई हेमाळो गाळवा हाली नीकल्यां
त्यारे प महोपंथना संगाथी हता एक हरिजन दंपति. मोणिया
गाममां आईना मंदिरमां हरिजन अने तेनी ख्रीनी खांभी आईना
खेळमां छे प्रथम हरिजन दंपतिने श्रीफल बधेरवामां आवे छे.

छपनीयानां दुष्काळमां मुंगा प्राणीओ, पशुओ, पक्षीओ,
अने मनुष्योनी प्यास बुझाववानु वावलवावना आईश्री नागवाईप
ब्रत लीधुं हतुं.

संत भीम साहेबे आर्नादथी वि. सं. १८८८ नां दुष्काळना
समयमां वरसाद वरसावी सौने नवजीवन आप्युं हतुं. जामनगरना
मुख्य बझीर मेरु खवास तेमनो सेवक हतो तेने कही हरिजनो
पर थतां वेठनां अन्याचारो भीम साहेबे वंध कराव्या हता.
भीम साहेबनी उपदेशवाणीमां विश्वकल्याणनी भावना ज भरी छे.

कच्छमां थेक वखत सतत त्रण वर्ष दुष्काळ पडयो. मावळ सावाणींचे चारण झातिमां समुद्र लग्ननुं आयोजन करी ११ मास समस्त चारण झातिने पोताने त्यां राखी कपरा काळमां समाजनी एक पण व्यक्ति भूखे न मरे ते माटेनो भगीरथ प्रयत्न करी समाजने नवजीवन आण्युं हतुं.

सांप्रतयुगमां छत्राचा गाममां श्री मेरूभाभाई मेश्वाणंद गढवींचे भंगी अने हरिजन माटे १६ ओरडाओनी कोलेनी वंधावी आपी मानवसेवानो उच्च आदर्श पुरो पाडयो छे. अं उपरांत सर्वेदिय प्रवृत्ति, भूदान प्रवृत्ति अने नशामुक्ति आंदोलनमां श्री मेरूभाभाईनुं वहुमूल्य प्रदान छे. मानवने मानव तरीके चाहवा स्थान आपवुं अने मानवधर्मने सतत जीवनमा आगळ धरवो ते तेमना जीवननो उच्च आदर्श हतो.

पेटी गाममां बहारवटियो वालो नामोरी एक सुखी आयरनां घरने खरे व्होरे लुंटी रह्यो छे. प समये काळेला गामनी चारण सासु वहु गामतरे नीकळतां तरसी थईने जे घरे बहारवटिया आव्यां छे प ज घरे आवीने ओसरीमां उभेली आयराणी पासे पाणी माण्यु. वाईंचे ठंडु पाणी पायुं. चारण आईओप आशीर्वाद आप्यां. एटले आयराणीप कहूं के “आई मारु” पेट तो भडके बळी रहूं छे. पासेना ज ओरडामां बहारवटिया अमारी माल मिळकत लूटे छे.” चारण आईओ ओरडामां जई पटारा उपर चडी बेठी ने कहूं के “अमने मारी नाखो ने पछी लुट चलावो अमे आ घरनुं पाणी पीधुं छे.” बहारवटिया आईओने पगे पडी ठाले हाथे हाली नीकळयां.

भावनगर महाराजा वजेसंगजी शिकारना अत्यंत झोखीन हता. एक दिवस शिकार छटकी भागी छूटयो. काळियार हुंगरनी गाळीमां अलोप थई गयो. एक मालधारी चारणने महाराजाप शिकारनी वाट बताववा कहूं. चारण महाराजाने

ओळखी गयो. कालियारने भागतां पण जायेलो. चारणे दाहो कहोः

पापी नरके सिधावीया, घरमी सरगे गा,
वाढु वे जाणु छुं वजा, पेसाय एमनो जा.

कहेवाय ले के महाराज चजेसंगे आ देहो सांभळ्या पछी
शिकार काय' होडी दीधुं हतुं.

मीती गामना अजाभाई लांगडीआ अने नवघण पटेल
प्रवासमां नीकळ्यां. रस्तामां नवघण पटेलना दुझमनो संधी
गामेती बंधुक लईने आडा फयां. चारण अजाभाई वच्ये रहीने
संधीओने कह्यं के 'हुं वेठीयो नथी के मरणना समाचार लईने
घरे जाउ, मने मारीने तमारुं वेर वाळजो.' संधीओ चारणनी
खोलाधरी उपर पाढा वळ्यां. नवघण पटेल पुरी जींदगी सोगवी
देवलोक पास्या.

संवत् १९५७ मां पुरहोनारतमां छत्रावा गाममां अनाज
खूटयुं. गाम अर्धभूख्यां दिवसो काढे तेवी परिस्थिती हती. प
समये गामनी करुण हालत जोई चारण मुळुभाई लीला छ गाव
व्हेतां पुरमां तरी नवीबंदर जई सांजे होडी भरी अनाज लई
आवी आखा गामने वहेची आण्युं. मुळुभाई ये जींदगीपर्यंत
परोपकारनुंज काय' कयुं हतुं. तेना जीवन दरम्यान आठ
हजार मण अनाज पक्षीओने चण्य नाखी हती. मुंगा पशु,
प्राणीओ अने पक्षीओ माटे पाणीना अवेडा. कुंडीयां वांध्यां हता.
अने पाणीनो वारे मास वंदोवस्त करता. रस्ताओ सीधा ने
सपाठ बनावता जेथी बळदेाने चालवानी सरळता रहे, गाममां
आवेलां साधु, संतोनी सेवा करवी तेना माटे रहेवा जमवानी
भगवड करी आएवी, गाममां चृक्षा वाचवां, उजेंरवां, वे वखत
माधवपुरनुं वन शास्त्रोक्त विधिथी जमाडयुं हतुं. परोपकार
समाजसेवा करवी ये तेमना जीवननो पुनीत आदश' हतो.

मुळभाईना नानाभाई मेघाणंद गढवी लोक साहित्यना निरक्षर साक्षर कहेतां. मांगरोलना शेख सरदार हुसेनमियां पासे मेघाणंदभाईप वातां मांडी. डायरो आखो थंभी गयो. वातां पुरी यई थेटले शेख सरदारे कहां के “मेघाणंदजी वाडी. वजीफा मांग लो” मेघाणंदभाई कहे “साधनानुं साढुं करवा नथी आव्यो. पण एक मांगणी मुकुं छुं दुष्कालनां डाकला वागे छे, माणसो मूठी धान माटे तरफडीयां मारे छे. मोज छूटी होय तो भूख्यांना पेट भरनार रसेाडा राज तरफथी खोलावो.” ने एज दिवसे राज तरफथी रसेाडा खुलां मुकवामां आव्यां. श्री मेघाणंदभाई ८० वर्षी उंमरे मूळो पर हाथ नांखीने भगवानने कहेतां के “वाप दुनियानां माणस जेने पाप कहे ले पवां एक पण पाप कर्या नथी. तारां कायदानी एक एक कलम अजमावी लेजे अने पकमां पण गुनेगार ठरुं तो घाणीप घालीने तेल काढजे.”

-श्री दोलतभाई भट्ट.

भक्त कवि श्री दुलाभाई कागनां आंगणामां एक कुनरी चार वच्चांने जन्म आपी मरी गई. तेनां पोटा जेवां गलुडीयां मा विनानां तरफडता जेई मा आई धनबाईप स्तनपान करावी गलुडीयाओने अने दुलाभाईने मोटां करेला. आवा सागरपेटा जेनेताना उदरमांज दूलाभाई काग जेबुं नररन्तन पाके.

चारण जातिमां आविभृत थयेली योगमायाओनी समाज-सेवानी देणगी वेदकालथी मांडीने आज सुधीना इतिहासमां उल्लेखनीय छे. आ योगमायाओण आकरां तप, ब्रह्मचर्यवत् निष्काम भाक्त परोपकारमय सादा जीवन अने सर्वेजन हितैषिता द्वारा समाजमां सन्मानित बन्यां छे.

१०८ संतो-त्यागी-सन्यासी-चारण :-

आमरण गामना हमीरदानना दिकरा भीमद्वाने हरिजन संत त्रिकम साहेब पासेथी दीक्षा लईने संत भीम साहेब बन्या. भीम

साहेबे हरिजन समाजमां भजनो गाया, उपदेश आप्यो अने सोने साथे मळीने नवी भावना पेदा करी. कुरिवाजो दूर कराव्या. मंदिरो स्थाप्यां. वहेम-बलगाड दूर कर्या. हरिजन समाजमां अस्मिता प्रगटावी. घोशावदरना चमार जीवणने शिष्य बनाव्या अे जीवणदासी कहेवाणा भजनो रचना करी जेमा भजनो सर्वोपरी कहेवाया.

सीतापुर गामना राणा सांसीना पुत्र गगाभाप बीलखाना महान संत चरणदासजीने चरणे पडी गुरुमंत्र लई आत्माराम नाम धारण कर्यु. ढसा जंकशनमां जग्या बांधी साधु संतो अभ्यागतेने सदार सांज भोजन अने आशरो आपतां. स्टेशनमां जेटली गाडीओ आवे पट्ट्ले जोळी लईने आत्मारामबापु आवे, दरेक डब्बे फरी फरीने साधु, संतो, गरीबोने केळां गांठिया आपे अने कहे “मारा साधुडां आ सेवकनी सेवा स्वीकार जो, आतेा कटक बटक छे, रोटी खावी होय तो हालो जगाप” छपनीयानां दुष्काळमां आ संते महान सेवा बजावी हती. “रोटी सबसे मोटी” प पमनो जीवनमंत्र हतो. संवत १९१४ मां ८४ वर्षनी उमरे आत्मारामबापु निवांण पाम्या. पमनां शिष्य कहानदासजी महाराज पमनो वारसो दीपावी रहां छे.

स्वामीनारायण संप्रदायना सुप्रसिद्ध स्वामी श्री ब्रह्मानंदजीनो जन्म राजस्थानना शिरोही तालुकामां आवेल स्वाण गाममां शंभुदान बाशियाने त्यां थयो हतो. स्वामी श्री ब्रह्मानंदजीनुं पूर्वाश्रमनुं नाम लाहुदानजी हतु. लाहुमांथी श्रीरंग, श्रीरंगमांथी ब्रह्मानंद नाम धारण कर्यु हतु. जूनागढ अने मूळीमां आ संप्रदायना मंदिरोनुं निर्माणकार्य तेओशीनी निश्रामां थयु हतु. स्वामीनारायण संप्रदायमां स्वामी ब्रह्मानंदजीनी सेवा अनन्य हे.

ब्रह्मानंद स्वामीना शिष्य देवानंदजी स्वामीनो जन्म भाल प्रदेशमां बालोल गाममां एक चारणकुलमां थयो हतो. पितानुं

नाम जीजीभाई अने मातानुं नाम बहेनजीवा हतुं. स्वामीनुं
मूळ नाम देवीदान हतुं. सहजानंद स्वामी पासेथी संप्रदायनी
दीक्षा लीधी हती. ब्रह्मानंदजी तेमना काव्यगुरु हता. २८ वर्ष
सुधी मूर्खीना मंदिरना महंतपदे रही संवत् १९१० आवण वदी
दशमीना दिवसे अध्यरखास कर्या हतो. मध्यकालीन गुजराती
कविओमां मराठी रचनाओ आपनार कदाच देवानंद एक ज छे.

पूर्णानंद स्वामीनो जन्म वि. सं. १८३५ मां वीरमगाम
पासेना हेवतपुरमां टापरिया शाखाना चारण दादभाईने घरे
थयो हतो. तेमनुं जन्मनुं नाम गजाभाई गढवी हतुं. सहजानंद
स्वामीप तेमनुं नाम पूर्णानंद स्वामी पबुं नाम आप्युं हतुं.
ब्रह्मानंदस्वामी तेमना काव्यगुरु हता. संप्रदायना भक्ति काव्योती
रचनामां पूर्णानंद स्वामीनुं स्थान आगबुं छे.

झालाढाडमां मूळी पासे कांत्रोडी नामनुं गाम छे. आ
कांत्रोडी गाम केशवस्वामीनुं कांत्रोडी कहेवाय छे. केशवस्वामी
जामंग शाखाना चारण हता. सन्यासी थया पछी सतत भजन
भक्तिमां दिवसे पसार करता. एमनाज एक कुटुंबी भायो भगत
राजकोटनी गांगाभगतनी जग्यामां खेलधारी थई बेटा हता.
कुप्पननी सालना दुष्काळमां साधु संतो. अभ्यागतोने रोटी आपी
जीवतदान आप्युं हतुं. राजकोटमां सवार सांज हरिहरनी हाकल
बोलावता. केशव स्वामीना सगा भत्तीजाप केशव स्वामी पासेथी
दीक्षा लई सन्यस्त धारण कर्यो हतो.

गीरना बोदाना नेसना एक चारणने भक्तिनो रंग लायो.
एक रात्रिप चारण्यने अने पांच वर्षना पुत्र नयुने भगवानने
भळावीने हाली नीकळयो. गोंडलमां बडवालानी जग्यामां जीवने
जंप बळयो. लोहलगरी महाराजनी परंपरानी कंठी बांधीने
जोंडुलिया कहेवाणा ने अमरस्वामी नामे ख्याति फरी वर्ती.
फरता फरता केटलाक वर्षो बाद बोदाना नेस पासे उतारो

कर्यों आसपास नेसना बाल्को अमरस्वामी पासे भेगा थई रमवा लाग्या। पर्मां नव वरसनो नथु पण हतो। सांज पडी एटले अमरस्वामी कहे “छोकराओ हवे नेसडां भेगा थई जाव। छोकराओ चालता थया परंतु नथु अमरस्वामी पासे रोकायो। छोकराओए घणो समजाव्यो परंतु नथु कहे “मारे नेसे नथी आवबु” मारे तो मारा वापनी साथे सन्यासी थबु” छे।” नथुराम सन्यासी थया। अमरस्वामीप शोल नदीने कांठे दीटला नजीक स्वंभालीयामां जग्या वांधी। अमरस्वामी पछी नथुरामजी गोंडलिया गाढीप आव्या। तेओ पण महान प्रतापी संत तरीके विख्यात थया।

मेथळी गामना लांगावदरा शाखाना चारण सन्यास लई ग्रेमदासजी गोदडीया कहेवाया। ‘रोटी सबसे मोटी’ प एमनो जीमनमंत्र हतो। जीवनपर्यंत हजारो माणसोने अन्नदान कर्यु। आ गोदडीयावापुना बे आश्रमो जूनागढमां छे। एक आश्रमना महंत प्रागजीभाई छे अने बीजा आश्रमजा महंत तरीके श्री कहानदासजी छे बन्ने जग्यामां अन्नक्षेत्र चालु छे। विद्यादान, अन्नदान अने आशराधर्म आ आश्रमोमां वषेधी चाली आवती प्रणालिका छे।

कच्छना धंधेणना अजरामल गोलचाना पुत्र रावळने बाल्पणथीज वैराग्य प्रत्ये वधु प्रेम हतो। जेम जेम रावळ मोटा थता गया तेम तेम प्रभुभक्तिमां ध्यानमां लीन बनी जतां। कच्छमां आ चारण महात्मा रावळपीर तरीके ख्याती पाम्या। अनेक दुःखीया सुखीया मननी शांती माटे, प्रभु प्राप्ति माटे रावळपीरना सतसंगमां आवता। रावळपीरे अखंड समाधी अवस्थामां पोताना प्राणनो शरीरमांथी त्याग कर्यो हतो। रावळ-पीरे ज्यां समाधी लीधी त्यां मंदिर बांधवामां आवयुं छे।

कच्छभा मजल गामनां चारण देवा आलगाने खीमराज नामनो पुत्र हतो। खीमराज विधुर थतां तेमने वैराग्यनो रंग

लाग्यो. महात्मा देवा साहेब अने तेमना शिष्य विहारीदासजी पासे खीमराजे शास्त्रो, पुराणो, महाकाव्योनो अभ्यास करी क्षेमदासजी नाम धारण करी सन्यस्तनी विहारीदासजी पासेथी दीक्षा लीधी. क्षेमदासजीप पर्यटन करी धर्म ध्यान ईश्वरभजननो प्रचार अने प्रसार कर्यो. मंजलमां एक श्री रामचन्द्रजीनुं मंदिर वंधावयुं. ८० वर्षनी उंमरे आ महात्मा कैलाशधाम पधार्या.

मढडा गामना मोड शाखाना मेघाणंद आपाभईप आध्यात्मिक क्षेत्रे एक 'हरिजन पंथ'नी स्थापना करी समाजनी बहुमूल्य सेवा वजावी छे. केटलाय वर्षों पूर्वे स्थापायेलो आ पंथ दिनप्रतिदिन प्रगतिना शिखरो सर करतो रहो छे. केशाद विस्तारमां आ पंथ सुप्रसिद्ध छे. सोरठमां ते पंथना अनुयायी-ओनी संख्या घणी मोटी छे.

सौराष्ट्रना गढडा स्वामीना पासे आंकडिया गाममां लांगा-बदरा शाखाना चारण महीदानजीने त्यां सं. १९९४ ना अपाढ शुद बीजने ता. २९-६-१९३८ ना शुभ दिवसे एक तेजस्वी बालकनो जन्म थयो. बालकनी अलौकिक शक्ति जाई सोप शक्तिदान नाम पाडयुं. शक्तिदानना मातुश्री जीवुबामाप नान-पणथीज शक्तिदानने भक्तिना संस्कार सिचयां. पिताश्री महीदानजी भजन, गीत, आराध, कवित, छंद बोलता ते शक्तिदानजी याद राखता, मा जे भक्ति गाथाओ कहेता तेनुं भनन अध्ययन करता. घरना आध्यात्मिक वारसाप कामण कयुं १० वर्षनी उंमरे साधु, संतो, सन्यासीओनी साथे संपर्कमां आववा लाग्यां. स्वामी प्रेमदासजी, गुरु रामदासजी, श्री हरिहरान दजी जंवा महान महात्माओनां संत समागममां नानीवयेथीज रहेवा लाग्या. स्व मी श्री हरिहरान दजीप श्री शक्तिदानजीने पोतानी जन्मभूमि हरेंडामां सने १९६९ मां सन्यस्त धारण करवानो आदेश आप्यो. सने १९७३ मां हरद्वारमां स्वामी ईश्वरभारतीजीना विधि गुरुपद

नीचे भगवा वस्त्र पहेरी स्वामी श्री नारायणनंद सरस्वती नाम धारण करी सन्यासी थया. तेओप मांडवीमां चपलेश्वर महादेवना मंदिरमां, विद्वामां, जुनागढमां आश्रमो स्थापी मधुर कंठे आध्यात्मिक प्रेरणादायीवाणी वहेवडावी रह्या छे.

पू. रामरतनदासबापु (जेतडा) पू. मुनि श्री हरिदानजी जेबा महाराजो (विश्वव्युत्व आश्रम-मेधी) प आध्यात्मिकक्षेत्रमां अनन्य स्थान प्राप्त कर्यु छे. सांप्रतयुगनी परम आदरणीय, बंदनीय विभूतिओ छे.

चारण संतोषे पाप-पुण्यना ऐढी दर ऐढीनां रुदिगत ख्यालो लईने बेठेला जनसमाजमां पोतानुं कर्मक्षेत्र बनावी मानव प्राणने वधुने वधु उंचे लई जवानुं, सत्य, सदाचार, आदर्शानुं आचरण कराववानुं, अभेद बुद्धि प्रगट कराववानी, राम राज्य, धर्म-राज्य अने प्रेम राज्य स्थापवानुं पोताना जीवननुं कर्तव्य समजी मानवतानो उंचो आदर्श पूरो पाडयो छे. चारण संतोनुं जीवन समाजने माटे हमेशां प्रेरणादायी बन्यु छे.

१०१० साहित्यकारण चारण :-

"चारण प भारतनुं कविकुल छे, संस्कारकुल छे. युगना परिवर्तन साथे डग देता प स्वर्धर्मना साहित्यने अंजवाळतो ज रहो छे. चारणोप उपसावेली कविता वार्तानी कला सर्वग्राह्य बनी रही छे.

वेदकाले चारण शास्त्रोनो रचयिता हतो, पुराणयुगनो ते स्तुतिकार हतो, मध्ययुगनो ते प्रबंधकर्ता हतो, राजपूतयुगनो वीररसनो वारिद्धि हतो, निढर अने सत्यवक्ता हतो, प्राण-मोगे निति अने धर्मनुं रक्षण करनार हतो अने तेनां चारित्र गौरव-मांथी पनी साहित्य सरिता बहेती हती. प जेम पनुं भूतकालीन गोरव थयुं तेम आजे पण प भूतकालीन गोरवनी भूमिका

उपर उमें रही चारण संस्कृतिनो मशालची वनी उमें छे.”

-श्री मेरुभाभाई मेघाणंद गढवी. (टहेल)

‘भारतीय तत्त्वज्ञाननो पिता Father of the Indian Philosophy’ नुं विरुद आपी शकाय, बुद्धिनिष्ठ, तत्त्वनिष्ठ, वैदिको पहेला नमस्कार तेने कहे आवुं तेज आकार थयुं तेनुं नाम याज्ञवल्क्य.

वैदिक मंत्र कहे छे के :

“योगीश्वर याज्ञवल्क्य नारायण नमस्कृत्य”

याज्ञवल्क्य अटले अलौकिक चैतन्यनो आविष्कार, वैदिक सनातन धर्मनो प्रथम विद्याता, वैदिक जीवननुं तेज जीवंत साकार शाश्वत थई पृथ्वी उपर अवतर्युं.” -पृ. पांडुरंग शास्त्रीजी.

स्कन्द पुराण हाटकेश्वर महात्म्यमां जणाव्यानुंसार यज्ञमां ब्रह्माजीने वीजी स्त्री साथे बेठेलां जेतां सावित्री बुधित थयांने तेणे ब्रह्माजीने शाप आप्यो. केटलाक समय वीत्या पछी प शापने कारणे ब्रह्माजीए चारण ऋषिने त्यां जन्म लीधो, त्यां पमनुं नाम याज्ञवल्क्य पडयुं.

(मानस पीयूष सं. श्री अंजनीनन्दनशरण, वालकाण्ड खण्ड १ पाना नं. ४३७)

चारण महात्मा ईसरदासजी वारहट, महात्मा हरिदासजी मिसण, महात्मा नरहरदासजी रोहडीआ, सांयाजी झुला, कलाजी उढास, कहानदासजी महेडु, मेह लीला, जेठाभाई गूढायच, स्वामी ब्रह्मानंदजी जेवा समर्थ महाकविओप काव्य प्रसादी द्वारा परमात्माने प्रसन्न कर्या हता.

शालिवाहन राजाना राज्यनां जंगलमां एक अग्निकुंड धीकी रह्यो छे. अग्निकुंडनी सन्मुख अेक मानवी बेठो छे. एनी सामे हस्तप्रत पोधी पडी छे. पोधीमांशी एक एक पानु लड्डे मधुरां अने गरवा सादे प वांचतो जाय छे. जंगलनां पशु, पक्षीओ,

प्राणीओने संभळावतो संभळावतो प संभळावेला पता अग्नि-
कुँडमां आनं दपूर्वेक होमतो जाय छे. पशु, पक्षीओ, प्राणीओ
एकचिते श्रवणपान करी रह्यां छे, अने विशेष श्रवणपान करवानी
आतुरतामां त्यांथी खसता नथी. कोण हतो प महामानव ? प
हतो चारण पंडित मनीषि गुणाढय, शालिवाहननी कचेरीनुं
बहुमूल्य रत्न हतुं. विद्वानो साथे अणवनाव थतां कचेरीनो
त्याग करी जंगलमां निवासस्थान बनाव्युं हतुं. शालिवाहनने आ
हकीकतनी जाण थतां प हस्तप्रतना थोडां अवशेष हस्तगत कर्या.
ते अवशेषरुपे जे साहित्य प्राप्त थयुं ते 'बहत्कथा मज्जरी',
नामे जगतभरमां विख्यात छे. देशदेशावरनी लोकवार्ताना मूळ
संशोधकोने गूणाढयनी पैशाचीभाषाना साहित्यमांथी जडी
आव्यां छे.

कविराज लाखोजी रोहडीया जोधपुर महाराजा सुरसिंहजीना
कवि हता. एमना गामनुं नाम टेला. बादशाह अकबरशाहना
दरबारमां तेमनुं स्थान घणुं उंचुं हतुं. तेओ कवि उपरांत
कुशल सलाहकार अने राजद्वारी पंडित हता. अकबरशाहे
लखाजीने अंतरवेद (गंगा जमुना वच्चेनो प्रदेश) मां साडात्रण
लाखनी जागीर आपी हती ने चारण जातिना बादशाहनी पदवी
थेनायत करी करी हती

अकबर मूँहसूं आखियो, रुडो कह दूँहुँ राह ।

मैं पतशा दुन्याणपत, लखो वरण पतशाह ॥

दिल्ली दरगह अबतरु, उंचो फलद अपार ।

चारण लख्खो चारणां, डाल नमावणहार ॥

मारवाडना साचोर परगणाना आढा गामना मेहाजी चारणनां
पुत्र दुरशाजी आढा एक समर्थी कवि, योद्धा अने राजद्वारी
पंडित हता. अकबर बादशाहे तेमनुं करोड पसावथी सन्मान
कर्युं हतुं. शिरोहीना रावे कविराजनुं करोड पसावथी सन्मान
करी पशुवा अने झांखर नामनां बे गामो आप्यां हता. एक वस्त

महाराणा प्रतापसिंहजीने अकबरशाह साथे सुलेह करवानो विचार आयो. प समाचार दुरशाजीने थतां पमणे 'विरद छहुतरी' नामनुं काव्य रची राणाने संभळावी तेनी प्रतिक्षा अखड रखावी हती. महाराणाना पुत्र अमरसिंहजीप कोड पसाव करी दुरशाजीने रायपुरीया, दृढाढियां, तथा कागडी नामना गामो आपेला. जाम सताजीप 'गजगत' नामनुं वीररसना काव्य बदल कोड पसाव आप्यां हता.

विरच्यो प्रवंध वरनरो, सूरज शशियर शाख ।

तदे खरच दुरसा तणा, लागा चवदे लाख ॥

महाकवि पुष्पदंत शिवना अनन्य उपासक हता. पमणे रचेल 'महिमनस्तोत्र' घणुं प्रसिद्ध छे. कवि श्री राजशेखर कनोजना राव महेन्द्रपालना कवि अने गुरु हता. अमनां पौराणिक नाटको साहित्य जगतमां विख्यात छे.

महाराज सिद्धराज जयसिंहनां समकालीन मीमण शाखाना करमाणंद तथा आणंद नामना काका भत्रीजाप सिद्धराजना दरवारमां विद्रूत-चर्चामां कंकाडण भाटणने हरावी हती. आणंद करमाणंदना दुहाओ सुप्रसिद्ध छे.

लीलाढा गामना कविराज सांयाजी झुला भक्तकवि तरीके विख्यात छे. सं. १६६१ मां राव कल्याणमले सांयाजीने कुचावा गाम आपी लाख पमावधी सन्मान कर्युं हतुं.

मथारियाना महेड चारण महकरण शरीके खूब जाडा हता. ते 'जाडा चारण'शी विख्यात बन्या. अकबरशाहनी शाहीकचेरीमां प्रथम मुलाकातमां बेठक लेतां बोल्या :

जमे जश बोला घणां, पग नबळा पदशाह ।

अब ते अकबरशाह बेटां बेटां बोलशा ॥

थे दिवसथी शाही कचेरीमां जाडाभाई महेहुने बेठा बेठा बोलवानो
अधिकार आपवामां आव्यो. अकबरशाहना बझीर खानखाना
मिरजा अब्दुल रहिम के जेओ फारसी, संस्कृत अने हिन्दीनां
शायर हता. तेथोश्चीथे जाडाभाई चारणनी विद्रताथी प्रभावित
थता कहुँ छे के :

धर जडी अंवर जडा, जडा चारण जाय ।

जडा नाम अल्लाहरा, अवर न जडा केय ॥

वृदीना महाराजा बलवत्सिंहजीथे कविराज सूर्यमल्लजीनी
अढी कास सुधी पेशवाई करी हती.

जोधपुरना पौलपात रोहडीया गोत्रना वारहड मुंदीयाड-
पुरना स्वामी कविराज करणीदान उदैपुर गया त्यारे उदैपुरना
महाराजा महाराणा प्रथम जगत्सिंहे जगदीश मंदिर सुधी पेशवाई
करी हती.

करनारो जगतपत कियो, किरतकाज कुरब्ब ।

मन जिण धोखा ले मुवा, शाह दिलेश शरब्ब ॥

सूलवाडा, गामना कविया शाखाना कविराज करणीदान
उदैपुर गया त्यां महाराणा संग्रामसिंहने तेमना पूर्वजेनी
कीर्तिगाथाना पांच गीत संभलावता महाराणाथे गीतोथी प्रसन्न
गीतोने मंत्र मानी धूप आयोने कविराजने लाखपसावथी
सन्मान कयुँ हतुँ.

कविराज करणीदानजीने 'सूरज प्रकाश' ग्रंथना सर्जन
बदल जोधपुर महाराजा अभयसिंहे हाथीनी अंवाडी पर बेसाडी
बे केस सुधी महाराज जलेवमां चाल्यां हता.

अश चढियो राजा अमो, किव चढे गजराज ।

पहोर अेक जलेब में, महोर हले महाराज ॥

वच्छराज गोड (अजमेरना) महाराजाचे कविराज पीठवाजीनुं
अबज पसावधी सन्मान कर्यु हतु.

देता अबज पसाव, दत्य धन्य गोड वच्छराज ।

गढ अजमेर सुमेरसु, उंचो दीसे आज ॥

सोरठना जमळा गामना चारण कविराज जेठाभाई उढास
पोरबंदर राजना राणा सरतानजीना राजकवि हता. एक बेळाये
कविराज तावनी विमारीमां कणसता सुता हता. राणा सरतानजी
कविराजनी तबीयत जोवा आव्यां. कविराजनी नातंदुरस्त तबीयत
जोई राणा सरतानजी कविराजना पग दवाववा लाग्या. कविराजने
थोडो आराम थता पग दवावनार सामे आंख खोलीने जोयुं
तो राणा सरतानजी हता. कविराजे कशोज विवेक कर्यो
नहीं. आ प्रसंगने घणो समय बीती गयो. कविराजने पोताना
गामनी माया लागी पथी राणा सरतानजी पासे कविराजे
पोताना गाम जमळामां कायमी निवास करवा माटे संमति मांगी.
त्यारे राणा सरतानजीने कविराजने कहुं के “देवीपुत्र जमळामां
राणा सरतानजी जेवो विमारीमां सेवा करवावाळो राणो नहीं
मळे” एनां प्रत्युतरमां कविराजे एक छप्पय राणाने संभळाव्युं.

मोरबिय मोरब्बज हरिये हाथ ओडायो.

अधों वेरवा अंग मस्तक करवत मंडायो.

जसावाळो गणजाण कविनां दाळिद्र कंपे.

एक चारण उगारी सात पुतरा समंरपे

केई अशा भूप आगे हुवा. बहुखंड कीरत सुणी,

सूर्ण सरतान विक्रमसतण, केई लाज तुं मा क्षात्रवटतणी

कविराज मालाजी सांदूनी कवित्व शक्तिधी प्रभावित थईने
जोधपुर महाराजा उद्यसिहजीप बे लाखपसाव अने गूंदीसर
गामनी जागीर आवी, विकानेरना महाराजा रायसिहजीप

लाखपसावने एक हाथी तथा भादोर गामनी जागीर, जयपुरना महाराजा जगत्सिंहजीप एक लाख पसाव अने नागौर परगणानुं ढांढरिया गाम आप्युं हतुं. वर्तमानयुगमां कविराज श्री पिंगलशीभाई नरेलाने भावनगरना महाराजा कृष्णसिंहजीप शेठावदर गाम आप्युं हतुं.

अकबरशाहे 'पृथ्वीराजनी बेलि'ना निर्णायक तरीके कविराज दुरशाजी आढा, केशवदासजी गाडण, माधवदासजी दधवाडिया अने मालाजी सांदूनी नियुक्ति करी हती.

भूजना रा'प कविराज ईसरदासजीनुं, मूळीना ठाकेर रत्नसिंह शेलावते कविराज परवतजी मिसणनुं अने महाराणा हम्मीरे बारुजीनुं करोड पसावथी सन्मान कर्युं हतुं.

जोधपुरना महाराजा संग्रामसिंहे कविराज मुरारिदानजी आशियानुं, जूनागढना रा'मांडलिके कविराज लाखणसी कांटानुं, जामनगरना जाम श्री विभाजीप कविराज वजाजी महेडनुं, कच्छना महाराव खेंगारजीप कविराज लखाजी खडियानुं जाम तमाचीप कविराज जीवण रोहडियानुं, जाम रावले गोधलसी बलधानुं, हल्वदना राजा मानसिंहजीथे कविराज जशवंतसिंहजी महेडनुं, भावनगर महाराजा कृष्णकुमारसिंहजीप कविराज पिंगलशीभाई नरेलानुं लाख पसावथी सन्मान करी कचेरीमां उंचु स्थान पनायत कर्युं हतुं.

वर्तमानयुगमां लाख पसाव झीलनार छेल्लो चारण :

"वसुंधरा वंध्य नथी थई आ समयमां पण सौराष्ट्रनी धरती उपर लाख पसाव देनार जामनगर राजमाता छे अने तेमज्ज पोतानां स्वार्थ माटे नहीं पण चारण कन्याओनां शिश्वणार्थे आबुं दान झीलता चारणो पण सौराष्ट्रमां छे. सौराष्ट्रनी शौर्य गाथाओ आज पण जेटली सजीवन छे तेटली ज दानेश्वरी-ओनी परंपरा पण जीवंत छे."

-श. ह. देशाई.

"जामनगर राजमाता गुलाबकुंवरवाए पहेलो पसाव कर्यै।
राज न हतुं, सालियाणा पण गया, एवी खितीमां प क्षत्रियाणीप
लाख पसाव आपीने पौराणिक राजा रतिदेवनी कथाने आपणी
सामे चरितार्थ करी दीधी छे :

राजमाता गुलाबकुंवरवा साहेबाना लाखपसाव अने अे
झीलनार श्री मेरुभा मेवाणंद लीला दानार अने पात्रनी दृष्टिये
रावळ जाम अने ईसरदासजीनी टेढे बेसे अेवा छे."

-श्री रतुदान रोहडिया.

१०.११ अयाची चारण :

धन्य खेती, धिक चाकरी, धन्य धन्य है व्यापार,
धिक धिक है मंगणो, नमणो सो सो वार.

(कविराज वाघदानजी शिरोही)

'अनेक चारण कुटुंबो अेवां छे के जे राज्याश्रित रह्यां छे,
अने अेमनुं सुख्य कर्म वार्जीवन रह्युं छे. अनेक चारण कुटुंबो
तो ते उपरांत खेती पण करे छे, अने गामडाओमां तथा नेस-
डाओमां पशुपालनने पण हजी सुधी नभावता आवे छे.
केटलाय चारणोने परापूर्वी जमीन के गामनी बक्षीस
मढेली छे. सामान्य रीते केटलाय चारणो आश्रयदाता
राजा क्षत्रिय के जागीरदारना कवि तरीके रहेता. एमना चीर
कमों गाई संभळावता अने मळतुं दान खीकारता परंतु चारणोमां
अेवा अनेक हता अने छे के जे सरस्वतीनी अने देवी कृपा उपर
नभे. जात-खेड अने जात महेनत करे, पण कोईनी पासे
जाचवा न जाय. आवा लोको अयाची कहेवाया. आवा चारणोने
जे जमीन के गामो पहेलां मळेलां ते कोई पराक्रमने कारणे
अगर तो चारण सुलभ कवित्व शक्तिने कारणे मळ्यां हशे,
कैम के ते कोईनी पासे याचना करवा तो जता नाहिं, गमे ते

हो पण आ वृत्तांत पटलुं सूचववा पूरतुं आण्युं छे के पराश्रित
कोम तरीके जीववां करतां अयाची रहेतुं वधारे तेजस्विता अने
पुरुषार्थ रहेल छे.” -पंडितवर्य सुखलालजी.

देगोमना कविराज जशवंतसिंहजी महेहुए आन्मवलिदान
आयुः परंतु अयाच्छीवत छोड़युः नहि.

संत भीमसाहेब जीवनपर्यंत अयाची रह्या हता.

घढવाणना पिंगळशीभाई रत्नुप कोईपण राजा महाराजानुदान न लेवुं पवी प्रतीक्षा वंश वारस माटे करी हती. तेमना वंशनो छेल्हो पुरुप कानोभाई गुजरी गया त्यां सुधी ईश्वरे टेक राखी हती:

कविराज पिठवाजी मिसण त्रीस वर्ष सुधी अयाची
रह्यां हता:

कविराज हरिदासजी महियारिया अयाचीवतना उपासक
हता. महाराणा संग्रामसिंहजीप पोतानुं मेवाडनुं राज्य कविराज
हरिदासजीना चरणोमां समर्पित करेलुं परंतु कविराजे निःस्पृह
भावधी ते पाल्हुं आपेलुं.

चारण जातिमां देश परदेश व्यवसाय करता चारणो, पशुपालक अने मालधारी चारणो, बाराडी अने कच्छना लडायक चारणो, सौराष्ट्रमां खेती करता चारणो प्रथमधीज अयाची चारणो तरीके विख्यात ठे.

१०१३ स्वातंत्र्य संग्रामवा सेनानी चारण :

चारण हंमेशां स्वतंत्रतानो पूजारी रह्यो छे. ज्यारे ज्यारे भारतवर्षनी अखंडता पर प्रहारे थ्या छे, आक्रमणकारोप राज्यशासन हस्तगत करवा चडी आव्यां छे, तेवा प्रत्येक आक्रमणकारोनो सशस्त्र सामनो कर्यो छे. भारत पर विदेशीओनुं

आधिपत्य न जोईप थे जातनो मुख्य ध्येय चारणनो रहो छे.
चारणोप देशनी स्वातंत्र्य रक्षा माटे बलिदान आप्यां छे.

‘चारणनी धरती पर कोईनी सत्ता चालती नहि. मोटा
राजवंशीथी पण चारणनी वस्तु पनी रजा वगर लई शकाती नहिं.
चारणनी मर्यादा कोई लोपतुं नहिं. एती स्वतंत्रता उपर
कोईनाथी आक्रमण थई शकतुं नहि, अने थेबुं आक्रमण करनार
गमे ते सत्ताधीश होय, पण चारण तेने पडकारतो, सागनो
करतो।’
—श्री पिंगलशीभाई पायक.

हिंदुस्तान उपर सिकंदरे चडाई करी त्यारे आई श्री हिंगलाजे
पांचसो तुंबेल शाखाना चारणाने लई सिकंदरनो सशस्त्र सामनो
कर्यो हतो. आ कार्यथी आई हिंगलाजनी भारतवर्षमां मोटी
प्रतिष्ठा थई अने पश्चिम भारतने माटे तो पमनुं स्थान पे एक
मोटुं तीर्थस्थान बनी रहुं. —श्री रामभाई ल. गढवी.

सिधमां सुमरा राजा हम्मीरे मुस्लिमधर्मनो अंगीकार
करी प्रजा उपर अत्याचार करवा लाग्यो. प्रजा त्रासी उठी. आई
आवडनी पासे प्रजाप फरियाद करी. आई आवडे भारतवर्षना
समस्त चारणकुळोने पकठां करी, सशस्त्र सामनो करी हम्मीर
सुमरानुं राज्य हस्तगत करी उमदा राजकुळ समाने राजकर्ता
तरीके स्थापी प्रजाने त्रासमांथी मुक्त करी हती.

सोमनाथ महादेवने लूंटवा अल्लाउदीने चडाई करी प
समये माणसुर गढवी अने आईथी लाखबाईप सोरठमां धूमीने
सोरठी वीरोने सोमनाथना रक्षण माटे पकठां कर्या हता.

कविराज वंदनदानजी मिसण अंग्रेज शासनना प्रखर विरोधी
हता. यशवतराव होलकरे मानपुरमां अंग्रेजोने हराव्यां प
समाचार कविराजने मळतां यशवंतरावने साहित्यद्वारा विरदाव्यो
हता. पज रीते बृंदी पासेना राजगांठडा संस्थानना राजा

वलवंतसिंहनो समस्त परिवार अंग्रेजों सामे लडता वीरगति
पाय्यो त्यारे आ कविराजे वलवंतसिंहना आखा परिवारने
काव्यमां अमर करी दीधो. कविराज वंदनदानजीना पौत्र
मूर्यमल्लजी मिसण अंग्रेजोना कट्टर विरोधी हता. ई. स. १८९७
हिंदमां बळवें फाटी नीकल्यो त्यारे राजा महाराजाओप अंग्रेजोने
साथ सहकार आप्यो थे वखते मूर्यमल्लजीये लख्युं के :

‘इकडकी गिण पकरी, भूले कूल साभाव ।

सूरां आलस पसमें, पकज गुमाई आच ॥

अर्थात् राजा कुल स्वभाव भूली जईने पकना ज (अंग्रेज) ना
आधिपत्यमां मानता थया हता. शूरवीरोप आलस अने श्रेष्ठर्यमां
पोतानी जींदगी निरर्थक ज गुमावी हती.

देशनी तत्कालीन दुःखद परिस्थितिने खूबज वेधक रीते
कवि नीचेना दूहामां रजू करे छे.

जिण बन भूल न जावता, गैंद गवल गिडराज ।

तिण बन जबुक तारवडा, ऊधम मंडे आज ॥

जे बनमां भूलथी पण हाथी गेंडा के सुवर आवी न शकता पज
बनमां आजे शियाळवां मुस्ताक बनीने तोफान मचावी रहां छे.

कविष फक्त ‘वीरसनसई’ कृतिनी रचना ज नहोती करी
पोते पत्रो लखीने घणा राजाओने बळवामां साथ आपवा तैयार
करवानो प्रयत्न कर्यो हतो. देशनी गुलामीशी कवि हृदय अनु-
कंपित बन्युं हतुं. अने तेथी तेने दूर करवा बने तेटला बघाज
प्रयत्नो तेमणे कर्या हता. नीचे आपेला बे पत्रो उपरथी
आपणने प बावतनी कविनी ईच्छा मानसिक स्थिति अने देश-
दाइशी बळता तेमना पवित्र हृदयनो ख्याल आवशे.

तत्कालीन परिस्थिति उपर पोतानां विचारो दर्शावता आ
आर्धवष्टा महाकवि नामली ठा. सा. बखतावरसिंहजीने पत्र लखे
छे. (वि. सं. १९१५)

“अगर जो म्लेच्छा (अंग्रेज़ो) आ वखते रही गया, तो तेमनो ईरादा आखा आर्यवत्‌ने परंत्र करवानो छे. अने कोई पण हिन्दु जागीर के टेकाणु नहि रहे. परमेश्वरी ईच्छा पण अबी लागे छे के आय न रहे कारण के आ वखते क्षत्रियोने वशी विपरीत वातो ज सानुकूल देखाय छे. पथी भविष्य विपरीत देखाय छे. अहीं ना समाचार प छे के अंग्रेजनी कोज लडाई माटे कोटा आवी छे ... सेना आवीने पडी छे, जे थाय ते खरूँ.”

(वीरसत्तसई भूमिका पृ: ७७)

आ पत्र आपणने प वखतनी परिस्थिति दशवि छे. अने कविनी वात साची पण पडे छे अंग्रेज़ो आखा देशने परतंत्र बनावीने ज रह्यां. देश पोतानो वचाव न करी शक्यो.

थे ज ठाकोर साहेब उपर लखेलो बीजो पत्र पण मनन करवा जेवो छे.

“अत्यार सुधीमां घरेथी बहार तो नीकली गयो होत, परंतु हबे तो ईश्वरे जुदो प्रसंग उभो कर्यो छे. थेट्ले ज्यारे ज्यारे रजपूतोमां चीरत्वनी भावना सांभलवामां के जोवामां आवे छे त्यारे गनमां आनंद प्रस करवानु बयनन पडयुँ छे. थेट्ले क्यां चीरत्व झल्के छे. अने क्यां लिएकल निवडे छे : ते अनुसार हर्ष के खेद प्राप कर्या पछी ज बहार नीकलवानु बनशे..... सांभलवामां आवे छे के साथीदारो ग्रण मली आवशे. परंतु हिंदुस्ताननो दिवम सारो देखातो नथी पट्ले पकवीजामां संप नथी.

जे रजपूत कहेवाय छे ते साचा रजपूत नथी. तेमनी खूब बईज्जती करवामां आवे क्ले.

थे बाजु जो कोई पृथ्वी अने अन्दराओना आशक, राज्य अने प्राणनी याजो लगाववावाला, जो पमना (विद्रोहीओना) साथी

बनवा तैयार होय तो लखजो. वीजे पण पृथ्वी रसाताळ नथी गई. थेटले केटलाय साथी बनवा तैयार थया छे. पाछलथी वीजा केटलाय बनशे. अने आवा साथीओ तैयार करवानो तो अमारा कुल परंपरानो कसब छे. आप त्यांथी ज्यारे यादी मोकलशो त्यारे अहींथी हुं पण लखी मोकलीश पण अत्यारे तो आ वात गुप्तज सारी छे. अंग्रेजोना सामर्थ्यने जोतां आपने आ वात नादानीयत भरेली लागशे. परंतु भगवाने अमने शरू-आतधीज नादानीयत आपी छे. तो दानाई क्यांथी आवे ?”

आ पत्र उपरथी कविनी देशने मुक्त करवानी तमन्ना, ते माटेनां तेमनां प्रयत्नो बगोरेथी ख्याल आवे छे. कविप बळवा भाटे साथीओ तैयार करवानी जारदार प्रवृत्ति उपाडी हती. तेमणे फोतानी कुलपरंपरा (वीरो तैयार करवानी) जारी राखी हती. आमांथी कविनी सत्त्रतानी लगन अने वीरत्व प्रतिनी धर्ष्यनी भावना दृष्टिगोचर थाय छे. कवि बळवाने सफल करवा दघुंज करी छुट्टा हता. अने आ ज प्रयासमां तेमणे आ महान कृति वीरसतसईनी रचना करी.” -प्रि. वी. के. गढवी.

१८५७ ना स्वातंत्र्य संग्राममां भावनार राज्यना खरेड गामना सिमण शाखाना दरेक चारणोअ भाग लड्डे हस्ते मुखे लाँसीने मांचडे चडी गया हता. जे स्थले आ चारणाने फाँसी आपी हती ते जग्या आजे फाँसी वाडी तरीके ओलखाय छे.

आणंद तालुकाना समरखा गामना गायकवाडना राजकवि कहानदास महेडुप १८५७ ना स्वातंत्र्य संग्रामना वीरोने प्रेरणा ना पीयुप पाया हता. कहानदास महेडना पुत्रे अंग्रेज फोजना ८३ संनिकोने मारीने शहादत व्होरी हती. अजीतसिंह गोलवाने आ संग्राममां भाग लेवा बदल फाँसी मरी हती.

१८५७ ना स्वातंत्र्य संग्रामना ओखामंडळना सेनानी मुळु माणेक, जोधा माणेक साथे कुरंगा गामनो चारण नागशी जोडायो

हतो. वरसोडा गामे अंग्रेजोनी कोजे घेरो घालयो. शरणे थवानी फरज पडे तेवी परिस्थिती हती. जाधा माणेके वधा आगेवानोनी सलाह लीधी तेमां नागशी चारणे शरणे जवाने बदले कहां के “हल्लो हल्लो बेली ना छडीआं हथीयार, बेली मणुं हकडी वार” वावेरोप अंग्रेजोनो सामनो करी शहादत ब्होगी लीधी. मुळु माणेक, जाधा माणेक अने नागशी चारणनी खांभीओ वरसोडा गामे आ वनावनी साक्षी आपती खडी छे.

ई. स. १९४७ मां स्वातंत्र्य संग्राममां सक्रिय भाग लेवा बदल राजस्थानना बारहठ श्री केशरीसिंहजी किशनसिंहजीने वीस वर्षनी जेल यातना मोगवारी पडेली, तेमना भाई श्री जारावर्गसिंहजीने फाँसी मळेली अने श्री केशरीसिंहजीमा पुत्र श्री प्रतापसिंहजीनुं कारावासमां मृत्यु थयुं हतुं. श्री केशरीसिंहजीनी स्थावर जंगम मिलकत सरकारे जप्त करी हती. आ परिवार “कान्तिकारी परिवार” तरीके राजस्थानमां बिख्यात छे. श्री केशरीसिंहजीनी कायमी स्मृति माटे ‘राष्ट्रीय स्मारक’नी स्थापना थयेल छे.

ई स. १९४७ना स्वातंत्र्य संग्राममां नानभा बारहठ ‘निरंजन यमा’ अनेक वखत जेलयातना मोगवाने कारणे तेमज कारावासना असहा त्रासधी शारीरिक स्वास्थ्य बगडता शहीद थया. हता.

जूनागढ नवाबे स्वातंत्र्य संग्रामनो विरोध नेंधावता सौराष्ट्र आरझी हक्कमतनी स्थापना थई. श्री मेरुभाभाई मेघाणंद गढवीप आरझी हक्कमतनी छावणी छत्रावा मुकामे नखावी तन, मन, धनधी सहकार आप्यो हतो सौराष्ट्रनां अग्रगण्य श्रीमंतो पासेथी धन संपति बेकठी करी आरझी हक्कमतना सेनानी श्री शामलदास गांधीने आपी हती. श्री मेरुभाभाई गढवीप तेमना

परममित्र आप्निकाना शाह सोदागर शेठ श्री नानजीभाई कालीदास महेता पासेथी रु. २५ लाख मेलवी श्री शामलदास गांधीने आप्यां हता. गांधीजीनी राजकेटनी लडतमां वीरावाळाने समजावामां श्री मेरुभाभाई तथा श्री कागवापुप अग्रगण्य भाग भजव्यो हतो. गांधीयुगना तेओ प्रखर प्रचारको हता.

१०.१३ अश्वोना सोदागर चारण :-

विक्रमनी चौदमी सदीमां दिल्हीना वादशाह महमद तुगलके चितोड पर चढाई करी विजय मेलव्यो. चितोड महाराणा लक्ष्मणसिंह, तेना युवराज अरिंसिंह सहित युद्धमां शहीद थया. तेना वंशज हम्मीरसिंहे चितोड पाढुँ लेवा अनेक हुमला कर्या परंतु तेमने सफलता मळी नहि. अेथी आखरे द्वारका जड़ प्राणत्याग करवानो निश्चय कर्यो. द्वारका तरफ जवा रवाना थया. रस्तामां खोड गामे उतारो कर्यो. ए गामना चारण देवी आई वरुवडीप महाराणा हम्मीरनो आतिथ्य सत्कार कर्यो. आई वरुवडीने महाराणापे पोताने मळेल पराजयथी वाकेफ कर्या. आईप तेमना पुत्र बारुने पांचसो घोडाओ अने चारण वीरोने महाराणा हम्मीर साथे चितोड पाढुँ मेलववा मोकल्या. महाराणा हम्मीरनो देवी सहायथी विजय थयो. बारुजीनु महाराणाप भव्य सन्मान करी राजदरबारमां उंचु स्थान आप्यु. बारुजीना वंशज 'सोदा बारहठ' तरीके ओलखाया.

हल्दीघाटना युद्ध माटे महाराणा प्रतापने घोडां आपनार सोदा चारण केशव अने जेहो अश्वोना सोदागर सौराष्ट्रना खोड गामना वतनी हता. आ चारण वंधु हल्दीघाटना युद्धमां महाराणानी फेजमां मोखरे हाली केशरिया करी समरभूमिमां शहीद थया हता. महाराणानो चेतक असल काठियावाडी ओलादनें घोडां खोड गामना चारण सोदागरोप आप्यो हतो.

सिकंदर भारत उपर चड़ी आओ हतो वे समये युद्धकार्य
 माटे तेमने घोड़ाओनी खास जरूरीयात उभी थई. आई हिंगलाजना
 पिता अश्वोना महान सोदागर हता. तेमनी पासेथी सिकंदरे
 आठसो घोड़ां लेवानो निर्णय कर्यो. आई हिंगलाजे आटली
 मोटी संख्यानी घोड़ांओनी जरूरीयातनी तपास करावतां जागवा
 मल्युं के आ घोड़ांओनो उपयोग आपणा देश सामे थवानो
 छे. आ हेतु माटे घोड़ांओ आप्यां नहि पटलुंज नहि प घोड़ां-
 ओने लई पांचसो तुंबेल शाखाना चारणोनी साथे आई हिंगलाजे
 आगेवानी लई सिकंदरनो सामनो कर्यो - श्री रामभाई ल. गढवी

सौराष्ट्रना पांचाळना कहका गामना भूरो जेशल चारण
 घोड़ांओने लईने मारवाडना बूंदी कोटाना हाडा राणा पासे
 गया. भूरा जेशले पांचाळना पाणी पंथा कल्याणी घोड़ांओनी
 प्रशंसा करी पटले महाराणाना अश्वपारखु सरतानसिंहे अरवी
 घोड़ां सामे हरिकाईमां उतरवानुं कह्युं. बने घोड़ांओनी परिक्षा
 थई. पाणीना होज उपर पाटीयुं मुकवामां आव्युं. बने घोड़ां-
 ओने होजनी बच्चे साम सामा मोढां अडाडीने पाढां राणा
 पासे आववानी शरत थई. पाटीया उपर घोड़ां देठाव्यां. भूरा
 जेशलना बावलाप अरवीने मोढुं अडाडयुं के भूरा जेशले
 पाढा बळवा बावलाने ईशारो कर्यो. बावलो वे पगे झाड थईने
 अंखना पलकारामां पाढो बळी नीकल्यो. अरवी पाटीयां उपर
 पाढो बळे ते पहेलां तो बावलो राणाना सिंहासन पासे
 उमो हतो. राणाप भूरा जेशलनुं सन्मान करी बगहपरा सहित
 सात गाम ईनाम आपी पेताना राज्यना बतनी बनाव्या. आजे
 पण भूरा जेशलना बंशज प सात गामोमां रहे छे.

सौराष्ट्रना बावरा तालुकाना रायपरनां चारण लाखा दांती
 घोड़ांना सोदागर हता. राजस्थानना जोधपुर महाराजा फतेसिंहजी
 समक्ष अश्वपरिक्षामां तेमनो अश्व प्रथम आवतां लाखा दांतीने

महाराजाए हीडोळीया गाम त्रांवाने पतरे वंशवारसागत लखी
आप्युं हतुं.

अश्वना सोदागर तरीके चारणनी प्रतिष्ठा वहुमूल्य हती. चारण उंची ओलादना अश्वो राखता. सोदागरीमां दगो, फटके, कूड़-कपट कदीपण करता नहिं. आफतग्रस्त अने जरुरीयातवाळा राज्योने कोईपण जातना बढ़तर लीधा बगर अश्वो आपी मानवतानो उंचो आदर्श पुरो पाडयो छे. अश्वोनी साथे पोते तेमज तेमनी साथेना चारणो युद्धमां सामेल थयाना केटलाय उदाहरणा आपणा इतिहासमां अंकित थया छे.

१०.१४ बहारबटिया चारण :-

बहारबटुं तो युग युगांतरथी चाल्युं आव्युं छे. बहारबटे नीकलवा माटे प वीर पुरुषोने शोख न हतो, परंतु सत्ताना जुलमो, शाहुकारोनां अत्याचारो, अंग्रेजो प्रत्येनी दाङ, पोते मानेला अन्याय सामे मरणियां पड़कार करवा बहारबटे नीकली पडता.

पुनरव नामनो चारण जसदण राज्य सामे अेकलपंडे बहारबटुं आदर्युं होवाथी पकलियो बहारबटियो कहेवायो.

पकलियाना बहारबटानो उद्भवमां मूळ कारण तो प हतुं के पक गाममां पक खून थयुं हतुं. तेनी तपास माटे दरवारी अमलदार गया अने थेनी साझे दरवारने घरे महेमान आवेला चारण पुनरव पण गयो. त्यां पुनरवे जोयुं के मूळो गीडो नामनो अेक काठी अमीर प खून थयुं तेनुं लेही जोतां चकर आवी मरण पाम्या. पुनरवे दायरामां पाढा आवी कसुंबो पीता पीता रंग छे मूळो गीडाना लेहीने पवो विनोद कर्यो. काठी समाज रोपे भरायो ने तेमांथी पुनरव बहारबटे चडी पकलियो वन्यो.’

-श्री दरवार वाजसुरवाळा.

एक दिवस रायपरने कुँडल वचाले काठीनुं गाहुं हाल्युं जाय. एकलियो खरचीखृट हतो. आर्था गाडामां बेटेली बहेनोने कहाँ के “बोन्युं घरेणा काढी आपजो खरचीखृट छु.” अमां एक विधवा बाईप कहाँ के “भाई एक कडलुं नीकब्बतुं नथी” थेकलियो कहे “बेन तारुं वीजुं कडलुं आमांथी गोतीने पालुं लईले ने काम पडे त्यारे आ भाईने बोलावजे” ये बाईने गीडा शाखाना काठीओ त्रास आपवा लाग्या. बाईप एकलियाने कहेवडाव्युं. थेकलियो कुँडला आवी बहेनने त्रासमांथी मुक करावी कायम माटे जीवाईनी व्यवस्था करावी हाली नीकब्बयो.

एक दिवस फोज सामे लडतां घायल थड्ने भाग्यो. देवालिया पालवा बोकल्दामां वाघरीनां बाडामां घायल थेकलियो पडयो पडयो पाटापीडी करावतो हतो. आशरो आपता राणींग-वाळाअे खूंटामण करी लवा महाराजने मोकली वातचीतमां एकलियाने रोकी राखी जसदण दरवारने खबर मोकल्या. फोज चडी आवी वाघरीप राड पाडी के “पुनरवभा वार आवे छे, भागजों.” एकलियो कहे “हवे शुं भागे ?” वान् डाह्या विश्वासु ब्राह्मणने कहे “हठ भामटा खृटयों के ? एक अड्डोत भेल्ला तारा प्राण काढी लउं पण हुं एकलियो मारुं मोत न बगाहुं” पम कही पोतानी आंगनीमां चौद गटीआणानो सोनानो फेरवो हतो ते ब्राह्मणने दक्षीणामां आपी रवाना कर्यो. वाघरी कहे “पुनरवभा हालो हजु गाममां जवानो बखत छे.” “अरे भाई हरि हर कर हुं एकलियो हवे नो भागुं” हथियारमां एक भालुं लईने हाला सोंसरवो नीकली शत्रुओने पीठ देखाडया वगर बहार नीकब्बयो, छलंग मारीने वारना सरदार बेला खाचरने माथे गयो. ए भालानो घा चूकववा माटे बेला खाचरे घोडी उपरथी पडतुं मुक्युं तेवो ज एकलियो भालुं टेकवी पेघडामां पग दईने बेला खाचरनी घोडी माथे चडवा गयो. तेनुं माथुं

उंचुं थयुं के तुरतज धड, धड, धड करती पक सामटी सात
गोलीओ छूटी. घायल पकलियो पकलण्डे लडी चीरगति पाम्यो.
पालवाना वोकळामां आजे पण तेनी खांभी मोजुद छे.

-श्री गगुभाई लीला.

बाराडी प्रदेशनो राजदे बूचड कौटुम्बिक वेरने कारणे
बहारवटे नीकळयो हतो. चेकना हुंगरमां राजदे आशरो लई
पडयो हतो. बाबु साहेब, नरसी शुकल अने जमादार नथुप
अने पोलीसनी गीस्ते चारेवाजुथी राजदेने वेरीने साद कर्यो
राजदे हाल हवे कस्बो पीवा! 'हवे तो काका स्वर्गापरमां
कस्बो पीशु.' घायल अने धींगणामां काम आवेलां साथी-
दारोने लई राजदे सहीसलामत नीकळी गयो. अंग्रेज अधिकारी
हमफ्री साहेब स्पेश्यल तेने पकडवा माटे निमाया, गणाने
भीडोरानी हदमां राजदेनो भेटो थई गयो. गाममां जई गाडा ओनी
ओथ करी किला उपर भजनभाव दुहा छंदोनी रमझट बोलावी
हमफ्री साहेबने हंफावी राजदे अलोप थई गयो. ई.स. १९२१ मां
राजदे बहारवटे चडयो हतो, १८ वर्ष सुधी बहारवटुं चाल्युं
हतुं. तेनुं मुळ गाम माळी अने तेना पितानुं नाम भया नरा
बूचड होवानुं कहेवाय छे.

भायाणी भारथ करे, बुचड बे बे वार,

तीखी धार तरार, रगते डेले राजदे.

आंबरडी जारी पकडी, दातराणुं धोले दी,

देवलीये के दखीयो राते फुलकां राजदे.

राजस्थाननो मोरार नामनो सुप्रसिद्ध बहारवटियो चारण
होवानी मान्यता छे.

१०१९ वीररसना उद्गाता चारण :-

'चारणो मुख्यत्वे वीररसना उद्गाता छे. श्रुंगार गाय
तेमां पण वीररसनी छांट आववानी आ तेनी बिशिष्टता छे.

वीररस प पक पवें रस छे के तेने ईश्वर साथे जोड़या
विनां चालतुं नथी. मृत्युने मंगल वनावाय तो ज माणस हसते
मुखे मृत्युने भेटवा तैयार थाय. आथी मृत्युने मंगलमय अने
कृतार्थ करवा तेने भगवान साथे भक्ति पण वही हशे. वीररसना
साचा गायक थवा ईच्छनारे वीररसने ईश्वरनिष्ठ वनाववें
जोईप ” —श्री नानुभाई दुधरेजिया.

चारण क्षात्रत्व वीरत्वना उपासक हता. ज्यां ज्यां वीरत्व
शब्दक्युं छे त्यां त्यां तेओओ अढारेय वर्णना वीरोने विरदाव्या
छे, तेने अमर कर्या छे.

“१८१७ नां स्वातंत्र्य संग्रामना सेनानी जोधो माणेक अने
देवो माणेकना शौर्यने चारणोप विरदावी तेनी शौर्यगाथाओ
रची तेने अमर कर्या छे. तेनां केटलाक दुहाओ उल्लेखनीय छे.

धाराळी धकुं दीप, बमणां बछूटे वाण,
फेटाले टल्ला लीए, सांगाणी जोध सुजाण.
माच्छरडे शक्ति मळीयुं परनाणे रगत पीवा,
अपसर थई उतावलीयुं वर देवो वरवा.
माच्छरडे माँडव रोपीयो, तोरण बांधी तलवार,
अपसरा थई उतावली, वर वरवा तोयार.

अने अनेक गाथाओ दुहामां सांपडे छे. अमारा प लोक-
कविप नथी जात के नथी जोयो समो पमने प्रेरणा झीलवा
कलाको सुधी बेसबुंय नथी पडयुं. पणे गमे त्यां अने गमे ते
वखते मर्दानगीनी प्रसंग भाल्यो के कोईपण जातना पक्षपात
विनां थेनी बाघारा बछूटी ज छे. थेणे पक सरखी
रीते पेरमपति मोखडा के जेतपरना जोगडा भंगीने विरदाव्यो
छे अने अमर कर्यो छे. पम अमारो दुहो नवखंड धूमी बल्यो
छे अने तेणे लोकने हैये काईक उन्मादना काईक प्रेमना काईक
शौर्यना थेन चहडाव्यां छे.

सुदामडानो प द्वांपडो. माळीयाना मींयाणा सुदामडा उपर
आटक्या. गढमां बाकेआरू पाडयुं अने तेओ अंदर पेसवा लाग्या.
गामधणी सादुल खबड काम आवी गयो अने मीयाणानो मार्ग
मोकळो थयो परंतु प बाकेआरां घाटे गढमां गरतां मीयाणाओ
उपर तलवारोनी त्रमजुट कोण बोलावतुं हतुं ! सवारमां गाम
लोकेअ बाकेआरा पासे आवी जायुं तो पार विनानां मियांणा
छिन्नभिन्न बनी रवडता हता, ते वधानी वच्चे सूँडलानो
उपाडतल कानीयो कटके कटका थई मृत्युनी मीठप माणी रह्यो
हतो. चारण कविजन आ दृश्य जाई शे छानो रही शके? तेणे
प भडने विरदाववेश शरू कर्या :

(गीत जांगडुं)

अडड माळीयो कडड सुदामडे आफळयो,
भज नगर वातनो थीयो भासो,
क्रोड अपसर तणा चूडला कारणे,
सूँडलानो वाळतल गियो सासो.
वरतरीया तणो नके रीयो वारीओ,
द्रव्युंलयो पाळ ने चडयो घोडे,
होलना वगाडतल नव धडकीयां,
होलना वगाडतल गियो घोडे.
वीभडां तणां दल करमडे वाढीयां,
सभांसर आटके लोही सूँका.
अपसरां कारणे झाटके आटकी,
झांपडो पोळ वच थीयो शूका.
भडया बे रखेशर जेतपर मेंयरे,
वजाडी खाग ने आग वधको,
रंग चडयो गामने, सामे कुसल्लेरीयां,
पटलो कानीयानो मरण अदको.

जेतपरनो चांपराजवालाने कोईके आगम कहेलुँ के जेतपर
उपर बादशाहनां दल उतरी आवशे अने प युद्धमां जोगडो भंगी
पहेलां काम आवशे. मरदने पहेलां मरवाना कोड होय छे. अने
चांपराजने थयुँ के मारा पहेलां जोगडो मरे ! पणे जोगडाने
किल्ला उपर कोठामां पूर्यो अने जोगडो त्यां उमें उमें धीरजांग
धीरबांग ढोल धडुसी रह्यो हतो ते सांभळतो. लोकोना आगम
साचां नीवडयां. जोगडानी नसे नसे शौर्यनी झणझणेणाटी ब्राली
रही ते कोठा उपरथी त्राटक्यो अने पहेलो जंगनो जश पोतानो
करी गयो अने चारणोथी प शे जीरवाय ? ?

रांपीनो राखणहार, कलचां लै वेत्रण कीयां,
बीजल तणो विचार, तें की जाणयो जोगडा.
आगे छेह्ली उठतो, पेली उठयो पांत,
भुपतमां पडी भात, जमण अभडाव्युँ जोगडा.
शंकरने जडयुँ नहीं, माथुँ खलामांय,
तल तल अपसरनाथ, तुँ जघ माथे जोगडा
मुंधा माल मल्ये, सुंधा साटबीये नहीं,
खुंधा कोळ खमे, जात बन्यानां जोगडा.

राणेसर गामनो प हलकारो असुरो टपाल लईने जतो
हतो. मार्गमां रजपुत दम्पतिनो सथवारो थयो. आंबलानी सीममां
कोळीओ आडा फयां अने अे गरासणीना शणगार उतराववा
लाग्यो. जटीयो पोतानी जीभनी मानेली बहेननी ब्हारे धायो
अने काम आव्यो.

पर उपकारे वढयो पंडे, भलो कर्या भारथ,
साचे अपसर साथ, जरुर वयो तुँ जटीजा.
असराण आव्यां लुंटवा, कहो अवरने काज,
अभंग तुँ वण आज, जरुर मरे को जटीया.
आंबलेथी आवता, पोढयो रणने पाटः
अल राखी अखीयात ते तो जमदृढ जटीया.
-काठियावाडनुँ वीररस साहित्य लेखक : श्री मगनलाल
इयामजी, अग्न्यारमी गुजराती साहित्य परीषद, लाठी.

आ उपरांत आवा तो केटलाय नर-शादूळोना शौर्यने
चारणोप विरदाव्यां छे. कोने याद करवा अने न करवा ए पक
मुंजवतो प्रश्न छे. गामडे गामडे जेटलां शौर्य प्रतिकोनां पाळीयां
छे. तेटलांज ते शौर्यनी चारणोनी विरदावलीओ छे; जागीदास
खुमाण, अभो सोराठियो, वरवाळानो शेठ शूरवीर घेलाशा,
नागर दिवानो गगा ओझा अने अमरजी दिवान, मलेक मामदना
शौर्य गीतो उल्लेखनीय छे.

काठियावाडननु वीररसना साहित्य अंगे श्री मगनलाल
श्यामजी लखे छे के “काठियावाडनु” वीररसनु दीगदर्शन करवुं
होय तो राजकवि पिंगलशीभाई के मेघाणंद गढवी के मेरुभा
गढवी के अेवां बीजा चारणदेवोने शोधी काढजो. महीनानां
महीना सुधी एमनी वाणीनो प्रवाह व्हेतो रहेशे, पटली समृद्धि
अेमनी पासे संत्रही राखेल छे. वीररसनां जीवंत काव्यसमा
कविराजोने लाख लाख वंदन.”

चारण शौर्य अने गुणना पुजारी छे जेनामां शौर्य अने
गुण जेयुं के तेने विरदाव्यां विना न रही शके. पछी ते मानवी
होय के पशु, पश्ची, प्राणीओ, नदीओ, सागर, वृक्षा वे जेवापणुं
नहि. समस्त सृष्टिमां ज्यां शौर्यने जेयुं छे त्यां तेणे विरदाव्युं छे.

१०.१६ प्रकृति सामे बाथ भीडता चारण :-

जति सतिने शूरवीर, शंभुसूत विचार,
चारण रण कलर नहि, चारण वो रण चार.

त्रैषिकेशना स्वामीश्री शिवानंदजी पेतानी वात्मकथामां
लखे छे के “खियोनी शक्ति उगतां सूर्यने थंभावी शके छे,
तत्त्वो पर शासन चलावे छे अने मूडदांनी अंदर प्राण पण
पुरी शके छे.”

आई आवडना नानाभाई मेरखीयाने सर्वदंश थयो. सातेय योगमायाओ उपचार करवा लागी. आई आवडे सौथी नानी बहेन लांगीने कहुं के 'लांगी पाताळमांथी अभीकृष्ण सूर्यनारायण उम्या पहेलां लई आवतो ज भाई बेठो थयो.' लांगीआईने पाताळमांथी पाढ़ा फरता भोड़ थयु. आकाशमां सबारनी लाल रेखा प्रसरी गई. सूर्यनारायण रथ हांकवानी तेयारी करी रहां हता. आई आवडे बचनसिद्ध योगमाया हता. आई आवड चितामां ने चितामां बोली इठया 'वेन खोडी थई के गु ? नहिं तो आटली बार लागे नही' पटलुं कही सूर्यनारायणने स्तुति करी. सूर्यदेव योगमायानां संकेतथी लांगीआईनी राह जोता उगता थंभी गया. लांगीआई अे पछी खोडीयार तरीके प्रसिद्ध थया.

आवडनी बाण, लाजालो लेपे नहिः

भरे न डगलुं भाण, कदिये काशपराउत.

जूनागढना रा'मांडलिकने आई नागबाईनी दैवी शक्ति विशे संशय थयो, त्यारे आई नागबाईए कहुं के :

सायर मछीया होत, के तो गीरनार वधोय गलुं,

आभ ऊँडणमां लई, में मरगर ढंहोणुं मांडलिक.

"हुं नागई नकलंक विकला करणी,

हुं नागई नकलंक अमर पर धरणी,

हुं नागई नकलंक गढशो भाजण गाळे,

हुं नागई नकलंक भूमि आकाश पताळे.

हुं नागई हरजोगरी मारूं ध्यान रे' जोगंदर धरी,

पण मांडलिक मान्यो नहि हुं देव टळी डाकण ठरी."

आई नागबाईना शाप प्रमाणे रा'मांडलिकनुं पतन थयुं हतुं.

आई नागबाई शाप आपी हेमालो गालवा हाली नीकल्या हता.

जूनागढथी बगसरा, बगसराथी अमदावाद, अमदावादथी आगज

वधीने नेतपुर गाममां नदीने कांठे रात रोकाया. त्यां तेमणे परच्चो बतावयो अने तेथी त्यां तेनी दहेरी चणवामां आवी छे, त्यांथी तेओ हिमालय प्रति गया उयां वर्तमान नांगला डेम पासे तेनुं स्थानक छे.

उनाळाना वैशाख मासमां गांडी पवन सख्त फुंकातो हतो. ए समये एक चारण आई हल्लवद्धी हटाणुं करी पोताने गाम जती हती, माथे माल सामान अने अकाले अवस्था घेराई गयेली. चारण आई डगलुं भरे त्यां पाणुं पडे पवन जराय खसवा न दे. चारण्ये पवनने कहुं के 'मने मारे घेर जल्दी पहोंचाढी दे' परंतु पवन मान्यो नहिं वधुने वधु फुंकावा लाग्यो. अटले चारण्ये कहुं के 'तुं फुंकातो बंध थई जा नहीतर हुं तने जीव आपी दईश. तेम छर्ता पवन बंध थयो नहिं अने साचेज आईए त्यां माथुं पछाडी जीव काढयो. आजेय हल्लवद अने कवाडिया गाम वच्चे आ आईनी खांभी छे. -कविश्री दाद.

पुराणोमां प्रसंग छे के अगत्स्य ऋषि समुद्रने पी गया हता. तेम गिरनो हरदास नामनो चारण मेमती नदीने पी गयो हतो. गिरना जंगलमां मेमती नदीनां पाणी वारे मास खल खल वहेतां हता तेना कांडा उपर काना कानल नामना चारणनो नेस हतो. संजोगोवशात् रोगचालामां काना कानलनो आखो नेस होमाय गयो. कानानो भाई हरदासने आ दुर्घटनानी जाण थई. हरदास नेसे आवीने जेबे तो नानुं छोकरुं के प्राणी मात्र बच्युं न हनुं. हरदास आक्रंद करवा लाग्यो. मेमती नदीने जोई अटंकी अवधृत सरीखा चारणे मेमती नदीना कांठे त्रिशूल खोडी जोगमायानुं स्थापन करी नेखम नाखी प्रतीजा करी के 'मेमती नदीने नहीं रहेवा दउं, मारा कुदुंबनो काल थई छे, तेनो बदला लईश' दोढ वर्षनी अखंड तपश्चर्या बाद हरदास जीत्यो. मेमतीमां ब्देतां पाणी अटकी गया. आजे पण प नदी

आठ मास पाणी वगरनी रहे छे. हरदासनो विजय थतां मूळे
ता दईने ब्राली उठयो :

मारी साळी भेमती, हबे जख मार तुः
आखी आखी पी गयो, ई हरदास चारण हुँ.
हरदास जीत्यो हठीला, हारी भेमती होड,
मर पाणी आवे मलकमां, तोये रे कोरी धाकोर.

-श्री शंभुप्रसाद द. देशाई.

पुराणमां प्रसंग छे के शांतनु राजा गंगा नदीने परण्या
हता. इतिहासमां श्रेवां लग्न अद्वितिय वनी रहां छे. सौराष्ट्रना
जेतपुरना पाधरमां भादर नदीना अवर्णनीय रुप जोईने कमरहंस
नामनेओ चारण मोही पडयो. शाखोक्त विधिधी भादर नदी साथे
लग्नग्रंथीथी जोडायो हतो. जेतपुर गाम धुमाडावंध जमाडयुं
हतुं. ए प्रसंगनो दुहो प्रसिद्ध छे.

वडय विना वरिये नही, आवे भलेने अंत,
भादर सरखी भामनी, कमरहंस जेवो कंत.

सिधना चारणोप जागीर बेरो न भरतां अमदावादना
बादशाहे केद कर्या. भक्तकवि ईशरदासजीने आ समाचारनी
जाण थता पोताना पुत्रने बादशाहने हवाले करी रुपिया पक
लाख अषाढी बीजने दिवसे चुकाववाना करार साथे तमाम
चारणोने मुक्त कराव्या. बायदा मुजब शाही कचेरीमां ईशरदासजी
उपस्थित थया. बादशाहे रकमनी मांगणी करी. ईशरदासजी कहे
'आपणो बायदो अषाढी बीजनो छे. आजे बीज उगे तो मारे
रकम आपवानी छे.' रात्रि थई परंतु बीजना दर्शन न थया.
बीजी रात्रिये पण बीजना दर्शन न थया. बादशाहे आनो
ईशरदासजीने भेद पूछयो 'आनो भेद पटलोज छे के ज्यां सुधी
हुं तमने रकम नही पहोंचाहुं त्यां सुधी बीजना दर्शन थशे नही'

बादशाहे अेक मासनी वधु मुदत आपी. हळवदना ठाकोर
रायसिंहजीने आ समाचारनी जाण थतां ईसरदासजी वती
रुपिया एक लाख बादशाहने सोकली आपी पिता-पुत्रनो भेटा
करावी आप्यो.

-श्री दोलतभाई भट्ट.

कागाग्रहसु काढिया, बेडुं दुजीवार,
आयो रायसिंहरा, धरा हदा उपकार.

अमरेलीना वजाजी सरवैयाने त्यां ईशरदासजी महेमान
थयां अने ते दिवसे ज वजाजीना पुत्र करणने सर्पदंश थयो ने
मृत्यु पाभ्यो. ईशरदासजीने आ बनावनी जाण थई. करणनी
पथारीप आवी सोळ दुहा तीथी वार कहां. देहा पुरा थतां
करण आळस मरडी उभो थयो.

करण ने ईसर काज, सोळे सज्जावन कयों,
राखी पत मढाराज, सेवक जाणी शामळा.

भावनगर पासेना गढका गामना चारण डोसाभाई
लांगावदरानी पत्नीनुं सर्पदंशथी मृत्यु थयुं. डोसाभाईना नाना
बाळकोप काळुं कल्पांत करी मुक्युं. नानुं बाळक मृत्यु पामेली
माने स्तनपान करवा लाग्युं. आ कारमुं दृश्य कविराजथी
जोवायुं नहि. परमात्माने ठवको आपचा लाग्या.

संसारमां वापेय सगो, पने हैंये दृध न होय,
एना टाणांनी ज्वेड, जावड राणा न जोय.

आ बाळक अजाण, अमथी उजरशे नहि,
जावड राणा जतन, करवी पनी कई.

आधी रजनी वीती गई, पाढली रही वपेअर,
करम रो कर गई, जावड राणा न जोय.

अमृत विना उतरी, मणीधरनुं झेर,
जावड राणा जगतमां, केवाशे काळो केर.

गज सारु गरूडपखे, हाल्यां गाव हेजार,
जावड गणा जीवने, व्हेली करजो वार.

दूदा प्रा थतां ज डोमाभाईना धर्मपत्नी आळस मरडी उभा थया.

कच्छना लाखा फुलाणीनुं लळकर पक पहाडी विस्तारमांधी
पसार थतुं हतुं धरतीकंपना तुफानथी पवैतनी वे हारमाळाओ
साम सामी अथडाती हती आ वे हारमाळाओनी वच्चेथी
सैन्यने पसार थवानुं हतुं. लाखा फुलाणीने आगळ वधुं
मुझकेल थई पडयुं. प समये दखोंदी चारण सैन्यनी आगळ
चाली हारमाळाओने उदेशी बोली उठया :

हुगर भंडता हेय, तेने ते वारेवा वाघडा,
लाखावाळा लेय, खोयण दळ खोडी कर्या.

कहेघाय छे के हारमाळाओ अथडाती अटकी जई लळकरने जवानो
मार्ग करी आप्या हतो. — श्री मालदानभाई नरेला.

महात्मा नरहरदासजीथे 'अवतार चरित्र' ग्रंथनी रचना
करी. प ग्रंथनी विद्याभिमानी काशीना पंडितोप अवगणना करी.
आ समाचार नरहरदासजीने मळता वाराणसी आव्या. विद्व-
मंडलने पक्त्रित करी कहुं के "आप काशीनग्रके अपराजित
पंडितराजोने मेरा ग्रंथको अप्रमाण कर दिया अब इन कलंक के
निर्वाणार्थ दूसरे सबै यत्न निष्फल सा भासता हैं। किन्तु आप
वंदनीय पुरुषोंके प्रतीति करानेका पक ही मार्ग मुझे जान पडता
हैं। यह शिवकी पुरी हैं, शिवजी सदा सत्यके साह्यक हैं।
आपके बनाये शुद्ध गिर्वाण भाषाके ग्रंथको विश्वनाथके मंदिर में
ले आओ। इन सबके नीचे 'अवतार चरित्र' रख्वो रात्रिभर
शिवालय भीतर रहने पर शिव साक्षीसे 'अवतार चरित्र' सब
आपके ग्रंथोंके उपर पडा हुआ हो। जब प्रमाणभूत।" सबारे
विश्वनाथ मंदिरना द्वार खोलता ज 'अवतार-चरित्र' ग्रंथ बधा

त्रथोनी उपर पडयो हतो. विद्वानेऽथ महात्मा नरहरदासजीने जयवेष्ट कर्यो.

१०.१७ देहवीण वीरेना दान स्वीकारता चारण :-

जेतपुर काठी दरबार चांपराजवालाप रडा चारणने अश्वनुं दान आपवानुं बचन बापेलुं. चांपराजवालो दिल्ही बादशाह सामेना युद्धमां वीरगति पास्यो. कविराज फरतां फरतां जेतपुर आव्यां. चांपराजवालाना पिताजीप अश्व आप्यो परंतु कविराजे तेमना हाथनुं दान लीधुं नहि. “मने तो चांपराजवालो दायरा बच्चे बधा जावे तेम दान आपे तो लउ.” राष्ट्रे कविराजने चांपराजवालाथे स्वप्नमां आवी कहां के ‘काले अश्वनुं दान आपवा आवुं लु’ बीजे दिवसे उगता पहारे दायरामां अश्वने शणगारी लाववामां आव्यो कसूंवें पीवाई गयो. त्यां तेजस्वी धोडेश्वार बणबोल्ये चारणने अश्वदान करी अलोप श्रई गयो. आ बनाव पछी जेतपुर दरबार चारणोना मालनी जगात लेता नहीं. प्रथा भारत स्वतंत्र थयुं त्यां सुधी अमलमां रही हती.

कमल वीण भारथ कीयो, देह वीण शीधा दान,
वालाप विधान, चांपा कोने चढावीप.

महात्मा ईशरदासजी माधवपुरनी यात्राप जता हता रस्तामां उपलेटा पासे नागडचालुं गाममां सांगाजी गोडने घरे रातवासो कर्यो. सांगाजीअे यात्राथी पाढां बळतां उननी कामळी स्वीकारवानो ईशरदासजी पासेथी कोल लीयो. ईशरदासजी सोमनाथ माधवपुरनी यात्रापथी पाढा फरता फरी नागडचालुं गामे आव्या. सांगाजीनी माप विद्वाय बखते कविराजने कामळी-नी भेट आपी. कविराजे सांगाजीने हाथे स्वीकारवानो आग्रह राख्यो. सांगाजीने तो नदीना पुरमां तणाई गयाने वे दिवस थया हता सौनो विषाद जोई कविराज समजी गया. गामनां

आगेवाने कविराजने सांगाजी कई रीते तणाया, तणाता तणाता
युं कहेता हता ते बधुं कही संभलाव्युं. ईशरदासजी पंज
घडीथे गाम लोको साथे नदी उपर आव्या. कविराजे सांगाजी
नामना पुकार पाडया. व्हेतां जलमां सांगाजी आवी, मा पासेथी
कामळी लई कविराजने धरी अलेप थई गया. वा प्रसंगनी
यादगिरीमां ईशरा गाम वसाववामां आव्युं. आजेपण ईशरा,
लुशाळा अने नागडचाळुं गामनो टींबो उपलेटा तालुकामां
विद्यमान छे. श्री कलाभाई बालुभाई उढास.

दीधारी देवल चडे, मत कोई रिस करे,
नागडचाळा ठाकरां, सांगो गोड सरे.

छत्रावा गामना मेह लीला समर्थ कवि हता. एक दिवस
कुतीयाणा गाम तरफ प्रवास करी रह्यां हता. संध्यानो समय
थतां नथुपीरनी वाढीमां ईश्वरनी आराधना करवा लाग्या.
देवीयाण स्तुतिना पडवा आजुबाजु विस्तारमां पडवा लाग्या.
माणसो भेगा थई गया. नथुपीरनी दरगाहना दर्शन करी रवाना
थवानी तेयारी करी पट्टले वाढी विस्तारना लोको भेट सोगादें
कविराजने चरणे मुकवा लाग्या. कविराजे प भेट सोगादेनो
अस्वीकार करता कह्युं के “माणसोनी दीधेल मोज लईने थाक्यो
छुं, हवे तो नथुपीरनी मोझ खपे.” त्यांतो घोले लुगडे एक
फकीर ओलीयो देखाणो. हाथमां पुरा साज शणगारेला घोडानी
लगाम छे. ओलीयो घोडो मेह लीलाना हाथमां मूकता कह्युं के
“मेह लीला तमारी विरदावलीना बदलामां नथुपीर आ अश्व
वक्षीश आपे छे.” मेह लीला कहे “नथुपीर अश्व आप्यो ई वात
मलक मानशे नहि, जो अश्व आपव्रो ज होय तो कुतीयाणानी
भरवद्वारमां आपो तो लउः.” अने बीजे दिवसे लोकोनी मेदनी
वच्चे सौ कोई जावे तेम नथुपीर कविराजने अश्वदान आपी
अलेप थई गया. मेह लीला ‘जाम भारत’ ग्रंथना सहकर्ता

हता. आ ग्रंथ जामनगर राजदरबारमां प्रस्तुत करवा जता रस्तामां दगाथी मेह लीलानुं खून करवामां आव्युं हतुं. तेवी प्रवल्ल लोक मान्यता छे.

पोरवंदरना राजकवि जेडाभाई उढास महान् कवि अने भगवतवत्सल पुरुष हता. तेथोप जमळा गाम पासे आवेला खीजडाना झाडमां वसता मामाने प्रसन्न करी 'बळद' प्राप्त कर्या हतो. जेडाभाई उढासे भेठाळी ग्रंथनी रचना करी हती. आ आ ग्रंथना सर्जनकार्य बदल राज तरफथी जमीन जागीर आपवामां आवी हती.

१०.१८ उजळां मोतना मरजीवां चारण :-

'आजे गांडपणमां गणाय एवां शील तो माथा साटे हता. प्रभुप मानवदेह परसेवा अर्थ घडयो छे ने जीवननी अणु-अणु शक्तिनो मन-वुँदि अने शरीरथी परनी सेवामां ज उपयोग करवो. ए माटे जातने घमी नाखवानुं पण वेदकाळथी आज सुधी कहेवामां आवे छे. आवा पराथे जीववा माटे मलेला जीवनने आकस्मिक ढुँकावी केम देवाय? ए तो आपघात कहेवाय अने आपघात माटे सरकारे सजा पण निर्माण करी छे. आवी रीते वधानां जीवन सेवा यज्ञनी आहुतिरूप वनतां हशे के केम अने केटलांना वनतां हशे ते विवादने। प्रश्न रहेवा दईप. आजे तो वीरतानुं पण लगभग कायदे काम थई गयुं छे, पण जीववानी आलपंपाल पटली वधी गई छे के मोत भारे भयानक अने विहामणुं लागे छे. मोतनो डर जीवनने वधुने वधु पामर वनावतो जाय छे. कोईपण भोगे जिवातुं हेय तो जीवतुं. अरे गमे तेम पण जीवतुंज. एज अेक उदेश, ए ज एक पुरुषार्थ थई गयो छे. जीवनमां शील अने सत्व रहे के जाय पण जीवतुंज. आम निरुदेश वनतुं जीवन मोतथी डरी डरीने उत्तरोत्तर पामर

बनतुं जाय छे. छतां जीवन-उद्देशनेा आहुंचर जराय ओढो
नथी देखानेा, त्यारे गांडपण कहो तो गांडपण अने घेलछा कहो
तो घेलछा. पण थे काळनां मानवीने सत्त्व बगरना जीवनमां
जराय स्वाद नहोतो रहेतो. खाटले पडीने मरवामां खाट गणाती,
बुढावस्थानी आलपंपाल जोईने कंईक जवानेा जुवानीमां ज
मरवानेा मनस्सबो घडता. उजळां मोतनी आशा करतां अने
कंईक जुवानेा जीवननी मर्यादा वांधी देता के २', ३' के भुं
वर्ष तो मरवुंज. पमांधी कंईक तलवारनी धारे रमतां मोतने
स्वाधीन थतां पबो मोको न मले तो जलसमाधि पण लेता अने
कंईक कमळपूजा खाता” — श्री जयमल्लभाई परमार.

जामनगर जिल्लाना राण गामना चारण जेठो मोड अने
तेमनी धर्मपत्नी करमावाई अत्यंत प्रभुभक्तिवाळा दंपति हता.
आखो दिवस प्रभु स्मरण करवुं प ज तेमना जीवनतुं ध्येय हतुं.
संवत् १९६७ मां खहस्ते पोतानुं मस्तक शीवने अर्पण करी
कमळपूजा खाई थे दंपतिप पोतानां मृत्युनी प्रतिक्षा पूरी करी
हती. आजे पण थे युगलनी देरी राण गाममां छे. त्यां घणी
मानताओ आवे छे.

चारण महात्मा ईशरदासजीने वधी वातनुं सुख हतुं.
पमनी निष्कलंक प्रभुभक्तिना तो परचा आपता. दीर्घकाल
सुधीना एवां उजळां जीवनवाद पोतानुं कर्तव्य पुरुं थयुं जणाता
पमणे सागर समाधि लीघेली.

सरधारना जोगमाया आई जीवणी साक्षात् महाशक्तिनो
अवतार हता. सरधारनां अन्यायी कूर, अधर्मी, अत्याचारी
शासक बाकरखानने मारी पोते धरतीमां समाई गया हता. आजे
पण तेमना मंदिर सरधारमां चुंदडीनेा छेडो पूजाय छे.

जूनागढ पासेना मोणिया गामना आई नागवाईप अने
मेंसाण पासेना गोरवीयाळा गामना आई शेणवाईप हिमालयनी
हिमगिरिओ वच्चे महाप्रयाण कयुं हतुं.

भक्तवर कवि सांयाजी छुला भगवतवत्सल हुता. सांसारिक कार्यमां सुक्त थई पती-पत्नी मथुरा पहोंचयां. जीवनना शेष वयों श्रवण-मनन तीर्थाटनमां गालया. तीर्थाटन करी मथुरामां अेक हजार गायेनुं ब्राह्मणोने दान दीधुं. हजारो ब्राह्मणो, साधु, संतो, सन्यासीओ गरीबोने जमाडया. वधांनी सामे 'श्री कृष्ण-चंद्रदेवनो' जयघोष कराकी प दंपतिप जमुनाजीमां जळ-समाधि लीधी.

अहमदावादना नवाब महमदशाहे रायदे लांगावदराने मुस्लिम मुल्लानी जेम बांग बोलाववानी फरज पाडी. मुस्लिम जमातो एकत्रित थई गई रायदे लांगावदराए भेट बांधी हजीरा उपर आवी बांग पोकारी, त्यांतो बहेता जळ जंपी गया, घोडांओप तरणा मेल्यां. रेतां छोकरा थंभी गया. बांग पुरी थई पट्टले मुस्लिम जमातोनो गगनभेदी अवाज उठयो 'रायदेपीर, रायदेपीर.' रायदे लांगावदराए भागीरथीना दृहा बहेता कर्या. अे दृहाथी सावरमतीना पाणी उछाला मारता हजीराना पगथीया उपर चडवां लाग्या. दोहा जेम बोले तेम पाणी उपर चडवा लाग्युं. सावरना पाणीप रायदेने माथाबोल्ल नवरात्री गयाने त्यांज रायदेप भेट छोडी नाखी. देहमांथी लोहीनी धाराओ बहेती थई. पेटमां कटार खाई रायदे लांगावदराओ बांग पोकारी हुती. जे जग्यात्रे रायदे वीरगति पाख्या प घटना स्थळ पर राजीयापीर तरीके पूजाय छे :

हेकण कटको हाडरो, जो गंगा ब्रह्म जाय,

(तो) मानवीयां कुलमांय, भूत न थे भागीरथी.

उपरथी उतरियां, पंखी पावन शियां,

मांय मंजन किया, भूत न सरजे भागीरथी.

कांत्राडीना केशव स्वामी अने तेना शिष्य बालदास फरता फरता एक दिवस पांचालना आंवरडी गाममां आव्या. आंवरडी

गाममां आई हीरबाईने त्यां उतारो कर्यो. पंज दिवसे आई हीरबाईने पकनें पक दिकरो लाखो मांदो पडयो. जीव अने जम बच्चे हरिफाई जामी हती. केशवस्वामी वस्तुस्थिती समजी गया. विधवा आई हीरबाईने कुलदिपक पोतानी हाजरीमां ओलवाय तो हीरबाई माथा पछाडी प्राण काढी आपे अटले पोताना शिष्यने कहां के “वालदासजी कांतो तुं तैयार थां ने कां हुं हाली नीकलुं” त्यां तो वालदासजीप गुरुचरणे सप्तरंग दंडवत प्रणाम करी लाखारावाने उठाडी पोते सूई गया. केशवस्वामीप वालदासनुं आयुष्य लाखाने आपी लाखाने जीवतदान आप्युं. वालदासनी जीवतां लीथेली समाधि आजे पण मोजुद छे.

१०.१९ पहाडामांय प्रसिद्ध चारण :-

केसर चंदन निज कुरंग, चारण सेदूर ने सिद्ध,

एतां नगर न नीपजे, पहाडामांय प्रसिद्ध.

सिह अने चारणोनो भादि वसवाट पहाडामां हतो. आजे पण गिरना जंगलमां बन्ने साथे ज वसे छे.

तुलसीश्याम पासे मीठाना नेसना राणो अने राम नामना चारणना बाल्को बेय भारे रमतीयाळ. सिह के सिद्धणने जुप अटले अटकचालो कर्या बगर न रहे. पक दिवस भेखडमां सिह सूतेलो जोयो अटले रामे हृप करतो भेखड उपरथी खावकयो बरावर सूतेला सिह माथे पडयो. सिह पाञ्चुं जोया बगरनो भागी छुटयो.

पक दिवस सिह भेखडनी अडोअड थईने नीकल्यो. जेवुं सिहनुं माथुं बहार आव्युं के राणाप झव दईने सिहना गळामां ढाल परोवी दीधी. सिह अचानक पहेरामणीथी भडकयो ने भागयो. बार गाव उपर चुथाई गयेली हालतमां ढाल मली आवी.

सासणमां काटाना नेसमां लखमण गेलवा नामनो मालधारी चारण रहे. तेने जंगल खाताना अधिकारी ओथे पक दिवस कहुं के 'गढवी आ बाजुनां करमदीनां दुवामां सिंह बेठो छे पने उठाडवो छे.' पट्टले लखमण गेलवे भेंसोने पाणीमांथी उठाडी सिसकारो कयों. त्यां तो दशेय भेंसो माथां उछाली करमदीना दुवां फरती गोठवाईने सिंहने वच्चे लई लीधो, थोडीवारमां सिंह सामे भेंसोने रमाडी सिंहने जवा दीधो. सरकार तरफथी लखमण गेलवाने रु. १०० नुं इनाम मळयुं.

जामवालानी पासे मीठडी अने सोमा नीसर नामनो नेस छे. आ नेसमां याजसुर केरवा नामनो चारण रहे. पक दिवस वाजसुर अने पांच छ चारणो झेकमां बेठां हता. अमां कोई शिकारीनी गोळीथी घायल थयेलो सिंह झेकमां आवी वाजसुर केरवानो जमणो पग मोढामां पकडी मांडयो झेट मारवा. वाजसुरे सिंहना बन्ने कान कचकचावी पकडी राख्या. साम सामे बन्ने बळ करवा लाग्या. छेवटे वाजसुरे सिंहनी गरदनमां डाचो पग भरावी सिंहने पक बाजु फंगोलयो अने बीजी बाजु पोते पडया. थेवोज सिंह भाग्यो सिंहना दाढोना निशान आज पण वाजसुर केरवानां जमणा पगमां जोई शकाय छे. सिंहनी साथे जीवनारा थोने सिंह थई रहेबुं पडे छे.

मोटा मीठाना नेसना मालधारी चारण देवो सतीयाने करमदीना दुवामां ज्योतना दर्शन थया. आ बनावनी जाण दुधाधारीवापुने करता तेओप प जग्याप खोदकाम करता इयामजी भगवाननी मूर्ति प्रगट थई. अने ते जग्या आजे तुलसीइयाम तरीके विख्यात छे. देवा सतीयानी पांचमी पेढीये हमीर सतीयो थयो. जेनी दातारी अने रखावट चोतरफ प्रसिद्ध हती. हमीर सतीयाप तेना दीकरा सामतभाईनुं नाम मंडावती बखते पोताना रावच्छदेवने बार भेंसो दानमां आपी हती. हमीर सतीयानी दातारीना घणां दोहाओ प्रसिद्ध छे.

धोडावडी धी प रेली, पोरह हामापुर,
 खनुरीप खनुर जसना फलीयां जसाउत.
 केरेता मीढो कहा, झवरी गर्य झंझीर,
 ते सो तु अजमालरो, हे ओढो हमीर.
 हामानी भलपे हवे, तागे केण तरीयो,
 दल ताहवु दरीओ, जायु जसमलराउत.
 सतीया गर्य जावा सरस, मारू हरखे दल हामा,
 त्यांतो दीसे हंगरडा (तोथी) रूडा जसमलराउत.

मध्यगिरमां धोडावडी, वाणेज अने गीरगढ़डानी वच्चे
 करडापाणनो नेस आवेलो छे. ते नेसनी बाजुमां देवलवेलनो
 उज्जड ठींबो छे. लोक वायका एम कहे छे के जगहुशादनुं
 नगर हतुं अने सात दुष्काळ पडेल त्यारे जगहुशाहे काळने
 धरव्यो हतो. अत्यारे आ जग्याए मकानोना पाया अने पाकी
 इंटोना सात केठार छे. जे ३५ थी ४० फूटना अने पंदरेक
 फूटनी गोल्डाईवाला छे. तेनी पासे मच्छुदरी नदीने कांठे
 करडापालनां नेसमां नथु साव करीने मोटो मालधारी चारण
 रहे. तेने त्यां दुष्काळमां उगला गामनो राणो देव (वारोट)
 आवेल रात्रे सुता पछी देवने विचार आव्यो के यजमान नथु
 साव आपी आपीने शुं आपशे? कलशी वाजरो अने थेकाद
 भेंस आपशे एमां दुष्काळ जाशे नहि. तेनां करतां भेंसो चोरीने
 लई जाउं. तेवी गणत्रीधी व्हेली सवारे उठी आठ भेंसो लई
 रवाना थई गया. पोताने गाम उगला आव्या, परंतु देवने भडक
 बेसी गई के नथु सावने खवर पडशे तो पाताळमांधी गोती
 मारी नाखशे पथी देव वरेधी साधु थईने हाली नीकल्या.
 नथु सावने आ समाचार मळतां देवनी गोतण शरु करी.
 भवनाथना मेलामांधी देवने हाथ करी करडापाण नेसमां लावी
 शास्त्रोक्तविधिधी देवनो भेख उतरावी ब्राह्मणो जमाडया. देव

जे भेंसो लई गया हता ते बक्षीश आपी प उपरांत दश भेंसो
एक कलशी वाजरो अने सो रुपिया देवने आपी कहुं के 'देव
मारी बीकथी तमे भेख लई घर छोड़ो तो तो मने लांछन लागे
ने ? चारणनो देव बीकथी वावो थई गयो ई तो कलंक कहेवाय.'
देवे नथु सावनी खानदानीने विरदावी.

मनहर नदी मच्छुदरी, कांठे करडापाण,
नीलो नेह नथवातणा सावंत साव सुजाण.
तरणे टेक आकु तणे, टपके गरणी तेम,
जीवाहर पावस जेम, कहुं वा नथवा कने.
अवगण पटलां गण कर्या, ततल पटलुं ताव्य,
कीरत गणने काव्य, नथवा वीण करवी नहि.

देवे प्रतिज्ञा लीधी के नथु साव सिवाय कोईनी प्रशस्ति
करवी नहि.

घोडावडी नेसमां आई वालबाई आगेवान गणाता
अने सर्वोदय योजनाओना प्रोत्साहक हता. एक दिवस राते
बारेक वाग्याना सुमारे चार मकराणी घोडावडीना खीमजी
लाखा पटेलने लूंटवा चडी आव्या. नेसमां आवी बंधूकनो
भडाको करी वीवडाववानुं शरू कर्यु. आई वालबाई अवाज
सांभली तुरतज उघाडी तलवारे पटेलना घरे आवी तलवारनी
पीछी पोनाना गळामां अडाडीने ब्राढ नाखी के "चोरना दीकराओ
हुं हजु जीवुं छुं ने मारा गाममां लुंट चलावो छो." धावली
जोई मकराणी थोलखी गया के चारणआई छे. थेठले आईना
पगमां पडी माफी मागी. आईथे भुख्यां बहारवटियाने जमाडी
राणी ल्लापना सिक्कानी बे तेगु काढी मकराणीओने आपी.
मकराणीओ आईने पगे पडी करगरवा लाग्या 'आईमां मैया
तमारा लैसा लई अमे क्ये भवे छूटीप, तमे तो जगदंवा छो.'
थेम कही मकराणीओ अलेप थई गया. आ वातनी जूनागढना

डी. बेस. पी. ने जाण थतां सरकारश्रीमां प्रशंशाना पत्रो कर्या। सरकार तरफथी आ कार्य बदल पचाश बीघा जमीन आईने धेनायत थई हती। आई देव थयाने पांचेक वर्ष थया हशे।

तुलसीद्याम पासे लेरियानेा नेस आवेलो छे। ए नेसमां पुनमती आई रहेता हता। खीसरी दुधाळाना शिकारीओओ आईना नेस पासे रोझनो शिकार कर्या। आधी आई सती थया। जेमणे आ शिकार कर्या तेनो बंशवेलो नथी रह्यो। आजे आ जग्या आई पुनमतीना पांच पीपला नामे ओलखाय छे। आई पुनमती तुलसीद्याम प्रागट्य करावनार देवा सतीयाना दीकरी हता।

उना तालुकाना मधरडी गामना कुंभार गोतानो मालडोर मेटा मीढाना नेसमां वरस उतारवा मुकी गया। एक दिवस लूंटाराओ कुंभारना ढोर लई भागी छूटयां। आ वातनी नेसमां जाण थई। ए समये कोई पुरुष नेसमां हाजर नहीं बे चारण आईओ लूंटाराओनी पाल्ल पडी। लूंटाराओने समजाव्या परंतु मान्या नहिं बन्ने बहेनोप ब्रांगु करी महाप्रयाण कर्युँ। लूंटाराओ भेंसो, गायो मूकी भागी छूटया। आजे पण आ वातनी साक्षी पूरती बे बहेनोनी खांभी उभी छे।

वेरावळ तालुकाना प्राचीथी ६ किलोमीटर कल्सला गाम छे। आ गाममां मांडणभाई धोलीया नामना विद्वान कवि अने उदार चारण रहेता हता। एमनी उदारता विशे कहेवाय छे के:

मेमानुं ने मांडण, आपे अदकुं मान,
सामदर न सुकाय, वाटी पीधे वावाउत.

आ मांडण आपानी काव्यकला उपर खुश थई प्राचीना महाते हाथी दानमां आप्यो हते।

कोडीनार अने उना वच्चे भीयाळ गामे वीजा करनल अने राणा करनल नामना काका भत्रीजाना नेसा हता। वीजा

करनले देव (वारोट) ना पक देहा उपर खुश थई दश मेंसो
अने पक घोड़ा आपी खुश कर्या हता.

नहि थेक तालो आवशे, आवेल नहीं अमे,
करना कोयलजी, वानी मारी वीजडा.
वाढीलांगानी वहे, जाजु दूर जंगर,
एमां वसे शीयाणी वीजडा, नीलो नेस नगर.
हरदेश हाकम तणा, अंरो रूडा थेधाण,
नेवत ने निशान, वागे आगल वीजडा.

वि. सं. १८२७ ना दुष्काळमां घणा माणसोने अचादान आपी
बीजा करनले जीवतदान आप्युं हतुं.

राणो करनल सत्ताधीशो तरफथी गिरना समाजने अन्याय
थतां बहारवटे नीकलयो हतो. ए बहारवटामां शहीद थतां
कहेवाय छे के :

नादे दश्युं निहाल्युं, कई दश्य लेवी करना,
(आज) रांडी गर्य राणा, प्राची लग पहाडा घणी.

—श्री राजवीरभाई रामभाई गढबी.

१०-२० चारणनी मित्रता :-

मित्र ऐसा कीजीये, ढाल सरीखा होय,
सुखमें पीछे पड़ रहे, दुःखमें आगु होय.
मित्र ऐसा कीजीये, जेसो टंकणखार,
आप बले पर रीझवे, भांग्या सांधे हाड.

कच्छनो कियोरककडाणा गामनो देशवटो पामेलो कुंवर
ओढो जामने वयों पछी जन्मभूमिनां दर्शन करवानी ईच्छा थई.
ओढो जाम महान शूरवीर पुरुष हतो. तेणे कच्छनी प्रजा उपर
अनेक उषकार कर्या हता. वयों पछी जन्मभूमिना दर्शननां आनंद

साथे छूपे बेशे शेरीप शेरीप भमे छे. जे शेरीओमां लोकेा तेनी
उदारता, वीरता, सद्कार्योनी प्रशंसा करता थाकता नहीं,
पज शेरीओ आज तेने जाकारो आपती हती. आखा गाममां
घूमी चारणना नेसडा पाछल दायरानी वातो सांभळवा बेटो.
दायरामां चारणो ओढा जामने याद करता कहेता होय छे के
“ओढो जाम गाढीप होत तो कच्छनी आ दशा न होत” ओढा
जामे त्यांज देहो कहो ते इतिहासमां अमर थई गयो छे.

मितर किजे चारणा, अवरां आळपंपाळ,

जीवतडां जस गावशे, मुवां लडावणहार.

राजस्थानना कोटडा जागीरना ठाकोर वाघाणी कोटडियाने
अने कविराज आशाजी वच्चे गाढ मित्रता हती. एक घडी पण
तेमना वगर चालतुं नहि. वाघा कोटडियानुं अवसान थतां
कविराजनी वियोगनी वेदना असहा बनी. आखो दिवस अने रात
वाघाजीनुं ज रटण करे. एक पल पण वाघाजी भूलाता नथी.
जोधपुर महाराजा राममालदेवजीथी कविराजनी वियोग वेदना
जेई शकाई नहीं. आथी कविराजने कहुं के ‘एक प्होर वाघाजीनुं
रटण छेडो तो एक लाख रुपिया आपवा अने चार प्होर रटण
छेडो तो चार लाख आपवा’ परंतु कविराज मित्र विरहवेदना
एक प्होर शुं एक पल पण छेडी शकया नहीं.

वाघा आव वले, धर कोटडिये तुं धणी.

जासी फुल झडे, वास न जासी वाघडा.

राजस्थानना सिकर गामना खडिया किरपारामने तेना चाकर
राजीया साथे पटली बधी प्रीति हती के तेना वगर एक घडी
पण चालतुं नहि. कविराजे तेने दंगामां अमर करी दीधो छे.

मतलबनी मनवार, जगत जमाडे चूरमा,

वण मतलबनी यार, राव न पीरसे राजीया.

लाखणसी कांटा नामना कविराज जूनागढना दिवान ईला
चावडानी साथे ज रहेता. कविराज ईला चावडानी डेलीप
सोने आनंद करावता. जूनागढ राज्यनां एक खास प्रसंगे ईला
चावडाप कविराजने कचेरीमां हाजरी आपवा खास आग्रह
कर्यो. मित्रना आग्रहधी कविराज राहनी कचेरीमां उपस्थित थया.
कचेरीमां प्रशस्ति करवानो कविराजने कम आवता कविराजे
रा'मांडळिकने बदले पोताना मित्र ईला चावडानी प्रशस्ति करी.

भरिया धन भंडार, खरच्या वीण जाशे खपी,
सद् किरत संसार, अमर रहेशे ईलिया.

ईली चावडो तुरत ज बोली उठयो 'कविराज ! आप रा'
मांडळिकनी कचेरीमां बोलो छो " कविराज कहे 'ईला चावडा
मने खबर छे, रा'मांडळिकने पहोंचवा मथुं छुं. थेमनी आमे
अडेली कीर्तिने वधावधा नीसरणी मांडी छे पण पने आडी
भीत तो आवे ने ?'

नीसरणी नजधार, भाले ने बाला भीत,
(त्यां) चावडो वड चित, आडो आवे ईलिया.

रा'मांडळिके कविराजने लाखपसाव कर्यो पण तेनो आभारी
तो तेना मित्रने ज बनावयो

सोमां ने सूजे नहिं, दिधा केरा दाव,
(हुं) पामा लाख पसाव, तो उपकारे ईलिया

कच्छना रा'देशळ अने कविराज जालणसी कांटा वच्चे
अद्वितीय मैत्री हती. कच्छमां प मैत्रीनी कहेवत पडी गई के 'मित्रता
तो रा'देशळने जालणसीनी ! एक घडी पण बन्ने मित्रो छूटां पडता
नहिं. ईडरना राव कल्याणमले तेनी राणीने तेना भाई देशळ
पासेथी जालणसी कांटा नामना कविराजने ईडर तेडी लाववा माटे
मोक्ख्या. वहेने आवी रा'देशळ पासे जालणसीने ईडर तेडी

जवानी हठ पकड़ी. रा'देशले अत्यंत वेदनासह कविराजने बनेननी साथे जवा रजा आयी. रा'देशलथी कविराजना वियोगनी वेदना सहन न थई. तोल मापनां साधनो वेचतां बोरानी दुकाने जई कांटानी मांगणी करी.

जालणसीनी जात, बेंचाय घर बोरा तणे.

देशल दिवस रात, कांटानुं स्मरण करे.

जालणसीनो जीतबो, भव रहेशे भेळो,

कागाने केती घणी, हंसला सुं हेडो.

ईडरमां आव्या बाद कविराजनी पण रा'देशल जेवीज स्थिती हृती. दरेक चीजमां रा'देशलनी याद ताजी करे छे.

कई पहेयां कई पहेरशुं, पालव घट प्रमाण.

मारूं तारूं ना गणे, रा'देशलना अंधाण.

देशल ठाकर कच्छधरा, अलंगे उतरियां.

चेमासारां दनडा मने खन खन संभरिया.

पच्छम धराना वायरा, पूर्वे दश पलिया,

पहेलां मले देशलजु, पीछे मुं आवी मळीया.

कच्छडेथी बादल उमडिया, ईडर उतरियां,

पेला देशल कनेथी पछी मुं आवी मळीया.

रा'देशल कविराजनी वियोगनी वेदनामां शारीरिक स्वास्थ्य गुमावी बेटां. आ समाचार ईडरमां जालणसीने थता अेज बडीप उंट उपर कच्छ आववा चाली नीकळ्यां. भुजीया किला पासे उंट आवता रा'देशलनी स्मशानयात्रा कविराजने सामी मळी. कविराजे उंट उपरथी पडतुं मूकी मृत्यु पाम्या. बन्ने मिथोनी पकी साथे अंतिमकिया करवामां आवी.

बगसरामां दरवार भायावाळा अने शिवदानभाई गढवी बच्चे गाढ मित्रता हृती. दरवार भायावाळानुं अवसान थतां

शिवदानभाई गढवी दरबारना अंतिमदर्शने गया. मित्रना देहना दर्शन करता करता ज शिवदानभाईचे महाप्रयाण कर्या. शिवदानभाई गढवीना सुपुत्र मानभाई गढवी (थानगढ) थोडा समय पहेलां ज अवसान पास्या. तेथो पण मानवतावादी साहित्यकार हृता. हास्यरसना उत्तम वक्ता हता.

१०.२१ चारणज्ञातिनी कलाकारीगरी :-

“चारणेमां बीजी घणी वधी विशिष्टता छे. भरतमां परमार्थी पटलुं ध्यान अपायुं नथी, छतां जे प्रदेशोमां जे जे चारणो वसे छे ते ते प्रदेशना भरत-गृथणनी लाक्षणिकता अमनां भरतमां जरुर उतरी छे. पण हालारमां चारणानुं भरतकाम माग मूकावे तेमांय जांबूडानुं विशिष्ट.” - श्री जयमल्लभाई परमार.

“सौराष्ट्रनी चारण कोमनुं भरतकाम थोडे घणे अंशे काठीकामने मळतुं गणाय. अे कोमना भरतकाममां गृदारंगनुं कापड विशेषतः पसंद करवामां आवे छे. आ कोमना भरतकाममां कौळी, फूल, सूरजगोटा, बावळीया अने कवचित केवडावेल तथा बीजी फूलवेलनुं भरतकाम जोवा मळे छे.”

-डा. हरिभाई गोदानी.

माताजीनुं मांडणु : चारणेना निवासस्थानमां पक रुममां बचोवच तणियाथी पकाद फुट उंचुं माटीमां उपसावेल केतर-कारीगरीथी मंदिर घाटनुं मांडणु बनाववामां आवे छे. मांडणानी मध्यभागे माटीमां कंडारेलुं सिंदेव चोपडेलुं सोडुं त्रिशूल अने आजु वाजु बे नाना त्रिशूल होय छे. मांडणा फरते बोर्डर उपर नकशी काम रंगवेंरंगी रंगे रंगायलुं होय छे. मांडणानी कलाकारीगरी आगवी अने विशिष्ट प्रकारनी छे.

अवरखना लींपणथी ओरडाना शणगार : चारणेना निवासस्थानेना ओरडाओनी पछीतो, कंडार अने भीत उपर

अवरखनुं लींपण करी रंग पुरणी करवामां आवे छे. आ रंग-पुरणीथी दिवसमां ओरडो प्रकाशमय लागे अने रात्रिप आभा-मंडलनी प्रतीति थाय तेबी बेनमून कला कारीगरीथी ओरडाना शणगार करवामां आवे छे. पाळकदाना रसने उकाळी तेमां अवरखनो झीमो नाखी लींपण तैयार करवामां आवे छे. लींपणनो ओरडामां आलेख करवामां आवे छे. आलेख सुकाया पछी दूधमां साकर, रंगनुं मिश्रण करी आलेख उपर रंग पुरवामां आवे छे. आ प्रकारना ओरडाना शणगार जांबुडा (जोमनगर) मां करवामां आवता. केटलाय विदेशीओ आ कलाकारीथी मुग्ध बन्या छे.

चारणनी बहुमुखी प्रतिभाओनी अध्ययनमां पक सर्व सामान्य सद्गुण महदअंशे हष्टिगोचर थाय छे ते प छे के चारणो पोताना शरीरनी सलामती के रक्षणनी जराय खेवना राखी नथी. जीवन के देह रक्षण करतां पोते उच्चतर मानेलौ कोई वस्तुनी खातर चारण झुझे छे, त्यारे अेनी खतर मटकुं मारता मारता देहने हुल करी नाखवानी शक्ति अेनी अंदर आयोआए आवी जाय छे. अने अे रीते माणसने मोटामां मोटो डर जे मृत्युनो छे तेने तो प घोळीने पी जाय छे. टेक, स्वमान. स्वामीभक्ति, निमकहलाली, अनाथरक्षण, यशः शरीरनुं भावि उजलांपणुं अने अेवी वस्तुने जीवन करतां वधुने वधु किमती माननारी मूल्य हष्टि पमने जीवन तथा मृत्यु माटे बेपरवा बनावी दे छे. चारण मोत उपर विजय मेलवनारा मरजीवा हता.

सौना भलामां पोतानुं भलुं मानबुं, बीजाने दुःखे दुःखी ने सुखे सुखी थबुं, पोताना ज ऐहिक सुखनो ज नहि अन्यना सुखनो विचार अने तेने माटे समर्पणमां आनंद मानवो प चारणनो पुनीत आदर्श हतो. आश्री ज श्री इवेरचंद मेघाणी

लेखे छे के “चारण धर्म पुरुष लेखे वंदनीय हतो, यशोगायक
लेखे लाखपसाव दाननो अधिकारी हतो अने सत्य उचारवानी
हिंमतने कारण ऐ विहामणो हतो.”

कवि श्री पिंगलशीभाईप चारण माटे यथार्थ कहुँ छे :

शक्ति उपासक सरलचित, ज्ञानी ध्यानि गुणवान,
सत्यवदित संस्कारप्रद, चारण वरण सुजान.

“चारण आजे लुप्तप्रायः थयो छे; अने भारतवर्षने विशाळ
खोले तो कोण कोण नथी लुप्त थयुँ? पण लुप्त थयेली प
जमातोप ज संस्कृतिनी बणजारोने सदा वहेती राखी छे.
शतकोना सूर्य उगी उगी आथमी गया त्यां सुधी चारण
संस्कृतिनी मशाल धरी राखी उभो रहो बेटलो काळ टकी
रहेबुँ प ताकातने सावित करे छे. आ ताकातनो प्रदीप चारणे
पण प ज भारतीय संस्कृतिना परमोज्जल दीपकमांथी चेतवयो
हतो, प धन परायुँ न होतु, आपणुँ ज हतु” निजत्वना आपणा
गौरवने चारणे पण एनी अनोखी रीते उजालयुँ छे.”

-झवेरचंद मेघाणी. (चारणो अने चारणी साहित्य)



(11) ચારણી સાહિત્ય

- ૧૧.૧ ચારણી સાહિત્ય બેટલે શું ?
- ૧૧.૨ ડિગલ અને ડિગલનો ઉદ્ભવ અને વિકાસ.
- ૧૧.૩ ચારણકાલ.
- ૧૧.૪ ચારણી સાહિત્યનું મહત્વ એવું વિશેષતા.
- ૧૧.૫ ચારણી સાહિત્યની વિષય સામગ્રી.
- ૧૧.૬ ચારણી સાહિત્યનું સ્વરૂપ.
- ૧૧.૭ રસ, અલંકાર, શૈલી, પ્રતીક.
- ૧૧.૮ છંદાનો નાદ વૈભવ.
- ૧૧.૯ વચનિકા.
- ૧૧.૧૦ વાતાકથન, વર્ણનકલા.
- ૧૧.૧૧ લગ્નગીતો, ઉમિગીતો.
- ૧૧.૧૨ ઋતુકાવ્યો.
- ૧૧.૧૩ પરંપરા.
- ૧૧.૧૪ વિદ્વાનોના મંતવ્યો.

“સાહિત્ય અને ભાષા એ તો લોકગંગા છે. અનાં બહેણ સ્વતંત્ર હોય છે. એ કોઈની દખલગીરી સ્વીકારતાં નથી. જનસમૂહે સંસ્કૃત ભાષાની સાથે સાથે જ પ્રાકૃત જનોમાં-સામાન્ય લોક-સમુદ્ઘમાં બહેતી લોકભાષાને-પ્રાકૃત ભાષાને-પ્રાકૃત વાળીને-સાહિત્યસર્જન માટે અપનાવી. લોકસમૂહના પ્યારા એવા તે જમાનાના ચારણ કવિઓ લોકભાષા-પ્રાકૃતના પદ્ધતિમાં જોડાયા. અમણે પોતાની સંવેદનાઓ, પોતાના વિચારો, લોકોની આકાંક્ષાઓ અને પોતાની કલ્પનાઓ લોકોને જ પ્રિય અને પરિચિત અવી પ્રાકૃત-લોકભાષામાં રજૂ કરવામાં પોતાની સરસ્વતી અને શક્તિ વાપરી, પરિણામે જનસમૂહના એ અધિક પ્યારા થઈ પડયા.”

-કવિ શ્રી દુલાભાઈ કાગ.

१११ चारणी साहित्य अटले शुं ?

“अेक रीते चारणी साहित्य जे घणुं खरुं गेय साहित्य छे. छंदेमां रचायुं छे; ते पण लोक साहित्य नथी, चारणी साहित्य मात्र राज्याश्रये ज नहिं पण विद्वानेा अने पंडितेनी पाठशाळा-ओमां प्रेत्साहन पामेलुं अने वंशपरंपरागत उतरी आवेलुं विकास पामेलुं लोक साहित्यधी अलग थेबुं साहित्य छे. अनी भाषा जुदी, शैली पण जुदी अने गायकी पण जुदी ज छे. प विशेषे संस्कृत, प्राकृत, ब्रजभाषा अने जूनी राजस्थानी डिंगळीमां उत्कर्ष पाम्युं छे. या चारणी साहित्यना पण वे प्रकार छे : पक ते राजाओनी के दाताओनी कृष्णमांधी सज्जयेलुं अने वीजुं कुदरतनी प्रेरणामांधी सज्जयेलुं भक्तिपरायण, प्रकृतिपरायण तेमज आत्मलक्षी साहित्य छे. छंदाने बाद करतां छेल्ली सदीओमां चारणोप पण लोको वच्चे जीवतां लोक बल्लोट पकडये, लोक जीवनना सुख दुःखना पडघा झील्या अने लोकोनी उमिं-ओना पडघा पाडतां गीतो रघवां शरु कर्या प गीतो छंदाथी जुदां ज तरी आवे छे. चारणी छंदानी, भाषानी रचना पण सहेली नथी अने पने समजबुं पण सहेलुं नथी. आजकाल प छंदेमां निःसत्त्व जोडकणा जोडीने पने लोकगीतोने नामे रजू करवामां आवे छे अथवा छंदाना घोडा मारी मूके छे.

चारणी काव्योमां नवळी वात नथी संघराई. नवळाई प्रत्ये तो क्यारे वक बनीने मर्मना हृदयमेदक वेणोथी पणे शौर्यने, शीलने अने स्वमानने सदा जागृत राख्या छे. साधु. संतो ने भक्तोप जेम जन सामान्यने नवधा भक्तिना संस्कार आप्यां तेम चारणोप जन सामान्यने शुद्ध प्रेमना निष्कलंकना, शुद्ध आचारना. आत्म गौरवना, प्रजा प्रेमना अने त्याग तथा बलिदानना संस्कार आप्यां छे. जन सामान्यमां आवा उच्च संस्कारोने सदा जागृत राखनार आ चारणो ज लोकवार्ताओनुं,

दुहाओनुं, प्रेम-शौर्यनी कथाओनुं, प्रकृतिप्रेमनुं ने छंदोनुं साहित्य सर्जयुं हें, अने जाळव्युं हें. आज सुधी संघरायेलुं अने जलवायेलुं लोक साहित्य वहुधा या चारणोने ज आभारी हें.” -श्री जयमल्लभाई परमार (आपणी लोक संस्कृति)

११.२ पिंगल अने डिंगलनो उद्भव अने विकास :-

डिंगल : “डिंगल में लिखित साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके रचयिता चारण हैं अतएव इसे चारण काव्य भी कह सकते हैं। इसमें वीर, भक्ति, शृंगार, नीति आदि सभी प्रकार के काव्य ग्रंथ प्राप्य हैं।” -डो. उद्यनारायण तिवारी

‘डिंगल भाषा का विकास भी शौरसेनी प्राकृत अपभ्रंश से हुआ है, जैसे बृजभाषाका। बृजभाषाका साहित्यिक रूप ‘पिंगल’ और राजस्थानीका साहित्यिक रूप ‘डिंगल’ नाम से प्रख्यात हुआ।’ -हिन्दी साहित्य का इतिहास.

डिंगलनो उद्भव अने विकास : ‘राजस्थानकी साहित्यिक भाषाओं में से पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी के साहित्यिक रूप को डिंगल नामसे पुकारा जाता है। मारवाड़ीका यह नाम बहुत प्राचीन नहीं है। इस भाषाके लिपि ‘डिंगल’ नाम क्यों दिया गया, इसका कोई ऐतिहासिक या भाषा विषयक लिखित उचित समाधान प्राप्त नहीं होता। इस शब्दका मारवाड़ी भाषा के लिपि प्रयोग उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर सर्वे प्रथम जोधपुर के कविराज बाँकीदास के स. १८७१ में लिखित ग्रंथ ‘कुकविवतीसी’ में मिलता है। बाँकीदास और उनके बंशज बुधाजीने ‘डिंगल’ नाम दिया हैं, अत डिंगल ही सही शब्दरूप हैं। डिंगलको ‘पिंगल’ के आधार पर ‘डिंगल’ कहा जाने लगा और तब से साहित्यजगतमें ‘डिंगल’ नाम ही प्रचलित हो गया।

'डिगल' या 'डिगल' शब्दकी व्युत्पत्ति और अर्थ के सम्बन्धमें विद्वानेंने नाना प्रकारकी कल्पनाएँ की हैं, किन्तु उनसे 'डिगल' के अर्थ पर कोई भी प्रामाणिक प्रकाश नहीं पड़ता। सर्व प्रथम हरिप्रसाद शास्त्री और प.स. पी. तेस्सीतोरीने डिगल भाषा और साहित्य पर विचार किया, किन्तु 'डिगल' शब्दके अर्थ सम्बन्ध में उनके तर्क काल्पनिक है। तेस्सीतोरीने बहुत ही परिश्रमसे डिगल की तीन सुन्दर कृतियाँ-वचनिका राठोड रत्नसिंहजीरी, महेशदाससौतरी, खिडिया जगारी कही (रचनाकाल लगभग १६६० ई.) वेलि किसन रुकमणीरी, राठोडराज, प्रिधीराजरी कही (ई. सोलहवी शर्ती) और छन्द राउ जहतसी २३, बीढ़ू सूज़इ २३ कहितथ (सोलहवी शर्ती ई. लगभग) का सम्पादन कर प्रकाशित कराया। वेलि किसन रुकमणीरी के आजकाल अन्य कई संस्करण प्राप्य हैं। 'ढोला माहू रा दूहा' डिगल साहित्यका एक अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशित ग्रन्थ है।

चारण, भाट, राव, मोतीसर आदि राजस्थान के जाति विशेष के लोगोंने डिगल में विशेष रूप से रचना की हैं। किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि केवल इन्ही जातियोंने डिगल में साहित्य सर्जन किया। जिस प्रकार डिगल की अपनी भाषा विषयक अलग विशेषता है उसी प्रकार छन्द, अलंकार, के सम्बन्ध में भी डिगल की अपनी पृथक परम्पराएँ हैं और काव्यरूपों के सम्बन्ध में भी डिगल की परम्पराएँ प्रायः विलकुल भिन्न हैं। इतिहास विषयक गद्यपद्यात्मक रचनाएँ ख्यात बान आदिनामो के अन्तर्गत मिलती हैं। दूसरी और पद्यात्मक काव्यकृतियोंके नाम कहीं चरितनायकोंके नामके अनुसार कहीं प्रधानयुक्त छन्दके अनुसार रखे गये मिलते हैं। डिगल काव्यका इख प्रकार अपना स्वतंत्र और काफी प्रभावशाली साहित्य मिलता है, जिसका सम्यक् अध्ययन अभी प्रारम्भ

हुआ है।' रा. सि. तो. हिन्दी साहित्यकाश भाग-१, पृ. ३४६
ज्ञानमंडल लिमिटेड वारणसी।

श्री जगदीशसिंहजी गहलोत 'उमर काव्य'नी प्रस्तावनामां
‘डिगल’ विशे लखे छे के “यह ‘डिगल’ एक प्रकारकी असंस्कृत
भाषा है। ब्रजभाषा की कविता का नाम जैसे ‘पिंगल’ कहा
जाता है, वैसे ही मरु भाषा (राजस्थानी) की कविता को ‘डिगल’
कहते हैं। यह ‘डींग’ और ‘गल’ शब्द मिल कर बना है
इसका अर्थ ऊँची बोलीका है क्योंकि इस भाषा के कवि उच्च
स्वरसे अपनी कविताका पाठ करते हैं। ब्रजभाषा की कविता
में ध्वनि उच्च नहीं होती और उसमें मधुरता विशेष होती है।
इसलिए इस ब्रजभाषा को राजस्थान में ‘पिंगल’ अर्थात् ‘पांगली’
(लंगडी, लुली) कविता कहते हैं। पिंगु का अर्थ लंगडी और
गल का मायना बात या बोली है। स्वर्गीय कविराजा मुरारि-
दानजी महामहोपाध्यायने ‘डिगल’ का अर्थ अनघड पञ्चर या
मिठीका डिगल (डेला) किया है। क्योंकि इसमें गुजराती, मराठी,
मागधी, सिन्धी, ब्रजभाषा, संस्कृत, फारसी, अरबी आदि कई
भाषाओं के अपभ्रंश शब्द पाये जाते हैं। अपभ्रंश भी साधारण
नहीं वह भी इतना ज्यादा कि उसका असली रूप जान लेना
भी कठिन हो जाता है। जैसे

| संस्कृतमें | डिगल भाषामें |
|------------|--------------|
| मुक्तापळ | मोताहल |
| युधिष्ठिर | जुजेठल |
| ध्रुवभट | धूहड़ |
| श्रीहर्ष | सीहा या सीहड |
| हस्तबल | हाथल |
| आलभट | अलटु |

कितना रूपान्तर है। इस भाषा में ट, ठ, ड, ढ, ण और 'ल'
आदि अक्षरों की प्रधानता होती है और 'स' का प्रयोग प्राय

‘ह’ होता हैं। इस भाषामें ऋ, ऋ, ल, अ, औ, ये स्वर नहीं होते और तालवी (श) और मूर्धनी (ष) के स्थान पर भी दन्ती साकार (स) ही लिखा ‘व’ बोला जाता हैं। ऐसी ही ‘ख’ के स्थान में ‘ष’ लिखा जाता हैं। इसका साहित्य विक्रम की ९ वीं शताब्दी से मिलता हैं। ऐसी ‘डिगल’ भाषा में जिसे अनघड पत्थर या मिट्टी के ढेले की उपमा दी गई हैं काव्य निर्माण और वह भी हृदयग्राही सरस काव्य हो, यह कवि की प्रतिभा का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।” —श्री जगदीशसिंहजी गहलोत

मेजर श्री रघुवीरसिंहजीना मत मुजब ‘नागर अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानकी बोली साहित्यिक रूप में ‘डिगल’ नामसे विख्यात हुई।”

कविचर ठाकुर श्री नाथसिंहजी ‘डिगल’ पर लखे छे के ‘डिग’ शब्दसे बना हैं। डिगका मतलब हैं डिगा, बड़ा यानी डिंगे (मोटे) गले से उच्च स्वरसे उच्चारित की जानेवाली भाषा। इसके साथ ‘ल’ लगने से ‘डिगल’ बना हैं।

प्रा. श्री नरोत्तमदास स्वामीप आ अंगे राजस्थान रा दोहा नामक ग्रंथनी प्रस्तावनामां लख्युं छे के “राजस्थानीके एक साहित्यिक रूपका नाम डिगल हैं। द्वित और संयुक्त वर्णोंका प्रचुर प्रयोग उसकी एक मुख्य विशेषता हैं। कई विद्वानोंने ‘डिगल’ को एक कृत्रिम काव्यभाषा कहा हैं, जिसको चारणो, भाटों ने गढ़ लिया था। परन्तु यह कथन भ्रान्तिपूर्ण हैं। डिगल एक प्राचीन काव्यभाषा हैं, जो आरंभसे बोलचाल की भाषासे भिन्न न थी। आरंभ में डिगल प्राचीन राजस्थानीका एक रूप थी उत्तर अपभ्रंशकाल के पश्चात् जब राजस्थानीका स्वतंत्र विकास होने लग ते। अपभ्रंश के कज्ज, कम्म आदि शब्द बोल चालकी राजस्थानीमें कज और काम आदि बन गये,

पर कविता में कज्ज और कम्म आदि का ही बोलचाल रहा। इस प्रकार धीरे धीरे यह बोलचालकी राजस्थानी से दूर पड़ती गई।

श्री पुष्करभाई चंद्रवाकरे “चारण, डिगली अने तेनु वाइमय” लेखमां डिगली पर चर्चा करता लखे छे के “डिगली पर डो. तेस्सिसतोरि, डो. हरीप्रसाद शास्त्री, श्री गजराज ओङ्का, श्री पुरुषोत्तम स्वामी इत्यादि विद्वानोप मतो आप्यां छे पण तेमां भाषाकीय निर्णयनी स्पष्टता जडती नथी।

राजस्थानमां एक पबो पण प्रसिद्ध मत छे के डिगली मूळ व्युत्पत्ति डिभ+गल अम छे. डिभ अटले बालक अने गल अटले गलुँ=डिभगल अर्थात् बालकनी बाणी प्राकृत जेम बालभाषा कहेवाय छे. तेज प्रकारे राजस्थानी आ शिशुवयनी काव्यभाषा डिगल कहेवाई।

स्व. श्री झवेरचंद मेघाणीप आ अवतरण राजस्थान रादूहामांधी आण्युं छे. तेमणे लखेल अंथ ‘चारणो अने चारणी साहित्य’मांना डिगल परना प्रकरणमां आ बोली परत्वेनो तेमनो स्पष्ट मत मलतो नथी।

सत्यतः डिगल बोली छे, भाषा छे. उतर अपभंशमांधी अर्थात् पंदरमां, सोलमां शतकनी पश्चिम राजस्थानीमांधी जनसेल द्वित अने संयुक्त बणानुं प्राचुर्य तेमां छे. कृत्रिम अनुस्वार मूकवानी आ कविओनी तेमां आदत जोवा मले छे. वधारामां आ कविओ राजदरवारमां स्थले स्थले धूमतां तेथी स्थानिक बोलीओमांधी शब्दो लईने तेमना शब्द भंडेलने समृद्ध बनावता तेथी ते बोलीनो समृद्ध शब्दकोश छे. गुजरात, राजस्थान, कर्ल अने सौराष्ट्रमां आ प्रकारनी कविता गानार ने रचनारनो थेक

वर्ग हतो अने छे. तेओ जे काव्यभाषा प्रयोजे छे, ते डिंगळी बोली डिंगळी भाषा नशी यण भाषा छे, बोली छे. ते भाषा खडी बोलीनी वधु नजीक छे.

डिंगळी भाषाना कविओने दोहा, सोरठा, कुंडलिया, अने छदेंदा डिंगळी सविशेष फाव्या छे.

अनेक विवेचकोए 'डिंगळी' भाषा वीररसनी भाषा छे. थेबुं लख्युं छे, एण नागदमण भक्तिरसनुं तेमज माना वात्सल्यनुं अनुपम काव्य छे.

डिंगळी भाषाना समृद्ध लोकसाहित्यमांथी आचमन पाया. थे कवितामां वीर, भक्ति, शृंगार अने करुण रस पूरपाट वहा छे. थे कविताना वीररसना काव्योथे शूरबीरोने अमरता अर्पी छे; भक्तिरसनां काव्योप इशा साथेनुं पक्त्व संधाव्युं छे; शृंगाररसे संसारने निर्मलो बनाव्यो छे. अने करुणरसे करुणाना धोध पापाण हृदयी मानवीनां हैयामांथी वहाव्या छे.” (अखंड आनंद)

११.३ चारणकाल : (संवत् १०५० से १३७५ वि.)

“बाचार्य शुक्लने वीरगाथाकाल का समय सवंत् १०५० वि. से १३७५ वि. माना हैं जब कि हजारीप्रसाद द्विवेदीने १००० ई. से १४०० ई. तक माना हैं। लगभग सभी इतिहास लेखकोने इसी समयको कुछ घटा-बढा कर स्वीकार किया हैं। डाक्टर रामकुमार चर्मा इस काल को 'चारणकाल' कहते हैं।

हर्षवर्द्धन के उपरान्त ही साम्राज्य भावना देश से अन्तर्द्वित हो गयी थी और खण्ड-खण्ड होकर गद्वरवार चौहान, चन्दोल और परिहार आदि राजपूत राज्य पश्चिमकी ओर प्रतिष्ठित थे वे अपने प्रभाव वृद्धि के लिप परस्पर लड़ा करते थे। लड़ाई किसी आवश्यकावश नहीं होती थी, कभी कभी तो शौर्य प्रदर्शन मात्र के लिप योंही मोल ली जाती थी। बीच बीच में

मुसलमानों के भी हमले होते रहते थे। सारांश यह कि जिसे समय से हमारे हिन्दी साहित्य का अभ्युदय होता है, वह लडाई-मिडाई का समय था वीरता के गौरव का समय था, और सब बातें पीछे पड़ गयी थीं।

इस युग में प्रत्येक राजदरबार में कवियों का होना भी दरबार की शोभा और गौरव समझा जाता था। इतिहास लेखकोंने इन राज कवियों को चारण अथवा भाट कहा है। इस कालका अधिकांश साहित्य 'चारण साहित्य' है। इसलिए हिन्दी साहित्यमें यह युग 'चारण काल' के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ। दिल्ली और कजोज के राजाओं तथा उनके अनुयायियों के प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण वरित्रों पर ही प्रमुख वीर गाथा-काव्य आधित हैं।

यह युग युद्धों से पूर्ण युग था, समाज का प्रतिविम्ब उसके साहित्य में देखा जा सकता है। इस कारण उस युग के साहित्य पर वीरता की छाप सर्वत्र पड़ गयी। चारण लोग उस काल के साहित्य के रचयिता थें, जो अपने वाश्रयदाता राजाओं का यश गान कर उन्हें युद्ध के लिए प्रोत्साहित करते और यदा-कदा लेखनी या वाणी के चमत्कार और कौशल के साथ साथ खड़ग का भी कौशल दिखलाकर समरांगण में वीर-गति प्राप्त करते थे।"

-चौहान-बैस (हिन्दी साहित्यका इतिहास)

११४ चारणी साहित्यनु महत्व पव विशेषता :-

'चारण-काव्य का क्षेत्र यद्यपि राजस्थान था, किन्तु इसे भारतीय-साहित्यिक की सर्वोच्चम रचनाओं में स्थान दे सकते हैं। वस्तुतः राजपूत भारतीय-वीरता के प्रतीक थे और मध्ययुग में राजस्थान वह दुर्ग था जिसमें भारतीय सभ्यता

तथा संस्कृति के रक्षक निवास करते थे। यही कारण हैं कि मध्ययुग में वीर-राजपूतोंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मरमिटनेमें आना कानी न की। ऐसे वीरों की उज्जवल कीर्ति राजस्थानके चारण-काव्य ही में प्राप्य हैं। कवीन्द्र रवीन्द्र तो चारण-काव्य पर इतने मंत्र मुग्ध थे कि अपने 'राजस्थान रिसर्च' सोसायटी के समक्ष १८ फरवरी सन् १९३७ में भाषण देते हुए निम्नलिखित उद्गार प्रगट किया था।

'भक्ति साहित्य हमें प्रत्येक प्रांत में मिलता है। सभी स्थानों के कवियोंने अपने ढंगसे राधा और कृष्ण के गीतों का गान किया हैं। परन्तु अपने रक्त से राजस्थानने जिस साहित्य का निर्माण किया हैं वह अद्वितीय हैं और उसका कारण भी है। राजपूतों के कवियोंने जीवन की कठोर वास्तविकताओं का स्वयं सामना करते हुए युद्ध के नक्करों की ध्वनि के साथ स्वाभाविक काव्य-गान किया। उन्होंने अपने सामने साक्षात् शिव के तांडव की तरह प्रकृति का नृत्य देखा था। क्या आज कोई अपनी कल्पना द्वारा उस कोटि के काव्य की रचना कर सकता हैं? राजस्थानी भाषा के प्रत्येक देह में जो वीरत्व की भावना और उमंग है, वह राजस्थानकी मौलिक निधि हैं और समस्त भारतवर्ष के गौरव का विषय हैं। वह स्वाभाविक सच्ची और प्राकृत हैं। मेरे मित्र क्षितिमाहन सेनने हिन्दी-काव्यसे मेरा परिचय कराया। आज मुझे एक नई वस्तु की जानकारी हुई हैं। इन उत्साहवर्द्धक गीतोंने मेरे समक्ष साहित्य प्रति नवीन दृष्टिकोण उपस्थित किया हैं। मैंने कई बार सुना था कि चारण अपने काव्य से वीर योद्धाओं को प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया करते थे। आज मैंने उस सदियों से पुरानी कविता का स्वयं अनुभव किया। उसमें आजभी बल और ओज हैं।'

भारतवर्ष चारण काव्य के सुसंपादित संस्करण की प्रतिक्षा कर रहा है।”

-मोडन रिव्यु दिसेंबर १९३८ पृष्ठ ७१० चारनल ओव राजपूताना.

चारणों और राजपूतोंका सबंध इतना घनीष्ठ और अन्योन्याश्रित रहा है कि चारण साहित्य को ठीक से समझने और उसका उचित मूल्यांकन करने के लिए तत्कालीन राजपूती जीवनको भली भाँति समझना होगा। मध्ययुग में राजपूत ही भारतीय वीरता के प्रतीक थे। उनके संरक्षण में राजस्थान में हमारी संस्कृति और सभ्यता बची फली फुली। हंसते हंसते प्राणोंकी आहुती दे देना राजपूतोंकी ही विशेषता थी। कर्नल टोड के शब्दों में ‘There is not a Petty State in Rajasthan that has not had its Thermopylae and scarcely a city that has not produced its Leonidas ऐसी वीर जाती और वीरभूमि की उज्ज्वल कीर्ति-गाथाप चारण साहित्य में ही सुरक्षित हैं। यहां के कवियों के विषय में टोड से भी एक कदम आगे बढ़कर श्री रामनिवास शर्मा, हारीन और श्री नरोत्तमदास स्वामी लिखते हैं कि “कर्नल टोड यह लिखते समय इतना और लिखना भूल गए थे कि थमोपालिसे रणक्षेत्र तैयार करनेवाले वीर सौनिक कवियों से भी राजस्थान का साधारण से साधारण गाँव भी खाली नहीं रहां हैं।” इस कथन में कोई अत्युक्ति नहीं है। राजस्थान वीरों और वीर कवियों की क्रीडास्थली रहा है। चारण जितना कवि होता था उतना ही वीर भी। यदि वह किसी राजा अथवा सरदार की विरुद्धावली गा सकता था, तो अवसर पड़ने पर तलवार लेकर युद्ध में भी कूद पड़ता था। वह स्वयं वीर होता था और वीरता का पूर्ण अनुभव उसे रहता था। यही कारण है कि चारणों ने अपने साहित्य में वीरत्व की जीवन्त झाँकी के सही

दर्शन कराप हैं। उसकी तुलना अन्यत्र दुर्लभ है। इस साहित्यमें प्राणदायिनी प्रेरणा, ओजस्विनी शक्ति, कर्तव्यों के प्रति जागरूकता, लड़कर प्राण त्यागने की अजीब मस्ती और अनृद्देष्ट तथा पावन प्रभाव के दर्शन होते हैं। राजपूती चरित्र की जो विशेषताएँ हैं, वे इस साहित्य में पूर्णतया प्रतिविमित हुई हैं। वीरता राजपूत की चरौती रही है और मरण उसका त्योहार।

संक्षेप में राजपूती चरित्र की विशेषताएँ हैं मन, बचन और कर्म से प्रतिक्षा पालन, स्वावलम्बन पृष्ठीजीवन, सत्य में अवस्था, अचल संयमशीलता, सदिष्णुता, धैर्य, निभिक्ता प्रतिशोध की तीव्र भावना, शरणागत रक्षा, दानशीलता, आत्म गौरवार्थी मर मिटना तथा उच्च आदर्श और अनुपम वीरता शपथादोंकी बात अलग हैं। और यही चारण साहित्य की भी विशेषताएँ हैं। वह शौर्य, औदार्य देशभ्रेत्र, आत्माभिमान, बलिदान, त्याग, ईश्वर भक्ति आदि मानव हृदय के उदात भावों से ओतप्रेत हैं। चारण वीरत्व के पुजारी, स्वामिभक्त और ईश्वर में थदा रखनेवाले होते थे। उनका प्रधान ध्येय राजपूत जाति में साहस तथा वीरता का संचार करना एवं उनके सन्मार्ग पर चलाना था। मुद्रा दिलें में जान फूंक देनेवाली और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने अथवा मर मिटनेकी बाणी इसी साहित्य में मिलती हैं। वह शूरवीरता का निर्माता और उसका जागरूक पहरेदार है।

राजा के जन्म की वधाई गाई तो चारणने, राज्याभिषेक गीत गाया तो चारणने, विवाह का मंगल गान गाया तो चारणने, सौंदर्य की, गुण की, कायरता की, वीरता की और दानशीलता की आलोचना की तो चारणने। राजपूत के

जीवन में तो राजपूत और चारण प्राण बन कर समाया हुआ था । मध्ययुग में तो राजपूत और चारण इतने धूलमिल गए थे कि इन दो शब्दों में अत्यधिक साम्य ही नहीं थेक दूसरेका वोध भी स्वतः ही होने लग गया था ।”

“चारण साहित्य समृद्धता और समृज्वल हैं । उसका स्थान संसार में निराला हैं । विद्वानोंने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है । विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर, [राजस्थानी गीतों में कीतनी सरसता, सहृदयता और भावुकता है । वे लोगों के स्वाभाविक उद्गार हैं । मैं तो उनको संत साहित्य से भी उत्कृष्ट समझता हूँ ।] ग्रियर्सन, [There is an enormous mass of literature in various forms in Rajasthani, of considerable historical importance, about which hardly anything is known] शर आशुतोष मुखर्जी, [The bardic poems are also important as literary documents. They have a literary which, when better known, is sure to occupy a most distinguished place amongst the literatures of the New Indian Vernaculars] डॉ. टैसीटरी, The vast literature flourished all over Rajputana and Gujarat where ever Rajput was lavish of his blood to the soil of his conquest] डॉ. सुनीतकुमार चेटर्जी [There is however, a very rich literature, in Rajasthani, mostly in Marwari Rajasthani literature is nothing but a message of brave flooded life and brave stormy death] प्रभुति देशी विदेशी विद्वानोंने मुक्त कण्ठ से उसके महत्वको स्वीकार किया हैं ।

चारण साहित्य प्रधानतया वीर और शूँगर रसात्मक हैं । इनके अलावा अन्य रसों में भी सुन्दर रचनाएँ हुईं । चारणों

में उच्च कोटि के भक्त भी हुए। इस साहित्य में सभी विषयों की रचनाएँ मिलती हैं। नीति, वैराग्य, ज्ञान, व्याचहारिक धर्म आदि विषयों को भी अद्भुता नहीं छोड़ा गया हैं।

वीररस, दान, धर्म, युद्ध और दया की दृष्टि से चार प्रकार का माना गया हैं। इसी कारण दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर चार प्रकार के वीर माने गए हैं। रचना बाहुल्य की दृष्टि से चारण साहित्य में सब से अधिक वर्णन युद्धवीर का हुआ है। पश्चात् क्रमशः दान, धर्म और दयावीर का। वीर रसात्मक चारण साहित्य की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वह प्रायः साराका सार ऐतिहासिक हैं। इस भ्रमका शीघ्र ही निराकरण हो जाना चाहिए कि भारतवर्ष में ऐतिहासिक घन्थों की कमी है अथवा ऐतिहासिक साहित्य उपलब्ध नहीं होता। ऐतिहासिक साहित्यका बाहुल्य चारण साहित्य की एक प्रमुख विशेषता हैं।” —डा. हीरालाल माहेश्वरी
(राजस्थानी भाषा और साहित्य से सामार उद्घत.)

११५. चारणी साहित्यनी विषय सामग्री :-

राष्ट्रीय शायर श्री झवेरचंद मेघाणीनी मान्यता मुजब चारणी साहित्यनी विषय सामग्री नीचे प्रमाणे ढे.

- १ ईश्वरनां, देवदेवीओनां स्तवनो।
- २ वीरो, संतो, आश्रयदाताओनी विरदावली,
- ३ युद्धनां वर्णनो।
- ४ चलायमान बहादुरोने तेमज्जु कुकर्मी चमरचंधीओने उपालंभो।
- ५ वीरत्वद्रोहीओने उभत्य,
- ६ प्रेमना वार्ता प्रबंधो,
- ७ मरेला वीरो, आश्रयदाताओ अने मित्रोना मरसिया,
- (विलाप काव्यो)

- ८ प्रकृति सौंदर्य, ऋतुशोभा अने पवित्रहिमा.
- ९ अस्त्रशास्त्रोनां वर्णना.
- १० सिंह, बोडा, उंट अने भेंसोनी विरदाईओ.
- ११ व्रेधात्मक अने व्यवहार-चानुरीनां सुभाषिता.
- १२ पौराणिक महाकाव्यो.
- १३ दुष्काळ ईत्यादि लोकापत्तिओना संतापो.

आ उपरांत राज्योनो इतिहास, राजनीति, आगमवाणी, छंदशास्त्र, अलंकारशास्त्र, व्युत्पत्तिशास्त्र, शब्दशास्त्र वर्गोरे चारणी-साहित्यमां अनेकविधि विषयनो समुच्चय जावा मले हे,

१४. चारणी साहित्यनुः स्वरूप :-

डा. हीरालाल माहेरी “राजस्थानी भाषा और साहित्यमां” चारणी साहित्यना स्वरूप विशेष चर्चा करता लखे हे के “अभ्ययन की सुविधा के लिये हम चारण साहित्य को पहेले दो प्रमुख भागों में बांट सकते हैं (१) ऐतिहासिक काव्य और (२) पौराणिक-धार्मिक काव्य. इन दोनों में प्रत्येक को किर प्रबन्ध और मुक्तक के सेव से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है जैसे :

चारण साहित्य

| ऐतिहासिक काव्य | पौराणिक-धार्मिक काव्य | | |
|----------------|-----------------------|---------|--------|
| प्रबन्ध | मुक्तक | प्रबन्ध | मुक्तक |

प्रबन्ध काव्य प्रायः गाहा, दोहा, पाघडी, मोतीदाम, कवित (छप्पय झूलणा, नीसाणी, चौपाई, वेलिया आदि छन्दों में लिखे गये हैं। मुक्तक रचनाप गीत, दोहे, नीसाणी, कवित (छप्पय) वेलियो आदि अनेक छन्दों में मिलती हैं। यह निससंकेत कहा जा सकता है कि राजस्थानी ‘गीत’ दोहे और वाते (बात)

असंख्य हैं। 'वाते' गीतका एक रूप हैं। ये सुननेके लिए बनी हैं पढ़ने के लिए नहीं। वातों के बीच में कहीं कहीं पद्य के भी दर्शन हो जाते हैं।

'गीत' डिगल साहित्यकी विशिष्ट देन हैं, जिसका जोड़ अन्य भारतीय आर्य भाषाओं हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, सिंधी आदि में नहीं मिलता। गीत एक प्रकार की डोटी सी कविता है जिसमें प्राय चार दोहले होते हैं। तीन दोहलों से कम कीसी गीत में नहीं होते। पांच दोहले भी होते हैं। ये गीत गाने की चीज नहीं हैं। एक लय विशेष से, उच्चे स्वरमें इनका पाठ किया जाता है। ध्यान रखने की बात है कि पिंगल के पद साहित्य और डिगल के गीत साहित्य में कोई समानता नहीं है। गीतोंमें इतिहास की अलभ्य और अक्षय सामग्री भरी पड़ी हैं। प्रसा कोई भी बीर झुहार या त्यागी पुरुष नहीं हुआ होगा जिस पर ऐकाद गीत न बने हों। जिन पुरुषों और घटनाओं को इतिहास ने भुला दिया है, उनकी स्मृति को गीतोंने ही सुरक्षित रखा है। श्री नरोत्तम स्वामी के अनुसार "वास्तविक डिगल साहित्य इस गीत साहित्यको ही कहना चाहिए" (गीतमंजरी प्रस्तावना)

रासमाला की भूमिका में लिखा हैं। "As rivers show that books exist, as rain shows that heat has existed so songs show that events have happened" - Forbes रासमाला पृ. २६६ इससे गीतों के ऐतिहासिक महत्व पर पूर्ण प्रकाश पड़ता हैं। डिगल गीतों के विषय में डा. सी. कुन्हन राजा का विचार हैं कि "These songs are natural and spontaneous. The songs came from the heart and the soul of the Charans. They flourished like the rippling book in the

mountain slope, sweet and fresh" (गीत मंजरी Introduction) इन गीतों में एक अद्वितीय शक्ति और आत्म-विश्वास के दर्शन होते हैं। डा. सुनीतिकुमार चेटर्जी के शब्दोंमें "It was in these songs that foaming streams of infallible energy and indomitable iron courage had flown and made the Rajput warrior forget all his personal comforts and attachments in fight for what was true good be beautiful" अनेक हस्तलिखित प्रतियों में हजारों की संख्या में उपलब्ध डिगल गीत अपने प्रकाशनकी राह देख रहे हैं।

दोहा राजस्थानी का सब से अधिक लोकप्रिय छन्द है। प्रायः सभी विषयों और रसोंका प्रवाह दोहों में हुआ है। अनेक दोहों और गीतों के रचयिताओं का कुछ पता नहीं चलता वे अपनी रचना में ही धुलमिल गए हैं। किसी स्मृतिको, किसी घटना को और किसी पुरुषको कवियों ने तो कविता के माध्यम से जीवित रखा किन्तु वे स्वयं सृष्टिकर्ता की भाँति अपनी अपनी अपनी रचनाओं में ही अन्तर्धान हो गए हैं।

राष्ट्रीय कविता का उद्योग सबे प्रथम हमें चारण साहित्य गें ही सुनाई देता है। पानीपत के युद्ध में जूझनेवाले राणा सांगा को प्रोत्साहित करनेवाले गीत डिगल साहित्य की ही देन हैं। कहना न होगा कि उस युग में राणा सांगा ही राष्ट्रीयता के प्रतीक थे।

चारण साहित्यकी रचनाओंकी परम्परा विक्रम पन्द्रहवी शताब्दी के अन्तिम वर्षोंसे तो अविलिङ्ग रूप से मिलती है। 'अचलदास खीची री वचनिका' इसका प्रमाण है। जैन साहित्य की परम्परा तो उस से भी बहुत पहले से प्राप्त है।"

-डा. हीरालाल माहेश्वरी (राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ. ७४)

११७ रस; अलंकार; शैली; प्रतीक :-

* रस : “आपणो ख्याल प छे के चारणी साहित्यमां
केवळ वीररस प्रधान छे. पण पणे भक्ति, शृंगार, करुण वात्सल्य
आदि अन्य तमाम रसोनी पनी कृतिमां व्यंजना करी छे. पना
शृंगार, भक्ति, वात्सल्य, करुण वर्णे दरेक रसमां बेशक छांदसी
तेमज शास्त्रिक प्रेाढि घणी सजीव छे, प्रलंबित नहि पण प्रमत्त
अने ज्ञाशीला मरोडो छे. कारण के प कवितानुं मुख्य निशान ज
अवणेन्द्रिय द्वारा चित्रो आलेखवाचुं तेमज अनक्षाभ पेदा
करवानुं छे.”

-श्री झवेरचंद मेघाणी.

* अलंकार : चारण साहित्यकारो काव्यज्ञ होवाथी
अलंकारोमां वैविध्य लावी शक्या छे. अलंकारोना प्रयोगथी
काव्याभिव्यक्ति अधिक रसमय भावमय बनी छे. उपमा, उत्पेक्षा
रूपक, स्वामेवाक्ति, अतिशयोक्ति, यमक, व्यतिरेक, दृष्टांत,
विरोधाभास, व्याजस्तुति, अत्यानुप्राप्त, वर्णानुप्राप्त जेवा अलंकारो
वा साहित्यकारोने सहज साध्य छे.’ उदाहरण तरीके केटलाक
गद्यमां अलंकारो जाईथे : स्त्री वर्णनमां : ब्राठी मृगली जेवा नेण,
भूखी सिहणना जेवा केडयनो लांक, उगतो आंबो, राज्यनो
केलांबो, बहारवटियानी बरछी, होलीनी जाळ, पुनमनो चांद्रमा,
जूनी वाडयनो भडको, भाद्रवानो तडको. प्रकीर्ण : कुंभार
देवी चडावीने चाकडेथी माटलुं उतारी ले पम माथुं वाढी
लीधुं, सोनाना नलियां थर्या, सगो हाथ न देखाय पवी अंधारी
रात, नवरातना गरवा जेवा, पाडानी जीभ जेवी कटार,
गुलाबना गोटा जेवा गाल.

पद्यमां अलंकारो :-

“सुरपति-वाहण तरु भखै; नरपति-वाहण नाज ।

तो वाहण मोती चुगै; तू सारां सिरताज ॥”

(शाणोर)

“जाले कर छडियाल झेरणो,
मथण दहीं केजां मुगलाण;
हळदीवाट माट दे झाटा,
माघण जश काढयो महाराण.

(कवित)

“कहां सोच जूठ कहां काच कहां हीराकनी ।
कहां राई मेरु कहां मही व्योम धान ही ।”
“कुंभाथल वाई कसी, जोगारी जमदङ,
जाण आपाढी बीजली, काले वादल कडु.”

“रोरी तारां नेणलां, जाणे अरजण बाण,
जे दिश पडयां वांकडां, ते दिश पडयां भंगाण.”
“जों लों शिर धरपे रहे तो लों मिले न क्या रि,
जब ही शिर धरपे तब सब लेहि संभारी.”

सिह गर्जना करता छुटे,
बीज समी जंजाल बखुटे,
शीशा काचना शीशा फुटे,
रुधीर तणीत्यां खल खल तीरे,
भरी सरिता कांठा भीडे,
करी केसरी रंग जीतवा जंग.

चारणी साहित्यमां अलंकारो क्यांये आंगतुक लागता नथी
परंतु अंगभूत वनी गयेला जणाय छे. आ साहित्यकारोनुं
अनुभवक्षेत्र पटलुं बधुं विशाल छे के योग्य अलंकारो विश्वनी
अनेकविध विविधतामांथी मली आवे छे.

* शैली : आ साहित्यकारोनी वाणी हमेशां प्रसादगंभीर
द्वाय छे. शैली सरल, स्वभाविक, प्रसादयुक्त अने अत्यंत त्रेवड

भरो छे. तेमज अर्थे गौरव करतां भाव गौरव विशेष धरावे छे. लाघवताथी कहेवानी रिति दाद मांगी ले तेबी छे. समान स्वरूपना वर्ण संयोजनमांथी प्रगट तो शब्द समुह अलौकिक लय सुधीनी गति करे छे. शैलीमां प्रास कौशल ध्यान खेंचे छे, डिगली, बज, हिन्दी अने अन्य लोकवालीनो मधुसंचय समुचित-पणे करी जाणे छे. रवधी अर्थ निष्पति करवी प एमनी शैलीनी आगवी विशिष्टता छे. नाद वैभवनो भरपूर उपयोग जावा मले छे. आ साहित्यनी शैलीमां लाघव छे, रूजुता छे, डोलन छे, लय छे अने अर्थवाहिता पण छे, शब्दशक्ति अद्भुत छे. शब्दनी अभिधा शक्तिमां काव्यत्वना घणां तत्त्वो साकार बन्यां छे. काव्यकलाना सिद्धांतोनी दृष्टिप चारणी साहित्यकारोनी शैली घणे अंशे आगवां विशिष्ट लक्षण धरावे छे.

* प्रतीक (images, symbols) : चारणी साहित्यमां कल्पनो, प्रतीक अने पुराकल्पननो आगवी सृष्टिमां प्रगट थयेल छे. ताजगी सभर नवां नवां कल्पनो अने प्रतीकोनुँ आठलुँ वैविष्य, आठलुँ प्राचूर्य आपणा घणां ओडां साहित्यमां जावा मले छे. आवा कल्पनो अने प्रतीकोद्वारा संवेदनना विविधरूपो आ साहित्यमां ठेर ठेर जावां मले छे. सौथी वधु प्रतीको आ साहित्यने प्रकृतिप पूरां पाडयां छे एनुँ मुख्य कारण प्रकृतिनी विपुलता अने विविधता छे. भावने अनुकूल, अनुरूप, उचित अने उपकारक पचा प्रतीको आ साहित्यकारोने सहज साध्य छे.

१२८ छंदोनो नाद वैभव :

छंदोनी पसंदगीमां चारण कविधोनुँ कौशल तरी आवे पबुँ छे. मोटे भागे चारण कविधोप अक्षरमेळ नहिं पण मात्रा मेळ छंदो पर विशेष प्रभुत्व स्थाप्युँ छे. चारणी साहित्यनो सर्वांगी परिचय छंदोबद्ध कृतिओमां थाय छे. नवी काव्य विभावनामां कविता प केवल शब्दनी कला छे पवी मान्यता

प्रचलीत थती जाय हे, काव्यमां अर्थने बदले लय साथे सबंध बदलतो जाय हे चारण कविश्रेष्ठ प्राचीन समयथी छंदोमां अर्थने बदले शब्दनी साथे नाद-लय साथे विशेष सबंध धरावे हे. वाणीमां भव्य उदात तत्त्व लाववामां आ नाद वैभव महत्वना भाग भजवे हे.

छंदो परना प्रभुत्वथी विविधभावो बखते भावानुरूप छंदनी रचना कवि कौशलनी प्रतीति करावे हे. नाद रव वैभवना प्रयोगथी अंकित साहित्य भाव रस अने चित्र प्रसंगमां अलौकिक असर मूके हे. नाद-ब्रह्म अने ब्रह्मनाद बन्ने एक साथे अहि निरूपाय हे. केटलाक छंदोना उदाहरणो जोईप.

(छंद दुम्मीला)

वनवेण वजाहीये नींद उडाहीये, गोप जगाहीये नोप ब्रहं,
भत गत भूलाहीये कामन काहीये, वप लगाहीये ताप ब्रहं,
समझ्या समजाहीये भुल अगाहीये, पास बोलाहीये आश प्रमे,
ततथा तत थेहीये बाल सनेहीये, रास राधे जाये कान रमे.

(छंद रेणकी)

सर सर पर सधर अमर तर अनुसर, कर कर वर घर मेल करे,
दरि हर सुर अवर ध्वर अति मनहर, भरभर अति उर हरख भरे,
निरखत नर प्रवर प्रवर गण निर्जर निकर, मुकुर शिर शवर नमे,
धण रव पट फरर घरर पद धूघर रंगभर सुंदर श्याम रमे.

(छंद रेणकी)

सुनियत अत भ्रमत नमत मन दरिसन, भगत मुगत भगवत भजन,
सुरपत पत मद्वत रद्वत रत सुमरन, सत द्रढ बतगत मत सजन,
सुरपति धृत लखत रखत समधारण, सुरत पुकारण श्रवण सुणे,
भट थट असुराण प्रगट घट भजन, विकट रूप नरसिंघ बणे.

(छंद ललित)

अखिल जक्क के, हेतु रूप हो, नर शरीर तें विद्व भूप हो,
निगम गान तें पार तोर ना स्तुति करो यथा, बुद्धि मोर ना,
बुध विरचि से, भूलि जात हैं, प्रवलता रमा, यों दिखात हैं
हरत सो सदा, तेज आप तें, रहत काल कों भीति ताप तें।

(छंद चर्चरी)

उतम अधिकारी आप मेरु सम भया माप,
पुर्व पुन्यका प्रताप वैभव पाया;
शिर धरना सूम छाप विपती हरिले विलाप,
मतकर संताप पाप जूठी माया;
वस्ती सब कहत वाप स्थिर कर मन धर्म स्थाप,
जप तू नित अलख जाप धीरज धारी;
तजीदे अभिमान तान मेरा तू कह्हा मान,
अंते दूट जात प्रान जूठी यारी,

(सपाखरुं गीत

दास रामरो प्रह्लाद जेने भरुसो नामरो द्रढ
आठोय जामरो धन शामरो बाधार
हामरो अभंग अमे धामरो पामवा होदो
कामरो अजीत दैत जामरो कुमार

(छंद भुजंगी)

सुदामापुरी खंड सौराष्ट्र सारा,
जहां जन्मयो मात मुक्ति किनारा,
सदाचारिणी योगमाया समेता,
नमो हिंदना पाटवी संत नेता

(छंद ब्रकुटबंध)

तु ढाल धिगी कळधरां निपणांहि पाको नखतरां,
नखतरां पतियां सिधु नीरखी लहरवाला लोढ,

दिय द्रविण लीला रण तु, मेराण ज्युं मेराण तु,
 कावियाण थकिया गुण कथ कथ,
 सपथ ग्रथ कई दियण अणकथ
 मिलत समरथ प्रमद भरवथ,
 कान अग्रज जाण खब ग्रथ,
 महद चित्त नीरखत प्रणत मथ,
 करत उजबल वरण वड हथ,
 धन्य जीवन गोत्र कह सथ,
 पढत ग्रथ निरवाण कज पथ
 पाणुं मतियां प्रोढ.

(छपथ)

सुर सरित सरवर समुद्र मरजादा मुकिकय ।
 डरि दिग्जज डगमगिय कमलभव ध्यान जु चुकिकय ।
 धरनि धूजि धसि गई प्रबल गच्छय बिहार परि ।
 मिहिर वाजि लुटि मग्ग प्रकट दिग देव कंप परि ।
 नागेश शेष फन माल नमि कोल कमठकम तजजयो ।
 रघुवीर धीर ब्रेलोक्य पति जहि छन भव धनु भजयो ॥

(कवित)

मेचक मृदुल लंबे वार को सुगंध सिचयो,
 घाम पान लेकै जुरा कुण्ण को बतायो हैं,
 यांको जिन्ह हाथन तै थें च्यो ते छिँदै न जौ लो,
 तौं लौं द्रोपदी को कोप नैक न सिरायो हैं,
 पुत्रवधू भीषम अच्छु को कहाऊ नाहिं,
 जिन्ह के समीप सभा वीच दुख पायो हैं,
 गांजीव के गदा के धरेया कों धिकार जो पै,
 अते ही पै संधि को उपाय मन भायो है ।

(संवैया) ...

कानन शोभत कुंडल तैः-

नित शोभे सुने हरि के गुन तैं,
शोभत नेंन हरि मुख देखत,शोभत नांदि सु अंजन तैं,
दान दिये कर शोभत है,
नहीं शोभत कंकन भूषण तैं,
देह दिये उपकारन तैं,
न दिये किय चंदन लेपन तैं.

आ छंदेमां पदलालित्य, शब्दाडम्बर, प्रासानुग्रास, नाद-
वैभव, छड़द्वामक, उमिगर्जन, लय, ताल, ढाल अने रसथी सभर
होवाथी रसानंद अने रसोल्लासमां मेदान मारी जाय छे.

छंदेमां विशेष सर्जन देहाओनुं जावा मठे छे. देहो वे
आ साहित्यनुं परमाणुं काव्य छे. तेजीलुं एनुं कलेवर होय छे.
विश्वना प्रत्येक अंगने देहो स्पर्शतो होय छे. देहो पचारणी
साहित्यनो अणुबोध छे. देहाना नामवार सेद तो २१
चताववामां आव्यां छे.

भ्रमर, इयेन, मर्कट, त्रिकल, करभ, नर, व्याल,
सर्प, श्वान, शार्दूल, चल, अद्विवर, कच्छुप, विडाल,
मद्कल, भ्रामर, माण्डवा, जलधर, मत्स्य, मराल,
वानर इहिविध बीसइक नाम देहा निरधार.

आ भेदमां अमुक गुरु अने अमुक लघु होय ते प्रभाणे
एना भेद नक्की थाय छे. (१) अंत्यानुग्रास देहा, पूर्ण देहा
(२) सोरठा, मध्यप्रास (३) तूमेरी (४) छक्कडियो अथवा देहियो.
आम मुख्य चार प्रकारना देहा.

पूर्ण देहा

कट सालू सिर कहियो, घूंघट रहियो भाल,
यो मुख रावत देखियो, तूं किम देखे थाल.

सोरठो देहा

चिता चिता माय, फकत मीडानो फरक,
बाले बेय बलाय, सजीव अजीव ने शंकरा.

तमेरी देहा

जेडे तेढेथी न थिये, कीरत हँदा कम्म,
चीरी बढीये चम्म (तडे) राणा रगत नीकले.

छकडीयो देहा

अषाढ वरसे पलीप गाजबीज घनघोर,
तेजी बांध्या तरुवरे मधरा ब्राले मोर,

मधरा ब्राले मोर ते मीठां

घणमूलां साजन सपनामां दीठां,

कै तमाची सुमरो रीसाणी हेलने मनावे मोर

अषाढ वरसे पलीप गाजबीज घनघोर

चारण कविबोप देहाना पक प्रकारमां प्रथम चरण यथार्थ
तेमज विश्राम पूरा परंतु वीजा चरणमां प्रास नहिं तेवा दुमेलिया
दुहानुं आगवुं सर्जन कर्युं छे तेना केटलाक उदाहरणो
उल्लेखनीय छे.

धन्य शिहोरा हँगरा, धन्य वरतेजरा बद्ध

राजानुं राज प्रजानुं सखख

गिर कांठे गामडां, बाल्स अदकेरी

कांय सूझे नहीं काम, पछी सूबुं जने ?

देहा अंगे थी गोकुलदास रायचुरा लखे छे के
“काठियावाड, कच्छ, मारवाड अने राजपूताना बे दूहानी
रत्नखाणो छे. चारणो अे रत्नखाणोना रक्षको छे. आठमी

शताव्दीधी मांडी आजदिन सुधी अे रक्षक तरीकेनी जोखमदारी चारणेअे शोभावी छे. दुहानुं साहित्य चारणोप रक्ष्युं छे पटलुं ज नहि पण ए साहित्यमां आवकारदायक उमेरो करवानुं मान पण ए शारदापुत्रोने ज छे.”

चारणी साहित्यना छंदेनुं सबल तत्त्व कंठ कहेणीने ललकार छे. ए ललकार सांभळवो, समजवो ए पक लेवा। जेवो ल्हावो छे. कागळ उपर छंदेमां तेना विशिष्ट ललकारने अभाव होवाथी वृत्तिनुं जोम मरी जाय छे. छंदा, कंठ अने कहेणी माटे रचाया छे.

११.९ वचनिका :-

वचनिकाए चारणी साहित्यने अपद्यागद्यनो ज पक गद्य प्रकार छे. वीर काव्यो, प्रासंगिक काव्यो, वर्णनात्मक काव्योने वैविध्य आपवा माटे चारण कविओप डोलनशील अने छंदेवद्ध गद्यना आगवा प्रकारनुं सर्जन कर्युं होय तेम जणाय छे. वचनिकानी विशिष्टताओ ए छे के वचनिकानी गद्य पंक्तिओ लांबी दूंकी होय छे परंतु तेनी तुक अने प्रास मळती होय छे, वृतने स्थान मळतुं नथी.

उदाहरण तरीके :

पंथीका वाहन, सूर का सखाई,

दशमनका दा'हन, कायर कुं पेरस चडे,

शूरा खाय तो चौगुना लडे, संग्राम के समे,

केई देहाली बंध खावे तो दुश्मन को मार कर हटावे,

जोगी का जोग सधे, रोगीका रोग मटे,

वियोगी की उदासी कटे, जुवान मेहलीका गुमान वी गंजे.

११.१० वार्ताकथन, वर्णनकला :-

वार्ताकथन : चारणी साहित्यमां वार्ताकथन अे काव्य सर्जन करतां पण विशेष मदत्वनुं स्थान धरावे छे. चारण

कविओनां काव्य संज्ञनने प्रधाही अने जीवंत प्रचार अने प्रसार राखनार आ वातां क्षेत्र छे. वाताओमां कंठेपकंठ चाल्यो आवतो इतिहास अने तेनी साथे साथे प्रासंगिक आड कथाओ, यथास्थाने वर्णननो आवेहूव चितार आपी शोताओने जळडी राखता प चारण वार्ताकला कौशलनी विशेषता छे. वाताओमां गद्याशो अने पद्याशोनी सुंदर गृथणी सांभळवा मले छे. तेमज गति प्रधानता, चित्रात्मक स्वर प्रधान वर्णनो, अलंकारो, कहेवतो, सुभाषितो मुख्य वातामांथी अनेक प्रसंगनी हारमाळा चलचित्र-नी माफक आपणे निहाल्या करीप तेबुं शब्द चित्र कुशल अभिनयकारनी जेम वार्ताकार आपणी समक्ष खहुं करतो जाय छे. प चारण वार्ताकिथकोनी विरल सिदि छे.

* वर्णनकला : साहित्यमां प्रशस्तिनो प्रकार वर्णो प्राचीन छे. प्रशस्ति वर्णनमां वर्णनछटा अद्भुत अने अद्वितीय रही छे. चारणी साहित्यनां युद्धकाव्यो, प्राकृतिक सौंदर्यना काव्यो, तेमज पशुधनना काव्योना वर्णनोमां अपूर्व मनहर अने मनभर चित्रात्मकता सिद्ध थाय छे. मेघगर्जना साथे मूशलधार वरसाद वरसवा मांडे तेम आ वर्णनो एक धारा धोध स्वरूपे गतिवान चित्रो-शब्द चित्रो सजें छे. चारणी साहित्यमां शब्देानुं जे जादु (Word magic) तेनी प्रतीति वर्णनकलामां तादृश्य थाय छे केटलाक गद्य-पद्यना वर्णनकलाना नमूना जोईए :

गद्य : सिद्ध चल्यो आवतो होय तो- “ भूहरी लटाळो, पोणा पोणा हाथनी झाङुं, थाळी थाळी जेवडा पंजा, साडा अगियार हाथ लांबो, गोळा जेवडुं माथुं, गेंडानी ढाल जेवडी छाती, कोणीमां आवे पचडी कड, देआढ चांभनुं पूछडुं, पनो झंडो माथे लइने आवे त्यारे बीशेक भेसुनी छाश फरती होय तेबी छाती पोणा गाउ माथेथी वगडती आवे छे; गळु युमचटा खालुं आवे छे.”

अश्वनुं वर्णन : "अंजलीमां पाणी पीवे पवी मोकली,
फोरणानां वारणां ल्ये पवी माणेकलट, वे गृडानां वारणा ल्ये पवी
केशवाळी, बाजोठ जेवां तरींगना पाटियां, कूकडाना जेबुं कांध,
मांड दली सामे पवी केड."

तरवारनुं वर्णन : "माथामां ठणकाढी हेय तो भाजी खावानेा
दसशेरो (माथुं) हरद्वारना मेलामां दूबळा साधुना हाथनुं
खीचडीनुं रामपातर जेम लोंठका हाथनी थपाटे जई पडे तेम
जई पडी."

पद्य : प्रकृतिवर्णन, युद्धवर्णन अने पशुधनना वर्णनानां
सेंकडेा छटादार कचितो-गीतो चारणी साहित्यने सांपडयां छे.

वनस्पति :

एण जोवण दोय खटं पहटं,
बण तेण तटं थटके वकटं,
अवळा सवळा वन प गहटा,
पनपन्न थिये उलटा पलटा.

पक्षीओ :

मिलत पक्षी झातके, अनंत जात जातके,
चसेर चात सातकं, जुराल जात जातकं,
कला अनंत लावरं, कपोत, काग, कावरं,
बटरे वाज बत्तकं, अतोल आड आत्तकं.

वर्षाक्रितु : (सपाखरु)

मंडाणा जलांका राजा, मही परे मेघराजा,
हङ्गडवा लागा, वध्या धराका हुलास ;
तडाका धडाका जाणे आभ तोडी नाखे तेवा,
(पवा) कडाका भडाका थावा लागा रे आकाश.

दुष्काळ वर्णन :

धाक मारुं त्यां भोम धणेणे
हाक मारुं त्यां पहाड हडेडे

खोखारुं त्यां आम खडेडे,
कडकी दश दिगपाल कडेडे.

युद्धवर्णन :

महा भारते मंडाणा हिंद पाकरा सेनिक सारा,
आकरा अताग काळा कोपरा अनाड
लोपाळा सीमाडा जब्बे राखवा धराका छेडा,
जूजवा ठाकरा लागा पावाडे जूजार.

अद्यव वर्णन :

कुंकड कुंधा मृग कुंदणा शतरु होवे साल
ओवा वछेरा उछरे पड जेवो पांचाल
पागा नाखतां रकाब कवि धागा धागा भरी पागा,
आगा जावे नाहीं भागा मृगणा हीं आज;
तोपका गेणागा तरी बागा हाथ जाय त्यां तेआ,
रीझा रागा ब्रवे नाजाहरा अभेराज.

भेंसनुं वर्णन :

टेका लहंती अधोला बीच पहाडका डगावे टूक,
झाडका उखेले मूळ टल्लासे जेराण,
हाडका गोळही जेना थकया हंस जेम हाले,
खाणरी छकेल तेम गजारी खेराण.

गायनुं वर्णन :

गणां जांवदी, कावरी, गाय गोरी,
जरी, मुंजडी, खेरडी धेन धोरी,
रंगे शामकी कोई बाहोल्य रोझी,
सवेला मही आपती, साव सोजी.

दुखहननुं वर्णन :

लाड गोली अलबेली नबेली बणेली लाढी,
पतिव्रत भणेली अकेली शुद्ध प्रीत

होंशाथी भरेली दीप सहेली ग्रहेली हाथ,
रंगरेली हंशयति बाथी राज रीन.

(कवित)

योवन उमंग वारी वारीज से नेन वारी
अमृत से बेन वारी भाव हाव भारी हे
मंद मंद हास वारी मदन हुलास वारी
बदन उजीयारी जाणे चंद उजीयारी हे
अधर प्रबाल वारी मोतीनकी मालवारी
हंसनकी चालवारी नेक छवी न्यारी हे
पिंगल भनंत असी गुलवारी त्रियासंग
नेह ना किया तो या देहवृथा धारी हे

(दोहा)

मोती सरखो मुखडो ही गोल जेवा हाथ,
पंडयनु बनावेल पूतलु नवरो दीनोनाथ.

चारण साहित्यकारोनी दृष्टि जीवनने समग्रताथी जोनारी
विश्वदृष्टि छे दरेक वस्तुने पना योग्य प्रमाणमां प जुए छे,
ओळखे छे पट्टले पनो पूरो चितार आपे छे आथी वर्णनोमां
अनेकवार भव्यता (the sublime) नु आलेखन जोवा मले छे.
प्लुटार्कनी व्याख्या प्रमाणे 'कविता प बोलतु चित्र छे अने
चित्र प मुंगी कविता छे' प चारणी साहित्यना वर्णनोमां
सिद्ध थाय छे.

११-११ लग्नगीतो, उमिंगीतो :-

लग्नगीतो : चारण ज्ञातिना लग्नगीतोमां अनेकविध
विविधता अने विषुलतां छे पथी अन्य ज्ञातिना लग्नगीतो करता
आ गीतो नवीन व्यक्तित्वभरी भात पाढे छे लग्न संस्कारनी
प्रत्येक किया, प्रसंगो, वर-कन्यानां सौंदर्य, रुचि अने शील,
देव-देविओ, प्रकृति वगेरेने वर्णवता आ लग्नगीतो एक जुदो ज

रेंग धरावे छे. आ हमनभीतोमां सूर अने शिव्वेना कलात्मक संयोग थयो छे. चारण इतिना विशिष्ट संस्कार-संस्कृतिनी भात तेमज्ज गीतेना ढाळो अने गावानी लढणने कारणे आ हमनगीतो सो कोईने मंत्रमुग्ध करे छे.

“गईंती गईंती भरवाने नीर
केसरिये वाघे रे नटवर दीठडा जी माणाराज”

“लाडी ! तमने केसरियो बोलावे रे रंगभीनी !
ओरा आवो मुज पास

पाढ़ी चालु तो मारा पाहेला दुःखे
केम रे आबुं वरराज !”

“मारुं ! तुंने खम्माजी खम्माजी करी राखुं रे
मरधानेणीना सायवाने
होलरियाने खम्मा हे माणाराज ! शर्णा खम्मा !”

“पांच पडारे मे तो मोतीडे वधाव्या,
सुंदर मोती रे सोयारे आपणां राजमां”

“तमारे अमारे सगां आगुना सगपण
ईरे सगपणे आपणे कीधीयुं सगायु”

“ओढोने साहेबजादी चुंदडी
चुंदडीनो रंग रातो हो लाडडी
ओढोने साहेबजादी चुंदडी
मारा नखना परवाळा जेवी चुंदडी
चुंदडीमां चोखलीयाळी भात

हो लाडडी ओढोने साहेबजादी चुंदडी”

“मेघलवरणा वाघा वरराज
केसरभीना रे वरना छांटणा
सीमडीप केम जाशो वरराजा
सीमना गोवाळीया तमने रोकशे”

“ दादा बळावे डेलीप रे
 दीकरी डायलां थई रे जो
 ससरानो सरडक बूंधटो रे
 सासुनी पाये रे पडजो
 जेठ देखीने जीणु बोलजो रे
 जेठाणी शुं बादन बदजो रे ”

* उमिंगीतो : चारणी साहित्यना उमिंगीतो मानवहृदयनी मूलगत उमिंओने स्पर्शता होवाथी आ गीतो मोहक अने पटलांज मधुर होय छे. आ गीतोनी केटलीक विशिष्ट लाक्षणिकताओमां लय, नाद अने हाल मूकी शकाय छे. प्रत्येक उमिंकाव्योमां भाषा सौंदर्य, खुमारी, जोम, बलिष्ठता अने नाद समृद्धिरुं प्रभुत्व जोवा मले छे.

“भणती सां कानजी काळा
 मावा मीठी मोरलीबाला
 पांचसो मुंहे पोठिया देजे, पांचसो गुणारा;
 लांबी बांहडिये चारण देजे; गायु गोवाळा.”

“ गाजे गोमती जी के गाजे सागरं
 राजे शामला जी के बाजे झालरं,
 सोहे परंसा जी के स्वामी सुंदरं,
 मणजां झलहल जी के दीपक मांदरं

मळज सलहल दीपक मणिमे, करां गौ नर कैक,
 पौहप-माला चडे पूजा, असा जुगपत पक;
 वीणा मरदंग शंखबाजे, धरे सेवक ध्यान,
 ल्लपन कुल जादवां माझे करे लीला कान.

११.१२ : ऋतुकाव्यो :-

ऋतुगीतोनां सर्जननी प्रथा घणी जूनी लागे छे. आपणा अथर्ववेदमां ऋतुओना गाननें उखलेखे छे. ऋतुगीतोनां सर्जनमां चारण साहित्यकारोप एक विशिष्ट प्रकार प्रस्तुत कर्या छे आ आ प्रकारमां ऋतुविरह अने वर्ष ब्रह्म अग्रपदे छे. भोटा भागनां काव्यो वर्णनात्मक छे. आ काव्योमां शब्दाडंडवर गीतमाधुर्य, लय. प्रास अने ढाकनी पण खुबीओ निराळी छे. चारणी साहित्यमां ऋतुगीतो त्रण विभागमां बहेंचायेला छे.

(१) राधा-कृष्णनी चारमासी

(२) आसजननें सृत्यु विरह-मरशिया

(३) ऋतुशोभाना वर्णनो

(छांद त्रिभंगी)

कहु मासं काती तिय मदमाती,

दीप लगाती रंग राती,

मंदिर मेहलाती, सबे सुहाती,

मे डर खाती; झझकाती;

विरहैं जल जाती, नींद न आती,

लखी न पाती मोरारी !

कहे राधे प्यारी, हु बलिहारी,

गोकुल आवो गिरधारी !

जी ! गोकुल आवो गिरधारी !

(छांद दोमळिया)

“आपाद घघूंचीय लूंचीय अङ्वर

बहल बेवल चोवळिय,

महोलार महेलीय लाडगेहेलीय

तील छले न छले नळिय,

अंद्र गाज अगाज करे धर उपर
 अंव नयां सर उभरियां,
 अजमाल नशु तण कुंवर आलण
 सोय तणी रत संभरियां,
 जीय ! सोय तणी रत संभरिया.”

(गीत सपाखरुं)

चडयां अष्टाढी वादलां काळां देवलां अंबरे शोभे,
 दश्यु ओतरादी माथे उछल्यां दरार;
 झीरोर्यां मेरला माथे वाहरी मंडाणी झडी,
 वेकधारा मेघराजा मंडाणा अपार.

११३ परंपरा :-

चारणी साहित्यनी परंपराना मूळ बहुज उँडा छे. वेदकाळ-
 मां उद्गम थयेलुं चारणी साहित्यनुं झरणुं आज सुधी नायगेराना
 खोध जेम सतत वहेतुं रह्युं छे.

काळ भगवाने पडखुं बदल्युं त्यारे पण चारणी साहित्यनी
 परंपरानी जाळवणी माटे तेमज्ज परंपराने वहेती राखवा माटे
 जनतानो प्रत्येक वर्ग उत्सुक छे. जुनागढमां योजायेली गुजराती
 साहित्य परिषदे पण चारणी साहित्य अने लोक साहित्यने
 स्वीकृती आपी छे.

चारणी साहित्यनो उपरोक्त सामान्य परिचय पछी केटलीक
 बाबतो निष्पत्ति थाय छे के चारणी साहित्यनुं साचुं कार्य ते
 तो लोकोना जीवनने घडवानुं अने ते ज्यां छे त्यांथी वधुने
 वधु उंचे लई जवानुं छे. आपणी वगडेली रसवृत्ति कदाच
 आजे आ साहित्यमांनो रसाखाद न माणी शकती होय तो तेमां
 अे साहित्यनो दोष नथी, दोष आपणी विकृत रसवृत्तिनो छे.
 आजे जीवन पखुं कथळी गयुं छे के शुद्ध वस्तुनो रसाखाद

माणवा-लेवानी आपणी ताकात घटी गई छे. चारणी साहित्यनुसंदर्भ सामर्थ्य तो पनी आव्यता छे. साचा अर्थमां तो अवाङ्मय छे. चाणीए मुख्यत्वे श्रुतिनें विषय छे. चारणी साहित्यनें वाहक प नाद ले. कागळ उपर तेनुं जोम नहीवत छे. चारणी साहित्यमां तेनां अभ्यास सिवाय पनां भाषा पर्यायानां मर्मी समजी शकाता नथी. अथी अ साहित्यनें सौंदर्यानुभव शक्य नथी. चारणी साहित्यमां शक्ति, भक्ति अने सौंदर्यनें त्रिवेणी संगम रचायें छे. आ साहित्यमां कोई कल्पनाविहारने स्थान नथी, परंतु वास्तविकतानें ज वाविकार छे. चारणी साहित्यना पार्श्वभूमां संस्कारिता, शोर्य, सत्य वीरत्वपूजा, टेकपूजा, सौंदर्यपूजा, परमात्मानी पूजाना आदि उदात्तभावनानां दर्शन थाय छे. चारणी साहित्यमां संस्कारमयता अने संवेदनशीलतानें सुमेल थयो होवाथी आ साहित्यमांथी स्वतंत्र अने सजीवन स्तोत्र बहे छे.

चारणी साहित्य प सौंदर्यलक्षी, भावनालक्षी तेमज जीवनलक्षी आनंदवर्धक साहित्य छे. अ उपसाहित्य नथी परंतु शुद्ध साहित्य स्वरूप छे. शुद्ध साहित्यना अनेकविध तत्त्वो चारणी साहित्यमांथी निष्पन्न थाय छे. चारणी साहित्य प इतिहासनुप्रतिनिधित्व करतुं आपण गोरबवंतु साहित्य छे. प कारणधी ज चारण साहित्य प संशोधको ने अभ्यासीओ माटे प सतत संशोधननें विषय रह्यो छे.

११-१४ विद्वानोनां मतव्यो :-

“में घणीवार सांभळेलुं” के चारण कविओ पोताना काव्यो द्वारा वीर योद्धाओने प्रेरणा अने प्रोत्साहन आपे छे. आजे में पण तेमनी कवितानो रस चाल्यो छे. तेमां आजे पण बळ अने तेज छे. भारतवर्ष चारणी काव्यानां सुसम्पादित संस्करणनी प्रतीक्षा करी रहेल छे.”

-कविवर रविन्द्रनाथ टागोर.

“ચારણી સાહિત્ય કાઠિયાવાડમાં હજી પણ હસ્તી ધરાવે છે, અને સંગ્રહી રાખવામાં આવ્યું છે. કેટલાય વર્ષો ઉપર આ સાહિત્ય હિંદમાં સંવેંચ્તમ લેખાતું હતું. એ સાહિત્ય આપણે સંગ્રહવું જોઈએ. એ સાહિત્ય ઘણા ઉંચા પ્રકારનું છે. અસલના લડાઈના જમાનામાં તેણે ઘણો માગ ભજવ્યો છે. જ્યારે લખવાની કે છાપવાની કલા ન હતી, ત્યારે આ કંઠસ્થ સાહિત્યરૂપે સજીવન રાખવામાં આવ્યું હતું. આવા પ્રકારનું સાહિત્ય ગુજરાતમાં ભાગ્યેજ આપણને સાંપણી શકે તેમ છે. આજે આપણી સમજ્ઞ આવેલા શ્રી મેધાણંદ ખેંગાર ૭૫ વર્ષના છે. તેમને લખતા વાંચતા આવડતું નથી તેમ છતાં એણ ચારણી સાહિત્ય તેમની જીમે વસેલું છે. તેથો ચારણી સાહિત્યના શિરોમણી છે તેમને હું ૭૫ સુવર્ણમહોર અર્પણ કરું હું. અને આશા રાખું કે એ સાહિત્ય અમર રહે અને એમના જેવા સાહિત્ય બીરો પેદા થાય અને સાહિત્ય સમૃદ્ધ બને.”

-સાક્ષરવર્ય શ્રી કનૈયાલાલ માણેકલાલ મુનશી.

“ચારણી સાહિત્ય ખરીદ, ખાનદાની, શૌર્ય અને ભક્તિરસના સંસ્કાર પ્રદાન કરતું એક વિશિષ્ટ પ્રકારનું આગવું ને ઉમદા સાહિત્ય છે. તે સાહિત્યની જાલવણી ચારણો ઉપરાંત એક એક થરના લોકોપ કરવાની છે.

આ અગાધ શક્તિશી ભરપૂર સાહિત્યના ગૌરવમય વારસાની જાલવણી કરવા માટે સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી કંઈક નકર કાર્યક્રમ દ્વારથ ધરવા વિચારી રહી છે.”

-કુલપતિ શ્રી ડેલરરાય માંકડ, સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી.

“.....આ સાહિત્યને કોઈપણ હિસાબે જાલવવું જ જોઈપ એનો પ્રવાહ થંભી જતો અટકાવવો જ રહ્યો.”

-કવિ શ્રી ઉમાશ કર જોશી. (ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ-જુનાગઢ)

‘આ સાહિત્યની ગંગા એ માણસે વાંધેલી નહેર નથી કે

येकधारी नदीनी माफक चाली जाय, आतो हेमाळाना खोपरां
तोडीने पोताना अथाह पराक्रमधी व्हेती गंगा छे.

चारणी साहित्य नादवैभवधी भरपूर छे. पमां भावनानी
साथे उच्चारणनो मेल छे. वर्षाक्रितुना विविध रंगो स्वरूपो
गर्जनेनी साथे चारणी भाषा पण पोतानी विविध भाव भाषाना
रंगो मेघधनुषना रंगो जेवाज उठावदार होय छे. पटले चारणी
भाषानो अने लोक साहित्यनो संगम अहादक थई पडे छे.

लोक साहित्य अने चारणी साहित्यना भावोमां काई फरक
नथी. प बनेनां बाह्यरूप रंग जूदां होय पण पमनी अंदर तो
पना प भावो भरेलां होय छे. चारणोप जे वर्णव्युं पज लोक
साहित्यकारोप पोतानी सरल बाणीमां गायुं छे.”

-कवि श्री दुलाभाई काग.

“चारणी साहित्य अने लोक साहित्य प तो जीवन जीववानी
मोंघामूली मूडी छे. आपणां संस्कार; संस्कृति अने साहित्यनो
धबकार छे. प्रजाना पक पक थरना लोकोना जीवनने आनंदोला-
सधी सभर बनावे छे.” -श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद गढवी.

“शोर्य, स्वाभिमान, त्याग, बलिदान, सतीत्व, स्वातंत्र्य-
प्रेम, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि ऐसे ही मूलभूत जीवनादश हैं. जिनके
विना कोई भी व्यवस्था चल नहीं शकती पवं मध्ययुगीन डिगल
साहित्य इन्हीं आदर्शों पवं जीवन-मूलयों का साहित्य है। अतः
यदि हमें अपने जीवन से उन आदर्शों को बहिर्गत नहीं करना
है तो इन चारण कवियों द्वारा प्रणीत डिगल साहित्यका
अध्ययन न केवल आवश्यक अपितु अनिवार्यतः बांछत है।”

“अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारे नवयुवकों के जीवन
में सुसंकारो के प्रेरक तथा चरित्र निर्माण के आधारभूत

सद्गुणों व जीवनादर्शों की पुनरप्रतिष्ठा हो, तो इसके लिये हमें अपने प्राचीन व मध्ययुगीन साहित्य, विशेषतः डिगल-साहित्य के अध्ययन का अधिकाधिक महत्व देना होगा। इसमें जीवन संघर्ष से अविरल जूझने तथा उच्चतर जीवन मूल्यों के लिये बड़ा से बड़ा त्याग करनेकी वे प्रेरणापाँ निहित हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

हमारे इन चारण कवियों ने जीवन के इन्हीं उदासतम मूल्यों-त्याग और बलिदान शोर्य और स्वाभिमान, स्वातंत्र्य और देशप्रेम आदि को लेकर इस महान साहित्य का निर्माण किया है जो राजस्थान की अनमोल सम्पदा हैं। राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये इस वीरतापरक साहित्यका महत्व अन्यतम हैं।”

-डा. शंभुसिंह मनोहर.

“साहित्यमां चारणोप सारो अने सुंदर फालो आप्यो छे.
अने तेमना फालाने ‘चारणी साहित्य’ ने नामे ओलखवामां आवे छे. चारणी साहित्यना मुख्य बे विभाग छे. पिंगल साहित्य अने डिगल साहित्य. पिंगल साहित्य एटले संस्कृत साहित्यना छंदानी रचना मुजब माप तालथी युक्त रचनावालुं साहित्य.
बाबुं साहित्य चारणोमे घणुं लख्युं छे.

डिगल साहित्यमां संस्कृतनी रचना मुजबना छंदो नथी.
आ डिगल साहित्यमां अमुक जातनी हृष्टछाट रहे छे. तेना शब्दो
शैली तथा रचना जरा जुदां पढे छे. छतां पण तेमां कोई अबज
चमत्कृति अने रस भरेलां छे. डिगल साहित्य माटेनुं मुख्य
मान चारणोने ज घटे छे

डिगली काव्योमां झड़न्नमक लाटानुप्राप्त तथा शब्दरचना
सांभलनार अने समजनारने रस उपजावे छे तेमज ते काव्यनो
केफ चडावी दे छे.

‘डिगळी काव्यने। प्रधानरस धीररस छे, जो के शुंगार तेमज बीजा रसो तथा दान स्तुतिथो अने बीजा अंगो पण छे. अेक दरे डिगळ साहित्य जीवननां लगभग वधा अंगोने स्पर्शनु होई घणुं उपयोगी छे. अने चारणो तेनां संग्राहक अने जीवनदाता होई साहित्यने घणा ज उपयोगी छे.

‘चारणोनी बाबतमां तेमज तेमनां काव्यो, रीत-रिवाजो, तेमनी नोक, टोक अने सत्यप्रियता, उदारता अने शूरवीरता वगेरे माटे घणुं घणुं कही शकाय तेम छे.” -डा. दी. पन. दवे.

‘डिगळी काव्योमां भाषा डिगळी होय छे. डिगळी काव्योनां गीतो, छंदो तथा गद्य काव्यो अेवा विभागो छे. छंदो तो पिंगळ शास्त्र मुजबनाज होवा छतां भाषाने लीघे डिगळ काव्य गणाय छे. गीतो तथा गद्य काव्यो अेवा विभागो छे. छंदो तो पिंगळ शास्त्र मुजबना ज होवा छतां भाषाने लीघे डिगळ काव्य गणाय छे. गीतो तथा गद्य काव्योनी विषय रचना तेमज भाषा, वन्ने प्रकारे खास डिगळज छे. डिगळी साहित्यनां गीतोमां माप तथा ताल पञ्चतिसरनां छे. गद्य काव्यो जेवां के निशाणी तथा वचनिका वगेरेमां तालनुं माप वरोवर सचवाय छे. अने तेमां ढोलन शैली छे. हालमां श्रीयुत न्हानालाल दलपतरामभाई कविप ढोलन शैलीनी शोध करी होय तेम घणानुं मानवुं छे. पण ते तेमनी नवी शोध नधी. तेमनी शैली करता वधारे तालबद अने ढोलनवाळी शैली डिगळी काव्य रचनामां सें कडो वर्ष थयां चालुं छे. चारणोना अनेक चारणी अंयोमां आ शैलीनां काव्यो छे.” -मंत्री श्री चारण हितवर्धक लभा.

“छलेश्वल संस्कृत भाषामां वही रहेली प्रवंध साहित्यनी सरितामां आम चारण पक्लेला ज पोतानी जूनी गुजराती कहो, अपभ्रंश कहो, पश्चिमी राजस्थानी कहो के डिगळ कहो, ते

न्यारी अने चमत्कृतिभरी काव्य रचनाओं विना संकेते करी रहो
देखाय हो. अने ते ग्रामीण, गमारु अथवा असंस्कारी गणातो
होवानु' कोई चिह्न जडवाने बदले जडे तो हो, आ रिने, तेनी
वाणीना पण संपूर्ण समोवडी संस्कारी वाणी तरीकेना ज अंगी-
कारनां चिह्नो, गवावाही प्रबंधोमां प चारणनां देश्य मुक्तको पण
अन्य गिरीण श्लोको-सुभाषितोनी जेडाजेड सोनामां नीलम
माणेक शां महायां हो, ते बतावे हो के प्रबंधकाळनो चारण
विद्याना मणिमंडपमां पृरेपूरो प्रतिष्ठित होतो."

"अपभ्रंशकाळमां तो चारणी कवनो दफतरी दस्तावेजी
स्वरूपे मोजूद हुतां पम प्रबंधकारोनो आधार लई कही शकाय.
ने अपभ्रंशकाळ, जूनी राजस्थानीनो काळ, जूनी गुजरातीनो
काळ, अने छेवटनो मध्ययुगी तेमज आधुनिक काळ, प सर्वे
तवक्काओमां अविरत पणे चारणवाणी वत्ते-ओछे अशे पक ज
स्वरूपे साहित्यरचनाओमां चालु रही हो. काळनां परिवर्तनो पने
नडयां नथी, उपरांत समग्र पश्चिम हिन्दुस्तान पर प वाणी
पक ज स्वरूपे पथराई बळेली रही हो. स्थानभेद पनी एकतानी
आहे आव्या नथी आजे पण राजपूतानाना कोई पक गामडामां
बेळेलो चारण, जे कांई जूनुं गाय हो अने नवुं रचे ते लगभग
पक ज वाणीमां.

-श्री झवेरचांद मेवाणी.

(चारणो अने चारणी साहित्य)



[12] ચારણી સાહિત્યની શૈક્ષણિક સંસ્થાઓ

- ૧૨.૧ લખપત બજભાષા પાઠશાળા-ભુજ.
- ૧૨.૨ લોક સાહિત્ય વિદ્યાલય-જૂનાગઢ.
- ૧૨.૩ લોક સાહિત્ય વિદ્યાલય-જામનગર.
- ૧૨.૪ ચારણી સાહિત્ય અને લોક સાહિત્ય ડિપ્લોમા-રાજકોટ.

ચારણી સાહિત્યની જાઠવળી માટે રાજસ્થાન અને ગુજરાતના રાજીવીઓપ બહુમૂલ્ય ફાલો આપ્યો છે. લોકશાહીના યુગમાં એ આ સાહિત્યનો વારસો જાઠવવા માટે ગુજરાત સરકાર પ્રયત્નશીલ રહી છે, એ આ સાહિત્યને માટે ગૌરવરૂપ છે.

૧૨.૧ લખપત બજભાષા પાઠશાળા-ભુજ :-

બસો બત્તીસ વર્ષ પૂર્વે ચારણી સાહિત્યનાં બેમી કચ્છના રાજીવી કવિ મહારાવ શ્રી લખપતજીપ ભૂજમાં લખપત બજભાષા પાઠશાળાની સ્થાપના કરી હતી. આ પાઠશાળા ભારતવર્ષમાં એક અને અદ્વિતીય હતી. આ પાઠશાળામાં ચારણ સાહિત્યનો ઉચ્ચ અભ્યાસ કરાવવામાં આવતો. સાત વર્ષના અખંડ અભ્યાસ વાદ વિદ્યાર્થીઓ કાવ્ય સાહિત્યમાં ગ્રાવિણ્ણ મેલ્લવતા.

અંગ્રેજીમાં કહેવત છે કે 'A poet is born, not made' અર્થात् 'કવિ જન્મે છે, એને ઘડી શકાતો નથી.' પરંતુ આ પાઠશાળાએ આ કહેવતને ખોટી પાડી હતી. આ સંસ્થામાં પ્રવેશોલો છાત્ર કવિ બની પાછો ફરતો

મહાકવિ શ્રી નાનાલાલે બજભાષા પાઠશાળાની મુક્કક ઠે પ્રશાંસા કરતા કહું છે કે 'ભુજીયો કચ્છ મહારાવનુ' સિહાસન છે એ એ બજભાષા પાઠશાળા બે તો કીર્તિસુગટ છે.

चारणी साहित्य महोत्सव... ...



चारणी साहित्यना विविध स्वरूपोनो रसास्वाद करावता
ब्रेतिहासिक जाहेर सांस्कृतिक कार्यक्रममां एक समृह
चारणी कृति रजू करी रहेला श्री जयमलुभाई परमार,
कवि श्री पिंगळशीभाई गढवी, श्री हेमुभाई गढवी
श्री लखुभाई गढवी, श्री रेवादानभाई खलेळ,
श्री करसनभाई पढियार, श्री इंश्वरगीरी गोंसाई अने
अन्य साथीदारो.

चारणी साहित्यना हितचिन्तको



चारणी साहित्यना भेखधारीओ भक्त कवि श्री दुलाभाई कांग, श्री मेरुभाभाई गढवी अने कवि श्री पिंगलशीभाई गढवी, जुनागढनी लोक साहित्य विद्यालय व'ध थतां चारणी साहित्यना भावि विकास माटे गंभीरतापूर्वीक विचारता जणाय छे.

कच्छ, सौराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान अने मालिवाना ब्रजभाषाना, डिगलीना, अने गुजराती भाषाना ब्रह्मसो जेटला नामी अनामी कविओ बसो वर्ष दरम्यान आपी देशी राजयोनु विलीनीकरण थतां आ संस्था बंध पडी.

१२.२ लोक साहित्य विद्यालय-जूनागढ़ :-

सौराष्ट्र सरकारना मंत्री श्री रत्नभाई अद्याणीना शुभ प्रयासथी राजकोटमां ता. २४-४-१९५६ नां रोज लोक साहित्य सभा-राजकोटनी स्थापना थई. सभाना प्रमुखपदे भक्तकवि श्री दुलाभाई कांग अने मानद मंत्रीपदे श्री जयमहेश्वरभाई परमारनी नियुक्ती थई.

आ सभाना उपक्रमे लोक साहित्य अने चारणी साहित्यनी शैक्षणिक संस्था शरु करवानो निर्णय लेवामां आयो. संस्थानी प्रारंभिक सुविधाओ, आदर्शलङ्घी अद्यतन विद्यालय बनी रहे ते माटेनी तमाम जवाबदारी श्री मेरुभाभाई मेघाणद गढवीने सोंपवामां आवी हृती.

सौराष्ट्र लोक साहित्य सभा संचालित 'लोक साहित्य विद्यालय-जूनागढ़ नामनी कार्यशील संस्था ता. १९-६-१९५६ना शुभ दिवसे प्राचीन संस्कृतिना परमधाम जूनागढमां शरु करवामां आवी. आ विद्यालयना आचार्य तरीके लोककवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणद गढवी अने प्राध्यापकपदे काव्यशास्त्रना प्रखर ज्ञाता, ब्रजभाषा पाठशालाना दीक्षीत राजकवि श्री यशकरण अचलदानजी रत्नुनी नियुक्ती करवामां आवी हृती.

आ संस्थामां विद्यार्थीओने 'पिंगल' अने काव्य रचनानु सामान्य ज्ञान छंदो, दुहा, लोकगीत, भजनोना परंपरागत ढाळो अने एनी समजण तथा नवायुगनां संदर्भमां सामान्य ज्ञाननां वर्ग लेवातां. दूर बे वर्षे पमांधी विद्यार्थीओ परीक्षा आपी उत्तीर्ण थतां.

आ संस्थानी विशिष्टता प हती के नवां अने जूनो युगनी साहित्यिक शुभ तत्त्वोने समन्वय करती. गीता, दुदा, छेदा, भजनोनां तळपदां ढंगोनी तालीम आपती तेमज चारणी साहित्य अने लोक साहित्यनां लोक भेग्य अंशोनी तालीम आपती आ संस्था अद्वितीय हती.

आकाशवाणी राजकोट केन्द्रनी जे मोंधामुली मुडी गणाय छे ते कवि श्री दुलाभाई काग अने श्री मेरुभाभाई गढवीनु रेकोडिंग छे ते आ संस्था थयु छे.

ई. स. १९५६ थी ई. स. १९६६ सुधीना दशकामां आ संस्थाप ६० जेटला तेजस्वी विद्यार्थीओ बहार पाडया हता. ई. स. १९६६ मां आ संस्थामां बंध पडी.

१२.३ लोक साहित्य विद्यालय-जामनगर :-

लोक साहित्य चारणी भाषा-साहित्यनो आपणो गौरवमय वारसो छे ते वहेतो रहे ते शुभ आशयथी गुजरात राज्यना समाज कल्याण खातुं संचालित लोक साहित्य विद्यालय नामनी संस्था जामनगरमां जान्युबारी १९८० थी शरू करवामां आवी हती. आ संस्था अलगजीवी नीवडी.

१२.४ चारणी साहित्य अने लोक साहित्यनो डिप्लोमा-राजकोट

सौराष्ट्र युनिवर्सिटीना कुलपति श्री डेलरराय मांकडना शुभ प्रयासधी चारणी साहित्य अने लोक साहित्यना डिप्लोमा कैसेनी योजना सौराष्ट्र युनिवर्सिटीमां तैयार करवामां आवी हती. जेमां पस. पस. सी. धयेला विद्यार्थीओ बे वर्षनां अभ्यास धाद डिप्लोमा थई शके पवी व्यवस्था विचारेली हती. परंतु आ योजना कागळ उपर ज रही.

[13] साहित्यकारोनी सिद्धहस्तता

- १३.१ भाषाओनो मधुसंचय
- १३.२ सत्यवक्ता.
- १३.३ स्तातंत्र्यप्रेमी.
- १३.४ काव्यचातुरी.
- १३.५ उपहास.
- १३.६ काव्य सर्जनमां काव्यशास्त्राना आग्रही अने अभ्यासी.
- १३.७ प्राचीन, अधार्चीन, सांप्रतयुगना साहित्यकारो अने कृति परिचय.
- १३.८ विद्वानोनां मंतव्यो.

चारण साहित्यकारो माटे पक देहो सुप्रसिद्ध छे के :

सत्यवक्ता रंजनसभा, कुशल दिन हित काज,
बेगरवा दिलका बडा, बो सच्चा कविराज.

चारणी साहित्य माटे पक एवी मान्यता छे के 'आ साहित्यनु'
सर्जन विशाल प्रमाणमां थयु' छे परंतु प्राप्य अल्प प्रमाणमां छे'
आनु' तात्पर्य' प छे के चारण साहित्यकारोप पोतानी कृति के
सर्जननी जाळवणी सुरक्षा के संग्रह माटे कोई प्रबंध कर्या नथी
तेनी पार्श्वभूमां पठलु' ज छे के आ साहित्यकारोने पोतानी
काव्य सर्जन शक्ति उपर अटल अने अडग श्रद्धा हती के ज्यारे
ज्यारे काव्य सर्जननो प्रसंग उपस्थित थशे ते समये काव्य
सर्जन करी लईशु'. आथी तेथो कृतिओनो संग्रह के ममत्व
राखता नहि तेथी ज तेमनी प्रत्येक कृतिओ नविनतापूर्ण, ताजगी-
पूर्ण अने चेटदार रही छे पकनी पक कृति के भाव अथवा तो
जुनी आवृत्तिमां योडा सुधारो करी नवु' कलेवर आपवानो आ

साहित्यकारोप प्रयास कर्यो नथी परंतु हर हँमेशा नित्यनवीन
अनूठी साहित्यक कृतिओ आणी छे. एवी आ साहित्यकारोनी
आगवी प्रणालीका तेमज्ज विशिष्टता छे. आ उपरांत तेना सर्जनमां
भाषाओनो मधुसंचय, सत्यवक्ता, स्वातंत्र्यप्रेमी शौर्य, काव्य
चातुरी, उपहास, काव्यशास्त्रोना अभ्यासी वर्गेरे तत्त्वेनुं प्रभुत्व
जोवा मले छे.

१३१ भाषाओनो मधुसंचय :-

चारण साहित्यकारोनी भाषा अने बोली परत्वेनी ग्रहण-
शक्ति अत्यंत तेजस्वी रही छे. जे भाषा के बोलीना परीचयमां
आवता ते भाषा के बोलीनो शब्द प्रयोग पोताना सर्जनमां
यथास्थान करता आ शब्द प्रयोग कृतिओमां बंधारणनी जाळ-
वणीनी हष्टिप उपकारक बन्या छे परंतु अर्थ निष्पत्तनी हष्टिप
दुष्कर छे. चारणी साहित्यमां संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, मारवाडी,
मराठी, डिंगळी, वज, उर्दु, हिन्दी, अंग्रेजी जेवी अनेकविध
भाषा अने बोलीओनां शब्दानो मधुसंचय जोवा मले छे.

'प्रविण सागर' ग्रंथमां अने अधेन्हीना कवि श्री करणीदान
रत्नु रचित सपाखरां गीतमां (सात भाषा) वज अने डिंगळी
उपरांत विविध भारतीय भाषाओनां शब्द प्रयोगो थया छे.
चारण कविओ रचित शौर्यगीतेमां मराठी अने रेखता छंदोमां
उर्दु भाषाना शब्द प्रयोगो सविशेष जोवा मले छे. उदाहरण
तरीके : प्रविण सागर ग्रंथमां प्रवीणवा पोताना प्रेमी सागरना
विरहमां कृशकाय वनी जाय छे प्रवीणवानी आ स्थिती जाई
तेनी सात साहेलीओ जुदां जुदां प्रदेशनी होवाशी जुदी जुदी
भाषामां तेनी आवी दशानुं कारण पूछे छे प्रथम गुजराती
सखि पूछे छे :

कहे गुजराती, तारी पीडा तो कळाती नथी,
मनमां मूळाती ढीले दुवळी देखाती छे;

न्हाती नथी खाती नथी, गीत मुखे गाती नथी,

बोलतां लजाती, बाघा जेवी तुं जणाती डे.

मराठी सखि :

प्रबीजे मी तुजा तोंड, पाहून सांगती आती,

कुठे गेली फार वरी, कान्ति तुजी कायाची;

चांगली मूळीका आतां, काय असा रोग झाला,

आहे गति ही विचित्र, ईश्वराची माया ची.

मरु सखि :

मांको थें केणा न माने, थांको हैयो थीरु वे ना,

बोल जको कांई थाने, हुवो पडो दुःखडो:

हाथां जेाडी कांछां थाने, कांई थें चिंता करां छां,

जको माहु जेडो आज, वे ना थारो मुखडो.

माथुरी सखि :

जाह को या जगत में, जहिर हैं जयपुर,

भारय को उदयपुर, भलो जको आज है;

जहि की सेना में शशधारी जन जेधपूर,

भंडारा भरतपुर शूर को समाज है.

उर्दु सखि :

नूर अफताब, नूरे माहनाब, चहेरा तेरा,

सितारा सी चश्म, बुलबुल सी जबान है;

हुवा तेरा जिगर, दरद में गिरफतार,

सबब सुनाओ रास्त, जानुं मेरी जान है.

कच्छी सखि :

समर करेने सुण गाल भली भेण मुंजी,

मन मे मुंजाय, मुंजो चेण नांय खिलजो;

हुख तोजो डिसी, जीव जेडलें जो हुख डिसे,

मुलाजो म कर, धधं चई विज खिल जो.

संस्कृत समिति :

बन्नन् बदामि ते हिताय न्यत्सुखाय चाहं,

भूत्वा सावधाना तत्तुशृणु भाग्यशालि के,

केयं कृता भीता भुत्या त्वय त्यं ताचाक्रदता

मां बदश्च कारणं तन्मृदुल मृणालिके

चारण कवि श्री हजुरदासजीप पालनपुर नवावने कहुं के :

एक दिन एसा आयगा, लगायगा जम लत्तीयां,

झुट जायगी सब सायरी, मीट जायगी खल मत्तीया,

इन वासने अलाहसे नरियंद दोस्त कयुं नुवा,

करले वसीला नवीका (तु) हजूर गाफील क्युं हुवा.

अब चेतले गाफील गंदा, देख बंदा दावरे,

मत हीन क्या गत होयगी, बंदगी भूले बावरे,

तो चाह अला खेंचके ले ले गरीबोंकी दूवा,

करले वसीला नवीका तु हजूर गाफील क्युं हुवा.

आवा तो भाषाओना मधुसंचयना अनेकविध उदाहरणा
चारणी साहित्यमां उपलब्ध छे.

१३-२ सत्यवक्ता :-

पड़ो ताप कवेसरां, केणे सहो न जाय,

कीड़ी केरा दरमां, हाथी गयो समाय.

कविमुख सबल कमान है, बन्नन् रूप है तीर,

खीचत मारत कान में, द्यापत सकल शरीर.

चारण कविओनी आगरी विशिष्टता प छे के तेमने जे
साचुं लाग्युं होय ते ज कहे छे तेने खोटी प्रसंशा करवानी
जरुर जणाती नधी, समय समय पर चारणोप सौ कोईने सत्य
संभलावी पोतानी आगरी प्रणालीका आज दिवस सुधी जाल-
चता आव्यां छे.

पिताने मारी राज्यासने बेठेला जोधपुर महाराज श्री वखतसिंहजीने तेनी ज कचेरीना कविराज करणीदानजी त्रे संभलाव्युं हतुं के :

बाप म कहे बखतां कंपत हे केकाण,

बीजी बखत ब्रालशा, (तो) पवंग तजसी प्राण.

अने पज कविथे महाराज वखतसिंह पासे उमेला युवराजनेना घात करनार जयपुर महाराजा जर्यसिंहजीने पण स्पष्ट संभलाव्युं हतुं के :

पत जैपुर जोधाणपत, देनुं थाप उथाप,

कृरम मार्यो बेटडो, कमधज्ज मार्यो वाप.

कवि शीरोमणी दुरशाजी आढा अकबरशाहनी कचेरीना कवि हता. अे ज कचेरीमां महाराणा प्रतापसिंहजीना प्रशस्तिना दुहाओ रची पमणे अकबरशाह समक्ष राणा प्रतापने विरदाव्यो हतो.

अकबर एथर अनेक, कै मूपत भेला कीया.

(पण) हाथ न लागे पक, पारस राज प्रतापशी.

अकबर धोर अंधार, उंधाणा हिन्दु अवर,

(तेमां) जगे जगदाधार, पहोरे राणा प्रतापशी.

शाहपुराना राजा उमेदसिंह तेना नाना पुत्र जालमसिंहने युवराज बनाववा मांगता हता. आ कारणथी मोटा राजकुंचर उदौतसिंहजीनी हत्या करावी नाखी त्यार बाद तेना वंशवारसेनो नाश करवा ईच्छता हता. प हकीकतनी जाण कविराज कृपाराम महेद्वने थतां उमेदसिंहजीने राजसभामां आवी कहुं के :

मिण चुण मोटाडाह ते आगे खाधा बहुत,

चेलक चीतोडाह, अब ते छोड उमेदसी.

आ दुहाथी उमेदसिंहे अनर्थनी पुनः चेष्टा करी नहीं तेथी उदौतसिंहनुं कुदुंच बची गयुं.

राजस्थान अने सौराष्ट्रनां राजकुलोमां आंतरिक दगलबाजी
अने गोत्र हत्यानां प्रसंगो बनता चारण कवि श्री मुळभाई
बरसडाप आवा कुकर्मना प्रयोजकेने फिटकार आपतां कहे छे के :

काठियावाडमां हुआ असो न वूरा कासो,
दगादारे देख्या आगे खूनियारो देख,
सत सो बत्रीस मांही बेठी खोट जगां सुधी,
मंडी साव सोनाथाली मांही लुवा मेख.

गोत्र हत्या उतरे ना हेमाळामां हाड गाल्ये.

जङ्ग कोड कये गोत्र हत्या नहि जाय,
नशां रविमंडळमां अविचळ करी नासो
माणसियो गियो सुरांपूरां लोक मांय.

लींबडीना ठाकोर श्री हरिसंगजीप बरवाळाना पराकमी
बीर पुरुष घेलाशा कामदारने केद करी जेलमां पुरता सनालीना
कविवर्य कशियाभाई लीलाप ठाकोर साहेबने पक ठबकानुं गीत
मोकल्यु.

नवे खंड मांय असो कीणरो प्रधान नांही,
दावादारां लागे असां कामदारां दाय,
बोत भूल कीधी काई आवडी हभाणी बाबा !
माधाणीकुं बेडीआं न होय पागां भांय.

गामको हरामी कामी गामको नहोतो शतु,
फजेतीओ नांही केई कामको फजेत,
मार्या डंडा जडो वे तो रामकी दुहाई मांने
नाथ लींबडीका ! थाने ठबको न देत.

आ ठबकानुं गीत सांभळता पज घडीये घेलशाने केद मुक्त कर्या हता.

नवाब कमालादीनखानजीने पक चारणे सत्य संभळावता
कहुं हतुं के :

नामेधी नक्ति हतुः, नहि मेषतमां माल;
कांव ठबको कमाल, अवयत तुंने आपदो

भुज व्रजभाषा पाडशाळामां राव खोंगारजी पाडशाळानुं
निरीक्षण करवा आव्या. विद्यार्थीओने कोई मुद्देश्वरी होय तो
जणाववा फरमान कयुँ, त्यारे एकचारण विद्यार्थी बोली उठयोः

एक शेर आटा मिले, नगद दोकडो नेक,
तामे कहा कविता करुँ, सुण खोंगार नरेश.

भावनगरना महाराजा वजेसंगजी अने भायातो वच्चे कोई
खासवाब तमां चांधो। पडयो ने मन दुःख थया. भायातोओ स्थळांतर
करवानो निचिय कयों प समाचार राजकवि थ्री पाताभाई नरेलाने
मळता महाराजाने कचेरीमां संभळावयु के :

पोताना पेरमधणी, काढी न मूके कोय,
गांडा घेला होय तेय बोंडाळे वजपाळदे.
प्यारां ते पोताना कयां, पोताना परदेश,
रहीयो वजा रेह, पूरण पेरमना धणी.

राणा राजवीना राज्यमां दुष्काळ पडयो कचेरीमां दुष्काळ
पडवानुं कारण जणाववानुं राजवी तरफथी कविराजने विनंती
करवामां आदी. कविराज राणानी पवित्रता, महानताथी संपूर्ण
ज्ञानकार हता. दुष्काळनुं कारण जणावतां कहुँ के :

राणा तारा राजमां, न पडे काळ नचित,
पाडेशो पापी वसे, राजा एक रणजीत.

कवि पालरव पालीया तो भगदानने पण सत्य कहेवानुं
चुक्यो नथी.

शंकरे फाडया चीधरां, भर्ली माटे भा,
अमणे चांक कवा, साचुं भणजे शामळा.
काळीने परणे कमण, वरवी दूँका वाळ,
तुं खरो खेतरपाळ, साचुं भणजे शामळा.

ईडरना राव कल्याणमले तेना राज्यमाथी तभाम चारणोने
हद पार कर्या हता. जालणसी कांटा नामना चारणे वेराजीना
हडीयाणा गामे राव कल्याणमलनी मुलाकात थतां सत्यवचने
कही रावनी भूलनुं प्रायश्चित करावी, तभाम चारणोने गाम
गरास पाळी अपाव्यां हतां.

चडियुं काट कथीर, सुवरण सोंघुं थयुं,
ए बेळा ने वीर, कांव ठपको कल्याणमल
गावडियुं गुन्ह्या करे, अनहद ईडरिया,
हिन्दु हलाले ना, कापी गलुं कल्याणमल.

लाखणसी कांटा नामना चारण कविराजे जूनागढना रा'
मांडलिकने सत्यवचने संभलावी लाखपसाव मेलव्यां हतां.

कस्तुरियो वसामण करे, भणे न भणवुं होय,
नायव ठबकेनोय मोलचराने मांडलिक
जीवता जश न होय, घूवां धन नावे मळी,
दख माठाने दोय, मांडलिक माथे रहां.

अकवरना बळे उदयपुर दल्लो करी विजेता बनी पीचोला
तलावमां अश्वने लडे पाणी पातो पातो राजा मानसिंहजी गर्वे
करतो हतो, अे बडाई अेक चारण सांभळी गयो त्यांज
कही दीधुं के :

माना ! आंजम कर मती, अकवर बळ आयाद,
जोधे जागम बापरां, पाणी बळ पयाद.
मानसिंहजी तुं अकवरने बळे आव्यो छे. जोधो पोताना बळे
अहीं आव्यो हतो.

भाभाजी बारहठे जाम साहेबनी कचेरीमां जाम साहेबना
मुख्य बजीर अने सर्वसत्ताधीश मेरु खवासने शाही कचेरीमां
गोलो कही विरदाव्यो हतो :

गोला, गोला,

गोला-गोठण हेठ, कईक नर तमाचिया
भूपत छोडे मेठ, मोढां आगळ मेरवा.

जोधपुर महाराजा जसवंतसिंहजी उत्तराणीनी औरगंजेब
सामेनी लडाईमां पाढा हठया ने जोधपुर आव्या त्यारे तेमना
कविष स्वागत गीत लळकायुँ.

महा मांडियो जाग उज्जेण खागां मध्ये, रदन वलखावति रही रोती;
हेलवी अमररी हीय करती हरख, जशा अपशर रही वाट जोती;
कीया काचा अमर सुरहर कळेावर डरत गत न पीधो झुल दारू,
बडारी भेलवी हुर आवी वरण, मेलती गई निशाश मारू.
पाटवी हेलवी बेगमे पेलके, ते समे पलके कीध टाळा,
पागथी दलोने रतनी परणी जते, वाट जोती रही गजणवाळा;
जे तो विवाहनी वाट जोती जगत, दूँकवाळ त्राशी गयो राजा,
मटाडी जान घर आवीयो मांडवे तेली चडती रही अछर ताजा.

आ गीत सांभळता महाराजा फरी लडाई करवा गया ने
विजय मेलव्यो.

महाराजा अजीतसिंहजीप ज्यारे वफादार राज्यभक्त
दरंगदासजीने देशवटो दीधो अने तेमनी जागीर गांगाणी गढना
राजपूतोने आपी त्यारे आ अन्याय सामे कविराज करणीदाने
राजकचेरीमां महाराजाने संभळाव्युँ के :

महाराजा अजमाली, जद परिक्षा जाणी,
दरंगो देशवटो दीयो, गोला गांगाणी.

‘आंबेर के प्रतापी नरेश महाराजा मानसिंहजी (प्रथम)ने
बंगाल से लाकर शिलादेवी की मृति आंबेर में प्रतिष्ठापित
करवा दी तथा कहते हैं बंगाल में प्रचलित पूर्व-पूजा विधि के
अनुसार उन्होंने आंबेर में भी देवी के नरवलि दिष जाने की

ध्यवस्था कर दी। नरवलि को हर कोई बुरा ही समझता था तथा सभी इससे मन ही मन भ्रुव्य थे परन्तु संभाव्य राजकोप के कारण उसको विरोध करने की कीसीकी हिम्मत नहीं हो रही थी। तभी एक चारण कविने इस कुप्रथा का विरोध करते हुए निभनांकित देहा कह सुनाया।

बकर कसाई बीबडा, कलम कसाई केक।

मिनख मार रच्छा चहे, मान कसाई हेक॥

अर्थात् बकरोंके कसाई तो यवन हैं एवं कलम से गला काटने वाले कसाईयों (निर्दय हाकिमो) की भी कमी नहीं हैं परन्तु मनुष्य मार कर रक्षा चाहने वाला कसाई तो हे राजा मान! एक तु ही हैं।

कविके व्यंग्य-वचनोंका पेसा प्रभाव पड़ा कि नरवलि तुरंत बंद कर दी गई।

सिवाय चारण-कवि के और कील किसकी हिम्मत थी जो राजा मानसिंहजी को 'कसाई' कह दें? -डॉ. शंभुसिंह मनोहर

उदयपुरना महाराणा रायसिंहजी ज्यारे बादशाह औरंगजेबने मल्हवा तैयार थयाना समाचार चारण कविराजने मल्हता अंज समये राजसभामां जई महाराजा रायसिंहजीने एक छप्पय संभलाव्यो:

हजु सुर जलहठे, हजु प्रजठे हुताशण,
हजु गंग खलहठे, हजु सावत इंद्रालण,
हजु धरणी वृहमंड, हजु फूल फल धरती,
हजु नाथ गोरख, हजु महमाता शक्त,
अज हु तेज धुवलो अटल, वेद धर्म वाराणसी
पतशाह हु ते चीतोडपत, राण नमे केम राजसी
आ छप्पय सांभलता राणा रायसिंहजी बादशाहने मल्हया नहीं
धने तेनी टेक अखंड रही।

सिंचिया सरकार लंगडा हस्ता तेनुं सरतानजी कविप लंगडा
तरीके सरस चर्णन कर्युं छे.

भारत स्वातंत्र्य थयुं, सर्वेच्च नेताओना शुभ प्रयासोथी
जयपुर महाराजा मानसिंहजी अने उदयपुरना महाराजा
भगवतसिंहजीप चर्णो जुना बेरने तिलांजली आपी. आ खुशालीना
समारंभमां कविचर्य थी नाथुसिंहजी महियारियाने प्रासंगिक
प्रबचन करवानी चिन्ती करवामां आवी. कविराजे सत्य
संभलावयुं :

मान भगो मिलते अड्हे, नहि लाभ नहि हाणः
मान पतो मिल जावते मिट जाती मुगलाण.

राष्ट्रीय अंदिलनना इतिहासमां राजस्थानना देशभक्त
थी केशरीसिंहजीनुं नाम सुवर्णक्षरे अंकित थयेलुं छे.
सने १९१२ मां दिल्हीमां वाईसरोयना स्वागतार्थ दिल्ही दरबारमां
महाराणा फतेसिंहजी उपस्थित रहेवाना छे, तेवा समाचार
थी केशरीसिंहजीने मळतांज महाराणाने थेक देहो मोकल्यो.

मान मोद शीशाद, राजनीति बल राखणो,
गवर्नमेन्टरी गोद, फल मीठा दीठा फता.

आ देहो महाराणाप चांचता दिल्ही दरबारमां उपस्थित रहाँ
नहीं.

बीरपुर ठाकोर हमीरसिंहजीने बालुवडना कविराज
रूपसिंहजी देथा बीरपुर मळवा गया परंतु ठाकोर साहेबे
कविराजने मुलाकात आपी नहिं पटले कविराज कामदारने
बे देहो आपी रवाना थयो.

हुं मावत तुं गजमसत, जडियो जश जंजीर,
भडकश शाथी सावभल, हुं नहीं ताव हमीर.

कथ्य पखी आनंद करे, तो सरवर के तीर;
पीछा विण पाड़ो बल्यो, हाथी पक हमीर.

आवा तो अनेक दृष्टिसत्य वक्तृत्वना दरेक राजयोना
इतिहासमां सुवर्ण अक्षरे अंकित थगा छे सांप्रतयुगमां पण
पद्मा निढर अने स्पष्ट वक्ता कविओ छे के जेमणे कोई प्रकारनो
भय राख्या बगर, शरम के संकोच बगर राजाओ अने श्रीमंतो
समक्ष तेमनां दुषणो वर्णवी तेमने सारी अने साची सलाह
आपी छे. आजे पण तेओ पटलाज निभिक अने बेपरवा छे. आवा
विषम समयमां पण जनसमाज आ सत्यवक्ता कविओ प्रत्ये
पटलोज आदर अने प्रेम राखे छे.

सांप्रतयुगना सत्यवक्ताओ :

लींबडीना राजकवि श्री जीवाभाई शामल उक्ते मस्तकविष
दरबार श्री दोलतसिंहजीने सत्य संभलाव्युं हतुं के :

दोलत लोभी दामका, हे जीन कीरती हराम;
वो दुनियामें आयके, कहां करेगो काम.

राजकोटमां पहेलवहेलुं दिमान आव्युं केटलाक राजवीओ
चकर लगाववा चड्या. प समये राजकवि शंकरदानजी उपस्थित
हता. राजाओनी उड्यननी मोजमां पमनी भरचक विलासीताने
प्रत्यक्ष थती जोई त्यां ज राजवीओने संभलाव्युं :

पाथिव वर्ग पतंग ईव, करी ल्यो मोज विलास,
कृपा दोर व्रिटिशको, तृट्ये खेल खलास.

सौराष्ट्रना राजवीओथे प्रजा पर धसह्य कर बधारो करी
ते नाणाओनो विदेशोमां दुर्ब्यय करवा लाग्या त्यारे लींबडीना
राजकवि श्री शंकरदानजी देशाप दरेक राजवीओने पक देखो
लखी मोकल्यो :

निर्देश थहरे नरपति, कर बधारे कोप,
उठावी जाय युरोप, नाणुं नटवर जेठवा.

सौराष्ट्रना पक राजदीमे युरोपमां व्यापार शरु कर्यानी
कविराजने जाण थतां ते राजदीने रुबरु संभलावयुः :

राजा करे वेपार, जागी रसे जुगड़ुं,
पड़तीनो नहि पार, जाणे नटवर जेठवा.

साहित्यने न समजनार राजदीओने कविराजे कहाँ के :

चहुं चहुं कविता वी चेयां में वरडाधणी,
उपज नो आवी, जमी परमाणे जेठवा.
मोंधो कविता माल, सोंधो लेतुं साटवी,
हे नहि आहक हाल, बीजो वरडाधणी.

रजपूतोनी अवनतिनुं कारण आपता कविराज कहे छे के :

तजी स्वाग अह त्याग तज, तज्यो शरण प्रतिपाल,
उन कारनते अवनति, हुई क्षत्रिनकी हाल.
कायर रणका मन कपण, यश खटवरण विरुद्ध,
वयण भृष्ट हिम्मत विद्विण, ओ रजपूत अशुद्ध.

बखतनी विलोमता विशे कवि कहे छे के :

हीरा तज काचको खरीदे झोढ़ीके हाट,
हेरे को न कुकुमकुं हेरत हरदी हे;
सीतलके यान कुंभीस्थान बीच बंधे हाय,
गुढपा मकान पर मूषक गरदी हे,
शंकर भनंत घराधीशकुं अनंत धिक्क;
आयो तीर अंत कहवेको नाम नही हे;
हाय हुई इही राजपूति भई रही याते
सीधनकी गही पर जंतुक मुसही हे.

भारतना राजवीओपे सांलीयाणानें सहर्ष स्वीकार करें
त्यारे दरेक राजवीओने कविराजे कवित लखी मोकल्युं के :

तज्यां राज तो हवे त्यागवृत वेश भजावो,
गांधी जवाहर जिम जगत बीच नाम दीपावो.
कां हेमाले जाव करो तप योग कमावो,
कां मोटा मुनी बनी अरण्यमां अद्रश थाओ.

पराधीन रांक बनी पेन्शन, लेशो खाशो ने जीवशो ?
कविदास सत्य शंकर कहे नृप तमाम नरके जशो

सोराष्ट्र सरकार अस्तित्वमां आवी मुख्य मंत्रीश्री देवरभाई;
दुष्कालग्रस्त झालावाडनी मुलाकाते नीकलया लींबडीमां कविराज
श्री शंकरदानजीनी मुलाकाते गया. प वखते कविराजश्रीए
थी देवरभाईने दोहा कह्यां के :

पीवा पाणी ना मळे, ना मळे खावा अन्न.
धर सोरठ दैवरतणुं, निरख्युं नंदनवन.

धूनाना गामना कविराज किसनदानजीने पक राजवीनी
संकुचिततानें प्रसंग जाणवामां आव्यो पटले राजवीनी कचेरीमां
जई संभलान्युं :

घजे निज विपतमें अश्वदान ईसरको,
मान सह दीनो बो जहान जश जातो ना,
थातो राय रंक कदि, रंक घन जातो राय,
दीन पलटातो तो भी दिल पलटातो ना,
जामको जो चाकर बो ठाकर मो नींवरीको,
जाहरमां राजा इन जीगर जाना तो ना.
किसन कहलातो प्रभु राय को बनादो रंक,
(पण) रंकन को राय; प्रभु कबहु बनातो ना.

चारणी संस्कृतिना ज्यातिर्धरो.....

लास्ट मीन्स्ट्रूल



श्री पिंगलशीभाई पालाभाई नरेला
(मावनगर)

निरक्षर साक्षर



श्री मेघाणंद खेंगार गढ़वाई
(छत्रावा)

मारुदक्षा



श्री शंकरदानजी जेठीभाई देथा
(लींगडी)

मस्तकवि



श्री जीवामाई बीसाभाई
(लींगडी)

बारणी साहित्यना प्रतिभावंत साहित्यकारो



श्री ठारणभाई मधुभाई महेड
(चला)



श्री यशकरणजी अचलदानजी रत्न
(पोरबंदर)



श्री खेतासिंह नारणजी मिसण
(मोडेरा)



श्री नारणदान नियुभाई मिसण
(मोरवी)

भक्त कवि श्री दुलाभाई कांगे राज्योनी अंधाधूंधी,
डामाडेल स्थिति अने प्रजा परना राजवीओना अत्याचारो जोई
राजकोट मुकामे नरेन्द्रमंडलनी सभा बखते संभलाव्युं हतुं के:
चोर बंडखोर के खूनी बनीया नहीं हाय रजपूत बनीया विचारा
जीवनना लोभीया कां हसें छो हजी खत गुलामी तणां शिरधार्या
रामनी जनेता क्यां गई कौशल्या, कोई थेने संदेशो भणो छो ?
भार हरनार जणनार ओ मावडी, मोमना भारने कां जणो छो ?
फक्त रजपूतनां नाम धारण करी, मांस विध विध पशुनां उडावो,
देश हाल्यो रसाताळ ओ क्षत्रियो, मांसनो कांक परचो वतावो.
बापु कहि कहि हजी पाय तमने पडे, शरम वापु तणी कांक लावो
छोरु सघळां मये वाप केना थशो, वापनी कईक फरजो बजावो.”

१९४७ ना आङ्गादीना उत्सव प्रसंगे दिल्लीमां देशनेताओने
कागबापुप कहुं हतुं के :

तल तल तणी गणतर करी, परदेशनुं समजी जजों
घरना हिसावो समजतां छूटछाट थोडी राखजो,
अभ्यासधी अनुभव विनां घरनुं जो डापण डोळशो,
जे नाव तार्युं वाणीये प नाव पाढ़ुं बोळशो.

सौराष्ट्रना केटलाक राजवीओ दानमां दीधेली भूमि-गरास
पाढी लेवा लाभ्या प समये भावनगरना राजकवि श्री पिंगलशीभाई
नरेलाप राजवीओने लखी मोकल्युं के :

विक्रम से मोज से प्रताप से महानवीर,
कोटी गाम दाम दे के किरती कमा गये,
भूज बलवारे राजपूत भये भूमि पर,
जूज ग्रास मेसे राजवैभव जमा गये.
बडे कर्न दानी जैसो हाल कलिकाल बीच,
भूप तखतेश जैसो चितको भ्रमा गये,

अब तो रहे हे सब दिये दान लेने वारे,
भूमि दान देन वारे भूमि में समा गये.

एक नगरना राजवीना अवसान समये कविराजे अंजली
अर्पी के :

नगर का जूलमी रहा नहीं रणजीत,
उनका उत्र स्वभाव ते भई प्रजा भयभीत.
भई प्रजा भयभीत काज अति दुस्कृत कीना.
चारण वरण संतापी ग्रास ईनका लेहि लीना.
कहे कवि शंकरदान हता नहि डर प्रभु घरका
रहा नहीं रणजीत जूलमी नगरका.

चारणोना आंतरिक कलहमां मध्यस्थी तरीके श्री जाजल
साहेब वेरीस्टरनी नियुक्ती थई त्यारे एक चारण श्री जाजल
साहेबने कहुं के :

जाजल तारा नाममां जाज अने जल देाय,
तारी शके तो तारजे, मत हुबाढये कोय.

पोरबंदर राज्यना मुख्य अधिकारी श्री बुचनां वहीवटनो
एक चारणने कडवो अनुभव थयो अटले राणा साहेबने देहो
लखी मोकल्यो के :

बोटल ऊपर बूच (हवे) आव्यु आभपराधणी.

कवि श्री पिंगलशीभाई मेवाण द गढवीष गांधी शतांदीना
उत्सव प्रसंगे दिल्हीना जाहेर कार्यक्रममां दिल्हीने संभलाव्यु के:

मैं माना था स्वाधिन बनकर शांत रहेगी अय दिल्ली.
स्वभाव की तो है न दवाई कहां मिलेगी अय दिल्ली,
कोऊ नहीं मिलता तो आपस धंध मचाती अय दिल्ली,
थैसी झगराखोर अनादि तुम कहलाती अय दिल्ली.

गांधीजीना मूल्योनेा सर्वेत्र हास थतो जोई कहे छे के :

गांधी भेला त्रण गया, सत्य अहिंसा प्रेम,
हवे फरो मन मोकळे, जेमने फावे अम.
देश उद्धारक देशमां तनमां धारण टेक,
मल्यो न बीजो महात्मा असी क्रोडये पक.
शा माटे गांधीने संभारी दुःख सर्गमां देखुं.
केबुं अेनुं कांय न करबुं निर्थक नाम ज लेबुं.

ईश्वरने पण चारण कविओप सत्य संभलाव्युं छे :

दीनबंधुनुं नाम दयालु हवे फेरवी नाख्य हरि,
बलियाना बेलीनुं बापा नाम रूपालुं राख्य हरि.

विवेक चूकेला कविओने कहे छे के :

द्वापरमां दुशाशने हरियां भाव ज हीर,
कलियगना लूंटे कवि, शारद माना चीर.
आ उपरांत 'छे हडताल', 'समयनेा संदेश' वगोरे कृतिओमां सत्य
संभलावी चारण धर्म बजाव्यो छे.

साचुं कहेजो साचुं कहेजो सौ करे छे बातुं,
साचुं कहे छे त्यारे केनेय साचुं नथी सेवातुं.

वर्तमान समयमां पण कवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणदं द्
गढवी, राजकवि श्री शंभुदानजी रत्नु, श्री अक्षयसिंहजी रत्नु,
श्री रेवतदानजी चारण, श्री नारायणदानजी बालिया जेवा चारण
कविवर्य पूर्वजोनी परिपाठीने जेमनी तेम साचवी राखी छे.
परंतु दुःखनी बात तो प छे के गत समाजमां जे समजदारी, सत्य
पचाववानी शक्ति हृती तेनो आजे सर्वेत्र अभाव जोवा मले छे.

१३३ स्वातंत्र्य प्रेमी :-

"वस्तुत इन चारण कवियोंने मध्ययुगीन राजतंत्रीय
दबावस्था में तो अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ही हैं

देश के स्वातंत्र्य संग्राम में भी इनका योगदान किसी से कम नहीं हैं। कितने लोग यह बात जानते हैं कि अंग्रेजों हक्कमत के विरुद्ध सर्व प्रथम क्रांतिका शंख फुंकने वाले और कोई नहीं राजस्थान के ये चारण कवि ही थे। जब ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में अपनी जड़े जमा रहा था तथा पक के बाद पक राज्यलक्ष्मियाँ उसके चरणों में लुटित होती जा रही थीं तो सर्वप्रथम कविराजा बाँकीदास ने ही राष्ट्र के सुस पौरुष की झाकझोरते हुए उसे विदेशी आक्रान्ता के विरुद्ध उठ खड़े होने हेतु इन शब्दों में आह्वान किया था।

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहँस लीधा खोंचि उरा।
घणियाँ मरै न दीधी धरती, घणियाँ ऊमाँ गई धरा॥

* * * * *

महिजाताँ, चींचाताँ महिला, प दुय मरण तणाँ अवसाण।
राखोरे किहिंक रजपूती, मरद हिंदु की मुस्सलमाण॥

इसी भाँति, कविवर शंकरदान सामोरने अंग्रेजों को 'झोंपडियों का लुटेरा' व 'मुल्क के मीठे ठग' की संज्ञा देते हुए राष्ट्र का चेतावनी दी कि यदि देशको आवाद करने का यह अवसर उन्होंने खो दिया तो फिर पेसा अवसर नहीं आयेगा।

फाल हिरण नूक्याँ फटक, पाढ़ौ फाल न पावसी।
आजाद हिन्द करवा अवर, औसर इस्यौ न आवसी॥

सन् १८५७ के उस प्रथम मुक्ति-संग्राम में देश के स्वतंत्र करनेका ऐसा मार्मिक और म्पष्ट अहान क्या किसी और कविने किया हैं? यही नहीं, उस स्वातंत्र्य संग्राम में जिन राजाओंने जुल्मी ब्रिटिश हक्कमत का साथ दिया, उनकी भत्सना करने से भी वह राष्ट्र कवि चूका नहीं। ऐसे राजाओं में बिकानेर के तत्कालीन राजा सरदारसिंहजी भी थेक थे, जिन को कविने 'कपूत' की संज्ञा दी-

देख मरै हित देस रै, पेख सचो रजपूत ।

सिरदारा तोनै सदा, कैसी जगत कपूत ॥

तद्विपरीत, जिन देशभक्त राजाओं व सामन्तों ने उस स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व किया, उनकी इन चारण कवियों ने अनथक प्रशंसा की। ऐसे नरेशों व सामन्तों में भरतपुर का प्रतापी राजा सुरजमल जाट आडवा के ठाकुर खुशालसिंहजी, नरसिंहगढ़ के राजकुमार चौनसिंहजी आदि उल्लेख हैं। बीर सूरजमल जाट की देशभक्ति पर रीझ कर इन चारण कवियों ने उसे यह-कंकणों से जड़ दिया-

जस थौरां जावेह, बीसां दस कोसां विचै ।

महपत नह मविह, सुजस इला पर सूजडा ॥

कुञ्चन रा कडियाह, पहरै सो सारी पृथी ।

जस कंकण जडियाह, कर सोहे थनै सूजडा ॥

अर्थात् उन्य लोगों का यश जहाँ दस-बीस कोसों के बीच ही फैला रहता है, वहाँ हे राजा सूरजमल ! तेरा यश तो इस सारी पृथी पर ही नहीं समाता ! सारा संसार सोने के कडे पहनता है किन्तु हे सूरजमल ! यश कंकणों से जडे हुये हाथ तो तेरे ही शोभा देते हैं ! राष्ट्रप्रेम की कैसी पावन प्रशस्ति हैं !

इस सम्बन्ध में महाकवि सूर्यमल का योगदान भी कम ऐतिहासिक नहीं हैं। जिन्होंने अपनी 'बीरसतसई' के रूप में बीरत्व का वई वाणी दी परं त्याग व उत्सर्गमूलक शौर्य के सनातन आदर्शों का स्मरण दिलाते हुए राष्ट्र की स्वातंत्र्य चेतना को पुनरुज्जीवित किया।

उस संकटकाल में जब अंग्रेजी सत्ता के आतंक से राष्ट्र की चेतना मानों स्तन्ध और जड़ीभूत हो गई थी, इन चारण कवियोंने ही बीरत्व का शब्दनाद कर उसे जगाया था। उनके

उद्बोधनों में राष्ट्र की गर्वित चेतना ने अभिव्यक्ति पाई थी तथा उनकी ललकार राष्ट्र ने अपने मुक्ति-संकल्प का जयवेदाप सुना था ।

राष्ट्रोद्बोधक कवियोंकी इसी परंपरा में आगे चल कर स्वनामधन्य बारहठ केसरीसिंहजी हुए, जिन्होंने तो देश की मुक्ति वेदी पर प्रायः अपने सारे ही परिवार को उत्सर्ग कर दिया । उनके द्वारा मढाराणा फतेहसिंहजी को सम्बोधित 'चेतवणी रा चूंगढ्या' किसे स्मरण नहीं हैं ? स्वातंत्र्य चेतना से ओतघोत वे तो स्वाभिमान की शाश्वत ऋचाएँ हैं ।

इसी परंपरा में आगे चल कर कविवर नार्थसिंहजी महियारियाने भी राष्ट्र के मुक्ति-संग्राम के संदर्भ में परंपरागत वीरत्व की भावनाओं को एक नई अभिव्यक्ति दी । उन्होंने गांधीजी के चरखे को तो स्वीकार कर लिया परन्तु अपनी शर्त पर । उन्होंने उससे इवेत नहीं, केसरिया तार निकालने का संदेश दे उसे भी राजस्थानी रंग में रंग दिया-

करियां केसरियां खुलै, देस मुक्त रौ द्वार ।

चरखा अब तो काढ रे, तुं केसरियां तार ॥

कैसा अनूठा येवं चमत्कारिक समन्वय हैं । देश की नवोपलब्ध स्वतंत्रता की रक्षा केसरिया तारों (यानी केसरिया बना) से ही हो सकेगी. धोले धारों से नहीं; चीन और पाकिस्तान के आक्रमणों ने हमें इस सत्य की मर्मान्तक कराई हैं । कवि का यह संदेश नितान्त सामाजिक है, जिसकी उपेक्षा कर हम आत्म-प्रवंचना के ही भागी होंगे ।

अत्यंत खेद की बात है कि हमारे साधिनता संग्राम के अनेक इतिहास लिखे जा चुके हैं, परंतु उनमें राजस्थान के इन चारण कवियों के योगदान का कोई उल्लेख नहीं है । मुक्ति

यज्ञ की और तो सब की दृष्टि चली गई परंतु उस यज्ञ के हेता एवं मंत्र दाता इन चारण कवियों की और किसीने ध्यान नहीं दीथा। अब समय आ गया है कि हमारे स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में इन कवियों के योगदान का सम्मान मूल्यांकन किया जाए, जिन्होंने केवल मुक्ति का मंत्र ही नहीं दिया बल्कि अपनी व अपने परिवार तक की आहुति दे उस मुक्ति-यज्ञ के लिए समिधा भी अपित की आजादी की अलख जगाने वाले उन चारण कवियों को यों भूल कर हम कृतधनता का यह कलंक कब तक ढोते रहेंगे?"

-डा. शंभुसिंह मनोहर.

(प्रस्तावना चारण चरजापै और उनका अध्ययन.

१३-४ काव्यचातुरी :-

गुजरातना पुनरुद्धारके बाखेलाना वामनस्थली उपर विजय मेलच्यो। ते बखते पक चारणे दुहानां पहेला बे ज चरण त्रण बखत कचेरीमां बोली उतरार्ध वाकी राखी, तेनां निवासस्थाने गयो,

जीतउछाहि उणेहि, सांभली समद्दरि वाजियई,
रात्रिप अनेक राजवंशीओ आवीने प छ जीतनारामां पोतानुं
नाम जोडवाने आग्रह करी, कविराजने मेट सेगादो आपी गया.
बीजे दिवसे राजकचेरीमां उतरार्ध कविराजे पुरो करता कहुँ :

विहु मुनि बीरहेणेहि चिहुं पगी उपरवटतणे.
छ जीत्यां तेमां विरधवलनी बे भुजा अने अश्वना चार पग.

सौराष्ट्रना बे चारणोप दुहानी स्पर्धा करी तेनो न्याय हेमचंद्राचार्य आपशे, जे विजेता थाय तेने नूकशानी चूकववी. तेम नक्की करी अणहिलपुर पहेंच्यां. हेमचंद्राचार्यनी सभामां आवी पक चारणे दोहो कहो :

लच्छ वाणि मुहकाणि सा पईं भागी मुह मरउ,
हेमसुरि उत्थाणि जे ईसर ते पाणिडया.

अर्थात् : हेमसुरि ! तारां मुख माथे हुं वारी जाउं, कारण के
लक्ष्मी अने विद्या वच्चेनुं शोक्यपणुं ते भागी नाख्युं छे.

बीजा चारणे कुमार विहारमां आरतीना अवसरे हेमचंद्रने
राजा प्रणाम करी रहां हता थे प्रसंगे देहा कहो :

हेम तुहाला कर मरउ जिह अच्चभ्युमरिद्धि,
जे चंपह हिटा मुहा तीह उपहरी सिद्धि.

अर्थात् : हे हेमसुरि ! हुं तारा हाथ पर वारी जाउं छुं के
जेनामां अद्भुत रिद्धि रही छे. नीचे नमेला जे मौं उपर थे हाथ
पडे छे, तेना उपर सिद्धि पण आवी बेसे छे.

सोगठना घूमली गज्यना राणा मेह जेठवाना कवि रतने
सिद्धराज जयसिद्धना दरबारमां प्रवेश कर्या त्यां तेमने थेक चित्र
बताववामां आव्युं, (एक ताज्जुं जन्मेल बालकने पक स्त्री दीवा
लईने जोई रही छे.) कविराजने आ चित्रनो खुलाशा करवानुं
महाराजा तरफथी फरमान थयुं. कविराजे एक दुदामांज
खुलाशा कर्या :

दीवा लईने दीकरा, कांव जनेता जोय.

हुया नहितर होय. सिद्धराज जेसंग सरीखा.

सिद्धराजे कविराजने बार गामनी जागीर आपीने राजकवि
तरीके स्थाप्यां.

गणेशपुरी महाराज ग्रंथारंभमां कृष्णस्तुति करता लखे छे के :

याते या ग्रंथ में अमंगल को चौर लीजे,

चौरीको स्वभाव में ही जान्यो तेरे घरको.

आवां उदाहरणे चारण साहित्यकारोनी मेधावी बुद्धिमत्ता
नो, शीघ्र काव्य सर्जननो-काव्यशक्तिनो परिचय आपी जाय छे.

१३९ उपहास :-

कश्मीरना राजा हर्षदेवे कर्णाट देशनी परमांड राजानी राणी चंदलानुं चित्र जोईने, चंदला राणीने ज्यां सुधी लई न आवुं त्यां सुधी काचा कर्पुर सावानी प्रतिक्षा लीधी हती. प समयेनी राजानी वाहियातपन अने अप्रस्तुत प्रतीक्षाधी राजसभामां उपस्थित चारणेण राजा हर्षदेवनो उपहास कर्या हतो.

कृतापकित्रमकर्पूरपरित्यात्रं प्रतिक्षया ।

तं च स्तुतिमिषादेवं जहसुः कवि चारणः ॥

ईडरना राव प्रतापसिंहजीथे 'कलीन शेव' कराव्युं अटले चारणधी न रहेवायुः :

दाढी-मुछ मुंडाय के सिर पर धरियो टेप,
प्रतापसी तखतेसरा (थारे) बाकी घटे लंगोट.

हल्लवदना ठाकोर साहेबे मूळ कढावी नाख्यांना समाचार अक चारण कविराजने मळतां अक देहो लखी मोकल्यो के :

मूळयुं ते मूंडाव्युं, स्नेहे हल्लवद इयाम,
प कारण कहेशुं अमे, स्वेजे सीताराम.

अढारमी सदीमां वढवाणना झाला राजा पृथ्वीराजनी एक बकरीने हल्लवदना झाला राजा हरिसंगे मारी नाखी एनो मांस भक्ष कर्या. परिणामे एनुं वेर बालबा वढवाणना सैन्ये हल्लवद उपर चढाई करी, अने तेनो सामनो करवा हल्लवदपतिप पेश्वा बाबारावनी फेजने पैसा चूकवी तेडावी, वढवाणना राजा पृथ्वीराज झालाने नमाव्या. प आखी मुखाईनी कथानुं उपहास-गीत एक चारणे रचयुं छे :

"अजा कलोले अवतरी, पीथलरी घरमांय,
बीरां पेलो रण वखे, जोगण मोग जकाय."

गोंडलना राजदी संग्रामजी वहु मुंगा स्थेता प राजदीने
बाणीदान कविए उपालभ अने परिहासमां पंखीओ अने पथ्थरेधी
षण वधु जड कही बोलता कर्या हता :

वनरां पंखी पढावयां बोले,
दलमां दुजा नके दगा,
कुंभा तण प्राक्रम अंग केवा,
(किना) सिध जोगरो खेला सगा
देवल तेय पड़छंदा देवे
कहीप तेबुं ते ज कहे.
मेपत बोलो खूब मजाधी
ते राजसभा ते मोज करे.

उपहासना अनेकविध काव्यो, देवाहाओ इतिहासमां अंकित
छे. विशेषतः रण संग्राममांधी भागी आवेला योङ्डाओना,
पराजित सैन्यना, सिमाडाना संग्रामना, वाहियातपननी स्पर्धाओ
विषयक उपहास काव्यो चारणोप रच्यां छे.

१३-६ काव्यसर्जनमां काव्यशास्त्रना वंधारणना आग्रही अने अभ्यासी:

चारणो जन्मजात कविओ होवाधी तेमज पेढी दर पेढीना
साहित्यना संस्कारेधी संस्कारायेल होवाधी तेमनुं साहित्य
सज्जन काव्यशास्त्रोमां जणावेल वंधारणने अनुसरीने रचायेल
जोवा मले छे. तेमनी प्रत्येक कृतिओमां छांदशास्त्र, अल्कार,
नायक-नायिका, भेद, हाव भाव, रसध्वनी, दग्धाश्वर, पुनरोक्ति,
दशदोष, अनिकार्थी, मानमंजरी, बगोरेनो काळजीपूर्वक प्रयोग
जोवा मले छे. ते तेमनी सिद्धहस्तता, अने विद्रुताने आमारी छे.

समर्थ कवि श्री दलपतरामे काव्य सर्जन माटे एक अनिवार्य
आवश्यका जणावी छे.

दिग्दल पाठ पढ़ा विना, करे कविता केव्य,
बण बदे व्याकरण विना निर्मल काव्य न होय.
आ अनिवार्य आवश्यक्ता चारण कवियोधे आवकारी छे अने
सज्जनमां स्वीकारी छे

दरेक युगमां कवि अग्रस्थाने होय छे. गांधीयुग प तो
लोकयुग कहेवाय छे. चारण कविओप लोकयुगना आवश्यक
बलो अने संस्कारो झीली, जूनी लडणमांथी नवी रचना तरफ
बली, विषयवैविध्य लावी, नवी रचनाओमां बधु तेज प्रगटावी
लोकयुगमां लोककवि तरीके विशिष्ट स्थान प्राप्त कर्युं छे.

१३.७ ग्राचीन अर्वाचीन सांप्रतयुगना साहित्यकारो अनेकांति परिचयः

१ श्री आसाजी रोहडिया: वतन : भाद्रेच बाडमेर कृति : राउ
चंदसेण रा रूपक, उमादे कवित, बाघजी रा दुद्धा, दादुना दुद्धा,
लक्ष्मणायन, रावळ जामना मरसीया, गागाजी री पडी, गुण राउ
खेंगार री वीआखरी, गुण निरंजन प्राण.

२ श्री अनेष्टिसिंहजी कृभकरण सांदु-झुलणा निवाज ठाकुर
अमरसिंहजीरा, छप्पय महाराज बगतसिंहजीरा.

३ श्री अक्षयसिंहजी झुझारसिंहजी रत्नः; जन्म २४-१२-१९१०
ग्राम जिलिया, चारणवास, जिल्ला नागोर,
राजस्थान. कृति : श्रीमद् भागवत दशम
स्कन्ध पद्यानुवाद, श्री अक्षय तेज नीति
समुच्चय, शेखावतों की झमाल, अक्षय
तीर्थयात्रा, श्री केसरी प्रतापचरित्र, श्री
करनी पूजा पद्धति, भारत-पाक युद्ध,
अक्षय जय स्मृति, श्री किशोर स्मृति

श्री रत्न स्मृति, चित्तोड के तीन शाके, जयपुर री झमाल;
मेरे मनोभाव, काश्मीर पर पाक आक्रमण.

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है। आप चारण साहित्य पर्वं चारण जाति की अक्षय, अमूल्य निधि हैं। आपकी कविता में काव्य की कमनीयतां के साथ साथ अनुभूति की सचाई का एक तेज भी प्रकट होता है। आपकी व्यंग्य प्रधान काव्य सर्जना तो सचमुच ही काव्य की अमूल्यनिधि हैं। आपकी प्रत्येक रचना में नवीनता, निर्भयता पर्वं अनमुक्त जीवन की खुमारी की ध्वनि निनादित है। उस में एक स्पन्दन हैं, गति हैं और गतिशील जीवन की थिरकन है। आप चारण साहित्य और शैली के एक शाश्वत उद्गाता हैं।

‘अक्षय कुटिर’ पारीक केलेज मार्ग, बन्नी पार्क, जयपुर.

- ४ पू. देवी श्री अनन्पूर्णांगिरीजी महाराज - काव्यसंग्रह
“देवीश्रीनो वाश्रम” मु. अमरनगर; वाया-वडिआ; जि. राजकोट
- ५ श्री बाईदान पथाभाई शामळ, लींबडी - प्रस्ताविक काव्यो
- ६ श्री आशकर्णजी आढा, जोधपुर-सं. चारण हिन्दी पत्रिका.
- ७ श्री अर्जुनदेव रेतदानजी चारण - देा नाटक आजरा.
मु. पो.-मथाणिया-मारवाड; जि. जोधपुर (राजस्थान).
- ८ श्री उम्मरदानजी वख्तीराम लालस, जन्म-वि. १९०८ वैशाख
सुद बीज, मृत्यु - ११-३-१९०३. वतन : फलोधी - मारवाड.
कृति : उम्मर काव्य, डफोलाष्टक झाँडी, जसवन्त जस जलद.
- ९ श्री उजीर्यासिंह सामौर, वतन-वावासर (चूरू) विजय शतक.
- १० श्री उम्मेदरामजी रोहडिया, वतन : अलवर. कृति :
सुराजनीति, रामासुरमेघ, देवीकवच, झमालशतक.
- ११ श्री उदयराज उज्जवल-भगतमाल, सती सप्तक.
- १२ .. ईसरदासजी सुजा रोहडिया, जन्म : संवत् १५१५ ना
आवण शुद बीज गुरुवार; निर्वाण : संवत् १६२२ चैत्र सुद नोम
ने बुधवार; संचाणागाम.

चारणीय संस्कृतिना संरक्षक अने प्रवर्तक

महामहोपाध्याय

महामहोपाध्याय



श्री मुरारिदानजी बाशिया
(जेठपुर)



श्री श्यामलदासजी दधिवाड़िया
(ढोकछिया)

स्टेट हिस्टोरियन

देशभक्त



श्री किशोरसिंहजी सौदा
(पटियाला)



श्री केशरसिंहजी सौदा
(कोटा)

चारण वाणीनां अनन्य उपासको... ...



श्री केशरीसिंह वारहडू
(सेन्याणा-मेवाड़)



श्री कृष्णसिंहजी वारहडू
(शाहपुरा-मेवाड़)



श्री नाथ्रुसिंह महियारिया
(उदयपुर)



श्री पिंगलश्रीभाई पायक
(लोद्राणी-कच्छ)

कृति : हरिरस, देवीयाण, छोटा हरिरस, बाललीला, गुण-भगवतहंस, ध्यानमंजरी, गुरुडपुराण, गुण आगम, निंदा स्तुति, वैराट, राम कैलास सभापर्व, हाला झाला रा कुंडलिया, दाललीला, योग मंजरी, रास कुतुदल, गंगा अवतरण.

१३ श्री ईशर रत्न - जगमाल मेडतिया के कवित.

१४ ठाकुर श्री ईश्वरदानजी आसिया : वतन : मेंगटीया.
कृति : संपादक चारण त्रयमासिक, अधिवेशन रिपोर्ट.

श्री दानजी अखिल भारतीय चारण सम्मेलन के चार-चार अधिवेशनों के प्रधानमंत्री के रूपमें सुशोभित किये हैं। अखिल भारतीय चारण सम्मेलन के त्रयमासिक मुख्यपत्र 'चारण' के संपादक पर्व लेखक के रूपमें भी आपकी सेवायें स्तुत्य पर्व प्रेरणादायी रहीं हैं। चारण साहित्य के चिंतक एक संभ्रदत सदस्य तथा चारण समाज-सेवक के रूपमें आपका विशिष्ट स्थान है। आप चारण साहित्य के संशोधकों के मार्ग-निर्देशक ही नहीं बल्कि उनके एक सच्चे मित्र और चारण साहित्य के ईमानदार उपासक भी हैं।

प्लाट नं. १०६, हिरन नगरी, सेकटर-४ उदयपुर.

१५ श्री कृष्णसिंहजी बारहड़; जन्म : संवत् १९०६, फालगुन शुक्ल १, देवपुरा; निर्वाण : संवत् १९६४ पौष शुक्ला ६, जोधपुर, वतन : देवपुरा-शाहपुरा-कृति-चारणकुल प्रकाश.

१६ श्री करणीदानजी विजयरामजी कविया, (१७६०) सूरजप्रकाश, विरदशंगार.

१७ श्री केशवदासजी गाडण-विवेकवार्ता, गुण रूपक, गजगुण चरित्र, राव अमरसिंहजीरा दृहा.

१८ श्री किसनाजी आढा-रघुवीर जय प्रकाश, भीम विलास.

- १९ श्री कृपाराम खडिया-राजिया काव्य, राजिया दृहा, राजिया सेरठा
- २० श्री करणीदान बारहडू-आदमीरो सींग, व्यानणो शिडिया, श्री राणी सती.
- २१ श्री कर्मसी आसिया-शंकरस्तुति, सूजावालेछाके कवित.
- २२ „ कर्मसी रुणेचा सांखला-किसनजीरी वेली.
- २३ „ करण रत्न-वीरमदेव मेडतिया के वीरता के कवित.
- २४ „ करसनभाई रामभाई गढवी; वतन : जांबुडा-आई सोनल बावनी.
- २५ „ श्री करणीदानजी दधिवाडिया-फतेह प्रकाश प्रशस्ति.
- २६ „ किशोरसिंहजी सौदा; जन्म : वि. १९३५ अश्विन शुक्र १४; शाहपुरा-मेवाड़; निवारण : वि. १९९४ अश्विन शुक्र पूर्णिमा पटियाला पंजाब-पागल प्रमोद, करणी चरित्र, सं.-चारण.
- २७ „ कानदासजी महेड वडेदरा गायकवाडना राजकवि दरियापीरनी स्तुति तथा दीनदरवेश साथेना छप्पय छंद.
- २८ ठाकुर श्री केसरसिंहजी; वतन : रुपावास - शरणानंद श्रद्धालूंजली, राणा प्रताप काव्य, ग्राम - पेंडा - रुपावास, वायापाली मारवाड़.
- २९ श्री कूंभकरण ईसरदासजी सांदू-रत्न रासौ, अमर रासौ, जयचंद रासौ.
- ३० „ केशवदास जेठाभाई उदास; वतन : ढांक-रामचंद्रिका.
- ३१ „ कलाभाई करसनभाई उदास, वतन : ढांक-कल्याणराय ग्रंथ
- ३२ „ केशरीसिंहजी सौदा; निवारण : ३०-१०-१९५७.
वतन : सोन्याणा-प्रताप चरित्र, दुर्गादास चरित्र,
राजसिंहजी चरित्र.

३२-१ श्री काशीदाने गगुभाई लीला, सनाठी:-अमरग्रंथ सुरगीयश
प्रकाश, रणवीर चांपराजवालो जीवा विलास, जेडसुर
जस भुषण, करण काव्य माळा.

३३ „ कैलाशदानजी शिवदत्तजी उज्जवल; जन्म : १९-१-१९२२
बतन : उज्जलां. कृति : भगवती श्री करणीजी महाराज,
‘आप यथा नाम तथा गुणः’



की जीवन्त प्रतिमूर्ति हैं। मात्र सरकारी
नौकरी के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि साहित्य-
क्षेत्र में भी आप एक उज्जवल कीर्ति के
अधिकारी हैं। “भगवती श्री करणीजी
महाराज” आपका बहुमूल्य ग्रंथ हैं।
संशोधन के क्षेत्र में आप नवागन्तुको के
लिए प्रेरणापुरुष ही नहीं बल्कि प्रकाश स्तंभ हैं। चारण जाति के
लिए भी आपकी सेवायें विशेष उल्लखनीय हैं।

३४, अणियारा बाग, जयपुर, ३०२००४.

३४ श्री केशरदानभाई भलुभाई बारहट्ट (ईसराणी)

कवि श्री केशरदानभाई चारणी साहित्यना शास्त्रो अने
लोक परंपराना प्रथम कक्षाना अभ्यासी छे. चारणी साहित्य,
शैली वारसामां मढ़ी छे. तेओश्रीनी विद्वता साहित्यिक जगतने
सहायक थवा उपरांत नवीज प्रेरणा आऐ तेवी छे. चारण
साहित्यकारोनी अत्रीम पंक्तिमां तेमनुं आगबुं स्थान छे.
मु वीरवदरका, वाया-मोरवी. जिल्ला-राजकेट.

३५ श्री करणीदानजी गोपालजी गढवी.

“श्री करणीदानजी कवि छे, प्रखर वक्ता छे अने पथी वधु
एक उच्च कक्षाना आदमी छे, महामूला मानवी छे. लोक
साहित्यना जीवनभरना मेखधारी छे. लोक साहित्यना प्रचार
अर्थे भारतनां चारे खूणां खूंदी वलया छे. कच्छधी कोचीन

- अने कन्याकुमारी सुधीनी धरतीए पमना लोक साहित्यनें
रसाखाद माण्यो छे;" -(श्री दुलेराय काराणी.) मु. भारापुर,
या-बीराणी मोटी; ता.-नखत्राणा (कच्छ) जि. भूज.
- ३६ श्री कानजीभाई लांगड़ीया. वतन : वरवाळा-नागाईपुराण.
- ३७ „ करमाणंद आणंद; वतन : ममाण-प्रस्ताचिक देहा.
- ३८ „ करणीदानजी रत्नू; वतन : अंधेळी-मच्छवेघ.
- ३९ „ खेतदानजी देलाजी-वैराण्योपदेश वावनी.
- ४० „ खेतसिंहजी मिसण, मोहेरा,-सं. चारण.
- ४१ „ खोड़ाभाई रविराज सिंहढायच; वतन : मूळी-शिवपर्वतीशी
- ४२ „ गुणाढय-बृहत्कथा.
- ४३ „ गोदडजी महेड़; वतन : वालेवड-सर्वतंत्र, चोबीस
अवतारोनां गीत.
- ४४ „ गणेशपुरीजी पद्मासिंहजी रोहडिया; वतन : चारणवास
बीरविनेऽद.
- ४५ „ गोपालदान कविया-लावारस.
- ४६ „ गोवर्धनजी महियारिया-केवाटरी वात
- ४७ „ गुलाबदानजी अंबादानजी झीढ़ा; वतन : जयपुर-
चारण चरजाँ पै और उनका अध्ययन C/O. विवेक
पट्टिलशिंग हाउस, दामानी मार्केट; जयपुर-३.
- ४८ „ गंगा सिंहढायच-राठौड बीर जैता पंचायणोतका गीत.
- ४९ „ गोरा-राग लूणकरणरा गीत, राव जैतसी रा कवित.
- ५० „ गोकळदास हरदास गढ़वी-सत्यवावनी.
- ५१ „ गीगाभाई जेठाभाई गढ़वी; वतन : आंगणका,-
देशल यश प्रकाश.
- ५२ „ चावंडदानजी बीठु-श्री करणीजीका चरित्र.
- ५३ „ चौहथ बारहटु-श्री करणीजीरा कवित.
- ५४ „ चन्द्रदान चारण; जन्म : २८-७-१९२४ चूरु कृति; गोगाजी
चौहान री राजस्थानी गाथा; अलिखिया सम्प्रदाय.

आपने साहित्य पर्व कला-जगत की जो अविस्मरणीय सेवा की है, वह सर्वेविदित है। राष्ट्रीय पर्व प्रान्तीय स्तर के साहित्यिक आयोजनों का सफल संयोजन आपके साहित्यप्रेम वेवं साहित्यिक प्रतिष्ठा के उजागर करनेवाले रहे हैं। भारत के अनेक हिन्दी व राजस्थानी शोधअध्येताओं का निरन्तर मार्गदर्शन करना आपकी गम्भीर विद्वता व तीक्ष्ण शोध-दृष्टि के परिचायक रहे हैं। बीकानेर की साहित्यिक पर्व सांस्कृतिक संस्थाओं से आपकी जो अंतरंगता रही है वह आपकी परिष्कृत रूचि पर्वं संवेदनशीलता की सुपरिचायक है।

फुलबाईका कूआ केटगोट बीकानेर: ३३४००।.

- ५५ श्री चन्द्रप्रकाश देवल; वतन : गोंदिया-भेवाड-यात्री.
- ५६ „ चौभुजा सिंहढायच-राठोडे राव रणमलरो गीत.
- ५७ „ चंडीदानजी मिसण-बल विग्रह.
- ५८ „ जगाजी खडिया-राव रतन 'महेशदासोनरी वचनिका, रतन राहे।
- ५९ „ जेसाजी पिंगलशी लांगा; वतन : राजकोट - प्रविणसागरना सहकर्ता.
- ६० मुनि श्री जीवणविजयजी महाराज; वतन : राजकोट - कृति : प्रविणसागरना सहकर्ता, ठाकोर महेरामणसिंहजी नो बीज पुनमनो कसुंबो.
- ६१ श्री जेठाभाई उद्घास; ई. १७५७ वतन : जमठा कृति : भेटाळीग्रंथ, आगमवाणी, जामभास्तना सहकर्ता.
- ६२ „ जसुरामजी वरसडा; संवत १७७९; वतन : आमोद कृति : अष्टांग राजनीति, पटक्रतु वर्णन.
- ६३ „ जीवाभाई बीसाभाई शामल; 'मस्तकवि' वतन : झांवडी, कृति : नळाख्यान, सृष्टिसौंदर्य, जसवंत विरह वावनी, लींबडीनो इतिहास.

- ६४ श्री जयमलानंद हंसनिर्वाणः वतनः लोद्राणी (कच्छ) कृति : जयमल वाणी, वाणी विलास, स्वानूभव.
- ६५ „ जीजीभाई रत्नूः वतन अंधेली-झालावंशनेा इतिहास.
- ६६ „ जबरदान झीवा-गरवावली.
- ६७ „ जयमल बारहट्ठ-रामकी सेना.
- ६८ „ जीवणलाल झीवा-छंदमुक्तावली.
- ६९ „ जाडा महेझ-शार्दूल परमार के छंद
- ७० „ जीवण रोहडिया-गजेन्द्रमोक्ष.
- ७१ „ जबरदान चकुभाई बारहट्ठ, जन्म : सं. १९७८ संचाणा देवल महिमा, देवल मंजरी, सं-छोटा हरिरस.
- ७२ „ तखतदान मिसण-त्रिकमराय यश बावनी.
- ७३ „ तखतदान रोहडिया; वतनः नागेश्वी तंश्वीश्वी 'रत्नाकर'
- ७४ „ थार्या माणसी भगत, जन्म : सं १९६२ निर्वाण स. २०२७ झरपरा, परमात्मा पदावलि.
- ७५ „ दुरशानी मेहाजी आढा; जन्म : वि. १९९३; निर्वाण : वि. १७१२ वतनः धूंदला (सोजत) कृति : विरद छहुतरी, प्रताप यश किरतार बावनी, झुलणा रावत मेघारा, मूचरमोरी गजगत, गीत राजा रोहितासजीरा, झुलणा राव अमरसिंधजी गजसिंधरो.
- ७६ „ देवीदानजी देथा-देव विलास.
- ७७ „ दयालदास सिहढायचः कृति : करणीजीका चरित्र, राढोरां री ख्यात, राणो रासो; दयालदास री ख्यात, आयो- वतोपाख्यान, कल्पद्रुम.
- ७८ „ दुदोजी अमरोजी आसिया; जन्म : वि. १९८१ आसोज कृति : राठोडा बीर कलारायमलेत, चांद्रायणा.
- ७९ „ दुर्गादानजी महियारिया, जन्म : वि. १९९०, निर्वाण : २४-७-१९९३ वतनः कोटडी-गृहणीभूषण (अनुवाद)

- ८० श्री दुर्लभदास वरसडा; जन्म : खंभाळीडा-देवा बिलास,
गुरु वंशावली, रामानुज वंशावली.
- ८१ „ देवीदानजी मिसण (श्री दिव्यानंद सरस्वती)–
मानुषी विचार.
- ८२ „ दुलाभाई भायाभाई काग; जन्म : वि. १९५८ सोडवदरी
निर्वाण : ४-२-१९७७ वतन : मजादर. कृति : कागवाणी
भाग १ श्री ८, विनोबा बाबनी, सेरठ बाबनी, गुरु
महिमा, राष्ट्रध्वज पचिसी, घर जाशे जाशे घरम,
चंद्र बाबनी, बलवंत विरदावली, शक्ति चालीसा.
- ८३ „ देवानंद स्वामी; जन्म १८९९ कार्तिक सुद १०; निर्वाण :
वि. १९१० श्रावण घद १० सुल्ली; वतन : बाळोल.
कृति : ईश्वरने ओळखवा विशेना पद, मायानी मोहनी
विशेनां पद, प्रभु साथे प्रीति करवाना पद, स्त्रीओने
शीखामणनां पद.
- ८४ „ दादुभाई प्रतापदान मिसण; 'कविदाद' – टेरवा.
मु. धुनानुं गाम; पो. झीलरिया, बाया : पडधरी
जि. राजकोट.
- ८५ „ नरहरदासजी लखाजी रोहडिया, जन्म : वि. १६०० का
अंतिमकाल, टेला आम, निर्वाण - वि. १७७७ टेला.
कृति : अवतार चरित्र, रामबादरी निशाणी.
- ८६ „ नवलदान शक्तिदान आसिया; जन्म : वि. १९१५
कृति : शिरोहिका इतिहास, राजपुतानाका इतिहास,
चौहान सुधाकर.
- ८७ „ नानभा बारहठ (श्री निरंजन वर्मा अने श्री जयमल्ल
परमार) – पक्षी परिचय ग्रंथावलि, किशोर ग्रंथावलि,
विज्ञान ग्रंथावलि, लोककथा ग्रंथावलि, देशदेशनी

लोककथाओ भाग १-२, परीकथाओ भाग १-२,
रूपकथाओ भाग-१.

८७ श्री नारायणदान नथुभाई मिसण, मोरवी-चारण भक्तमाल.

८८ „ नाथुसिंहजी केसरीमिहजी महियारिया. जन्म : वि. १९४८
उदयपुर, निवाण : १३ अप्रिल १९७३.

कृति : वीरसतसई, हाडी शतक, चूणडाशतक, पना
शतक, झाला मान शतक, करणी शतक, काइमीर
शतक, वीर शतक, गांधी शतक.

८९ „ नारायणदानजी भाईजीभाई बालिया; जन्म : वि १९७२
कृति : शालिहोत्रशाल्लनो पद्यमां अनुवाद, महादानयश-
मालाना सहकर्ता, जामनगरनो पद्यमां इतिहास



जामनगरना राजकवि श्री नारायणदान
बालियाए लखपत ब्रजभाषा पाठशालामां
उमदा विद्या प्राप्त करेली. दस्त-
लिखित शालिहोत्र ग्रंथनो ब्रजमिथित
भाषामां दोहावद्ध भाषानुवाद आप्ये,
तेमां पमनी कवि प्रतिभा झळकी उठेली.
डिगळी भाषाना गणमान्य अभ्यासी

अने विद्वान छे.

‘सोनल कृष्ण सदन’ लालबहादुर शास्त्री हा. सोसायटी, पटेल
कोलेजी ९, जामनगर-८.

९० श्री नवलदान-नीति रत्नावली.

९१ „ नारणदान मामैयाभाई सुरू; वतन : चारणीया-रामरसामृत.
मु. चारणीया, वाया-वडिया देवली, जि.-राजकोट.

९२ „ नागभाई मनाभाई मोडः वतन : वाघेला-नागवाणी.

९३ „ पुष्पदंत-महिम्न स्तोत्र.

९४ „ पिंगलाचार्य; ई. स ५.२००-नागपिंगळ.

- ९५ श्री परमानंद विठ्ठु-जगदीश्वरकी महिमा गीत.
- ९६ „ पसाईत गाडण-राव रणमल रे रूपक, गुणबोधायण.
- ९७ „ पावुदान आसिया-पावू चरित्र.
- ९८ „ पाताभाई मुलुभाई नरेला; वतन : शिहोर-जसुविलास, तखत प्रकाश, काशी प्रवास.
- ९९ „ पिंगलशीभाई पाताभाई नरेला; जन्म : १९१२ शिहोर, निवाण : वि. १९९२ भावनगर.
कृति : पिंगल काव्य १-२, भावभूषण कृष्णकुमार काव्य, चित्त चेतावनी, सुवोधमाळा, कृष्णवाललीला, सत्य-नारायणनी कथा, पिंगल वीर पूजा, सुजात चरित्र सतीमणी.
- १०० „ पाता बारहट्ठ-राठोड रत्नसिंह दूदावत का युद्धगीत.
- १०१ „ पिंगलशीभाई रत्नू, वतन : बढवाण-वैकुंठ पिंगल.
- १०२ „ पाताभाई रत्नू, वतन : अंधेळी चारणोनो ईतिहास.
- १०३ „ पिंगलशीभाई जसाभाई बालिया, आंबलियाळा - प्रस्ताविक काव्यो.
- १०४अ „ पालरव पालीया-शामळाना देहा.
- १०४ „ पद्मसिंहजी पतावत, वतन : चारणवास-करणपर्व.
- १०५ „ पूर्णानंद स्वामी; वतन : हेवतपुर-स्वामीनारायणनां पदेा.
- १०६ „ प्रभुदानजी रोहडिया, वतन : धूनानुं गाम-ईन्द्रिरा बावनी
- १०७ „ पंचाणभाई विश्रामभाई आलगा - आई सोनल ईश्वरी, कच्छ चारण परिवार, श्री लक्ष्मण राग चारण बोर्डिंग, मु. पो. मांडवी, जि. भुज (कच्छ)
- १०८ „ पिंगलशीभाई परवतजी, पायक (गरा) वतन : लोद्राणी
कृति : तंत्रीश्री चारण मासीक, चारण नातिनी शाखा प्रशाखाओ.
- आईश्री सोनल मानुं जीवन चरित्र भाग १-२

કાયદાશાસ્ત્રની પદવી પ્રાપ્ત કર્યા પછી ચારણ જ્ઞાતિ અને
ચારણી સાહિત્યના આજીવન સેવાવૃત્તધારી. પુરાતસ્વ
અને ઐતિહાસિક સંશોધન પમના રસના વિષય છે.
શાસ્ત્રો અને લોક પરંપરાના અભ્યાસી છે ચારણી સાહિત્ય-
ના તેઓ ઉંડા અન્વેષક છે. પમની નિડરતા વક્તૃત્વતા
તમામ ક્ષેત્રે એક સરખી પ્રકાશમાન છે. પમની ઉજવણી
કારકિર્દીને જ્ઞાનેરા આદરમાન દર્શિપ
C/O. ગઢવી સ્ટોર, નવરંગપુરા પસ. ટી સ્ટેન્ડ પાસે,
નવરંગપુરા, અમદાવાદ-૯.

૧૦૯ શ્રી પિગલશીભાઈ મેઘાણંદ ગઢવી; જન્મ ૨૭-૭-૧૯૧૪
છત્રાવા. કૃતિ : સોરઠ સરવાણી, જીવતરના જોખ, પ્રાગવડના
પંખી, સરહદનો સંગ્રામ, આરાધ, ખેડૂત વાવની, ગીતા દેદ્વાવલિ,
ગાંધીકુલ, ખમીરવંતા માનવી, નામ રહેતાં ઠકરાં, જસમા ઓડુણ,
વેળુંનાદ, નશામુક્કિના કાવ્યો, મહાદાન યશમાલા, ધૂંધળીમલ,
દેપાલુદે, જીવન ઝલક.



“પ્રૌઢ વયને ઉંબરે પહેંચતાં પહેલાં જ
આપ નયગુરી પ્રકાશનાં પ્રગતિશીલ
બલોને પામીને લોકપ્રિયતાનાં શિખરો
સર કરતા થયા છે. એ જેમ આપનું
તેમ અમારું પણ સૌભાગ્ય છે. ગુજરાતમાં
અદ્વિતીય એવા લોક સાહિત્ય વિદ્યાલયના
દસ વરસ સુધી બાચાર્યપદે રહીને આપે

૬૦ જેટલા ચારણ અને ચારણેતર વિદ્યાર્થીઓને ચારણી અને
લોક સાહિત્યની દીક્ષા આપી, ગુજરાત અને વૃદ્ધ ગુજરાતમાં એ
સાહિત્યની રસ-સરિતાઓ સજીવન રાખી છે. કવિતામાં પિગલના
ગણની સાધના વડે અને વિદ્યાર્થીંગણ વડે આપ લોક સાહિત્યના
ગણધર બન્યા છે. સ્વ. મેઘાણીભાઈની “સૌરાષ્ટ્રની રસધાર”

पछी पवी ज वीजी लोकवातना संशोधन अने सर्जन घडे आ धरतीना खमीर अने खानदानीने। संस्कार परिचय प्रजाने करावता रहा छो. अर्वाचीनने आराधती आपनी कविता जनतानां सुख दुःखेनी वाचा प्रतिधोष बनी रही छे. युगदेवतानी वंदनाना चारणधर्मने अनुसरीने आप आजना युगना वाग्मेयकार-लोक साहित्यकार बन्या छो. आपनी एक धारी ४८ वरसधी चाली आवती साहित्योपासना हजी तो कईक प्राणवान कृतिओनी आगाही आपी रही छे. नवोदित चारण कवि, लेखको माटे आप चारण-वाणीना सामर्थ्यने अर्वाचीन भावनाना अनुसंधाने मार्गदर्शक स्तंभ बनी रहा छो. आप चारणी अने लोक साहित्यना विकसित वर्तमानकाल अने आवती कालनी अमारी उज्जवल आशा छो.” – सन्मान पुष्पांजलि.

“सरस्वती”, ९, पटेल कोलोनी, जामनगर, ३६१००८.

११० श्री फतेहकरणजी उज्जल-पत्र प्रभाकर.

१११ „ वाँकीदासजी आसिया, जन्म : वि. १८२८ भाँडियावास, निवारण : वि. १८९० वतन : भाँडियावास (पंचमदरा) कृति : वैतिहासिक वार्ता संग्रह, महाभारत छेदानुवाद, वाँकीदास री ख्यात, सूर छतीसी, सिंह छतीसी, वीर विनोद, धवल पञ्चसी, दातार वावनी, नीति मंजरी, सुपह छतीसी, वैसक वार्ता, मावडिया मिजाज, कृपण दर्पण, मोह मर्दन, चुगल मुख, चपेटिका, वेस वार्ता, कु कवि बत्तीसी, बिदुर बत्तीसी, भुरबाल भूषण, गंगा लहरी झमाल, जेहल जस जडाव, सिंधराव छतीसी, संतोष वावनी, सुजस छतीसी, वचन विवेक पञ्चसी, कायर वावनी.

११२ „ ब्रह्मानंदजी स्वामी, जन्म : वि. १८२८ खाण गाम, निवारण : वि. १८८८ मूली. कृति : ब्रह्मानंद काव्य,

श्री सुमति प्रकाश, ब्रह्मघिलास, शिक्षापत्री पद्ममां,
उपदेश चितामणी, चंद्रावला, छंद रत्नावली, नीति
प्रकाश, शिक्षापत्री (हिन्दी), संप्रदाय प्रदीप, धर्म सिद्धान्त,
वर्तमान विवेक, सतीगीता, श्री नारायण गीता, विवेक
चिंतामणी, धर्मवंश प्रकाश.

- ११३ श्री वल्वन्तसिंहजी रोदडिया, वतन : माहुँद (अलवर)
कृति : हल्दी घाटी की हुंकार; चन्द्रचूड चमत्कार,
शक्ति सुयश.
- ११४ „ ब्रह्मदास चारण-भगतमाळ.
- ११५ „ बलदेवभाई हरदानभाई नरेला. “भावमगरना राज्यकवि.
नरेला - चारणकुलना नवीरा, विनम्रकवि, परंपराना
सुप्रसिद्ध वार्ता कथक अने लोकवार्ताना सौजन्यशील
लेखक. शील अने सात्त्विकताना उपासी” उमिनवरचना
- ११६ „ बचूभाई गढवी-
पमणे विलाई जती चारणी वार्ताकथन - कलाने नवां
जीवन आप्यां छे. लोकवार्ताना लेखनक्षेत्रे तेमनुं आगबुं
स्थान छे. अढलक वार्ता अभनी पासे पढी छे. वार्ता-
कथन अने लेखनमां एभनी पासे संस्कारी अने
साहित्यिक एवी सूक्ष्म सूझ छे.
- मु. पो. वडवाण (सीटी); जि. - सुरेन्द्रनगर.
- ११७ „ बापलभाई गढवी-
“प्रकाशित ने वेदक वाणीना धारदार वार्ताकथक,
परंपरानी खमीरवंती ने खानदानीभरी, मर्माळी ने
लयबद्ध कहेणी; सुगेय, रोचक अने पद्माडनां झरणां
समी कविता वार्तानुं ओजसवंतु कलाविधान.”
(उमिनवरचना). श्री कस्तुरवा सोसायटी, सुरेन्द्रनगर.
- ११८ „ भैरवदानजी; विकानेर-चारणकुल मीमांसा मार्ट्टंड.

- ११९ श्री भवानीदास-भर्तु हरि शतक.
- १२० „ भोमजी बीठु-करणीजी का चरित्र.
- १२१ „ भीमजीभाई बनाभाई रत्नूः जन्म : सं. १९०७ मूळी.
निवांण; सं. १९५६ कालावड. कृति : सती गीता,
पुरुषोत्तम चरित्र; द्रौपदी वस्त्राहरण, रुक्षमणी हरण.
- १२२ „ भोजा गढवी; वतन : ललीया-
- माणेक रासो, पृथ्वीराज रासोनी टीका.
- १२३ „ भायो गढवी-रासलीला, वांसापीरनुं स्तवन
- १२४ „ भायो बारहट्ठ; वतन : हापा-जामजश, वंशावली.
- १२५ डॉ. भवरसिंह सामौर-मरण त्यूंहार.
- आप लोहिया कालेज, चुरू के हिन्दी विभाग के सन्निष्ठ
प्राध्यापक हैं। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होने
के साथ एक सफल विवेचक भी हैं। आप लोकप्रिय
संपादक हैं तो चारण साहित्य के परम उपासक भी
हैं। आप एक सफल सर्जक तो हैं ही, चारण जाति
के परम हितैषी भी हैं। पुरातत्त्व एवं ऐतिहासिक
संशोधन आपके प्रिय विषय हैं। चारण देवियों तथा
साहित्य के प्रति आपकी विशेष भक्ति है।
- लोहिया कालेज, हिन्दी विभाग, चुरू; राजस्थान.
- १२६ श्री भरतभाई कवि 'उमिल'.
- भाई श्री भरतभाई कवि कुमारावस्थाथी ज साम्राज्य
काव्य संस्कारनी दीक्षा लई आसपासना वर्तुळने
पोतानी भावसृष्टिनी यात्राना सहभागी बनावी शक्या
छे. श्री कविनी कमनीय कवितामां अभिव्यक्ति अने
अनूभूतिनो तेजस्वी संपूट तेमज विरहनां आंसु अने
अनागत विशे आस्था पण छे. श्री कवि गुजराती काव्य
सृष्टिना शाश्वत उद्गाता छे. श्री कवि गुजराती काव्य
सेक्टर नं. २२, ब्लॉक नं. ३/१ च, गांधीनगर.

- १२७ श्री माधवदास चूडाजी दधिवाडिया; जन्म : १६१० बलूदा,
निवाण वि. १६९०.
कृति : रामरासो गज (मोक्ष), दशमस्कंध, पृथ्वीराजकी
बेलीना सहकर्ता.
- १२८ " सुरारिदानजी आशिया; जन्म : वि. १८८९ माघ वदि २;
निवाण : वि. १९७० अषाढ़ सुदि ५ वतन : जोधपुर-
जसवंत जशोभूषण, चारण ख्याति.
- १२९ " सुल्खभाई बजाजी महेड़; वतन लोठिया-कुवजा बत्रीसी,
वीरभद्र वीरह
- १३० " मेधराज बीठु -मेकरण चरित्र
- १३१ " मोडजी बासिया-पावू प्रकाश
- १३२ " मेहा बीठु-पावूजी रा छंद, गगोजीरा छंद, करणीजीरा
छंद, कर्मसी चौहान और सांवलदास चौहानकी
वीरता के गीत
- १३३ " मावदानजी भीमजीभाई रत्न, जन्म : वि. १९४८
भादरवा सुद-२, कालावड कृति : ब्रह्मसंहिता,
यदुवंशप्रकाश, सतीगीता, श्री नारायणकवच, हनुमान-
स्तोत्र, जूनागढनो जोगी, खानबहादुर अरदेशर कोटवाल,
जाम रणजित किकेट विजय-विलास, चंद्रकिरणावली,
भजनावली, जमनगर जिल्लानां नव योगेश्वरो.
मु.-पा.-कालावड (झीतला); जि -जामनगर
- १३४ " श्री मालहड वरसडा - सूजावत का कटारी युद्ध गीत
- १३५ " मेरुभाभाई मेधाणंद गढवी, जन्म : वि. १९६२ फागण
सुद १४, छत्रावा; निवाण : १-४-१९७७ पोरबंदर
कृति : काठियावाडी दूहाओ.
- १३६ " मुकुन्ददानजी पुसारामजी खडिया; निवाण : वि. २०१६
भुवाल कृति : वीरसतसई (क्षत्रिय चेतावणी); विनय

बतीसी, संगीत निर्णय ग्रंथ शंकर ईस प्रकाश; चिरजा काव्य; मरसिया काव्य.

१३७ श्री मुरारीदान मिसण - डिंगलकोश

१३८ „ महेशदान नारायणदान मिसण; मोरवी-मीसण महादय.

मीसण-कुळना परंपराना सुप्रसिद्ध कवि डिंगल व्याकरणना गणमान्य भाषाविद्. प्राचीन चारण साहित्य कृतिओना उच्च कोटिना संशोधक अने संपादक.

वाघपरा शेरी नं. १२, मु. पो. मोरवी: जि. राजकोट.

१३९ „ मुलुभाई पालिया, जांबुडा, “लोक संस्कृतिना धीर उपासक कलामंडित लोक जीवनना आलेखक; सरिताना शांत प्रवाह जेवी जाजरमान अने धीरी धीरी कहेणीना घडाबंध लेखकनेकोठा डाह्या कलाकार.” - उमि नवरचना ब्लोक A-13, गांधीनगर, जामनगर-८

१४० „ मालदान देपावत (श्री मनुज देपावत) जन्म : वि. १९८४ देशनोक, निर्वाण : स. १९५२ -- विष्णवगान

१४१ „ मालाजी उद्यकरण साँदू - महाराणा प्रतापके झुलणा, मान चहुआणरा झुलणा, अचलातिलोकसीरा, झुलणा सूरसिहरा, दुहा महाराणा अमरसिहरा, झुलणा अकबर पतसाहजीरा, झुलणा दीवाण प्रतापसिंघरा.

१४२ „ कवि मेह लीला; वतन : छत्रावाजाम भारतना सहकर्ता.

१४३ „ मेकरण गगुभाई लीला, जन्म : वि. १९७० वैशाख सुद ९, सनाळी. कृति : काठीये काठीयावाड कीधो, सोरठीयाणी समर चडे, मेदु मेकरण भणे, वालप विरह. “सनाळीना लीला-चारण कुळनी परंपराना प्रसिद्ध कवि. वीर अने शुंगारना उत्तम वार्ताकथक अने इतिहास-रसिक लोकवार्ता-लेखक. अमनुं साहित्य मानवताने उपासे छे.” - उमि नवरचना. जिल्ला पंचायत स्टाफ कोलोनी पासे; जोशीपुरा, जुनागढ़.

- १४४ श्री मेघराजभाई मुळुभाई रतन; जन्म : वि. १९८८
 कंसूबल शौर्य कथाओ, मु. मढाद. बाया-फुलग्राम
 जि. सुरेन्द्रनगर.
- १४५ श्री मांडणभाई खोड, गोरसेर-प्रस्ताविक काव्यो.
- १४६ „ मोतीसिंहजी जेठाभाई महेड; वतन : सामरखा
 श्री भक्तवत्सल.
- १४७ „ माधवासिंहजी प्र. गढवी-कृति : तंत्रीश्री 'चारण वंधु'
 करणीनगर सोसायटी, नागरवेल हनुमान, रखियाल,
 अमदावाद.
- १४८ „ याज्ञवल्क्य क्राणि-याज्ञवल्क्य समृति.
 १४९ „ यशकरण अचलदानजी रत्नू; निर्वाण : ई. स. १९६६
 पोरबंदर.
 कृति : गृहस्थ धर्म गुण प्रकाश बावनी, शब्दकोश-
 अमरकोश
- १५० „ राजशेखर यथावरि - कपूर मंजरी, विद्यशालभंजिका,
 प्रचंड पांडव, काव्य मीमांसा, बाल रामायण प्रबंधकोश.
- १५१ „ रवाजी रत्नू - मालियाने इतिहास.
- १५२ „ रामनाथजी रत्नू - राजपूतानेका इतिहास.
- १५३ „ रविराज सिंहढायच-मूळी-नर्मदा लहरी, माता-पितानी
 भक्ति.
- १५४ „ रतुदान बनाभाई रोहडिया, वतन : धूनानु' नाम
 कृति : रतन सचाया लाख, जगदंबा जेतबाई, तंत्री-
 'देवीपुत्र' चारणी साहित्य विभाग, भाषा साहित्य
 भवन, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, कालावड रोड, राजकोट-५.
- १५५ „ रामनाथ कविया-करुणा ब्रह्मतरी या द्रौपदी विनयः
 पावूजी का सोरठा.

१५६श्री रेवतदानजी भैरुदानजी चारण; कृति : धरती रा गीत,
राजस्थानी नाटक.

आप राजस्थानी संस्कृति परं साहित्य के अनन्य उपासक हैं। राजस्थानी साहित्यमें आपकी कवितायें अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं। अपने ग्रन्थ की लोक प्रियता के ही कारण आप राजस्थानी साहित्य के कीर्ति-स्तंभ बने हुए हैं। अपने नीड़र व्यक्तित्व परं स्पष्ट अभिव्यक्ति के कारण ही श्री दानजी जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें पक जाऊल्यमान नक्षत्रकी भाँति प्रकाशमान हैं। समग्र भारत के चारणों का संगठित करने में आप पिछले तीन वर्षों से सतत प्रयत्नशील हैं।

मु. पो. मथाणिया-मारवाड जि. जोधपुर.

- १५७ „ रेवतदानजी रोहडिया - चेतमानखा
- १५८ „ रामदानजी केसरभाई टापरिया; पालीताणा कृति : बखत विलास, नटवर गुण माळा, क्षात्राणीनुं क्षात्रत्व.
- १५९ „ रंगरेलो विठु - जेसलमेर चरित्र
- १६० „ रामा साँदू - वेलि राणा उदैसिंहरी
- १६१ „ राघवदान शंकरदानजी देथा; वस्तडी-वसमी विदाय.
- १६२ „ राघवदान जबरदान देवका - सोनल प्रार्थना पच्चिसी
- १६३ „ रामभाई दुलाभाई काग-भक्त कवि श्री दुलाभाई कागना सुपुत्र. चारणी साहित्य अने लोक साहित्यनी कहेणी अने कवितानी उज्जवल परंपराना तेओ वारसदार छे. छंदो गीतोने सोरठाना धीर गायकने सनिष्ठ कलाकार.
- मु. मजादर पो. पोर्ट विकटर चाया हुंगर, जि.-भावनगर
- १६३अ „ रुपसीभाई देथा वालुवड प्रस्ताविक काव्यो
- १६४ „ लांगीदास मांडण महेङ्गः वतन देगाम कृति ओखाहरण गण अग्यारस, महातम, सत स्भरण; गण वाबीरो, राज सणळ.

- १६५ श्री लुणपाळ महेड - ढोला मारुनी प्रेमकथा.
 १६६ „ लखधीर खडिया - खेंगार चरित्र.
 १६७ „ लकखा बारहडु - पृथ्वीराज वेलिना सद्हकर्ता.
 १६८ श्री लक्ष्मण पिंगलशी गढवी; जन्म : ९-१२-१९५२ छत्रावा.



कृति : संजोगमाया अंक,
 चारण डीरेकटरी,
 चारणनी अस्मिता.

‘सरस्वती’
 ०. पटेल कोलानी,
 जामनगर, ३६००८.

१६९ श्री लखुभाई नारणदास गढवी.

‘जीवननी अनेक लीली सूकी वच्चे जेनी नसोमां
 प्रतिभावंत वार्ताकार पितामह मेघाणंद गढवीनु’ लेही
 वहे छे. पनो चारणी अने लोक साहित्यनो संस्कार
 शब्दक्या वगर केम रही शके ?

श्री लखुभाई व्यवसाये व्यापारी, संस्कारे चारणी
 खानदान, कहेणीमां लोक साहित्यकार अने लेखनमां
 लोकगार्तना कुशळ कसबी छे .

पोताने मलेल परंपरागत वारसाने पमणे विविध रीते
 विकसावेल छे. कंठ सूरीलो अने वेघक शैली वेगभरी
 ने चोटदार, छदा, दुहा, अने सोरडा अने कवित
 गीतनी रमझट बोलावता जाय अने अस्खालित धारे
 वहेता जाय ” - लोकोत्सव स्मरणिका.

गढवी ट्रान्सपोर्ट कुं., पोष्ट अफिस रोड माणावदर.

- १७० श्री वजभालजी रत्न - राजरुपक
 १७१ „ वजमालजी परबंतजी महेड़; वतन : लोठीयाँ
 कृति : विभा विलास, विजय प्रकाश कोस, सौंदर्य
 लहरी, विरदावली.
- १७२ „ विजयदान देथा-बाँतरी फूलवाडी, तौड़ोराव, अनोखा
 पेड, संभाल, सं-लोक संस्कृति.
 आप भारतीय लोक संस्कृति पर्वं लोकशास्त्र के एक
 जीवन्त दीप-स्तंभ हैं। भारतीय लोकशास्त्र-क्षेत्र में आप
 मूल्यवान संशोधन कार्य के चिर-परिचित महारथी हैं।
 ये एक सुप्रसिद्ध संशोधक के साथ-साथ एक प्रबुद्ध
 सर्जक भी है। 'रूपायतन संस्थान' द्वारा प्रकाशित
 'लोक-संस्कृति' नामक मासिक के प्रकाशन, प्रचार
 पर्व प्रसार में आपका अभूतपूर्व योगदान रहा है तथा
 आज भी उनकी मूल्यवान सेवायें प्राप्त हैं। लोक संस्कृति
 की जाग्रत-चेतनाके प्रचार-प्रसार में आपकी स्तुत्य
 सेवाये हैं। 'रुपायतन संस्थान' ग्राम - पो-बारुन्द्राजि.-जोधपुर.
- १७३ „ वखताभाई जीभाई देवका; वतन : बेला. कृति : वखतेश
 वाणी, शामलामाला.
- १७४ „ विजयकरण महेड़; वतन : पाटणा, कृति : विजय वाणी.
 स्वस्तिक सोसायटी, बोटाद, जि. भावनगर.
- १७५ „ शिवदानजी प्रभुदानजी बोक्षा; मुळी, - प्रस्ताविक कव्यो-
- १७६ „ शामलदानजी - इतिहास मेंदपाट.
- १७७ „ श्यामलदासजी दधिवाडिया; जन्म : वि. १८९३ निर्वाण
 वि. १९५१ वतन : ढोकलिया कृति : बीर विनोद.
- १७८ „ शंकरदानजी जेठीभाई देथा, जन्म : वि. १९४८ अषाड़ी
 बीज; निर्वाण : १३-१०-१९७२ लींबडी कृति : कीर्ति

वाटिका, स्मरणांजलि, काव्य उपहार; सुकाव्य संजीवनी,
प्रभानाथ, काव्य कुसुमांजलि.

१७९ श्री शंकरदानजी रोहडिया-उद्घव संदेश, धर्मसेद, मित्रसेद,
धोलनेा इतिहास.

१८० „ शंभुदानजी रत्नः : जन्म ; वि. १९६६ रायधणपुर
कृति : राष्ट्र ध्वज वंदना, कच्छ दर्शन.

श्री शंभुदानजी वृजभाषाना अभ्यासी छे उपरांत विश्वनी
अनन्य पवी कविओ माटेनी भुजनी वृजभाषा पाठशाळाना
द्वे तेओ अंतिम अवशेषरूप छे. तेमणे साहित्य संस्कारमां
यत्किञ्चित फालो आपीने कच्छना गद्य-पद्य डीगळ अने
पिंगळ साहित्यने समृद्ध कयुँ छे अने कच्छनुँ गौरव
वधायुँ छे. कच्छना लोक साहित्यने पुस्तक देह आपनार
केटलाक महानुभावोप तेमनी पासेथी घणुँ घणुँ मेळव्युँ
छे. आशापुराना मंदिर पासे, भुज. (कच्छ)

१८१ „ डो. शक्तिदानजी कविया, जोधपुर कृति : सोढायण,
मयाराम दरजीनी वात, बटाउ भूल मत बीरा
पावटा पोलो २ - जोधपुर.

१८२ „ साँयाजी स्वामीदासजी झुला; जन्म वि. १६३२ लीलाढा
निवाण : वि. १७०३ मथुरा -नागदमण, अंगदबृष्टि,
रुक्षमणीहरण, राधानिसाणी,

१८३ „ सूर्यमलजी मिसण; जन्म : वि. १८७२ निवाण : वि. १९२५
हरणांवृंदी. - वंशभास्कर, छंदो मयुख, वीर सप्तशती,
वीर सतसई, बलवंतविलास, रामरजाट, सतीरासा
धातु रूपावली, स्फुट काव्या.

१८४ „ स्वरुपदासजी जन्म : वि. १८१८ बडली; निवाण : वि.
१९२४ ठेकाणा बेडली.

कृति : पांडव यशोन्दु चंद्रिका, वृत्तिबोध, हृदयनजनांजन,
वर्णाथ मंजरी, पालंड खंडन, मूर्खाकृश, चिजड बोध

पत्रिका, वष्ट्रांत दीपिका, सुक्ष्मोपदेश, तर्क प्रबंध,
साधारणोपदेश, अविवेक पञ्चति.

- १८५ श्री सत्यदेव आदा-चारण इन दी हिस्ट्री आफ वेस्टर्न ईन्डिया
 १८६ „ सुजाजी विठु-राव जैतसीरो छंद.
 १८७ „ सवदास मावल; मात्रावड चंद्रहासनी वार्ता.
 १८८ „ सिवदास गांडण-अचलदास खीचीरी वचनिका.
 १८९ „ सुजौ नागराजोत विठु-राव जैतसीरो पाघडी छंद,
 १९० डॉ. सीतारामजी करणीदानजी लाळस; जन्म : सं १९६५
 आसोज सुदी अकादशी, सरवडी; वतन : नैरवा.
 कृति : राजस्थानी शब्दकोश भाग १ थी ९, राजस्थानी
 व्याकरण, आई माताका इतिहास.

आप अपने नानाजी श्रीयुत शार्दूलदानजी बोगसा,
 जो कि राजस्थानी के प्रसिद्ध विद्वान थे, से प्रभावित
 होकर, साहित्यिक क्षेत्र में उतरे। प्रारंभिक जीवन में
 अध्यापन कार्य किया। सन् १९३० में 'विडद शिणगार'
 पुस्तक का सम्पादन किया। सन् १९३२ से राजस्थानी
 के बृहत पब्लिक वैज्ञानिक शब्दकोश के महत् कार्य में
 जुट गये। इस शब्दकोष की कुल ९ जिल्दें प्रकाशित
 हो चुकी हैं। जिस में ६१३६ पृष्ठों में लगभग दो
 लाख राजस्थानी शब्दों का अर्थ व्युत्पत्ति साहित्यिक
 प्रयोगों के उदाहरण, उनका ऐतिहासिक विकास
 आदि प्रस्तुत किया गया है। आपने ही सर्वप्रथम
 राजस्थानी भाषा का व्याकरण लिखा। आपकी अमूल्य
 साहित्यिक सेवाओं के परिणाम स्वरूप ही आपको
 सन् १९७३ में राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
 द्वारा 'मनीषी' उपाधि सन् १९७६ में जोधपुर विश्व
 विद्यालय द्वारा 'डॉ. लिट' (मानद) उपाधि पब्लि-

सन् १९७७ में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

मकान संख्या २४१, सौकटर-A, शास्त्रीनगर, जोधपुर.

- १९१ डो. सोहनदान शक्तिदानजी चारण, जन्म १५-१-१९४६
मथाणिया. कृति : राजस्थानी लोक साहित्यका सोद्धांतिक विवेचन.

देवी विषयक साहित्य में विशेष रुचि। देवीयाण, हरिरस पवं करणी चरित्र पुस्तकों का संपादक। चारण-साहित्य पवं चारण वाणीका संपादक। सामाजिक कुरीतीयों के उभूलतार्थ कृत संकल्प। आडम्बर हीन धार्मिक जीवन में विश्वास। हिन्दी विभाग जोधपुर विश्व विद्यालय में प्राद्यापक।

'शक्तिसदन' दामोदर कालेनी, राम मोहल्ला, जोधपुर.

- १९२ श्री सज्जनशी सूरू-सुरू-चारण कुलना नवीरा. पूर्वजीवा विद्याव्यासंग, खानदानी, ज्ञान संस्कार अने प्रतिभाना गौरवशाली वारसदार.

पटेल चैक, बावावाळा परा जेतपुर जि.-राजकोट.

- १९३ „ सावलदानजी आसिया-महाभारत रूपक

- १९४ श्रीमती समानबाई रोहडिया, - मत्स्यकी मीराँ. भक्तमती समानबाई और उनका काव्य.

- १९५ श्री हरदानभाई पिंगलशीभाई नरेला; भावनगर. कृति-श्रेयश, काव्यगृंजन; शक्तिदेवा शतक, विज्ञेयकांत वल्लरी, गोहेल राजमुगट, वीरभद्र विद्या विलास.

- १९६ „ हरदानजी बेचरजी देथा; वस्तडी -हरदान प्रबोध प्रकाश

- १९७ „ हेतुदानजी मुरारिदानजी उज्ज्वल, जन्म : वि. १९५६ उज्ज्वल - 'मेरे विश्वास और मेरे विचार'.

'उज्ज्वल निवास' पावटा बी रोड, जोधपुर.

- १९८ श्री हरसुरभाई ना. रोहडिया, भेंसाण; आई शेणबाई,
भाई नागबाई; सं-हरिरस. मु. पो. भेंसाण जि. जूनागढ
- १९९ „ हरदासजी मिसण - भृगीपुराण, जाँणवर पुराण.
- २०० „ हरदास चारण - माणेक रासो.
- २०१ „ हरदास राणसुर कानीया; सुत्रेज - चारणबाणी १,२
- २०२ „ हिंगोलदान कविया - मेहाई महिमा.
- २०३ अ हजूरदानजी देवरासण-पालनपुर नवाबनी जकडी.
- २०४ „ हमीरजी गीरधरजी रत्नू; जन्म : वि. १७१८
कृति : हरिजसनाम माळा, हरिजस पिंगल. लखपत पिंगल
गीत पिंगल, रावश्री देशलजी वचनिका, यदुवंश
वंशावली, वृहमंड वर्णन, ज्योतिष जडाव, भागवनदर्पण,
गुण पिंगल प्रकाश, चितहिल्लोळ.
- २०५ „ हरिदानजी शंकरदानजी देथा; कृति : तंत्री श्री चरणबंधु.
शिवशक्तिकृपा सदन, रामनाथ रोड, लौंबडी.
- २०६ „ हिंगोलदान नरेला -
“लेखनमां कहेणीमां अने कवितामां परंपरानुं भूमिजात
कोशल. साहित्यना गळथूथीना सौजन्यशील संस्कार.
वाणी वेधक पण वगाडे नहि पवी नर्ममर्मविनेदवाळी,
प्राचीन अने अर्चाचीनना संगमवाळी सात्त्विक प्रकृतिनी
भावभीनी.” -उमिनवरचना.
मु. आंगणका, पो-ओथा, वाया-भाद्रोळ, ता.-महुबा.
- २०७ „ हेम सामोर; जागलीया-गुण भाषा चित्र ग्रन्थ.

नोंध : साहित्यकारोनी विशेष नामावली ‘चारणनी डीरेकटरी’मां
आपवामां आवेली छे.

१२८ विद्वानोनां मंतव्यो :-

‘चारणी साहित्यना विद्वानेआ के लोक साहित्यना मंदिरनी उन्नत पताकाओं छे. चारणो चिरकालधी कोईनी शेषमां तणाया सिवाय युगधर्मने अनुरूप साहित्य सर्जन करतां आव्यां छे. ज्यारे ज्यारे देशने जरुर पडी त्यारे त्यारे नीडरपणे तेमणे साहित्यना सर्जन द्वारा राष्ट्रने सेवा आपी देशना इतिहासनी रखेवाळी करी छे.’

-श्री डोलरराय मांकड.

“चारण कविओ अटका, सिद्धांतवादी, स्पष्टवक्ता अने निडर रह्यां छे.” -इतिहासविद् श्री शंभुप्रसादभाई देशाई.

“Charans are born poets; Poetry is their sacred inheritance. They have the poet in their souls and their hearts are green haunts of the poetic music.” -Kedarnath Tewari.

“इस देशके क्षत्रिय राज्यों के इतिहास में राजवंश और चारण जाति का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। बहुधा चारण ही राजकवि भी होते थे। कई बार जब राष्ट्र अथवा समाज पर आक्रमण करने वाली शक्तियों का सामना करने को देश के सामन्त अपने प्राणों को बलिदान करने के लिय रण में जाते थे तब इन ही कवियों के उत्साही वाक्य उनको कर्तव्य पथ पर डटे रहने में उत्साह व बल देते थे। बलिक कई अवसरों पर चारण वीर स्वयं भी रणक्षेत्र में उतर कर युद्ध करते थे। इस कारण चारण जाति हमारे लिये अद्वेय है।”

-मेहनसिंह महेता. (भूमिका प्रतापचरित्र)

“कच्छ, गुजरात अने सौराष्ट्रना चारण कुटुंबो पासे डिगळी साहित्यनो जे खजानो छे तेबो भाग्ये ज बीजां कुटुंबोमां जोवा मले. आमानो केटलोक साहित्यखजानो हस्तप्रतोमां छे,

केटलोक जिहाये जोवा मळे छे जिहाये जे साहित्य छे, तेमां लोककथा, अनुश्रुतिओ अने अर्ध-ऐतिहासिक कथाओ पण छे. आबुं कंठस्थ साहित्य सत्वरे टेप-रेकोर्ड थबुं जोईप.

आदा चारण विद्वानें पासे क्षण मात्र बेसीप अने तेओना चित्तमांधी मोजनां तोरा छूटे तो लोककथा संभलावीने तृप्तिनो ओडकार लावी दे.”

‘डिगळी भाषा राजदरबारमां थतां काव्य विनेादनी भाषा हती, तेथी राजदरबार साथे संकल्पयेला कविजनो ते भाषामां रचना करे ते स्वाभाविक छे. गुजरात, सौराष्ट्रना तेमज राजस्थानना चारण कविओनी काव्यभाषा डिगळी हती जे वंशपरंपरागत अने गुरुपरंपरागत उतरी आवती हती. आधी दरेक चारण कविनी काव्यभाषा विशेषतः डिगळी ज रहेवानी पछी कवि राजस्थाननो होय, कच्छनो होय, गुजरातनो होय के सौराष्ट्रनो होय. उ. त. श्री हमीरजी रतनूं कच्छना वतनी हता पण तेमनी काव्यबानी डिगळी हती, ख. लांगीदास महेड सौराष्ट्रना वतनी हता अने गोदड महेड गुजरातना हता छतां आ वधा चारण कविओप काव्यरचनाओ तो डिगळीमां ज करी छे.”

-श्री पुष्कर चांदरबाकर (अंगदविधि).

‘चारण कवि, देवीभक्तो, सरस्वतीनी जेना उपर कृपा वरसती होय पवा सभाजनेने मंत्रमुग्ध करनार समयसंजोग आवे तो तरत शीघ्र कविता करी ललकारनार कविमहाशयो ते आ !’

-चांद्रवदन महेता.

“अनादि कालसे चारण भारतीके भक्त रहे हैं। उनको भारतीपुत्रोंका, सरस्वतीपुत्रोंका उपनाम दिया गया है। क्योंकि विद्योपासना ही उनका प्रधान व्यवसाय था और है। इतिहास गवाही देता है कि चारण हमेंशा संस्कृतिका रक्षक, सत्यका

पूजारी सच्चाईका भक्त था और आज भी वह इन कार्यों में
यथाशक्ति हाथ लौटाता रहता है। युगोंसे सत्याग्रही उसका
प्रधानशास्त्र पाया गया है। संस्कृतिरक्षामें, नेकटेक निभाने में,
अनीति अन्यायका मुकाबिला करनेमें उसने अपने सर्वेस्वको भी
खो देना पसंद किया है; आपत्तियाँ ज्ञेशी हैं, संकट बरदास्त
किये हैं, विविध प्रकार की कुरावानियाँ की हैं। भू भारतीके
तथा हिंदुधर्मके उसने जो कुछ किया वह उसकी आज़ादीकी
भावना को व्यक्त करता है। चारणको आज़ादी कितनी प्रिय
है वह तो इतिहाससे ही पूछी जाय।

उसकी प्रिय सहचरी कविता है। वह स्वभावसे, वंश
परंपरासे कवि है। वीरपूजा, स्वदेशमक्ति, प्रभुमक्ति, स्वामि-
मक्ति, सत्यसुंदरकी प्रतिष्ठाही उसकी कविता के प्रधान विषय
रहे हैं। इस लिये आज़ादी प्राप्तिके इस मंगल समयपर उसका
हृदय कवितासे परिप्लावित हो जाय। उसका मनमयूर नाच उठे
तो कोई आश्वर्यकी बात नहीं।”

-एक स्वातंत्र्यप्रेमी (राष्ट्रद्वज पचीशी)

‘चारणोने महाभारत, रामायण, पुराण, लोकिक कथाओं
आख्यानों अने पुरुषार्थप्रधान वृत्तांतों वारसामां मलेल होय छे.
तेथी स्वाभाविक रीते चारणोनी कविता-कला ए भूतकाळना
वारसानी आमपास दिकसे छे। वहु विरल चारण हशे, जे
भूतकाळ उपरांत वर्तमाननी नाडीने पण जाणी ले।’

-‘पंडितवय’ सुखलालजी.



कलमना कसवीओ



राजकवि श्री मावदानजी रत्न
(कालावड)



राजकवि श्री शंभुदानजी रत्न
(भुज)



श्री सुखभाई पालिया
(जांवुडा)

[14] मातृशक्तिनुं महिमागान

१४.१ चरजः चरजा

१४.२ निसांणी.

१४.३ जगदवाना पवाडा अने भाव.

१४.४ छद्मामां शक्तिमहिमा.

१४.५ सीगाऊ अने चडाऊ काव्यो.

१४.६ माताजीनी आरण्युं अने जीलणिया.

१४.७ दुहामां शक्ति दर्शन.

१४.८ विद्वानेनां मंतव्यो.

शक्तिनां महिमागाननी सरवाणी वेदकाळथी शरु यई होई
तेम ज्ञाय छे वेदो, महाकाव्यो अने पुराणोमां शक्तिनी आराधन
किर्तन जोवा मले छे. महाकवि श्री व्यासजीप अने अद्वैतवादी
प्रखर वेदांती शंकराचार्यजीप पण शक्तिनो महिमा गायो छे.
भक्तकवि श्री दुलाभाई कागनी मान्यता सुजब “अद्वा, चिंतन
अने सुरुचिमांथी महिमागाननी त्रिवेणी प्रगटे छे. महिमागान
प तो अद्वा अने भक्तिनुं अमृतफल छे.”

चारण शक्तिपुत्र छे, सरस्वतीपुत्र छे, अटले थेमनां साहित्य
सर्जनमां शक्ति महात्म्य अने महिमागाननी रचनाओ विपुल
प्रमाणमां जोवा मले छे. चारणी साहित्यमां शक्ति काव्य
सर्जननो प्रारंभकाल १२ मी शताब्दी पहेलानो समय मानवामां
आवे छे. शक्ति काव्योनुं सर्जन थतुं गयुं तेम जनसमाजमां
लेकमुखे सचवातुं रहुं.

चारणी साहित्यमां शक्ति काव्योनी परंपरामां चारणकुलमां
अवतरेली योगमायाओनां जीवन वृत्तांत, योगमायानुं स्वरूपवर्णन,

योगमायानी महत्ता, चारणकुलमां अवतरित योगमायाओनी नामावली, संख्या तेमनुं निवासस्थान अने अंते प योगमायाओमां सचिच्चदानंदमयी पराशक्तिना दर्शन करे छे एज आ महिमागाननी विशिष्टता छे. प शक्ति काव्योना स्वरुपोमां पण अनेकविधि विविधताना दर्शन थाय छे

चारण कविओप शक्ति काव्यो विशेषतः चरज, पवाडा, दुहा, छंद, गीत, नीसणी, रोमकंध, कुंडलिया, चंद्रायणा, रासा, इन्द्रव आदि काव्य-स्वरूपमां सर्जन थयेलुं जोवा मझे छे. आ काव्य स्वरूपमां सर्जन थयेलुं जोवा मझे छे. आ काव्य स्वरूपनो संक्षेपमां उदाहरण सहित परिचय आ प्रकरणमां आपवामां आव्यो छे.

१४.१ चरज : चरजा :-

चरज-चरजा प शक्ति-काव्य छे. विद्वानेए चरजनी परिभाषा नीचे प्रमाणे व्यक्त करी छे :

‘देवी के कार्यों के चमत्कार का वर्णन करते हुये स्तुति करनेको चरजा कहते हैं जो पक प्रकारके भजन होते हैं।’

-श्री किशोरसिंहजी वार्द्धस्पत्य (करनी चरित्र)

“चरजा देवीकी स्तुति जो लयके साथ गाकर की जाति है।”

-श्री सीताराम लालस (राजस्थानी शब्दकोस)

“यह नया काव्य-रूप शनित-काव्यकी राजस्थानी साहित्य को विशिष्ट देन हैं। चिरजा शब्द की व्युत्पत्ति पर जब विचार करते हैं तो यह शब्द संस्कृत के ‘न्याय’ शब्द से बना प्रतीत होता है। देवी तक पहुंचने अर्थात् देवी से तादात्म्य स्थापित करने के लिप यह काव्य-रूप माध्यम का करते हैं। चिरजाएं पक प्रकार से देवी की पूजा या आराधना के पद या गीत (डिगल गीत नहीं) या मंत्र हैं। इनकी एक और विशेषता यह है कि ये देवी के रत्नगो में महिलाओं द्वारा लोक-गीतों की तरह गाई जाती हैं।” -श्री भवरसिंह सामौर (मरु भारती)

"एक प पण जमाने हतो, ज्यारे सौ चारणोने त्यां जगदंबानुं पूजन थतुं, एटलुं ज नहि परंतु ते अंगेनी एक जातनी आचार परिपाटी चालु रहेती सौने त्यां जगदंबानुं स्थापन रहेतुं लोबडी अने खेळीयो रहेतां थेनी पाढ़ल एक विचारधारा हती. सादाई अने सरलतानी सात्त्विकता अने स्वभाविकतानी सच्चाई अने शुद्धिनी प धारामां चटकीलुं, रंगीलापणुं नहि, पण लोबडी अने खेळीयाना रंगोनुं गृढापणुं हतुं. जीवनमां मोज करतां, तपना माधुर्यने अग्र स्थान हतुं. कपडांनी जेम चारण जीवननां संगीतमां पण एक गृही रम्यता हती. थेनी आराधना रागमां सात्त्विक तेजनो एक प्रवल रणकार हतो. ऐ वाराधनो राग, प चरजुं अने सोळाना ढाल चारणना पोतानाज-निजनाज हता हजारो वर्षनी परंपराना रंगमां घूंठेला प मस्त पहाडी सूरोने चारण जातिप आज लगी जालवी राख्या छे. सौराष्ट्रमां नवरात्रीमां दरेक चारणने घेर चरज गवाती होय छे.

चरजो अर्थ देहे साधारण रीते आपणामां थयेल जगदंबाओनां वेण-वखाण जेवी होय छे. पमां एमनां जीवनना मुख्य मुख्य प्रसंगोने वर्णवी, भगवतिनुं आराधन करवामां आव्युं होय छे. चरजोनी भाषा सादी अने सीधी सचोट अने वेघक होय छे. शब्दाडंबर के अलंकारनी पाढ़ल चरजोमां क्यांय देआ देआडी होती नथी. प भाषा सीधी. हृदय पर पकड जमावे छे. बुद्धि त्यां शांत थई जाय छे. अने थद्धाना घेरा गृढा वातावरणमां सर्वेस्व समर्पण करे छे. पमां जेनी आराधना करवामां आवी होय छे. तेनी पासे घणो अनुनय विनय होतो। नथी. पतां घणां स्तुति वखाण पण होता नथी. पोतानां ईछ देव जाणे सन्मुख विराजतां होय अने "मुखा मुख सेव करोवाय मुज"ने न्याये मुखा मुख स्पष्ट बात करवामां आवे छे. चरज थेटले सीधी असर करनारी वाणी.

चरजोना ढाळो ! मस्तीधी वेघूर. पमां जराय उतावळ नहि,
जराय आछकलाई नहि, तेजस्वी अने बुल्लंद छतां शांत गंभीर
अने वेरा. बीजां गीत अटले लांचे पहेंचे नहि, जेटला उंडा
अने पृथ्वीने वीटी बले वेटला लांबा प ढाळो.

प ढाळोमांधी केटलाक क्रमे क्रमे नाश पण पामी गया
होय एवा संभव छे. सौराष्ट्रमां प परंपरा कंईक अंशे जळवाणी
छे. बीजे राजस्थान, गुजरात, कच्छमां पण चरखो गवाय छे.
पण तेमां ढाळोमां कंईक अदला बदला संजोग स्थिती प्रमाणे
थई गया छे. सौराष्ट्रनी वेरप, गंभीरता बीजे क्यांय मलती नथी.

चरजोनां ढाळोने गाई संभळावीने समजावी शकाय.
लेखणधी लखीने न समजावी शकाय प सौ समजी शके तेवी
बावत छे. छतां पण अेक जुनी परंपरा. आपजी पोतानीज कहीप
तेवी पक नीजी परंपरा.”

-श्री पिंगलशीभाई पायक (चारण-'५५)

आई नागवाई (मोणीया जूनागढ पासे) नी चरज.

माता मोणीआ...वाळी ! देवी यात्रा...णा वाळी !

हे नागल मा...! तुं छोरे देव...ने जाळी...माता-टेक
मांडळिक रा... जाने...जूनो...मेला...व्यो (२)

राज उथा...प्यु...र...ढवा...णी...माता (१)

असुर थया तेने ते जूर...उथा...प्या (३)

१४-२ नीसांणी :-

योगमायाना पूजन अर्चन सम्बन्धी अनेक नीसांणी जोवा
मले छे. राजस्थान, गुजरात अने सौराष्ट्रना चांरण कविओप
निसाणी काव्य स्वरूपमां शक्ति महिमा विशेष प्रमाणमां गायो
होय तेम जणाय छे.

सौराष्ट्रना जमरा गामना कविराज जेठाभाई मुंजाभाई
गृहायच रचित पेरवंदरना महाराणा सुरताणजीना 'गुणकथन'मां
मंगलाचरणमां आदि शक्ति स्तुति निसांणी छंदमां प्रस्तुत करी छे.

आदि शक्ति पक तुं सुमरां सुरराया
मनसा हंदा बीज सुं ब्राह्मांड निपाया
त्रिगुण माया आप तूं तुलजा त्रिपुराया
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर रूप त्रण रचाया-(१)
त्रणि नारी त्रण पुरूष (तुं) वरवी वधवाया
खग पाताल मृतलोग नें पक ही महमाया
तूंही तूंही खव तूंही भूत भविष्य वर्ताया
जगजनेता जोगणी जगरूप जमाया (२).

१४-३ जगद्वाना पवाडा अने भाव :-

शक्ति महिमागानमां पवाडा काव्य स्वरूप चारणी साहित्यमां
विशेष प्रमाणमां जावा मळतुं नथी. राजस्थानना केटलाक चारण
कविओप जगद्वाना पवाडा रच्यां होवानुं कहेवाय छे. सौराष्ट्र-
गुजरातमां चारणी साहित्यमां आ काव्य स्वरूप प्राप्य नथी.
तेवी केटलाक विद्रानोनी मान्यता छे. 'चारण' मासिकना
नवेश्वर १९७३ ना अंकमां आईओना पवाडा आपवामां आवेल
छे. उदाहरण तरीके आईश्री आवडजी पवाडा जोईप.

(गीत चीत इलेल कर्ता श्री नरुजी अलुजी कविया)

उमारूप अनुप आवनी, आवड लखि आदि
वरण चारण जनमी बाढी, आप कीर्ति अनादि;
तो अन्नादिजी अन्नादि, अंबा अवतर्या अन्नादि-१
धन्य जैसलमेर धरती ग्राम चालक गण्य,
साहेबा लख तणो सूरज मामडा कवि मन्य,
तो धन्य जी हो धन्य, धारी देह उण धर धन्य-२

भाव-

भाव प मातुशक्तिना महिमागानना गीतनें। एक प्रकार छे.
जे रीते चारण ज्ञातिनी रुदीओ चरज गाय छे। तेज रीते पुरुषो
भाव गाय छे। भाव प लांबा लहेकाथी माढना ढाळने मळतुं
गीत छे। भाव गीतो अनेकविध ढाळेमां चारण कविओप रचेला
छे। आ गीतोमां दैवीनो ईतिहास चमत्कारो, दैवीशक्तिनुं
सामर्थ्य वर्गेरेनुं वर्णन जोवा मझे छे। सौराष्ट्रमां मातुशक्तिनो
महिमा वर्णवता भावगीतोनुं सविशेष प्रमाणमां सर्जन थयुं छे।

नेजाळी उजवे नेरतां
सेनल उजवे नेरतां
माडी तारे नेरतां उजववानां नीम,
माडी तुं बूढी बरदाळी बाले वेश;
आदेश आदेश...नेजाळी

* * * *

माडी ! हुं पटलुं मागुं, पाये तोये विपळी लागुं (टेक)
धाम धरासर ओरडा तारा; ठाकरावाळां ठाम; (२)
प...हेडे हाल्या जाय वस्तीवाळां: चारणो केरा गाम (१)

* * * *

माडी तूं आदि ने अनादि देवी एक छो,
माडी तारी मूढीमां समाणो सघळो संसार रे।
बाशापुरा मा उतारूं सईवध तारी आरती।
माडी तूं बेठी छे धरतीनो करीने चाकळो,
माडी पमां वनरा वेल्युंने मेरुना बुटा रे....

माडी तूं लीला कुदुंबनी रखवाळी छे जोगमाया जागती रे लोल
माडी तूने भजतां भेरियावाळी तूं आई भेरे बावती रे लोल
माडी तूने समये संकट नासे ने भाग्यनी भोगळ खूले रे लोल
माडी एने आंगणे रिद्धि ने सिद्धि के पारणे पूतर झूले रे लोल

આઈ જવર જોરાળી મદ્દાવાળી શક્તિ સોનલ માત
સત્યનું સિચન નીતિ પાલન, ઉજનીયા આચાર
વેદ ઉચ્ચારણ, ઋષિવર ચારણ, પામે નવ તો પાર.

૧૪-૪ છંદોમાં શક્તિ મહિમા :-

ચારણી સાહિત્યમાં શક્તિ-કાવ્યોનું સર્જન વિશેષ કરીને
દોઢા, છંદોનું રહ્યું છે. રાજસ્થાન અને સોરાષ્ટ્ર-ગુજરાતમાં થયેલી
યોગમાયાઓના દોઢા, છંદો વિષુલ પ્રમાણમાં ઉપલબ્ધ છે. દરેક
ચારણ કવિઓથે કોઈ ને કોઈ યોગમાયાઓનું પૂજન-અર્ચન દોઢા,
છંદોમાં કરેલું મળી આવે છે. આથી ચારણી સાહિત્યની
ચિવિધતામાં શક્તિ કાવ્યની પરંપરામાં અનેખું યોગદાન રહેલું
છે પ્રાચીન કવિઓની કેટલીક કૃતિઓ અહિંયા પ્રસ્તુત કરેલ
છે. તેમાં શાબ્દાડમ્બર, નાદવૈભવ દ્વારા ચારણી સાહિત્યની
અસ્મિતાનો પરિચય થાય છે.

- સરસ્વતી-સ્તુતિ -

બીન-લીન વરદાયની ! વાનિ વરન વિસ્તાર,
દીન માન સરસાયની, જન સરનો વિધિ તાર.

- સવૈયા -

વેદ પુરાન બતાવન પાવન, માવન બીન-બજાવનહારી !
પત્ર મરાલ મૃણાલ ચખી, સુ દયાલ દિયાલ વિચ્ચચછન ભારી
વ્યાપક વિશ્વ જની જશ જાપક, કાપક તાપ રસા રિદ્વારી,
શંકર સુરસુકે વરદાયની, ક્રીજે કૃપા અતિ, બાલકુમારી !

- છદ જાત ભુજંગ પ્રયાત -

ॐકાર પ્રેમ પ્રભા નાદ વિદા, જ્યો માતુરા ચાતુરા મેદ છંદા;
ગિરા જ્ઞાન ગોતીત ગૂડ ગનાની, જ્યો પાર વિસ્તારતા વેદ વાની-૧
મહા મેદુની સોહની મોહ માયા, જ્યો જંત્રની મંત્ર તંત્ર ઉપાયા;
ગુનાકાર જ્યોતિ નિરાકાર ગતિ, જ્યો બોધના શોધના સારસત્તી-૨

श्री आदिशक्ति स्तुति : (गीत चित विलास निसांणी)

जगरायाजी जगराया काया कनक कहाया,
तो किनिया विरदाया वृद्धिवाया माया अपाया महामाया.

- छंद सारसी -

महामूल मनसा बीज मंत्रां, शब्द ओहम् (ॐ) संभवरि,
ते शब्द हूं तां पचन तासें, तेज ज्योति विस्तरी,
इण ज्योति हूं तां हुआ ईहुज, ब्रह्म क्रम ध्रम अवतरी;
कुमारी काया जगजाया आदिमाया, ईश्वरीजी आदिमाया ईश्वरी.

मनसादेवी स्तुति : (गीत छंद निसाणी)

मनसा देवी माहरा, शिव सगत

समाणा धरण पयाले हथथडा, अधराण अपाणा,
त्रिभुवन ब्रह्म ड अेकविश, मंडे
मंडाणा मेर दिगपाळां परठिया जमी अशमाणा.

श्री करणीजी स्तुति (छंद त्रिभंगी)

महमा महमाई ! गुणी मुख गाई, सब जुगवाही दरशाई,
तरं तर प्रभुताई, वदत वडाई, मान दढाई, मेहाई,
राजेश्वर राई ! कुळ अधिकाई, निगम सुहाई, अधहरनी !
जुग जय जुगजरनी ! विध विध बरनी ! कलि भयहरनी !
तुं करनी, मा ! कलिभय हरनी ! तुं करनी.

श्री हींगलाज देवीनी स्तुति (छंद हरिगीत)

प्रणामामि मात् प्रेम मुरती, पावेती परमेश्वरी,
शांति क्षमामय कृपासागरि, सुखप्रदा सरवेश्वरी,
सेवक शिशुके दुरित दारिद्र, विघ्न देाष विदारणी;
आदियाशक्ती नमो अंबा, हिंगला अघहारणी.

देवियाण (छंद अडल)

करता हरता श्रीं हींकारी,

काली कालरयण कोमारी;

शशि शेखरा सिधेश्वर नारी,
जग नीमवण जयो जडधारी.

श्री रवेची-चाळकनेची-चामुँडानी स्तुति (छंद त्रिभंगी)

बेद वंचाणी, पढे पुराणी, क्रोड विनाणी, कतियाळी,
के काम कमाणी, अकह कहाणी, जय सुरराणी, जगजाणी,
भाखे ब्रह्माणी, तुं मन भाणी, अविरल वाणी ऊदंडा,
रवराय रवेची, मुद्माडेची, चाळकनेची चामुँडा.

श्री मोगल माताजीनी स्तुति (छंद त्रिभंगी)

परतापे पूरी निरमल नूरी, सतवत सूरी, सरसाई,
दारिद कर दूरी, क्रोध करूरी, बळ भरपूरी, तुं बाई,
भंजण दुःख भूरी, गंज गरूरी, रखण सवूरी, रढियाळी;
ओखाधरवाळी, देव दाढाळी; जय मोगल मा, मछराळी.

श्री खोडीयार मानी स्तुति (छंद भाखडी)

थानक ठाहरे जी के दीपत झंगरे
सुंदर सरवरे जी के धूपद गळधरे.

गळधरे धूपद वहे गंगा, नाय अंगा अघ नसे,
कइ अंध पंगा करे ओळग, हरे दुःख मुखथी हसे,
कामळी काळी त्रीशूळाळी सिघ स्वारी शोभाणी,
खोडीयार ख्याता, अन्नदाता, जगतमाता जोगणी.

श्री वरुवडी मानी स्तुति.

शवदेव बे'नड, आप समवड, चोज राखण वड चडी,
त्रासळा कीधां पान त्रोडी, घणुं समसर तण घडी.
तोय कळा वरवड ! ध्रपे कटकळ किया तृपता कूलडी,
नत्य वळां नवळां दियण नरही वळां पूरण वरूवडी.

आई सोनवाई मा नी स्तुति (छंद सारसी)

कर धरा धरसो, फेर दरसो असो परचो ईश्वरी,
दैतान डरसो, एक फरसो, नाव तरसो, वपु धरी,
अणकलां भजबल दैत हो, अणसमे तूं धर आकडे.
सोनल समाढा व्योम बाढा खपर गाढा खडखडे,

आई कागवाई मा नी स्तुति (छंद दुमिला)

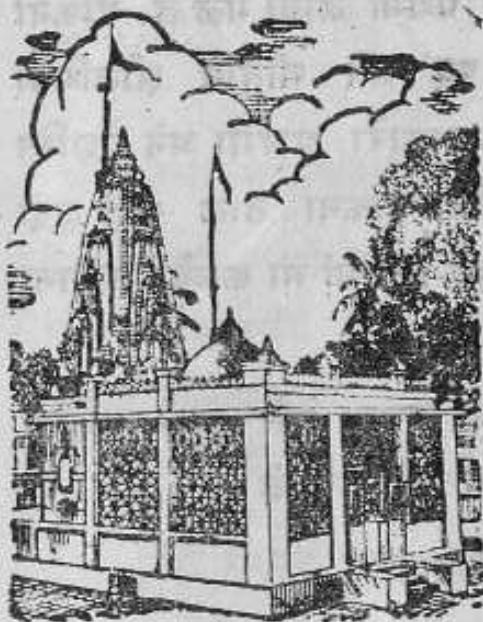
जगिया जण दिन्न जोराळ महाभड, जुथ्थ अतोहल राखसरा,
धरणीधर पामत त्रास डगां मग, धृजत थाक अपार धरा,
अकलात पुरंदर, इंदर भूधर दिग गयंदको वृंद डयी;
कडकयो ब्रह्मांड धुंखार धरी कर, कोप तें कागल मात कयो.

आई नागवाई मा नी स्तुति (छंद सारसी)

मनखोट महिपत मेल माजा अम घरां पर आवियो,
रजबट तणी नहि रीत राजा लाव लङ्कर लावियो,
हुं भीन भा तुं पुण्य पाजा धरण कां अचली धरी ?
नकलंक अशरण अरण 'नागई' हरण दुःख हरजोगरी.

- मा भूवनेश्वरीनी स्तुति -

गोंडल जेबुं मनेहर गाम छे,
भूवनेश्वरी मातनुं मंगलमय धाम छे,
नवेखांड झळकतूं पीठनुं नाम छे,
आचायं पमना श्री घनश्याम छे.
आध्यात्मिक प्रवृत्ति अनेकविध थाय छे,
सनातन धर्मनुं मूल समजाय छे,
पांतीथे भूख्यांने अन्न पिरसाय छे,
दर्दीओ तणी त्यां दवा पण थाय छे.



यात्रालु श्रद्धाधी दर्शने आवता,
गुण बहु मातना प्रेमधी गावता,
आश्टी श्रद्धाधी उमंगे उतारता,
जीवनने ए वत्त धन्य बनावता.

भरेंसो राखीने भक्तिमां भले छे,
सन्मुख आवीने चरणमां ढले छे,
मन घाँछितां सुखडां मले छे,
त्रिविध तापनी वेदना ठले छे.

भूवनेश्वरी पीठ (गोंडल)

१४.५ सीगाऊ अने चाडाऊ काव्यो :-

“राजस्थानीका चारण शक्ति-काव्य मूलतः दो प्रकार का हैं। एक ‘सीगाऊ’ जिसमें सामान्यतया देवी के चरित्रों का वर्णन प्रशंसात्मक रूप में रहता हैं। दूसरा ‘चाडाऊ’ जिसमें देवी का प्राचीन चरित्रों का स्मरण दिलाकर उससे यह प्रार्थना की जाती हैं कि उसी प्रकार अब मेरी सहायता कर। ‘सीगाऊ’ काव्य का पाठ कभी भी किया जा सकता हैं परन्तु ‘चाडाऊ’ काव्य का पाठ धोर संकट के समय भी विशेष विधि से किया जा सकता हैं।

आत्म-बलिदान को सफल बनाने के लिए “चाडाऊ” काव्य की रचना कर देवी शक्ति को आहूत किया जाता था।

-डॉ. भौवरसिंह सामौर (मरु भारती)

१४.६ माताजीनी आरण्य अने जीलणीया :-

शक्ति पूजाने एक प्रकार माताजीनी धूण्यने नामे विख्यात छे. जेमां भूवानुं तेमज डाक नामना वाजींत्रनुं प्रभुत्व विशेष

होय छे. धूण्यनुं साहित्य गद्य अने पद्यमां जोवा मझे छे. डाकना ताल साथे गवाता देहाओने आरण्युं अने गीतोने झीलणिया कहे छे. आ काव्योमां माताजीना चमत्कारो. प्रसंगो अने प्रशस्ति वर्णवामां आवे छे. दरेक माताजीना डाकना ताल जुदां जुदां होय छे. ते प्रमाणेनौ ताल, लय अने गतिमां आ काव्यो गावाना होय छे.

श्री खोडीयार माताजीनो भूवा धूणवा बेसे त्यारे वागती डाकनो ताल विलंबित अने द्रृत गतिमां वागे छे

- आरण्युं (देहा) -

खोडल माडी जड खूबडी, तारा सतनो नावे पार,
वाढ्या घड संधाडिया, अयुपने कर्या अहवार.
आवड खोडलनी अमारे ओथ्य केनां हैयां आगळ करगरीप,
पांच सोनामोर हीरागर चंद्रबो. मानी ले मामडीयानी खोडीयार.

- झीलणियुं -

आवड तारो रोइसाले छे नेह रे,
तातणे वहे रे आवड खोडियार;
भै मेरखिया पोठीडो रे पलाण रे,
अमारे जाबुं ते मैडा वेंचवा.
साते बेने करिया रे परियाण रे,
वाळा नगरमां बायुं हालीयुं.

१४.७ देहामां शक्तिदर्शन :-

शील, स्वधर्म अने पवित्रतानी खातर हाड गाळी नाखनार महादेवीओनो शोक महिमा चारण कविओथे विशेषतः देहाओमां वर्णव्यो छे. दरेक योगमायाओना देहाओ चारण साहित्यमां प्राप्य छे.

उपजावनी खपावनी विश्वंभरी वडराय
जय हिंगोल जगपावनी, महादेवी महमाय.

अवरी अमरी अपशरी, शीकेतरी शक्ति,
 आशापुरी अगोचरी, माहेशरी महत्त.
 ओखा धरा उजालवा, जाहर चारण जात,
 घांधणिया देवसुर घर, मोगल जनमी मात.
 अन्न उपावण अवनिमां, मन रीसावण मात,
 घात मिटावण घट तणी, ते खोडियार प्रख्यात
 पावागढवाली प्रबळ, बड़ी देवि विख्यात,
 भगतांरा दुःख भंजणी, जय महाकाळी मात.
 ते दीआणुदेव, नरसै लीआणु नई.
 अहुं मात गांगेव, व्रत अजाचुं वरवडी.
 व्रत लीधुं वरुडी तणुं दन दन देवा दात;
 लेवाना हेवा नहि धन धन सोनल मात.

१४-८ विद्वानोनां मंतव्यो :-

“जहाँ भी किसी चारण कविने कुछ लिखा है तो उसने शक्ति का वंदन किया हैं. चारणों में आद्या शक्ति की अवतार स्वरूपा अनेक देवीयां भी मानी गई हैं, जिन्हे लोक-शब्दावली में ‘नौ-लाख लेवडियाल’ के नाम से अभिहित किया गया हैं। इनमें हिंगुलाज माताकी अवतार बावड माता करणी माता आदि उल्लेख्य हैं। इनमें से प्रत्येक पर अनेक स्तुति पद च गीत छंदादि लिखे गए हैं। ऐसी स्थिति में प्रवंध व मुक्तक रूप में बद्ध राजस्थानी के इस प्रभूत शक्तिपूजा विषयक साहित्य तथा तत्संबद्ध प्रवृत्तियों का विवेचन - विश्लेषण परं अध्ययन-मूल्यांकन किया जाना नितान्त आवश्यक हैं। इस दिशा में कोई शोधस्तरीय प्रयास अभी तक देखने में नहीं आया हैं।”

-डा. शंभुसिंह मनोहर

(चारण चरजाए और उनका अध्ययन प्रस्तावना)

“जहाँ पक और भक्त-कवियोंने इसे भगवान की शक्ति, शील पवं सौन्दर्ययुक्त महिमासे मंडित किया है वहाँ उनकी वाणी ने शक्ति की अद्वितीय शक्ति का स्तवन-बन्दन कर विविध काव्य रूपों का सज्जन किया है। चारण साहित्य में चरजा काव्य भी शक्ति पूजा साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।”

-श्री गुलाबदान झीवा

(चारण चरजाएँ और उनका अध्ययन)

“राजस्थानी साहित्य की विशालता, विविधता; गुणवत्ता पवं महता में शक्ति काव्य परम्परा का भी अपना योगदान हैं। चारण-काव्य धाराको लौकिक काव्य धारा से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य शक्तिकाव्य परम्परा ने ही कियां हैं। शक्ति-काव्य की रचना में चारण कवियों के अतिरिक्त चारणेतर कवियों ने भी खुलकर भाग लिया हैं। चारण देवियों सम्बन्धी रचनाएँ भी काफी संख्या में मिलती हैं।

इस काव्य-परम्परा की अधिकतर सामग्री प्राचीन दस्त-लिखित रूपों में मिलती हैं। साथ ही लोक काव्य के रूप में लोकगीतों के रूप में, लोक मुख पर भी बहुत सामग्री हैं। मुख्यतया यह काव्य पांच रूपों में मिलता है। प्रथम पूर्णतया शक्ति से सम्बद्ध काव्य, द्वितीय ग्रासंगिक रूप से शक्ति से सम्बद्ध काव्य, तृतीय मंगलाचरण के रूप में शक्ति से सम्बद्ध काव्य चतुर्थ शक्ति विशेष के पार्षद, वाहन पवं स्थान से सम्बद्ध काव्य तथा पंचम शक्ति से सम्बद्ध लोक-काव्य.

इन काव्यों में कवियों ने शक्ति के स्वरूप को अपने अपने दृष्टिकोण से देखा, समझा और प्रस्तुत किया हैं। कवियों ने अपना हृदय खोलकर रख दिया हैं।

चारण देवियों से सम्बद्ध साहित्य का यदि पूर्णतया पर्यवेक्षण किया जाय तो यह परिमाण और महत्त्व की दृष्टि से

अत्यन्त उपदिय हैं। इस पर अनेक शोध-प्रबन्ध लिखे जा सकते हैं।”
—श्री भवरसिंह सामौर.

(चारण देवियाँ और उनसे सम्बन्धित साहित्य-मरु भारती)

‘मा शब्दना उच्चारमां ज पबुं तेआ सांत्वन मूक्युं छे के हजारो वीँछीनी असह्य वेदनामां पण ‘हे-मा।’ आ बेज अशरनुं वाक्य परम शांति आपे छे. के जे शांति बीजा कोईपण शब्दनी आराधनामां जोवा मल्हती नथी. आथी ज मातृशक्तिनो महिमा सर्वोत्तम रह्यो छे. वेदकाळथी वहेती मातृशक्तिना महिमागाननी सरवाणी अविरतपणे प्रगति करी रही छे।’

—श्री पिंगलशीभाई मेधाणद गढवी.

“स्त्री-पुरुष बन्ने समान होवा छतां पुरातनकाळथी भारतीय संस्कृतिमां नारी सन्माननी भावनाथी मातृस्वरूपने प्राधान्य अपातुं आन्युं छे. चारणी साहित्यकारो पण मातृस्वरूपने ज प्राधान्य आपी रहां छे।”
—श्री पिंगलशीभाई पायक्र.

“चारणी साहित्य समजवा शक्तिनो वाविर्भाव, परचा अने प्रादुर्भाव जाणवा जरुरी छे. शक्तिपूजा धारा चारणो अने चारणी अस्मिता पोपाय छे।”

—पू. मुनि श्री हरिदानजी महाराज.



[15] चारणज्ञातिनो भ्रातृभाव

- १५.१ क्षत्रिय अने चारण.
- १५.२ लाखपसाव पटले शुं ? ?
- १५.३ शासण.
- १५.४ ताष्ट्रपत्र.
- १५.५ ब्राह्मण अने चारण वच्चेनुं अंतर.
- १५.६ मुस्लिमयुगमां चारण.
- १५.७ विटिशयुगमां चारण.
- १५.८ चारणज्ञातिना याचको.

चारण माटे भूराभाई उदियाप देहो कहो छे के :

विद्रता सत्यवक्ता शूरवीरता सत संग,

उज्जवलवृति उदारता, ओ व्रत चारण अंक.

चारण मानवतानें साच्चो आसज्जन छे कारण के रागदेषने वश थईने ते अन्यथा बोलतो नथी; अर्थात् कोईने ते खोटी सलाह आपतो नथी. चारणवाणीमां मानवने बदलबानी ताकात छे. चारणनी वाणी मा शारदा समर्पित होय छे. चारण पोतानी वाणीनो कर्ता नहि परंतु ये वाणीनो दृष्टा छे. चारणनी वाणी पाछल अर्थ स्वयं दोडतो आव्यो छे. आधी ज समग्र समाज-जीवनमां प वाणीनी असर पडी छे चारणवाणीनी विशेष असर क्षात्रत्व पर पडी छे. आधी ज क्षत्रिय अने चारण वच्चेनो सबंध घणो पुनीत रहो छे.

१५.१ क्षत्रिय अने चारण :-

क्षत्रिय अने चारण वच्चेना सबंध विशेनो एक देहो प्रसिद्ध छे :

करण पथारी ई भण्यो। सूर्णो। सपूता,
छीप भलावी सागरा, ने चारण रजपूता.

चारण शौर्य अने स्वतंत्रतानें हरहंमेश पुजारी रहो छे.
ज्यारे ज्यारे राष्ट्र के धर्म पर आक्रमणो थया छे, त्यारे चारणोप
थे आक्रमणोनें सशस्त्र विरोध करी, आ धर्मयुद्ध माटे सौ
कोईने प्रेतसाहित कर्या छे. जे कोई व्यक्तिअे शौर्यता बतावी
छे. तेमने चारणोप साहित्यमां अमर कर्या छे. शौर्य, वीरत्वनें
गुण क्षत्रियमां विशेष प्रमाणे खील्यो होवाथी क्षत्रियो साथे
चारण जातिनें सबंध अत्यंत पवित्र अने घनिष्ठ रहो छे.
चारणोप गुरु, उपदेशक, कवि, सलाहकार, विष्णिकार, वीरयोद्धो
अने विश्वासु वफादार रहीने क्षत्रिय जातिनी तेमज राष्ट्रनी
उत्कृष्ट सेवा बजावी छे. आ कथननी साक्षी पुरता अनेक वृतांतो
प्राचीन इतिहासमांथी मळी आवे छे.

चारणने हिमालयमांथी आर्यवर्तमां लावनार महाराजा
पृथुप क्षत्रियना पाप पुण्यना दसमा भागना चारणने अधिकारी
बनावी तेना दसेंदी स्थाप्यां हता. आ अधिकारने कारणेज चारणोप
राज्यना गोरवहीवट, अनीति अने अन्यायनी सामे आकरी जेहाद
जगावी राजाना अंकुशरुप रह्या होवाना केटलाय उदाहरणो
प्राप्य छे.

ब्राह्मण ऋषि मुनिओ तपश्चर्याना बळे राजाओ पासे
राजकुंवरीओना पाणिप्रहण करवाना फरज पाडता हता.
आ अत्याचार तेमज अनुचित व्यवहार चारणोथे बंध कराव्यो हतो.
चारण क्षत्रियना पुनीत सबंधे विद्वानेनां उल्लेखनीय मंतव्यो :

“शतकेाधी सौराष्ट्र गुजरात अने राजस्थानना चारणोप
क्षत्रियानी वीरता दानवट अने टेकने बीरदाव्या छे. ज्यारे
ज्यारे प्रसंगो उपस्थित थया त्यारे तेमने स्पष्ट शब्देमां निडरपणे

भविष्यनी परवा कर्या वंगर ठपका आप्यां छे, तेनी टीका करी छे,
तेमज अप्रिय सत्य पण संभलाव्युं छे

राजा महाराजाओप तेमने आदर आप्यो छे. तेमनुं सन्मान
कर्युं छे अने जेटला प्रेमथी करेली स्तुति अने प्रशंसा सांभल्या
छे तेटलाज प्रेमथी तेमनां कटु चचनो पण सांभळी लीधा छे.

राजपतिओप अने अन्य राजपुतोप चारणोने देव मान्या
छे, तेमज चारणोप पण देवनुं पद शरमाव्युं नथी. आम राजपुतो
अने चारणोनो सबंध आज सुधी पवाज प्रेमभयो अने मान भयो
रहेलो छे.

चारण कविथोप राजपुतोनां पराक्रमोने तेमनां काव्योमां
अमर न कर्या होत तो तेमना आत्ममोग, दान, वीरता अने
वटनी वातेने तेमना काव्यो अने कथाओमां न गुंथी होत तो
आजे आपणे जे गौरव लईप छीप तेवो ईतिहासना अमर पात्रोना
नामो सिवाय आपणी पासे कई होत नहिं.

राजाओ महाराजाओ अने दरबारोप चारण कविओने अपार
दान आपवानी अनेक कथाओ सौराष्ट्रनां ईतिहासना पृष्ठो उपर
अंकित थई छे. अने चारणोप पण क्षत्रिय राजवीओ पासेथी
दान लीधानां घणां प्रसंगो आपणी पासे छे. रा'डीयासना शीरनुं
बीजले दान माग्युं हतुं, थेक चारण कविए मूळीना शेसांजी
पासे जीवता सिंहनुं दान आपे पवी हठ करी हती.

(देहाः— शशे सिंह समर्पयो. केसर जाली कानः
रमतो मेले राण, पोग्यो परमारा धणी.
आ चारण कवि हता नागरदासजी रत्नु.)

जाम रावले ईसरदासजीने लाख पसाव आप्यां हता. पवा
अनेक प्रसंगो ईतिहासमां नेंघाया छे. अने दान लेनार कविओप

दाताने विरदाव्या छे. ते साथे अटंका अने अजाची चारणोप दानना लोसे तेमनी टेक तजी नथी. तेवा प्रसंगो पण बहु जाणीता छे ईशार वारहठने चितोडना महाराणाप तेनो मात्र पक दुहो कहेता लाख पसाव आपवा कहेलु पण आ टेकीला चारणे तेनो क्रोध वहायें, तेनो शाप नेतयें, परंतु मात्र प्रभुनां ज गीत गावा पवी टेकवाळा कविप हिंदु सूर्य महाराणानो अेक पण दुहो कहो नहि, ते मृत्यु पात्र मानवीनी कविता करताज नहि पण ज्यारे दादु पठाण नामना सिपाईनी निःस्वार्थ सेवा अने निव्याज भक्तिशी प्रसन्न थई तेने तेना दुहाओमां अमर कयें.”
—इतिहासविद् श्री शंभुप्रसाद देशाई (महादान माळा)

“आवड देवी के तेमडा को स्थायी निवास बनाने पर राजपूताना चारणों का संचरण-क्षेत्र बन गया। राजस्थान के राजनीतिक जीवन के उत्थान पतन से इस जातिका घनिष्ठ-सम्बन्ध रहा है। राजाओंके संधिविग्रहक पद पर इन्होंने दायित्व निर्वाह किया है। इस जातिने कालान्तर में लोक-जीवन में धुल मिलकर पक प्राण है। राष्ट्रोत्थान में अपूर्व योग दिया इस बात के साक्षी है भिन्न-भिन्न राजयों के ऐतिहासिक ग्रन्थ। चारण व क्षत्रिय राजपुत्र का सम्बन्ध भाई की तरह पुनीत था। संकटापन्न क्षात्र बालक वालिकाओं के निर्भाक संरक्षक बनकर इन्होंने अपने दायित्व का निर्वाह किया है।”

—श्री मेजर स्लाहेव रघुवीरसिंहजी (वीरसतसई)

‘प्राचीन समय से चारणलोग क्षत्रियों के उपदेशक नियत होकर अनेक सदुपदेश करके क्षत्रियोंकी उन्नति करते रहे और स्वर्ग से क्षत्रियों के साथ साथ आर्यावर्त में आकर क्षत्रियों की हानि में अपनी हानि और लाभ में लाभ समजकर क्षत्रियों की जात्युन्नति और देशोन्नति करते रहे, इस कारण से क्षत्रियों की चारणों पर अधिक प्रीति है। यहां पर यदि कोई यह कहे कि

क्षत्रियों के उपदेशक तो ब्राह्मण भी है। जिन्होने अनेक सदुपदेश किये हैं। उन पर इतनी प्रीति क्यों नहीं है? तो इसके उत्तर में लिखा जाता है ब्राह्मणलोग भारतवर्ष की समग्र जातियों के समान धर्मोपदेशक हैं, इस कारण ब्राह्मणों का सभी पूज्य मानते हैं यहां तक कि चारणोंने भी ब्राह्मणों को पूज्य मानकर अपने ग्रामों में सहस्रों वीधे भूमिदान दे रखकी हैं। परन्तु कुछ काल से ब्राह्मणोंने समयानुसार नीतिका उपदेश करना छोड़ दिया और क्षत्रियों के आपत्काल के सहचारी नहीं रहे, इसके उपरान्त क्षत्रिय और ब्राह्मणों के खानपानादि में भेद होकर बहुधा व्यवहारों में अन्तर पड़ गया और वर्तमान समय का स्पशास्पदा का बखेड़ा अरुचिकारक होकर स्नेहाधिकयता का बाधक हो गया। इस के साथ ही ग्रहशान्त्यादि रीतिये भी विक्षेपकारक बन गईं। अतएव ब्राह्मणों का पूज्यत्व तो यथावस्थित बना हुआ है। परन्तु उक्त कारणों से अन्तः कारण की प्रीतिमें न्यूनता पाई जाती है। अब यहां पर यह लिखना भी अयुक्त नहीं होवेगा कि ब्राह्मण लोग सभी ज्ञातियों के उपदेशक हैं इस कारण से भी क्षत्रिय लोग चारणों की विशेष इष्टि से देखते हैं, और इनसे समयोचित नीति का उपदेश ग्रहण करते हैं। इसके उपरान्त चारणों का खानपानादि सम्पूर्ण व्यवहार क्षत्रियों के समान बना रहा और वर्तमान समय में भी जैसा का वैसा बना हुआ है और इन दोनों ज्ञातियों में कभी परस्पर का विरोध नहीं हुआ इस कारण इनकी परस्पर की प्रीति भी जैसी की वैसी बनी हुई है।

चारणों के अनेक प्राण चले जाने पर भी अपने यजमान क्षत्रियों के अहित की बात कभी अंगीकार नहीं की और कभी स्वामिद्वाही नहीं बने। बहुधा ज्ञातियों के मनुष्योंने अपने स्वामियों पर विश्वासघात आदि अनेक अनर्थ किये जिनके

उदाहरण इतिहासों में विद्यमान है परन्तु चारण ज्ञातिको यह कलंक नहीं लगा इस कारण से भी चारणों पर अधिक विश्वास है।

क्षत्रियों में जब परस्पर के द्वेष और बान्धवविरोध आदि उठे तब तब चारणोंने उनके मिटानेका उद्योग किया और क्षत्रियों में परस्पर साम उपाय को ही सदैव अपना कर्तव्य समझा जिससे क्षत्रियोंका अलभ्य लाभ हुआ और सहस्रों क्षत्रियोंके प्राण बचे। जब जब क्षत्रियों में परस्पर के द्वेष से दो दल होकर कट मरनेका समय आया तब तब चारणोंने मध्यस्थ होकर उनको मरते बचाये इस कारण सामान्य रीति से यह प्रथा राजपूताने में प्रचलित हो गई थी कि सहस्रों क्षत्रिय परस्पर कट मरनेको तैयार होते उस समय एक भी चारण बीच में आ खड़ा हो जाता तो लडाई बंद होकर सन्धि के सन्देशों होने लग जाते ऐसे समय में चारणोंने छोटे बड़े का संकोच से न्याय को छोड़कर कभी अन्याय ग्रहण नहीं कीया इसी कारण से छोटे क्षत्रियों से लेकर राजा महाराजाओं तक सब इन पर विश्वास करते हैं, और सब के समान प्रीतिपात्र बने हुये हैं। इसके उपरांत क्षत्रियों में अनेक विश्वासघात, छङ्घघात, बालघात आदि अनर्थ होते हुए चारणोंने बचायें हैं। इस कारण से कैसा ही कठोर और दुर्वच्य कहे जाने पर भी चारण लोग क्षत्रियों से अवश्य माने जाते हैं, जिसके अनेक उदाहरण राजपूताना के इतिहासों में विद्यमान हैं।

जब जब क्षत्रियों का शत्रुओं से सामना हुआ है तब तब चारणोंने क्षत्रियों के साथ रहकर उत्साह दिला दिला कर इनको विजयी बनाये हैं और कायर को भी बीर बना बना कर लड़ाया है इतना ही नहीं किन्तु ख्याल क्षत्रियों के अग्रणी होकर

शत्रुओं से लड़े और मारे व मरे हैं इसी कारण से यह प्रसिद्ध हुआ है कि :

‘चारण मरण परायो चहरै, चारण मरण न पाडै चूक॥’

चारणों की प्रशंसा में क्षत्रियोंकी की हुई कविता:

इस प्रकरण में जोधपुर के महाराजा प्रथम जसवन्तसिंहजी का बनाया हुआ एक देहा लिखा जाता है। जो मारवाड़ के रुपावास नामी गाम के चारण रोहडिया बारहठ राजसिंह के लिये उक्त महाराजाने मरसिया कहा था।

दृत जोडा रहियो हमे, गढ़वी काज गरत्थ ।

ऊ राजड छत्रधारियाँ, जोडावण दृत्थ ॥ १ ॥

जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने चारण ज्ञाति की प्रशंसा में मरु भाषा में गीत नामक छन्द कहां जो नीचे लिखा जाता है।

आछा गुण कहण वाणपण आछी मोटम बुध में नको मणी ।

राजाँ सुजस चहूँ जुग राखै, ताकव दीपक समातणी ।

भेषापालैं बातें दृदभावै, सबद सुहावै, घणां सकाज ।

डील्ह दराज दीनता डारण, राजाँ विच साहै कवराज ॥२॥

राखी सख सभाने राखै, सहज सुभावौं घणां सरै ।

धजवडहता मारका धूताँ, किव रजपूताँ अमर करै ॥३॥

आखै मान सुणों अधपतियाँ खत्रियाँ कोय म कीजो खीज ।

विरदायक मदबहता वारण, चारण बड़ी अनोखी चीज ॥४॥

इन्ही महाराजा मानसिंहजी का कहां हुआ मरु भाषा में गीत नामक छन्दका चतुर्थ चरण प्रसिद्ध है वह नीचे लिखे जाता है।

करण मुकर अहलोक कुतारथ, परमारथ ही दीयण पतीज ।

चारण कहण जथारथ चौडे, चारण महा पदारथ चीज ॥

महाराजा मानसिंहजी का कहां हुआ देहा भी प्रसिद्ध है।

ठोर पडे त्रंबक ठहठहियाँ, भड थहियाँ पगरोप भव ।

बाल्ही लाज तजेके वहिया, सतरै जद रहियाँ सकव ॥

चारण भाई क्षत्रियाँ, जी घर खागतियांग,
खाग तियागाँ बाहिरा, जाँसू लाग न भाग ।
इसी प्रकार रतलाम के महाराजा, बलबत्सिंह ने चारण जाति
की प्रशंसा में मरु भाषा का छप्पय नामक छन्द बनाया जो
नीचे लिखा जाता है ।

येां चारण कुल अवस, तवाँ क्षत्रीकुल तारण ।
येां चारण कुल अवस, विहद मद् वहतो वारण ।
येां चारण कुल अवस सकल गुण कारज सारण ।
येां चारण कुल अवस भुदै अपकीरत मारण ।
देवकुल साच चारण दुरस धुर हरि भगती धारणाँ ।
सुरसती रूप राजौ सुकव, डगर चलावण ढारणाँ ।

सौराष्ट्री (सोरठो) देहो

जागो किणी न जाग, सह जागो कीधो सुकव ।
लूँढा चारण लोग, तारण कुल क्षत्रियाँ तणाँ ॥
गुमानसिंहने चारण जाति की प्रशंसा में मनोहर जाति का छन्द
बनाया जो नीचे लिखा जाता है ।

। मनोहरम् ।

नीति मग्ग चालैं ताहिं कुमभथल हथल दै ।
बण्प बण्प बेलि कहो मनको बढातो को ।
कुमति कुदान धरे आलस जंजीर जरे ।
थानसु आलान छारि जगनणे जातो को ।

रम्यकाव्य तोदन ले देरि गम्यचत्वर में ।
देरि देरि मर्मबोल तोमर लगातो को ।
चारण सुहासिलप न होते तो गुमान कहे ।
क्षत्रीकुल कुम्भी हमें रोकि राह लातो को ॥”

-कविवर्य बारहठ कृष्णसिंहजी (चारणकुल प्रकाश)

क्षत्रिय समाजनी चारण जाति प्रत्ये केटली अपार थोड़ा
भक्ति अने आदर छे तेनी गवाही पुरतां अनेक दोहाओ मले छे.

चारण तारण क्षत्रियाँ, भगता तारण राम ।

वे अमरापुर ले चले, ये नवखंड राखे नाम ॥

कारन रच्छन क्षात्रकम, हा चारन उन हेत ।

भले भलाई देत हे, वूरे वूराई देत ॥ (प्राचीन)

करो घणा कहे किशनसी नृग चारणनेह ।

अमर मरयाने ये कहे दे सुन्दर जश देह ॥

-रावत किशनसिंहजी.

चारण तारण क्षत्रियाँ, यह जग में विख्यात ।

सो जवान उरधारिके, इन चारण में व्यात ॥

-रावत जवानसिंहजी.

अयश इन्द्रभयानक रहे लिये ताको शरण ।

यो द्वंगर मयनाक, रतनासर चारण चरण ॥

-द्वंगरसिंह भाई.

जो भूरुह चारण जनन, पाठ्व विद्या पत्र ।

आलबाल नृप जनहि है, आदर सलिल अयत्र ॥

पठित वीररस पुलक कर, उदित पराग अछेह ।

भटकर भिरू लखवनो यो दूसको फल अह ॥

-सूर्यध्वजी.

मातपिता सुत मेहळा, बांधव बीसारेह ।

शूर दता सतिया चरित, चारण चीतारेह ॥

-महाराजा मानसिंहजी जोधपुर.

चारण पटलां देव, (अमे) जोगमाया करी जाणीप,

लोहीनां खपर खपे, तो वूडे बरडानो धणी.

-मेह जेठवा (घूमली).

कवित

परम पुनीत पूजनीय प्रथिनाथन के ।
 पराक्रमी पुराने परमारथ के पत्र है ।
 मान मरूनाथ कहे दानी वीर क्षत्रियोंके ।
 संजीवनी बूटी श्रुप शोभे सर्वेत्र हैं ।
 स्वामी भक्त सदा मत्यवक्ता त्यां चन्नसिद्ध ।
 देवियाँ वहे जाके द्वार दुहिता कलत्र है ।
 विना पढे चारन ही वेदके उच्चारन वो ।
 चारन विवुद्ध वर्ण चारन के छत्र है ।
 -महाराजा मार्नसिंहजी जोधपुर.

राजकोट ठाकोर महेरामणजी श्रीजाप तेमना कविराज जेसाजी
 लांगानुं 'कटारीकिर्तन' अे नामनुं गीत रच्युं हतुं.

भला वेंडारी कटारी लांगा, अे तांदी कळांका भाण,
 संभारी कचारी मांहि, होवते संग्राम;
 हेमझरी नीशरी घनारी शात्रावांका हीया,
 अजा वीया मागे थारी, दोधारी ईनाम....१
 पढ़ी अढ़ी आख रांकी, जमदही कही पार,
 ध्रसेडी शात्रवां हीये राखवा धरम,
 बंवेल्ही रगता थकी, कंकोल्हीशी कढ़ीबार,
 होल्ही रमी पांतखारी, नीसरी हरम...२
 अशाढ़ी वीजल्ही जाण, उतरी शी अणीबेर,
 मणी हिराकणी जड़ी, नखारे सम्राथ,
 माल्हीये हे। मृगानेणी, बेठी शत्रशाल्ही माय,
 हेमरे जाल्हीये कढ़ी, शाहजादी हाथ...३
 करी वात अखीयात, अणी भाते नथे कणी,
 जरी माल्हीयामां तरी जावे झांख झांख,

शामवाका हया बीच, सेंसरीते करी जेसा,
इशरी निशरी केना तीसरसी आंख...४

‘उन्होंने न केवल वीरों की प्रशंसा पर कायरों की प्रताड़ना ही की, अपितु अवसर आने पर स्वयं भी रणाङ्गण में जूझ कर स्वामिभक्ति का अनुपम बादशह उपस्थित किया हैं। ‘पोलपात’ के रूपमें लिये गए अपने नेग’ का बदला उन्होंने ‘पोल’ की रक्षा के लिए अपना सिर कटा कर चुकाया हैं।

यही कारण है कि क्षत्रिय नरेशोंने उन्हें सर्वाधिक आदर पर सर्वोच्च सम्मान प्रदान करने में अपना गौरव समझा हैं। यही नहीं बड़े बड़े नरपतियों में, उनकी अधिकाधिक सेवा परिचर्या कर तथा येन केन प्रकारेण उनका कृपा प्रसाद प्राप्त कर उनकी वाणी से अमर होने या एक दूसरे से बढ़कर यशोभागी होने वी होड लगी हैं।”

“यहाँ एक तथ्य विचारणीय हैं। चतुर्वर्णों में ब्राह्मण वर्ग सर्वाधिक पूज्य माना गया हैं। परन्तु यह सब होते हुप भी किसी क्षत्रिय नरेश द्वारा स्वयं अपने कंधों पर पालकी में उठाए जाने का गौरव तो कदाचित् ही उनमें से कीसी को मिला हो।

यही नहीं यशोकांशी क्षत्रिय सामन्तोंने उनकी चाकरी बजा कर सेवक के रूप में उनके हाथों से कोडे की मार तक खाई है, सिर्फ इसलिए कि उन कीतिं के कोरडो के साथ उनका नाम युग-युगों तक जुड़ जाए ! खाचरियावास ठाकुरोंके पूर्वज लाडखानी शेखावत ठा. खेंगारसिंहजी ही वे यशस्वी सरदार थे जिन्होंने अपने यहाँ ठहरे पक बारहठजी के हुक्का भर कर लाने का आदेश का नौकर द्वारा (निद्रावश) पालन न किए जाने पर स्वयं उठ कर उनकी सेवा में हुक्का पेश कर

दिया परन्तु सदा का सा आनन्द न आने पर जब उस तुनक मिजाज अतिथि ने खीझकर उनके दो चार कीड़े जमा दिए तो वे भी चुपचाप सह लिए। वास्तविकता ज्ञात होने पर लज्जित अतिथि के मुंह से अपने उदारमना अतिथेय के प्रति ये प्रशंसा भरे उद्गार फुट पड़े :

लाडाणी जस लूटियौ, माडाणी जग मांय,
कीरत हंदा कोटडा, जाता जुगां न जाय.”

“परन्तु चारण कवियों की प्रशंसा की प्रतिस्पधी में बाजी मार ले गए हैं सीकर के रावराजा देवीसिंहजी जिन्होंने यह निर्णय देकर कि जो ठाकुर चारणों का चाकर होकर रहेता है वही ठाकुर संसार में सर्वोपरि हैं

चारण तणो रहै जो चाकर
सो ठाकर संसार सिरै ॥

मानो चारण समाजके प्रति शत्रिय वर्ग की सामूहिक भावनाओं को ही वाणी देदी हैं।”

—डा. शंभुसिंह मनोहर.
(चारण-चरजापै और उनका अध्ययन.)

“चारण जाति का अस्तित्व भारत वर्ष में प्राचीन काल से रहा है। अपने पवित्र आदर्श के कारण भी चारणों का समाज में सदैव सम्मान तथा आदर प्राप्त रहा है। उनका प्रधान धर्य लोक कल्याणार्थ शत्रिय-जाति में साहस तथा बीरता का संचार कर उन्हें सदर्म पवं सन्मार्ग पर चलाना था”

—डा. उद्यनारायण तिवारी. (वीर काव्य)

१५-२ लाखपसाव पट्टले शु?

जसवंत जसेमूषण ग्रन्थमां कविवर्य मुरारिदानजी आसिया लाख पसाव अंगे लखे छे के “लक्ष दानका मरु भाषा में लाख

पसाव कहते हैं। लक्ष शब्दका अपभ्रंश है लाख पसाव शब्दका अर्थ है प्रीतिपूर्वीक दान। कहा है चिन्तामणि केशकारने “प्रसाद तुष्टिदाने” ‘प्रसाद’ शब्दका मागधी भाषा में ‘पसादे’ ऐसा होता है उसका अपभ्रंश ‘पसाव’। लाख पसाव में हय गज, भूषण, वस्त्र, रजत सुद्रिका आदि दिये जाते हैं और लक्षकी पूर्ति के लिये ग्राम दिये जाते हैं।”

कविवर्य मुरारिदानजी आसिया (जसवंत जसेभूषण पृ. १६)

‘कविता की अभिवृद्धि के लिप चारणों को ‘लाख पसाव’ देनेकी पद्धति भी है। ‘लाख पसाव’ का अर्थ है। एक लक्षका, दान। इस एक लक्ष से केवल नकद रूपयों से ही तात्पर्य नहीं है। इसके अंतर्गत हाथी घोड़े ऊंट गहने, सवारी, गाँव, अनाज आदि वस्तुओंका भी समावेश होता है। कुल दान तीन हजार से सतर के बीच होता है, किन्तु उसे ‘लाख पसाव’ ही कहा जाता है।

-डा. उदयनारायण तिवारी (वीर काव्य पृ. ५०)

“पचीस हजार रूपिया नगद रोकडा, पचीस हजारनां घरेणां, पचीस हजारनां पशुओ (हाथी, ऊंट, घोड़ा, खेंसा, गायो), वार्षिक पांच हजार रूपियानी वावकवालुं गाम, वाडी, राजनगरमां रहेवानी हवेली अने पगमां सोनुं बक्ष (सोनानी बेडी) एक पालखी अने मसाल (रौप्य जडीत) हाथी, घोड़ा, ऊंट, शणगारेल गायो बेटलुं दान आपे तेने ‘लाख पसाव’ कहेवामां आवे छे.” -राजकवि श्री मावदानजी रत्न (ब्रह्मसंहिता)

१५.३ शासन :-

चारणोना ग्रासने ‘शासन’ कहे छे। शासन शब्द उपरथी ते थयेल छे, बेटले चारणो राजाओने शिक्षा करतां, न्याय आपता तेना बदलामां आपेला ग्रासना लेखमां (ताष्रपत्रमां) ‘शासन’ शब्द लखावता बेटले राजाना वंश वारसधी प

ग्रास न लई शकाय. कोई लेखमां तो पबुं लखेलु छे के 'विघरमी
राजाप पण पोतानुं आपेलुं जाणी आ शासण ग्रासने पाळवा"
तेथी जुना वस्तुतमां अपापलां क्षत्रियोनां शासणेना ग्रास बादशाहो
अने ब्रिटिश शहेनशाहे पण जाळव्या हता. बळाना स्व. राजकिंचि
थी ठारणभाई महेझनी मान्यता मुजब "मारवाड, भेवाड, दूंढाड,
कच्छ गुजरातमा चारणोना कुल शासण गाम पक हजार उपर
छे. अने काठियावाडमां ८१ पंचीयासी गाम शासणना छे.

१५-४ तात्रपत्र :-

"अब यहाँ पर थोडा सा विवेचन दानपत्र का किया जाता
है। चारणों को जो ग्राम दिये जाते हैं और दिये गये हैं उनके
दानपत्र लिखने की यह रीति है कि "अमुक राजा के वचनसे
अमुक ग्राम चारण को उदक अधाट कर दिया गया" इसके
नीचे नीम्नलिखित श्लोक लिखे जाते हैं। जो गुरुड पुराण के हैं।

स्वदतां परदतां वा ये हरन्ति वसुन्धराम् ।

षष्ठिवर्षं सदस्त्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

अर्थः : अपनी दी हुई अथवा लेलेकी (दूसरे की) दी हुई पृथ्वी को
जो हरण करता (पीछी लेता) है वह साठ हजार वर्ष पर्यन्त
विष्टा में कीडा होकर रहता है ॥ १ ॥ इस श्लोक का उत्तराधि
कहीं नीचे लिखे अनुसार भी लिखा जाता है ।

"ते नरा नरके यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।"

अर्थः : वे मनुष्य चन्द्र, सूर्य, देवों रहे जब तक नरक में जाते हैं ।

स्वदतां परदतां वा पालयन्ति वसुधराम् ॥

ते नरा स्वर्गे यान्ति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ २ ॥

अर्थः : जो मनुष्य अपनी दी हुई अथवा लेलेकी (दूसरेकी)
दी हुई पृथ्वी को पालन करते हैं वे जब तक चन्द्र, सूर्य, देवों
हैं तब तक स्वर्ग में रहते हैं ।

इस प्रकार लिये हुए ग्राम उदक (शास्त्रण) कहलाते हैं। प्रथम यह शब्द यथार्थ में 'उदकदत्' अथवा 'उदकदान' परसा था अर्थात् यजमान अपने हाथ में कुश के साथ जल लेकर यह वचन कह कर दान देता है कि । 'तुभ्य महं सप्रददे इदं न मम' ॥ अर्थः तुम्हारे अर्थ में इसको देता हूँ यह अब मेरा नहीं है ।

इसका लाभव होकर दक्ष व दान शब्दको छोड़कर केवल 'उदक' शब्द प्रसिद्ध रह गया है, जिसका अर्थ है कि उदक (जल) के साथ दिया हुआ। परन्तु इस उदक शब्द के साथ 'अघाट' शब्द भी लिखा जाता है। जिसका अभिप्राय पक तो यह है कि सीमा के सहित उदक दान दिया गया हैं क्योंकि शब्दार्थ 'चिन्तामणी आदि कोशो में लिखा हैं "अघाटः सीमायाम्" अर्थात् अघाट शब्द सीमाके अर्थ में हैं। प्राचीन तात्प्रपत्रो में यहां तक लिखा हुआ मिलता है कि अमुक भूमि अथवा अमुक गृह तुमको बायु आकाश के साथ दिया गया है। इसी प्रकार विशेष पुष्ट करने के लिये अघाट (सीमा) शब्द भी लगाया गया। जिसका तात्पर्य यह है कि उदक लेपनेवाले को जितना देव लगता हैं उतना ही देव सीमा काटने (कम करनेवाले) को लगता हैं और दूसरा अर्थ यह भी है कि उदक देनेसे पहले उस ग्राम में किसी को ढहाली जागीर आदि में जमीन मिली हुई हैं। उस पर भी तुम्हारा अधिकार है अर्थात् उन मनुष्यों से सेवा आदि लेनेका अधिकार 'तुम ही को हैं' इसी अभिप्राय से अघाट अर्थात् पूर्ण सीमा के साथ दिया जाना लिखा जाता हैं और शब्द 'शास्त्रण' है जो 'शासन' से अपभ्रंश हुआ है जिसका अर्थ है आज्ञा, जिसका तात्पर्य यह है कि सदैव के लिये आज्ञा है और इस पर सब प्रकारकी आज्ञा चलानेका तुमको अधिकार हैं। जिसमें दान करनेवाली की ओर से किसी प्रकार का दस्तक्षेप नहीं

होवेगा उक्त प्रकारसे क्षत्रियोंकी और से चारणों को भूमि और आम उदक देने की रीति परम्परा से बली आती है जो संक्षेपतः लिखी गई है इस के लिये भाषा में मनोहर जाति के छन्द का १ पद किसी क्षत्रिय राजा का कहा हुआ प्रसिद्ध हैं ।

“उदक उथापै ताहि उदक लगै नहीं ॥”

जिसका अर्थ यह है कि उदक (माफी) उथापनेवाला अगति (नरक) जाता हैं । इससे उसके वंशजों के हाथ का दिया हुआ उदक (पानी) उसको नहीं लगता अर्थात् आद्वादिकोंमें जलाजली दी जाती हैं, वह उसको नहीं मिलती, चारणों को उदक मिलने का यह क्रम लिखा गया हैं । इसीके अनुसार राजपूताना मालवा और काठियावाड आदि देशोंमें क्षत्रियों की दी हुई अनुमान बीस लक्ष रुपये वार्षिक बामदनी की भूमि चारणों के अधिकार में है जिसका गणना उपर दी गई हैं ।”

-कविवर्य बारहठ कृष्णसिंहजी (चारणकुलप्रकाश)

ताम्रपत्रनो एक नमूनो :

“श्री महारावतजी श्री तेजसी (सि) चचनालु बागे भरामण परोत दामा जोग्य अत् थने श्री कस्नार्पण सुरज सुरज परव महे गाम दामाखेडी नीम सीम सुदा जीमाहे जमीन बीगा ११०० अम्यारेसे या चद्राक् यावत उदक अघाट कर सारी लागट घलगाट टकी दुसी सहीत नीरदोस करे आपा जणीरी मारा वंसरो थई न चालण करेगा नहीं । चोलण करे जणीनै चीतोड भगानुं पाप छे । स्वदत्ता परदत्ता वा यां दरेत वसुंधरा (ष) ष्टी वर्ष (ष) स्व (लह) त्राणी (खाणी) विष्टा या (यां) जाव (य) ते कुमी (मि) दुवे श्री मख.....समत् १६२१ रा वसे भादवा सुदि ११ दीने श्रीरिस्तु ॥”

-(ओङ्गा प्रतापगढ राज्यका ईतिहास पृष्ठ १०० टिप्पणी)

चारणोंप विशेष प्रमाणमां आयुं छें; तेना बदलामां अल्प जेबुं
लीयुं छे :

“चारणोप फक्त क्षत्रियोनां ज राजाओ राजपूतोनां ज दान
लीधा अने तेना बदलामां राजा-प्रजानी अने देशनी सेवा पण
तेटली बलके विशेष करी छे. अने चारणोने जे अपायुं ते मांगणो
मानीने नहि पण पूजनीय गणीने अपायुं छे. अने सेवाना
उपलक्ष्यमां अपायुं छे. चारणोनी सेवानी जरूर हती थेटले ज
थेमने बाग्रहपूर्वक राज्याश्रय अपायेलो. चारणोप राजपूतीने
जागती-जीवती राखवामां अग्रभाग भजवेया छे. थेमणे भारतीयता
जाळवी स्वर्धम माटे अने स्वातंत्र्य माटे कुरचान थवानी, मरी
मिटवानी परंपराने एमणे पेते बाचरी बतावी अने राजपूतोनी
प भावना परंपराने पेषण आयुं. काव्यामृत सींचीने सत्यनी
शूरवीरतानी-उदारतानी-त्यागनी - टेकनी - बलिदाननी बेलीओने
जीवती राखी. राजपूतीनुं, हिंदुबटनुं एमणे जानना जीगरधी
रक्षण कर्युं थेटले जे थेमनां बहुमान थया. राजाओ अने
राजपूतोने अने अन्योनोंप सन्माननीय-पूजनीय मनाते हतो.
देवीपुत्रनुं सरस्वतीपुत्रनुं लाडकुं बिरद थेने मलेलुं अने पने जे
अपायुं ते सरस्वतीनी पूजा स्वरूपे हतुं पूजनीकने चरणे पुजा-
रीनी पुष्पांजलि स्वरूपे हतुं.

दान लेमार निंदापात्र गणाय, तो पछी नम्रभावे सूचन के
चारणो करतां अनेकगणां दान लेनार आर्यजातिना आगेवानो,
जगदगुरु, ब्राह्मणोने पण निंदा पात्र मानवा जोईप. गर्भाधान
अने जन्मधी मांडीने मृत्यु पछी वरसी संवत्सरी अने श्राद्धनां
दान क्षत्रियो पासेथी ज नहि परंतु बढारे घणी पासेथी तेमणे
स्वीकार्या छे. काव्यकविता करीने पण तेमणे दान मेलव्या छे.

इतिहास साक्षी पूरे छे के चारण जातिना मोटा वर्गे
नहि पण थेक नानकडा समूहे ज राजपूतो, राजाओ के क्षत्रियो

पासेथी सेवाना बदलामां दान लीधा अने राज्याश्रय स्वीकारेलो.
अेवी रीते आजीविका मेलवनारा चारणेंनी संख्या थोडी छे.
चारणेनो मोटो भाग तो राज्याश्रय मेलववा करतां पशुपालन
अने वेपार वाणिज्य द्वारा ज पोतानी आजीविका मेलवतो
आव्यो छे.”

(अभ्यासी ‘चारण’ अंक २९ पृ. २१)

‘चारणोथे दान लईने फक्त खीसां ज नथी भर्या परंतु
चारणोप प्रथम राजपूतेने आप्युं छे, पछी ते गमे ते रूपमां
होय अने पोते आपेली वस्तुना बदलामां राजपूतो पासेथी वहु
अल्प जेबुं लीधुं छे.

भर्तृहरि शतकमां अेक ठेकाणे कहुं छे के अेक कविभे
राजाने कहुं के ‘हे राजन् हुं या उठीने चालयो, मारे तारी परवा
नथी, कारण के तुं अर्थ थेटले पैसानो राजा छे. तेम हुं पण
अर्थ नो थेटले शब्दार्थनो राजा छुं तुं लडवा आदि कियाओमां
शूरवीर छे तेम हुं पण विद्याविवाद रूपी लडाईमां शूरवीर छुं
तने नेकर आदि वर्ग नमे छे तेम भणनार, तेमांथी कोई जाणवानी
ईच्छावाळाओ वगोरे उत्तम वर्ग मने नमे छे माटे हुं तारा
करता कोई रीते हलकी कोटिनो नहिं परंतु उत्तम छुं.”

-डॉ. टी. पन. दवे.

१५.५ ब्राह्मण अने चारण वच्चेनुं अंतर :

‘चारणो वाग्जीवी छे, तो ब्राह्मणो पण मुख्यपणे वाग्जीवी
ज कहेवाय. ब्राह्मणोनां जे जे कमो स्मृतिविहित छे, अने तेमनी
जे परंपरा चाली आवी आवी छे. ते वधुं जोतां तरत समजाय
पतुं छे के ब्राह्मणो मुख्यपणे सरस्ती अने विद्याना उपासक
शास्त्रो रचवां अनो प्रचार करवो अनी व्याख्याओ करवी नवां
नवां ज्ञानक्षेत्रो हस्तगत करवां अने शारदानो भंडार भयें तेमज

विकसाव्ये जबो प ब्राह्मणोनुं मुख्य लक्षण मनायुं छे. पटले ज वाग्जीवी चारणो अने ब्राह्मणो बच्चेनुं अंतर जाणी लेबुं जस्ती छे. एम लागे छे के ब्राह्मणो मुख्यपणे संस्कृत भाषानी भूमिका उपर विद्योपासना करता तो चारणो मुख्यपणे लोकभाषानी भूमिका उपर विद्याकार्य करता. पहेला वर्गनुं काम पक विशिष्ट वर्गने आवरे अने तेनाथी ज समजाय थेबुं रह्युं छे. ज्यारे वीजा चारणवर्गनुं काम साधारण लोक वर्गने आवरे अने स्त्री पुरुष नानां मोटा उच्च नीच पका बघा वर्गोनि आकर्षे अने तेनाथी समाजने उपयोगी पकुं रह्युं छे. मा मेदने लीघे बुद्धिजीवी छतां मे बने वर्गना दरजामां, जीवन व्यवहारमां अने लौकिक कर्मामां पण मोटा तफावत पडी गयो छे.” -पंडितवर्य सुखलालजी.

ब्राह्मणोनां चारण विषयक काव्योः

दोहा

मनहर महिभुज बागके, माली चारण मान;
सिचत सदा सुबोधजल, गुल सुगंध गुन ग्यान.
क्षत्रिय हित होवही सदा, चारनके सहजेग,
रीत सनातन धर्म शुभ, उच्चति हित उचोग.

छप्पय

सुक्षम दर्शक तुल्य, सुखद लेचन चारनके,
सुंदर दर्शक तुल्य, सुखद हृदय चारनके;
बरपत आवहयात, विमल वायक चारनके,
सुनत केफ चढ जात, वीर कवित चारनके.

दुःख द्वेष कलेश हर दक्षता, धीर वीर शुभ धारणा;
गौरी भनन्त उपकार गुन, सिद्ध सनातन चारणां.
संयम शुद्धा चरण सत्वर चारन साधे,
दक्ष देव नर देव, चारन सत्याराधे;

सिद्ध चारणां साख, जांख होत नहीं जामे,
 तप विद्या बल तेज, होहीं पूर्ववत वामे;
 गौरी भनंत गुनजान ग्रह, हुवे प्रभव वहां होत हे,
 नवलक्ष्म आईके नाम नय, अबलों अचल उद्योत हे.
 ग्रहे सार गुणवंत, सत्य तत्त्व समजावे,
 उद्योगे अनुरक्त साहसी सुघड सुहावे;
 धरे धर्म मरजाद चीर धीर गुणवन्ता,
 सत्य कहे मुख साफ, दुरगुण दोष निहंता;
 प सिद्ध चारणो संयमी बीर्द पढे बहादूरनां,
 गौरी सुचोध बाहुज सुणे, सिंहनाद रणसूरनां.
 चारण चतुर गणाय, चारण धर्म न चूके,
 चारण सिद्ध सुदाय, मरे पण टेक न मूके;
 चारण सत्याचरण, शाख श्रेष्ठ चारणनी,
 चारण कीरति शुद्ध, शाम धर्म धारणनी.
 कारण विलोकी शुभ कार्यनी, धीर तजे नहिं धारणा,
 प्रजा राज्यहित प्यार शुभ, चूक्या नहिं कदी चारणा.
 -कविद्यर्य गौरीशंकर गोविंदजी.

१५.६ मुस्लिमयुगमां चारण :-

“मुस्लिम बादशाहो अने अमीर उमराओथे चारणनी कविता
 शक्ति, संस्कृतिप्रियता, स्वातंत्र्य भावना अने खुमारी माटे तेना
 पर प्रशंसाना पुण्ये वरसाव्या छे. पमने ईनाम जमीन जागीरथी
 सन्मानित कर्या छे. अल्लाउदीन जेवा धर्माध बादशाहोप पण
 चारणोने सन्मानेल छे, अने अकबर, जहांगीर, शाहजहां वरोरेना
 दरबारोमां तो लखाजी रोहडिया, दुरसाजी आढा, नरहरदासजी
 रोहडिया, महेकरणजी महेडु आदी चारण कविओ खूब सन्मानित
 हुता. हवेलीओमां आदरमान मळवा छतां चारण झुंपडीनो
 पश्चपाती अने चाहक हुतो. अकबरथी सन्मानित थवा छतां

महाराणा प्रतापनां यशोगान अकवरना दरबारमां पण रजु करवानी
शक्ति तेमज खुमारी चारणने घरेलां हतां।'

(‘चारण’ अंक २ वर्ष १ प्रील १९७३)

जहांगीरनी रोजनीशीमां चारण :-

जहांगीर बातशाह पोताना हाथे रोज डायरी लखता ते
किताब “तुनक जहांगीरी” तरीके प्रसिद्ध छे. तेमां बादशाहे
लख्युं छे के “तारीख २५ मोहरमना रोज जोधपुरना राजा
सुराईहजी मारी मुलाकाते आव्या. तेमनी साथे बे सरदारो
लाव्या हता. तेमां थेक तेमना काकाना पुत्र हता अने बीजा
तेमना कवि लाखाजीने साथे लाव्या हता. ते कविप मारी पासे
एक कविता संभळावी. ते काव्य मने घणी ज पसंद आवी ते
काव्यमां अति चमत्कार हतो ने न्याय [नवीन हतो. ते कविने
मारा तरफथी हाथी तथा बीजा पोशाक दानमां आप्यो।”

जाम रणजीतसिंहजी क्षत्रिय होवा छतां चारणोना गरास
खालसा कर्या हता, जूनागढना नवाब मुस्लिम होवा छतां कोई
चारणनी एक विद्या जमीन खालना करी न हती. जूनागढगा
नवाब क्षत्रिय महाराजाओ जेटलोज चारणने आदरमान आपता हता

१५७ ब्रिटीश युगमा चारण :-

“कर्नेल जेम्स टोड अने अलेक्झांडर किन्लोक फार्वस मे शड
अने गुजरातनो इतिहास लखता हता त्यारे भारतवर्षना तेत्रीस
करोड मानवोमांथी कोई पण कोमना विद्वानेनी वाणी पर
भरोसो नहि राखतां मात्र चारण कोमना मात्र दस बार कविथो
पर भरोसो राखी तेमणे महान ग्रंथो आलेख्या हता. आजे
टोड राजस्थान अने रासमाला प बे ग्रंथो ऐतिहासिक ग्रंथोमां
अमूल्य गणाय छे. प अमूल्य ग्रंथो चारणी मेंजाओये साचवी
राखेली बीनाओना आवाद नमूना छे।”

-श्रीयुत भगवानजीभाई सावरकर, तंत्री काठो राजपूत.

‘हरपक वस्तुका यथार्थ निर्णय करनेवाले इंगिलिस्थान के विद्वान् अफसरों ने भी चारण जाति को पुरानी पवित्र और प्रतिष्ठित यानी अद्व पाई हुई मानी हैं।’

-कविवर्य^१ मुरारिदानजी (चारणख्याति)

“आ देशमां जे वाट के वष्टीमां चारणने राखीप तो ज ते करार पार उतरी शके छे वली तेमनुं जामीनगतुं तो घणुं ज दखाणवा लायक छे. ते जामीन होय ने जो आगलो राजा न पाले तो ते तेना प्राण तुरत आपी दे छे. ने तमाम कुटुंबनो सत्यता माटे ने पेताना अेकवचन माटे त्याग करी दे छे. ने मरवा तैयार थाय छे. आवी विश्वासपात्र कोम छे. वली क्षत्रियो तो तेमनुं घणुं ज मान साचवे छे अने बीजाओ पण एमनां त्रागां करवाथी डरे छे. तेथी ते ज्ञाति वचमां होय तो सामो माणस शरतनो भंग करी शकतो नधी।”

-पील साहेब जीला सवंधे १८६४ रिपोर्टः

‘राजपूतो ते ज्ञातिने घणुं ज मान आपे छे अने विश्वास-पात्र माने छे, अने उंचो दरज्जो गणे छे, ने बारहठजी कहीने बोलावे छे. राजा महराजाओना तरफथी तेमने ताजीम मझे छे. दरबार भराय छे त्यारे तेमने ईजतवाली बेटक छे. अने कसुंबो पीती वखते सरदारो पहेली मनवार चारण सरदारने आपे छे, वली क्षत्रियोनी काव्य करवी अेटलुं नहीं पण विपत्तीओना समयमां घणीज मदद तन, मन, घनथी करेल छे. ते हकीकत जोधपुर अने जेसलमेरना इतिहासमां जोवामां आवे छे. तेमनी घणी जागीरो मारवाडमां छे चारणकोमने माटे छे. स्तुतिपात्र गुण तो प ज छे के ते सत्यवक्ता छे. राजा महाराजाओने पण साचुं कही शके छे. राजाओ पण तेओना डरथी पम माने छे के अमो चारणोनी कवितामां पेढी दर पेढी दया विनाना गणाय जईशुं, अेटला माटे तेओ अनीति करतां अटके छे।”

-केष्टन थे. डी. बेनरमेन आई. सी. पस.

(हिंदुस्तानना ई. स. १९०१ ना वस्तिपत्रकना रिपोर्ट पृ. १४७)

“चारणो त्राणु” करी करार पळावता देशमां पाठिया घणां छे, तेथी जणाय छे के स्त्री पुरुषो बेआवरु करतां मोत वधारे पसंद करता. चारणो काठियावाडमां सघळा भागोमां छे. केटलेक ठेकाणे आखुं गाम तेमनी जागीरमां मळेलुं होय छे. ते ढोर उपर गुजरान चलावे छे. केटलाक पोठीआ उपर माल भरी काठियावाड तथा रजपूताना बच्चे धंधो करे छे.”

-जे. डबल्यु. वोठसन काठियावाड सर्वसंग्रह.

महाराणी विकटेरिआ तरफथी कविवर्य शामलदानजी ने तथा शहेनशाह पडवड तरफथी कविवर्य मोरारिदानजीने ‘महामहोपाध्याय’ना ईश्वकाव अेनायत करवामां आव्यां हता.

वा उपरांत वीलसन साहेबनी ‘इन्डियन कास्ट’ नामनी किताब पृष्ठ १८१ थी १८१ अने शेरीर साहेब कृत ‘हिंदु ट्राईल्यार पन्ड कास्ट्स’ किताब पृष्ठ ५२ थी ५४ मां चारण ज्ञातिनी मुक्त कांठे प्रशंसा करी छे :

१९८ चारण जातिना याचको :-

“चारणो के याचको में प्रथम नंबर ‘कुलगुरु’ हैं जो जाति का ब्राह्मण हैं और उज्जैन में रहता हैं जो चारण के अयाचक हैं।”

-कविवर्य वारहठ कृष्णसिंहजी.

“चारणो द्वारा दान में दी हुई हजारों रूपयों की माफी चारणो के गाँवों में ब्राह्मणों के अधिकार में हैं। ये चारण के पुरोहित कहलाते हैं। उज्जैन का एक प्रसिद्ध ब्राह्मण घराना जो समस्त चारण जाति के कुलगुरु पद पर प्रतिष्ठित है, कई सौ वर्षोंका चारण जाति का इतिहास सुरक्षित रूप में संग्रहीत किये हुए हैं।”

-मेजर साहेब श्री रघुवीरसिंहजी (बीरसतसई)

उज्जैनमां चारणोना कुलगुरु शक्तिदानजीनी ४ थी वहीना
५८३ मां पृष्ठ पर बारहठ लाखाजीवे करी आपेल पक परवानो
छे. प परवानो श्री लाखाजीनुं दानपत्र छे. प परवानाना चारे
खणे चार गोल मेहर छाप सिक्का छे. तेमां दरेकमां लखाण
छे के “॥श्री॥ श्री दीलीपतपातसाहजी १०८ श्री अकबर साहजी
बदे दवागीर बारठ लषा ॥ (बदे दवागीर अर्थात् आशिवादि देनार)

॥ परवाना ॥

लीपावतां बारठजी श्री लघोजी समस्त चारण वरण
बीसज्जात्रा सरदारांसु श्री जे माताजी की बांचज्यो अहे तपत
आगरा श्री मातसाजी श्री १०८ श्री अकबरसाहजी रा हजुरात
दरीपाना मांही भाट चारणांरा कुलरी नंदीक कीधी जण वषत
समस्त राजेसुर हाजर था बाका सेवागीर वी हाजर था जकां
सुण अर मोसु समंचार कहां जद सब पंचारी सलालु कुलगुरु
गंगारामजी प्रगणे जेसलमेर गांव जांजीया का जकाने अरज लीय
अहे बुलाया गुरु पधारया श्री पातसाहजीनी रुबकारीमें चारण
उत्पत्ति साख सिवरहस्य सुणायें पडतां कबुल कीधो जणपर
भाट झुटा पडथा गुरां चारणवंसरी पुषत राषी नीबाजस सारां
बुतासु सीवाय बंदमें कीधी और मारा बुता माफक हाते।
लाप पसाव प्रथक दीधा गांवकी पवन बावन हजार वीगा जमी.
ऊजेणके प्रगने दीधी जणकरो तांबपत्र श्री पातसाहजीका
नांवको कराय दीधो अणसवाय आगासु चारण वरण समस्त
एवां कुलगुरु गंगारामजी का बाप दादा व्याव हुप जकणमें कुल
दीवारा रुपीया १७॥) और त्याग परट हुवे जीणमां मोतीसरां
को नांवो बंधे जीणसु दुणो नांवो कुलगुरु गंगारामजीका बेटा
पेता पायां जासी संमत १६४२ रा मती माहा सूद ५ दसकत
पंचाली पञ्चालाल हुकम बारहठजी का सु लीयो तपत आगरा
समस्त पंचाली सलाहसु आपणो या गुरांसु अधीकता दुजो नहीं छे.

अर्थात् लखावनार बारहठ लखोजी समस्त चारण वर्णना वीसोतेर (वीशोत्रे अटले २३ शाखाना) सरदारेना जयमाताजी चांचजो अहिं पाटनगर (तखत) आगरामां श्री बादशाह १०८ श्री अकबर बादशाहनी हजुरमां कचेरीमां कोईक भाटोथे चारणोना कुलनी निंदा करी जे वस्ते बधा राजाओ हाजर हतां अने एमना सेवको पण हाजर हता तेमणे सांभळीने मने समाचार आप्यां पटले बधा पंचो (चारण ज्ञातिना मुख्य आगेवानो) नी सलाहथी जेसलमेर परगणामां आवेल गाम जाजियांना कुलगुरु गंगारामजीने पत्र लखीने अहि बोलाव्या. गुरु पधार्या. श्री बादशाहनी रुवरुमां चारण उत्पत्तिशास्त्र शिवरहस्य संभळाव्यु. पंडितोथे ते कबूल राख्युं, जेनाथी भाट जुडा सावित थयां. गुरुप चारण वंशनी मदद करी (वात दढ राखी) वक्षीशमां सौप पोताना गजाथी बधारे दक्षिणा आपी अने मारा गजा प्रमाणे हाथी आयो अने लाख पसात्र जूदा आयो. गामना बदलामां उज्जैन परगणामां वावन हजार बीधा जमीन आपी जेना तांबापत्रे लेख बादशाहना नामनो करावी आयो. आ सिवाय कुलगुरु गंगारामजीना बाप दादाने आगळथी चारण वर्ण-समस्त पंचो तरफथी विवाह थाय ते प्रसंगे दापाना कुल रु. १७-५० (साडा सतर) अने पखाकेर (त्याग आये) तेमां मोतीसरोना नामे जे नकी थाय तेथी वमणुं कुलगुरु गंगारामजीना पुत्र पौत्रने मळशे सवंत १६४२ नी मिति महा सुद ५ दस्तक पंचोली पचालाल पाटनगर आग्रा मध्ये बारहड्जीना हुकम तथा सवे' पंचोनी सलाहथी लख्युं. आ गुरुथी बधारे कोई नथी.

२ दुसरे नंबर पर पुरोहित है जो चारणों की प्रत्येक शाखाओ में गुजर, गोड, दाहिमा, औदीच, सनादय आदि सभी जाति के ब्राह्मण हैं जो अनेक धर्म कार्यों में और जन्म विवाह के समय चारणों से दापा आदि दान लेते हैं और चारणों की दी हुई उदक डहोली भी खाते हैं।

३ मोतीसर : 'कच्छ-भुजना राजकवि मावलजीनी पासे
माणेकजी नामे रजपूत रहेतो. ए माणेकजीने मावलजीनां रचेला
तमाम काव्यो कंठे हता. मावलजीए उदेपुरना महाराणानें एक
ग्रंथ बनावेलो. महाराणाना तेडाव्या छतांये मावलजी उदेपुर
जई शकता नहोता. अवामां माणेकजी रजपूत मावलजीनु' नाम
धारण करी उदेपुर जई थे आखो. ग्रंथ पोताने कंठस्थ होईने
राणा समक्ष संभलाची मोड़ु ईनाम उपाडी आव्यो भुजना
रा'प पने केद कर्यो. आखरे मावलजीए पोतानी पुत्रीओना विवाहने
प्रसंगे रा' पासेथी माणेकजीनी मुक्ति मागी 'माणेकजी तारो
मांगणियात थाय तो छोडु' अवी रा'अे शरत मूकी. अे शरते
माणेकजी छूटयो अे मावलजीनो याचक ठर्यो. ते परथी अनां
वंशजो मोतीसर कहेवाया ने चारणोना याचक बन्या. काव्य
रचनानी सिद्धि तेओनी सारी पेठे वरी छे. आजे वा जाति
मारवाड तेमज आंही अल्प संख्यामां छे."

- श्री इवेरचंद मेघाणी.

मोतीसरनी एक विरदावळी :

(वचनिका)

सती जतीने सुरमा, अगम निगम गिरा उचार,
चारण खेत कसर नही. चारण अे गण चार.
चारणांकी बडाई, कवि के हैंया की सूध पाई,
लबांकु लाख, देवां कुं सदा लाख,
लडवेकुं शूरा लडावेकुं महापुरा.
के ता चाका उपर चारण मद बेदता वारण,
गाहडो का गाडा किरती का हमाल,
परभोम का पंछी वेद चार का बणेया,
दरवारो का धेसां, राव राजो का भैया,
अणीपाणीका अखाडा, शूरवाकुं पोसती,

कायरका कुदाढा, खत्रियन का तारग,
परमूगत का मारग वेभदाट अंबाड,
वाजता नगारां, सूथांकी केथली,
सापुका भारा छेल छेलुं कुं जेतधार,
लो विसोत्तर के शणगार, कायर का केयडा,
सुमूका खेदड बासक का दौहिद,
सूरज का भाणेज आसां के ना अवर केडवा.

४ चारणों के बौथे याचक 'राव' (भाट) हैं जो चंडीसा
जाति के भाट कहलाते हैं। ये भाट राठोड़ क्षत्रियों के और
चारणों के एक ही हैं।

५ रावल : "असल चारणना पुरोहित ब्राह्मण : पण
कच्छना राजकवि मावलजीनी बे पुत्रीओने परणावती वेळा
बन्नेने कजाडां थता होवाथी एक वेवाई पश्चना खूटव्या प
पुरोहितोप बन्ने कन्याओने बदलावी नास्ती : सारी कन्या सारा
बरने अने मोळी मोळाने परणावी दीधी. चारणो खिजाया.
गोरने मोंमां थूकीने बटलाव्या. ए बटलेलाओने न चारणो राखे
के न ब्राह्मणो राखे. पछी वाघा नामना चारणे पोताना वंशा-
वलीना चोपडाथे ब्राह्मणोने सोंपी तेमने चारणोना वहीवंचा
बनाव्या. (त्यां सुधी चारणो पोते ज पोतानी कोमना वहीवंचा
हता) पछी ब्रह्मभाटो आ प्रदेशमां आव्या त्यारे आ रावलोने
धंधाभाईओ बनावी अपनाव्या, वहीवंचा स्थाप्या. अत्यारे तेओ
चारणोनां नाम मांडे छे; साथे जसे छे, ने चारणोने याचे छे."

-श्री झवेरचंद मेघाणी

६ "छडे नंबर के याचक 'गोईदपोता' हैं। गोईद
जोधपुर के महाराजका नगारची (नगारा बजानेवाला ढोली) था
परन्तु जोधपुर के मोटा राजा (उदयसिंहजी) पर आउवा नगरमें

१६४२ के सवंत में धारणा हुआ उसमें यह गोइंद ढोली अपने हाथ से अपना गला काटकर सब चारणों से पहिले मराथा इस कारण गोइंद के वंशको चारणोंने अपना याचक बन लिया जो गोइंद पाते कहलाते हैं और अन्य ढोलियोंकी अपेक्षा अधिक माने जाते हैं।

७ सातवे याचक 'वीरमपोता' जो वीरम कहलाते हैं। यह भी ढोली ही है परन्तु सामान्य ढोलियों से अपने को कुछ अधिक मानते हैं इनके साथ ही सामान्य ढोली भी याचक हैं जिनको कही 'धोला'भी कहते हैं।"

-कविवर्य वारहटु श्री कृष्णसिंहजी.

राजकवि श्री मावदानजीभाई रत्नु यदुवंशप्रकाशमां चारणना याचकों विशे लखे छे के :

देहा

"मंगो मगणहार, कुरो ज खेदा कुरमे,
आगे अइदी वार, दान न दीयो। देआडें।

अर्थ : हे याचकों तमे मागो कारण के भविष्य मां आगल उपर थेवौ वखत आवशे के कोई तमोने देआडें। थेक पण दानमां नहि आपे, तेथी तमारा कुलना वारसो शु खाशे ? माटे मांगो मांगो.

खरेखर जाम लाखाना वाचयो कल्यायुगमां सत्य नीबलगा छे.

उपरना दूहाथी ते दिवसथी त्रण जाती याचकोनी नवी उत्पन्न थई अने ते माताजीना हुकमथी चारणोंने याचवा लागी.
१ रावल २ वीरम अने ३ मोतीसर.

राजपुतोंने जेम मीर, लंघा अने भाड प त्रण मुख्य जाचक छे. तेवी ज रीते चारणोंना पण त्रण जाचक मावल साबाणीना

यज्ञमां थया अने मेर वाईप तेने दान आपी याचक स्थाप्या.
ते विषे प्राचीन दुहो छे के :

जुं रावळ वीरम जुवा, मोतीसर खटमल
शक्ति चारण समपीओ, एतो अचो अवल.

अर्थ : जु, जुवा अने मांकड जेम वळगे तेम चारणोने आद्यशक्तिप
रावळ, वीरम अने मोतीसर रूपी याचको वडगाडया.”

आ उपरांत अन्य केटलीक जातिओ चारणना याचको छे
१ 'रावळ (रखयो) : यह भी कुलीन है, पर देवी नागवाई के
अभिशाप से नाटकीय अभिनय कर चारण जाति का मनोविनोद
करने के कारण 'रावळ' कहलाये । '

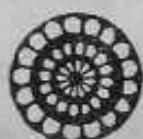
-मेजर साहेब श्री रघुवीरसिंहजी.

सौराष्ट्रमां चारणना 'रखया' छे.

२ मीर : मुसलमानो छे पेताने तानसेनना वंशज कहेवडावे
छे. चारण जातिना याचक छे, सपाखरा गीतो अने चारणी
साहित्यमां देहां छंदो सारा बनावे छे.

३ उदिया : चारण जातिना याचको छे. मीरो साथे तेओने
रोटी बहेवार नथी.

४ ढाढी : असल हिन्दु कृष्णना समयमां नृत्य, रास वगोरे
करता. तेओ काठीओनी साथे तेना मागणीयात बनी रह्या
पछी मुसलमानोप तेओने वटलाव्या. चारणोने पण याचे छे.



[16] दंतकथाओ

- १६.१ सूतपदमांथी चारणपदनी दंतकथा.
- १६.२ तमरना वंशज चारणनी दंतकथा.
- १६.३ चाथावेदनी उपमानी दंतकथा.
- १६.४ नाग पिंगलनी दंतकथा.
- १६.५ पृथु अवतार समये चारणने वीररसनी भेट.
- १६.६ चारणजातिमां विलक्षण वृद्धि.

‘इतिहासनु’ सत्य तारबबामां अनुश्रुतिओने पण स्थान तो छेज कारण के अनुश्रुति-दंतकथाओ अस्तित्वमां आवे छे, तेओमांथी मोटाभागनीओमां उँडे सत्यनुं तत्त्व तो पडयुं ज होय छे. चमत्कारिक ओपथी थेने उत्तरोत्तर लेकाये वहेलावी होय छे, प पनेा विशेष.” -थी के. का. शास्त्री (कच्छ दर्शन)

१६.१ सूतपदमांथी चारणपदनी दंतकथा :-

ब्रिष्णुपुराण अने महाभारतमां पृथुराजाना ब्रह्मयज्ञमां ‘सूत’ उत्पत्तिनी कथा आपवामां आवी छे. केटलाक विद्वानोये आ सूतने चारणना मूळ पुरुष तरीके ओळखावी पक दंतकथा प्रस्तुत करी छे.

भूमित्र नामनेा थेक सूतने तेना वंशनेा नाश थाय तेवो श्राप कश्यपऋषिये आप्यो हतो. आथी आ श्रापना निवारण माटे सूत भगवान शिवने शरणे जाय छे. नंदीने चारी भगवान शिवने प्रसन्न कर्या. शिवे वरदान मांगवानुं कहेता सूते वंशवृद्धिनुं वरदान माझ्युं. शिवे आवरी नामनी नाग कन्या साथे विवाह

करावी आप्यां ने वंशवृद्धिना आशिर्वाद आप्यां थे समये सूतपदनें त्याग करी चारणपद धारण करे छे. ते सूत १२० पुत्रोना पिता बने छे. ते पुत्रोना नाम उपरथी चारणोमां १२० शाखाओ अस्तित्वमां थावी.

नोंध : पृथुराजाना ब्रह्मयज्ञ पहेलां पण चारणकुल अस्तित्व धरावतुं हतुं तेवा धणां उल्लेखो पौराणिक साहित्यमां छे. ब्रह्मयज्ञमां चारणो हिमालयमांथी आव्यां हता थे समये पृथु राजाथे चारणोने तैलंग देश प्रदान कर्यो हतो.

सूत प पक अलग जाति छे. सूतपदमांथी चारणपद धारण कर्यानी दंतकथा कपोळ कलिपत छे. चारणोनी मुख्य शाखाओ २३ छे पेटा शाखाओ ६०० छे.

१६.२ तमरना वंशज चारणनी दंतकथा :-

“चारणनी उत्पत्ति विशे पक एवी दंतकथा छे के : शिव-पार्वतीना मुख्य वाहनोमां जे नंदी अने वाघ हता, ते दररोज पक वीजानो नाश करी देता आ त्रासमांथी उगारदा माटे पार्वतीप पोताना केशमांथी पक पुरुष उत्पन्न कर्यो. जेणे नंदी अने वाघ वच्चेनो वेभाव समावयो. आ पुरुष ते ‘चारण’ ने कहे छे चारणना आ कार्यथी शिवजी तेनी उपर प्रसन्न थया अने पक सुंदर नाग कन्या परणावी. आ नाग कन्याने चारणथी बे पुत्रो थया जेमांथी पकनुं नाम ‘नाग’ अने वीजानुं नाम ‘तमर’. आ ‘तमर’ ना वंशजो ते ज हालना चारण लोको अने पेला नाग ने तो शिवजीप कायम माटे पोताना सेवक तरीके राखी लीधो.”

—गोस्खामी मोहनपुरी.

१६.३ चाथावेदनी उपमानी दंतकथा :-

पृथु भगवान ज्यारे हिमालयमांथी पृथ्बी उपर आव्या त्यारे तेमनी साथे तेओ नाद अने बुंद नामना चारणोना बे

आब पुरुषोने पोतानी साथे लाव्या, तुंदे आवीने वेदने। उच्चार
नादथी कयों त्यारे चारणोने चोथा वेदनी उपमा मळी

चारण चोथो वेद, वण पढीयो वातो करे,
भाखे बागम भेद, साचुं सोरठीयो भणे.

१६४ नाग पिंगलनी दंतकथा :-

“शैषनागनुं बीजुं नाम पिंगल नाग छे. पि गल नागने
पोता उपर केटली पृथ्वी रही छे, ते जोवानी ईच्छा थतां पृथ्वी
पर आव्यां, त्यां नाग पिंगलनी पाछल गरूड पडयो, पटले तेणे
नागनुं रूप फेरवी चारणनुं रूप लीधेल अने गृहस्थाश्रम बांधेल.
गरूड पण आवीने तेमना घरनी आसपास तेने पकडवाना
ईरादाथी रहेतो हतो. पक दिवस नाग पांचमनो दिवस आवतां
तेमनी खी नाग पूजा करवा माटे नैवेद्य लईने नागना स्थान
उपर जतां हतां त्यारे नाग पिंगले कह्युं के “तारे तो घरमां ज
नाग छे माटे तारे त्यां जवानी जरूर नथी तुं मारी पूजा करी ले.”
पम कही नाग पिंगले तेमनुं मूळ स्वरूप बताव्युं. जेबुं फरीने
नागनुं रूप लीधुं अने घरना उंबरा सुधी आवे छे, के तुरत ज
गरूड आवीने नागने उपाडी सुमेरु पर्वत उपर लई जाय छे;
त्यां जई गरूड नागने खावानो विचार करे छे त्यारे नाग पिंगल
कहे : ‘चारण देह धर्या पछी मने कवितानुं ज्ञान थयुं छे अने
हुं कवि छुं, पण हजी काँझे लखायुं नथी, तमे अहीं सुधी
लावता मने समग्र पृथ्वीनुं खूब ज्ञान थयुं छे तेथी कविता
लखवानी ईच्छा रही जाय छे.’ त्यारे गरूडे कविता बनाववानी
रजा आपी. नाग पिंगल पहेलुं काव्य पचास कोड जोजन
पृथ्वीनुं वर्णन करतुं कवित सजै छे.

“पचास कोड पीठ पृथ्वी तणुं, कवित नाग पिंगल कहे,
अे पछी काव्य ज्ञान नाग पिंगले गरूडने आपता तेनामां

सद्बुत्तिनी प्राप्ति थाय छे. वेरबुति गढडे आहीने 'नाग पिंगळ' ने गुरु तरीके स्वीकारे छे. नाग पिंगळ काव्य शास्त्रानु' वंधारण तैयार करी 'भुजंग प्रयात' छेल्लु' काव्य रची चाल्या गया छे. आजे पण 'पिंगळ' 'पिंगळशी' एवा नाम चारणजाति सिवाय वीजी जातिमां प नाम जोवामां आवता नथी चारणोमां ते नामनी महत्ता छे. अने ते शेषनागना भाणेज थाय छे तेवी कथा चाले छे. "भाणेज मोरींग तणा." जेथी शेषनागकुळ केवाती आहीर झातिने चारण 'मामा' कहीने बोलावे छे. चारण अने आहीरने मामा भाणेजने सबंध छे." (पिंगळ छंद शास्त्रमांथी)

१६५ पृथु अवतार समये चारणने वीररसनी मेट :-

"भगवान पृथुप नवनिर्माण माटे अवतार धारण कर्या त्यारे देयाने नृसिंह अवतार वस्ते पडेली मुश्केली याद आवी. हिरण्यकशिषुना वध वस्ते भगवान नृसिंहनां वीररसे उछाल्या लीधेलो अने तेमणे रौद्र स्वरूप धारण करी राक्षस राजनी छाती फाडी रूधिरपान करेलु'. प वस्तनु' विकराळ अने भयंकर स्वरूप जोई वधाना पग नीचेथी धरती खसी गई हती. पमने थयेलु' के : "भगवाने हिरण्यकशिषुनी छाती फाडया पछी त्रणेय लोकने फाडी खाशे के यु? नवनिर्माणने बदले प्रलय थशे के यु? प वस्ते तेमने समजायु' के वीररस बहु चंचल छे, माटे तेनु' सातत्य जाळवी राखलु' अने ते रौद्र रसमां पलटाईने अनर्थ न करी बेसे प सौथी वधारे महस्त्रानु' छे." भगवान पृथुप नवनिर्माण वस्ते प जवाबदारी चारणोने सेंपी त्यारथी चारण पोतानी प जवाबदारी अदा करवा लागी गयो. वीररसना सातत्यने चारणे राजपूती, क्षत्रियवट चरोरे नाम आण्यां; अने पनी उपासनामां प धूनी बनी रह्यो."

१६-६ चारणजातिमां विलक्षण बुद्धि :-

बारहठ नरहरिदासकृत अवतार चरित्रना मच्छावतारमां जणाव्युं छे के मच्छ भगवाने शंखासुरनी प्रार्थनाथी प्रसन्न थई वरदान आप्युं छे के “तारा क्लेवर (शंख) मां पाणी भरी जे साधु पुरुषो मने स्नान करावशे ते पूजाने हुं अंगीकार करीश.” त्यारवाद तेना क्लेवरमां पाणी भरी ब्रह्माये वेदनुं प्रक्षालन करी ते पाणी ब्रह्मदेवाने आप्युं शंखना उदरमां प्रवेश पामेला पाणीथी ग्लानि यतां ऋषियोये अहण कर्युं नहीं पछी ते पाणी ब्रह्माप चारण महात्माओने आप्युं जेनो तेओप अती स्नेहपूर्वक स्वीकार कर्यो अने उदरपान कर्युं त्यारथी चारण जातिमां विलक्षण बुद्धिवक्तव्यनो प्रकाश देखाय छे.

(देहो)

चयमुख सो जल चारणहि. दयायुक्त लै दीन;
प्रीति सहित तिहि पान किये बाढत बुद्धि प्रवीन.



[17] चारणनी अमीरात

नाम रहता ठकरां, नाणां नहीं रहत,
कीर्ति केरा कोटडां पाडयां नहीं पडत.

आ देहामां कविप यश-कीर्तिनी वडाई करी छे ते यथार्थ
छे, त्याग, शौर्य, समर्पण, सेवा अने दरियावदीलना प्रसंगो
जुग जुग सुधी जनसमाजने प्रेरणा आपता रहां छे.

सांप्रतयुगमां माणसाईना दीवाओनी ज्योत मंद पडती जाय
छे अे टाणे लोकप्राणना पयगमधारी खमीरचंता मानवीओनी
किर्तिगाथाओ सांभलवी अने संभलाववी ए पण अेक युग धर्म
गणाय छे.

(१) हालारना खडिया शाखाना अपंग चारण कोलवा
भक्तने श्री कृष्णचंद्रना दर्शननी तीव्र ईच्छा थई. द्वारका पहोंचता
अद्योरीनी दशा जेवा थई गया पुजारीओअे मंदिरमां के चोकमां
भक्तने प्रवेश आप्यो नहीं. चोकनी बहार कोलवा भक्ते अन्नजल
त्यागी अखंड जाप उपाडया. सात दिवस बाद कोलवा भक्त
धरणानी अंतिम स्थितिप आवी गया त्यां तो मंदिरमां चमत्कार
थयो. कोलवा भक्तने श्री कृष्णनो साक्षात्कार थयो. कोलवा
भक्त कहे “प्रभु हुं तो अपंग छुं, केवी रीते मंदिरमां आबुं”
कहेवाय छे के मंदिरनो मुख्य दरवाजा कोलवा भक्त तरफ फरी
गयो. अने कोलवा भक्त सोळेकळाना थई रहा.

कोलुवा अपंग भया, (कृष्ण) दरशण काजे द्वार,
हठ किया बेठां पछी हरि गया मे हार.

(२) जहांगीर वादशाहनी कचेरीनां प्रांगणमां आवेलो
न्यायघंट पक गाये बगाडयो. जहांगीरे दिवाने आम खासमां
उपस्थित भक्तकवि श्री नरहरदासजीने गायनी शी फरियाद होई
शके ते जणाववा फरमाव्युं. आना प्रत्युतरमां कविश्रीथे गायनी
फरियादनुं छप्पय प्रस्तुत कर्युः :

जो अरि मुख त्रण धरत सबव मारत नह कोई,
हम गरीब त्रण चरही, बचन उचारत होई,
अमृत हिन्दु न देत, काल कुट मुगल न पावहीं
पज पुत्र हम जणे, सकल सब के मन भावहीं,
कह नरहर सुन दीलीश्वर, कहत ही हम जारे करन
कीहीं चुक तूम मारत हमे, मुई चाम सेवत चरन
छप्पय सांभळता ज जहांगीरे हुक्म फरमाव्यो के, 'आजथी
मारा साम्राज्यमां गोवध बंध करवामां आवे छे.

(३) चितेडना महाराणाने प्रशस्ति कहेवानी ना पाडनार
भगवतवत्सल ईसरदासजीप पक अत्यंत गरीब मुस्लिम दाढु
पठाणे पोतानी आजिबीकानो आधार समान पक नो पक बळद
कविराजने वाया तेमना प्रवासमां सरळता करी आपनार
दिलावर दिलनां पठाणनी प्रशस्ति कही तेने अमर करी दीधो.

चितेडे मन चळीयुं नहि, देता लाखुं दाम,
बांध्युं बालागाम, देणोपाणी दादवा
सोजां जेना चित (पनां) वरण कांउ वखाणीप
प्रहलादेय पञ्चित्र दानव हु तो दादवा.

(४) गुजरातना बगोदर गामे रामभाई गढवीने त्यां
जोधपुर महाराजा अभयसिंहजी महेमान थयो. रामभाई गढवीप
महाराजानी भव्य महेमानगती करी. चारणनी रखावट उपर
महाराजा आफरीन थई बोली उठया :

जोधपुरां उदेपुरां बगोदां बरोबरा.

(५) चारण कवि हरनाथनुं दश लाख पसावथी सन्मान थयुं. कलंग नामना कविप पज समामां हरनाथनी प्रशस्ति करी हरनाथे दस लाख पसाव पज घडीप कलंगने अर्पण कर्या.

हरनाथ चारण हुवा जबरा, दुहा पर दश लख लिया,
दश लाज उसने कलंग कवि को लिया पला दिया.

(६) गोंडल नरेश भा कुंभाजीनी कचेरीमां चडते प्होरे पक चारणे आवी देहो कहो :

द्वाला हर हामा तणा बांधाळाने बाढय,
कुंभा खोदी काढय, दुनियामांथी देवडा.

चारणना वेणे भा कुंभाजी काळझाळ थईने जुनागढना दिवान अमरजीनी मददथी देवडाना अघर्मी, अत्याचारी, प्रजापीडक शासकनो नाश कर्या.

(७) भावनगर राज्यनो बहारवटिया जोगीदास खुमाण वरतेज गामनी लूंट पछी चारे बाजुथी घेरायो हतो. बचवानी बारी न हती ते वेळाप भेंडारिया गामना भीम पंचाळीयाप राज रोपनो सोग बनीने पण जोगीदास खुमाणने आशरो वापी आशरा धर्म वजाव्यो हतो.

(८) ‘जूनागढ राज्यना बहारवटिया जेसाजी अने वेजाजी सरवैया सोनरख नदीने काठे आराम करे छे.’ तेवी बातमी जूनागढना नवाबने मलतां फोज लईने नवाब हाली नीकळ्या. आ समाचार नवाबना दसोंदी भवान साउने मलतां तेणे बहारवटियाने चेतवी दीधां. नवाब फोज साथे सोनरख पर आवता बहारवटियाओ गेव थई गया. नवाबने आ बातनी खबर पडतां भवान साउ उपर कोधे भराणा, त्यारे भवानभाईप कहुं “दगाथी शूरवीरोनुं मारवानुं कृत्य तमारा माटे लांछनरुप होय प थी में बहारवटियाने चेतवी दीधा.” नवाब कहे “कविराज तमे पण आजथी बहारवटिया साथे रही तेमनने चेतव्या करो”

चारण पज घडीप हाली नीकल्यो बहारवटामां सामेल थयो. सरदैयाथोप दसोंदी तरीके स्थाप्यां बहारवटानुं समाधान थतां भवान साउने ८ गाम अने ब्रीजो भाग मळ्यो.

(९) काठी दरबार आपो देवा वालो दगाथी वरजांग धांधल नामना बीर पुरुषने मारी नाखचां जई रहो हतो. ए समाचार सनाळीना कविराज श्री काशियाभाई लीलाने थतां वरजांग धांधलने चेतची दीध्यो अने आपा देवा वालाने ठपको आपता कहुं के “कशियो लीलो जीवतो होय ने तुं वरजांग धांधल जेवा अमीर बीर पुरुषने दगाथी मार प चात तो कदी बनती हशे ?”

(१०) महात्मा ईसरदासजीना सौथी नाना पुत्र जगमालजीप एवी प्रतिद्वा करी हती के “क्षत्रियना हाथनेा कसूंचो लेवा नहिं” बूंदीना रावे लाख पसाव करी चारणनी टेक तोडवा बाग्रह कर्या पटले चारणे गळे कटार नाखी कहुं के “मारा मृत्यु पछी मारा में मा कसूंचानी अंजली आपजो रावे हठ छेडी कविराजनी टेकने बंदी रहा.

(११) भावनगरना राजकवि श्री पाताभाई नरेला अंग्रेज इतिहासकार फार्वसने रासमाला माटे इतिहासिक साहित्य लखाचता हता. फार्वसना वालको शिव मंदिरना नंदी उपर बेसता हता. आ जोई कविराजे कहुं के “जुओ साहेब ! आ नंदी तो अमारा हिन्दुना भगवाननुं वाहन छे अेटले ते पवित्र गणाय तेना उपर कोईधी बेसाय नहिं तेम अमाराथी आ हृदय जोवाय पण नहिं” फार्वसे कविराजनी माफी मागी पज घडीप शिव मंदिरमां नंदी मोकली आप्यो.

(१२) बहारवटिया बावावालो धींगणामां काम आवतां राजरोपनेा मोग बनीने पण मेराणी गामना चारणोअे बावावालानां शरीरनी अंतिमक्रीया करी हती.

(१३) गढ़कुंडला गामने चारे आंबोजी अने राहेजी नामना वे चारणो वार्तानी जमावट करी हती प समये मोडजी नामनो बहारवटियो गाम लुंटवा चडी आव्यो. आंबोजी अने राहेजी वार्ता बंध करी तलवारे लई मोडजी सामे कूदी पड़या. बन्ने बंधुओ अभूतपूर्वी वीरताथी लडी वीरगति पास्या. धरतीनी आवरू खातर मोतने मेटनारा बन्ने चारण वीरोनी खांभी आजे पण उभी छे. (श्री दोलत भट्ट)

(१४) जोधपुर के महाराजा विजयसिंहजीने जब परम स्वामिभक्त पव शूरवीर आसोप ठाकुर महेशसिंहजी के जो जोधपुर की और से सेना के हवावल में लडते हुप वीरगति के प्राप्त हुअे थे वंशजो को आसोप की जागीर प्रदान न कर युद्ध से भागे हुप अपने प्रीतिपात्र जगोजी को दे दी तो किसी चारण कविने इससे क्षुब्ध और व्यथित हो महाराजा पर यह व्यंग्य-बाण छोडा-

मरज्यो मत माहेस सम, राड मध्य पग रोप,
झगडा में भाग्यो जगो, उण पायो आसोप.

(१५) मल्हारराव होल्कर सामेनी लडाईमां राजपूतो संधी करवानो विचार करता हता त्यारे सेनापतिप चारण कविराजनो संधि अंगेनो अभिप्राय मांग्यो त्यारे कविराजे कहुं के :

सिंहा शिर नीचा किया, गाडर करे गलहार,
अधापतियां शीर ओढणी, तो शिर पाघ मल्हार.

सौन्यमां कविराजना व्यंग बाण फेलाई जता शौर्यनो संचार थयो. मल्हारनो सामनो करी विजय मेलव्यो.

(१६) ईडरना भारमलजीना वहीवटदार सुवा मुवारिझ-उलमुलके कचेरीमां चितोडना महाराणा सांगाने कुतरो कहो. वे

समाचार राणा सांगाने थतां राजपूतोनी सेना लई ईडर उपर
चडाई करी. ईडरनी हार थई. राणा सांगावे राज्यना खरा
वारलदार रायमलजीने गादीप बेसाडी अहमदनगर घेर्युं.
अहमदनगरमांथी मुवारिझउलमुलकने केद कर्यो. राणा सांगाप
कविराज जीमणाजीनेा मुवारिझउलमुलकनेा सज्जा माटे अभिप्राय
पूछयो. कविराजे कहुँ :

शेर न मारे श्वान को, नहि खडियो नहि खाज,
हड हड कर हांकी भूको, माफ करो महाराज.
कविराजना कहेवाधी राणाप मुजारिझउलमुलकने क्षमा आपी.

(१७) मेवाडना रणमल राठोडनुं रावत चूडाप घेरनी
वसुलात माटे खून कयुं. परंतु पट्टलेधी क्रोध न शमता तेणे
हुकम कर्यो के 'रणमल राठोडना मृत शरीरनो कोईथे अग्निदाह
न आऐ' रणमल राठोडनुं शरीरनुं अग्निदाह विनानुं पडयुं
हतुं. आ समाचार चंदन खडिया नामना चारणने थतां तेणे
तुरत ज राजाआज्ञा चिरुद्ध जईने रणमल राठोडना मृत शरीरनो
अग्निदाह करी दीधो. राज तरफथी आ कार्य अंगे चंदन
खडिया उपर केस चालयो.

चंदन खडियाप न्याय सभामां थेटलुंज कहुँ के "राजपूतोनी
मानवता अने सभ्यतानुं रक्षण करवानुं जेने सेंपवामां आव्युं
हो ते चारण ज्ञातिनो हुं सभ्य छुं. आथी आ राजआज्ञा प
सभ्यता मानवता राजकुळ परंपरा अने देशना उज्जवल भाविनी
द्योर अवगणना करती हती थेट्टले तेनी अवगणना करवानुं मने
वधारे उचित लाग्यु'" पम कही कविराजे कवि तरीकेनो राज-
पेशाक, व्याभूषण न्यायासने मूकी सपरिवार साथे मेवाड होडी
चाली नीकलयो.

(१८) राजाशाहीयुग हतो १९३८ मां राजकोट खाते अखिल हिंद चारण संमेलन योजायुं हतुं. संमेलननी वधी व्यवस्था राजकोट स्टेट तरफथी थई हती. सोराष्ट्रना राजवीओ रात्रिना कार्यक्रममां उपस्थित थया हता. कार्यक्रममां उपस्थित समुदाये राजवीओनी प्रशस्ति अने वीर काव्योनी अपेक्षा राखी हती, परंतु प भ्रम भांगी जाय पबुं हतुं. आ अंगे श्री झवेरचंद मेघाणीजी लखे छे के : “रात्रिना दायरामां राष्ट्रभावनानी नृतन लोककविता रेलावनारा बे त्रण पातळी जीभेवाळा ‘चारणोनां नाम तो नथी भूलवा जेवा. दूला भगत, मेरूभा गढवी अने खेतसिंहजी मिसणनी त्रिपुटी व्यासपीठ पर पोताना परजिया कंठोनी मिलावट करीने शा लाडकोडथी राष्ट्रभावनाना रम्य, भयानक, नाजुक तेमज विराट स्वरूपोने रमाडता हता.

“ डोसाजीनी नोवत्युं वागे छे,

“ लीलां लीलां माथडां मागे छे,

“ सूतेलां मानवी जागे छे.

ए गांधी गीतना झळकता शब्दें सांभळी, विराटनी आभ पातळ अने दिगपाळ पर पथराती कल्पना निहाळी तमे नवीन गुर्जरो जरुर प्रसन्न थशो केम के पमां बनावट नहोती. पमांथी पण गांधीजी विषेनी छेल्ली कल्पना

“ शिष कपावे ने देह वेरावे लूंटावे घरवार ”

ए बधुं ज वाणियो भूतकाळनी तवारीखमां करता आवेल छे पण पकज वाणियो कदापि नहि करे :

वाणियो के दिय नमती धारण नहि तोक्ले तलभार.

पवीं पवीं कल्पना गृथणीमां गांधीजीना राजकारणनुं येक चमत्कृतिभय अने चोटदार स्वरूप उभुं थतुं हतुं. वर्तमान राष्ट्रभावनानी पक पण दूषित रेखा पमां नहोती जडती.”

अधे ढांक्यो उमेरो जई सम्राटोने महेले,
 पग रोपी अंगद समान वाणियो
 निज जनने कंकासेथी कायेआ, दिल रोयेआ
 मुख हसियो आयुं विचारी वाणियो
 भारतने आजादी प्राप्त थई दीलहीना लाल कीला उपर
 लहेराता त्रीरंगी ध्वजने कवि कहे छे :

पाताजा शांति त्यां अशांति कों हटाताजा
 दुखी दुश्मनो के हाथ प्रेमसे सहाताजा
 राम के भगीरथ के भरत हनुमानजी के
 बीजी रति दैव जुंके मंत्र तुं सुनाताजा
 आयुं जबरजस्त परिवर्त्तन लावनार कोण ?

जर्मन, अमरीका आफरीका आस्ट्रेलिया त्यें।
 इंडियापे जलनिधि ब्रिटीश फिरी गयो ॥
 देखी महापूर मिश्र, ग्रीस, चीन, तुर्कन को ।
 शूरन समाज इटलीको हहरी गयो ॥
 खता तब खाई नीर दत्ता मेघको न भया ।
 बढी ज्यों महत्ता दधिराज विफरी गयो ॥
 देता नहीं पत्ता कोउ हिंदमें फिरंगिन का ।
 गांधी अगस्त सच्चा सागर को पी गयो ॥
 लींबडी अने पेरबंदर राज्यमां सत्याग्रहना आंदोलन शरु
 थया, राजकवि श्री शंकरदानजी देथाप राजवीओने दोहो
 लखी मोकल्यो :

जेणे जेणे दीधीयुं गांधीने गाल्युं,
 (पनां) दी नुं देवाल्युं जोयुं नटवर जेठवा.

आरझी हकुमतना दिवसोमां कवि श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद
 गढवीप गांधी गीतो रची नवजवानोने प्रेरणाना पियुष पायां हतां.

“गांधी नवयुगनो घडवैयो
 घाट घडी मेदाने पडीओ लेखंडी लडवैयो”

‘गांधी नवयुगने सन्यासी
केई धर्म के संप्रदायनी करी न वाधी पाढ़ी’

* * * *

“आ मोहन गांधी जबरो मदारी,
रम्यो रमत न्यारी न्यारी”

गांधीजीनी हत्या थई. गांधीजीने शोकांजलि अर्पी

“मध रे दरियामां मुकी, नोधारी नावडीने
परलोके कीधुं परियाण रे

अपारींग आंधलां ते कोने रे भलाव्यां वापु
कोण सांभलशे सौनी वाण रे.”

राजस्थान शिरोहीना कवि श्री वाघदानजी गांधीजीनां
हत्याराने कहे छे के :

नाथुराम विनायक लायक के नालायक ।

पूजनीय पुरुष परलोक में पठायो हैं ॥

भारत को भार उतायी के चढायो भारी ।

धर्म के रक्षक के भक्षक पद पायो हैं ॥

जा को जन्म भयो त्यारे जगमें न जाणयो कोउ ।

वाघ कहे हर्ष शोक ठेरठेर ठायो हैं ॥

सिंह को आहार के करी गो आहार श्वान ।

गांधी को गीगयो के ना गजब गीरायो हैं ।

आजे पण चारण कविओ गांधीजीने पटलाज याद करे छे :

खतंत्रतामां खछंदतानी अजब चडी गई आंधी,
पाड़ो आव्य फरीने गांधी.

पायेथी डगमगवा लागी अमूल्य ईमारत आखी,

जबरां तोर्तींग झाड उखडयां नजर पडे नहि नाखी,

वायुना व टोळा वीफर्या चोय दिशाओ सांधी,

पाड़ो आव्य फरीने गांधी.

राजाशाही अने लोकशाही युगनां संधिकाळमां चारण
कविओथे युगकार्य बजावी अभिन दनना अधिकारी बन्यां हता.



[18] काव्य धारा

(१) शक्तिपुत्र चारण :- (१)

ओ शक्तिपुत्र चारण अब जाग कयुं तुं सोया,
तेरे ही पूर्वजों का अभिमान कयुं ते खोया.
ईस संस्कृतिका उपवन देखो उज्जड रहा है,
मतिवान ध्यान दे तुं निचित कयुं रहा है.
तेरे ही पूर्वजों का परिथ्रम यहां बड़ा था,
अपना जो खून पाकर नवपलुवित रखा था.
सामान्य प न उपवन, अनपार मूल्यवाला,
विच दिव्यता भरी हैं खुश होत रहनेवाला.
ईस बाग काज तेरा, यहां पूर्वजो लडाथा,
चूप चाप कयुं तूं बैठा, अब जाग तूं खडाथा.
कहिं शास्त्र में लिखा है, तेरी विवृद्ध ज्ञाति,
अवतरी योगमाया कवि भक्त जन्मदात्री.
आगे था याह्वल्क विरक्त रूपी राया,
श्री रामका चरित्र भरद्वाज के सुनाया.
गुणवान था गुणाद्य कथता था लोककहानी,
गुंजी रही है अवतक मीठी मधुर बानी.
हरदास, राम, ईसर, नरहर, स्वरूप, सांया,
लाड, गनेशपुरी, गुन श्री हरि का गाया.
सौराष्ट्र के सपूता पिंगल कवि नरेला,
सतवकता कवि शंकर मेरुभा काग दुल्हा
सम्ब्राटकी सभा में निरंकुश रहनेवाला,
कभी ना डरा जरा सा सब सत्य कहनेवाला.
अभियासी कविताका कविराजा जनताका,
सुखदा स्वतंत्रताका त्रयरंगी झंडाका.

पहे वेद रु पुराना, कर गये वो कल्याना,
जनताने सन्माना सब गा रहे हे गाना.
तेरी जवां के शारद अब तक रमा रही हैं,
तेरी भूजां पे ताकत अबतक जमा रही है.
अबतक जहां पे तेरा सन्मान हो रहा है,
निर्भय अरू निखारथ अरमान हो रहा है,
ओ सत्यपथगामी सद् रास्ता बतादे,
कल्यान करनेवाली बानी मधुर बहादे.
कंगाल के रुधिर का यहाँ पान हो रहा है,
ईन्शान बेवफाका सन्मान हो रहा है.
दिल में से देशभक्ति यहां नष्ट हो रही है,
कही राजनीति रीति यहां भ्रष्ट हो रही है,
तेरी ही कविता में ताकत अजब भरी है,
दुश्मन की सामने जो सैना अजब लरी है.
तूं दूरव्यसनका द्वोही करले यही भलाई,
परिवार के बचाले तेरी फत्ते हो जाई.
मैदाने जंग वा जा 'पिंगल' प्रमाद तजकर,
लेहगादे व्योम झंडा सुसंस्कृतिका घर घर.

-श्री पिंगलशीभाई मेघाणंद गढवी.

(२) देहा

रण हाली जै चारण ! चाहे अब लग चैन,
करै सुहड़ जिसडी कहो, विधि सो दूर बणैन.
भोजां की चहरो भडां ! ईखो चारण हणे,
के ही कढता कायरां बाढां चाबुक बैन.

-श्री सूर्यमल्लजी मिसण.

ચારણી સાહિત્ય સંમેલન-ભાવનગર

ગુજરાતની સમૃદ્ધ સંસ્કાર પરંપરાનો મનભર આસ્વાદ માટે ગુજરાત સંગીત, નૃત્ય, નાટ્ય અકાદમી, ગાંધીનગર તથા આધ. એન. ડી. લોક્કલા સંશોધન કેન્દ્ર, મુંબઈના સહકારથી પ્રસ્તુત ચારણી સાહિત્ય સંમેલન મ્યુનિસિપલ ઓડિયોરિયમ ભાવનગર ખાતે તારીખ ૪ થી ૮ ફેબ્રુઆરી ૧૯૮૨ના હિસેબમાં યોજવામાં આવ્યું હતું.

ચારણી સાહિત્ય સંમેલન :- અભ્યાસ અને આસ્વાદ.

ગુજરાત સંગીત નૃત્ય નાટ્ય અકાદમી તથા આધ. એન. ડી. લોક્કલા સંશોધન કેન્દ્ર મુંબઈના સંચુક્ત ઉપક્રમે આ સંમેલન યોજાઈ રહ્યું છે. સંમેલન યોજવા પાછા આપણી જૂની પ્રણાલિકાના એક ભાગ-૩૫ ચારણી સાહિત્યની સાહિત્યવક્ષી અને કલાકારી વિશેપત્રાઓ સમજવા સમજવવાનો, તેની જાળવણી માટે વિચાર કરવાનો અને અભ્યાસનાં પગલાં વિચારવાનો ઉદેશ રહેલો છે.

ચારણોની જુદી જુદી શાખાઓનો અભ્યાસ તેનું સંશોધન, તેમની વાણી અને સાહિત્યનો અભ્યાસ તથા ભાવિ કાર્યક્રમનું આયોજન લક્ષ્યમાં લઈ આ પ્રણાલિકાને ચેતનવંતી અનાવવા આ પ્રયાસ કરાયો છે. આવા મહિત્વના સંસ્કારપર્વનું વિચારણીજ રોપાયું ગુજરાત રાજ્યના સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિના માનનીય મંત્રી અને ગુજરાત સંગીત, નૃત્ય, નાટ્ય અકાદમીના માનનીય અધ્યક્ષશ્રી મનોહરસિંહજ જાડેજાના પ્રેરક સૂચનાથી ગુજરાત સંગીત નૃત્ય નાટ્ય અકાદમીએ તહુસાર એ હિસામાં શુભારંભ કરી દીધો જ હતો.

આવા નિર્ણયક મહિત્વના સાંસ્કૃતિક સાહિત્યક મહોત્સવ વિષે સહચિત્તન અને સહપરિશ્રમ કરવાથી આખુંય આયોજન દીપે ઉઠે એવા શુભાશયથી માનનીય શ્રી મનોહરસિંહજ જાડેજાના સાનિધ્યમાં જમનગરના આ પિંગળશીભાઈ ગઢવી, આ લક્ષ્મણશીભાઈ ગઢવી, શ્રી નારાયણદાનાથ કુરુજના શ્રી શાભુદાનજ, પ્રાંગત્રાના શ્રી રમણુકલાઈ માર, નાની સાણુથલીના દરખાર શ્રી પુંજલવળા, માણુચરના શ્રી લખુભાઈ ગઢવી, ગાંધીનગરના શ્રી કુવુંમાર શાસ્ત્રી, અને શ્રી મહેશભાઈ ચોકસી, તથા મુંબઈના શ્રી મનમુખ જેઠી વગેરેએ સાથે ઐસીને સર્વસંમતિથી એક ઇપરેઝ તૈયાર કરી.

આ પાંચ દિવસના સંમેલનમાં વિઠળોના પરિસ્વાહ સાથે સાહિત્યકારોનાં વાણી, લોકગીત, હંડા, છંદ, કવિત વગેરે ઇપે રસભરપૂર ચારણી સહિતના અભ્યાસ અને આસ્વાહતો બેવડો કાર્યક્રમ રજૂ થશે ચારણી સાહિત્ય સંરક્ષાર પરંપરાની અઠળક સમૃદ્ધિ છે. અને તેમાં ટકાકારો અને નિષ્ણાતો પણ અનેક છે. અખખણ પાંચ દિવસની સમયમાંનાથી બાંધ પેલા આ સંમેલનમાં ગણુતરીના કલાકારો વિઠળોને જ નિમંત્રી શક્યા છોડે. પણ એક નરી દિશામાં સુખદ પહેલ કથાનો આનંદ અને સંતોષ એ નકદર ફળશ્રુતિ છે અને આમાંથીજ નવી વિકાસ કેઢીએ પ્રયાશ કરવામાં સૌનો સંગાથ મળો રહેશે. એવી આરૂ બંધાય છે.'—
બુનુમાર શાલ્વી, નિયામક, ધૂપક સેવા અને સાંસ્કૃતિક પ્રવર્તિતાએ, ગાંધીનગર

કાર્યક્રમ : તા. ૪ ઇંધુઆરી ૧૯૮૨ ચુંબાર, રાત્રે ૮-૩૦

સ્વાગત સંમાન : શ્રી બુનુમાર શાલ્વી, પ્રમુખરાષ્ટ્રાન : શ્રી શંકુશ્રીન ગઢી, પ્રાસાંગિક : શ્રી મનસુખભાઈ જોણા, ઉદ્ઘાટક : પૂ. મુનિ શ્રી હરિધાનજ મહારાજ.

કાર્યક્રમ : ચારણી સાહિત્ય અને પિગળ કાંચો.

સાહિત્યકારો : શ્રી પિગળથીભાઈ ગઢી જમનગર ૨ શંકુશ્રીન ગઢી ભૂજ ૩ શ્રી જુગતરામચ્યાસ વીરપરડા, ૪ શ્રી દરભાર પુંજનવાળા નાની સાયુથલી, ૫ શ્રી તાતદાન રોહડિયા ભાવનગર ૬ શ્રી હરદીનભાઈ ગઢી, કવાડિયા ૭ શ્રી રતિલાલ હવે સોડવઢી ૮ શ્રી લખુભાઈ ગઢી માણ્યાવહર.

તા. ૫ ઇંધુઆરી ૧૯૮૨ ને શુફ્ટાર સવારે ૧૦ થી ૧ પરિસવાંહ ચિપય : ચારણુ ચાતિ અને છતિહાસ-પૂર્વભૂમિકા પ્રમુખ : પૂ. મુનિશ્રી હરિધાનજ મહારાજ. વક્તા : શ્રી પિગળથીભાઈ પાયક ગાંધીનગર.

કાર્યક્રમ રાત્રે ૮ થી ૧૨ વાર્તા !

સાહિત્યકારો : ૧ શ્રી આપલભાઈ ગઢી સુરેન્દ્રનગર, ૨ શ્રી શંકુશ્રીન પારોટ જમનગર, ૩ શ્રી દરભાર પુંજનવાળા નાનીસાયુથલી, ૪ શ્રી અચુભાઈ ગઢી વહ્વાશુ.

તા. ૬ હી ઇંધુઆરી ૧૯૮૨ શતાવાર સવારે ૧૦ થી ૧ પરિસવાંહ ચિપય : ચારણુ ચાણી અને પ્રાકૃત.

प्रमुख : कवि श्री मेकरण्युभाई लीला, वक्ता : श्री हुरिहनश
शंकरदानश्च हेथा लीला, श्री नारायणदानश्च बालिया जमनगर, श्री
नारायणसिंह साधू नेघपुर (राज), श्री डॉ. गंगाधर भोरने, अहमदनगर
(महा) श्री के. का. शास्त्री अमदावाद (वांचन श्री मनसुभाई नेपी.)

कार्यक्रम : हुक्का, छांद, अने कवित रत्ने ६ थी १२

अतिथि विशेष माननीय श्री भनोडरसिंह जडेज.

साहित्यकारो १ श्री पिंगलशीलाई गढ़वा जमनगर, २ श्री
शंभुदानश्च बालेट जमनगर, ३ श्री करण्युहनश्च गढ़वा कुट्ठ, ४ श्री
हरसुरभाई गढ़वा योराणा, ५ पु. श्री हुरिहनश्च महाराज मेथी ६ श्री
मुरारदान पायक लव्याउ ७ श्री नारायणसिंह सांधु नेघपुर, ८ श्री
प्रतापसिंह भडियारिया उत्त्यपुर.

ता. ७ इप्पुआरी १६८२ रविवार सવारे १० थी १ परिसंवाद
विषय यारणी साहित्यनु इप अने परंपरा.

प्रमुख : श्री पिंगलशीलाई पायक

वक्ता : श्री के. का. शास्त्री अमदावाद (वांचन श्री मनसुभ नेपी)
डॉ. शंभुसिंह भनोडर ज्यपुर (वांचन श्री मनसुभ नेपी), श्री
लक्ष्मण्युभाई गढ़वा जमनगर, श्री रेवतदानश्च यारणी मथाणिया.

कार्यक्रम :—

शक्ति अवतार अने देवीज्ञाना अवन वरित रत्ने ६ थी १२

साहित्यकारो : १ कविश्री कलाभाई उदास ठांक, २ श्री मालदान-
भाई देवाणुंह गढ़वा बालेट, ३ श्री मेकरण्युभाई लीला सनाणी ४
श्री पिंगलशीलाई पायक गांधीनगर.

ता. ८ इप्पुआरी १६८२ सोमवार सवारे १० थी १ परिसंवाद

विषय : यारणी साहित्य अने अभ्यास सुचने.

प्रमुख : श्री हिंगलहान नरेला, वक्ता : श्री शंभुदान गढ़वा
भूज, श्री नारायणदानश्च बालिया जमनगर, डॉ. श्री नागण्युभाई लही
सुरेन्द्रनगर, श्री रेवतदान यारणी मथाणिया, प्रि. श्री री. वी. परमार
भावनगर.

કાશેકમ : લોકગીતો ભારમાસી રાતે ૬ થી ૧૨

અદુગીતો : શ્રી પિંગળશાહી ગઢવી - જમનગર.

દસ્તવ ગીતો : શ્રી મહેશાહી મોખણ મોરખા.

લોકગીતો : કુ. મુરલી મેઘાણી - ભાવનગર શ્રી આગરદાન ગઢવી-જમનગર
હુરદાન ગઢવી કવાડિયા, શ્રી હુરસુર ગઢવી બોરાણ્ણા, શ્રી
રેવતદાનજી ચારણુ મથાણ્ણિયા.

સંમેલનમાં વિદોનોના ઉલ્લેખનીય મંત્ર્ય !

“સાહિત્ય ધરતીના કષેદજીમાં પડ્યું હોય છે. અને એ કષુને
વાચ્ય આપનાર વ્યક્તિત્વોની જરૂર છે. ભારતીય અસ્ત્રમાનાં કુળગૌરવ
સમી વ્યક્તિત્વો આવી છે. ચારણુ સાહિત્ય એ સાહિત્યનું આગવું પાસું છે.
અને તે માનવીના અંતરમાં પડેલી સુપુર્પત શક્તિ-આત્મચેતનાને પોતાની
શક્તિ સમજથી સુર પુરી જગૃત કરે છે. સંમેલન મર્મજી, જિતાસુ
લોકોને ચારણુ સાહિત્ય સમજવામાં અને આ સાહિત્ય દ્વારા વ્યક્તિવ
સજ્વામાં ચારણુ સાહિત્યકરોને બળ આપશે.”

પુ. મુનિશ્રી હરિદાનજી મહારાજ

“ લોકગીતો અને ચારણુ સાહિત્યના ગ્રામિણ વારસાને જીવંત
રાખી આવિષેઠી સુધી પહેંચાડવા માટે સૌંદે પ્રયત્નશીલ રહેવું પડશે.
સાહિત્યના આ પ્રકારને આપણે લુપ્ત થવા હેવો નથી અને તેનો વિકાસ
થાય તે માટે વિરભુતિના આરે પહેંચેલી ચારણુ શક્તિને જગાડવાના
હુતુથી આ સંમેલન રાજ્યે પોજયું છે. ચારણુ સાહિત્ય એ તો ગુજરાતનું
સંસ્કાર ધન છે.”

—શ્રી મનોહરસિંહજી આડેજ

“ગમે તે સાહિત્યને ચારણુ સાહિત્યમાં ખપવી શકાય નહીં.
ચારણુ સાહિત્ય અન્ય સાહિત્ય કરતાં જુદું તરી આવે છે.”

—શ્રી શંખુદાનજી ગઢવી

“અત્યાર સુધી ચારણુવાણું પરંપરા મુજબ કંઈસ્થ ચાહી આવે
છે. આને કંઈસ્થ સાહિત્ય લુપ્ત થનું લય છે. તેવે સમયે પણ ચારણોએ
પોતાના આ પરંપરા જણાવી રાખી છે અને કાતિહાસને સમૃદ્ધ અનાવવામાં
મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકા અનુ કરી છે.

આરણો અને આરણયાણીના વિભાગ માટે યુવતી વર્ગને તૈયાર કરવો પડેશો. ચારણોએ સ્વમાનબેર પોતાના પ્રશ્નો સરકાર સમક્ષ રજૂ કરવા જોઈએ.”

—શ્રી હિંગેણાનાન નરેલા

“આપણી મૂળ સંસ્કૃતભાષાનું અપખર્ષ થતા પ્રાકૃત ભાષા બની અને તેમાંથી જ ચારણ વાણી ઉત્તરી આવી છે. ચારણોએ આપણા ધતિહાસને સાચી રીતે રજૂ કરવા મહત્વપૂર્ણ ભૂમેકા અથ કરી છે.”

—શ્રી નારાયણદાનાન ખાલિયા

“સુમારમાં ચારણ વાણી વિશેષ છાપ જેનો કરે છે. ચારણોએ ભૂતકાળની જેમ જ પોતાનો ધર્મ બજાવી આપણી મૂળ સંસ્કૃતિનું રક્ષણ કરવુ જોઈએ.”

—શ્રી મેન્દરણુભાઈ લીલા

ગુજરાત સમાચારનો અહેવાલ:

અરસિકનું પણ દેયું પુલંગિત થધ જાય અને માયું ડોલવા લાગે. ડરપોક કે કાયર માણુસ પણ જેમથી થનગતતો થધ જાય એવી ચારણ વાણી માણવીએ એ જેવો તેવો લહાંવો નથી. સેકઢો વંસાથી શૂરવીરને જરનવતાં અને કાયરને જેમ ચડાવતા ચારણો અને ચારણી સાહિત્યના અસ્ત્રિમતાને લુટ થતી રોકવા, ચારણ સાહિત્યકારોને નવનગૃત કરવા, આજની પેઢીને આ સાહિત્યથી પરિચિત કરવાનો વિવિધ હેતુથી ગુજરાત રાજ્ય સંગીત નૃત્ય નાટ્ય અકાદમી અને સુભ્યધનાં આધ. એન. ગી. લોકલા સંશોધન કેન્દ્રે તાજેતરમાં ચારણી સાહિત્ય સમેલનનું આયોજન કર્યું હતું.

આ કાર્યક્રમની ઘણી વિશેષતાઓ હતી એમાં ડોલેજમાં ભણુવતાં ડાયલ ઐન્યુએટ ચારણો પણ હતા તો સામે પક્ષે માત્ર અક્ષરરૂપન ધરાવતા પણ જરનવતીની કૃપાંની સારસ્વત અનેવા કંબાઓ પણ હતા. એમાં સાહાવાળા, પાંદડીવાળા, જરાનુટવાળા, જોખપુરી ડોટવાળા, કે શેર બજારના ઓાકરો જેવા છોપન ઈયના ડોટવાળા આગવી પેઢીના સજ્ઞાંકો પણ હતા. સામે પક્ષે અમિતાભ બન્ધુન જેવી હેરસ્ટાઇલ અને શુટણુટવાળા આધુનિક ચારણો પણ હતા.

રોજ સવારે ૧૦ થી ૨ પરિસરાંદ રહેતા જેમાં અતુક્ષે ચારણ શાતિનો ધતિહાસ, ચારણી અને પ્રાકૃત ભાષા, ચારણી સાહિત્યનો અભ્યાસ અને સૂચનો વોરે નિપરો પર અનેક વધતા એણા પ્રસંગ વડતાએએ

ભાગાથકિત અન્યો કરી હતી. પ્રસિદ્ધ લાગ્ના શાખી ડૉ. કે. કૃ. શાખી (બાંસશિયા), ડૉ. હન્દિવલલાલ ભાયાણી અને શ્રી દુલેરાય કારાણી, પોતે હાજર રહી શક્યા નહોતાં પણ તેમના વ્યાખ્યાનો શ્રી મનસુખ જેથીએ વાંચી જાઓગાન્યા હતા.

જન સામાન્યને મોજ આવે એવો કાર્યક્રમ રોજ રાત્રે નવચી બાર (ક્યારેક સાડાબાર કે એક) રજુ થતો રહ્યો હતો. નેમાં જમનગરનાં પિંગળારીભાઈ ગઢવી, બોરાચુના હરસુરભાઈ, કંઘના કરણીલાન ગઢવી જમનગરના શંખુદાનજ બારોટ, ભાવનગરના તખતદાન રોહદિયા, નાની સાણથલીના દરખાર પુંજાવાળા, હરદાન ગઢવી, બચુલાઈ ગઢવી વગેરેએ દુંહ છંદ, દંતિલાએ, બારમારી, લોકથાએ અને લોછગીતો રજુ કરીને પાંચ છ હજારની જનમેહનીને મુખ કરી હતી. કેવીકનિયા યુનિવર્સિટીના એક રિસર્ચ સ્કોલર શ્રી જોઈન થોપ્પસન સંગેઠે આવ્યાં હતાં અને આએ કાર્યક્રમ ટેપ કર્યો હતો. મહાનગરીની અહુમાનગર કોલેજના ભરાડી વિભાગના અધ્યક્ષ અને ભરાડી ચારણી (શાહિર) સાહિત્યના અભ્યાસી ગંગાધર મોરને પણ આ પ્રસંગે હાજર હતા. એ આ સંમેલનની વિશેપત્તા રહી.” (ગુજરાત સમાચાર)

ચારણી સાહિત્ય સંમેલનના પરિસંવાદેના વિપ્યોનું વિદ્ધાતોએ આપેલા વ્યાખ્યાનોનું અન્યરથ કાર્ય તેમજ સાહિત્યકારોએ આપેલા કાર્યક્રમનું ટેપકાર્ય આઈ. એન. ડી. લોકલા સંશોધન કેન્દ્ર મુખ્યાધ દારા થયેલ છે. સંપર્ક માટે :

શ્રી હિન્દરાંક ;

આઈ. એન. ડી. લોકલા સંશોધન કેન્દ્ર,

૧૬/૨૧; હુમામ સ્ટ્રીટ, મુખ્યાધ-૨૩

કોન નં. ૨૭૦૩૩૧ તાર : INTHEATRE



ચારણી સાહિત્ય પ્રેન્ટિંગ

ગુજરાત સંગીત, ગૃહ્ય, નાટ્ય અકાદમી ગાંધીનગર તથા આઈ.
એન. ડી. લોએટલા સંશોધન કેન્દ્ર મુખ્યાધના સથવારે તા. ૪-૨-૮૨ થી
૮-૨-૮૨ સુધી ભાવનગર મુકાને યોજયેલ ચારણી સાહિત્ય સમેલનના
એક ભાગરૂપે પરિસંવાહનું આયોજન થયેલું તે પરિસંવાહમાં થયેલી ચર્ચા-
વિચારણા ભાબ કેટલાક નક્કર સુચનો થયા અને તેની યોગ્ય રજુઆત
માટે એક સમિતિની રચના કરવામાં આવી તેમાં.

- ૧ શ્રી પિંગળશાલાઈ પાયક ગાંધીનગર સહસ્ય
- ૨ „ પિંગળશાલાઈ ગઢવી-જમનગર „
- ૩ „ શાંભુજાનજી ગઢવી-ભુજ „
- ૪ „ નારાયણજાનજી ખાલ્યા-જમનગર „
- ૫ „ હરિદીનજી દેથા - લાંબડી „
- ૬ „ હરભાર પુંજાવાળા-નાનીસાણુથળી „
- ૭ „ કરણીજાનજી ગઢવી-ભરાપુર (કુંઠ) „
- ૮ „ લદ્ભમજુભાઈ ગઢવી-જમનગર કન્ધીનર

સલાહકાર સમિતિના સહસ્ય તરીકે :

- ૧ શ્રી હમુલાઈ જવેરી - મુખ્ય સહસ્ય
- ૨ „ હુવડુમાર થાલ્યી - ગાંધીનગર „
- ૩ „ મનસુખ જેવી - મુખ્ય „

તી નિયુક્તિ સર્વાનુમતે કરવામાં આવી હતી.

પરિસંવાહના સુચનાનો અભ્યાસ અને અધ્યયન દારા શ્રી લદ્ભમજુ
ગઢવીએ ચારણી સાહિત્યનો એક પ્રેન્ટિંગ તૈયાર કરી આયો તે ઉલ્લે-
ખનીય છે.

ચારણી સાહિત્યની સંસ્થાએનો ધ્રતિહૃદાસ :

“આપ જણુતા હશે કે અઠી શતકથી ચાલતી નજારા
પાઠશાળા આશ્રમના અભિવન્તિ કારણે ખંડ કરવામાં આવી છે.

બાર પછી સરકારની પાસે વારંવાર લોક સાહિત્ય, ચારણી સાહિત્યને પુર્ણજીવિત કરવાની હ્રદ્ભાસ્તો જતાં, જુનાગઢમાં લોક સાહિત્ય વિદ્યાલય થડુ કરવામાં આવ્યું અને તે પણ અધ્યપક્ષી નીવડ્યું આ સંસ્થા ૧૯૬૬માં બંધ કરવામાં આવી.

ચાર પછી ચૌદ વર્ષનાં વનવાસ ખાદ જામનગરમાં રાજ્ય સરકારની સમાજ કલ્યાણખાતા તરફથી લોક સાહિત્ય વિદ્યાલય થડુ કરવામાં આવ્યું પરંતુ મકાન, બોજન, વ્યવસ્થા, પુસ્તકાલય, વિદ્યાર્થીઓ માટેની અવધારાએ, અધ્યાપકોના વેતન ધર્ત્યાદિ જરાપણ સુભ્યવસ્થિત ચાલતું નથી પરિણામે પરિસ્થિતિ એવી ઉપસ્થિત થઈ છે કે વિદ્યાર્થીઓ અને અધ્યાપકો હતોત્સાહિત અન્યાં છે. નેમને રોજ-અ-રોજ એવો અનુભવ થાય છે કે આવી સ્થિતિમાં સંસ્થા ચાલે તેના કરનાં બંધ થાય તે વધારે ઉચ્ચિતનીય છે.

આ છે ચારણી સાહિત્ય-લોક સાહિત્યની રણ સંસ્થાનો દુંડું છતિહાસ. (જામનગરના આગેવાન નાગરિકોએ પાઠવેલ પત્રમથી)

અભ્યાસની આવરણકતા :

“પ્રથી જીવનમાં શીલ અને સત્તની માવજત માટે અનિવાર્ય એવી લોક સાહિત્ય અને લોક સંસ્કૃતિની આપણી સરવાણીએ જગતિક ચેતના સાથે સંગમ સાધની રહે એ દાખિએ લોક સાહિત્ય અને લોક સંસ્કૃતિની તાદીમ આપતી સંસ્થાએને જીવન રાખવા તેમજ આ પ્રવાતિએના વિકાસ માટેની વિગતવાર યોજના કરી તેને વહેલામાં વહેલી તકે અમલમાં મુક્વા આ અધિવેશન ગુજરાત સરકારની આગુંજરી વિનંતી કરે છે.”
હ્રદાસ્ત : શ્રી જીજુભાઈ હેઠાઈ ટેકો : પીનાંખર પટેલ (ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ ૧૯૬૬. લોક સાહિત્ય અંગે ડાચ.)

“ગુજરાત રાજ્યમાં લોક જીવનનો વિકાસ આગવો અને બહુરંગા છે. આભ્ય વિસ્તારમાં રહેતા સમાજિક અને શૈક્ષણિક રીતે પણત વર્ગોના લોકાનું જીવન વાણી, વહેલાર, વટ અને પ્રતોથી સમૃદ્ધ હોય છે. આ બહુમુખી પ્રથી જીવનને સત્ત્વ ઉદ્ઘાત અને ઉન્નત રાખવા લોક સાહિત્ય, ચારણી ભાષા અને સાહિત્યનો ફાળો બહુમુલો છે અને લોક પરંપરાનો પોપક રહેલ છે આ સાહિત્ય શાસ્ત્રોની સમૃદ્ધ, વૈનિક અને રણ્ણાત્મક ગરીમા અને ગૌરવ તેમજ લાક્ગીતો, દાળ છંન, કહેણી, કથાએ, વાર્તાએ વગેરે જળવાઈ રહે એ પણ એટલુંજ જરૂરી છે. આ વારસાના જાળવણી અથે લોક સાહિત્યના શિક્ષણ અભ્યાસના... યોજનાને આથી મંજુરી આપવામાં આવે છે.

(ફળનાં લોકસહિતના અભ્યાસ માટેની શિક્ષણ ગોજના - ગુજરાત સરકાર
મજૂર સમાજ કદમાણ અને આહિનતી વિકાસ વિભાગ)

“ચારણી સાહિત્ય કાડિવાડમાં હજુ પણ હસ્તી ધરાવે છે એને
સંઘરી રાખવામાં આવ્યું છે. ટેલાવ વર્ષો હિપર આ સાહિત્ય હિન્માં
સર્વોત્તમ લેખાતું હતું એ સાહિત્યને આપણે સંઘરણ લેછાયે. એ સાહિત્ય
ધર્યાં ઉંચા પ્રકારનું છે. અસરના લડાઈના જમાનામાં તેણે ધર્યો ભાગ
ભજ્યો છે. જ્યારે લખવાની કે છાપવાની કળા ન હોય ત્યારે આ કંઠથી
સાહિત્યે સજીન રાખવામાં આવ્યું હતું. આવા પ્રકારનું સાહિત્ય
ગુજરાતમાં ભાગ્યેજ આપણને સાપડી શકે તેમ છે. આશા રાખ્યું કે એ
સાહિત્ય અમર રહે સમૃદ્ધ બને.”—સાક્ષરવર્ય શ્રી ક. મા. સુનશી. (સ્વ. શ્રી
મેધાણુંદ પેંગાર ગદ્વાર સન્માન સમારંભ તા. ૨૭ ફેબ્રુઆરી ૧૯૩૭ મુખ્ય)

“ચારણી સાહિત્યનું સંમેલન ભરાયું તેનો અહેવાલ દૈનિક પત્રોમાં
વાંચ્યા, જણુને મને ખૂબજ આનંદ થયો. હું ચારણી નથી તેમજ ચાર-
ણીભાષાનો મને અભ્યાસ નથી છતાં સ્વ. મેધાણુંદજ તેમજ સ્વ. મેઝલાના
પરિચય તેમજ સહવાસથી સાહિત્ય જાણવા સમજવાનું પુષ્કળ મહ્યું
એટલુંજ નહિ નણ તેતે માટે મને પ્રેમ, પદ્ધતાન અને આદર ભારોભાર
ઉત્પન્ન થયો છે, અને આ ભાપાના ઉત્પર્ય મારે ખૂબજ આતુર રહ્યાં કરું છું

ચારણી ભાપામાં ને લાલિત્ય તેમજ મીઠાશ છે તેમજ જોમ
અને જોશ છે તે જગતભરતી ભાપાઓમાં નહીં જડી શકે. ચારણી
સાહિત્ય અણમેલ છે. ગુજરાતી ભાપાની ચાર પૈસા કિંમત આંકનારાઓ
માટે .ને દ્વા આવે છે આ ભાપાની કીંમત તો ચાર રૂપિયા જેટલી છે.

છતાં મેંધવારી, કપરા સંજેગો રાજકોય તેમજ આર્થિકના
સમયમાં સાહિત્યકારો તેને માટે કંઈ કરી શકતા નથી જુવન જ જ્યાં
મુરકેન બની ગયું છે. ત્યાં આજુવિધાના સાધનો મેળવવા પાછા મનુષ્યને
બધી શક્તિ અન્યાં નાખવી પડતી હોય ત્યાં સહિત્યની પ્રવૃત્તિ ઊંઘ અને
કેમ હાથ પર લઈ શકે ? આ કામતી સાહિત્ય ધીમે ધીમે મુલ્યાય રિથિતિ
પ્રાપ્ત કરી રહ્યું છે. ને થેડા સાહિત્યકારો છે તે હવે ઉંમરે પહોંચ્યા
ગયા છે. પરંતુ યુવાન વર્ગને આ તરફ વાળવાનો સમય પાકી ગયો છે,

નહીં તો ગુજરાતનું આ કૃમન ધન વેદ્ધાદ જરો ને ઇનાના ફંડિશ
થઈ જરો.

ગુજરાત સરકાર અને પ્રજાએ આ હિંદુમાં સકીય થતું ઘટે છે.
તેઓ જવાખાર છે છતાં વાચું કરી શકે તેમ છે. મારું નાન સૂચન છે કે
ચારણી સાહિત્યના ઉત્કૃષ્ટના તૈયારી કરો. કોઈએ તો આ પ્રજન હાથ
ધરવો જ પડશો. હું એવાખતો નથી પરંતુ સાહિત્ય પ્રેમીઓએ. સેવા-
લાનીઓએ આ કાર્ય ઉપાડવું જોઈએ જેમ બને તેમ તાકીદે”-સાક્ષરવર્ય
આ. નટવરલાલ રોડ, નડિયાદ. ; શ્રી પિંગળશાલાઈ ગઢ્ણી પરના તારીખ
૧૫ ર-૮૨ ના પત્રમાંથી)

“આ વિદ્યાને રજવાડાઓમાં જે ઉત્તોજન અને આશ્રય હતાં તે
અદ્દરય થયાં છે અને એ સાથે એ ભાઈઓને અત્યાર્ય વ્યવસાયોનો
આશ્રય લેવો. પડ્યો છે જુનાગઢમાં તરવરતા જુગાનિયાઓને તૈયાર કરવાનું
પવિત્ર કાર્ય શ્રીપિંગળશાલાઈ કરતા હતા અને એમાંથી જુવાન અહાર
આવ્યા અને ડેટલેક અંશો એ વિદ્યાને જીવંત રાખ્યા રહ્યાં છે. પણ
આશ્રયને અભાવે આજે આ વિદ્યા અરનતિ તરફ ધકેલાઈ રહી છે.”-
સાક્ષરવર્ય આ. કે. કા. શાસ્ત્રી. સ્વ. મેરલાલાઈ રમુતિ લેખમાંથી)

આદર્શ વિદ્યાલયની આર્થિક વ્યવસ્થા અંગે :

“લોક સાહિત્યનું એક સાર્વજનિક વિદ્યાલય સરકારશીથી સ્વતંત્ર
અને આપને યોગ્ય લાગે તેવી રાહફરી નીચે શરૂ કરવાની અમે આપને
વિનંતી કરીએ છીએ. આ સિવાય લોક સાહિત્યને તથા વજભાપાને
જીવાડવાનો બીજો કોઈ માર્ગ અમને દેખાતો નથી. જો આવું વિદ્યાલય
શરૂ કરવામાં આવે તો જમીન, મકાન, આત્માલય, પુસ્તકાલય અને વિદ્યા-
થીએને માટે વિના મૂલ્યે અધ્યયન, ભોજન તેમજ રહેઠાણ અને
અધ્યાપકો તથા છિતર કર્મચારીઓનું વેતન બંધુ મળીને અંદરૂં રૂપીઓ
જી થા સાત લાખના લંડોળની જરૂર પડે.”-જામનગરના આગેવાન
જાગરિકાંન થી મેરારિવિલલ હરિયાણીઓને પાઠવેલ પત્રમાંથી)

“પરંપરા જળવણી હોય તો રાજ્ય નરકથી જ શાળાઓ અને
અત્માલયો ચલાવવાં જોઈએ પણ આ આશા સફળ થાય તેવા ચિહ્ન કર્યાંય
જેવા મળતાં નથી. જેમના પાસે હજુ પણ આ વિદ્યા પડી છે તેમને
આગળે લાવવા માટે ખીંડું સૌરાષ્ટ્રનો ધનીઃ વર્ગ પણ જડપી શકે. જો

વિદ્યાલય અસ્તિત્વમાં આવે તો સરકાર પોણોસો ટકા મહા જ્ઞાપરો જી. સરકાર અનેક રૌષણ્યિક અને સાંસ્કૃતિક સંસ્થાઓને નેણુંગીએ પ્રતિવર્ણો આપે છે. પોણોસો ટકા આન્ટ મળે તો પ્રશ્ન પચીશ ટકાનો રહ્યો. ચોક્કસ સંખ્યાની અતામત રહેણના વ્યાજમાંથી એ ઝોટ પૂરી શાખાય. હજુ ચારણુંનાયાએમાંથી હીર ખસ્યું નથી. એ સચ્ચવાય એવા પ્રયત્નોમાં મોદુંગીએ લાગી પડવું એ સાંપ્રતિક કાર્ય છે."—સાક્ષરવર્ણ શ્રી ડૉ. કા. શાસ્ત્રી

"(૧) સરકાર પાસેથી પાંચથી દશ લાખની માંગણી કરી ભંડોળ બેભું કરવું જોઈએ. (૨) આ ભંડોળમાં માલેતુણનર લોડેનો ફણો પણ હોવો જોઈએ. (૩) જે ભંડોળ બેભું ચાવ તેના વ્યાજમાંથી પ્રવૃત્તિને પ્રગતિ કરવી જોઈએ (૪) ભંડોળ માટે એક સમિતિ નીમણી જોઈએ. જે ભંડોળ તેમજ પ્રવૃત્તિ હાથ લઈતે પાર પાડે."— સાક્ષરવર્ણ શ્રી નટવરલાલ શેઠ

વિદ્યાલયની સંખ્યા અને સ્થળ :

વિદ્યાલયની સંખ્યા હાલમાં એક હોવી જોઈએ ત્યારખાન એ વિદ્યાલયો સ્થાપવા જોઈએ, તે વિદ્યાલયનું સ્થળ સૌરાષ્ટ્ર, કર્ણ અને ગુજરાતના અભગ્રણ શહેરોમાં હોવું જરૂરી છે. ચારણ વિદ્યાર્થી બોડિંગમાં આ વિદ્યાલયો શરૂ કરવામાં આવે તો વિશેષ ઉચ્ચિત ગણ્ણાશે.

વિદ્યાલયના નિયમો :

(૧) વિદ્યાલયમાં વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા રૂપની રાખવામાં આવશે અને તેમના રહેવા જરૂરતની વ્યવસ્થા કંઈપણ ચાર્જ વિના કરવામાં આવશે. પરંતુ અંગત જરૂરીયાતનો બધોજ ખર્ચ વિદ્યાર્થીને પોતાના પદ્ધતી કરવાનો રહેશે. (૨) અભ્યાસક્રમની મુદ્દા એ વર્ષની રહેશે. એ વર્ષના અભ્યાસક્રમ બાદ લેખિત-મૌખિક પરિક્ષામાં બીત્તીણું થતાર વિદ્યાર્થીને પ્રમાણપત્ર આપવામાં આવશે. (પ્રમાણપત્રનો નમૂનો આ સાથે સામેનું છે.)

(૩) વિદ્યાલયમાં દાખલ કરવામાં આવતાર વિદ્યાર્થીઓને તેમના સ્કુલ-હાઇસ્કુલ-કોલેજના અભ્યાસ પણ ચાલુ રાખવો તથા તેમના શૈક્ષણિક અભ્યાસના સમય સિવાયના સમયમાં આ સાહિત્યનો અભ્યાસ કરવાનો પ્રયંક કરવો. (૪) આ વિદ્યાલયનું સંચાલન ચારણી સાહિત્ય બોર્ડ કે જે સ્વતંત્ર અને સ્વાયત્ત દરજને બોગવરું હોય અથવા ચારણી સાહિત્ય સમિતિ અથવા ગુજરાત રાજ્ય લોક સાહિત્ય સમિતિ-ગાંધીનગર અથવા

આઈ. એન. ડી. મુખ્ય અથવા ભારતીય વિદ્યાલયન મુખ્ય અથવા ગુજરાત રાન્ય યુવક સેવા અને સંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિ નિઝાગ-ગાંધીનગર પૈકી એક સંસ્થા દરા થતું જોઈએ.

પ્રવેશ મેળવવાની લાયકાત :

(૧) શ્રીલભિંડ લાયકાત : ધોરણ ૫ સુવીનો ઓછમાં ઓછા અભ્યાસ હોવો જરૂરી છે. (૨) ડાંમર વર્ષ ૧૪ થી ૩૦ (૩) વિશ્વાસ યોગ્યતા : (૧) સંગીત, સાહિત્ય, લેખન, સંશોધન કાર્યમાં સુરુચિ ધરાવતા ઉમેદવારોને પ્રથમ પસંદગી આપવામાં આવશે. (૨) સાહિત્યના જાતિગત સંરક્ષણ ધરાવતી જાતિઓના ઉમેદવારોને વિશેષ ગ્રાધ્યાન્ય આપવું તેમજ ડાંમર કે શ્રીલભિંડ લાયકાતમાં ઘૂટણાટ આપના.

વિદ્યાલયના વિદ્યાધરો :

(૧) માનદ આચાર્ય : ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના વિદ્યા, પંડિત, તેમજ સંસ્થાના સંચાલનના અનુભવી કંડ કલમ અને કહુણુંનો વિદ્યાર્થીઓને અભ્યાસ કરાવશે. પરંપરાગત બણો તેમજ નવા નવા સંગીતનોના ઢાળામાં લોકઢાળને ઢાળી હૃદતે લોકોને આંશુ નાભનાર અનેકવિધ ઢાળોની વિદ્યાર્થીઓને તાલીમ આપશે. (૨) અધ્યાપક કુમ ગૃહપતિ : ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના અંથેના મહા અભ્યાસી. વિદ્યાર્થીઓને પિગળશાસ્ત્ર, કાવ્યશાસ્ત્રના અંથેનો અભ્યાસ કરાવશે તેમજ ગૃહપતિ તરીકેની સેવા બજાવશે. (૩) સમયાંતરે કે ખંડ સમય આવતા મુલાકાતી શિક્ષકો, લોક સાહિત્યના વાતાવરણો, સ્વરસાધકો, કંવિ, લેખકો, વિવેચકો, સંગીતાધકો પૈકીના નવું અભ્યાસી મુલાકાતી શિક્ષકોને નિમંત્રવામાં આવશે. અવા સમયાંતરે કે ખંડ સમય પ્રમાણે પ્રતિદિન વધુમાં વધુ રૂ. ૩૦ લેખે માનદવેતન આપવું જોઈએ (વધુમાં વધુ ૧૦ દિવસ એકી રૂથે ૪ દિવસ) (૪) સંગીત શિક્ષક : વિદ્યાર્થીઓને તાલ, દય અને સ્વરની સુજ પડે એ માટે સંગીત શિક્ષક પાર્ટ ટાઇમ સેવા આપશે.

ઉપરોક્ત પ્રમાણે વિદ્યાધરો દરા ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યનો અનુમુખી અભ્યાસક્રમ ગોઠવવો જોઈએ.

ઇતર કર્મચારી

| અનુકૂળ જગ્યાનું નામ | જગ્યાની સંખ્યા | પગાર દોરણા |
|------------------------|----------------|-------------|
| ૧ ઓફિસ સુપ્રીન્ટેન્ડર | ૧ | રૂ. ૬૫૦-૬૦૦ |
| ૨ હેડલાર્ક કમ લાયઓરીયન | ૧ | રૂ. ૪૨૫-૮૦૦ |
| ૩ કલાર્ક કમ ટાઈપીસ્ટ | ૧ | રૂ. ૨૬૦-૪૦૦ |
| ૪ રસોડા કામદાર | ૧ | રૂ. ૧૬૬-૨૩૨ |
| ૫ રસોધાર્મો | ૧ | રૂ. ૧૬૬-૨૩૨ |
| ૬ પટાવાળો | ૧ | રૂ. ૧૬૬-૩૩૨ |

ઉપરોક્ત જગ્યાઓ પર નિમાણું મેળવનાર કર્મચારીઓનું નિયમો-
તુસાર મળવાપાત્ર અન્ય ભક્ષયાઓને પાત્ર રહેશે. ચારણી સાહિત્ય લોક
સાહિત્યમાં સુરુચિ ધરાવનારાઓને પ્રથમ પસંદગીને પાત્ર.

અંદરૂની ખર્ચ

| ખર્ચ | માસીક | વાર્ષિક |
|-----------------------|----------------------|--------------------|
| ૧ કોજન ખર્ચ | રૂ. ૩,૭૫૦-૦૦ | ૪૫,૦૦૦-૦૦ |
| ૨ પગાર ખર્ચ | | |
| ૧ માનદ આચાર્ય | રૂ. ૭૫૦-૦૦ | ૮,૦૦૦-૦૦ |
| ૨ અધ્યાત્મ | રૂ. ૭૫૦-૦૦ | ૮,૦૦૦-૦૦ |
| ૩ ખંડ સમયના અધ્યા. | રૂ. ૬૦૦-૦૦ | ૧૦,૮૦૦-૦૦ |
| ૪ સંગીત શિક્ષક | રૂ. ૨૫૦-૦૦ | ૮,૦૦૦-૦૦ |
| ૫ ઓફિસ સુપ્રિ. | રૂ. ૧,૧૮૬-૪૫ | ૧૪,૨૭૩-૪૦ |
| ૬ હેડ કલાર્ક કમ લાય. | રૂ. ૮૯૩-૬૦ | ૮,૭૬૩-૨૦ |
| ૭ કલાર્ક કમ ટાઈ. | રૂ. ૫૪૩-૦૦ | ૬,૪૨૦-૮૦ |
| ૮ રસોડા કામદાર | રૂ. ૪૧૦-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| ૯ રસોધાર્મો | રૂ. ૪૧૧-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| ૧૦ પટાવાળો | રૂ. ૪૧૦-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| ૩ મકાન ભાડી | રૂ. ૨,૫૦૦-૦૦ | ૩૦,૦૦૦-૦૦ |
| ૪ ફરતીયર સાધન સામગ્રી | રૂ. ૭૫૦-૦૦ | ૮,૦૦૦-૦૦ |
| ૫ પુસ્તકો | | ૮,૦૦૦-૦૦ |
| ૬ રઠેલનરી-ટપાલ ખર્ચ | રૂ. ૨૦૦-૦૦ | ૨,૪૦૦-૦૦ |
| ૭ કંતીજલસી | રૂ. ૨૦૦-૦૦ | ૨,૪૦૦-૦૦ |
| કુલ | રૂ. ૧૩,૮૨૭-૬૫ | ૧,૭૩,૬૩૧-૮૦ |

એક વિદ્યાલયનું કુલ ખર્ચ રૂ. ૧,૭૩,૬૩૧-૮૦ અંટે એકલાખ
તોતેર હજાર નવસો એકનીસ અને એરી પૈસા પુરા.

અભ્યાસક્રમ

કંડ, કહેણી અને સાહિત્ય સર્વાને પ્રાધાન્ય આપવામાં આવે.
દિગંક, પિંગળ, વૃજભાપના ગીતોનાં દંગની પદ્ધતિ જળવવામાં આવે.
ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના સર્વાંગી અભ્યાસની સાથે સાથે નવા
યુગના શુભ તરવોનો આ સાહિત્યની સાથે સમન્વય કરે. વૈજ્ઞાનિક દર્શિયે,
આપા વિજ્ઞાનની દર્શિયે આ સાહિત્યની જળવણી અને મૂલનણી થાય.
લોકગીતો, છંદો દુષ્ટાઓ પ્રાચીન ભજનોના કંડ કહેણીના એક સાથે એનીજ
પરંપરાના ઉગતા જુવાનો તૈયાર થાય. રાષ્ટ્ર ધડતરની અને આગોજન
અંગેનું વિશ્વાસ સામાન્ય જ્ઞાન પણ મેળવે તેવો અભ્યાસક્રમ વિદ્યાલયમાં
હોવો અત્યંત આવશ્યક અને અનિવાર્ય છે.

દિનચર્ચા અને અભ્યાસક્રમ :

૫-૦૦ થી ૬-૦૦ નિત્યક્રમ

૬-૦૦ થી ૬-૩૦ સ્વાધ્યાય, વાંચન, મનન, કંડરથ

૬-૩૦ થી ૭-૦૦ સફાઈ ધત્યાહિ

૭-૦૦ થી ૧૧-૩૦ ચારણી સાહિત્ય-લોક સાહિત્યનો અભ્યાસ

૭-૦૦ થી ૭-૪૫ પ્રાર્થના (હુરીરસ), અનેકાર્થી-માનમંજરી
નામભાગના દોષાઓના અર્થ, નામનું કંયમાં
પ્રયોગન, નામની ઉપયોગીતા, તેમજ વ્યક્તિ-
ગત દરેક વિદ્યાર્થીના મૌખિક પાઠ.

૭-૪૫ થી ૮-૩૦ લોક સાહિત્યની વ્યાખ્યા, ધતિહાસ, સ્વરૂપો,
તેના ઉપાસકો, લોકગીત, ભજન આખ્યાનની
ગેય દાગોની તાલીમ અને તેનું વિવેચન.

૮-૩૦ થી ૯-૧૫ ચારણી સાહિત્યની વ્યાખ્યા, ધતિહાસ, સ્વરૂપો,
તેના ઉપાસકો છંદોના લક્ષ્ણો છંદોના લગ્ન,
ભાવાર્થ તેમજ કંડ, કહેણી અને કંદમની
તાલીમ આપવી.

૯-૧૫ થી ૧૦-૦૦ ચારણી સાહિત્ય લોક સાહિત્ય, શિષ્ટ સાહિત્ય
અને જગત સાહિત્યનો તુલનાત્મક અભ્યાસ
અને અધ્યયન.

૧૦-૦૦ થી ૧૦-૪૫ ચારણી સાહિત્યમાં અંલકાર, રખ, જનિ,
પ્રતીક તેમજ ડિગળી સાહિત્યનો અભ્યાસ.

૧૦-૪૫ થી ૧૧-૩૦ સંહર્ષાંયોનું અધ્યયન, કૃતિઓના મુખ્યાડ
કાવ્યોનું રસદર્શન.

૧૧-૩૦ થી ૧૨-૦૦ બોજન

૧૨-૦૦ થી ૫-૩૦ શૈક્ષણિક અભ્યાસ (સ્કૂલ, હાઇસ્કૂલ, મેસેજ)
અથવા નામ માળાઓના દુઢા, છંદો, ભજનો
લોકગીતો મૌખિક કરવા, ધર્તર વાંચન
મહેમાન સાહિત્યકારનું વ્યાખ્યાન વગેરે.

૫-૩૦ થી ૭-૦૦ સંગીત રમતગમત રેઝિયો-૨૪ અવણ્યાન
ધર્તર પ્રકૃતિ.

૭-૦૦ થી ૮-૦૦ બોજન

૮-૦૦ થી ૯-૦૦ ગેય દાળમાં વિદ્યાર્થીઓએ મૌખિક કરેલ એક
કૃતિની વ્યાખ્યાન રજુઆત.

૯-૦૦ થી ૫-૦૦ રાત્રનો આરામ

(૧) શનીવારે : અર્ધો દિવસ ખરીદી વગેરે માટે રણ

(૨) રવીવારે : ૧ સફાઈ ૨ સ્થળો અતાવવા ૩ અગ્રીયાનું અવલોકન
૪ સંસ્થાઓનો પરિચય ૫ સ્થાનિક પ્રવાસ કરવો.

વિશેષ નોંધ :- દ્વારાજીના ચાર પીરીયડ દરેક પીરીયડ ૪૫ મિનિટનો દરેક
વિષયના વાર્ષિક ૨૧૭ પરીયડ કુલ ૮૬૮ પીરીયડ.

અભ્યાસકલ્ભની વિગત :

સત્ર પહેલું

૧ દોહાના પ્રકાર (૧) પૂર્ણ દોહા (૨) સારડો (૩) તુમેરી (૪) છકડીઓ
૨ ગીત-ચારણી શાણોાર ઊ અનોકાથી નામમાળાના દોહા બુદ્ધ નામ
સુધી ૪ દસ છંદ લક્ષ્ણ ઉદ્ઘરણ સહિત તૈયાર કરવા. ત્રિભંગી,
ગુલણા, ચર્ચરી, વસંતતિલકા, લલિત, છાપ્ય, મોતીશામ, રેણુકા,
હુમીલા, હેવ છંદ ૫ લજનો-રામગરી, પ્રભાતી, સંધ્યા, આરતી,
કટારી, આરાધ, કિર્તન, ધોળ, ઉપદેશ વાણી, પ્રેમલક્ષ્ણા ભક્તિના
૫૬ વગેરે ૬ લોકગીતો, વેહનાગીત, ઋતુગીત, દાંપત્યગીત, રાસ,
શોર્યગીત, ખારવાના ગીતો, ધંધાદરીના ગીતો, પદ્મી, પ્રાણીઓનાં ગીતો,
હાલરડાં, ખાળગીતો, પર્વગીતો લગ્નગીતો, સંરકાર ગીતો વગેરે તૈયાર કરવા

સંદર્ભાંથો : રાજ્યસ્થાન પ્રાચ્યવિદ્યા પ્રતિકાણના પ્રકાશનો, ગુજરાત લોક સાહિત્ય સમિતિ-અમદાવાદના દરેક પ્રકાશનો, ડામ્પિન-નવરચનાના વિશેખાંડો, કાગવાણી લાગ ૧ થી ૭, પિંગલ કાંય, ચિન્નચેતાવની, ૭૮ રનાવલી, સોરઠી દુલ્હા, આરાધ, સોરઠ સરવાણી, ભજન સાગર, જોડુંગાસ રાયસુરાની દરેક દૃતિઓ, શ્રી જવેરચન મેધાણીની દરેક દૃતિઓ, સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટીના ચારણી સાહિત્યના પ્રકાશનો.

ચારણી સાહિત્યનાચ્યાસ અંથો : લધુ સંગ્રહ રધુનથ ૩૫૫, હરિસ, પાંડુનથરોન્ડ ચંદ્રિકા, અવતારચરિત્ર, વીરવિનોદ, અલંકાર ચંદ્રિકા રસરાજ.

ઇતિ વાંચન : સૌરાષ્ટ્રના ખાંડેરોમાં, સોરઠી સંતવાણી, સત કેરી વાણી, વિનોભાયાવની, રવિશંકર મહારાજ, સોરઠને તીરે તીરે, ચારણો અને ચારણી સાહિત્ય, કુંવર બાઈનું માભેરં નળાણ્યન, એભાઇરણ, સોરઠી લોકવાર્તા, અત્રીચ પુતળા, લોક સાહિત્ય અને સંસ્કૃતિ, આપણી લોક સંસ્કૃતિ, લોક સાહિત્યકા વિજ્ઞાન, લોક સાહિત્યનું સમાલોચન, સંસ્કૃતિ પૂજા, ભાગા વિજ્ઞાન, ૧,૨, શાખા અને અર્થ, ગીતા મંથન, હેમલેટ, ડેલ હાઉસ.

સામાન્ય જ્ઞાન : રાષ્ટ્રીય લડનો ઇતિહાસ, ભારતનું અધારણ વિશ્વભરીયય-અમેરિકા અને પશ્ચિમ યુરોપ, જગતા ધર્મો લોકરાંડી, ગાંધી વિચાર દર્શાન.

સત્ર બીજુ

(૧) અનેકાથી નામ માળાના ૬૧ દોહા (૨) દશ ૭૮ લક્ષણ ઉદ્ઘાંનું સહિત મનહર, હરીગીત, ચૌપાછ, પદ્ધરી, મધુભાર, અડુલ ભુજાંગી મતગયંદ, તોટકની ચાલ, સારસી ઉ ચારણીગીત સપાખરં વર્પાત્રનું બર્ણન ૪ ભજનો પ્રથમ સત્રમાં જણાયા મુજબના એજ પ્રકારના બીજા ભજનો કંઠસ્થ કરવા. ૫ ગીતો પ્રથમ સત્રમાં જણાયા પ્રમાણેના એજ પ્રકારના બીજા ગીતો તૈયાર કરવા.

અજ્ઞાસ અંથો : પ્રવિશુસાગર, સલા પ્રકાશ હાલાજાલા રા કુંડિયા, હરિજસ નામ માળા ઉમ્મર કાંય, વીરસતશાધ, લોકવાર્તા, રાજ્યસ્થાની વચ્ચનિકા, ભૂગીપુરાણુ, ગાંધીશતક, ગાંધીકુળ, સરહંદનો સંભામ સુકાંયસંજીવની, વીર કાંય, પાંખી પુરાણુ.

ઇતર વાંચન : ગુજરાતના લોક ગીતો, લોક ભાગવત, આખ્યાયિકા, રાજરથાનના લોકગીતો, લોક સાહિત્યની ભૂમિકા, કંચ્છદર્શિન, અનુશીલનો, ગુજરાતી ફેનોલોજ, ગુજરાતી ભાષા, ભારતીય લોકસાહિત્ય, લોકગીતોનું સંગીત, સંસ્કૃતિ કે ચાર અધ્યાય, સમ્બ્યતાકી કહાની, ભારતીય સંસ્કૃતિ ઓર ઉસકા ધતિહાસ, હિંદી સાહિત્યકા બૃહદ ધતિહાસ ભાગ ૧ થી ૧૬, બદ્વિવંશ પ્રકાશ, કંચ્છ કલાધર, કંચ્છના સંતો અને કન્વિએ.

સામાન્ય જ્ઞાન : લોકસભા, ધારાસભા, મૂળભૂત હક્કો, ત્રિશિખ, પરિચય, રચિયા, ચીન, લોકમાન્ય પરંપરા, પાણિયા, લોકધર્મ, રીતરિવાજ અને પ્રથાઓ, લોક સંગીત, ગાયન, વાદન, ગુટ્ય લોકકલાઓ, અંલકારો અને વખ્તાભૂપણ વગેરેનો પરિચય.

સત્ર ગ્રીઝું

૧ માનમંજરી નામમાળા દોહા ૧ થી ૧૫૦ સુધી ૨ દશ છંદ લક્ષણુ ઉદ્ઘાનુ સહિત શશીકલા, પ્રમાણિકા, મલીકા, શાર્દુલવિકારીત, ચોપાયા, દોષક, નારાચ, કુંડળિયા, રેખતા, લાલાબતી, ઓ ગીતો અને ભજનો, ભાવ, ચંદ્રવળા, સીધુણો, આરણીગીત (પરજના દળ), રામગરી, ચંધ્યા, આરતી, પ્રેમલક્ષણા ભક્તિપદ, ઉપહેશ વાણી, કાર્તન, કટારી, ઘોળ, આરાધ, કથાગીત, આખ્યાન ગીત, હાંલરડાં, લંનગીત, શૌર્યગાત, નાતુગીત, રાસ, અરણ્યું, જીવણ્યું ચરજ વગેરે.

અલ્યુસાંગથા : રણપિંગલ, બરહન પિગલ, રાજનીતિ, ચમતકાર ચંદ્રિકા, સુરજ પ્રકાશ, ચંદ્રમરદ્ધાદ્રસુતિ, પ્રતાપચરિત, સાહિત્ય, મીમાંસા, વકેાડિત વિચાર, પ્રાશાત્ય સાહિત્ય સિદ્ધાંત, પ્રાશાત્ય કંબશાલનકા ધતિહાસ, ભારતીય સાહિત્યશાસ્ત્ર કે સિદ્ધાંત, પ્રાશાત્ય કાબ્ય પરંપરા.

ઇતર વાંચન : સેવા ધર્મ પરિચય, ધર્સનની નીતિકથા, સોકેશ્વરીસ મધ્યકાલીન સાહિત્ય, રાજરથાની લોક સાહિત્યકા સૈદ્ધાન્તિક વિવેચન, વાર્તાનું શાસ્ત્ર ગુજરાતી કહેવનો, ઉભાણાં, સાહિત્યના યુગ પ્રવીતક ગાંધીજી, કાંયાનોચના કાંય તત્ત્વ વિચાર, પાજાલવદ્ધ્ય સ્મૃતિ, રામાયણ, ગીતા દોહાવલિ, વિશ્વની અરિમતા, સૌરાષ્ટ્રની અરિમતા, **સામાન્યજ્ઞાન :** લોકદ્વારા, લોકનાટ્ય, લોકએલીઓનો પરિચય, ભારત દર્શન, જગત દર્શન, હિંદુરસ્તાની સંગીત, ચુગમ સંગીત, સંગીત રત્નાકર, વચ્ચનિકા અચલશાસ ખીચીરી, રાજરથાની એવમ ગુજરાત કે મધ્યકાલીન સંત એવમ ઉક્તકવિ,

ચારણ સાહિત્યકા ધર્તિભાસ ભાગ ૧, ૨, બિહારી જલસદ્ધ, લોકસાહિત્યક
વિમર્શા, મધ્યકાળીન ચારણ કાગ્ય.

સત્ર ચ્યાથું

૧ માનમંજરી ટેલો ૧૫૧ થી ૨૬૭ ૨ દશ ૪૦૮ લક્ષણું ઉત્તા-
હરણું સહિત શિખરણી, મંદાકાન્તા, વીજુમાલા, ઉધોર તોમેર, માલતી,
એતાલ, ઈદ્રવિજય, નિશાની, સંયુક્તા, ઓ ચારણી ગીત ત્રિદ્વિટબ્બંધ રઘુનાથ
ઝપકમાંથી ૪ ઝપદીપ પિંગળ, ૫ રસ નિરૂપણ ૬ ભાવ ૭ અલંકાર
૮ લક્ષણાર્થ ૯ લોકવાર્તા ૧૦ સોળા ૧૧ ચંદ્રવળા ૧૨ ભજનો, લોકગીતો,
શ્રીના સત્રમાં જણાયા પ્રમાણે તે પ્રકારના તૈયાર કરવા.

અભસાસ અંથો : સોરકી ગાથા, સાગર કથાઓ, દેશદેશની
લોક કથાઓ, સોરકી લોકવાર્તા, રાષ્ટ્રધ્વજ પર્યાસી, નામ રહેંદી ઠંડકરા,
હરિજસ પિંગળ, વેણુંનાદ, નાગદમણું, ઓખાહરણું, દેવિયાણું, સુંહર વિલાસ,
ચારણની અસ્મિતા. **ઈતરવાંચન :** આપણી લોકમાતાઓ, મારું હિન્દનું
દર્શાન, ગીતાંજલિ, અરસ્વતીચંદ્ર, ગુજરાતનો નાથ, સત્યના, પ્રયોગો.
સમુણાકાંતિ, એર તે પોધાં છે જણી જણી, ગીતા રહેસ્ય ધર્મભંધન,
નીતિનાશને મારો, ગુજરાતી ભાપા અને સાહિત્ય, રામરસામૃત, ચારણ
વાણીના અંકો, વીરડાના અંકો, ડયાં, પરિશોધ, ઈન્દુકુમાર, રાધનો પર્વત
ખહારવટિયા ઝોજદાર, ઓખામંઉળની લોકકથાઓ, A Science of
folklore-A. H. Krappd; Four symposia on Folklore-
DR S. Thompson; An out line of India folklore-DR
Durga Bhagwati, Golden Boaigh-Jamesfrager, A
Dictionary of folklore-Maria leach; The study of Fol-
klore-DR Alandunda; The Folk Tales-DR. Thompson.

સામાન્ય જ્ઞાન : (૧) લોકવાધોનો પરિચય : સત્તાર, રામસાગર
તાંકા, દેલ અને દોલક, મંજુરા, ઊંડ, વાંસળી, કાંસિયા, કરતાળ, ડાક
નગારું, પ્રાંગ, શરણાઈ, મોરલી, જંતર કંઠવાસ મુખ્યંગ.

(૨) લોક જીવનનો પ્રત્યક્ષ પરિચય : તણ મુખ્ય મેળાઓં કરાવવા
(૧) તરણેતર (૨) ભવનાથ (૩) માધુપુર : જેમાં લોક નૃત્ય, લોક શણગા-
રની કળાઓનો પરિચય થાય (વસ્ત્રો, અલંકારો, ભરત ગુંથણવાળા વસ્ત્રો
આગેખ, માંડળા અને મંહિરાની રચના અને ધર રચનાના શણગારનો
પરિચય કરાવવો.

**સંદર્ભાંગ્યા : Fairs and Festival in Gujarat, Folk
Dances of Gujarat; wood Carvings in Gujarat.**

(૩) ઓછામાં ઓછા ૧૦ ડાયરાઓ કરવા નેમાં છે. લોકડાળો,
વારતાએ અને લોકકથાઓની કહેણુંની તાલીમ મળે.

પરીક્ષા પદ્ધતિ : (૧) ત્રણ સભ્યોની પરીક્ષાક સમિતિ નિમાય
તે પરીક્ષા લ્યે. તે સમિતિના સભ્ય (૧) આચાર્ય (૨) અધ્યાપક (૩)
આરણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના અભ્યાસી યુનિવર્સિટીના રીડર કક્ષાના
હોવા જોઈએ (૨) પરીક્ષા લેખિત અને મૌખિક પદ્ધતિ પ્રમાણે લેવામાં
આવશે.

લેખિત : પરીક્ષાક સમિતિ અભ્યાસક્રમ પ્રમાણે પ્રથમનો તૈયાર કરેશે
અને તે પ્રમાણે પરીક્ષા લેશે અને ગુણો આપશે. (૨) પાદપૂર્ણ (૩)
સૂચવેલ વિષય પર નિશ્ચિત સમયમાં કાબ્ય રચના (૪) છેમાં રચના
મૌખિક કંડ, કહેણી, સંગીત, લદ, બળોની કસોટી.

લોક સાહિત્ય-ચારણી સાહિત્ય વિદ્યાલય

પ્રમાણપત્ર

| |
|---|
| આથી પ્રમાણપત્ર આપવામાં આવે છે કે શ્રી એ લોક સાહિત્ય-ચારણી સાહિત્ય વિદ્યાલય માં એ વર્ષનો અભ્યાસક્રમ પુરો કરી તેને સને માં લેવાયેલી કસોટી પ્રથમ/દ્વિતીય/તૃતીય કક્ષામાં ઉત્તીર્ણ કરેલ છે. |
|---|

સ્થળ :

સાહી

તારીખ :

માનદ આચાર્ય,

લોક સાહિત્ય ચારણી સાહિત્ય વિદ્યાલય

ઉત્તીર્ણ થનાર ઉમેદવારને નોકરીમાં પ્રાધાન્ય : તદી-કમ મંત્રી,
આમ સેવક, નરાયંધી નિયોજક, પ્રોફ શિક્ષણ, સમાજ કલ્યાણમાં પ્રચારક
નિરીક્ષક, રેડિયો અને ટી વી. આર્ટિસ્ટ, સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિ વિભાગમાં,
આથમિક શાળામાં શિક્ષક, એ ઉપરાંત વિશેષ યોગ્યતા ધરાવતા ઉમેદવારને
હાઈસ્કુલમાં, ડેલેજમાં, યુનિવર્સિટીમાં, માહિતી ખાતામાં, પ્રવાસ નિગમમાં
આકાશવાણીમાં યોગ્યતા પ્રમાણે સ્થાન આપવું.

ચારણી સાહિત્ય બોર્ડ

રાજ્યસ્થાન, આસામ, ઉત્તર ભારતના અન્ય રાજ્યોએ લોક સંસ્કૃતિને, લોક સાહિત્યના વિકાસમાં રસ લઈ રાન્ય સરકારોએ દેખુણી આપી જે રીતે સહકાર આપે છે તેવી રીતે ગુજરાત સરકારે ધીમે ધીમે લૂપ્ત થતી જતી ગુજરાતની લોક સંસ્કૃતિ તથા ચારણી સાહિત્યની જળવણી અને વિકાસમાં સાથ સથવારો આપી રસ દે તે માટે વિસ્તૃત યોજના હાથ ધરવી જોઈએ

ચારણી સાહિત્ય માટે સ્વાયત્ત બોર્ડ

ચારણી સાહિત્ય, લોક સંસ્કૃતિ અને લોક શાસ્ત્રના એકત્રીકરણ સંશોધન અને સુરક્ષા માટેના વિસ્તર્ણકાર્ય માટે એક સ્વાયત્ત બોર્ડ રચવું અત્યંત આવશ્યક છે. કેમકે ચારણી સાહિત્યમાં અને લોક સાહિત્યમાં અનેકવિધ ક્ષેત્ર, સ્વરૂપ, પ્રકાર છે અર્થાત્ તેનું ક્ષેત્ર અમર્યાદીત છે. ગુજરાતમાં ભિન્ન ભિન્ન લોક જાતિઓની ભિન્ન ભિન્ન લોક સંસ્કૃતિઓ છે તેનું ભિન્ન ભિન્ન સાહિત્ય છે. તેમાંથી હીક હીક ઘસાવા લાગી છે. કેટલીક લોક જાતિઓનું આધુનિકરણ ઝડપે થઈ રહ્યું છે. નેથી તેમનાં મૂળ લોક સંરક્ષારો લૂપ્ત થતાં જાય છે.

આથી આવું સ્વતંત્ર અને સ્વાયત્ત દરજને ભોગવતું બોર્ડ ગુજરાતના ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્ય અને લોક સંસ્કૃતિઓનાં (નેમાં લોકકલાઓ, લોક સંરક્ષારો, લોક સાહિત્ય, લોકોસંવે, સમાચ જાય છે.) સંશોધન, સુરક્ષા અને પ્રકાશન માટે સર્વદેશીય પ્રવૃત્તિઓ ઝડપે શરૂ કરી શકે અને તેનો વિકાસ કરી ગુજરાતના ચારણી સાહિત્યના, લોક સંસ્કૃતિના સુરક્ષા કામ માટેના જાગૃત પહેરગીરની ફરજ બળવનાર મહત્વનું એક અંગ બની શકે.

બોર્ડના સભ્યો : (૧) સરકારશ્રીના હેઠાની રૂએ (૨) સરકારશ્રીના નિયુક્ત સભ્યો (૩) સરકારી અર્ધ સરકારી, ડેન્ડ્રીય કે ખાનગી સાંસ્કૃતિક સંસ્થાઓના પ્રતિનિધિઓ, યુનિવર્સિટીના પ્રતિનિધિઓ, આકાશવાણી એ. વી. ડેન્ફના પ્રતિનિધિઓ, ગુજરાત રાન્યશાળા પાઠ્ય પુસ્તક માલાના પ્રતિનિધિ (૪) ચારણી સાહિત્યના, લોક સાહિત્યના સાહિત્યકારો, વિદ્યારો, પાઠ્યકારો, કવિ, લેખકો, વિવેચકો, સંપાદકો, સંશોધકો, નિરીક્ષકો, વાર્તાકારો (ફરેક ક્ષેત્રના એક એક પ્રતિનિધિ) ની હેસીયતથી (૫) કાયમી નિમંત્રીત સભ્યો (૬) ચારણી જાતિની સામાજિક સંસ્થાઓના હોદેવારો.

બોર્ડના ઉદ્દેશો :-

(૧) ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્ય, લોક સંસ્કૃતિ ગુજરાતની આગામી અને વિશિષ્ટ પ્રકારની ઉચ્ચ સાહિત્યક અને ઐતિહાસિક મૂલ્યોવાળા મૂડી છે તેનું જરૂર કરવાનું.

(૨) ચારણી સાહિત્યનું વૈજ્ઞાનિક રોપ સંશોધન કાર્ય કરવાનું તેમજ જ્યાં ત્યાંથી ચારણી સાહિત્ય, લોકસાહિત્ય, કંકસ્થ, હુસ્તલેભિત અપ્રાચ્ય અપ્રકારીત પડ્યું હોય તેનો સંગ્રહ કરી તેનું પણ સંશોધન કરવું તેમજ તે સાહિત્યને સામાજિક કંસ્કારનું સાધન બનાવીને લોકોપયોગી બનાવવું.

(૩) ચારણી સાહિત્યના અંથેનાનું ગુજરાતી અર્થો સહિત લોકમોચ્ચ પ્રકારુનો પ્રસિદ્ધ કરવા તેમજ ચારણી સાહિત્યની ઐતિહાસિક દૃતિઓનાં પ્રકારાન દારા ગુજરાતના ધનિહાસની ખૂટતી કરીએ, અપ્રગત પ્રસંગેને પ્રકારમાં લાવવા.

(૪) ચારણો, ચારણી સાહિત્યના ધનિહાસનું સંશોધન કરવાનું સાહિત્યકારોના જીવન-કલ્પન પર ઝોજ કરવાનો તે સાહિત્યકારોની નામાવલી પ્રકારીત કરવાની.

(૫) ચારણો કે બારોટોને ત્યાં પટારે પરીને ઉધૃદ-ઉંદરોનો ભોગ બનતું ચારણી સાહિત્ય બચાવીને એક સ્થળે સંગ્રહ કરીને સંરક્ષનાનો.

(૬) ચારણી સાહિત્યનો અભ્યાસ કરવા માંગતા વિદ્ધાનો, સંશોધકો કે ધનિહાસકારોને સહાયકરણ થવાનો.

(૭) ચારણી સાહિત્ય વિશે સંશોધન કરતી સંસ્થાઓને-વ્યક્તિઓને ચારણી સાહિત્યની વિગતો-સામન્યો પાડવતા પહેલાં ચકાસણી કરવી અને તેમાં ખૂટતી કરીએની પુરવણી કરવાનો સંશોધકોને માગોદર્શન આપવાનો.

(૮) સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટીના ચારણી સાહિત્ય વિભાગની પ્રગતિની ચકાસણી માટે યુનિવર્સિટીની સેનેટ સભામાં સરકારશી દારા નિયુક્ત થતા સફ્ટગે પેટ્રા એક સભ્ય તરીકે આ સાહિત્યના પ્રતિનિધિના નામની સરકારશીને હરખાસત કરશે તે સભ્ય તે વિભાગની પ્રવૃત્તિ અને પ્રગતિનો અહેવાલ ઝોર્ડને તેમજ સરકારશીને આપશે.

(૯) ડિગળી કાંચ, ચારણી સાહિત્યથી નવી પેઢી લુપરિચીત થાય તે માટે ગુજરાત રાજ્ય શાળા પાઠ્ય પુસ્તક મંડળને, યુનિવર્સિટીના અભ્યાસક્રમ સમિતિને આ સાહિત્યની કૃતિને સ્થાન આપવા માટે ભલામણ કરશે તેમજ કક્ષા પ્રમાણે કૃતિઓની પસંદગી કરી આપશે.

(૧૦) ચારણી સાહિત્યનો રસાસ્વાદ સાથે આચ્ચય આનંદ લોકે માણી શકે અને ચારણી સાહિત્યની સાચી અનુભૂતિનો શાન્દિક પરિચય મેળવી શકે તે માટે ગુજરાતમાં ચારણી સાહિત્યના મહોત્સવનું આયોજન કરશે.
(ને રીતે ગુજરાત રાજ્ય સંગીત, નૃત્ય, નાટ્ય અકાદમી દારા નવરાત્રી ગરબા મહોત્સવ, નાટ્ય મહોત્સવ, વર્ગેરેતું આયોજન કરવામાં આવે છે તે પ્રમાણે)

(૧૧) ચારણી સાહેત્યના સંશોધન અને લેખનમાં મહત્વનું પ્રદાન કરનાર સાહિત્યકારો, કલાકારોને ગૌરવ પુરસ્કાર એવોઈજ આપવાની સરકારથીને ભલામણ કરશે. (ને રીતે ગુજરાત રાજ્ય સંગીત, નૃત્ય, નાટ્ય અકાદમી દારા પ્રતિવાર્ષિક પરરેઝિંગ આર્ટ માટે ગૌરવ પુરસ્કાર એવોઈજ અનાયત થાય છે તે પ્રમાણે)

(૧૨) ચારણી સાહિત્યકાર, કલાકાર સાહિત્યક્ષેત્રે નોંધપાત્ર પ્રદાન કર્યું હોય તેવા સાહિત્યકારો, કલાકારોની આર્થિક સહાય આપવાની સરકારથીને ભલામણ કરશે.

(૧૩) ચારણી સાહિત્ય-લોક સાહિત્ય વિદ્યાલયના, યુનિવર્સિટીના ચારણી સાહિત્યના પઠ્ય પુસ્તકોનું પ્રકાશન કરશે.

(૧૪) ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્ય, ડિગળી ભાષાના શાખાકોશનું પ્રકાશન કરશે.

(૧૫) ગુજરાતી પીકચર્સમાં ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યને અસંગતિને વિસંગતિને અવારતનિક અનાતીને પ્રસ્તુત કરતાં હોય છે. ગુજરાતી પીકચર્સમાં આ સાહિત્યનું ઔચીત્ય જળવાય તેવા પ્રયાસ કરશે.

(૧૬) ગુજરાત રાજ્ય સંચાલિત, ગુ. રા. સંગીત નૃત્ય, નાટ્ય અકાદમી, ગુ. રા. લોક સાહિત્ય સમિતિ; ગુ. રા. ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી નેવી સંસ્થાઓમાં સભ્ય તરીકે ચારણી સાહિત્યના પ્રતિનિધિના નામની સરકારથીને દરખાસ્ત કરશે.

કાર્ય પદ્ધતિ :-

ઉપરના ઉદ્દેશો સિદ્ધ કરવા માટે બોર્ડ નીચે પ્રમાણે કાર્ય હાથ ધરશો.

(૧) ચારણી સાહિત્યના પ્રગટ અપ્રગટ અંથોનું અને હસ્તપ્રતોનું અંથાલય કરશો. (૨) ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યનું દિમાસીક મુખ્યપત્ર પ્રગટ કરશો. (૩) ચારણી સાહિત્યના અંથોની પ્રકાશનની યોજના કરશો અને પુસ્તકો પ્રસિદ્ધ કરશો. (૪) રીતે ગુજરાત રાન્ય લેક સાહિત્ય સમિતિ અમદાવાદ પ્રકાશન-કાર્ય કરે છે તે પ્રમાણે) (૫) ચારણી સાહિત્યના ધાર્મિક અંથો અવતાર ચરિત્ર, પાંડુ ધરોન્હુ ચંદ્રિકા, રામ રાસો, નીર વિનોહ વગેરે જાહેર જનતા માટે ગુજરાતમાં જુહે જુહે સ્થળે જાનસત્રો જોડવશો, ધાર્મિક પરાયણોમાં રાત્રીના કાર્યક્રમોમાં આ દૃતિઓનો આસ્ત્રાહ કરાવશો. (૬) શાળા, કોલેજ, યુનિવર્સિટીના અભ્યાસક્રમમાં સ્થાન પામેલ દૃતિઓનો અભ્યાસ કરાવતા શિક્ષકો-અધ્યાપકોને તે દૃતિઓનો તેમજ ચારણી સાહિત્યનો પ્રાથમિક પરીયય થાય તે માટે તે અધ્યાપકગણુંને માટે જાનસત્રો જોડવશો. (૭) બોર્ડ સાથે ચારણી સાહિત્ય અને લોક સાહિત્યના વિવાદયો સલગ્ન રહેશો. (૮) લુપ્ત થતાં જતાં ચારણી સાહિત્ય, લોક સંસ્કૃતિના અવશેષોની જગ્યાથી માટે રેડાઇગ ફોયોઆફ તેમજ અન્ય આધુનિક પદ્ધતિથી કાર્ય હાથ ધરશો. (૯) અભ્યાસક્રમમાં સ્થાન પામેલ પુસ્તકોનું પ્રકાશન કરશો. (૧૦) આ સાહિત્યના શખાની સમુદ્ધિ, વૈવિધ્ય અને રઘુઆતની ગરીમા અને ગૌરવ નવા યુગના સંહર્મમાં જગ્યાવાઈ રહે તે માટેની યોજનાઓ ધરશો તેમજ તેનું અમલીકરણ કરાવશો. (૧૧) ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્ય, શિક્ષણ સાહિત્ય, જગત સાહિત્ય તેમજ જુનાં અને નવાં યુગનાં લોકોન્ય અંશાનું સમન્વય કરશો.

કર્મચારી ગણઃ-

| કાર્યાલય | જગ્યાનું નામ | જગ્યાની સંપત્તિ | પગાર ધોરણ |
|----------|--------------------------|-----------------|---------------|
| ૧ | અધ્યક્ષ | ૧ | રૂ. ૧૧૦૦-૧૬૦૦ |
| ૨ | શાખાધાર | ૧ | રૂ. ૧૦૦-૧૩૦૦ |
| ૩ | લોકયુમેન્ટ એફિસર | ૧ | રૂ. ૧૦૦-૧૩૦૦ |
| ૪ | રઝર્ડર | ૧ | રૂ. ૫૦૦-૮૦૦ |
| ૫ | હેડ કલાર્ક કમ લાયફ્રેન્ચ | ૧ | રૂ. ૪૨૫-૮૦૦ |
| ૬ | કલાર્ક કમ ટાઇપિસ્ટ | ૧ | રૂ. ૨૬૦-૪૦૦ |

| અનુક્રમ | જગ્યાનું નામ | જગ્યાની સંખ્યા | પગાર ધોરણું |
|---------|-------------------------------|----------------|-------------|
| ૭ | હૃતપ્રત નિરીક્ષક કમ પ્રેરીડર | ૧ | ૩. ૨૬૦--૪૦૦ |
| ૮ | ફાટોચાફર કમ રેકૉર્ડિંગ ઓપરેટર | ૧ | ,, ૨૬૦--૪૦૦ |
| ૯ | પટાવાળા | ૨ | ,, ૧૬૬--૨૩૨ |
| ૧૦ | ચોકીશર | ૧ | ,, ૧૬૬--૨૩૨ |

દેશ ઉર્માચારીને નિયમાનુસાર અન્ય ભથ્થા મેળવવાને પાત્ર રહેશે. ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યમાં સુઝી ધરાવતા ઉમેદવારોને પ્રથમ પ્સંહણી તેમજ ઉમરમાં છૂટાણાટ આપવી. જાતિગત સાહિત્યનાં સંસ્કારો ધરાવતા ઉમેદવારો અથવા ચારણી સાહિત્ય વિદ્યાલયોના દીક્ષિત ઉમેદવારોને ઉપરોક્ત જગ્યાઓની ગોચરતા ધરાવતા હેઠ તો પ્રથમ પ્સંહણી આપવી ઉમર તેમજ શૈક્ષણિક લાયકાતમાં પણ છૂટાણાટ આપવી.

કુરણે :-

અધ્યક્ષ : ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના જાતા, સંશોધક, યુનિવર્સિટીની પી. લી. કલ્યાણી ઇક્લિનિના અધ્યક્ષ, વહીવટી હિસાબા અને સંસ્થાપનકાર્યના અનુભવી હેવા જરૂરી છે. બોર્ડ અને વિદ્યાલયને વહીવટ કરશે. બોર્ડ સાથે સંલગ્ન વિદ્યાલયોમાં અધ્યાપકો સાથે પારીયડ લેશે.

શોધાધ્યક્ષ : ચારણી સાહિત્ય, લોક સાહિત્યના અભ્યાસી, લેખન, સંશોધન, સંપાદન ક્ષેત્રના અભ્યાસી. ચારણી સાહિત્યનું ડિમાસીક મુખ્યપત્રનું પ્રકાશન કરશે, ચારણી સાહિત્યના લોકભોગ્ય પ્રકાશનોનું સંપાદન કરશે. ચારણી સાહિત્યના સંશોધકો, ધર્તિહાસકારોને માર્ગદર્શન આપશે તેમના કાર્યમાં સહાયકૃપ બનશે, અધ્યક્ષશીના માર્ગદર્શન મુજબ કાર્ય કરશે, અધ્યક્ષની ગેરહાજરીમાં અધ્યક્ષશીની કુરણે બળવશે.

ડેક્યુમેન્ટ ઓફિસર : ડેક્યુમેન્ટની જાળવણીના અનુભવી તેમજ તે અંગેની શૈક્ષણિક ગોચરતા, સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો આગોજના અનુભવી, ચારણી સાહિત્યનું અંચાગાર ઉમું કરશે, રેકૉર્ડિંગ, ફાટોચાફર. હૃતપ્રતોનું એકત્રીકરણ, તેમજ જાળવણીની વ્યવસ્થા કરશે, મહાત્સંગ, જાનસત્ત્રો ગોઠવશે. અધ્યક્ષશી, શોધાધ્યક્ષના કાર્યમાં સહકાર આપશે. શોધાધ્યક્ષના ગેરહાજરીમાં શોધાધ્યક્ષની કુરણે બળવશે.

(રજુસ્ટ્ટાર, હેડ કલાર્ક, કમ લાયએરીયન, કલાર્ક કમ ટાઇપીસ્ટ, પટાવાળા, ચોકીશર વગેરે જગ્યાની ગોચરતા મુજબ કાર્ય કરશે)

હસ્તપ્રત નિરીક્ષક કમ પ્રુફરીડર : શોધાખ્યકુની હાથ નીચે કાર્ય કરશે. ડોક્યુમેન્ટ શોધવા, સાહિત્યકારોના જીવન કથન વિષે ઓજ કરતી, દ્વિમાસીક મુખ્યપત્ર અને અન્ય પ્રકાશનમાં પ્રુફરીડર તરીકે સેવા આપશે, ડોક્યુમેન્ટ ઓઝિસરની રાહબરીથી કાર્ય કરશે.

ઇન્ટોઆફર કમ રેકોડીંગ ઓપરેટર : ડોક્યુમેન્ટ ઓઝિસરના હાથ નીચે કાર્ય કરશે. ઇન્ટોઆફરનું તેમજ રેકોડીંગનું કાર્ય કરશે. સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમો, જ્ઞાનસત્ત્વોમાં મદદદ્યપ થવાનું.

અંદોર્પણ :-

| ખર્ચ | માસીક | વાર્ષિક |
|--|--------------|-----------|
| ૧ પગાર ખર્ચ | | |
| (૧) અભ્યક્ષ | રૂ. ૧,૮૫૨-૫૦ | ૨૨,૨૩૦-૦૦ |
| (૨) શોધાખ્યકુ | , ૧,૨૮૧-૦૦ | ૧૫,૩૭૦-૦૦ |
| (૩) ડોક્યુ. ઓઝિસર | , ૧,૨૮૧-૦૦ | ૧૫,૩૭૦-૦૦ |
| (૪) રણસ્ટાર | ૮૨૬-૦૦ | ૧૧,૧૧૨-૦૦ |
| (૫) લેડ કલાક્ કમ લાય. | ૮૧૩-૦૦ | ૮,૭૧૩-૦૦ |
| (૬) કલાક્ કમ ટાઈ | ૪૪૩-૪૦ | ૬,૫૨૦-૮૦ |
| (૭) હસ્તપ્રત નિરીક્ષક કમ પ્રુફ. | ૪૪૩-૪૦ | ૬,૫૨૦-૮૦ |
| (૮) ઇન્ટોઆફર કમ રે. ઓ. | ૪૪૩-૪૦ | ૬,૫૨૦-૮૦ |
| (૯) પટાવાળો | ૪૧૦-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| (૧૦) પટાવાળો | ૪૧૦-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| (૧૧) ચોડાણાર | ૪૧૦-૪૦ | ૪,૬૨૪-૮૦ |
| ૨ મકાન ભાડું | રૂ. ૨,૦૦૦-૦૦ | ૨૪,૦૦૦-૦૦ |
| ૩ પ્રકાશન ખર્ચ | | ૬૦,૦૦૦-૦૦ |
| (૧) દ્વિમાસીક મુખ્યપત્ર રૂ. ૬,૦૦૦-૦૦ | | |
| (૨) પુરતક પ્રકાશન " ૫૪,૦૦૦-૦૦ | | |
| ૪ ફર્નિચર સાધન સામગ્રી રોલ કેસેટ વગેરે | | ૧૦,૦૦૦-૦૦ |
| ૫ સંશોધન પ્રવાસ | | ૬,૦૦૦-૦૦ |
| ૬ ચારણી સાહિત્ય મહોત્સવ | | |
| (૧) કલાકારોને પુરસ્કાર રહેવા જમવા સાથે | | ૭,૫૦૦-૦૦ |
| (૨) રંગમંચ તૈયાર કરવાનો ખર્ચ ભાડું વગેરે | | ૧,૦૦૦-૦૧ |

| | |
|---|-----------|
| (૩) એકેક વ્યવસ્થા પાથરણા વગેરે | ૫૦૦-૦૦ |
| (૪) લાઈટ માધકનો ખર્ચ | ૪૦૦-૦૦ |
| (૫) પ્રચાર તેમજ જાહેરત માટે એનાર્ડ, એકેડમી, હેન્ડશીલ્સ, નિમંત્રણ કાર્ડ વગેરે | ૫૦૦-૦૦ |
| (૬) પરચુરણ ખર્ચ વીજળી વળતણ, ડોટોઆઇસ, રીલાલાડું વગેરે | ૫૦૦-૦૦ |
| ૭ સ્ટેશનરી | ૨,૦૦૦-૦૦ |
| ૮ તાર ટપાલ | ૨,૦૦૦-૦૦ |
| ૯ અંથાલય ખર્ચ | ૨૦,૦૦૦-૦૦ |
| (૧) મુસ્તક ખરીદી રૂ. ૧૦,૦૦૦-૦૦ | |
| (૨) હુસ્તપ્રત ખરીદી રૂ. ૧૦,૦૦૦-૦૦ | |
| ૧૦ વીજળી પાણી ટેલીશૈન ખર્ચ | ૨,૦૦૦-૦૦ |
| ૧૧ કન્ટીજનસી ખર્ચ | ૨,૦૦૦-૦૦ |

વાપિંગ કુલ ખર્ચ રૂ. ૨,૪૬,૫૮૬-૦૦

કુલ રૂ. ૨,૪૬,૫૮૬-૦૦ અને ઇપિયા એ લાખ છેતાલીસ હજાર
પાંચસા છયાસી પુરા.

ખાસ ઘોજના :-

નીચે મુજબ ખાસ સંપાદન-પ્રકાશન ઘોજના ચારણી સાહિત્ય એકેદારા કેમશ અમલમાં મૂકાતી આવે. એક ઘોજના તણ વર્ષમાં પૂરી કરી શકાય. જેનું હેડ 'ખાસ સંપાદન-પ્રકાશન ઘોજના' રહે કોઈ વ્યક્તિ-સંસ્થા દારા અનુધાનથી તે વ્યક્તિની અથવા સંસ્થા જેમના નામના અલામણ કરે તેમના નામની અંથાવલી અથવા 'રમૃતિ પ્રકાશન' આ ખાસ ઘોજનામાં સમાવેશ કરી શકાય ઉદ્ઘારણ તરીકે-

| | | |
|------------------|-----|-------------|
| (૧) પ્રવિષુસાગર | રૂ. | ૧,૦૦,૦૦૦-૦૦ |
| (૨) અવતાર ચરિત્ર | " | ૨,૦૦,૦૦૦-૦૦ |
| (૩) સભા પ્રકાશ | " | ૭૫,૦૦૦-૦૦ |
| (૪) વીર વિનોદ | " | ૭૫,૦૦૦-૦૦ |

કુલ રૂ. ૪,૪૦,૦૦૦-૦૦

ગુજરાત રાજ્ય શાળા પાઠ્યપુસ્તકો, યુનિવર્સિટીઓમાં ચારણી
સાહિત્ય :-

નવી પેઢી ચારણી સાહિત્યથી સુપરિચીત થાય તે માટે શાળા મંડળના
પાઠ્યપુસ્તકોમાં કક્ષા પ્રમાણે ચારણી સાહિત્યની કૃતિઓને સ્થાન આપવું
જરૂરી છે.

ધોરણ ૭ ના ગુજરાતી વિષયના પાઠ્ય પુસ્તકમાં ગાંધીયુગના ચારણ
કવિઓની કૃતિઓને પદ્ધતિભાગમાં સ્થાન આપવું.

ધોરણ ૮ ના ગુજરાતી વિષયના પાઠ્ય પુસ્તકમાં અર્વાચીન ચારણ
કવિઓ લેખકોની પદ્ધ-ગદ્ધ કૃતિઓને સ્થાન આપવું.

ધોરણ ૯ ના ગુજરાતી વિષયના પાઠ્ય પુસ્તકમાં અર્વાચીન, સાંપ્રતયુગના
સાહિત્યકારોની પદ્ધગદ કૃતિઓને સ્થાન આપવું.

ધોરણ ૧૦ ના ગુજરાતી વિષયના પાઠ્યપુસ્તકમાં પ્રાચીન (પ્રવિષુસાગર,
અવતાર અરિન, હરીરસ વગેરે; અર્વાચીન, સાંપ્રતયુગની
એક એક એમ નણ ચારણી સાહિત્યની પદ્ધ કૃતિઓ અને
એક ગદ્ધ કૃતિ.

ધોરણ ૧૧ અને ૧૨ ગુજરાતી વિષયના પાઠ્યપુસ્તકમાં ધોરણ ૧૦ મુજબ
કૃતિઓને સ્થાન આપવું.

બી. એડ. કેલેજ, પી. ટી. સી. કક્ષાએ ચારણી સાહિત્ય:-

બી. એડ. કેલેજનેમાં તેમજ પી. ટી. સી. ના વર્ગોમાં આ સાહિત્યના
જ્ઞાનસર્વો પ્રતિવર્ષે જોડનવા લોધેએ, જેથી પાઠ્યપુસ્તકોમાં સ્થાન પામેલ
ચારણી સાહિત્યની કૃતિઓનો તેમજ ચારણી સાહિત્યનો ભાવિ પેઢીના
ઘડવૈયાઓને પ્રાથમિક પરિચય થય તે અત્યંત આવરણક અને અનિવાર્ય છે.

યુનિવર્સિટી કક્ષાએ :-

સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટીના એમ એ. પાર્ટ ૧ અને ૨ માં પ્રશ્નપત્ર ૪
અને ૮ માં વૈકળ્પિક વિષય તરીકે લોક સાહિત્યને સ્થાન મળ્યું છે. તેજ
પ્રમાણે ચારણ કવિ શ્રી અભિનાનંદ પદ્ધવાલિને એમ. એ. પાર્ટ ૨ માં
પ્રશ્નિકૃતિઓના અભ્યાસમાં સ્થાન મળ્યું છે. આજ પ્રમાણે હરેક
યુનિવર્સિટીઓમાં તે અભ્યાસક્રમોમાં આ સાહિત્યને સ્થાન મળે તે અત્યંત
જરૂરી છે. આ અંગે લોક સાહિત્યના પ્રખર પુરસ્કર્તા શ્રી મુખ્યરાખાઈ
ચંદ્રવાડરનું મંત્ર્ય ઉદ્દેશનીય છે.

“હેશ સ્વતંત્ર થયા પણ વિવાચીય ક્ષેત્રે પણ નવી નવી શાખાઓ અને વિવ્યોગના અભ્યયન માટે સંરોધન માટેની જેવના અને ચિંતા યુનિવર્સિટી કરી રહી છે. આમાં ભારતીય સંસ્કૃતિને પણ પ્રાધાન્ય સ્થાન મળ્યું છે.

તેનાજ સંદર્ભમાં વિશ્વ વિદ્યાવિદ્યામાં ભારતીય સંસ્કૃતિના એક અંગ જેવા છતાંય સામુજિક વિજ્ઞાનનો અભિગ મોબો અને સ્વતંત્ર વિપ્યા તરીકે ભાનવીય વિવ્યોગમાંના Humanithies એક લોકશાસ્ત્રનો Folk Culture વિપ્યા તરીકે અપનવવા આગહુભરી વિનંતી કરીએ છીએ, કેમકે ગુજરાત, સૌરાષ્ટ્ર અને કર્ણા લોકશાસ્ત્રના વિપ્યામાં ખૂબ સમૃદ્ધ છે. સૌરાષ્ટ્રનું લોક સાહિત્ય, કર્ણાની લોક કથાઓ અને ગુજરાતની સરહદ પર વસતા આહિવાસીઓનાં લોક નૃનો, લોકગીતો અને લોકાલંકારો વિશિષ્ટ પ્રકારનાં છે. સૌરાષ્ટ્ર, કર્ણા અને ગુજરાતમાં વિશિષ્ટ પ્રમારની હોવા છતાંય પ્રાચીન ભારતીય સંસ્કૃતિ સાથે તેનો જેટલો અનુભંગ છે, તેટલોજ અન્ય દેશોની પ્રાચીન સંસ્કૃતિ સાથે અનુભંગ લેડી રહ્યા તેમ છે. પણ આને રાષ્ટ્ર સંકાંતિકાળમાંથી પસાર થઈ રહ્યું છે. આના કારણે ભારતીય લોક જાતિઓમાં જડપી પરિવર્તન આવી રહ્યું છે. આ જાતિઓને તેમની સંસ્કૃતિના મહત્વનો ખ્યાલ નહીં હોવાથી તેઓ પણ પાશ્ચાત સંસ્કૃતિ તરફ જડપે દોટ દેવા લાગ્યાં છે. આજના ભારતીય શિક્ષણ વ્યવસ્થામાં આ જાતિઓ માટેનો દોધ અભ્યાસક્રમ નહીં હોવાથી શિક્ષિતજ્ઞનો પણ લોક શાસ્ત્ર તરફ ઉપેક્ષાવૃત્તિ સેવા તેનાથી વિમુખ થવા લાગ્યો છે.

આ પરિસ્થિતિમાં ગુજરાતની હેઠળ યુનિવર્સિટી આ શાસ્ત્રન અભ્યાસક્રમને અભિગ વિપ્યા તરીકે યા પ્રારંભમાં વૈકલ્પિક વિપ્યા તરીકે સ્થાન આપીને લોકને તે દિશામા જોતો કરે અને છેવટે તે સંસ્કૃતિનું મહત્વ સમજુને તેનું સંરોધન અને સુરક્ષા કરતો થાય તેવી સુવિધા કરવા માટે અમે આપને આગહુભરી વિનંતી કરીએ છીએ. કેમકે ભારતની અન્ય ત્રૈવીસ જેટલી યુનિવર્સિટીઓમાં લોક સંસ્કૃતિના અભ્યાસને સ્થાન અપાયું છે અને અભ્યાસ થવા લાગ્યો છે.

આથી આપ આપની યુનિવર્સિટીમાં અનુસ્નાતક કક્ષાએ હુલમાં ગુજરાતી ભાષા સાથે યા સમાજશાસ્ત્રની સાથે નૃવંશશાસ્ત્ર સાથે યા ધ્રતિહાસ સાથે લોકશાસ્ત્રના એ પેપર્સ અણુવવાની ગોડવણી કરવા માટે આગહુભરી વિનંતી છે.”

-પૂર્વી ચંદ્રવાકર.



શ્રીમતી મોંદીવા ગઢવી અને શ્રી મેહુભામાઈ ગઢવી

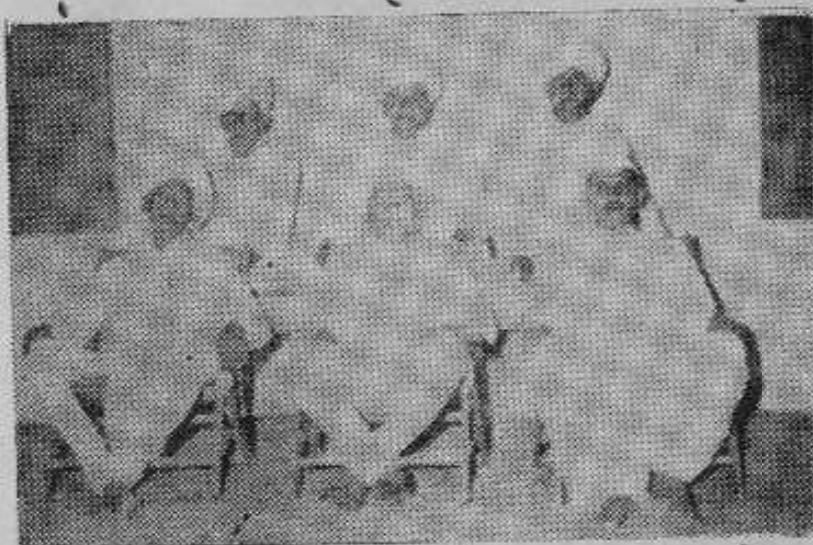
શ્રી મેરુભાભાઈ ગઢવીનાં માતાપિતા અને ભાઈઓ
માતા પિતા



પૂ. બાઈ શ્રી ઝોણબાઈ મા

પૂ. શ્રી મેઘાણદ ગઢવી

ભાઈઓ



શ્રી કહાતદાસભાઈ, શ્રી મેરુભાભાઈ, શ્રી નારણદાસભાઈ
શ્રી રામભાઈ, શ્રી પંગલશીભાઈ, શ્રી નાગભાઈ.

મહાગુજરાતના માનીતા લોક સાહિત્યકાર

શ્રી મેઢાણુંહ ગઢવી

લેખક :

ડા. ગોકુલદાસ દ્વારકાદાસ રાયચુરા

'રાયચુરાભાઈ, મેધાણુંહાઈના આ પુત્ર કંઈ એલે છે કે નહિં ?'

'હજુ સુધી તો મારા હેખતાં છેલ્લા એ વર્ષમાં કોઈ દિવસ કંઈ એલ્યા નથી.'

'એ તો સિહના અચ્ચાં સિહન હોય આજે એમની પામે પળું કંઈક એલાવો.'

ચરોતર પ્રદેશના પ્રાણું સમા શ્રી મોતીભાઈ અમીને મુખ્ય પર લોહીની ટશેડ ફૂટા બાંનીસ વર્ષના એ યુવાન ચારશુકુમાર મેડલા સામે સહાય દર્શિ કર્યા.

૧૯૨૭ માં નાનિયાદમાં સાહિત્ય પરિપહ્ની એડિ શ્રી આનંદસંકર બાપુભાઈ હુંવના પ્રમુખપળા હેડળ ભળવાનું નક્કી થયું. નાનિયાદમાં સાહિત્ય પરીક્ષા મને અને એમાં ચરોતરના શિક્ષિત વર્ગ સાથે લોકવર્ગ પળ સાહિત્યનો સંપર્ક સાધી રહે એ દર્શિએ શ્રી મોતીભાઈ નરસીભાઈ અમીને ખૂબ પ્રચારકાર્ય કર્યું. મારા ચારણ મિત્રો સાથે આવવાનો ખાસ આગ્રહિબર્યો પત્ર શ્રી મોતીભાઈ તરફથી મને મળ્યો. મેં અને મારા ચારણ મિત્રોએ એ આમંત્રણ સ્વીકાર્ય અને એ સરસ્વતીપુત્રાને સાંભળવા ચરોતર દિલ્લ્યું.

કશ્યાંપૂર્ણિમાની રાત્રી જમી હતી. ચાંદી જમજમ વરસી રડી હતી. નાનિયાદનો અંતરામ મંહિરનો એક દસ હળવની માનવમેહ થિ ડિલોને

યડ્યો હતો. જેડા જુદો એ વખતે સર્વાંગ ખાદીમય હતો એટને સંતરામ મંહિરનો શૈવેત ચોક, શૈવેત ખાદીધારી દસ હળવર ઓતાજનો અને માથે પૂર્ણિમાના શૈવેત તેજે પ્રકાશનો શરહનો ચંદ્રમા એ દર્શય જીવનભર યાદગાર રહી જય તેવું હતું.

શ્રી મોતીલાઈ અમીનની જુવના મેં એકબીસ વર્ષના એ ચારણ જુવાન સમક્ષ મર્ગી.

‘આપુની હાજરીમાં હું ગાતો નથી.’

‘આપુની હું રણ લઈ હઉં?’ મેં જોખતાં જોખતાં મેઘાણુંભાઈ સામે જેયું.

‘ભોલ, મેઝભા, ભોલ’ પોતાની મૂછેના ભવ્ય કાતરા પર હૃથ ફેરવતાં ફેરવતાં પિતાએ પુત્રનો આજા કરી અને ભ્યાનમાંથી તલવાર નાકો એ રીતે જરૂર ફઠને મેઝભા ઉભા થયા.

ચારણ ચોયો વેદ, વણુ પદ્ધિયો વાતું કરે.

એ દુહાનું ચરણ સાચું પાડતાં એમણે તો ઉડતાવેંત જમાયું.

જુવાનિથી જાળગતું પાતળું શરીર, ભવ્ય ચારણી તેજ અને જુલંદ મીઠા કર્દે.

સુણ રાધેયારી મેં બલિહારી જોડુણ આવો જીરધારી; એ બારમાસી જમાની, જાહેરમાં પહેલો જ જોખવાનો પ્રસંગ અને એ પહેલી જ વખતે દસ હળવરની સંપ્રયામાં ઓતાએ. વીસ હળવર વાંખ્યો એક સરખી આ કેસરીકુમાર સરીખા ચારણ જુવાન સામે મંડાઈ પણ ન મળે સભા-ક્ષોલ કે ન મળે ડોઢપણું જાતની મુનજરી. રણકત્તા અવાજે વીસ હળવર હાથેએ પડતી તાળાએ વચ્ચે મેઝભા એમના જાહેર જીવનનું પ્રથમ ગીત પુરું કર્યું.

ખાજુ સહ્યારે સાડિત્ય પરિપદ્ધના પ્રમુખ શ્રી આનંદશંકરભાઈને કાને આ દ્વારાની વાતો પંડોચી અને પ્રથમ મુલાકાતે મળે એમણે ઉતાવળે પૂર્ણયું ‘આ મેઝભા કોણું?’

મેં એ સહ્યારી સાક્ષરવર્ણ સાથે મેઝભાની ઓળખાણ કરાવી.

‘તમે તમારા આ ચારણુ મિત્રો સાથે અહિથી અમદવાદ આવો. આપણે પ્રેમાભાઈહોલમાં એક દ્વારા ગોડારીએ.’ અને નાદિયાદનો કાર્યક્રમ પુરો કરી અમે અમદવાદ ગયા. પ્રેમાભાઈ હોલમાં દ્વારા થયો અને અને શ્રી આનંદશાહભાઈ, શ્રી દેશવલાલભાઈ, શ્રી કૃપશ્વલાલભાઈ અને અન્ય સાક્ષરો પણ મેરાના કંડ અને એની હલકપર મુગધ થયા.

૧૯૨૪ ના એપ્રિલમાં ‘શારક્ષ’ શરૂ થયું. લોક સાહિત્ય એ ‘શારક્ષ’ની વિશિષ્ટતા હતી. ચારણો અને ચારણી સાહિત્યની ગુજરાતનો સાથે સ્વરૂપે પિણાણ થાય એ ‘શારક્ષ’નું ધ્યેય હતું. રાખારીએ, આહિરો, મેરો અને ચારણોની બેઝખંડી મનો મળતી જતી હતી, ૧૯૨૫ ના રાઢાત હતી. એ વખતે ‘શારક્ષ’ રાજકોટમાં છપાતું એટલે ચોરવાઉથી હું રાજકોટ આવ્યો હતો. એક સહવારે રાજકોટ સેવા સંઘરાગાં શ્રી હુક્મામચંદ જસાણીની ચિહ્ન આવી કે એમને ધેર એક જૂતા નેવા ચારણ આવેલ છે. હું ઉતાવળે શ્રી જસાણીને ધેર ગયો અને યુગ યુગના ઓળખાણ હોય એ રીતે સાચા ચારણોની જૂતી પેઢીના એક અને અનેડ પ્રતિનિધિ સમા મેધાણું દાખાઈનો બેટ્યો. પ્રથમ દર્શનો સર દીરોજશાહ મહેતા નેવા એ સિહમુખા સરસ્વતીપુરે મનો મુગધ કર્યો.

મેરા એ વખતે એમના પિતાની સાથે હતા. ધેરવાળું પાણુકોરાનું કરીયું, ચારણી, ઉપર બેડ અને માથે સરેફ પાધરીવાગા એ ઓગણુસ વર્ષના જુવાનની પિતુલકિત અજખ હતી. પિતાની આમન્યા રાખ્યવાની એમની નાતિરીતિ મનો ખૂબ ગમી. મૌન સેવતા એ ઓગણુસ વર્ષના મેરા પિતાની સાથે સર્વસ્થાને હાજર રહી પિતાની સેવાનો આણમણો લાગ ઉડાવતા.

પછી તો ગઠની નેધાણું દાખાઈ અને હું આમંત્રણે ચડયા. મુંખઠ, ગુજરાત, ડાનિયાવાડ અને ઠેડ હોકશણમાં ભારતી સુર્ખી સાહિત્યના અનેક કાર્યક્રમો થયા પણ પિતા સાથે આવતા મેરા એક પણ શખ મોદતા નહિં નાદિયાટે એ મૌન તોડ્યું અને એનું માન ચોરતર પ્રદેશના એ લોકનાયક ગુજરાતના માનીતા સ્વ. શ્રી મોતીભાઈ અમીનને છે.

પિતાથી પુત્ર સ્વાપો થાય અને એ નેઈ પિતા રાચે એવા પ્રસંગે હવે શ્રી નેધાણું દાખાઈને સાંપડવા અને ‘શારક્ષ’ના ચારણી સાહિત્યના અચારમાં મેરાના વ્યક્તિત્વે અજખવેગ આપ્યો. દૂહા, સારડા, ચારણી છંદો,

લોકગીતો, ભજનો અને લોકવાર્તા જમાવવામાં મેડલાએ એમના પિતાનો વારસો અજખ શોભાએ.

લોક દરખારમાં સન્માન મેળવનાર યુવાન મેડલા તરફ રાજદરખારનું લક્ષ હેચાયું અને ગુજરાતના નાથ સ્વ. સર સયાજરાવ ગાયકવાડ નેવા દ્વારા અને વિદાન રાજરાજેન્દ્રના એ પ્રીતિપાત્ર બન્યા. મહાન ગુજરાતી તરીકે રાજવીએમાં નેમની ગણના થાય છે એવા એ વડોહરાના નૃપતિ સર સયાજરાવના ડીરક મહોત્સવના દરખારમાં પંડિત માલવીયાજીના વજૂદી નેટલુંજ સન્માન કોઈએ મેળાયું હોય તો એ આ મેડલાએ.

લાડીમાં સાહિત્ય પરીપદ મળ્યા. લાડીના સાહિત્યપ્રિય રાજવીએ શ્રી મેડલાને વર્ષાસન બાંધી આવ્યી પોતાના કર્યા.

આને લાડીનો નવરાત્ર મહોત્સવ, વડિયાનો જન્માટમીનો ઉત્સવ અને પોરખંદરનો હનુમાન જ્યંતિનો ઉત્સવ શ્રી મેડલાની લોકભાનીથી આકર્પણ અન્ય છે.

રાજવીએ અને રાજરાજીએ, સરહારો અને અમારો શાહુકારો અને સાક્ષરો, ભણેલા અને અભણું એ સાફ મેડલાનાં ગીતો. મેડલાની લોકવાર્તાએ સાંભળવા હરહંમેશ આતુર રહે છે. રાજરલન શ્રી શેડશ્રી નાનગુભાઈ કલીદાસ મહેતા નેવા સાહિત્યપ્રિય પુરુષનું લક્ષ આ યુવાન ચારણું તરફ ગયું અને એ શાહ સાદાગરે પોતાની સાથે આ યુવાન ચારણું હેઠ આદ્ધિકા લઈ જઈ આદ્ધિકામાં હેર હેર લોક સાહિત્યની લડાયું કરાની.

પાટણમાં હેમ સારસ્વત સત્ર શ્રી કનૌયાલાલ મુનશીના પ્રમુખપણું હેઠળ મહ્યું. છેલ્દો દિવસ હતો. બપોરના બાર થવા આવ્યા હતા. આપો મંદ્ર ચિકાર હતો. શ્રી મુનશી બ્યાસપીઠ પર આવ્યા અને બોલ્યા “તમે કેને સાંભળવા માંગો છો એ હું જાણું છું. અને એટલા માટે તો હું એમને અહિં લઈ આવ્યો છું. એ મેડલા હજી ઓલવાના છે.”

આ રીતે આને મહાગુજરાતમાં રાજ દરખારે અને લોક દરખારે સરખું સન્માન મેળવનાર મેડલા ગુજરાતનું સાહિત્ય ધન છે.

આ તો શ્રી મેડલાનું અધૂરું ચિત્ર છે એ એમનું એમ રહેવા હૈ એમના કુદુંબ જીવનનો કંદક પરિયય આપું ?

ચારણુકુળની એક લિખિતતા છે. જગદભાઈ—દેવીઓ વિશે ચારણોમાં જ થધ છે. શ્રી મેઢભાના પિતા મેધાણુંદ્બાઈ નિરક્ષર છે. એમને 'ક' લખતાં આવડતો નથી પણ ચારણ માતાના આશીર્વાહે એ નિરક્ષર સાક્ષર બત્યા.

શ્રી મેઢભાના માતુથોમાં એ ચારણ માતાનાં તેજ મેળેથી અને આને એ જ પુત્રની માતા હર્ષનિય છે. આશીર્વાહ લેવા જેવા છે. હું મને સહભાન્યશાળી ગાંધું છું કે એ માતા પોતાના પુત્રને કહે છે કે 'રાધ્યુરા મારો સાતમો હિકરો છે.'

એ માતાને હર્ષને રાજવીચો, શાહુ-સોચાગરો અને દુરોપનાં સાક્ષર રી-પુરુષ મેઢભાની જન્મભૂમિ છાત્રાવાને આંગણે ગયાં છે. શ્રી મેઢભાનું છાત્રાવાનું ધર-કણિયું સાચી સાક્ષરતાને રંગે રંગાગેલું છે. માતા પિતા અને છએ ભાઈઓ ચાંડનીમાં એ ઝણીયામાં એસે. શ્રી મેઢભા રામાયણ વાંચે, નાના ભાઈઓ સુકંઠે ભજનો લલકારે એ જીવનચિત્રો શાખમાં વાંચવા કરતાં નજરે લેવા જેવાં છે.

ભાદરકંડાનું એ છત્રાવા નામનું નાનકડું ગામડું ગઢવી શ્રી મેધાણુંદ્બાઈ અને એના પિતાથી સવાયા થયેલા પુત્ર શ્રી મેઢભાથી ડેડ ઓફસફર્ડ યુનિવર્સિટી સુધી પ્રસિદ્ધ પાન્થું છે.

શ્રી મેઢભાનાં ધર્મપત્ની સૌ. મોંઘીબા અતિ સંસ્કારી છે. લોક-ગીતોનાં એ કુણેર ભાડારી છે. 'શારદી'માં પ્રસંગે પ્રસંગે એ ભાડારના હિરલા ચ્યમકે છે.

મેઢભાના મોટાભાઈ શ્રી કહાનદાસભાઈએ પણ પિતા પાસેથી વાર્તા સાહિત્યનો વારસો મેળવ્યો છે. એમની કહેણી પણ શ્રી મેધાણુંદ્બાઈને મળતી આવે છે અને નહાનાભાઈ શ્રી પિંગળશી તો સરસ કવિ છે. ચારણી ઝડપમણે એમની કાવ્યકલામાં એતાપ્રોત થયેલ છે.

ચારણો-સંસ્કારી ચારણો મેઢભાની યશસ્વીયાનીમાં ચારણ જાતિનું ગૌરવ અનુભવે છે. લીંબડીના રાજકબિ શ્રી શાંકરદાસભાઈ, વળાના રાજકબિ શ્રી ઠારણુભાઈ અને ભક્તકબિ શ્રી દુલાભાઈ ભાયાભાઈ કાગ જેવા ધૂરધર ચારણો મેઢભાને પોતાના જ ગણે છે. અને મેઢભાદારા થતું ચારણ જાતિનું સન્માન સંતોષથી ઝીલે છે.

તમે તો શ્રી મેઢભાની વાણી સાંભળો હોય ન સાંભળો હોય તો તક લઈ જડી સાંભળજે અત્યારે તો એટસું જ કંડીશ બાકી શ્રી મેઢભા વિષે કહેવાનું તો મારી પાસે વણુંય છે.

છત્રાવા ચારણુ સંમેલન—સંસ્મરણો

લેખક :

શંભુપ્રસાહ હરપ્રસાહ વેશાઈ

મધ્યયુગના અવશેષ નેવા ગઢની મેવાણું હેંગારના પુર્ણાંશે તેમના સુપુત્રો ભાઈ કહાનદાસ, મેડલા, પિગળથી, નાગદાન, રામભાઈ તથા નારણદાસભાઈએ ભાગવત સંપ્તાંડ બેસાડી અને તે પ્રસંગે જાતિ સંમેલન ચોજયું. એક તો કાર્ટિંગ માસની મનોહર ઠંડી તેમાં ભાદરનું ઠંડતું નિર્મણ જણા તથા તેમાં પૂર્ણિમાની પૂર્ણ તેજસ્વી રાત્રી અને તે ખધાં કુદરતી આનંદજનક વાતાવરણ સર્જાતાં તત્વોની ઉણુપ પૂરી કરતા દેખીપુત્રો. નેણે આ પ્રસંગ માણ્યો નથી તેણે જીવનનો એક પ્રસંગ જોગો છે.

ભાઈ મેડલા એક ધર્મભરી ચારણ છે. ગીરાસદાર નથી કે નથી લક્ષ્મીના લાડીના કોઈ ધનકુભેર જનાં તેણે તેના સહગત પિતાશ્રીના આત્માના કદ્યાણાંશે આવડા મોટા સમૃદ્ધયને આમંત્રી દીક્ષારી બતાવી છે તે જોઈને એમ જ થાય કે ક્રાન લઈ જાણુનારો ક્રાન હઈ જાણે છે અરેખર કનિ પિગળથી પાતાભાઈમાં શાહમાં કદીયેતો “વીત વાવરવાનું રણું ચડવાનું નામરવાનું” કામ નથી.”

ચતુર્દશીના હિંસે તો છત્રાવા ઉભરાઈ ગયું. તૈલપની નગરીને મહારાજા મુંને ગાનથી ગાજતી કરી તેમ ધેરધરમાંથી શરીરના માર્ગેમાંથી, મંડુઓમાંથી, રસોડામાંથી ગામતે પાદરેથી નદીના કઠિથી ચારણું છંદે, સંપીયાંયો ભજનના સુરો ગાજતા સંભળવા માંડયા ચારણો જાણે પોતાના ધેરે એઈ ઉત્સવમાં ભાગ લઈ રહ્યા હોય તેમ આનંદમજૂન બની ગયા.

‘અરડાના બહાદુર તુંબેલ ચારણ્ણો તેમના નીર પુર્ણતેના પ્રતિક જેવા
પડણે ખાંધાના મોટાં પાથડાં એને વાંકડી ભરાવતાર મુછો લઈને, હુલારના
નારણદાનભાઈ તથા ખીજ જાલીયા કવિઓ તેમના માડાં ગળા લઈને,
જાંબુડાના શ્રમાંત અનાચી પાલીયા ચારણ્ણો, વિદૃદ્ધવર્ય કરસનભાઈ,
ફરસુરભાઈ, લાખાભાઈ તથા સુગુભાઈ જેવા રત્નો લઈને, ભાડલાના
સુવિષ્ણ્યાત ધનરાજભાઈ તેમજું ગાંભાર્ય અને શનની ક્ષાર્તિ લઈને, ક્ષાર્તિયા
મહાન પ્રતિભા ધરાવતા આપા વિશાળ જમંગ, બોયરા જસદણના ચારણ્ણો
તેમના ચમકતી સમશેર જેવી જ્ઞાનો લઈને આચ્યા હતા. નિમાઉના કંચુના
બરડાના ઓખાના ગોડીલવાડ અને પંચાળના રાવળો તેમની સિતારો લઈને
ગુણ ગાવાજ આચ્યા હતા અને જેઠસુરભાઈનાં કાચ્યમાં વર્ણવેલા ચારણ્ણોની
ક્ષાર્તિના કળાશ જેવા અક્ત હુલા કાગ, તેમની અદ્ભુત કાચ્ય સરિતા
હેલેવડાવતા મેઢાઈ તથા ભાઈઓના કામમાં ખને ખનો માલાની
નરેશોના પોતે બહુમાન કવિ છે તે ભુલી જઈને કાર્યદક્ષ અને કુરણ
કુટુંબો જેવા સ્પાટ વક્તા, પિંગળ પર અપુર્વ અંકુશ ધરાવનાર કવિઓના
મુગટ જેવા શંકરદાનજી, તેમના પુત્ર સાથે જૂતાં સાહિત્યના અડંગ
અભ્યાંસી સૌભ્ય મૂર્તિ વળાથી ડારણભાઈ મહેદુ તેમના માડા કંડવાળા
અને નમણાં નયતોવાળા પૌત્ર સાથે, પિંગળના અલંકારના કાચ્યના
જીવનભરના ઉંડા અભ્યાંસે નિષ્ણાત બનેલા માર્મિક વચ્ચે અને ખુદ્દિયુક્ત
કટાક્ષાથી આનંદ રેખાવતા રામદાનજી ટાપરીઓ પણ પોરથંદરથા
આચ્યા હતા. પાથ્રાલ્ય કેળવણી પ્રાપ્ત કરી ઉપાધિઓ પ્રાપ્ત કર્યા છતાં
જણે કાંઈએ કેળવણીએ અસર ઉપજલા નથી તેવા સંસ્કૃત, અંગ્રેજ
અને ગુજરાતીના સાક્ષર એવા ભાઈ પિંગળાશા પાયક કંચુનાણ
ભાવનગરથી આચ્યા હતા. પરિપદના મંત્રી તરીક, બોર્ડિંગના મંત્રી
તરીક તેમને ઘણું કરુંને બગ્ગવજની હતી છતાં સર્વત્ર તે તેમની સુવાસ
ફેલાવી રહ્યા હતાં.

આવા પ્રખર મંહેમાનો છતાં તેમાં હજુ કાંઈ ઉણુપ જણુતી હતી.
પ્રત્યેક મોટર તરફ માટ મંત્રી હતી..... અને અનેક પ્રશ્નો થતા કે
રાયસુરાભાઈ આચ્યા ! મેધાણીભાઈ આચ્યા ! કારણ ! ચારણ્ણો હુલે
તેમના આ મિત્રોને પોતાનાજ ગણે છે. ખાને લિંગસે મેધાણીભાઈ ન
આચ્યા પણ રાયસુરાભાઈ આવા પહોંચ્યા. કેમ ન આવે ! મેઢાને ઘેર
અવસર હોય, ચારણ્ણ સમેલન હોય અને તે ન આવે તો અધું અધુંજ
ગણ્ણાય.

આ તો હિતા મહેમાનો પણ પજમાનો ! જેના આગણે આ પ્રસંગ હતો તેની તો ભીજણું કરીએ.

મેધાણું હલાઈના જીવનનું વશુંન તો હવે અસ્થાને છે કારણ તેના તેમજ તેના સુપુત્રોને તો સૌચાધ્યના પ્રત્યેક સંતાન હવે બરાબર પીછાને છે પજ પુષ્ટયશાળી પિતાના છ એ સુપુત્રોમાં કે તેમના વિશાળ કુદુંઘમાં એક સુરે ઐલતા, એક ચાલે ચાલતા, જાણે છએ એક જ છે તે લેછ ક્ષા સંસારી જીવને કલેશથી ભીજાભીજ થઈ જતાં કુદુંઘો પર દ્વા નહિ આવે !

કણનદાસભાઈ જયોટભાઈ છે છતાં પ્રસંગનો કામનો ભાર તે જ વહન કરતા. મહેમાનોની માવજતમાં મેડલાભાઈ ખડે પગે ઉભા રહેતા. પિંગળાશીલાઈ તેમની રમુજ શોલીમાં આનંદી મુખે ઉતારે ઉતારે ફરતા અને અનિન્દ્ય ભાઈએ તો મોટાભાઈએની આજા ઉપાડવામાં પ્રસંગને દીપાવલામાંજ આનંદ માનતા. મહેમાનોમાં ચારણું સિવાય, રાજપુત, મેર, વાળીયા, આલિણું, નાગર, લોહાણા, મુસલમાનો અને અન્ય કોમોના માણસો હતા. દરેકને જુદી રમોડાં, જુદી ઉતારા, ધાર્મિક બાધ ન આવે, કોઈનું મન ન કોચવાય, કોઈને જરાપણ ઓષ્ઠું ન આવે તેવી વ્યવસ્થા છ એ ભાઈએ તથા તેમના અનેવી સ્વાગત સમિતિના પ્રમુખ ભુરાભાઈ અવિરત અમ લઈ કરી રહ્યા હતા.

સોતાહમાં શ્રીમહુ ભાગવતનું વાંચન પણ સ્વર્ગસ્થ મેધાણુંહજીના આજીવન સખા ભણજી કરી રહ્યા હતા. આભ્યજીવન જીવતા આ વિદ્ધાન આલિણું પણ રક્ષપૂર્વક અને પ્રેમપૂર્વક પોતાનો ધર્મ બજવતા હતા.

ચતુર્દશીનો હિંસ તો કાર્યવાદી સમિતિની એકદોનો હતો છતાં રહેવારમાં હાથરો બેણો મળે ત્યાં રાવળો ચારણુંને પીરહવે, ભજનો, છંદો ગાય અને તે પછી ચારણ એડિંગના કાશોરો ઉગતા સિતારા જેવા પોતાની કળા ફર્શાવે.

બપોરના ભોજન પછી જુદીજુદી સભાએ ગોડવાઈ અને સાંજે અપૂર્વે મંડળા જન્મી શ્રી દુલાભકૃત સાથે આવેલ ખુમાણુની અંધરડીની વધુભદ્ધસ મહારાજની ભજનમંડળાએ ભક્તના લખેલાં “રૂપેયા” “વડોનોની કંડતાલ, તમદ્વા અને એકતારા ઉપર ભજનતાં રમજટ ઐલાવી અને પછી

જુદી જુદી ભક્તનોએ ભજનનો પ્રવાહ નહેતો મુક્તેસો. ભક્તને ઐલાવના ચારેકોરથી વિનંતીઓ આવવા માંડી પણ હૃદયના દુઃખાવો તો ભક્તને હતો. દ્વારાને નહિ તેને તો ભક્ત ન ઐલે તેનું છી હતું. અને આપરે ભક્તને પ્રેમને વશ થઈ થાડું ઐલાવું પડ્યું. પણ વચ્ચન આયું કે કાલે જરૂર ઐલીશ. કવિ શ્રી ડારણુભાઈના સુજા પૌત્રે તે પણ ભક્તની કેટલીક કૃતિઓ સુમધુર સ્વરે ગાઈ અતાવી અને દ્વારાએ પ્રશંસાના પુણો વેર્ણા. બોડીંગમાં અભ્યાસ કરતા ઢાંકના એક કારોઝ ચારણે ‘અમતણું એ હિસે ક્ષાં જતા રહ્યા’ નિષ્ઠાતની અદ્ધથી ગાઈ અતાવું. મેઝભા સાડીત છ એ ભાઈઓએ માતાજીની ચારણી સ્તુતિ કાગ રચિત ગાઈ અને દરરોજ સાથે ગાવા નિશ્ચય કર્યો છે તેમ જહેર કર્યું. છ એ ભાઈઓના ખુલાંહ કંઠમાંથી નીકળતા સ્વરોએ વાતાવરણ ભાવનીનું કર્યું અને દ્વારા વિભરાયે.

પુણીભાને હિસે તો રહ્યારમા શ્રીયત રાયચુરભાઈ આવ્યા. દ્વાનવીર શેડ શ્રીમાન નાનશુભાધના સુપુત્રો આયાં અને બીજી મહેમાનો આચારી પહોંચ્યાં. સવારે રાતળોએ પોતાનો અર્ધક્રમ શરૂ રાખ્યો. એક ભાઈએ છોડવડીના એક ચારણુભાઈની કૃતિ “હુલા તું તો કુળ દીવો રે” એ ગાયું અને મંણા તેના પર મુખ્ય થઈ. દરેક રાતળના પગમાં ઇપિયાનો દગલો થવા માંડ્યો અને જાન લેનારા ચારણે, અનજાંચી ચારણો, ગરીબ ચારણે અને શ્રીમંત ચારણે એક સરખા જાન હેવા માંડ્યા. વળાના મુસ્કીમ મીર નાનુભાઈએ તો પોતાની કળા અતાવી અવધિ કરી સરસ્વતીના એ લાડીવા મારે તો ચારણી સાહીત્યમાં પોતે કેટલા ઓતપ્રોત છે, જેટલી કનિલ શકિત છે એટલોજ ગાવાની કળા સિદ્ધ કરી છે તે અતાવી આયું અને દ્વારાએ થોડ્ય કદર કરી. શ્રી હુલા ભક્તના શારીર અને દેવ નેડમુરભાઈએ સાત સુપ્રસિદ્ધ ચારણને બીરદાવ્યા અને સપ્યાખરું ગાઈ જુના ચારણી સાહીત્યનું વાતાવરણ ખડું કર્યું.

અપોર પણી સમેલન ભરાયું. ભાગવતની સમાપ્તિ થતાં પુણીંડુતિ થઈ અને શ્રી રાયચુરભાઈને માનપત્ર આપવાનો સમારંભ થયો.

આ સમારંભમાં સમેલનના વચ્ચેઓ અને વિદ્યાન પ્રમુખ શ્રી કરસનભાઈએ શ્રી રાયચુરભાઈની ચારણ જાતિની સેવાનાં વખાળ કર્યાં અને તે પણી ભાઈ મેડલા જેવા લીરાએની તેમણે જવેરી જની પરિક્ષા કરી જગતને ઓળખાવ્યા તેમ કહી આજના પ્રસંગે શ્રી રાયચુરભાઈએ ચારણ જાતિના આશિર્વાદ મેળવીને સહભાગ્ય પ્રાપ્ત કર્યું છે. તેવું ભાગ્ય સહુ ચારણ

મરાસહેને જ મળો તેમ કહી શ્રી મેઢભા, શ્રી મેધાશુંહ ગડણી વિગેરતો તથા શ્રી ભાઈ રાયચુરાનો શું સંબંધ હતો તેની એક ભાઈએ પોઠાન કરાની, તે પણ શ્રી પિંગળારીભાઈ પાયકે માનપત્ર વાંચી, અતાંયું, માનપત્રમાં શ્રી રાયચુરાભાઈએ ચારણું જ્ઞાતિના અને ખાત કરી એડિંગના છેલ્લા ફણામાં કરેલા સહાયનો ઉદ્દેશ કર્યો. તે પણ પ્રનુભવથીએ સાહીના કાસ્કેટમાં માનપત્ર અર્પણ કર્યું.

તે વખતે શ્રી રાયચુરાભાઈની આંખો બીજી બની અને વેમણે જવાબ આપતા કહ્યું કે ‘હું અહીં આવ્યો તાં સુધી આતી રીતે હું માનપત્ર લેવા પાત્ર નથી તેમ લેવાના સિધ્ધાંતથી વિદ્ધય છું. પણ મને તો વડીયા મુક્કામે ચારણુંએ પોતાનો જ્ઞાતિશંદું ગણ્યો છે અને જ્ઞાતિ માત્રા એક વસ્તુ આપે અને પુત્ર ન કે તે બને નહિં તેથી લઈ છું આજે મને તો ભારત સાંક્રાન્ત માનપત્ર આપે અને આનંદ કે અભિમાન થાય તેથી વિશેષ થાય છે?’ તેણું વિશેષમાં કહ્યું કે ‘એડિંગના ફણાનો ચરા ને ખરેખર કોઈને જતો હૈથ તો તે ચારણું કુલ ભૂષણ ભક્ત દુલાભાઈને.’

માનપત્રની વિધિ થથા પણી ભક્ત કવિએ વચન પાપયું પોતે કહ્યું કે મને ભાપણ કરતાં આવડતું નથી પણ મારે આટલું તો કહેવું પડશે કે જે પ્રભુ મને પુત્ર આપે તો મેડલાઈ નેવો અને પિતા અતાવે તો સ્વર્ગસ્થ મેધાશુંહ નેવો.’

ભક્ત કવિએ તે પણી શાંતિનિકેતનમાં અણિલ હીંહ કરી જુંમેલન વખતે પ્રશંસા પામેલું તથા પારિતોપિક પ્રાપ્ત કરેલું વરસાનું હીત ગાઈ અતાંયું અને રાયચુરાભાઈએ પણ માતી શિખામણનું કાંચ ગાઈ અતાંયું.

તે પણી તો ચારણોના હૈયાં પીલ્યાં અને ચારેકોરથી જુદી જુદી કવિઓ પોતાની દૃતિઓની વર્ષા વરસાવવા માંડયા. મેડલાએ જે વધાવું આંયું તેમાંથી ચારણોએ આપેલ રકમ પોતા તરફથી રૂ. ૫૧ નાખી ચારણ એડિંગને આપી દીની તથા ભાપણ કરતાં સર્વનો ઉપકાર માન્યો તથા નેડસુરભાઈએ તેને હેમનો મેડ કલ્યા તેથી હેમ હેલું નેઠિએ તેમ કહી હાથમાં પહેંચેલી એક મુલ્યવાન રલનજિત સુવર્ણ મુદ્રિકા તેને દાનમાં આપી હાથી.

મોડી રાત્રી સમેલનમાં પૂર્ણિમાનિ થર્ડ અને વિસર્જન કરતાં પહેલાં
પ્રમુખ શ્રી કરશનભાઈ પાદીયાએ પોતાના ગામ જાંબુડામાં વૈશાખ માસમાં
અભિષ્ક હીન ચારણ સમેલન લરવા માટે આમંત્રણ પણ આપી દીધું.

અને એક વસ્તુની નોંધ લેતી આવશ્યક છે છત્રાવા મેર લોકોની
વસ્તીવાળું ગામ છે તથા આજુઆજુના ગામોમાં પણ મેર લોકો વસે છે.
તેઓએ મેરલાઈના પ્રસંગને પોતાનો ગરુડી ઉજવ્યો અને મેરલાઈએ
તેઓને પોતાના ગરુડી સહકારી અને છત્રાવા ભોગસર આપાં જમાઉયાં.

મેર આગેવાનોમાં માલહે રાજુ પોરસંદર્થી આવેલા અને કંસાયડના
ચના પહેલ અને છત્રાવાના પહેલ હુથીયા રણમલના સુપુત્રોએ તો કવિઓનો
રજ્વાડી રીતે અનુપમ સતકાર કર્યો અને એડિંગના ઝાગામાં સુંદર રકમો
આપી. સમેલનનાં તમરણો કેટલાંક લખવાં; જ્યાં જીવતા સાહિત્યકારો
સરસ્વતીપુરો હોય ત્યાં તેનું શું વર્ણિન કરવું? તેમાં કોને વખાણવા?
સાહિત્ય રસિક જનતા જરૂર આવા સમેલનો યોજે અને લાભ લે.
જ્યાં ફૂન્ડમિના નથી જ્યાં વિકૃતી નથી જ્યાં નિર્દોપતા, સરળતા અને
નૈસર્જિક પ્રેમના પ્રવાહો છે, જ્યાં શુદ્ધ હૃત્ય અને હુસ્તી આપો છે ત્યાં
શું બન્યું અને શું ન બન્યું તેનું વર્ણિન કરવું પણ અશક્ય છે.

—શારદી, ડિસેમ્બર, ૧૯૪૫



કાંદ્ય - પુણ્યાંજલિ

દાઢો

જુહિન જવેદયની રાધચુરાની રીત,
કવિતા દુલ્લા કાગની, ગાય મેરલા ગીત.

કાગ કવિને મેરલા, કવિ રાધચુરાને મેધાણી,
સોરકની એ મોંઘા મૂલી, ખાસી મિલકત ખોવાણી.



अलौकिक बुद्धिप्रभा

अखिल भारतीय चारण संमेलननुं चतुर्थ अधिवेशन जोधपुर मुकामे ता. २३-४-३७ जा शुभ दिवसे उमेद चारण छात्रालयना विशाल मकानमां योजवामां आव्युं हतुं. आ अधिवेशन गुजरातना प्रतिनिधि तरीके श्री मेरुभाभाई मेघाणांद गढवी, श्री खेतासिंहजी मिसण, श्री पिंगलपायक, श्री समर्थदानजी महिया वगेरेथे हाजरी आपी हती.

आ अधिवेशना प्रमुखपदे देशभक्त केसरीसिंहजी सौदा, स्वागत प्रमुख श्री लक्ष्मीदानजी, बारहठ प्रधानमंत्री ठाकुर ईश्वरदानजी आसियानी वरणी थई हती.

प्रथम दिवसे प्रधानमंत्रीश्रीनी आज्ञाधी श्री मेरुभाभाई गढवीथे सोरठी हलकथी ग्राम्य गीतो गाईने सोने मंत्र मुग्ध करी दीधा हता.

बाजे दिवसे अन्य उरावोनी साथे सोराष्ट्रना चारण वातांकार श्री मेघाणांद खेंगार गढवीनी पंचातेरमी वर्षगांठ उजवी मुंवईनी साहित्य संसदे पोणोसो सोना महोरो मेट आपी गुणग्राहकता प्रदर्शीत करवा बदल धन्यवाद आपवानो तेमज आ मोंघामूली कदर करावनार अपूर्वे चारण हितैषी गोकुळदास रायचुरानो आभार मानवानो प्रस्ताव सर्वे संमतिश्री पसार थयो हतो.

श्री मेघाणांद गढवी वातांकिला धरावे छे, तेनी उपस्थित प्रेक्षकोने झांखी कराववा माटे श्री मेरुभाभाईने प्रमुखश्री अने

प्रधानमंत्रीथ्रीये आळा करता 'रजपृताणीनी भूल' नामक चार्ता रजु करी हती.

ये पछी श्री मेरुभाभाई गढवीनी योग्यता विशेषोलता प्रधान मंत्रीथ्री डाकुर श्री ईश्वरदानजी आसियाथ्रे जणावयु हतु के 'मेरुभा गढवी सौराष्ट्रना चारण छे, तेमनां जेबु' चारणत्व आपणां विशाल समाजमां केटला पासे छे ?? रुढि, रिवाज, कहेवडावचामां के मोटी जागीरना मालीक होचामां चारणत्व नथी, परंतु चारित्र्य अने अलोकिक बुद्धिप्रभामां छे. आपणां प्रांतना कविश्रो अने सामान्य चारणो माने छे के कविता गाईने बोलाय नहिं परंतु श्रीयुत मेरुभाने मोठे जेमणे कविता गवाती सांभळी छे तेओ पोतानो मत केटलो भूल भरेलो छे, कविता बोलवानी व्याख्या करचामां आपणी केटली भूल थाय छे तेनी तुलना करशे."

त्रीजे दिवसे मेरुभा गढवीये अपूर्व ढबथी चारणोनी आधुनिक दशा संबंधी काव्य रजु करता, प्रमुखथ्री, प्रधानमंत्रीथ्री थ्री मांडी अनेक चारण बंधुओनी आंखमां आंसु आवी गया हता.

अधिवेशन माटे त्रण दिवस नकी थया हता परंतु चेथे दिवसे परप्रांतीय प्रतिनिधिश्रोने ज्ञातिवधुओये विशेष आग्रहथी रेकी रात्रे श्रीयुत मेरुभानो डायरो थयो हतो तेमां तमाम चारणोये भाग लीधो हतो.

श्रीयुत सुमेरदानजी वणशुर डिंगल भाषाना सारा कवि छे तेमणे मेरुभा लीलानी प्रश्नसामां भरी सभामां नीचेनो दोहो कह्यो हतो—

मेरु उंचो मेरथी, छत्रावे बड चीत;
भाषण देवे भावथी, गावे आळां गीत.

[अखिल भारतीय चारण सम्मेलननुं चतुर्थ अधिवेशन
अहेवाल शारदा ओगस्ट १९३७ मार्थी]



प्रिय मेरुभा

-कवि श्री दुलाभाई काग

भले नरसी मेतो ने भले मीरांबाई पम मारी नजरमां तमे
अने तमारी नजरमां हुं. तमे मारो भार संभाळी लेवा ज
जन्मया छो. (१८-१-१९६०)

.. पू. महाराज (पू. दादा श्री रविशंकर महाराज) तमे
आवो तो अति प्रसन्न बने छे. छेल्लु सोराप्टनुं प्रयाण पेते
फक्क छत्राचा माटे ज करेलुं. (१०-९-१९६०)

समस्त ज्ञातिमां मांचडा पर उभनार अेक ज मानो
सपुत छे. (१४-१-१९६१)

.. आपे अेकले हाथे ताळी पाडी वतावी छे. पुज्य राजमातानुं
दान आपणा माटे अज्ञाढ दान छे.

आपणे वे चार जणा मळी भावनगर चारण वोर्डिंगना
माटे जे पुरुषार्थ कर्या तेथी वे त्रण गणो पुरुषार्थ आपे एकले
हाथे कर्या छे.

धन्यवाद उपरांत उपरवट कोई शब्द नथी नहितर ते लखत.
(२५-१-१९७०)

हजार वरसमां केराई चारण कविये व्यक्तिगत आदा शुभ
कार्यामां आबुं दान लीधेल नथी एम मारो ख्याल छे.

(१६-६-१९७३)

... पत्र मल्यो बांचीने स्व. बापु तथा बाना हैयां पण
घंचायां थे बन्नेना हैयांमां तमारी मुरती गाती पण जोई दद्वाडे
दिवसे कुडुंब लाज पुण्य अने सुवास तथा सबंधीओनी उज्ज्वलता
जोई ते मारा धन्य भास्य मानुं छुं. आपणे कृष्ण नथी नहि तेा
खबर पडत के आगले शुं हता. तमारुं रूप-रंग, गुण अने राग
ते कोई महा पुण्यनुं फल छे. हुं सदाप मानुं छुं के आपना
जेवो चारण वेलासर पाके तेा सारुं पण हालमां प्रागडवासी नथी.

तमे तंदुरस्तीभर्युं सो वरस जीवो कारण के बीजो क्रयांय
दीवो देखतो नथी.

तमे साहित्य गाता नथी; पण तमे बोलो ते साहित्य बनी
जाय छे.

हुं तो हवे बधी वाते रही गयो छुं. उमरथी, रोगथी अने
मनथी पण मांदो छुं. अनी शोधमां छुं के तमने अेक बार खूब
खूब सांभलुं, बीजी कोई ईच्छा नथी.

तमे तो कामधेनु लावी दीधी. तेनुं दूध खाबुं के न खाबुं
ते तो ज्ञातिनी ईच्छानी वात छे. (१२-५-१९७३)

...तमारा निर्मल स्नेहने हुं वफादार रही शक्यो नथी
तेनुं भारे दुःख छे. जीवतो होईश तो चोक्स पोरबंदर
आवबुं छे. (२७-७-१९७३)

—शु. काग.

[पू. भक्तकवि श्री दुलाभाई कागे
श्री मेरुभाभाईने पाठबेल पत्रोमांथी]

“...तमे दीर्घ दृष्टिवाला अने ज्ञातिना शुभ माटे मथनाराओमां
अेक अग्रणी छेा.” (२७-७-१९७३)

—पिंगल पायक

લોકસાહિત્ય અને ચારણી સાહિત્યનો છેદલો મોખ

લેખક :

—શ્રી જયમદિં પરમાર

મેડભા ગઠનીનું અવસાન થતાં લોકસાહિત્ય અને ચારણી સાહિત્યનો છેદો મોખ તૂટી પડ્યો છે. ત્રણેક મહિનાથી સાઢી બિમારીમાંથી લક્ષ્યાની અસર જણાઈ અને એમાંથી એકએક પક્ષવાતનો હુમલો થયો. તે પણી છુટે દિવસે આ મહાન આત્મા એમના નશર દેહને છોડી ગયો. પણ એમને આ બીમારીમાંથી આગમ સુજી ગયું. ધરના સૌને બ્રાહ્માણી લઈને પક્ષવાતની અસર પહેલાં પોતાની મૃત્યુની તૈયારી થઈ ગઈ હોવાનું જણાયું. બધી જ્ઞાન ભલામણું સૌને કરી દીધી. પોતાના શરીર સાથે જ્વાડવા માટેનાં એડાં કોઈ ન કરે એવી બધી ભલામણું કરી. પણ તો જ્યારે જગૃત થતા ત્યારે દારકા કૃપણ અને નવજનમની વાતો કરતા. સૌને યાદ કરી દેતા. એવી રિથતિમાં હું પહેંચ્યો. ઉંદેથી એમનો આત્મા સળગણ્યો. કાગળ પેન આપવાનો સંદેત કર્યો. પરાણે બંધ આંખ સુક વાચાએ લખ્યું ‘ઉદ્ઘાટન’ અરમાન એટલે કે, તમે ચારણી કન્યા છાત્રાલયના ઉદ્ઘાટનમાં ન આવી શક્યા તેનાં અરમાન આને પુરાં થયાં.

એકદે હથે એમણે સાત વરસ પહેલાં ચારણી કન્યા છાત્રાલયને કુમાર છાત્રાલય માટે ટેલ માડી. પાંચેક લાખ રૂપિયા એકત્ર કર્યા પણ સ્વમાનબેર ને આને પોરખાદરમાં હવે છાત્રાલય ચાલે છે. તે કામ પુરું કરીને ત્યાંજ પોતાનો દેહ પાડ્યો.

એમના જતાં ચારણોની છેદી પ્રતાપી શક્તિ વિલય પામી છે. આઈ સોનાઈ ગયાં, ભક્ત કવિ દુલાલાઈ કાગ ગયા ને છેદ્ધા શ્રી મેડભાભાઈ જતાં જોણે કે ચારણી સાહિત્ય અને લોકસાહિત્ય માથે વળવાત થયો છે.

જખર હતું એતું વ્યક્તિત્વ. પ્રચંડ શક્તિ અને અણનમ વ્યક્તિત્વ. ધાર્મિક સુધારણા સામાજિક ઉત્થાન અને રાષ્ટ્રીય પ્રકૃતિમાં એમણે પોતાનો પ્રાણ રેડી દીધેલો.

એમનો આત્મા જે ભક્તિરસે ન ભોગ્યો હોત તો અન્યાય સામે, અનીતિ સામે, અધમ સામે તેઓ બળવો પોકારી છેઠ એવું પ્રખર વ્યક્તિત્વ ધરાવતા શ્રી મેઢલા ગઢવી.

સતકાર્યના સન્ન ઉમંગી પણ અહુશુદ્ધ ગૌરવયુક્ત. અરમાન ગુમાવાને સતકાર્ય કરવામાં એમણે કંઈ સાર નથી જેણો. કોઈપણ સતકાર્યનું મંગલ તત્વ તેનેવધ થવાથી નથી જગતાતું એવું એમના પ્રતિભાવંત અવનમાંથી સદ્ગ્ય ઇલિત થતું આવેલું.

આ જ રણકે એમની વાણીનો. શાલ અને સદ્ગ્યારના સન્ન આગહી, સમાજના નીતિ અને ધર્મના એક જાગૃત રખેવાળ રહા છે તેઓ.

પોતે કવિતા રચતા નહીં પણ કવિતા એમના કંઠે વર્સિને સાર્થક બને છે એમના અદ્વિતીય કંઠના ધ્વનિમાં રહેલી વેધકતા, દ્રો અને ભાવ દ્વારા કવિતામાં રહેલો પ્રાણ નવપુલ્વિત થધ છે છે. એમની વાણી કવિતાના અવનવા રહેસ્યો પ્રગટાવીને ગંધ દ્વારા પદ રેલાવતી હતી.

એમના કંઠની ભવ્ય બુલંદી અને એ બુલંદીમાં રહેલો વીજ્ઞાનો જંકાર આત્મીય આનંદની લહેરો પ્રગટાવે છે. એમની સુરાવટ એમની લગાવટ કોઈ સિદ્ધહસ્ત ગવૈયાને અનિ સાધનાએ જવલે જ સાંપડે એવી ફલ્ય ડોલાવણ હતી.

પ્રલાંઘ દાગે એવી લય ખાવે છે કે સાંભળનારા ખાસ થંબી જાય. પ્રકૃતિ પડુંદા પાડતી લાગે. ઝાડ પાંદ પહાડ હેંકારા હેવા લાગે. કંઠની અજખ તાતીતનો મહિમા તો શ્રી મેઢલાને સરળી જમાવટ ટાણે સાંભળવાથી જ સમજાય.

સોરઠના મેરાં પંથકના દેડ વિસ્તારતું છવાવા ગામ એમની જન્મ જોમકા આદ્ય સુંદરખાઈ જેવા સતીની વેલતો એ સંસ્કાર વારસો. સંવત ૧૯૬૨ના ફાગણ શુદ્ધ ૧૪ ને એમનો જન્મ. પિતા મેઘાણુંદ ગઢવી સાવ અભણ પણ ચારણ કુળ ઉપર પ્રભુનો પક્ષપાત છે. પિતા વાર્તાકળામાં બાહુદૂત. નવેય રસોની લારે જમાવટ કરે.

પિતા મેદાળંડ ગજરીના વાર્તાકાળાની શાઢીને અને સંરક્ષણ અમેરિકામાં કંઈ અને કલેખસુર્પે ઉત્તરી, પદ્મર પરાયણુના એની આધાર રહીલા હતી. શ્રી મેડિલાગે પણ લખવા વાંચવા જેટલો અભ્યાસ પરાણું પુરો કર્યો. પણ વાંચનની ભારે શોખ. જેટલાં ધાર્મિક પુસ્તકો મળે, કાંચ કવિતાનાં મળે તેનું ચિંતન કર્યાજ કરે. જ્યાં જ્યાં તાં પુસ્તકોની પહેલી ભાગ કરે બાકો તો પ્રકૃતિનું પારણું અને લોક ધરતીની ઉછેર લોકોનાં નિર્દેશ જીવનમાં જ સાહિત્યનાં વારિ ખળકતાં હોય છે.

હિવસ અંધે એકમાં પસાર કરે. તહેવારોના સમયમાં કથાકારીને ને રહેતે ભજનની ગુંડ ઓલાવે, લોકગીતો તો એમને અનાયાસે કંઈ ચડી ગમેલાં. એમનો મૃગ ભાવ તો ભજનનો જ. આમ એક ભક્તિભીતો કથાકાર કંડારાયે જતો હતો.

એવામાં સ્વ. જોડુણાસ રાધયુરાંગે શેર અગ્રણનો ધર્મો છાડેલો ને સાહિત્યની પ્રતિથી સાહિત્યના ક્ષેત્રે જંખલાંયું. લોકસાહિત્યના સેવા અથે ૧૯૨૫ ની સાલમાં શારદી માસિક શરૂ કર્યું અને લોકસાહિત્યકારોને પરિચય કેળવવા સૌરાષ્ટ્રમાં કરતા કરતા જવાવા આવ્યા.

જવાવા શ્રી મેદાળંદ્યાપાને અને મેહભાને સાલગતાં તો નાચી ઉડ્યા. એય તો નાંદેરની લીલારી ધરતીનો કગાયેલ મોરલો જ હતા. મુંબદ મિત્રોને પત્રો લખ્યાં આમંત્રણો આવ્યાં તે ઉપડ્યા મુંબદ. શર્યકમો થયા તે મુંબદને ગાડું કર્યું. સરસ્વતીના પાતાળ સરવાધીના નિર્મણ પ્રવાહે મુંબદને મુંગધ કર્યું.

એ પછી તો ડાયરાંગો શરૂ થયા. હર વર્ષે મુંબદ તો હોય જ. અને ગુજરાતમાંથી દેર દેરથી આમંત્રણો અપાવા માઉંયાં. મેડા જીવાનો સંસ્કૃતિક પ્રવાસ કર્યા. મહારાજા સયાજીરાવ મુંગધ બન્યા. ઓલાંયાં વડોદરા. લદ્દો વિલાસ પેલેસમાં એમને સુવર્ણ ચંદ્રક એનાયત કર્યો.

ગુજરાતના સાક્ષરોને સાહિત્યના એક નવા ક્ષેત્રનો પ્રત્યક્ષ પરિચય થયો. નડિયાળના સાક્ષર શ્રી અન્દરશાંકર પંડ્યાંગે જુનાગઢના નવાયને પત્ર લખ્યો કે 'તમારે ત્યાં આવા રહ્યો પડ્યાં છે તે તમને જ જાણુ નથી?' એ પછી નવાયે ઓલાવીને સંમાન કર્યા.

આમ રાયચુરા અને મેઢાલાના નેડી જાની રહી. જેમ સૌરાષ્ટ્રમાં
મેધાણી અને કવિ કાગની જામેલી તેમ. એ પછી તો ચારેચ વર્ણિયમાં
આંદ્રા લોક સાહિત્યની હેઠા ચર્ચા માંડી.

મેધાણી અને રાયચુરાના હેઠાવસાન પણી લોક સર્વત્તિના અંડા
ધારીમાં કવિ કાગ અને મેડલાનું મિલન સધાયું એ એના મિલનમાં કંઈ
અને કવિતા, ભાવ અને અકિલ, સૌજન્ય અને સેવાની જુગલખાંખી સધાઈ.
લોકજીવનના વન ઉપવનના કુંને એમણે મહેકાનીને ગુજરતી રાખી છે.
શ્રી હુલાભાઈના સાથીદાર રહીને લોક સાહિત્યને નેજે એમણે કદી નીચે
નમવા નથી દીયો.

દારકાથી હિલ્ડી સુધી દરેક કાર્યક્રમમાં સાથેજ જતા. મેધાણી
બાધના ગીતોનો મેધાણીભાઈ કરતાં પણ વધુ પ્રચાર શ્રી મેડલાએ કર્યો છે.
મેધાણીભાઈ પાસે વિવિધ હેઠોના લોક સાહિત્યને તુલનાત્મક અભ્યાસ
હતો તો શ્રી મેડલા પાસે નવજનગૃહિનો પ્રાણ અને રાંધ્રીય આવતા હતા.

—જીવન જરૂરમણ; કુદુરીઅ ૨-૪-૭૭

હું આંસુ સારું ધૂં આવા જજરમાન જીવન માટે. આવા સફાયારીને
શાલવંતા એવા નરવા જીવનમાંથી જ મેડલા નેવી સર્વચ્છાની ખુલંદી પ્રગતે.
એમણે સેંકડો કુદુરોમાં સંપસલાહ કરાનીને સુખ શાંતિ સીંચ્યા છે.
સેંકડો માણુસોને ધંધા વ્યવસાયે ચડાયા છે. હજરો માણસોનાં હુંઘ
દર્દો દૂર કરાયાં છે. અને એથીએ વિશેષ અંતરના એકનારે ધૂટેલા
ભજનોથી લાખો લોકોના ડિલ્યુમાં ભક્તિભાવતું સિંગન બશુર પ્રિયથે કર્યા
કર્યું છે.



દોહા

સિંધુ લોક સાહિત્યનો હિન્દુ રણ દૈવાણ,
પણ અંજલિ જુમિ ખી ગયો, મુનિ અગ્રણ મહેરાણ,

કુલ્ય વારીકા કાગની, હિલ રંજન દરસાઈ,
મધુર કંઈ મહેરાણનો, નડતુ વસંત લહેરાય

—રાજકવિ નારાયણનાનથી બાલાના (જામનગર)

સહગત મેરુભાઃ એક આદર્શ

—મ.મ., અંદ્રા. કેશવરામ કા. શાસ્ત્રી ‘વિદ્યાવાચસ્પતિ’

અમારું અને વડીલ ભાઈ મેરુભાનું વતન ભાદર કાંડો (જિ. જૂનાગઢ). અમારે ગામ પશ્વાળા પાસે આગળ વધતી ભાદર નહીં આથમણી દિશાએ એક માર્ઘલને અંતરે છત્રાવાને રૂપથી કરીને ઘેડની ઉત્તર સરહુટે વહેતી નવી બંદર પાસે અરણી સમુદ્રને જઈ મળે. મારા દાદા કાકા સહગત ભઙું વીરજ આણુંદળ બાંભણિયા અને ભાઈ મેરુભાના પૂ. પિતાજ, સૌરાષ્ટ્રના ઉચ્ચ કોટિના ચારણ જાતિ ભૂપણું, મેઘાણુંદાદાનાની એ સમયે ટોચ જોડી. પૂ. વીરજ દાદા કાકાએ અનેક ભાગવત સપ્તાહ ભાદરકાંડે અને ભરડાના પ્રદેશમાં વાંચેલી. જ્યાં જ્યાં સપ્તાહ હોય ત્યાં ત્યાં મેઘાણુંદાદાના રાન્નિયે હાયરા. એમનું પ્રથમ અવણું પશ્વાળામાં કરેલું, મારી ભાગ્યેજ આઠ દશ વર્ષની વય હશે ત્યારે અને છેલ્લું અવણું પચાસેક વર્ષનીવરે માંગરોલ (સોરઠ) માં નાંદોરણાધની ધર્મશાળામાં એમનો ખાસ હાયરો થયેલો ત્યારે. એ દરમ્યાન મૂળ બાલાગામના વતની અને પછી ચોરવાડ જરૂર રહેલા ‘શારદા’ ના વિષ્યાત તંત્રો અને લોકવાર્તાકાર સહગત શ્રી ગોડુલદાસ દારકાદાસ રાયસુરા સાથે ભાઈશ્રી મેરુભા માંગરોલમાં આવેલા અને એ એક વાર્તાકારો એજ સ્થળે હાયરો થયેલો ત્યારે પ્રત્યક્ષ પરિચય થયો. શ્રી રાયચૂરાની સાથેના એ પહેલા મિલાપ પછી જેમ ધનિષ્ઠતા વંચી તેજ પ્રમાણું શ્રી મેરુભા સાથે પણ ધનિષ્ઠતા વધતી રહી હતી. સ્વ. મેઘાણુંદ દાદાના પુત્રોમાં શ્રી મેરુભા અને શ્રી પિંગળશાભાઈની સાથે મારો હંમેશાં મીઠાશાલયો સંબંધ રહ્યો છે. અમે જાણે એકો કુદુંઘના ભાઈઓ હોધ્યે એવો એ સંબંધ છે. શ્રી રાયચૂરાના અવસાન પછી શ્રી મેરુભા મોટે ભાગે એકલા નીકળીતા અને હાયરા આપતા. જ્યારે જ્યારે પણ એમને સાંલળવાનો યોગ મળ્યો છે ત્યારે એમનામાં હું શ્રી મેઘાણુંદાદાના દર્શન કરી શક્યો હું. ભાઈઓમાં શ્રી મેરુભા જાંચેરો. જ્યારે ઇપ્તે પ્રત્યક્ષ કરીયે ત્યારે વડીલ મેઘાણુંદ દાદાને ભુલી જઈયે. ચારણ જાતિ પાસે એનું ઇપ સચ્ચવાધ રહ્યું છે. ડારણમાં એ જાતિનું રીલ છે. વડીલ મેઘાણુંદાદાના ઇપની સાથે એમનામાં મસ્તક ઉપરની સહેત ભાદરકાંડાશાધ જોળ પાખડીનો રંગ એમની ઉનજબલ હાદી તેવા ચોમિયાનો રંગ અને શરીર પર હંસની પાંખ જેવા

સકેદ આંગડી અને ચોરણી અને જ્યારે વાર્તા કરવા મેળા હોય લારે બંને ગોડણને વાંદી કેડ ફરતી ભાંધતી એવી જ પહેડી: એક મનોમોહિક ચિત્ર આ રાતે રજુ થાય. 'હોય' ના લલકારથી શરૂ થતી એમની વાખારા ગંગાના જાળગતા પ્રવાહની જેમ ખડુખડાટ વહેઠી હોય બાછથી મેરભાને મેં આંગડી પહેરી હોય તે રાતે જેવા નથી, એમને સિરવાનીમાં જ જેવા છે. એશક, ચોરણી પહેડી અને પાંઘડી સકેદ, જાતની પાંઘડી અને આમેરભાની પાંઘડીમાં ચોડો તફાવત ભાનું કાંઠાના પુરુષો ગોખાકાર પાંઘડી વાંટે એવી નહિ, પણ કપાળના અભાગે એક ગૂંજે ખચ્કો આપતી અને પાંઘડી છોગાવણી. આંદ્રી દેહનો ઉજજવલ વાન તેનો તે. બીજી લાઈએ પણ નમણું અને ડ્ર્પણું ખરા પણ ભડાઈ અને જીચાઈમાં અને દેહના રંગ તેમ હાંડીમાં સહેજ હીણું લાગે. મેં પિંગળશાલાઈને પણ સાંભળ્યા છે. આપિંગળશાલાઈ વાર્તાકાર તેવા જ શીધ કવિ પણ છે. છતાં દાદ અને એડ પુત્રોને કલા વિતરણમાં નંબર આપવા હોય તો ઉમરનો જ કેમ સચ્ચવાતો અનુભવાય.

બાછથી મેરભાની પરોક્ષ મોદી સેવા તો સહગત રાયચૂરાનાં સંપાદનોની પાંઘડી રહેલી છે. એવું શ્રી રાયચૂરા કહેતા. અને ચારણુંતર પ્રસિદ્ધ લોકવાર્તાકાર, મારા પરમ મિત્ર જી. જવેરચંદ મેધાણું અને એવા જ આત્મીય શ્રી રાયચૂરા એ વિતરણ-શક્તિ મેળવી હતી તેની પાંઘડી બળ તો ચારણું, આરોટોનું જ હતું. એ આપણું અનુભવતો વિષય છે. આ પ્રકારનું વાર્તા-વિતરણ તેમજ દુષ્ટ વિતરણ રેદું નથી પડ્યું. એ શક્તિ પ્રાણ કરવામાં અન્યોને લારે તપથર્યાં કરવી પડે છે લારે ચારણુંના જ્યાને એ જન્મજાત છે. ગઢવીએવી એ લાક્ષણિકના સહગત હેમુ ગઢવી જેવા તરવરતા જુવાનોમાં આપણે અનુભવી પણ છે. હું જ્યારે શ્રી મેધાણુંદ્વારા શ્રી મેરુલા, શ્રી મેધાણું અને શ્રી રાયચૂરાને યાદ કરું છુંત્યારે બીજી સહગત અને વિવસાન દયરા-નિષ્ણાનોને ચોડો જીણા અનુભવી શકું છું. સાચું કારણ તો એ છે કે આ વિદ્વાઓ રજવાડાંએમાં ને ઉત્તોજન અને આશ્રય હુંાં તે અદ્દ્ય થયાં છે અને એ સાથે એ ભાઈએને અન્યાન્ય વ્યવસાયોનો આશ્રય લેવો પડ્યો છે. જૂનાગઢમાં તરવરતા જુવાનિયાએને તેથાર કરવાનું પવિત્ર કાર્ય શ્રી પિંગળશાલાઈ કરતા હતા અને એમાંથી જુવાન બહાર આવ્યા અને કેટલેક અંશે એ વિદ્વાને જીવંત રાખ્યા રહ્યા છે, પણ આશ્રમને અભાવે આને એ વિદ્વા અવનતિ તરફ ધર્કલાઈ રહી છે શ્રી પિંગળશાલાઈ જેવાને ધગશ છે, પણ એકલા પડી ગયા છે એમ કાડું તો હું એમ કહેવામાં સાહસ નથી કરતો.

ચડીલ મેધાણું દશાદ અને વડીલભાઈ મેઢાલા જેવા સભાનિત લોકવાર્તાકારો અને કવિવરો, ન્ય. દુલા કાગ જેવા શીંગ કવિઓની પરંપરા જાળવવી હોય તો રાજ્ય તરફથી જ શાળાઓ અને છાત્રાલયો ચલાવવાનાં જોઈએ, પણ આ આશા સહૃદ થાય તો તેવા ચિહ્ન કર્યાય જેવા મળતાં નથી મારા આત્મીય તરબરતા જુવાનો મહેનત કરે છે, પણ ક્ષિતિજમાં ધૂઘળાપણું જ જેવા મળે છે. જેમની પાસે હજુ પણ આ વિદ્યા પડી છે. તેમને આગળ લાવવાને મારે ખોડું સૌરાષ્ટ્રનો ધનિક વર્ગ પણ જરૂરી રાદે જે વિદ્યાલય અરિતાવમાં આવે તો સરકાર પોણોસે ટકા મહદું આપશે જ સરકાર અનેક શૈક્ષણિક અને સાંસ્કૃતિક સંસ્થાઓને દેખાગીઓ પ્રતિવાંદી આપે છે. પોણોસે ટકા આનંદ મળે તો પ્રશ્ન પર્યોસ ટકાનો રહ્યો. ચોક્કસ સંખ્યાની અનામત રકમના વ્યાજમાંથી એ ખોટ પૂરી શકાય. હજુ ચારણ જાયાઓમાંથી હીર ખરણું નથી. એ સચ્ચવાય એવા પ્રયત્નમાં મોવડીઓએ લાગી પડવું સાંપ્રતિક કાર્ય છે. એ સિદ્ધ થાય તો મેધાણું દશાદ અને મેઢાલાનાં ફરી દર્શાન થાય.



દાખા

જશ્શ રેખાવાળા જાખર, અલ અંડ પડિયા ભાવ,
મહેર મેધાણું દરા, ધિંગી કળાંગી દાન.

ઈ સુર ઘ સાહની, ઘ સારપ ઘ સવાણ્ય,
(ઘ) મળ ગઈ મહેશીલની, તું મરતાં મહેરાણુ.

* * *

ચારણ ભવતારણ ભદ્રો, ધારણ મેર ધીર,
કરમી કુળરો આભરણ, વિપદ્ધ ટારણ વીર.

—તાનેદેવ રાજસ્થણી

* * *

ચારણ કન્યા છાત્ર ધર, કરિ પૂરણ મન હામ,
નીકમ રટાં રામ, મેર જો અમરાવતી.

૪૩
ધૂ. મહારાજ શ્રી નીકમહાસણ સગવાનદાસણ

ઓઝડવાએ નિરખ્યાંતા મેં મેરુભાને !

—પુષ્કર ચંદ્રવાકર

ચારણો હેવ કહેવાતા, કેમ કે તેઓ હેવભૂમિમાંથી ધરતી પર આવ્યા છે. ચારણોના વડવા તરીકે પુષ્પદંતને ઓળાઓ આવે છે. તેઓ પર્વતવાસી હતા. પશુધનના પાલક હતા તેઓ વિદ્ધાન હોવાનું મનાય છે, તેમણે અક્ષરઅલની ઉપાસના સેવી હતી. આવા વડવાના સંતાનો ધરતી પર જીવતી જગતી વિદ્ધાપીઠ બન્યા વા લોકને અક્ષરજ્ઞાન નીતિજ્ઞાન અને અજ્ઞગાન આપવા સુધીની શક્તિ બતાની. હરિરસ અજ્ઞગાન વા આત્મજ્ઞાનનો સમર્થ 'ગ્રંથ' છે. શક્તિ ઉપાસકનો જીહાંગી રૂલ કરી નખાય તેવો તે ગ્રંથ, જ્યારે જશુરામ વરસાનો ગ્રંથ રાજનીતિ આન્દેય રાજનીતિજો માટે કૌરિદ્ધયના અર્થજ્ઞાન્ન શે. તહવિપયક ગહન ગ્રંથ લાગે છે.

જગતભરમાં ચારણું વા દેનીપુત્રની રણમાં હાડ ઐલી છે. હેમર જેવા માટે કહેવાય છે કે તેઓ ચારણ કાર્ય કરતા, વા રણક્ષેત્રે જોદ્ધાએ જેર વતાડી સ્વ-ખળને ભારેય મેઘની જેમ વોધમાર ગતિએ વહાની તરવાર વાપરી અતાડતા હોય, તો તે તાકાદમાં સમરક્ષેત્રમાં છંહના ગાનાર ચારણનું પીઠાય અને લલકારખળ વૌદ્ધાનું પ્રજીવકતત્ત્વ બન્નું. તે જ વીરયોજને પ્રેરણાના પેય પાતા. તે વર્ગના ચારણો સ્વાર્થશુમાં જીવનતું સાક્ષીદ્ય માણુંતા અને તેને જ મંગળામય જીવન માનતા, આમ, ભૂતકાલીન ક્ષત્રિય ગૌરવમાં દેશ-પરદેશમાં ચારણનું પ્રવાન વિપુલ રહ્યું છે. ભારતમાં પણ ચારણો રણભૂમિ પર જતા અને શાખાખનિ સાથે તેમના ડંહનો ધેરો લલકાર રણમેદાનને એડો કરતો, ભરણાન્મુખ થતો જોદ્ધો પણ ત્યારે હાથમાંની ખડગનો એક વધુકો ધા કરી, દુશ્મનના હાજી ગગડાનીને ધુદ્ધ મેદાનને નિરાંતની તીંદ્ર તાણતો. આ હતી ચારણોની મૂળ સંસ્કૃતિ. મૂળ ભાવના. તે વૌદ્ધાનો વીરરસ પિયાલો હતો અને તે રસનો પાનાર પરણી-પરખનો સંચાલક હતો. તે હતો જીવતો જગતો શખદ અજ્ઞનો લલકાર કરનાર પંચજ્ઞન્ય શાખ. તે હતો મહાનાં ફેંકસામાં શખદ અજ્ઞની ફૂંક મારી સજ્વન કરનાર ધન્વંતરી !

આવા ચારણુંદેવે ધરતી પર આંઠી રાજહરખારને શોભાવ્યા. ગઢની રક્ષા કરનાર તે ગઢની અન્યો. ગઢના દરવાજાની કંચીએ તેને કેદું માથે મૂલવા લાગી, અર્થાત ક્ષત્રિયકુળનાં તેઓ રક્ષણ અન્યા. રાજકુડુંખના વિશ્વાસુ રક્ષણુંદાર તરીકે તેણે નાતો અંધ્યો. રાજમહાલયના અતઃકરણ સુધી તે જ પહોંચી જતા. તે કયારે અને? રાજકુળને તેનામાં જોગલવી સેનું જોવા મળે તોજને! કેદું માથે વજરકણોટા મારીને ચારણુંદેવ અન્યા, જોગલાલસામાં લમતાં મનતા માથે જોકડા મારી દીધા. કંચન અને કામિનીના માથે જરાય મોહુ ન રાખ્યો. ત્યારે રાજકુળના તે માતીતા અન્યા, રાજયના પુરોહિત અદ્ધારે કરતાં રાજમહાલયમાં તેમના આદરમાન વિશેરણ હતા.

તે જમાનામાં ચારણું સત્યના પૂજારી હતા. રાજકુડુંખની મહેરખાની માથે જીવતા ચારણું તાખેદાર ન' તો, પણ અવળા મારળના ચાલનાર રાજનીને ઘૂટ જાલી તેને સાચા મારણે થઈ જતો. સિહના માથે તે સ્વાર થતો, કેમકે સમરક્ષેત્રનો તે સુખદું હતો.

તેમ છતાંય તેણે મા સરસ્વતીની ઉપાસનાના દાર દ્ધ ન'તા દીધા. સૂર્યમલ મિસણુનો જોટો જગતમાં નહીં જડે. વીરસતસર્વ માં રાજપૂત સંસ્કૃતિ અને ક્ષત્રિય ધર્મને સ્પષ્ટપણે પ્રગટ કરી રાજપૂતાધતે ક્રાંત્યાનિમાં તે જ પ્રિરદ્ધાની ક્ષકે, ભાટ થઈને નહીં, કવિ અનીને. માટે જ ગુરુંદેવ ટાગોર વીર સત્તસર્વ ના કવિ પર જોગચાળા થઈ ગયા હતા. રાજપૂત સંસ્કૃતિનો મારવાડી રાજપૂતોના અમીરનો પરિચય કવિ કુલ શ્રેષ્ઠ રવીન્દ્રનાથ ઠાકુરને સૂર્યમલ મિસણે કરાયો. વા ચારણુંદેવ પુદ્ધક્ષેત્રમાંથી નીકળી રાજહરખારમાં આવ્યો, હજુરિયા તરીકે નહીં પણ સરસ્વતીનું તરીકે વિદાન તરીકે.

વિદાનોની મર્યાદા છોય છે. તે સામિતક્ષેત્રના ક્ષેત્રપાળ અનતાંદ્રીય છે. તેમના નીર અખંડિતપણે વહેવાને બહેવે ધરાયો અને ખાસોચિયામાં ડલપાઠ જાય છે. આ નીર કાં તો સુદીય જાય, વા દુર્ગાધ મારી એમે.

ખરેખર તો સંસ્કૃતિનું રખવાળું કરનાર સહેલ આંખવાળા, સહેલ હાથવાળા અને શરીરવાળા લોક છે. તેમની નજર તે જ આંઠી નજર રાજમહાલયમાં હિવાને ખાસ હોય, હિવાને ખાસના દરખારીએ હોય

અને ભાતા સરસ્વતીની સરવાળુંએ રાજશાહીમાં આ ધરામાં સમાવા માણી છે જેમાં ધરતીના પેટાળમાં જગતજનની સીતામાં સમાણી. પરિણામે, એક પ્રકારની સાહિત્યભાષા તરીકે બળકર હોવા અતાંથ ડિગણાભાષાએ લોકોનું પાઠ્યણ ગુમાયું અને તે ભાષા રાજદરખારના હરખારીએની ભાષા બની ગઈ. અરે કહો બેલીજ બની ગઈ, તેનો સમજનાર અને માણુનાર વર્ગ સાવ પાતળો રહ્યો. પરિણામે, તે ભાષાના સાહિત્યનો રસારવાદ હોય કરે ! ને હુંશા સંસ્કૃત ભાષાની ભારતવર્પમાં થઈ છે, તે ભાષા આ ધરતી માથે પાંગરી, ચિરાટ્યે કાઢું કાઢ્યું પણ આદિષ્ણોની પોથીમાં તે ભાષા અંધાઈ ત્યારથી તેને લોક વચ્ચેથી વિજય લેવી પડી. તેવી દ્વારા ડિગણાની થઈ. રાજના જૂઝજનજ માનવીએ તેના અંતઃતત્ત્વને માણી શકે; તેવા હરખારીએ રાજદરખારમાં હતા, બાકી વાહ, વાહ ! ના લખકાર કરનાર, “વાહ કવિરાજ વાહ !” બેલી પંદ્રને છેતરનાર ડાયરામલો અને અમનના ડેકમાં માથાને ધૂણાવનાર કવિરાજના પ્રશંસકો હતા. તેઓ ભૂરિભૂરિ પ્રશંસા કરતા, પણ તેના પર લોકની મહોર વાગી ન હતી. લોક તેનાથી છેટે બેકો હતો. લોક તેના પ્રલે ઉપેક્ષાવૃત્તિ કેળવી હતી, આથી ડિગણા સાહિત્યના નીરના કાંઠા સાવ સાંકડા થઈ ગયા, અને તે ઝરણું સુકાવાની લગભગ અણું પર હતું.

ત્યારે ગુજરાતમાં પૂલંદ અવાજે, અવકાશના ગુંબજેના કાનના પડુને ચારી નાખે તેવા બોર ભર્યો લખકારથી ગાનાર ત્રણ લોક સાહિત્ય સેવકો સૌરાષ્ટ્રની ભૂમિ માથે અવતર્યા. તેઓ હતા સ્વ. શ્રી જોગુણહાસ રામયુગ સ્વ. શ્રી મેધાણુંહલાઈ વા મેઢાભા ગદવી અને સ્વ. શ્રી જવેરચંદ મેધાણી.

તેમના જમાનામાં હેઠેર રાજનીએ હતા. રાજપીએ હતા અને રાજકવિએ પણ હતા. પણ આ ત્રણ શારદુપુત્રો ફાટેલ પિયાંલાના મગજ ધરાવનાર અદિતીય અને અન્નેડ ઘનસાનો હતા. તેમને રાજકવિપત્ર ખપતું ન' તું. કેમકે અનેક રાજકવિએ પૂર્વનોની પરપરાને ચાતરી ગયા હતા. અંગ્રેજના અમલે લડાઈએને શમાની દીખી હતી. અને રાજસંતાનો એશારામમાં લાગા ગયા હતા. સરા અને સુંહરીમાં તેઓ ઝૂઝી ગયા, ઝૂલ થઈ ગયા હતા. આવા રાજનીએના રાજકવિ થવાનો એકાદ મનસુએ સ્વનહેડ ધારળ કરી આ ત્રણના મનમાં રાતવેળાએ અવતયોં હોત તો આ જેગંદર શા અવધૂતોએ માથા પટકી પટકીને પ્રાયશ્વિત કષું હોત !

રણ મધ્યેથી આરણી કાવ્યને રાજહરખારમાં ચારણદેવે લલકારી તેને રાજસિંહાસના માનમરતાનો મોટ્ટો અપાવ્યો, પણ ગઢની તોતીંગ ભીતો વચ્ચે પ્રસાયેલ કાવ્યહેઠોને લોકમાં લલકાર કરતી કરે છે ગુજરાતમાં સ્વ. શ્રી મેઢભા, રાયસુર અને મેધાણીએ.

એ જમાનો લે કશાલીનો ન'તો પણ રાજયાડી અને સામંતશાડીના મેધાન્દ તપતો તો. એક નહીં, અગિયાર ઉવિરાજને આશ્રય આપી શકે એટલી લદ્દી રાજની તિનેરીમાં હતી. રાજની તિનેરીએ હુકડાડું હતી, પણ એવા દુલ્લા કંચિ શોખીન અને કવિતાના કસ કાઢી પારેખ અનનાર રાજવીએ કેટલા ? આવાજ વિચારે રાજહરખારના ગડના કુંડળામાં મંઝાતી અને મરાતી ઉવિતાને અને કાવ્યગાનને આ રણ ભડીરો લોક વચ્ચે લાની લલકારી અને અભિનય સાથ, ઉવિતાને રમવા મુજી. લોકનો અંસ્કાર હતો, રાગને લલકારવાનો. શાષ્મદ્વા સંગીતનો સથવારો ઘૂરી ન'તો ગયો. લોક તો લલકારતો કંઈમાં જે કાંઈ ડાસ્યું' તું તે !

ભગવાન બુધે આત્મણાની વાણીને કોરણું છાંડી મેડી લોકની ઓલીમાં લલકારવા માંડ્યું. 'ધર્મપાદ' નેવો ગ્રંથ લોકવાણી પાલીમાં ગાયો, તેમજ સ્વ. શ્રી મેઢભા, રાયસુર અને મેધાણીએ કર્યું. આની અહીંસી, પણ દાણ, હલદ, લય અને છંદ તો લોકને નિત્ય પરિચિત હતા તે જ રાખ્ય નેવા લોક ઉમટ્યો. પેલા અંગેજ કંચિ આઉનિંગ ગાયેલ ઉવિતાના 'પાદ્દ પાદ્પર' ની પાછા ઉમટેલ મૃપડોની નેમ.

અર્થાત લોક માટે સરળયેલ, લોકના ચિત્તમાં સંદર્શયેલ અને લોકજીંસ એસણું કરેલ ઉવિતા વળા પાંડી લોકમાં લાવરાનો ભગીરથ પુરુષાર્થી આ ભગીરથેએ ઉવિકાળમાં કરી કંઈકના પૂર્વનેના પરાકર્મોના પ્રાયદ્ધ પરિચયો કરાયા. અર્થાત રાજમહાલદ્વારમાં પૂરાયેલ સાહિન્ય કંઈકાના હવે લોક વચ્ચે મહાલવા લાગ્યું. આ કાર્ય નહાનું સુનું નથી. તે વિરાટ કાર્ય છે. આનો યશ માત્ર આ વિમૃતિને જ આપવનો હાથ. અમીરવંતા અમતીધરો જ આ કાર્ય કરી શકે અને આ વિમૃતિની વાટમાં કંઈક શુદ્ધો વેરાયેલ હતી. તેમને સામા પૂરે વાટ કાપવાની હતી. પ્રાચીન પરંપરા જૂદાઠ ગાઈ હતી. નવી પરંપરાએ પાકટ ઇય વારણ કર્યું હતું અને જૂના ઘડ માથે નવા કંડા ચડાવવાના હના. કેટલું અટપકું કાર્ય ? તેમની સામે અભિમન્યુનો કોઈ સરળણી હતો તેને વીંધીને પેલે પાર જવાનું કહીન કાર્ય તેમને પાર પાડુનાનું હતું, પણ કંડના કામળાથી કળાય નાગને આકૃષ્ણે નાથ્યો. તેટલી જ ઘડાપળાવિપળમાં આ કાર્ય આ વિમૃતિએ પતાવી આપ્યું. તેમાં સ્વ. શ્રી મેઢભા અંગેજી હતા. વિશેષ ભારના ઐંગ્રેનાર હતા.

આને લોકશાહી છે. તે ચુગમાં વિવારતું પડે છે કે લોકશાહી અને કલા કૃત્યા નાતના સંબંધી સંકળાયેલા છે? કલાના પગમાં સામંતશાહીના અદ્યા સોનાના ઝંજર હતા, તેની જરૂરનો રવ માત્ર રાજમહાલયો પૂરતો મર્યાદિત હતો તે લોકશાહીમાં લોકના કાને આવે, તેવો કરવટ અદ્યલાં પ્રયત્ન કરવાનો હોઈ શકે, નહીં તો કલાના કંઠે ચાણે દેવાઈ જાય.

ગુજરાતમાં ડાયરાની લોકશાહીની મુદ્રિત અપાવવામાં આ ગણું ભાડારોએ પહેલ કરી છે. રાજદરખારના આલરજી રી કંઈ અને કહેણુંની કળાને લોક વર્ષે રમતી મુક્તા માટે અને રાજમહાલયના જાંચા મહેલમાંથા લોકશાહીને કટક્ટ પગાથયાં ઉતારી લોક વર્ષે, લાવવાની હિંમત માટેની પહેલ ચારજુ જાતિમાંથી સ્વ. શ્રી મેઢલાંએ કરી. આમ લોકશાહીને લોક મંડપમાં રમતી કરવાનો તેમનો અભૂતપૂર્વ પ્રયત્ન હતો. લોકશાહીએની મુદ્રિતનો છતહાસ જ્યારે ચોપડામાં ચિતરાશે ત્યારે સ્વ. શ્રી મેઢલાનું નામ તેમાં સોનાની ઝણનાઈથી મંડણું હશે.

મેઢલાનું પ્રથમ દર્શાન તો સરજશવંતસિંહજી હાઈર્સ્કૂલ લીમડીમાં ભાષવા ગયો અને 'શારદી'ના અડો ઉથલાવતો થયો, ત્યારે તસીરહેઠે થયું. પહુંચી હાઈલેન્ડર્સ કેવું બહન. પગની પીંડી માથે ચ્યોચ્યુપ સુરવાલ. તે માથે મર્યાદાનું રખવાળું કરતી બારાડી મેર શૈક્ષણી બેટ. પગમાં ચોખાઈ જોડા. ડીલ માથે કડિયા જેવી કફ્ફની ને તે માથે આંટિયાળી પાંખડી. આંખ અદૃ મોટી નહીં પણ ભારે મારકણી! પાટવા જેવી પહોળી છાતી. છાપા દારા જાણ્યું કે આ લોક ગાયક માનવ મેહનીને ઘડીકમાં રેવરાવી હે, તો બાજુ ઘડીએ ખડાખડાટ હસારી પણ હે! કંઈનો જન્મગર જેવો આ છે લોક ગાયક!

જાપા દારા તેમનાં ગુર્તિંગઢના મેં દર્શાન કર્યાં. મળવાનું મનમાં થયા કરે એમાં એકજાર પોરખંદર તેચો સ્વ. નાનાભાઈ શેડને ત્યાં પદ્ધારેલ. હું ત્યારે પોરખંદરમાં હતો. મનમાં અડું કે મળી જવાય તો અજ રહે ! તેચો શેડના અંગભામાંથી બહાર આવે, હું દરિયા તરફથી આવું. મેં એકજાર જોયા, મેં નજર ખોડીને નિરખ્યા, 'શારદી' ના અંકના પાના માથે જે તસીરને એકજાર આવે તેટલીવાર ચુંબી નિહાળી હતી. તે જ માનતી નજરે થયો. ! ઘડી અને પળ કોળી ઉક્ખા. ઇંચાડે તુંબાડું નાચી ઊડ્યું.

આ થણા અન્યા આહ ઓડા વરસે સૌરાષ્ટ્ર યુનિવર્સિટી અનિતલમાં આવી, સ્વ. ડૉ. ઓ. ડોલરગાય માંકડે ટેચીપુત્રાનું અહુમાન ઉરવાનો કાર્બિકમ રાફ્ટિય શાળામાં ગોડાવ્યો. તેમાં સ્વ. ડૉ. મેઝભા પણ હતા, અને તેઓ ડાર્માન્થન રહી રહ્યા હતા.

રાફ્ટિય શાળામાં હક્કાડકુ મેદાની જાણી હતી. સાનેના મંડપ પર જોરાટની ધરણીના તેજદાર કવિરત્નો બિરાજતા હતા. તેઓ સ્વ. તેજના રઘ્મદેવાએ રેલાવતા એઠા હતા. તેમાં મેં સ્વ. ડૉ. મેઝભાને જીવા. ‘શારદી’ ના લસ્ટોરમાં જે ડાઠ તેજ ડાઠ. તેવી અદ્દ. મારા મનમાં કનિ ગાવિષની એક પંડિત રમવા લાગી !

“ધરારત ક્યા, ધરારત ક્યા, અહી ક્યા ...!” અરી અત્ત છે. નેથી ધરારત આપોઆપ ચિત્તમાં પ્રગટે. સોરડી રલને મેં મનોમન આદરભરી અંજલિ અર્પણ કરી અને તેઓ જ્યારે તેમનું વડતંય કરવા ઉભા થય. ત્યારે લોક મેદાને મેધગારના શી તાળાએનો ગડગડાડ કર્યો, પ્રિયજનના ચરણું પુંચ્યો ધર્યા, પ્રતીકૃત્પે અને મેધગારની અવાજે સ્વ. મેઝભાએ પડતંય માંડયું વહેનડાવવા. સાગરના નીરને તરંગ અને હિંદેણા, લય અને તાલ વગર ન ચાલે. તેમ આ લોકગાયકની ચાણીને પણ તાલ, લય હિંદેણા અને સંગીત મહ્યા રામદે વગર ન ચાલ્યું. કથનમાં જેવો ભાવ અને રસ, તેવા મેં પરના ભાવો, દુંગિનો અને અલિનય આળાએ રાગમાં પણ ભાવ જાળ્યો. લાગ્યું કે મેઝભા રંગભૂમિના સમર્થ અલિનેતા છે.

તે દ્વિસે તેમની વાણીમાં તરણેણ થઈ ગયો હતો, ત્યારે અમે મહ્યા નામ ડામ આયાં અને છુટા પડ્યા છુટા પડ્યા !

તે અમાણ પહેલું અને છેલ્લું મિલત !

તેમ છતાંય ઓજાડવાએ નિરખેલ ના. મેઝભાની ગજરાજ શી ચાલ પોરખંહરમાં નજરે થઈ તી તે આનેય અંતર્યલુમાં અમનામ ને અંકાંધ કંડરાઈ ગઈ છે !

કેમડે લોકશાહીમાં લોકફળાના પગે લોકોના જાંજરના ખાંધતાર તે પ્રથમ લોક ગાયક હતા !



શ્રી મેઢભાબાઈ

—રતુભાઈ અદ્ધાણી

શ્રી મેઢભાબાઈ ગઠવીનો મને પ્રથમ પરિચય થયો સને ૧૯૩૨-૩૩
ના અરસામાં, એ હિવસોમાં તેઓ થોડા મિત્રો સાથે પ્રવાસમાં નીકળેલા.
એમની મંડગામાં અમારા પરિચિત એવા એક મિત્ર હતા. એમના આગહથી
શ્રીમેઢભા તરવડા આવ્યા બ્યોરના સમયે અચાનક મોટર 'સરોવર મદિર'
નામની અમારી સંસ્થાના ચોકમાં આવીને ઉભી રહી.

સંસ્થામા અવારનવાર અનેક અતિધિઓ અને આગેવાનો અવા
રહેતા. પણ જાને સંસ્થાને આંગણે આવીને જોગેલા અતિથિ નવીજ ભાતના
હતા. પડુછાં કાંદિયાવાડી દેહ, તડકાને કારણે વધુ ગુલાખી ધારણ કરેલો
યહેરો. મેં પર ફરછતું મંદમંદ હાસ્ય ચુસ્ત સુરવાલ, લાંબો કોટ, માથે
સરેર પાધડી, હાથીની સુંદર જેવા બને હાથમાં ઝુલતા જેસના છેડા, એવા
મેઢભા ડેવલા ગજરાજની ચાલે અમારા નાનકડા સભાખંડ પાસે આવી
પહેંચ્યા. પ્રત્યક્ષ પરિચય ૧૫૩ પણ વર્ષો જુની એણખાણ હોય એવી
આત્મીયતાથી અમારા ઘયર અંતર પૂછ્યા. અને પણી તો નિરાંતે સૌ
ખેડા, ડાયરો જાગ્યો. મારી હુલક અને ખુલાંદ અવાને મેઢભાએ એક
પણી એક ગીત ઉપાડ્યા. થોડા સમયમાંજ રંગ જાની ગયો. ઇરી નિરાંતે
આવવાનું નયન આપી મંડગાએ વિહાય લીધી. એમના ગયા પણી પણ
દ્વારા નુદ્ધી મેઢભાએ ગાગેલા ગીતના પડધા સંભગાતા રહ્યા.

ત્યાર પણી તો કવિશ્રી દુલાભાઈ અને શ્રી મેઢભાલાઈની જોડને
મળવાનો અને સાંભળવાના અનેક પ્રસંગો મળ્યા. પણ એક સુલાકાત
નૈતિકસિક દેખી શકાય.

જૂનાગઢના નવાએ પાકિસ્તાનમાં ભગવાનો નિર્ણય લીધેલો.
આરજી હુકુમતે જૂનાગઢના નવાએ સામે જંગ માડેલો. આરજી હુકુમતની
લોકસેના જૂનાગઢના એક પણી એક ગામ કાણને કરતી આગળ વધતી
હુતી. નવાગઢ કાણને કર્યા પણી કુતીયાણા ઉપર આકમણ કરવાનું
આચેજન થઈ રહ્યું હતું. પણ અધિરા અનેલા શામગઢસભાઈએ જમસાહેય
સાથે મળી, લોકસેનાની જોણ બંધાર કુતીયાણા ઉપર આકમણ ગોઈન્યું.

છલ્લી ઘરીએ મોકબેનાને આતી જણ થતાં, ટાણું સાચી લેવા, અમે કુતિયાણું પહોંચીએ ત્યાર પહેલાં તો જમનગરથી કહેવાતા ગેરીલાએના આવેલી હુકીએ કુતિયાણું ઉપર આડમણ કરી હાધું. એ ચાર ઘડાં ભડકા થયા અને થોડીવારમાં જ પાણ હું ગયા, એટલે ફરી વહું વ્યવસ્થિત રીત આડમણનું આયોજન કરવા અમારે કુતિયાણાની નજીક અવણી નાખી પડે એમ હતી. યાહ આચ્યું. કે નજુકમાંજ શ્રી મેઢભાનું જવાવા ગામ છે. અમે છત્ત્રાવને પદ્ધર જલ્દ પહોંચ્યા. તપાસ કરી. મેઢભા ઘરેજ હતા. એમને થેર જલ્દ પહોંચ્યા. સુરવાલ અને જલ્દમ્ભો પહેલેવા અને ઉધાડે માથે ઉધાડે પગે મેઢભા હસતા હસતા બહાર આવ્યા. ભટ્યા વાત કરી કે થોડા વખત માટે છત્ત્રાવામાં પડાવ નાખવો. પડે એમ છે “છત્ત્રાવાના એવા ભાગ્ય કયાંથી ?” મેઢભાએ અલ્યાંત ઉમળાડાપૂર્વક અમારી વાત વધારી લાખી. અને પણી તો આંગણે મેંચેરા મહેમાન આવ્યા. હોય એવી સરભરા શરૂ થઈ ગઈ ઉતારા માટે વિશાળ ખંડ, દોલીયા ગાદ્વા, રજાઈ બોજન માટે રસોડું, કોઈ વાતની આમી ન રહે એની શ્રી મેઢભા જલે કાળજી લે.

“મેઢભાભાઈ ! અમે કોઈ જનમાં નથી આવ્યા. લડાઈના મોરચે જવા નીકળ્યા છીએ. આટના અંચી સરભરા અને આટલા અંચા લાડ ન પાલવે” મેં ટકોર કરી.

“લડાઈને મોરચે જાવ ત્યારે હું કયાં સરભરા કરવા આવવાનો હું ? પણ મારે ગામ મારે ધરે આવ્યા હો ત્યારે તો અમારા જળ પ્રમાણે ઉભા રહેવું જોઈએ !” મેઢભાએ હસતાં હસતાં જવાબ આપ્યો.

છત્ત્રાવામાં અમારો પડાવ રવ્વો લાં સુધી શ્રી મેઢભાભાઈએ અને છત્ત્રાવાના આમજનોએ આરજી હુકુમતના સૈનિકોને હૃથેળીમાં રાખ્યા. એ મહેમાનગતી કહી ભૂલાશે નહીં.

ત્યાર પણી તો શ્રી મેઢભાભાઈને કયારેક કવિઓ હુલાભાઈ કાગની સાથે તો કયારેક એકલા મળવાનો. સાંભળવાનો. અવસર મળતો રવ્વો.

જ્યારે મેરુલાને સાંભળ્યો ડાયરો ઊદી ઉઠે, પ્રસંશના પુણ્યો વરસવા માડે ત્યારે શ્રી મેઢભા નમૃતા સાથે ઊદી ઉક્તા “હું કવિ નથી. હું તો પીરસંખ્યિયો છું. કવિ કાગ રાંને અને હું પીરસ્યા કરું.”

સારઠ લય નિવારણ સમિતિની રચના થઈ. સમિતિ તરફથી કેશાદમાં ટી. આર. હાર્સ્પેટલનું આયોજન થયું.

શ્રીમેઢભાલાઈને આ આપોજનમાં ખૂબ રસ લીધો અને પોરબંદરના થા નાનજુભાઈ પાસેથી સાડું એવું હાન મેળતો આપવા સરી એવી જહેમત ઉડાવેલો. કેટલીક શરતો અંગે મતમેહ રહેવા પામતાં, એ હાનતો અમે સ્વીકાર કરી ન શક્યા પણ થા મેડભાલાઈને સહભાવ અમારી મોટી મૃતી અની રહ્યો.

છેલ્લા હિવમોભાં ચારણું બાળકો માટે પોરબંદરમાં જાત્રાલય સંસ્થા શરુ કરવા માટે એમણે યજ આરંભ્યો. જાતિના બાળકોને શિક્ષણ અને સંરક્ષાર મળે જાતિનો ઉત્કર્ષ થાથ એક માત્ર ભાવનાથી રહત અને હિવસ જૈયા વિના એમણે ભારે પુરુષાર્થ આહરેલો. જાત્રાલયો તો શરુ થઈ ગયા. હવે એને આદર્શ શિક્ષણ સંસ્થા તરીકે વિકસાનવાની જવાબદારી એમના ચાહુંકો-પ્રસંશકોની ગણ્યાય.

સોરઠ ક્ષ્ય નિવારણ સમિતિના અક્ષયગાં કેન્દ્રમાં ગૌશાળાના ખાત મુજૂરનો અવસર હતો. ગુજરાતના એ વખતના રાજ્યપાલ શ્રી કે. વિશ્વનાથના વરદુ હસ્તે ખાતમુજૂર્દ થવાનું હતું શ્રી ટેબરભાઈ સમાંરંભના પ્રમુખસ્થાને હતા. આવા શુભ પ્રસંગે શ્રી મેડભાની હાજરી તો હોય જ વાતને વાતમાં એમણે એમની લાક્ષણિક ફેફે ટેબરભાઈને બિરજાયા. કહે કે ‘આડ એની જગ્યાએ મુજા નાખીને ઉભું હોય સવારે પદ્ધિમ દળો એનો લાંબો પડાયો જેવા મળે. બપોરે પડાયો ઝડુમાં ઠંકાઈ ગય. સાંને પૂર્વદળો પડાયો લાંબો થનો જાય. પડાયો ઉપરથી જાડે માપનારા સવાર સાંજ ઝડુની પ્રસંશા કરે. બપોરે વિસામણ અનુભવે. ટેબરભાઈ એક વિશાળ શીતળ દેખુર વૃક્ષ છે. સવારે સાંને એના પડાયો ઉપરથી માપનારા ગોચા ખાવા કરતા હોય છે. હું ટેબરભાઈને પડાયો ઉપરથી માપતો નથી. અળખણતા બપોરે પણ હું એની છાયામાં બેસું છું. મારે મન ટેબરભાઈ એક જાડ છે, એનો પડાયો નહીં.’’ ટેબરભાઈ પણ આ સાંભળાને મલકી જિડ્યા પણ આ અમારું છેલ્લું મિલન સર્જાયેશું. પછી મળવાનો અવસર મળ્યો નહીં.

એમના દેહવિલયથી લોક સાહિત્યને સમાજને, સૌરાષ્ટ્રને ન પૂરાય એવા જોત પડી છે પણ તેઓ જે સંરક્ષાર રેડી ગયા છે, હવા સજ્જ ગયા છે. ઘરની એડી ગયા છે એમાંથી એમની પરંપરા જળવનારો અને ઉજાળનારો કોઈ વીરલો જગતે એવી અદ્દા છે.

શ્રી મેડભાલાઈને હું ખુખ્ય આદર અને પ્રેમપૂર્વક ભાવઅરી અદ્દાનાંદ્રિ અપું છું.

લોકસંસ્કૃતિના ધારક

શ્રી મેડલા ગઢવી

—હરેન્દ્ર પ્ર. ભણ

૧૯૪૬માં શ્રી જવેરચંદ મેધાણીના અવસાનથી શરૂ થઈ ૧૯૭૭માં શ્રી મેડલા ગઢવીના અવસાન સુધીના નણ દાયકામાં ભાવનગરના શ્રી પિગળાલાઈ નરેલા શ્રી હારણભાઈ મહેદૂ, શ્રી ગો. દ્વા. રાયચુરા, શ્રી દુલા કાગ, શ્રી લેમુ ગઢવી, શ્રી શંકરદાનજી હેથા, વગેરે થોડાં થોડાં વર્ષોના અંતરે વિનાય થયા. આ કલાકારો એકમાણના પૂરક હતા. આથી એકના ગયે આજને ખોટ પડ્યી, અરે, અધૂરા થઈ જતા ! દુષ્ટની રમાટ મેડલા-રાયચુરાની નેડલી જ જમાવતી, તો કંચિ ભગનાં ગીતો મેડલાના અવાજના પાંચે જ જાડતાં ! શ્રી જવેરચંદ મેધાણીના ચારણી-સાહિત્ય અને લોકસાહિત્ય સંગ્રહ-સંપાદનમાં શ્રી દુલા કાગનો હાજો બજ્જો મોટો હતો. આ વાહુકોના કઠ, કંદેણી, રણૂઆત અને કાર્યનો વિચાર કરતાં મનમાં સહેલે એમ થઈ આવે છે કે લોકસાહિત્યની ગત એના વાહુકોની દર્શિયે સુતું થતું નથી છે.

શ્રી મેડલા મેધાણુંહ ગઢવી જૂતા માંગરોળા તાખા વેડ વિસ્તારના છત્રવાના ચારણ. છત્રવામાં મુખ્ય વસ્તી ચારણો અને મેર લોકની.

આજે જૂનાગઢ જિલ્લામાં આવેલા આ ગામના ચારણોમાં ભક્તિ, સેવા અને સ્વાર્પણની ત્રિવેણી વહેતી આવી છે. સતતમાં સૈકામાં અહીં એક ચારણાઈ સુંદરભાઈએ સત્ત લીધેલું ! સાય કરડ્યો હોય તો તેનો ઉંખ ચૂસીને ઝેર ઉતારનાર ચારણાઈ વાછલા પણ અહીંજ થઈ ગયાં. આ આઠના કુળનો મોટો દીકરો આજે પણ ઉંસ ચૂસીને ઝેર ઉતારી શકે છે ! એક અનુભૂતિ મુજબ ભગવાન શ્રી મહાનીરને ઉપદેશ આપનાર સાત ઋપિએમાંના એકના વંશમાં લીલા નામનો ચારણ થયો તેનાથી ચાલેલો લીલા શાખાના ચારણનો વંશ મુખ્યને છત્રવામાં રખો છે.

શ્રી નરોતલાઈ પલાણુના જણાયા પ્રમાણે લીલા શાખાના ચારણોમાં કંચિ મેહ થયા. કંચિ મેહ પહેલાં આ વંશનો કોઈ ઉલ્લેખ

મળતે નથી. કંબિ મેહની સાતના પેટોએ મેધાશુંદ ગઢવી જન્મ્યા. કંબિ મેહુ-ધસરદાન-રાણા-વજુ નાનજુ-કલ્યાણદાસ-ખેંગારભાઈ-મેધાશુંદ. ભી મેધાશુંદ ગઢવીને છ પુત્રો અને એ પુત્રીઓ. મેડભા એ મેધાશુંદ ગઢવીના ખીજન નંબરના પુત્ર.

આ મેડભાના પિતા મેધાશુંદ ગઢવી સાત અભણ પણ સ્વરૂપો આગળ વચ્ચતાં વધતાં વાર્તાંકળામાં અહુઅત થયેલાં. નવેય રસોની આરે જરૂરાટ કરતા. એમનાં કંદે છસો વરસનો સોરડી રા'ચુડાસમાંએનો દૃતિહાસ રમતો એમના વાર્તાંકથન પર એમને એટલો વિશ્વાસ કે તેઓ ઘરીનાર હેડ કરતા કે 'નારી વારા' સાંભળાને ને ત હસે એને હું પરચ્ચાન રૂપિયા આપું ને વારતા સાંભળાને નેત્ની આંખમાં આંસુ ન આવે એને હું પરચ્ચાન રૂપિયા આપું.' શા જવેશ્વર મેધાશુંદ એમને સાંભળ્યા ત્યારથી જ વારતા માંડવાનું બંધ કરી હોય! ગુજરાતની પ્રાણે એમની કળાને નવાનેલી. એમની જ્યાંમાં જરૂરાંતિએ મુંબદરમાં ગુજરાતી સાહિત્ય પરિપત્રના પ્રમુખ શ્રી ક. મા. મુનરાએ એમને જ્યા ચુવાશુંગીની અર્પણ કરીને અન્માનિત કરેલા. મેધાશુંદ ગઢવી જેવા ઉત્તમ વાર્તાંકથક એવા જ ઉત્તમ ભક્ત અને સમાજ સેવક હતા. 'મેધાશુંદકાકા'ના હુલામણું નામે જ તેઓ પરિચિત અને છવાવાતી આસપાસ તો તે 'થાંતિના હું' કુદુંબક્રમેશ કે જવડા હુંય ત્યાં સર્વસંમત ઉકેલ લાવવા તેમની મહદ્વ લેવાતી. મેધાશુંદભાઈને પત્તી આઈ શેણુભાઈ પણ એવાં જ મળેલાં. આ બંનેના ઉત્તમ ગુણોનો વારસો ધરાવતા શ્રી મેડભા ગઢવી ખંડત ૧૯૬૨ના ફાગણ સુહ ચૌહે જન્મ્યા.

જીવા એ નાનબંડું ગામ એટલે અભ્યાસની સગરડ મળે નહિ. જામમાં એક શાળા, પણ ડોઝ શિક્ષક ટકે નહિ. મેધાશુંદ ગઢવી અને આઈ શેણુભાઈને પોતાનાં ભાગકેને શિક્ષણ આપવાની ઘર્ણી છંચા. મેડભાને શાળામાં જવાની છંચા થઈ ને એક નવા શિક્ષક આવ્યા. પગાર આઠ રૂપિયા મળે, અને તેમાં તે શિક્ષકનું ગુજરાત થાય નહિ. આથી શાળા છોડી જવાનો તેણે નિર્ણય કર્યો, પણ આઈ શેણુભાઈએ તેને વાર્યો. હુંઘ, અન્માજ અને બગતણ પડું પાડી તેને થોડી હુળવાશ કરી આપી. શિક્ષકે એ-પાંચ વર્ષ વાગું જીવામાં ગાયાં એ શિક્ષક નેટલો સમય રહ્યો તે દરમિયાન મેડભાએ નેટલું શિક્ષણ લાધું તેટલું જ પણી એતીમાં પરોવાયા. વાંચવા લખવા નેટલું શિક્ષણ મેડભાને મળ્યું. પિતા મેધાશુંદ ગઢવીના કંડસ્થ સાહિત્યે મેડભાને પરંપરાનો જ્યાલ કરાવ્યો. વાંચનું તો એવું ઘેલું ક્ષાંયું કે પણી તો જ્યાં જાય ત્યાં પુસ્તકોની ભાગ પહેલા કરે. ભાગતર

એમ થયા પણ તો પિતાને ખેતરમાં મહુ કરવા જિવાય કોઈ પ્રગતિ રહી નાથી. તક મળે ચાંપે કથાકીર્તન સાંભળે કે અજન ગાય. લોકગીતે અનાયાસે કંઠે ચડતો જ રહેતાં.

પિતા મેધાણું હ ગઢણીનાં વાતાંકથનનો કાર્યક્રમ ગામે ગામ રહ્યાતો. મેરાં એમની સાથે જતા. પિતાની દાનારીમાં મેરલા કથારેક ગાતા નહિ. ઉંમર પણ થાગું નાતી ૧૬રુષમાં નાદિયાદમાં ગુજરાતી સાહિત્ય પરિપત્તનું અધિવેશન ભરાયેલું. મેધાણું હ ગઢણીને કાર્યક્રમ માટે આમાંગુ હતું. સાથે મેરલા પણ ગયેલા. એક પ્રસિદ્ધ વાતાંકથક સાથે ફરતા યુવાન પર સૌની નજર જતા. તો મોતીલાઈ અમીને એ યુવાનની માહિતી મેળની ત્રી ગોઠગાણસ હા. રાયમુરાને કંચું કે મેધાણું હ ગઢણીને વિનંતી કરો કે મેરલા દારા કંચું થયા હે. રાયમુરાના આભાસી મેધાણું હ ગઢણીએ મેરાંને ગાતા જગ્યાઘું. પિતાનો આઓહ થતાં મેરલાએ ભાવનગરના રાજકાવિ પિંગળથી પાતાભાઈએ રચેલ સાધારૂઘુની પારમાસીનો વિભંગી છંદ ઉપાડ્યો... તે ત્યારથી મેરલાના લોકસાહિત્યના કાર્યક્રમેના ત્રી ગણેશ મંડાયા.

ત્રી જ્યમદલ પરમારે મેરુભાનો કંઠ અને વૃત્તિ સમજવતાં લખેલું કે, 'મેરલાના કંઠ અને કહેણુંનો મેરદંડ હતો અકિલ. એ અકિલમાંથી જ આરાધનાના ભજનેનો મોરનો ગહેરનો રહેતો. ચારણ હતા પણ એમણે રાજહરારો કે ઓમનેને કહી નથી આરાધ્યા. પણ એક માત્ર ધર્થદને જ આરાધિત છે. નવા યુગને એમણે ગાંધીજીના જીવન અને વિચારમાં નિહાળેદો અને ગાંધીજીને આરાધિતા. એથી એમની વાણી, એમની કહેણી સન્નય આધ્યાત્મિક ભૂમિકા ઉપર જ વહેણી રહેવી. લોકગીતોના ગાયક કરતાં લોક સંસ્કૃતિના ધારક જ વિશેષ હતા. ગાન તો એમના આધ્યાત્મિક ભાવનાના અનોએડાર સમું હતું.'

મેરલાએ નિજના આનંદ ખાતર ગાયું. એમના અંતરને જેણે જેણે પ્રેરણા આપી તે તે કવિતાએ. તેમણે રજૂ કરી. ત્રી જ્યમદલાઈ પરમાર પરતા એક પત્રમાં તેમણે લખેલું...રાંધું આવું અને ગાખેલું ગાવું એમ મેધાણીભાઈ કે ભગતાયાપુનાં ગીતો મારા આનંદ ખાતર બોલ્યો ને એ સાંભળનારાંમાં પ્રેમથી સાંભળ્યાં. આનાથી વિશેષ કંઈ હું મારમાં માનતો નથી. મને આત્મક જે પ્રેરણાએ મળો છે એ કવિતાએનો પ્રતાપ છે, અને નેટવા પ્રેમથી બોલ્યો એનું જ શુભ પરિણામ છું...ત્રી મેરલા એમના કાર્યક્રમમાં રામાયણના પ્રસંગો, ખલમાનંદ રવાભીનાં

હતે, શ્રી રેખાચૂણી અને શ્રી દુલ્લા કાગનાં ગીતો, ભજનો, ડિરિસ, ટેરી-
સુનિના હતે અને લેઝગનો રજૂ કરતાં મેડભાના નાનાભાઈ શ્રીપિંગળથી
ભાઈ ગદવીના મંતે મેડભાની ગાયકોનો ખ્યાલ હુલના કલાકાર શ્રી
કરશનભાઈ પદ્ધિયારમાં જેવા મળે છે.

શ્રી મેડભા પૂરા ગાંધીજીની હતા. એ સમયમાં ચારણુભાં ખાડી
ધારણ કરતાર માત્ર હુલાકાગ અને મેડભા જ ગાયાય ! વિચારને રજૂ
કરતાં ગીતો નકલ ગાયાં, પણ તે સાથે ગાંધી વિચારને લઈને તેમણે
રચનાત્મક કાર્યો પણ કર્યા. આજાની માર્ગના ઓડા જ હિવસોમાં તલવાર
લઈ શ્રી શામળાસ ગાંધી મુંઘલથી જુનાગઢ છતરા નીકલા અને આરજી
હુકુમતની ચળવળ રાડ કરી. પણ અર્થની કોઈ જીગવાઈ કરેતી જ
નહિ. શ્રી શામળાસ ગાંધી એમના અનુયાયીઓ સાથે છતરા પહોંચ્યા.
શ્રી મેડભાએ પોતાના અર્થે છતરામાં એમની આગતાસ્ત્રાગતા કરી.
ઉપરાંત પોતાના મિત્ર પોરથંહરના જાણીતા વેપારી શ્રી નાનજી કાળિદાસ
મહેતા પાસે શામળાસ ગાંધીને લઈ ગયા. શ્રી નાનજી કાળિદાસ મહેતાએ
મેડભાના કહેવાથી રૂપીયા પર્યાસ લાખ આપ્યા, અને રાષ્ટ્ર ખાતે સ્વાર્પણ
એમજ ગણુદ્ધ એમ નકલી થયેલું ! પણ આજાદ થતાં શ્રી શામળાસ
ગાંધીએ તે રૂપીયા હુંતે હુંતે પૂરા કરી આપેલા મેડભા અને શામળાસ
વચ્ચે એવો સંખ્યા અંધાઈ ગયેલ કે અને એક બીજાને ભાઈ જ માંતે.
શ્રી શામળાસ ઘરનિવાર કહેતા ‘હું મેડભાનો સાતમા ભાઈ છું.’

મિત્રના આગળ પણ શ્રી મેડભા સિક્ષણમાં બાંધુઓન ન કરતાં
શ્રીશામળાસ ગાંધી કેંચેસમાંથી છૂટા પડ્યા અને નવો પદ્ધ સ્થાયો. એ પદ્ધ
દારા મેડભા ચૂંટણી લડે એવો આગ્રહ શામળાસને ખૂબ રાંગેલ. પણ મેડભા
ઉગેલા નહિ. તેઓ કહેતા ‘શામળાસ મારો ભાઈ છે. હું ભાઈ થઈને
જ રહીશ. પણ ગાંધીજીની કેંચેસનો વિરોધ મારાથી થઈ રહેશે નહિ.
ગાંધીજીએ મને ખાડીની પાંદરી અંધારી છે અને આ પાંદરીમાંથી તો
૪૦ ટોપીએ થાય. હું પાંદરી છોડી યોગી ન પહેલું મારાથી આ ઉત્તસમાં
એદાખું અદ્વાય નહિ’ શ્રી શામળાસ ગાંધી સાથે સંખ્યા તેઓ સાચાની
શકેલા અને કેંચેસનું પ્રચારતાન પણ સંભાળેલ. ઉપરનીમાં શ્રી દેસરભાઈ
મુસ્કેલીમાં હતા ત્યારે શ્રી દુલ્લા કાગ અને મેડભા પ્રચાર અર્થે ગયેલા. ગાંધી
ભક્તિ હતી એટણે રાજકારણમાં પડેલા. ગાંધીના ગયા આદ એ નાંના
બાંધુ ના રઘો. ૧૯૪૫ માં મેડભાએ રાજકારણ છોડી દીધું. ભૂર્ણ, ખાડી
નરાંધી અને હરિઝન સેવામાં જિહારીના પાંદરાં વંચા ગાયાં. ચારણું

માં અને તેમાંથી ખાસ કરીને ચારણું કન્યાઓમાં ચિકાણું વધે એ હેતુથી
એમણે લગતથોડી જોનાં કર્યાં.

શ્રી મેદુલા મહાત્મા ગાંધીને ૧૯૩૬ માં પહેલવહેલા મળ્યા, અને
ત્યારથી જ ગાંધીભક્ત અની ગરેલા. તેઓ આછબન ગાંધીભક્ત રહેલા
તેના પોશાકમાં પૂરાં છ વલો-ચુરવાલ જરૂરો, અંડી, અચ્ચકન, પાંખી
અને ખંબે પેસ, વડોદરાના સર સયાજુરાવનો હારઠ મહોત્સવ પોન્નથો અને
તેમાં મેદુલાએ ખાદીનાં કપડામાં સંજર થઈ હાજરી આપી. તે સમયે
મેદુલાને દરખારી પોયાટ પ્રસંગ સમયે પહેરવા અપાયો, પણ ખાદીધારી
મેદુલાએ તેનો અસ્વીકાર કર્યો, એ ન માન્યા અને વાત સર સયાજુરાવ
પાસે પહોંચ્યો. એમણે ખાદી ઉપર લાલ સાઢો ખાંખવા જરૂર્યું. તે પણ
મેદુલાને મંજૂર ન હતું. એમની ખાદીભક્તિ-ગાંધીભક્તિ જોઈ સર સયા-
જુરાવ એમને ખાદીના પોશાકમાં આવવાની રજી આપી. સ્વ. રાયચુરાએ
'શારદ' ના એક અંકમાં લખેલ છે કે 'આ દરખારમાં પંડિલ મહાન મોહન
માલવિયા અને મેદુલા બન્નેએ સરખું માત મેળ્યું હતું.'

મહાત્મા ગાંધીને મેદુલામાં વિશ્વાસ હતો. રાજકોટ સયાય્યા વખતે
મેદુલા દરખાર વીરાવાળાને ત્યાં રહેતા પણ ગાંધીજની સવારની સભામાં
દરરાજ સવારે પ્રાર્થના ગાતા. આથી ઘર્યું લોકો મેદુલા તરફ થાકતની
નજરે જેતા. ગાંધીજને મન તો નેણે. એક કરી સમાન હતા. દરખાર
વીરાવાળાને સમજાવવા મેદુલાએ ષૂધ પ્રયત્નો કર્યાં. દરખાર સમજવા લાર
ખાંડું મોડું થઈ ગયેલું એમની ગાંધીભક્તિ લઈને જ માંગરોળાના દરખાર
તેમજ અન્ય રાજાઓ સાથે એમને મતબેદ થયેલ.

મેદુલા ગદવી અનેક વ્યક્તિઓએ સાથે અતૃપ્ત મૌજી ધરાવતા હતા.
એમના મિત્રોમાં એક હતા. શ્રી ગોડાળસ દારકાલસ રાયચુરા. ૧૯૨૫માં
શ્રી રાયચુરાએ શેર ભાગરનો ધંધી છોડીને સાહિત્ય ગ્રાનિથી સાહિત્યના
ક્ષેત્ર જંપવાન્યું. લોકસાહિત્યના ભમતાથી લોકવાતાના અને લોકગીતેના
દંડકહેણીના વારસદરોના પરિચય ઉણવતાં ઉણવતાં છત્રવા આવી ચર્ચા
ને પિતાપુત્રને સંભળતાં મોરલાની નેત્રે નાચી જોક્યા. ત્યારી ગામ-પર-
ગામના લોકસાહિત્યના કાર્યક્રમો અથે પર્યાટનો શરૂ થયાં. એ હિવસેમાં
રાયચુરા-મેદુલાની લેધાએ મંદિર ગાડું કરેલું. શ્રી રાયચુરાએ મેદુલા
માટે ધાંડું કર્યું અને રાયચુરાના અવસાન બાદ એમના ઉપરનું નડયુ
કેડવા શ્રી મેદુલાએ આંકડાનો પ્રવાસ કર્યો.

મેરાને એવી જ વિરલ દોષ્ટી હતી પોરથંહનાં શેડશ્રી નાનજ કાળિદાસ મહેતા સાથે. અનેને એકખીજનો પરિયય થયો આચૈકન્યા ગુરુકુળના ખાતમુહર્તા વેળાએ. ત્યારથી આ અને મિત્રો એકખીજની પડુએ જિબા રહ્યા અને અનેક પ્રસંગો શોભાન્યા. અને સરખા. અનેને લખતાં ન આવડે, માત્ર સહી જ રખ નું જાણે. એક વેપારમાં ઉસ્તાદ, ખાને કળામાં. સાહિત્યભાર મિત્ર ખાવા-પીવામાં સુખી રહેએ ચિત્તા નાનજ શેડે કરેલી. નાનજભાઈ શેડે એમને રૂપ વીધાં જમીન અને એક મકાન લઈ આપ્યું, તે મકાન એક બેંકને લાડે આપ્યું, નેથી તે ભાડાની આવક મેરાને દર મહિને મળતી રહે. નાનજ શેડના અવસન્ન પછી પણ એ કુદુંબની સાથે મેરાએ સંબંધ જળવી રહ્યો.

આ રાયચુરા અને શ્રી મેરાની નેમ શ્રી દુલા કાગ અને શ્રી મેધાણીની જોડી પણ લોકસાહિત્યની અરવાળો પુર્ણગુણિત કરતી હતી. રાયચુરાના અવસાન બાદ દુલા કાગ અને મેરાના તાકટ આન્યા. અનેનાં મિલનમાં કંકું અને કવિતા, ભાવ અને ભક્તિ સૌજન્ય અને સેવાની મિલન સધારાં. આ અને મહાનુભાવેએ વર્ષો સુધી લોકસાહિત્યના વન-ઉપજનની કુંઝે ગાજતી અને લહેરાતી રાખ્યા. દારકાથી હિન્દી સુધીના દરેક કાર્યક્રમમાં તેઓ સાથે જ જતા. અને એકમેદના પુરક અની રહેતા. ભક્તિ સાહિત્ય અને લોકસાહિત્યની સાથે નવજગૃહિતની ચેતના અને રાષ્ટ્રીય ભાવ ભર્યો એટલે સમાજના તમામ ક્ષેત્રોમાં એમના કંકું, કાંય અને કહેણીની પ્રતિભા એક સરખા જાપકી રહ્યાં.

શ્રી જયમલ્લભાઈ અને મેરા ૧૯૫૦થી એકખીજના પરિયયમાં આવ્યા. એક લોકસાહિત્યના મર્મંજ અને ખીંડ એના પ્રતાપી વહેક. મૈત્રો જનેજ. એ જૈવીને પરિણામે લોકમેવા અને લોકસાહિત્યની અનેક પ્રવૃત્તિઓ થઈ, વૈડનાં ગામડાં પ્રવેરા ગયેલાં અનેક અનિષ્ટો સામે ધર્મયુક્ત જગાવવા મેરાને જયમલ્લભાઈએ સમજાવ્યા અને જ્યારે એ પ્રવૃત્તિ મેરાએ શરૂ કરી ત્યારે શુલ્ક પરિણામ પણ આવ્યાં. મેરા એ શુલ્ક પરિણામનો યથ જયમલ્લભાઈને જ આપતા રહ્યા.

લોકસાહિત્ય પ્રવૃત્તિ, શિક્ષણ અને સેવાનાં કાર્યો. રાષ્ટ્રભક્તિ અને ગાંધીભક્તિને લઈને શ્રીમેરાને અવાર-નવાર સમાજના વિવિધ લોકો સંમાનતા રહેતા. સર સયાજરાવ ગાયકવાડે એમનું સંમાન કરેલું. નડિયાહના સાક્ષર શ્રી ચંદ્રશંકર પંડ્યાએ જૂનાગઢના નવાખને મેરાનો પરિયય આપતો પત્ર લખેલો અને સંમાન કરવા જણાવેલ. જૂનાગઢના

નવાખ કોઈ ચારણું ન મળતા, પણ મેરુભાને દેવડા ગામે મળેલ અને સન્માન કરેલું. ૧૯૫૩માં સ્થપાયેલ સૌરાષ્ટ્ર સંગીત-નૃત્ય-નાટ્ય અકાદમીએ મેરુભા અને દુલા કાગનું એક વાર્ષિક સમારંભમાં સન્માન કરેલું. જૂનાગઢના લોકસાહિત્ય વિધાલયના મેરુભા ઉપપ્રમુખ નીમાયેલા, સૌરાષ્ટ્ર યુનિ. એ પાંચ ચારણું સન્માન કરેલું, તેમાં એક શ્રીમેરુભા હતા. આના ૦૮ અનુસંધાનમાં પોરખ્યાંદરથી જૂનાગઢ યુધીનાં ગામોમાંથી ૩૦ થી ૪૦ કેટલાં ગામોના ચારણું એ મેરુભાને છવાવામાં સન્માનેલા. મેરુભા લાખપલ્લું મેળવનાર છેલ્લા ચારણું કવિ છે. જમનગરનાં મહારાણી ગુલાબકુંવરખાંએ એમને ૧,૧૧,૧૧૧ આપી સન્માનિત કરેલા.

મેરુભાનું ગુરુપત્રયજીવન સુખી હતું. એમનાં પણ મોંડીબા પતિપરાયણ હતાં. મેરુભા પણ એમને ચાહેતા. બન્નેનું આતિથ્ય પણ એવું. ૧૯૭૪માં મોંડીબાનું અવસાન થયું. ત્યારખાન મેરુભાનું જીવન એકલચાયું બની ગયું. મેરુભાને સંતાન હતાં નહિ. શ્રીમતી મોંડીબાએ કેટલાંક લોકગીતોનું સંપાદન કરેલું અને શારદામાં પ્રગટ થયેલાં.

મેરુભા અને રાયચુરાંએ સાથે મળાને “દુહાની રમજટ” નામે એક પુસ્તક તૈયાર કર્યું. શ્રી હરિહર પુસ્તકાલય, સુરતે આ પુસ્તક પ્રગટ કર્યું છે. આ પુસ્તકમાં સામસાંને જોવતા ૫૦૦ દુહા અને ૨૦૦ દુહા સમજૂતિ સહિત આપવામાં આવ્યા છે. દુહા સામે દુહા જોવાને એ કલા દુહાના સાહિત્યમાં અન્ય રીતે ગુંથાયેલી છે અને એ રીતે ને સામસામા દુહા જોવાય એને દુહાની રમજટ કહેવામાં આવે છે. આ રીતે દુહાની રમજટ જમાવવાના દુહાનું આ પ્રથમ પુસ્તક છે અને તેનો ધરણ શ્રી રાયચુરાંએ મેરુભાને આપ્યો છે.

શ્રી રાયચુરાના માસિક ‘શારદા’ માં મેરુભા સંપાદિત લોકસાહિત્યનો પરિચય કરાવતા રહેતા. એમના સંપાદિત લોકસાહિત્યના લેખાઃ મૃતસંજીવની દુહા (જુન ૧૯૩૩) ચારણી ઋતુગાતો (જુલાઈ ૧૯૨૮, જુલાઈ ૧૯૩૦) વેદુ કવિના વિધાન (જુલાઈ ૧૯૩૧), નમરતે નમરને નમરતે ભવાની (વિવાળા અંક ૧૯૩૩), લોકસાહિત્યનું એક પ્રભાતિયું (આગષ્ટ ૧૯૩૪), પતિવૃત્તા લક્ષણ : ચારણી છંદમાં લોકગીત (જુલાઈ ૧૯૨૮), સપાપરું ગીત ‘મહી’ (જુલાઈ ૧૯૩૬), લોકલજન (જુલાઈ ૧૯૩૬), કંઠસ્થ સાહિત્ય-વડોદરા રાજ્યના ચારણ કવિ કહાનદાસ મહેરુને મીર શિંઘ મુરાદનો ચારણી છંદ (અપ્રિલ ૧૯૪૦), થાથા થઘ થાથા થઘ-ના વાત પોરખ્યાંદરના મહારાજા સમાજવા ચારણું કવિ જેડાભાઈએ રચેલ છંદ (મે ૧૯૪૦) શ્રી મેરુભાનાં પલી

મોંડીભાઈએ પણ 'ગારણે' માં લખેલું. વાતું ચારણેમાં ગવાતું લોકગીત (અપ્રિલ ૧૯૪૦) અને 'પદ્મકથા' 'મારની ટોલે' (જુલાઈ ૧૯૪૦) વગેરે. શ્રી કાગળાપુતા અવસાન પણી મેઝલા પણ દૂર સમયમાં લાખું ગામતરું કરી ગયા, એમના અવસાન સાથે એક યુગનો અંત આવ્યો.

આ તો છે એક લોકસાહિત્યકાર જીવન અને કાર્યમાં એક ડેક્ઝિયું. મેઝલાના કાર્યનો, એમની ગાયકાનો વિગતે અભ્યાસ કરવો જ રહ્યો. ચારણી પરંપરાનો પરિચય આપતા સાચ્ચા લોકસાહિત્યકારો હવે જ્યારે જોગવા પડે એમ છે. ત્યારે કાગળાપુ અને મેઝલા જરૂર થાહ આવવાના. એમના કાર્યને એમજું ને માટે જીવન ચાર્યું એને જીવંત રાખીને જ સાચી અંજલી અપી શકાય.



લોકસાહિત્યકારો —

દાણા

મેઝ સમોવડ તાત જ્યાત, જત ચારણું ખલક,
પવિત્ર નીલો પ્રભ્યાત, ગાંધી મેઝલા ગીએ.

—તખવદાન રોહદિયા (નાગેશ્વર)

ગામતરે લાંબે ગીયાં, (એને) માટેને ના મેળાપ,
કાળને પડીયેલ કાપ, માંદદો રોતો મેઝલા.

—દવિ નાપજનકર (ત્રાયો)

ટોડા ને લંકા તજા, અડ દેતું અડ ભાગ,
કુવિર દુલો કાગ, મહેર સોનાનો મેઝલા.

—નેટસુર-લેણ (કુંભેણ)

તું પ્રગટ્યો મેધાણું હ તણ્ણા, જગભલ મથાન ને,
(પણ) તારી લાપ્રન તે, મન તો હરે મેઝલા.

કુળ દિપ્પક લીલા ઝ્મી, તું ને દુનિયા કે છે હેઠ,
ગુણવંત બાપ ગંગેવ (તારો) માણ બેરે મેઝલા.

તું બેરે મેધાણું હ તણ્ણા, કાગર્છ ને ક્રીદતાર,
(પણ) અપણાં ને આધાર, (તારો) મરદ ટેકો મેઝલા.

હે છે રંગ બાદી હણ્ણી, તું ને નકલંડા કે છે નાત્ય,
(પણ) લીલા જનમની રાત્ર, માતું ઝડી મેઝલા.

—દવિ વલદુલાઈ ભામભાઈ (નિલા)



સ હે ૯ ૨

—પિંગળશી મધ્યાખુંડ ગઢવી

ગયો શુલ્ભનારા ગજવી સહેદર,
ગીરા ગંગધારા વહાવી સહેદર.

જીવન ચુઠુ કેર અર શુ રહસ્ય.
મને ત રહ્યો તો ભણાવી સહેદર.

છતો શુલ્ભચિંતક ન તે કૃતરાણ,
કદી કોઈ ઉપર અનાવી સહેદર.

બુદાંદી અવાજે સપુત શારદાના,
સભા સાક્ષરેની ગજવી સહેદર.

ચુલ્ભરાની આવર ઘૂમારી અમીરની,
નહીં કોઈ પાસે વટાવી સહેદર.

પરાયાંજનોને ગણી નિજનાં તે,
કષુદ્જ કુટેચો છુડાવી સહેદર.

શીખામણનું વારી સમયસર તે છાંદી,
કદી કલેશ જવાળા ઘુજાવી સહેદર.

હદ્ય ભાવનાના સુરંગો પુરીને,
કવિતા સુકંકે વહાવી સહેદર.

વિશુદ્ધ પડ્લો હતો હૈવી આત્મા,
 સંક્રાન્ત જીવનાની અનાવી સહેદર.
 સ્વમાનાની રહીને છેલ્લા થાસ સુધી,
 હતી જે જે ક્રિયા અજાવી સહેદર.
 અરેરે પ્રભુ તું તુંને કહી શકું હું,
 દીધો કૃતી હીપક બુજાવી સહેદર.
 થયા હું જ નિષ્ઠુર અધા હેખતા મેં,
 દીધો મુજ હાથે જલાવી સહેદર.
 ગયો છે સદાને સમજુ છતાં પણ,
 નથી શકતો મનને મનાવી સહેદર.
 મને ખોળલામાં રમાડી રમાડી,
 હવે કાં રહ્યો છે રડાવી સહેદર.
 નથી ગમતી દુનિયાં નથી ગમતું જીવન,
 નથી આમ લેચું ચલાવી સહેદર.
 વિચારી હું 'પિંગલ' નિરસ જંઘાના,
 રહ્યો દિવસેને વિતાવી સહેદર.



મુક્તાઙ્ગ તું મેરુભા

દોઢા

કહેણું આવ્યાં કાગનાં, સ્વરગને સંગાથ;
 અંતર રહ્યો ઉચાર, મોંદો અમને મેરુભા. ૧
 પાઈ અમેને પ્રેરણા, સાહિત્યે સામાર;
 (આજ) ધરડા કેરા ધાર, માઠા દિસે મેરુભા. ૨
 અણોહરાં થાં અમે, સોરઠિયો ચાલયો જતાં;
 વેદનાના વિરમે, મુક્તાઙ્ગ ગયું મેરુભા. ૩

કદળી ડોડચા કાળજ્યાં, સૂતો થયો સૌરાષ્ટ્ર;
 વામન છતાં વિરાધ, મહિમા હુતો મેરુભા. ૪
 અંતર આગચું ભરખવી, ન મળે કયાંય નિરાંત;
 વીરનરેની વાત ! મા સંભળાતી મેરુભા. ૫
 હિરલા હાલ્યા જાય, ગરવી મા ગુજરાનાં;
 એઠચું કેમ અમાય, મહિમા વધિયલ મેરુભા. ૬
 એલવશે કોણ આગ, એલી યુગાપા તણી;
 કરમી ગયો કાગ, મૂક્યાં તે પણ મેરુભા. ૭
 લગની લોકસાહિત્યની, રડતી રજુણ રાન;
 પાયાં અમૃત પાન, ભાન વધાર્યા મેરુભા. ૮
 વસમી લીધી વાય, સ્વર્ગાર્પર શા કારણે;
 કાગ તણાં કલ્પાંત, મરયાં હજ ના મેરુભા. ૯
 રાયચુરા રણવીર, સાથી પણ શુરા હતા;
 દિલ એથી દિલગીર, ભરતાં જોગી મેરુભા. ૧૦
 અકળાયો આ આતમા, કેમ જ ભૂલું કાગ;
 દિલમાં બીજે દાગ, મૂક્યો વસમો મેરુભા. ૧૧
 સૂતાં સાગર સીમડી, સૂતી સોરઠ લોન;
 વસમું ભાસે વ્યોમ, મનવો જતાં મેરુભા. ૧૨
 પોરે સૂતો પ્રાણ, પિગળનો પ્રેમી વીરે;
 અવનીતલ એંધાણ, મા ભૂંસારો મેરુભા. ૧૩
 હોંકારે તૂં હાલતો, પડકારેય પ્રમાણ;
 કાયમ રહી છે કાણ, મનરે સાથર મેરુભા. ૧૪
 પોર તણાં પરિયાણ, વસમા વહ્લભને થયાં;
 ખાંધવ મારેલ ખાંણ, મટે ન જખમો મેરુભા. ૧૫
 હાય ઘન્યાં હત ભાગિયાં, ગયો સોરઠી સૂતા;
 હૈવી જતાં હૂત, મીઠય ગઈ છે મેરુભા. ૧૬
 હિરલો જોયો હાથથી, આ માણગળ મોતી;
 ધરા સોરઠ રોતી, મહાવીર જતાં મેરુભા. ૧૭

આનંદ હૈયે ભીજરે, પોરે જાં પ્રાણ;
 (હવે) બહાલાંને વસમાણ, માફ જાં મેરુભા. ૧૮
 કયાં સંતાયો કેસરી, નરવરમાં નરસિંહ;
 રુહે ન રાખી રીંહ, મિતરુ ઉપર મેરુભા. ૧૯
 ઉરે નહીં અહુમેવ, મીઠપે મેરાગણ અર્થે;
 હૈવી નર તું હેવ, માનવ નહોતો મેરુભા. ૨૦
 ગૌરવભર ગહેકાટ, કાયમ કેકા સાંભળું!
 (હવે) વસમી થઈ વનવાટ, મોર રિસતાં મેરુભા. ૨૧
 બહાલપનો તું વીરડો, હૈયું અમૃત હોજ;
 મનવા લૂંદી મોજ, માજમ રાતે મેરુભા. ૨૨
 વલલભ દૃદ્ધિયો વલવલે, હૈયે ચુસાયાં હાર;
 મેર મસ્ત ઇકીર, મેલી યો મેવાસતાણ. ૨૩
 સૂતા એકજ સાથ રે, મોંવા અન્ને સિત્ર;
 સુમરણ એહજ જ ચિત્ર, સુંથી ભૂલાય ના મેરુભા. ૨૪
 સોરઠ તો સૂકો થયો, સૂકાણાં સર સાહિત્ય;
 નઘળાયું નિત નિત, મેં નિહાળી મેરુભા. ૨૫
 સહૂલેય સુકાયાં નથી, નયનો કેરાં નીર;
 પણયો પિગાશી વીર, મૂડી અમને મેરુભા. ૨૬
 નહિં ભૂલું નાદિયાદનો, સાહિત્યે તુ જ સાદ;
 નભમાં ગુંજે નાદ, મીઠય જરતો મેરુભા. ૨૭
 મરશિયા ગાવા માટ, રામે અમને રાખિયાં;
 લખિયા હોય લલાટ, મટે નહીં એ મેરુભા. ૨૮
 ભવમાં એ ભૂલાય ના, ઉજાવુણ દિલતી યાદ;
 કેણાં થધ રસિયાદ, મા વિસરણે મેરુભા. ૨૯
 ચૈપ સુદી છે દ્વારસી, સંવત તેત્રીસ સાલ;
 હુરિએ કર્યા ઓહાલ, મનસાગર યો। મેરુભા. ૩૦
 તારીખ પહેલી ત્યાં લખી, ધશુ એપ્રીલ ભાસ;
 આધમિયો ય ઉજસ, સુજ હૈયાંનો મેરુભા. ૩૧

—વલલભભાઈ મ. રાજગુરુ
 (ધાદાવદ્દે)

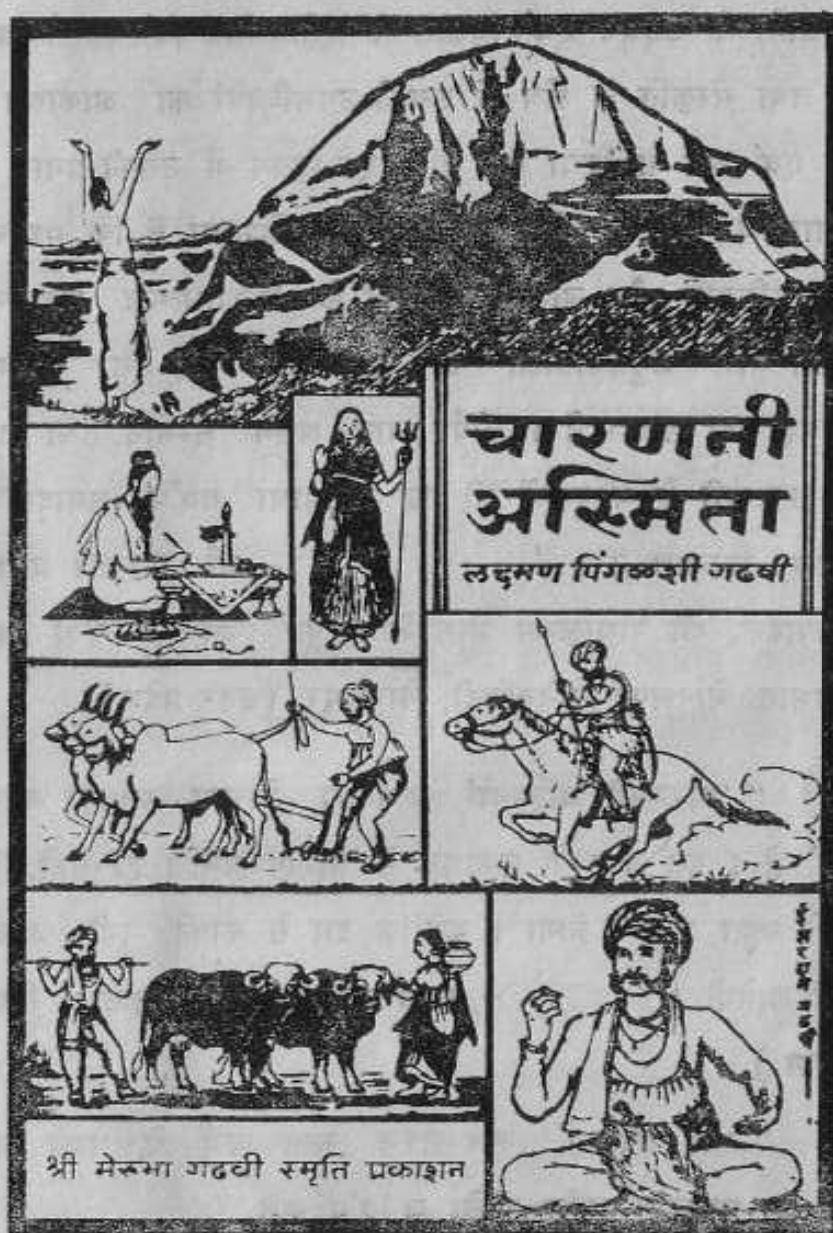


શ્રી મેઢભાખાપુના સાનિદ્યેથી

લક્ષ્મણ પી. ગઠવી

- * ગાંધીયગની આહિત્ય સંરક્ષણની ચેતનાનો દીવો જગતો રાખવાની મારા છુફનની એક ભાગ તેમ છે.
- * મને ને પ્રેરણા મળ્ણ છે તે એ કાંયોનો પ્રતાપ છે; અને એનું જ શુભ પરિણામ છે.
- * દાઢ, જુગાર, વ્યસન ને કુસ્પે ટાળવાની પ્રવૃત્તિ એ નઈનો પ્રવાહ અલલવા જેવી પ્રવૃત્તિ છે.
- * મન એ તો આંધગાનું અને બહેરાનું બજાર છે.
- * બીજાને જોઈ જોઈને માણુસ થાકે ત્યાર પણી પોતે પોતાને જેવા તરફ વળે છે ત્યારે અને રસ્તો મળ્ણ જાય છે.
- * પોતાનું સાડું કામ પણ ખરાય ઉપાયથી સફળ થાય તો પણ સંજગ્યન માણુસ એ ઉપાય અજ્ઞમાવે નહિ.
- * મન અને કૂલ કરમાઈ ગયા પણી કોઈને સુગંધી આપી શકતાં નથી; મન કરમાઈ ન જાય તેવી પ્રવૃત્તિ કરવી જોઈએ.
- * માંદળી એક તાલીમ છે.
- * સાચ્યો કંબિ કદી મરતો નથી; એ તો ભરીને પણ જીવી જાય છે.
- * દીવો એક ખૂણામાં પ્રકાશી ઓલવાઈ જાય, તેનાં કરતાં અની રાકે તેટલા દીવા પ્રગટાની ઓલવાયાં; તે વધારે યોગ્ય છે.
- * જ્યાં સુધીં નારી જગૃતિ અને ર્ખી ટેળવણી તરફ આપણાં પગલાં નહીં મંડાય, ત્યાં સુધી શિક્ષણ અધ્યુરું છે.
- * પ્રામાણિક પુરુષાર્થી અનરથ વિકાસને ભારે લઈ જાય છે.
- * ધરમાં ખોવાયેલ વસ્તુ અહારથી નહિ ભલે, એને હૃત્યમાંથી ગોતરી જોઈએ.
- * સત્ય એજ જીવતરનું ભાતું છે.

-ः आवकार :-



“ कोई पण व्यक्ति, ज्ञाति के समाजने पोतानुं आગवुं अस्तित्व होय छे, ते ते मात्र टकावी राखवा पूरतुं ज नहीं, परंतु साथें साथ तेने वधु गौरवभरी रीते व्यापक बनाववा माटे जे जे सूझ, समज अने सत्त्वशीलताभर्या प्रत्यनो धाय छे, ते मांहेनो आवो ज एक निष्ठापूरणं पुण्य पुरूषार्थं भाईश्री लक्ष्मणभाईए चारण ज्ञातिनी निजी अस्मिताने वधु व्यापक बनाववा आ ग्रंथमां कयो छे, ते अभिनंदनीय छे; आवकारने पात्र छे ”

॥ पू. हरिवानजी महाराज, श्री विश्वशांति आश्रम, मेथो (गुजरात)

“ मैंने श्री लक्ष्मण पी गढ़वी की प्रस्तावित रचना ‘ चारणी अस्मिता ’ का योजना - सूत्र एवं विषय - सूचि देखी विद्वान् लेखकने चारण जाति के उद्भव एवं विकास के ऐतिहासिक विवेचन के साथ ही साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में उसकी उपलब्धियों का आकालन जिस मनोयोग एवं श्रम से किया वह प्रतिपाद्य विषय में उसकी प्रगाढ़ निष्ठा एवं असामान्य गति का परिचायक हैं । मेरा विश्वास है कि मध्यकालीन भारत के इतिहास और जातीय संस्कृति के विकासात्मक अनुशीलन में रुचि रखने वाले अनुसंधाताओं को इसमें बहुत कुछ ऐसा मिलेगा जो मौलिक कहा जा सकता है । शीर्यं, त्याग, आत्म सम्मान तथा प्रतिभा के घनी सरस्वती के वरदपुत्रों की यह यज्ञोगाथा सर्वत्र समादृत होगी, ऐसा हमारा विश्वास है । ” — डॉ. भगवती प्रसार्वसिंह प्रवान संपादक, श्री राधाकृष्ण भक्त कोश, पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गोरखपुर युनिवर्सिटी, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश).

“ ‘चारणी अस्मिता’ ग्रंथ की योजना आपकी बहुत ही महत्वपूर्ण है । इस ग्रंथ के प्रकाशन से चारण समाज ही नहीं, विद्वत् समाज भी बहुत उपकृत होगा । क्योंकि इस से काफी नयी जानकारी प्रभाग में आवेदी । ” — साक्षरत्व अगरचन्द नाहटा; विकानेर (राजस्थान)

“ भाई लक्ष्मणे सूत्र सरस काम कर्युँ छे धणी महेनत लीधी छे, आ प्रकारनो आवो पहेलो ज ग्रंथ थझे । ”
— जयमल्ल परमार, तंत्रीश्री ऊर्मि नवरचना, राजकोट (गुजरात) ।

“ महाभारत कार्य आरंभ्यु छे । ” — महामहिमोपाध्याय विद्यावाचस्पति अध्या. के. का. शास्त्री, (वांभणिया) अमदाबाद-६.

“ ‘चारणी अस्मिता’ ग्रंथना प्रकाशनना समाचार वांचना सूत्र आनंद अने संतोष थयां ची, भाई लक्ष्मणभाईने मारा अभिनंदन । ”
— साक्षरत्व नटवरलाल शेठ, मुंबई ।

“आपका प्रयास सराहनीय है और मुझे विश्वास है कि अतिथेयोक्ति से हटकर पक्षपात रहित बर्णन करने में सफल होंगे।

— डॉ. भूषणतिराम साकरिया, बल्लभविद्यानगर.

“आपने बहुत ही उम्दा काम उठाया है। उसे युग की मांग के साथ भी जोड़ दीजिए। आपके द्वारा दी गई समस्त सूचि देख गया है। बहुत विस्तार से काम उठाया है। वैसे आपने जो प्रोजेक्ट लिया है वह वास्तव में इतना अधिक अम साध्य है कि उसको ठीक ठीक निपन्ना अपने आपमें बहुत मुश्किल है। आपने इस कार्य को हाथ में लिया है अभिनंदन।” — डॉ. गोवद्धन शर्मा, प्रिन्सिपाल आर. आर. लालन कालेज, भुज.

“आप आ रीते स्व. श्री मेहमा गदवीनुं तर्पण करो ते सर्वथा उचित छे, यथ वधी रीते यणदायी अने सर्वाग्पुरुणं तेष सुंदर बने एवी शुभेच्छा छे।” — डॉ. ईश्वरलाल र. दबे, प्राध्यापक अने अध्यक्षश्री, गुजराती भाषा साहित्य भवन, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी राजकोट.

“मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आप चारण जाति के महत्व, प्राचीन, गौरव तथा उसके ऐतिहासिक एवं साहित्यिक योगदान पर एक पुस्तक लिख रहे हैं। अतः आपके इन महत्कार्य के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभांसाएँ अप्रित करता हूँ।” — डॉ. शंभुसिंह मनोहर, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर.

“दाद मार्गी ले तेवुं काम एकला हाथे उपाड़गुं दे भगीरथ जेम तमे गंगाने झीलवा नीकल्या द्यो। चारण अंगेनो तमे सांचंतस्त्रधन अने स्थायी मूल्यवालो ग्रंथ तैयार करी रह्या द्यो।” — पुष्कर चंद्रवाकर, Hon. Director, LOKAYATAN The Folklore Research Institute of Gujarat. CHANDERVA.

“ श्री मेरुभा गढ़वी की स्मृति में इसका प्रकाशन कर रहे हैं, हत्यार्थ आपको बहुत बहुत बधाई। उमिं नवरचना के माध्यम से मेरुभा गढ़वी का परिचय हुआ। ऐसे व्यक्तित्व का आ आप मूल्यांकन कर रहे हैं इससे बढ़िया और कोई योजना नहीं हो सकती। ग्रन्थ के प्रकारणों का विवरण भी पढ़ा। सुन्दर योजना है। एक ही जगह सारी जानकारी जिसकृष्ट में आप दे रहे हैं वह उत्तम है। ” — डॉ. भंवरसिंह सामौर, प्राध्यापक, लोहिया कालेज, चुरु (राजस्थान)

“ आपणी ज्ञातिमां कोई नहीं करेल तेवो भगीरथ प्रयत्न आपे कर्या छे. समस्त ज्ञाति माटे एक आशीर्वादरूप पुस्तक बनाशे लेमां शंका नथी। ” — राजकवि वलदेवभाई नरेला, भावनगर.

“ श्री मेरुभाभाईनी स्मृतिमां तेमने छाजे तेबुं साहित्य स्मारक तैयार करवा बदल घन्यवाद. आर्थिक रीते ते ग्रंथ प्रकाशनमां मारी सेवानी जहर जणाय तो बिना संकोचे जणावशो. कारण आवा भव्य प्रकाशनमां मने सहभागी थवानी तक मळे ते माटे। ” — पू. गौरीदासजी महाराज, श्री रामजीमंदिर वडाळ, जि. जूनागढ़ (गुजरात)



“ कोई महान विद्याकीय संस्थाए मेटा पाया पर हाथ घरवा जेवुं आ कार्य थी लक्ष्मणभाईए एकले हाथे स्वयं स्फुरणाथी उपाडीने ज्ञातिनी महान सेवा बजावी छे. चारणकुळनुं आ एक दस्तावेजी चित्र छे। ”

— राजकवि नारायणदानजी बालीया, जामनगर.

“ एक अमूल्य संदर्भग्रंथ बनाशे. चारणी साहित्यनी अखूट अने जीवंत परंपरा आपणा राज्यमां प्रवंते छे, पण ग्रंथस्थ नजीवुं छे. आपे मेधावीभाई पछी काम आगळ चलाव्युं छे। ”

— हरेन्द्र प्र. भट्ट, तंत्री श्री ‘बीरडो’; आणंद.

: दोहा :

प्रयत्न कीन्हो तें प्रबल; भगिरथ समेा भु भृत,
मेघ - पौत्र पिगल - सुवन; सर्वेषिरि सु श्रुत....^१
चतुर - पिता पथ पर चले, सुन लक्ष्मन सुजान,
अबल - चले सो अब्रभी, दाखे महेशदान...^२
—कविश्री महेशदानजी ना. मिसण मोरबी

“ चारण विशे माहितीप्रद अस्मिता प्रगट करो छो ते खरेखर
घन्यवादने पात्र छे! ” — प्राच्यापक नरोत्तम पलाण, पोरबंदर.

“ विषय सूची में जो जो विषय आपने लिखे हैं। वे सभी इस
ग्रंथ के नाम की सार्थकता सिद्ध करेंगे। ” — हेश्वरदान
आसिया, मेंगटीया (राजस्थान)

“ आवो अभ्यासपुण् ग्रमाण्डभुत ग्रंथ रचवानी अथाग महेनत
बदल अभिनन्दन - घन्यवाद. ”

शाहखुदिन राठोड, प्रिन्सिपल, म्युनिसीपल हाईस्कूल, थानगढ़. (गुजरात)

“ चारणनी अस्मिता प्रकाशित करने का सद्प्रयास कर रहे
हैं वह श्राधनीय और सराहनीय हैं। ”

— कविश्री अक्षयसिंहजी रत्न, जयपुर.

“ लोकोपयोगी एक सुंदर पुस्तक तैयार करो छो ए माटे
आप सौने घन्यवाद पाठवु छू. ” पू. ज्ञानचंद्रजी महाराज हरि ३५ विश्व
कुटिर सांगाद. (गुजरात)

“ शुभ कामना सहित। प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ”

— कैलाशदान उज्जवल I. A. S. (Retd.), जयपुर.

“ ‘चारणनी अस्मिता’ ग्रंथ पूज्य मेरुभाभाई मेवाण्ड गढवीना
स्मृति ग्रंथ तरीके बहार पड़शे ते जाणी आनंद विभोर बनी गया. छाला
भाई लक्ष्मणभाईने हार्दिक घन्यवाद. ”

— लीमजीभाई माघवजी मांडवीया, पोरबदर.

“ आपे Ph. D. ने प्राच्य महा निवंश तैयार कर्या छे. ”

— पी. एस. गढवी, रामोदडी (गुजरात)

“ आपे श्री मेरभाभाई गढवी स्मृति प्रकाशन ग्रंथ छपाववानुं
जे प्रयोजन आरंभ्यु छे ते खुब प्रशंसनीय तेमज धन्यवादने पात्र छो. ”
— कविश्री अयाची खानजी केसरजी, रायधणपर कच्छ (गुजरात)

‘ आ ग्रंथ चारण जातिनुं श्री मद् भागवत ग्रंथ बनाए, लेखक
श्री लक्ष्मणभाई पिंगळशीभाई गढवीने आ ग्रंथ लखवा माटे हुं धन्यवाद
आपुं छु. ” — शामळाभाई जखुभाई गढवी,
सभ्यश्री कच्छ जील्ला पंचायत, पांचटीया (कच्छ)

‘ चारणोनो इतिहास श्री मेरभाभाई मेधारण गढवीना स्मृति ग्रंथ
तरीके प्रसिद्ध करवा बदल लाखो लाखो धन्यवाद. ’ — नारणभाई
आलाभाई गढवी, कुरंगा, (सौराष्ट्र)

‘ आजे ज्यारे वर्तमानकाळमां दरेक कोमनी अस्मिता भूलावा लागी
छे त्यारे चारण समाज माटे आ ग्रंथ चेतवणी साथे गोरव बघारणे,
आपना भगीरथ प्रयत्नो बदल हजारो धन्यवाद. ” — कवि श्री
मेवराज मुळुभा गढवी, मढाव (सौराष्ट्र)

“ ‘चारणनी अस्मिता’ ए तो भोमिया विनाना मारे भमवाता
हुंगरा ने जंगलनी खीण खीण जोबी हती वाढा सलत परिश्रमी खंतीजा
खमीरवंता जुवाननी चारण जातिने महामूल्यवान देन छे. ”
— कविश्री हिंगेळदान नरेला, आंगणका (सौराष्ट्र)

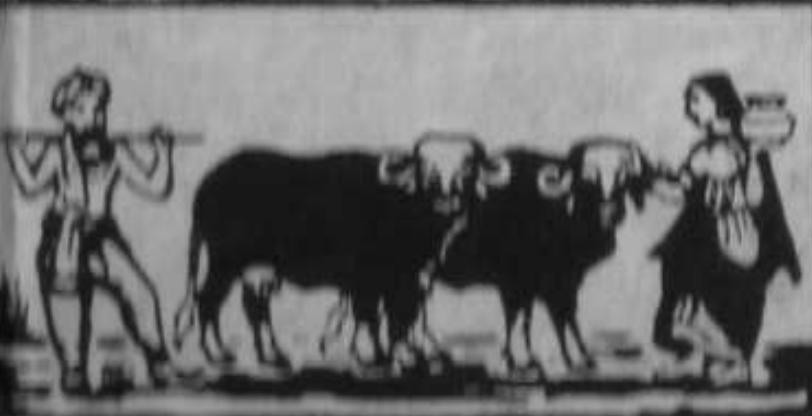
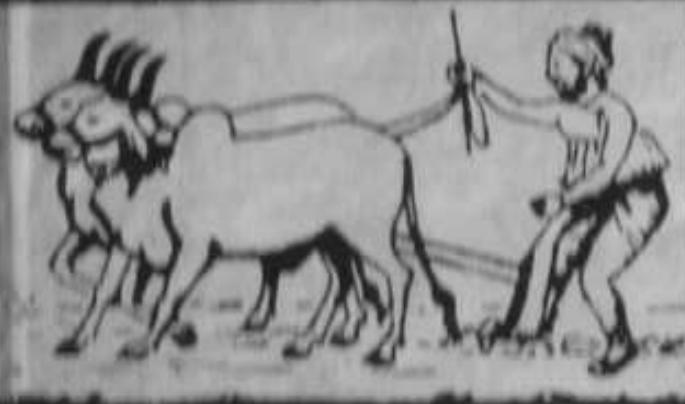
“ श्री मेरभाभाई महामानव हता तेमनी स्मृतिमां चारण
साहित्य अने चारण जातिनो महान ग्रंथ ‘चारणनी अस्मिता’ प्रकाशन
करी रहया छो ए ज साचुं तर्पण छे. महान पुरुषोनी स्मृति पण समाजने
मूल्यवान भेट आपी जाय छे तेनुं आ एक उत्तम उदाहरण छे. ग्रंथना
प्रकाशननी आर्थिक सहायतामां सहभागी बनावणो तो हुं आपनो आहणी
थईश. ” — के. के. पटेल; घाटकोपर, मुंबई.

“ श्री मेरभाभाई मेधारण दभाई गढवीना स्मृतिग्रंथ तरीके
चारणनी अस्मिता’ ग्रंथनुं प्रकाशनयो धणो आनंद थयो. आ प्रसंगे माताजीना
अने अमारा वेदोक्त आशीर्वाद पाठवीए छीए. ” — पू. धनश्यामजी,
आचार्यश्री; श्री भुवनेश्वरी पीठ, गोंडल. (सौराष्ट्र).

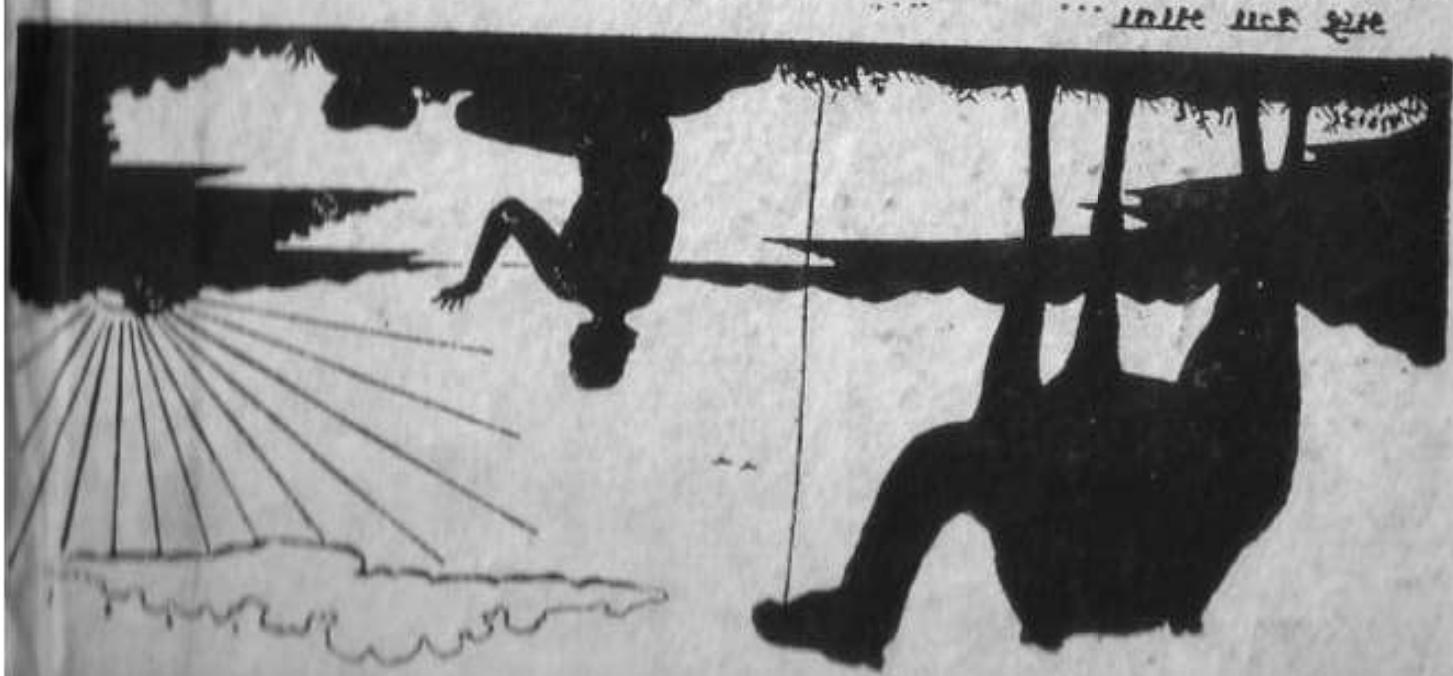
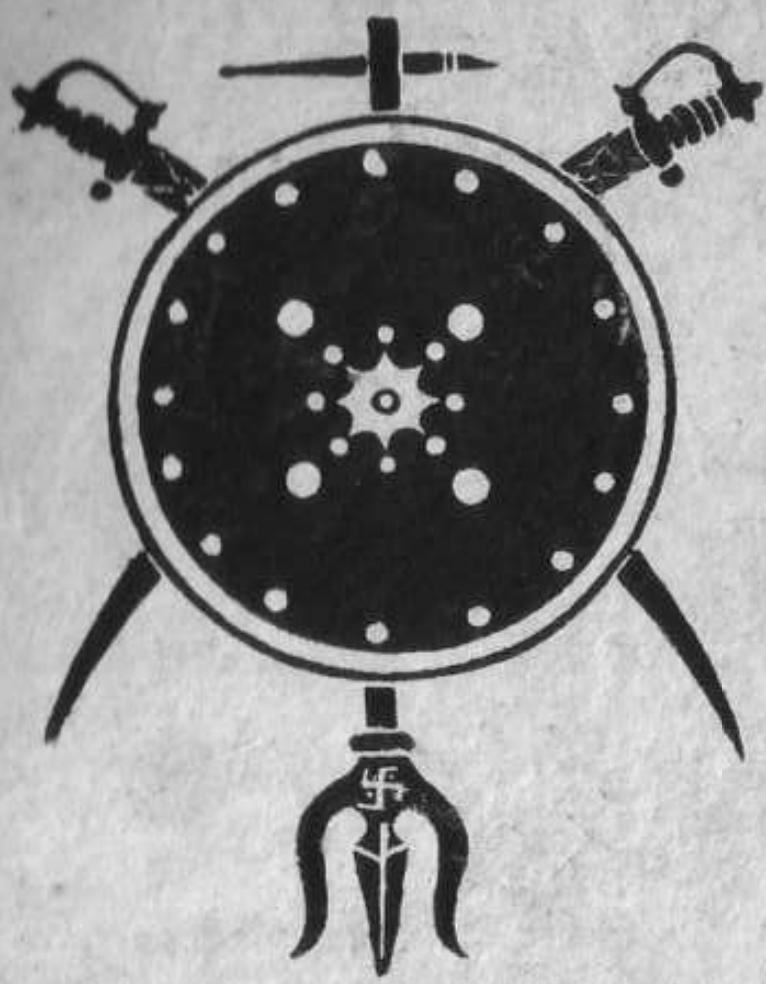


चारणानी अस्तित्वा

लद्धण पिंगल श्री गढ़वी



श्री मेलमा गढ़वी समृद्धि प्रकाशन



ચારણી અસ્તીત્વ

શૈખ :— દ્રબ્ધા પિંગળાની ગાંડી
આ પુક ટ્રેપુક બનાવાની આપવા બદલ શ્વી
દ્રબ્ધા પિંગળાની ગાંડી ની ખૂબ ખૂબ આભાર

ટ્રેપુક વાય :— વેજાદ ગાંડી શીથા લાંબાની
નીચે—ટ્રેપ (એફોનિફા)